कनर [illegible] और लाल-ग | कलादो-ल. कालद (त

घुय्या-तु. आत

घूंघची-ल. रति.

घोडाकरंज नव

चकवड

चतुरस से प्रार्थना है

सहाय

ाकी सहाय

करको अन्य

ना मानसिक

वह इस परि

होनेसे जहां

त करदेवेंगे तो

भी नहीं रहा ज

अन्वेषणका उद

सज्जन और दुर्ज

बुरे होनेकी समाल

जायगा और पलटमें

१ पत्ते २ फूल ३ फल

रक्ष के ऊपर डाले हैं जैसें हरडके पत्तेपर १ फूल पर २ और फलपर ३ सो जानो ग

घुय्या-घु. आ

घूंघची-ल. रक्ति.

घोडाकरंज-वनव

चकवड

चतुर

...सि प्रार्थनाहै

...की सहाय

...रको अन्य

ना मानसिक

वह इस परि

होनेसे जहां

त करदेवेंगे तो

भी नहीं रहा ज

अन्वेषणका उद

सज्जन और दुर्ज

बुरे होनेकी समालो

जायगा और पलटमें

१ पत्ते २ फूल ३ फल

...वृक्षके ऊपर डाले हैं जैसें हरड के पत्तेपर १ फूल पर २ और फल पर ३ सो जानो ग

सुहागा–टंकण.

...रसे सहाय
...रको अन्य
...ना मानसिक
... वह इस परि
... होनेसे जहां
...त करदेवेंगे तो
...भी नहीं रहा ज.
...के अन्वेषणका उद
...ा सज्जन और दुर्ज
...बुरे होनेकी समालो
...जायगा और पलटमें

१ पत्ते २ फूल ३ फल

...रक्षके ऊपर डाले हैं जैसें हरडके पत्तेपर १ फूल पर २ और फल पर ३ सो जानो गे

अभिनवनिघंटु के

हिन्दीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

सुहागा-टंकण.

...गास यंह...

...ारी सहाय...
...रको अन्य...
...ना मानसिक...
...वह इस परि...
...होनेसे जहां...
...त करदेवेंगे तो...
...भी नहीं रहा ज...
...अन्वेषणका उद...
...सज्जन और दुर्ज...
...बुरे होनेकी समाले...
...जायगा और पलटमें...

१ पत्ते २ फूल ३ फल

...वृक्षके ऊपर डाले हैं जैसें हरडके पत्तेपर १ फूल पर २ और फलपर ३ सो जानो ग...

...री सहाय
...रको अन्य
...ना मानसिक
वह इस परि...
...होनेसे जहां ...
...त करदेवेंगे तो ...
...भी नहीं रहा ज...
...अन्वेषणका उद...
...ा सज्जन और दुर्ज...
...बुरे होनेकी समालो...
...जायगा और पलटंमें

१ पत्ते २ फूल ३ फल

...वृक्षके ऊपर डाले हैं जैसे हरडके पत्तेपर १ फूल पर २ और फल पर ३ सो जानो गे...

...सहाय
...रको अन्य
...ना मानसिक
वह इस परि...
होनेसे जहां...
...त करदेवेंगे तो...
...भी नहीं रहा ज...
...अन्वेषणका उद...
...सज्जन और दुर्ज...
बुरे होनेकी समाले...
जायगा और पलटमें

१ पत्ते २ फूल ३ फल

...रक्षके ऊपर डाले हैं जैसे हरडके पत्तेपर १ फूल पर २ और फल पर ३ सो जानो गे

...नूर-वृ. खर्ज...

सुहागा-टंकण.

नम्बर ३ आंवले का वृक्ष

...सहाय
...रको अन्य
...ना मानसिक
वह इस परि...
होनेसे जहां...
...त करदेवेंगे तो
...भी नहीं रहा ज...
...अन्वेषणका उद...
...सज्जन और दुर्ज...
बुरे होनेकी समाले...
जायगा और पलटमें

१ पत्ते २ फूल ३ फल

...वृक्ष के ऊपर डाले हैं जैसें हरड के पत्तेपर १ फूल पर २ और फलपर ३ सो जानो गे

पत्रांकमें उसी संस्कृत औषधको देखो.

नम्बर ३ आंवले का वृक्ष

१ पत्ते २ फूल ३ फल

...गी सहाय
...रको अन्य
...ना मानसिक
वह इस परि...
होनेसे जहां
...त करदेवेंगे तो
...भी नहीं रहा ज...
...अन्वेषणका उद...
...सज्जन और दुर्ज...
...बुरे होनेकी समाल...
...जायगा और पलटमें

...वृक्षके ऊपर डाले हैं जैसे हरड के पत्ते पर १ फूल पर २ और फल पर ३ सो जानो गे

प्रस्तावना.

प्रियवाचकवृंद !

आजकल अधिकतर वैद्यकका प्रचार हो रहाहै, परंतु जिसके विना कदापि चिकित्सक (वैद्य) नहीं हो सके, ऐसे निघंटुकी अबतक आवश्यकता बनीहुई है। यद्यपि इस आवश्यकताके दूर करने को जो एक दो छोटे बडे निघंटु छपेभी हैं, परंतु वह अतितृषामें ओसकी बूंदके समानही हैं। इस आवश्यकता के पूर्ण करने को मैंने इस **अभिनवनिघंटु** [कि जिसके गुणोंको इसका नामही प्रकाश कर रहाहै] छापनेका उद्योग कराहै। विना द्रव्योंके गुणदोष जाने रोगीके चिकित्साक्रमकी प्रवृत्ति नहीं होसक्ती इसीसे लिखाहै।

वैद्येन पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्यानामगुणागुणाः।
तदायत्तं हि भैषज्यं तज्ज्ञाने स्यात्क्रियाक्रमः॥

अर्थात् वैद्यको प्रथम द्रव्योंका गुणागुण जानना चाहिये, कारण कि, उन द्रव्यों के आधीन औषध आदिका बनानाहै। और उस ज्ञानके आधीन ही क्रियाक्रम कहाहै। तथा इसी निघंटुमें प्रथम लिखाहै।

निघंटुना विना वैद्यो विद्वान् व्याकरणं विना।
अनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयो हास्यस्य भाजनम्॥

अर्थात् निघंटुके विना वैद्य ... वाला ए तीनो अप...

अभ्यास (महावरा) अर्थात् अभ्यास नाम महावरेका है। कहीं २ [ ] ऐसा कैसिट्का चिह्न दीना है । यह चिह्न मूलसे जो विशेष अर्थ लिखा गया है उस वास्ते और जहां हमने कोई अपनी तरफसे विशेष वार्त्ता लिखी है उसपर दीनाहै। कहीं बहुतसे श्लोकोंका अर्थ “ ” हापष्टुपी चिह्न देकर लिखाहै, इसके बीचका जो अर्थ है वह प्रसंगवश जो प्रक्षिप्त श्लोक आगए हैं उनका है, मूलका नहीं है बहुतसे स्थलोंमें ग्रंथ बढनेके भयसे विना मूलके केवल अर्थमात्र ही लिखाहै परन्तु उनमेंभी जो स्थल विशेष जानने योग्य है उसको उसी पंक्तिमें जबरा अर्थात् मोटे अक्षरों में दिखाया है। जैसे + **पार्थिवक्षेत्रके लक्षण** + ९ नौ अक्षर मोटे अक्षरों में लिखेहैं, इसी प्रकार निघंटु के विना वैद्य तो इसमें **वैद्य** ए दो अक्षर मोटे दिखाए गयेहैं । कहीं २ प्रसंगवश मूलसे विपरीत अर्थ लिखाहै, जैसे “ **केन द्रव्येण संयुक्ता** ” इसमें **द्रव्य** शब्द पदार्थवाचक है परन्तु हमने प्रसंगवश उसका अनुपान अर्थ कराहै, इसी प्रकार अनेकार्थमें ग्रंथकारके क्रमको पलटकर अकाराक्षरके क्रमसे लिखाहै कि जिससे खोजनेके समय परिश्रम न होय- और कहीं २ सबकी समझमें जल्दी आयजावे इसवास्ते उरदूके शब्दभी इसमें ग्रहण करे हैं। तथा प्रसंगकी शृंखला मिलने को मूलकी व्याख्यामें व्यतिक्रमार्थभी करदीना है अर्थात् जो प्रथम लिखने योग्यहै उसको पीछे और पीछे लिखने योग्यको प्रथम लिखाहै ।

फिर जो औषध अपने ग्रंथोंमें उपलब्ध नहीं होतीं अर्थात् नहीं मिलतीं उनको अति परिश्रमके साथ प्राचीन ग्रंथोंसे संग्रहकर और उनकी नवीन टीका बनाकर लिखी हैं, अथवा अन्यान्य भाषाओंसे संग्रह करके लिखी गई हैं। फिर इस ग्रंथकी साधारण अनुक्रमणिका लिखकर वनस्पति आदि हिन्दी शब्दोंकी अनुक्रमणिका फिर दूसरे अकाराक्षरक्रमसे लिखी है और हिन्दी शब्दके आगे संस्कृतके नाम लिख दीने हैं कि जिनको हिन्दी नामसे औषधका निश्चय न होवे वह उसके आगे लिखे पत्रांकमें उसी संस्कृत औषधको देखके उसी औषधकी अन्यान्य

वृक्ष के ऊपर डाले हैं जैसें हरड के पत्तेपर १ फूल पर २ और फल पर ३ सो जानो गे

दूसरी वार छापनेकी प्रस्तावना.

सबको विदित होय कि पहिले दो हजार पुस्तकें छपीथीं उनकी ग्राहकगणों ने ऐसी चाहना प्रकट करी कि हाथोंहा सर्व पुस्तकें निकलगईं। फिरभी ग्राहकगणोंकी मांगके पत्र चले आते हैं। यद्यपि कलुषित चित्तवाले स्वार्थी ग्राहक कि जिनके हलक ही नहीं-उन दिवाकीर्तियों ने अपनी भर सक इसके विक्रय होने में अनेक बाधाऐं डाली, परन्तु धन परमात्माको है कि जिसकी कृपाकटाक्षसे उनके मनोरथ ध्वस्त हुए और हमको दूसरे छापने का सुअवसर मिला।

इसके पहिले पाठमें और अबके पाठमें जहां तहां मूल और टीका में कुछ अधिक पाठ बढ़ाया गया है और जिस देशभाषाके नाम प्रथम संस्करणमें नहीं आए वह अबके इसमें बढाये गये हैं और अपूर्व बात यह दिखाई है कि अनेक ओषधियों के ऊपर अनेक डाक्टर, हकीम और वैद्यों की संमति उसी २ ओषधि के नीचे टिप्पणी में डालदी गई है. तथा ओषधियों के चित्रभी पहिले की अपेक्षा अबके दूने होगए हैं। और अंत में परिशिष्टभाग बढाया गया है इसमें बहुतसी औषध जो प्रथम संस्करण में रहगई थीं उनका समावेश किया गया है।

इसप्रकार यह ग्रंथ पहिले से सवाया ड्योढा आकार का होगया और द्रव्यभी अधिक लगा है, परंतु लोभकी दृष्टि त्याग सबकी सुलभताके वास्ते कीमत वही २॥ अढाई रुपया रक्खा है। यद्यपि इस के मुद्रण होने में बहुत विलंब होगया है-परंतु क्या कराजाय मुंबई की महामारीही इसके विलंब होनेका प्रधान कारण है।

जिनके पास पहिली छपी पुस्तकहै यदि वह इसका परिशिष्टभाग लेनेकी इच्छाकरें तो ।) भेजनेसे परिशिष्टभाग पासकेंगे.

अब नीच दुर्जनों से सविनय प्रार्थना करने में आती है कि इस ग्रंथकी यद्यपि रजिस्टरी करायदीनी है, तथापि **"काकः सर्वरसान्भुक्त्वा विनाऽमेध्यंनतृप्यति"** इस वाक्य के चरितार्थ कर्त्ता मलमूत्रभक्षी जीवों की तरह आप लोग स्वभावके वशवर्ती हो व्यर्थ अपने चरित्रों का आदर्श न दिखावें। अन्यथा सन् १८६७ एक्ट २५ के अनुसार आपको तन, मन, धनसे [illegible] ... भरजाना [illegible] ... विदित होकि आजकल बहुतसे दूकानदार जिनसे आप पुस्त[illegible] ... यही लिख देते हैं कि अब पुस्तकही नहीं ... हैं, और बहुतसे तो ... उचित है कि इन धोकेवाजों से बचने के वास्ते ... लिख देनेपर इन ग्रामसिंहोंका धोखा ...

नम्बर १ हरड़ का वृक्ष
पत्रांक २४

१ पत्ते २ फूल ३ फल ४ सूखे फल

नम्बर २ बहेडे का वृक्ष
पत्रांक २५

१ पत्ते २ फल

नम्बर ३ आंवले का वृक्ष
पत्रांक २६

१ पत्ते २ फूल ३ फल

...ाकी सहाय...
...करको अन्य...
...ना मानसिक...
...वह इस परि...
...होनेसे जहां...
...त करदेवेंगे तो...
...भी नहीं रहा ज...
...अन्वेषणका उद...
...सज्जन और दुर्ज...
...बुरे होनेकी समालो...
...जायगा और पलटमें
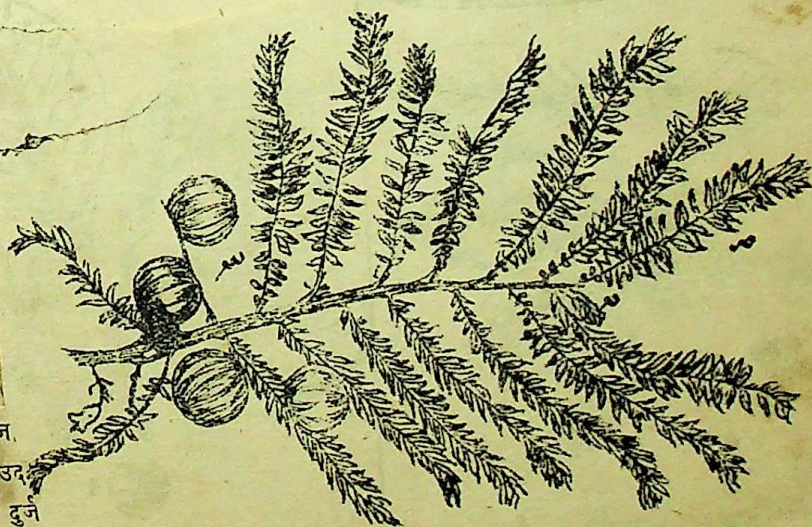
...वृक्ष के ऊपर डाले हैं जैसें हरड के पत्ते पर १ फूल पर २ और फल पर ३ सो जानो गे

नम्बर ४ काले जीरे का वृक्ष
पत्रांक ३६

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ५ काली मिर्च
पत्रांक ३२
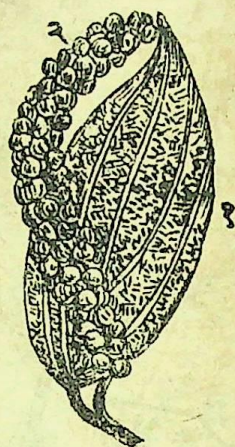
१ पत्ते २ फल

नम्बर ६ अमलतास किरवारो वृ
पत्रांक ४७
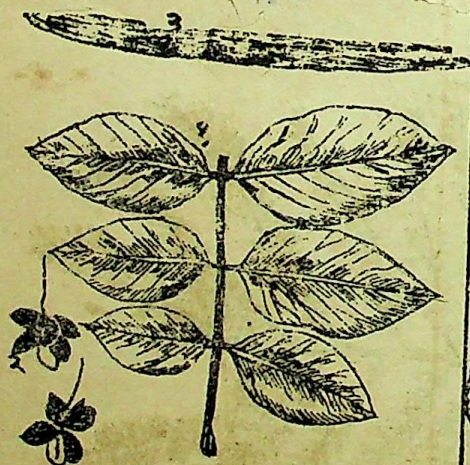
१ पत्ते २ फूल ३ फली ४ बीज

नम्बर ७ मैनफल का वृक्ष
पत्रांक ४८

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ८ माल कांगनी का वृक्ष

पत्रांक ५०

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ९ चोक (पीले दूधकी कटेरी)

पत्रांक ५२

१ पत्ते २ फूल ३ फल ४ बीज

नम्बर १० धाय का वृक्ष

पत्रांक ५४

१ पत्ते २ फल

म्बर ११ बावची नगद बावची का वृक्ष

पत्रांक ५७

१ पत्ते २ फूल ३ बीज

नम्बर १३ भांग का क्षुप
पत्रांक ६२
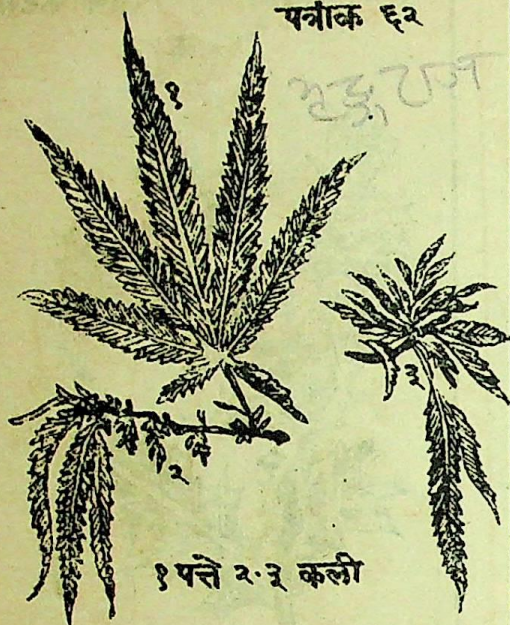
१ पत्ते २·३ कली

नम्बर १४ पोस्त और अफ़ीम का क्षुप
पत्रांक ६२

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर १५ दुलायची का वृक्ष
पत्रांक ७८
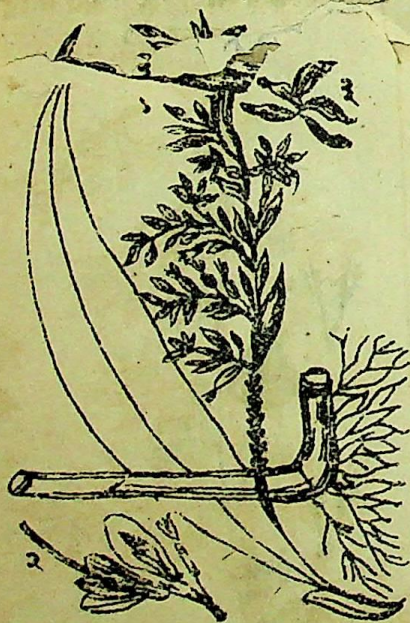
१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर १६ तज वा दाल चीनी का वृक्ष
पत्रांक ७९

१ पत्ते २ फूल

नम्बर १६ बेल का वृक्ष

पत्रांक ६०

१ पत्ते २ फूल ३ फल ४ बीज

नम्बर १७ अरनी अगेथ का वृक्ष

पत्रांक ६२

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर १८ छोटी कटरी

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर १९ गोखरू का झाड

पत्रांक ६४

१ पत्ते २ फूल ३-४ फल

नम्बर २० अंड तथा एरंड का वृक्ष

पत्रांक ९७

१ पत्ते २ फूल

नम्बर २१ अडूसा तथा बांसा
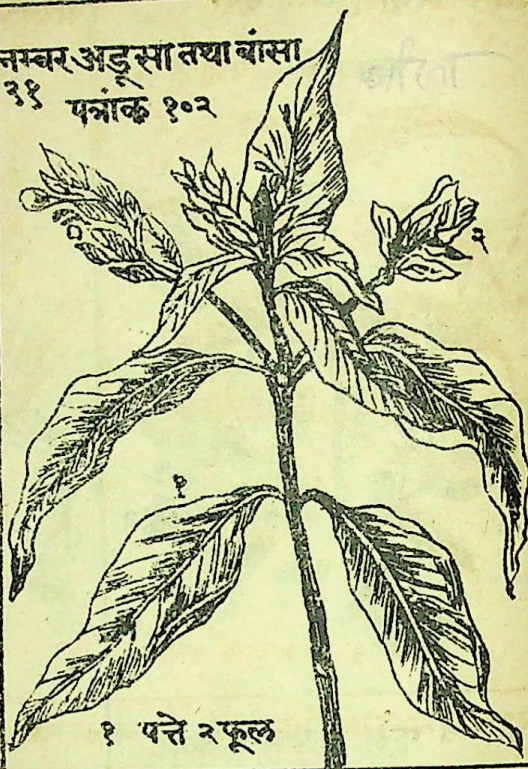
पत्रांक १०२

१ पत्ते २ फूल

नम्बर २२ धतूरे का वृक्ष

पत्रांक १०२

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर २३ नीम का वृक्ष

पत्रांक १०३

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर २४ निर्गुंडी तथा सम्हालू का दरख्त

पत्रांक १०५

१ पत्ते २ फूल

नम्बर २५ कोयल तथा गिरकर्णी

पत्रांक १०७

१ पत्ते २ फूल ३ फली ४ बीज

नम्बर २६ कूड़ा कुटज का वृक्ष

पत्रांक १०८

१ पत्ते २ फूल ३ फली ४ इंद्र जो

नम्बर २७ कंजा तथा करंजा
पत्रांक १०८
१ पत्ते २ फूल ३ फल ४ बीज
नम्बर २८ लताकरंज सागर गोटा
पत्रांक १०९
१ पत्ते २ फूल ३ फल ४ बीज
नम्बर २९ कौंच वा किवांछ
पत्रांक ११०
१ पत्ते २ फूल ३ फली
नम्बर ३० बांस का वृक्ष
पत्रांक ११४
१ पत्ते २ फूल
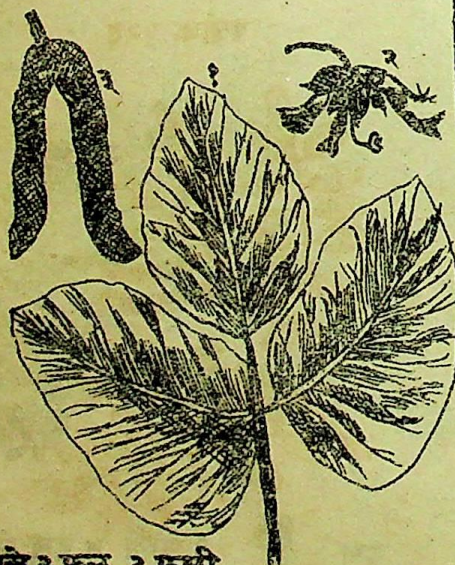
नम्बर ३१ पाढ़ वा पाठा की बेल

पत्रांक १२०

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ३२ निसोथ

पत्रांक १२१
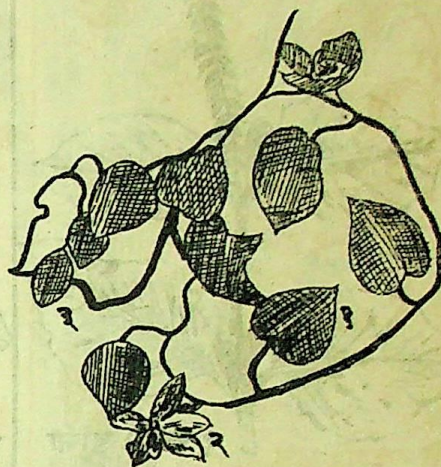
१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ३३ इन्द्रायन फरफेंदू

पत्रांक १२३

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ३४ सरफोंका

पत्रांक १२५

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ३५ ओंगा वा चिरचिरा

पत्रांक १२६

१ पत्ते २ डाली

नम्बर ३६ मकोय वा चिरपोटन

पत्रांक १३२

१ पत्ते २ पत्तेके ऊपर आया हुआ फल ३ फूल ४ बीज

नम्बर ३७ गोभी

पत्रांक १३८

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ३८ अगस्तिया का वृक्ष

पत्रांक १४५

१ पत्ते २ फूल ३ फली

नम्बर ३९ आंब

पत्रांक १५७

१ पत्ते २ फूल (मौर) ३ फल

नम्बर ४० नारियल

पत्रांक १६१
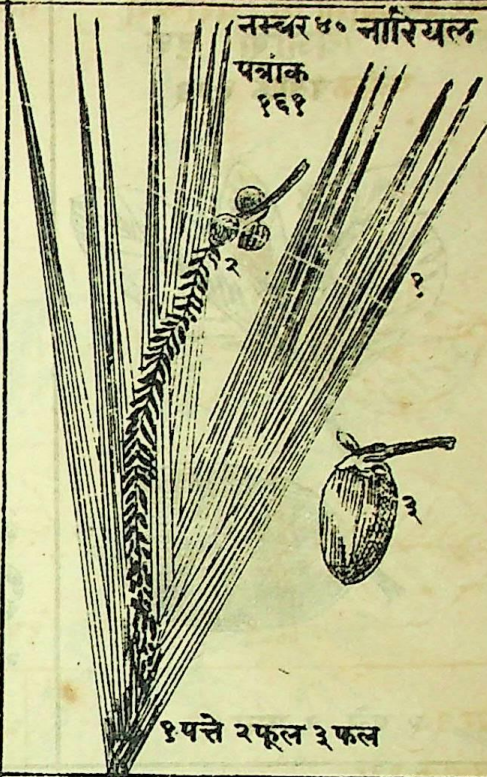
१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ४१ कैथ

पत्रांक १६३
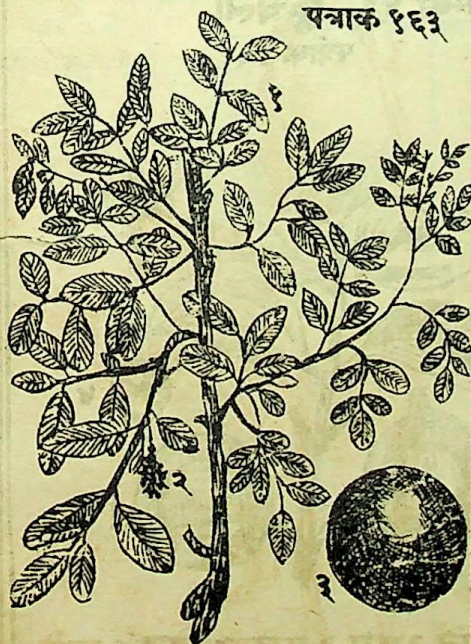
१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ४२ नारंगी

पत्रांक १६३

१ पत्ते २ फूल की कली ३ फल

नम्बर ४३ बिजारा वृक्ष
पत्रांक १७३

१ पत्ते २ फल

नम्बर ४४ गूलर वृक्ष
पत्रांक १४०

१ पत्ते २ फल

नम्बर ४५ सेमर का वृक्ष
पत्रांक १५३

१ पत्ते २ फूल ३ डोड़ा ४ बीज

नम्बर ४६ कुचला
पत्रांक १६५
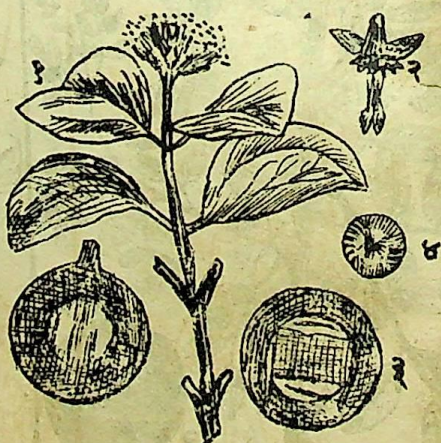
१ पत्ते २ फूल ३ फल ४ बीज

नम्बर ४७ कृष्ण सारिवा (अनंतमूल)

पत्रांक १२९

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ४८ कटुका (कुटकी)

पत्रांक ४७

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ४९ कीटमारी

परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ जड़

नम्बर ५० आत्रिप्य (शरीफ़ा-सीताफल)

परिशिष्ट में देखो
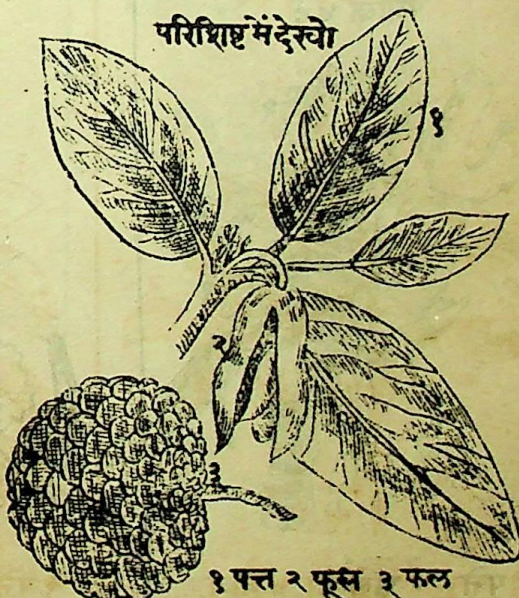
१ पत्त २ फूल ३ फल

नम्बर ५१ **राल**

पत्रांक ७८

१ पत्ते

नम्बर ५२ **शाल वृक्ष**

पत्रांक १४८

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ५३ **रास्ना**

पत्रांक ४९

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ५४ **राई**

पत्रांक १९९

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ५५ **रेवतचीनी** (पीतमूली)
पत्रांक ५३
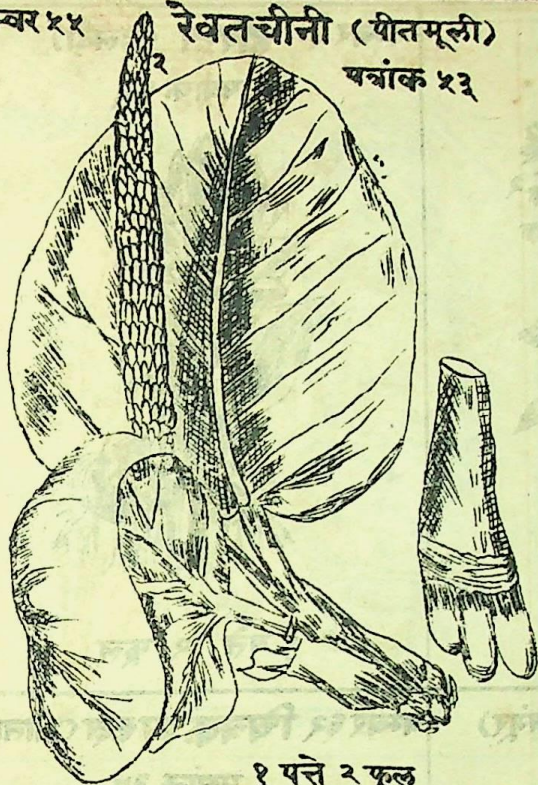
१ पत्ते २ फूल

नम्बर ५७ **पृष्ठिपर्णी** (पिठवन)
पत्रांक ६३

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ५६ **पेरुक** (सफरी)
परिशिष्ट में देखो
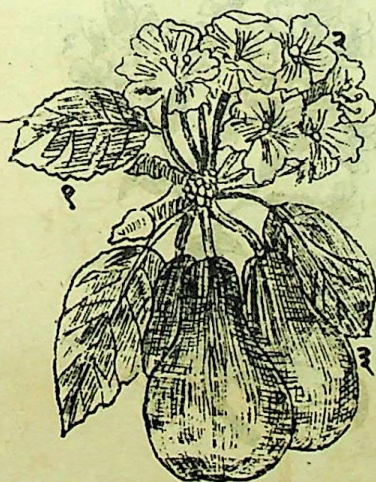
१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ५७ **करनफल, पाथी, लौंग**
पत्रांक ७८

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ५९ हींग का वृक्ष
पत्रांक ३९

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ६० हरिद्रा (हलदी)
पत्रांक ४६

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ६१ द्राक्षा दारव (मुनक्का · अंगूर)
परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ फल

नम्बर ६२ चित्रक का वृक्ष (चीता)
पत्रांक ३७

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ६३ वाराहीकंद (गेंठी)

परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ फूल ३ जड़

नम्बर ६४ यष्टी (मुलहटी)

परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ६५ महाराष्ट्री (मरेठी)

परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ६६ गजपीपल

परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ६७ कमल
पत्रांक १२६
२
१
१ पत्ते २ फूल

२
नम्बर ६८
केशर
पत्रांक ८०
१
१ पत्ते २ फूल
३ जड
३

नम्बर ६९ चोबचीनी
परिशिष्ट में देखो
१
२
१ पत्ते २ फूल
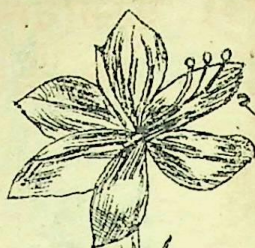
नम्बर ७० शतावरी
१
पत्रांक ११६
२
१ पत्ते २ फूल

नम्बर ७१ कालादाना

परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ फूल

नम्बर ७२ जमालगोटा

परिशिष्ट में देखो
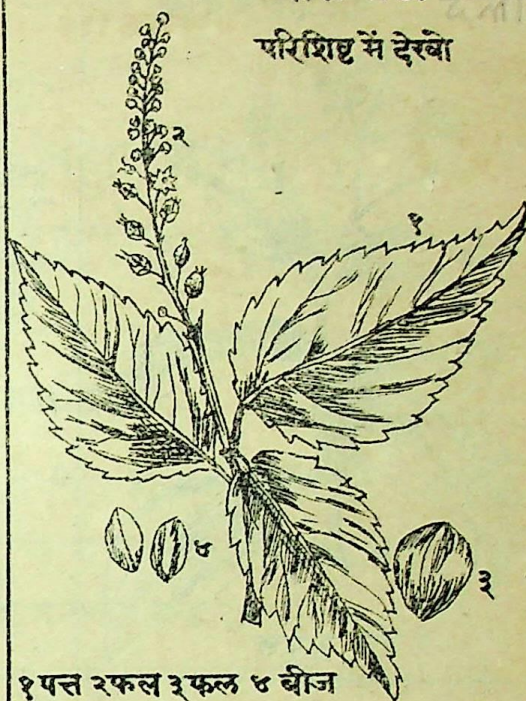
१ पत्त २ फल ३ फूल ४ बीज

नम्बर ७३ खुरासानी अजवायन

परिशिष्ट में देखो
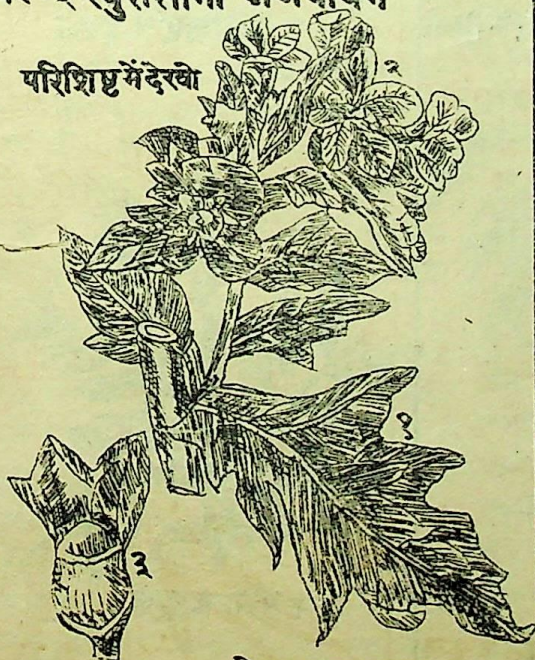
१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ७४ अदरख

परिशिष्ट में देखो
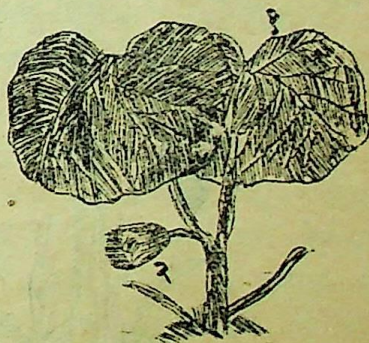
१ पत्ते २ फूल

नम्बर ७५ दालचीनी
परिशिष्ट में देखो
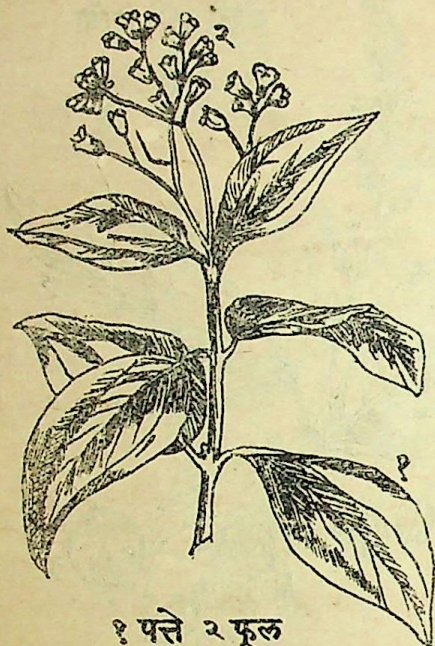
१ पत्ते २ फूल

नम्बर ७६ आम्रातक (आमड़ा)
परिशिष्ट में देखो
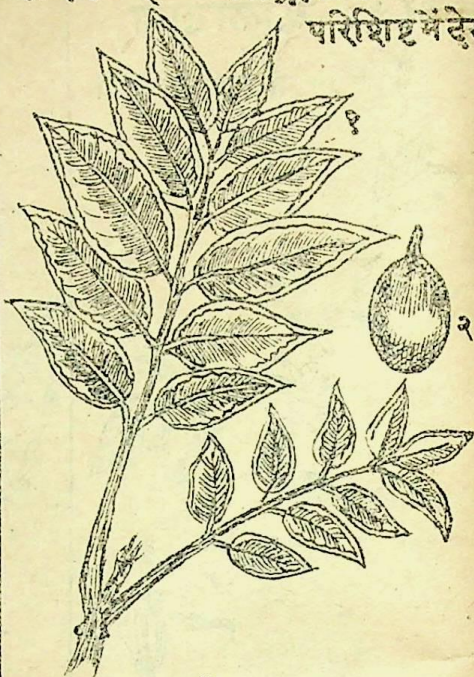
१ पत्ते २ फल

नम्बर ७७ कदली (केला)
परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ फूल ३ फल

नम्बर ७८ कर्कट शृंगी (काकड़ासिंगी)
परिशिष्ट में देखो

१ पत्ते २ फूल

बाकी तसवीरें दूसरे खंड के दूसरे भाग में आवेंगी

श्रीशम्बन्दे
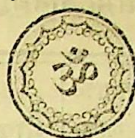
श्रीनिकुंजविहारिणे नमः

अथ अभिनवनिघंटु प्रारम्भः ।

मंगलाचरण.

श्रीकृष्णं विहरंतमद्य विविधं बृन्दावने राधया
श्रीतातं रमया प्रणम्य च सदा श्रीकृष्णलालाभिधम् ।
कुर्वेऽनेकमहौषधीगुणगणागारेभ्य आकृष्य च
ग्रंथेभ्योऽभिनवं निघंटुमधुना श्रीदत्तरामाभिधः ॥ १॥

निघंटुकी आवश्यकता ।

निघंटुनाविनावैद्यो विद्वान्व्याकरणंविना ।
अनभ्यासेनधानुष्कस्त्रयोहास्यस्यभाजनम् ॥

अर्थ-विना निघंटुके **वैद्य,** व्याकरणके विना **विद्वान्** (पंडित) और विना अभ्यास (महावरे) के **धानुष्क** (तीरका निसाना मारनेवाला) ए तीनों **हास्य** नामें **हांसीके** योग्य हैं अर्थात् अपनी हंसी करानेवाले हैं ।

यद्यपि वैद्यकशास्त्र **त्रिस्कंध** (हेतु लिंगौषधात्मक) है--परन्तु इसमें भी **औषधका** जानना वैद्यको अत्यन्तही आवश्यक है-जैसे **चरकमें** लिखा है ।

औषधंह्यनभिज्ञातंनामरूपगुणैस्त्रिभिः ।
विज्ञातंवापिदुर्युक्तंयुक्तिबाह्येनभेषजम् ॥

अर्थ-जो **औषधी** नाम, रूप, और गुणोंकरके **अनभिज्ञात** (नहीं जानी गई) है अथवा जो जानकर भी **दुर्युक्त** कहिये मात्रा, काल, देश, वल, अग्नि-वलादिकोंके विचारानुसार नहीं दीनी गई । अथवा मिथ्यायोग और अतियोगों करके युक्त जो औषधि है वो **अनर्थकारी**है । इसीसे जो युक्ति (तजवीज) से **बाह्य** औषधी है वो **भेषज** नहीं कहलाती. और भी लिखा है.

यथाविषंयथाशस्त्रंयथाग्निरशनिर्यथा ।
तथौषधमविज्ञातंविज्ञातममृतंयथा ॥

अर्थ-जो **औषधी** नाम, रूप, और गुणोंकरके **अविज्ञात** कहिये नहीं जानी गई वो-विष, शस्त्र, अग्नि, और वज्रपातके सदृश तत्काल **प्राणहरण** करनेवाली है । एवं जो नाम, रूप, और गुणोंकरके **विज्ञात** (जानी गई) है, वो **अमृतके समान** जरा मरण आदि को दूर करे है । इसीसे औषधोंके योगोंके ज्ञाताको ही **सर्वोत्तम वैद्य** कहा है यथा—

योगमासान्तुयोविद्याद्देशकालोपपादितम् ।
पुरुषंपुरुषंवीक्ष्यसविज्ञेयोभिषक्तमः ॥ १२ ॥

अर्थ-जो प्राणी प्रत्येक पुरुष के देह, वल, प्रकृति,

सत्त्व, सात्म्य, दोषबल, व्याधिबल और अवस्थाके अनुसार इन औषधोंके नाम, रूप अभिज्ञान करके तथा देशविशेष-कालविशेष (ऋतुविशेष) के ज्ञानपूर्वक-इन देशकालमें कहेहुए योगोंको अर्थात् मात्राकी कल्पना करके **अथवा** एक औषधको दूसरी औषधमें मिलाकर **अथवा** क्वाथ आदि बनाकर वा पीनेकी विधि इत्यादि प्रयोगोंको जानता है वह **भिषक्तम** अर्थात् **सर्वोत्तम वैद्य** जानना।

इस श्लोकके कहनेसे यह तात्पर्य है कि जो केवल औषधोंके नाम रूप मात्रको जाने **अथवा** जो केवल इनके प्रयोगमात्रको जानता है उसको **वैद्य** नहीं कहते किंतु जो नाम, रूप, गुण और प्रयोग दोनोंको जानता है उसीकी **वैद्यसंज्ञा** है। इसवास्ते **वैद्यको औषधोंके** नाम, रूप, गुण, और प्रयोगविधि सर्वथा जानने योग्य हैं।

तहां औषधोंके जाननेका प्रयत्न.

औषधीर्नामरूपाभ्यांजानंतेह्यजपावने।
अविपाश्चैवगोपाश्चयेचान्येवनचारिणः॥ ६७॥

अर्थ-औषधीके **नाम** (जिस नामसे मनुष्य जान जावे) और **रूप** (उस औषधीके वृक्ष, पत्ते, फूल, फलादि) को वनमें बकरी चरानेवाले; भेडोंके चरानेवाले; गौके चरानेवाले (ग्वारिया) इसी प्रकार अन्य जो वनवासी संन्यासीआदि हैं वो जानते हैं यह **चरकमें** लिखा है।

गोपालास्तापसाव्याधायेचान्येवनचारिणः।
मूलाहाराश्चयेतेभ्योभेषजव्यक्तिरिष्यते॥

अर्थ-सुश्रुतकेभी **भूमिप्रविभागविज्ञानीयाध्यायमें** कहा है कि ग्वारिया, तपस्वी, व्याध (भील चुआड) और जो वनमें रहनेवाले माली काछी, संन्यासीआदि हैं, तथा जो कंदके भोजन करनेवाले हैं उनसे औषधोंका ज्ञान वैद्यको प्राप्त हो सक्ता है। **राजनिघंटुमेंभी** लिखा है जैसे-

आभीरगोपालपुलिन्दतापसाः
पान्थास्तथान्येपिचवन्यपारगाः।
परीक्ष्यतेभ्योविविधौषधाभिधां
रसादिलक्ष्माणिततःप्रयोजयेत्॥ ६५॥

अर्थ-**आभीर** (ग्वारिया, ग्वाल, अहीर) **गोपाल** (गौ भैंसके चरानेवाले), **पुलिन्द** (म्लेच्छ, गौंण, चुआड, धागड), **तपस्वी** (जो वनमें तपस्या करा करते हैं), **पांथ** (जो नित्य राह चला करते हैं अर्थात् पथिक वा बटोही), तथा अन्य जो वनके जाननेवाले (माली, काछी, भील आदि हैं) इनसे प्रथम अनेक प्रकारकी **औषधोंके** नाम और रसादि लक्षणोंको निश्चय करके फिर उनको वैद्य **प्रयोगमें** योजना करे।

नामज्ञान और रूपज्ञानसे वैद्य नहीं होता.

ननामज्ञानमात्रेणरूपज्ञानेनवापुनः।
औषधीनांपरांप्राप्तिंकश्चिद्वेदितुमर्हति॥ ६६॥

अर्थ-केवल **नाममात्र** जाननेसे वा केवल **रूप** जानने मात्र करके औषधोंकी परम प्राप्ति अर्थात् उनके कर्मका प्रभाव और गुणाविक्यको कोई नहीं जान सके। इसीसे बकरी और भेड़ आदि चरानेवालोंको **तत्त्ववेत्तापना** नहीं है। तो **तत्त्ववेत्तापना** किसको है ? तहां कहते हैं।

योगविन्नामरूपज्ञस्तासांतत्त्वविदुच्यते।
किंपुनर्योविजानीयादौषधीःसर्वथाभिषक्॥

अर्थ-जो औषधोंके योग (औषधोंके मिलाने) को तथा नाम और रूपको जानता है, उनको आयुर्वेदके ज्ञाता **तत्त्ववेत्ता** अर्थात् **यथार्थवेत्ता** कहते हैं और जो प्रत्येक पुरुषको देखकर देश कालमें के योग ज्ञानको तथा औषधोंके रस, गुण, वीर्य विपाक, प्रभावादिकोंको सर्वथा जानता हो। उस वैद्यको **तत्त्ववेत्ता** कहनेमें क्या कहना है ? अर्थात् वो तो **तत्त्ववेत्ता** है ही।

योगादपिविषंतीक्ष्णमुत्तमंभेषजंभवेत्।
भेषजंवापिदुर्युक्तंतीक्ष्णंसंपद्यतेविषम्॥ ६८॥

अर्थ-तीक्ष्ण (प्राण हरण करनेवालाभी) विष योग (दोष, धातु, अवस्था, अग्निबल, बल, शरीर प्रकृति, सत्व, सात्म्य, व्याधिबल, इत्यादि विचारके द्रव्यांतरके साथ मिलाकर, देश, काल मात्राके अनुरूप प्रयोग) से उत्तम (सात्म्य और स्वस्थ तथा रोगीको हितकारी) औषधरूप हो जाता

[किंतु वह तीक्ष्णविष प्राणोंको नहीं हरण करे) और उत्तम औषधीभी है परन्तु उसको विपरीततासे देवे तो वो प्राणों के नाश करने में घोर विषरूप हो जाती है।

तस्मान्नभिषजायुक्तंयुक्तिबाह्येन भेषजम्।
धीमता किंचिदादेयं जीवितारोग्यकांक्षिणा ॥

अर्थ--ऊपर कहेहुए कारण से युक्ति बाह्य (विना उस औषध देने के नियम जाने) वैद्यकी दीनी हुई भी औषधको जो अपने जीनेकी और आरोग्यकी इच्छा करने वाला बुद्धिमान् पुरुषहै वो किंचिन्मात्र भी न लेवे। [अर्थात् भलेही वैद्य हो और उसके पास परमोत्तम औषधी क्यों न हो परन्तु जबतक उसकी देनेकी मात्रा के नियमों को न जानता हो न लेवे। यदि लेयगा तो जीवन और आरोग्यता दोनों से हाथ धो बैठेगा.]

कुर्यान्निपतितोमूर्ध्निसशेषंवासवाशनिः।
सशेषमातुरं कुर्यान्नत्वज्ञमतमौषधम् ॥ १०० ॥

अर्थ--मस्तक के ऊपर इन्द्रका वज्रपात गिरा हुआ भी कदाचित् इस पुरुष को जीवित रखता है। अर्थात् मारता नहीं है--परन्तु **मूर्ख** की दी हुई औषध रोगी के प्राणों को कदाचित् नहीं छोड़े। अर्थात् सर्वथा रोगी के प्राण लेती है। इसी वास्ते मूर्ख की दीहुई औषध को रोगी सर्वथा त्याग देवे। परन्तु हम इस हिंदुस्थान में जहां देखते हैं तहां प्रायः मनुष्य मूर्ख वैद्य, मूर्ख हकीम, मूर्ख डाक्टर की ही औषध करते हैं और अपने प्राणों को तथा धनादि सर्वस्व को उनके अर्पण कर देते हैं। इत्यादि प्रमाणों से यह सिद्ध हुआ कि जो वैद्य औषधों के गुण, रूप, और योगोंको नहीं जाने वो सर्वथा निंदित है, उसके हाथ की औषध प्राण नाश के समय भी न लेवे। इससे मुख्य कर्त्तव्य औषधों की परीक्षा करना ही वैद्यका कार्य है। इस वास्ते हम **औषधपरीक्षा** का **क्रम** और उस क्रमके जानने से पूर्व कौन २ वस्तु की आवश्यकता है सो एक प्रणाली के साथ लिखते हैं।

औषध के लक्षण.

वैद्योव्याधिंहरेद्येन तद्द्रव्यंप्रोक्तमौषधम्।
तथाहशमवश्यंस्याद्रोगघ्नं तादृशं ब्रवे ॥ १ ॥

अर्थ--वैद्य जिससे रोगोंको हरण करे उस द्रव्यको **औषध** कही है। रोगनाशक औषध जैसी लेनी चहिये उसको हम कहते हैं।

प्रशस्तदेशे संजातं प्रशस्तेहनिचोद्धृतम्।
अल्पमात्रंबहुगुणंगंधवर्णरसान्वितम् ॥ २ ॥
दोषघ्नमग्लानिकरमविकंनविकारियत्।
समीक्ष्यकालेदत्तंचभेषजंस्याद्गुणावहम् ॥ ३ ॥

अर्थ--जो उत्तम स्थानमें प्रकट हुई हो और उत्तम दिनमें उखाड़ी गई हो। एवं जो थोड़ीसी देनेपर बहुत गुण करे। जिसमें उत्तम गंध आती हो और रस करके परिपूर्ण हो [सूखी सड़ी न हो] वातादि दोषोंके नाश करनेवाली और सेवन करते समय ग्लानि [नफरत] न करे। कदाचित् अधिक मात्रा दे दी जाय तो विकार न करे। तथा देश काल को विचारके दीनी गई हो ऐसी औषधी गुणकारी होती है। अब यह लिख आएहैं कि उत्तम स्थानमें प्रकट हुई औषध लेवे इस वास्ते औषधके स्थाननिर्णय करने के **देशभेदको** कहतेहैं।

देश.

भूमिदेशस्त्रिधाऽनूपोजांगलोमिश्रलक्षणः ॥

अर्थ--भूमिदेश तीन प्रकारकाहै, **अनूप, जांगल,** और **मिश्रलक्षण।**

अनूपदेशकेलक्षण.

नदीपल्वलशैलाढ्यःफुल्लोत्पलकुलैर्युतः।
हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः ॥ ५ ॥
शशवाराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः।
प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्योनीलसस्यफलान्वितः ॥ ६ ॥
अनेकशालिकेदारकदलीक्षुविभूषितः।
अनूपदेशोज्ञातव्योवातश्लेष्मामयार्त्तिमान् ॥

अर्थ--नदी, तलैया, पर्वत इन करके युक्त, फूले-कमलों के समूह करके युक्त-हंस, सारस, जलमुर्गावी चकवा चकवी करके सेवित, शशा, सूअर, भैंसा, रुरु, रोहि इनके समूहसे आकुल, अतिवृक्षों और पुष्पों करके युक्त, नीली दूब, और फलोंसे युक्त, अनेक प्रकार के शालिधान्यों के खेत, केला के वृक्ष, ईख इनसे विभूषित इत्यादि लक्षणों से युक्त **अनूपदेश** जानना यह **बात** और

कफ के रोगों को **पैदा** करनेवाला है । जैसे कश्मीर तिब्बत, काबुल हैं ।

जांगलदेशकेलक्षण.

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः ।
शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कंधुसंकुलः ॥ ८ ॥
हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखरसंकुलः ।
सुस्वादुफलवान्देशो वातलो जांगलःस्मृतः ॥

अर्थ–जो **देश** आकाशके समान शुभ्र और ऊंचा हो, जिसमें थोड़े जलाशय (बावड़ी कूआ आदि) और जहां तहां थोड़े वृक्षहों तथा छोंकरा, करील, बेल, आक, पीलू और बेर इत्यादि वृक्षोंकरके संकुलित, तथा हरिण एण (कालाहरिण) रीछ, चीता, रोज, और गधा, ए अधिक हों एवं स्वादु (मीठे) फल प्रगटहों, उस **देश** को **वात** कर्त्ता **जांगलदेश** जानना ।

बहूदकनगोऽनूपःकफमारुतरोगवान् ।
जांगलोऽल्पांबुशाखीचपित्तासृङ्मारुतोत्तरः ॥

अर्थ–**ग्रंथांतर** में लिखाहै कि जिस देशमें जल और पर्वत अधिकहों, वो कफ और **बादी**के रोग करता **अनूपदेश** है । एवं जिसमें जल और वृक्ष थोडेहों वो पित्त, रुधिर और वादीके रोग करनेवाला **जांगलदेश** है।

साधारणदेशके लक्षण.

संसृष्टलक्षणो यस्तुदेशः साधारणो मतः ।
समाःसाधारणेयस्माच्छीतवर्षोष्णमारुताः ।
समतातेन दोषाणांतस्मात्साधारणोवरः ॥

अर्थ–अनूपदेश और जांगलदेशके मिलेहुए लक्षणवाला **साधारणदेश** जानना । इसमें सरदी, वर्षा, गरमी, और पवन ए समान रहते हैं । इसीसे वातादिदोष भी सम रहतेहैं, अतएव **साधारणदेश** सबमें उत्तम कहाहै ।

उचितवर्त्तमानस्य नास्तिदुर्देशजं भयम् ।
आहारस्वप्नचेष्टादौ तद्देशस्य कृते सति ॥१२॥

अर्थ–**सुश्रुत** कहता है कि जो प्राणी उचित आहार विहार करता है उसको **दुष्टदेश** का कुछ भय नहीं है, अतएव जिस देशमें रहे **उसी देश** के अनुसार आहार, विहार, निद्रा, और चेष्टा करनी चाहिये ।

यस्य देशस्य यो जंतुस्तज्जंतस्यौषधंहितम् ।
देशादन्यत्रवसतस्तत्तुल्यगुणमौषधम् ॥१३॥
स्वेदेशेनिचितादोषाअन्यस्मिन्कोपमागताः ।
बलवंतस्तथानस्युर्जलजाःस्थलजास्तथा ॥

अर्थ–**वृद्धवाग्भट** कहते हैं कि जिस देशका जो प्राणी है उसको उसी देशकी प्रकटहुई औषध **हितकारी** होती है, और अपने देशको त्यागके जो अन्यदेश में रहते हैं उनको उस देशके **तुल्य गुणकारी** औषध देवे । **अपनेदेश**में संचितदोष,**दूसरेदेश** में कुपित हुए होवें तो वो **बली** नहीं होते, उसीप्रकार **जलदेश**के **स्थल**में और **स्थल**देशके जलमें **हीनबली** जानने ।

क्षेत्रभेद.

क्षेत्रभेदंप्रवक्ष्यामिशिवेनाख्यातमंजसा ।
ब्राह्मंक्षात्रंचवैश्यंयंशौद्रंचेति यथाक्रमात् ॥

अर्थ–अब हम शिवके कहे क्षेत्रभेदको कहतेहैं। क्षेत्र चार प्रकारका है, जैसे १ ब्राह्मक्षेत्र, २ क्षात्रक्षेत्र, ३ वैश्यक्षेत्र, और ४ शौद्रक्षेत्र, इनके लक्षण नीचे भाषामें लिखतेहैं

१ **ब्राह्मक्षेत्र**–जिस पृथ्वीमें ढाकके वृक्ष और जल अधिक हो और कुशा अधिक होतीहो, सुन्दर सफेद मृत्तिका (मिट्टी) करके युक्त हो उसको शिवने **ब्राह्मक्षेत्र** कहा अर्थात् उस पृथ्वीकी **ब्राह्मण** संज्ञा है ।

२ **क्षात्रक्षेत्र**–जिस पृथ्वीका लालवर्ण हो, पर्वत, सिंह, व्याघ्र आदिके समूहों करके युक्त तथा घोर शब्द करनेवाले पशु, पक्षी और खैर आदिके वृक्षोंसे घिर रहाहो उसको शिवने **क्षात्र** अर्थात् **क्षत्रीक्षेत्र** कहाहै ।

३ **वैश्यक्षेत्र**–जिस पृथ्वी का वर्ण सुवर्णके समान पीला हो, और सुवर्ण के कणसे जिसमें मिलें तथा सिद्ध किन्नर देवताओं करके सेवित ऐसी पृथ्वीकी **वैश्यक्षेत्र** संज्ञा कही गई है ।

४ **शौद्रक्षेत्र**–जिस पृथ्वीका रंग काला होवे

और अनेक प्रकारकी घास ऊग रही हो, जिसमें तृण और बबूलके वृक्ष अधिक हों तथा अनेक प्रकारके धान्योंकी उत्पत्ति करके खेती करने वालों को प्रसन्न करने वाली हो उस पृथ्वी को शिव ने **शौद्रक्षेत्र** अर्थात् **शूद्र** संज्ञक जानना।

चतुर्विधक्षेत्रों से प्रकट द्रव्य के गुण.

द्रव्यं क्षेत्रादुदितमनघं ब्राह्मतात्सिद्धिदायि क्षात्रादुत्थं वलिपलितजिद्विश्वरोगापहारि। वैश्याज्जातंप्रभवतितरां धातुलोहादिसिद्धौ शौद्राद्देतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकंद्राक् १६

अर्थ—**ब्राह्मक्षेत्र**से उत्पन्न हुई द्रव्य (औषधी) सिद्धि दाता जाननी। **क्षत्रीक्षेत्र** की वली पलित (बुढ़ापे) को और संपूर्ण संसारके रोगों को नष्ट करे है। **वैश्यक्षेत्र** से प्रकट औषधी धातु लोह आदि की सिद्धि में अर्थात् रसायन आदि कर्ममें ग्राह्य है एवं **शूद्रसंज्ञक** क्षेत्रसे जो प्रकट हुई है वह औषधी अखिल रोगों को तत्काल दूर करने वाली जाननी।

ब्रह्मा, इंद्र, कुबेर, और पृथ्वी ये क्रमसे पूर्वोक्त ब्राह्मादि क्षेत्रों के देवता हैं यह प्रथम शिव ने कहा है। अब वह प्रत्येक क्षेत्र पंचभूतो करके पांच प्रकार का है उनको कहते हैं।

२ पार्थिव क्षेत्र के लक्षण—जो पृथ्वी पीले रंग के गोल कंकर और पत्थरों से रमणीय हो तथा उस पृथ्वीका रंग भी पीला हो, और जिसमें उत्तम मृग डोलते हों तथा वह खेत चौकोन होवे और वृक्ष भी प्रायः उसमें पीले रंग के फूलदार होवें, तथा वह जमीन करडी हो उसको **पार्थिव** अर्थात् **पृथ्वी** संबंधी खेत जानना।

२ आप्यक्षेत्र के लक्षण—जो खेत–आधे चंद्रमाके आकार हो और वर्ण–सफेद कमल के समान पत्थरोंसे युक्त हो और जो नदी नद आदि जलाशयों करके व्याप्त हो उस क्षेत्र (खेत) को **आप्य** अर्थात् **जलतत्त्व** संबंधी क्षेत्र जानना।

३ तैजसक्षेत्र के लक्षण—जो खेत–खदिर (खैर) आदि वृक्षों से व्याप्त हो और वहुत से चीते और बांस के वृक्ष हों तथा उस क्षेत्रका आकार त्रिकोण (तिकोना) हो और लाल पत्थर होवे उस क्षेत्रको **तैजस** अर्थात् **अग्नितत्त्व**संबंधी खेत जानना।

४ वायवीयक्षेत्र के लक्षण—जो खेत धूंसेर रंगका और धूंएके रंगके पत्थरों करके युक्त हो तथा वह षट्कोण अर्थात् छःकोनेवाला हो और शीघ्रगामी मृगादि पशुओं करके युक्त तथा शाक (तरकारी) और तिनकाओं से व्याप्त एवं जिसमें रूखे वृक्ष होवें उस क्षेत्रको **वायवीय** अर्थात् **पवनतत्त्व**सम्बन्धी क्षेत्र जानना।

५ अंतरिक्षसंबंधीक्षेत्रके लक्षण--जिस क्षेत्रका वर्ण अनेक प्रकार का हो तथा वह क्षेत्र गोल होवे तथा सफेद पर्वतों से व्याप्त और ऊंचा होवे, और जो स्थान देवताओं के वास योग्य हो उसको शिवने **अंतरिक्ष** क्षेत्र अर्थात् **आकाशतत्त्व**संबंधी खेत कहा है।

पंचविधक्षेत्रों से प्रकट द्रव्यके गुण.

द्रव्यं व्याधिहरं वलातिशयकृत्स्वादुस्थिरं पार्थिवं स्यादाप्यंकटुकंकषायमखिलंशीतं चपित्तापहम्। यत्तिक्तं लवणं च दीप्यमरुजिच्चोष्णंचतत्तैजसं वायव्यं तु हिमोष्णमम्लमवलंस्यान्नाभसंनीरसम्॥ १७॥

अर्थ--जो द्रव्य (औषधि) **पृथ्वी**संबंधी क्षेत्रसे प्रकट हुई है और जिसमें पृथ्वीतत्त्व अधिक है वो रोगनाशक और अत्यन्त बलकारी तथा स्वादिष्ट और स्थिर जाननी। एवं संपूर्ण **आकाश**संबंधी द्रव्य चरपरी, कषेली, और शीतल तथा पित्तके नाश करनेवाली जाननी। तथा जो औषधी कड़वी नमकीन अग्निके दीप्त करनेवाली रोगनाशक और गरम हो वह **तैजस** अर्थात् **अग्नितत्त्व**सम्बन्धी जाननी। और वयवीय कहिये **पवन**संबंधी द्रव्य यावन्मात्र हो वह तर और गरम हैं तथा खट्टी और नमकके रससहित है। उसी प्रकार आकाशसंबंधी द्रव्य यावन्मात्र हैं वो सब नीरस हैं अर्थात् उनमें किसी प्रकारका रस नहीं है।

पांचक्षेत्रोंके देवता—ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, और सदाशिव ये क्रमसे पृथ्वी आदि पांचोंक्षेत्रोंके पांच **अधिदेवता हैं** अर्थात् मालिक हैं।

वृक्षोंकी उत्पत्ति–जिस समय पहले वीर गरुडने युद्धमें संपूर्ण देवताओंकी सेनाको जीतके अमृतके कलशको शीघ्र हरण करा, उस समय उस कलशमें से जो अमृतके कणका पृथ्वीमें जहां तहां गिरे उन्हीं **कणकाओं**से ये संपूर्ण वृक्षादिक उत्पन्न हुए इनका **स्वामी** चंद्रमा है ।

तहां जो उत्तम विप्रादि क्षेत्रमें प्रगट हुए हैं वे ब्राह्मणादि कहलाते हैं और क्षत्रीआदि क्षेत्रसे प्रगट क्षत्री कहाते हैं । इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्रोंके अनुसार उनके विप्रादिभेद हैं। उनमें वैद्यको कदाचित् मोह न होजावे इस वास्ते उनके लक्षण कहते हैं ।

वृक्षोंमें ब्राह्मणादिभेद–जिन वृक्षोंके पत्ते, फूल, दंडी, और शाखा ये वड़े होवें उसको **ब्राह्मण** जातिका वृक्ष जानना और पूर्वोक्त पत्ते, फूल, दंडी, और शाखा इनके अत्यन्त लाल होनेसे **क्षत्री** जातिका वृक्ष जानना । एवं पीले होनेसे **वैश्य** और पत्र पुष्पादिक जिस वृक्षके काले होवें उसको **शूद्र** जातिका वृक्ष जानना ।

ब्राह्मणादि देनेका क्रम.

विप्रादिजातिसंभूतान्विप्रादिष्वेवयोजयेत् ।
गुणाढ्यानपिवृक्षादीन्प्रातिलोम्यं न चाचरेत् ॥

अर्थ–ब्राह्मण जातिमें उत्पन्न वृक्षादि (औषधीं) को विप्रादिकोंमें देवे, अर्थात् **ब्राह्मण** जातिकी औषधी ब्राह्मणको, **क्षत्री** जातिकी क्षत्रीको, **वैश्य** जातिकी वैश्यको, और **शूद्र** जातिकी औषधी शूद्रको वैद्य देवे । गुणयुक्त भी वृक्षोंको प्रतिलोम न करे, अर्थात् ब्राह्मण जातिकी औषधीको क्षत्री वैश्य और शूद्रको न देवे, इसीप्रकार शूद्र जातिकी औषधी ब्राह्मण, क्षत्री आदिको न देनी चाहयें ।

द्रव्यभेद.

किंचिद्दोषप्रशमनं किंचिद्धातुप्रदूषणम् ।
स्वस्थवृत्तौमतंकिंचित्त्रिविधंद्रव्यमुच्यते ॥

अर्थ–कोई **द्रव्य** वातादि दोषोंको शमन करनेवाली है, कोई रस रक्तादि धातुओं को दूषित करनेवाली है और कोई द्रव्य स्वस्थवृत्तिमें अर्थात् आरोग्य प्राणीको हितकारी है । इस प्रकार इस संसारमें जितने द्रव्य हैं सब **तीनप्रकार**की हैं ।

तत्पुनस्त्रिविधंज्ञेयंजांगमौद्भिदपार्थिवम् ।

अर्थ–फिर वही द्रव्य जंगम, औद्भिद और पार्थिवके भेद से तीन प्रकार की है.

१ **जंगमद्रव्य**–सहत, गोरस (दूध, दही) जीवोंका पित्ता, वसा, मज्जा, रुधिर, मांस, विष्ठा, मूत्र, चमड़ा, वीर्य, हड्डी, स्नायु (नस), सींग नख (नाखून) खुर, वाल, रोम, और रोचन ये **जंगम** (मनुष्य) पशु पक्षी आदि से ग्रहण करे जाते हैं ।

२ **पार्थिवद्रव्य**–सोना, चाँदी रांगा, ताँवा लोहा, जस्ता, शीसा, कीटी, शिलाजीत, वालू, रेत, चूना, मनसिल, हरिताल, चंद्रकान्त आदि मणि (मोती, मूंगा, हीरा, वेकांत) निमक (सैंधवादिक) गेरू, खड़िया, मृत्तिका, रसोत, इत्यादि जो **पृथ्वी** संबंधी द्रव्य ग्रहण करी जाती हैं । ये **भौमद्रव्य** कहलाती हैं ।

३ **औद्भिदद्रव्य**–पृथ्वी को फाड़कर जो निकले उनको **औद्भिद** द्रव्य कहते हैं । जैसे वृक्षादि वह औद्भिद द्रव्य चार प्रकार की है, जैसे–१ वनस्पति, २ वीरुध, ३ वानस्पति, और ४ औषध.–

१ **वनस्पति**–जो विना फूल के फले उनको **वनस्पति** कहते हैं जैसे–वड़, पीपर, गूलर, पाखर आदि [ये वनों के पति होनेसे **वनस्पति** कहलाते हैं ।
२ **वीरुध**–जो फल फूल वाली होकर लता (वेल) स्तंव (गुच्छा) और गुल्म [छोटे से वृक्ष में से अनेक डाली फूटकर सघनता] करके युक्त हो उनको **वीरुध** कहते हैं जैसे–पान की, गिलोय की वेल, धमासा अडूसा, आदि जानने [जो लताओं के फैलनेसे बढ़कर वहुतसी जमीन को घेर लेवे उसको वीरुध कहते हैं ।

—१ जैसे–मक्खियों से सहत, गौ से घी, दूध, मोर, मछली आदि का पित्ता, सूअरकी चरवी, खटमलका रुधिर, वीरवहूटी का मांस, गौ और वालक आदिका मल मूत्र, मृग, वाघ आदि का चमड़ा, हाथी आदि का दांत, मृग आदिके सींग, सिंह वाघ आदिके नाखून, घोड़ेके खुर, मुरगोंके पूंछके वाल, वकरीके रोम, मृगकी कस्तूरी, गौआदिका गोरोचन ।

ये चरकमें लिखा है । ३ **वानस्पति**–जो फूल आनकर फले उनको वानस्पति कहते हैं और भाषा में उनको **वनास्पति** कहते हैं, वो आम, जामन, नींबू, नारंगी, केला आदि जानने । बहुत से आम आदि वृक्षोंमें फूल ही आता है फल नहीं लगते वो दूषित जानने, वास्तवमें आम आदि फलवानही होते हैं [फूल फल करके प्रधान जो वनस्पति वृक्ष हैं वोही **वानस्पत्य** कहलाते हैं]. **४ औषधी**–जो फलके पाक होनेसे नष्ट हो जावे उनको **औषधी** कहते हैं । जैसे गेहूं, चना, जों, चावल, आदि जानने [औषधि यह शब्द उषदाहे धातु से बनता है, इसीसे जो पंचभूतों की आग्नि से फल के पकनेके पश्चात् ग्रहण करी जावे उनको औषधी कहा है.]

सुश्रुत भी लिखता है कि प्राणियों का मूल आहार, और बल, वर्ण तथा ओज ये **छःरसोंके** आधीन हैं । वो छःहो रस **द्रव्यके** आश्रय हैं । द्रव्य **औषधीनके** आश्रय है वो **औषधी** दो प्रकार की है एक स्थावर, दूसरी जंगम, तिनमें **स्थावर** चार प्रकार की हैं, और **जंगम** भी चार प्रकार की हैं, इनमें **स्थावर** के भेद कह आए हैं अब चतुर्विध **जंगमोंको** कहते हैं । जैसे– जरायुज, अंडज, स्वेदज, और उद्भिज । तहां पशु, मनुष्य, व्यालादिक **जरायुज** हैं । पखेरू, सर्प, विच्छूआदि **अंडज** हैं कृमि, कीट, जूआ, लीख **स्वेदज** हैं । इसी प्रकार इन्द्रगोप (वीरवहूटी) मेंडका आदि **उद्भिज** हैं ।

इस जगहभी प्राणियोंके आहार द्रव्यता करके औषधी दो प्रकार की कही है किन्तु औषधी सर्वथा दो प्रकार की नहीं है । क्योंकि **सुश्रुतकार** ने ही उसी जगह लिखा है कि–सुवर्ण, चांदी, मणि, मोती, मूंगा, मनसिल, मिट्टी, और खिपड़ा आदि **पार्थिव** द्रव्य हैं । तथा पवन, पवनरहित, धूप छाया, चांदनी, अंधकार सरदी, गरमी, वर्षा, दिन रात्रि, पखवारा, महिना, ऋतु, अयन, और संवत्सर (वर्ष) ये **कालकृत** द्रव्य हैं ये दोषों के स्वभावसे ही संचय कोप और नाश के हेतुरूप **प्रयोजन** वाले जानने ।

यद्यपि प्रवातादिक औषधी जो सुश्रुत में कही हैं वो चरक में नहीं लिखी इससे मनुष्य ये न समझें कि ये कालकृतादि औषधों की चरक में न्यूनता है । इनके न लिखने का कारण यह है कि ये जो पवन धूप आदि कालकृत औषधी हैं वो पांचभौतिकत्व करके मूर्तिमान् न होनेसे वैद्य इनका प्रयोग नहीं कर सकता है इसीसे ये नहीं कहीं ।

औद्भिद द्रव्य में ग्रहण करने योग्य–१ मूल (जड़) छाल, सार, निर्यास (गोंद), नाड़ी, स्वरस, नवीन पत्ते, खार, दूध, फल, फूल, भस्म, तेल, कांटे, पत्ते, शुंग (कली), कंद, और प्ररोह (अंकुर) ये वनस्पति आदि चतुर्विध उद्भिद गणसे वस्तु लीनी जाती हैं । इसप्रकार चरक, सुश्रुत, और वाग्भटादि प्राचीन ग्रंथोंमें औषधी चार प्रकार की लिखी हैं परंतु आधुनिक ग्रंथोंमें औषधी के पांच भेद माने हैं जैसे लिखा है–

द्रव्यं यदंकुरजमाङ्कुरार्यास्तत्तेपुनः पंचविधं वदंति । वनस्पतिश्चापिसएववानस्पत्यक्षुपोवीरुदथौषधीश्च ॥ २१ ॥

अर्थ–जो औषधी अंकुर से प्रगट हुई है वो पांच प्रकारकी है, जैसे १ वनस्पति, २ वानस्पति, ३ क्षुप, ४ वीरुध, और ५ औषधी ।

ज्ञेयस्सोत्रवनस्पतिःफलतियःपुष्पैर्विनातैः–फलं वानस्पत्यइतिस्मृतस्तनुरसौह्रस्वः क्षुपःकथ्यते । यावेल्यत्यगमादिसंश्रयवशा–देषातुवल्लीमता शाल्यादिः पुनरौषधिः फ–लपरीपाकावसानान्विता ॥ २२ ॥

अर्थ–विना फूल के फले उसको **वनस्पति** कहते हैं । फूलकर फिर फले उसको **वानस्पति** जानना । और जो छोटा और पतला वृक्ष होवे उसे **क्षुप** कहते–हैं तथा जो वृक्षादि का सहारा लेकर फैल जावे

---

१ कटेरी अंड आदि की **जड़** लीनी जाती है । नीम आदिकी **छाल**, खेर आदिका **सार**, बबूर आदिका **गोंद**, अडूसे आदिकी **खार**, थूहर आदिका **दूध**, आम्र आदिके **फल**, गुलाब आदि के **फूल**, सरसों आदि का **तेल**, गोखरू आदि के **कांटे**, बड़ आदिके **पत्ते**, और उसकी **कली**, दूब आदि के **अंकुर**, पीपलकी छालकी **भस्म**, जमीकंद रतालू इत्यादि **कंद** ये सब ग्रहण करे जाते हैं ।

उसको **वेल्ली** (वेल) कहते हैं । और फलके पकने से जो नष्ट हो जावे वो **औषधी** है जैसे चांवल ।

ग्रन्थांतर का प्रमाण ।

औषध्यः पंचधाख्यातालतागुल्माश्चशाखिनः। पादपाःप्रसराश्चैव तेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥२३॥

अर्थ–औषधी पांच प्रकारकी है, जैसे १ लता, २ गुल्म, ३ शाखी, ४ पादप, और ५ प्रसर, इनके लक्षण आगेके श्लोकों में कहता हूं ।

लतादिकेंके लक्षण.

गडूच्याद्यालताःप्रोक्तागुल्माःपर्पटकादयः। आम्राद्याःशाखिनोज्ञेयावटाश्वत्थादिपादपाः। कंटकार्यादिकाःसर्वाःप्रसराइतिकीर्तिताः ॥

अर्थ–गिलोय [आदि शब्द से सोमवल्ली इन्द्रायन] आदि **लता** अर्थात् **बेल** कहलाती हैं । पित्तपापड़ा [आदि शब्द से जवासा अडूसा सरफोंका] आदि की **गुल्म** संज्ञा है । आम [आदि शब्द से नीबू, नारंगी, अमरूद] आदिको **शाखी**, अर्थात् **शाखावाले** जानना और वड़ पीपर आदि को **पादप** कहते हैं । एवं कटेरी [आदि शब्द से दूब, सांठ,] आदिकी **प्रसर** संज्ञा है. ये संज्ञा इस निघंटु के प्रत्येक औषधके नामके पश्चात् हम लिखेंगे कि जिससे प्रत्येक वैद्य को मालूम होजावे और सहज ही में औषध को पहिचान लेवें ।

वृक्षोंकी स्त्री, पुरुष और नपुंसकसंज्ञा.

स्त्रीपुंनपुंसकत्वेन त्रैविध्यं स्थावरेष्वपि । शृणु वक्ष्यामितल्लक्ष्मव्यक्तमत्रयथाक्रमम् ॥

अर्थ–स्थावर अर्थात् वृक्षादिकोंमें भी स्त्री, पुरुष, और नपुंसक ये तीन भेद हैं, इन तीनों के लक्षण मैं इस जगह क्रम से कहता हूं, उनको सुन ।

स्त्रीसंज्ञकलक्षण–ईख, बांस, वृक्ष, लता, आदि शब्द से पादप और शाखावाले इनके गुद्दे, शाखा, फल, फूल, पत्ते ये चिकने और लंबे विस्तृत परम सुन्दर होवें उन वृक्षोंको **स्त्री** संज्ञक पंडित जन जाने ।

पुरुष संज्ञक के लक्षण–और जिस वृक्षके फूल पत्ते आदि न वहुत बड़े हों न बहुत छोटे हों किंतु मोटे और करड़े होवें उस वृक्ष को **पुरुष**संज्ञक विद्वानों ने कहा है।

नपुंसकसंज्ञक वृक्षके लक्षण–जिन वृक्षादिके शाखा, फल, फूल, पत्ते आदिमें पुरुष और स्त्री दोनों केसे लक्षण मिलते हों और यह संदेह होवे कि यह वृक्ष पुरुष है अथवा स्त्री है तथा यह निश्चय न होवे कि यह अमुक जातिका वृक्ष है उसको विद्वान् जन **नपुंसक** जातिका वृक्ष कहते हैं ।

स्त्री, पुरुष, और नपुंसक औषधी का गुणागुण–यावन्मात्र **पुरुष**संज्ञक औषधी हैं वो प्राणीमात्र को आरोग्यकर्त्ती और वल के वढ़ाने वाली हैं **स्त्री**संज्ञक औषधी दुर्वल और अल्पगुण करनेवाली स्त्रियोंको जाननी, और **नपुंसक**संज्ञक औषधी किसीको हितकारी नहीं हैं ।

किसी वैद्यका यह मत है कि **स्त्रीजाति**की औषधी स्त्रियोंको गुण करती हैं और **नपुंसक** औषधी नपुंसकोंको गुण करे है । तथा स्त्री, पुरुष, और नपुंसकको सदैव और सर्वत्र पुरुषसंज्ञक औषधि गुण करनेवाली होती है ।

वृक्षोंके भूंख प्यासके लक्षण.

क्षुतिपपासाचनिद्राचवृक्षादिष्वपि लक्ष्यते । मृज्जलाब्दानतस्त्वाद्येपर्णसंकोचतोन्तिमा ॥

अर्थ–**क्षुधा** (भूंख), **पिपासा** (प्यास), **निद्रा** (नींद) ये वृक्षादिकोंमें भी दीखनेमें आते हैं जैसे मिट्टी जलके ग्रहण करनेसे वृक्षोंकी आद्य अर्थात् **भूंख प्यास** जानी जाती है । और पत्तोंके संकोच हो जाने अर्थात् आपसमें पत्तोंके चिपट जानेसे वृक्षोंकी अंत्यावस्था अर्थात् **निद्रायुक्त** जानना ।

स्थावरोंमें पंचभूतात्मकत्व ।

यत्काठिन्यं सोक्षितिर्योद्रवांभस्तेजस्तूष्मावर्द्ध यत्सवातः । यद्यच्छिद्रं तन्नभःस्थावराणामितं तेषांपंचभूतात्मकत्वम् ॥ २७ ॥

अर्थ–वृक्षोंमें जो **कठिनता** (करड़ापना) वह **पृथ्वी**का अंश है और **आर्द्रता** (गीलापना) **जल**का अंश है । **गरमपना अग्नि**भाग है और वृक्षोंका बढ़ना है सो **पवन**भाग है । तथा वृक्षोंमें जो छिद्र होते हैं वो **आकाश**

भाग है। इस प्रकार वृक्षोंको **पंचभूतात्मकत्व** है, अर्थात् वृक्षोंमें पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश पांचों तत्त्व रहते हैं।

अब कहते हैं कि जहां एक वस्तु के अनेक नाम हैं; जैसे-**शिवा** नाम हरड़का और आमलेका है, उसी प्रकार **समंगा** नाम मजीठ और लजालूका है, उसी प्रकार **श्याम** नाम पीपल, प्रियंगु और सारिवाका है-तो वैद्यको उस जगह प्रकरण-वीर्य और रस आदि योगोंको विचार के लेना उचित है; अर्थात् इस योग में कोनसी औषध लेनेसे प्रयोग ठीक बैठता है यह विचारके डालनी चाहिये।

नक्षत्रों के वृक्ष-अ. कुचला, **भ.** आंवला, **कृ.** चोक, **रो.** जामुन, **मृ.** खैर, **आ.** कालीअगर, **पुन.** बांस, **पु.** पीपल, **आश्ले.** नागकेशर, **म.** बड, **पूर्वा-फा.** पलास, **उ. फा.** पाखर, **ह.** पाड, **चि.** बेल, **स्वा.** कोह, **वि.** विकंकत, **अनु.** मौलसरी, **ज्ये.** आहुली, **मू.** साल, **पूर्वाषा.** जलबेत, **उत्तराषा.** अमलतास, **श्र.** आक, **ध.** शमी (छोंकरा), **श.** कदंब, **पू. भा.** आम, **उ. भा.** नीम, और **रे.** महुआ, ये २७ वृक्ष क्रमसे अश्विनी आदि नक्षत्रों के अधिपति हैं।

जन्मनक्षत्रके वृक्ष ग्रहणमें दोष।

यस्त्वेतेषामात्मजन्मर्क्षभाजां
मर्त्यः कुर्याद्भेषजादीन्मदांधः।
तस्यायुष्यंश्रीःकलत्रंचपुत्रं
नश्यंत्येषांवर्द्धतेवर्द्धनाद्यैः॥ २८॥

अर्थ-जो प्राणी मदांध होकर इन अपने **जन्म-नक्षत्र** के वृक्षकी औषधी आदि करता है उसकी आयु धन, स्त्री, और पुत्र, नष्ट होते हैं। तथा **आत्मनक्षत्र**, अधिपति वृक्ष के जलादि सिंचनद्वारा **बढ़ानेसे** आयु, धन, स्त्री और पुत्रादिकी वृद्धि होती है। इसवास्ते वैद्यको उचित है कि रोगीका जन्मनक्षत्र पूंछ लेवे उसके नक्षत्रका जो वृक्ष अधिपति होवे उसको चिकित्सामें न लेवे।

आग्नेयाविंध्यशैलाद्याः सौम्योहिमगिरिःस्मृतः
अतस्तदौषधानिस्युरनुरूपाणिहेतुभिः॥ २९॥
अन्येष्वपिप्ररोहंतिवनेपूपवनेषु च॥

अर्थ-विंध्याचल आदि जो पर्वत हैं उनमें **अग्नि** का अंश अधिक है और **हिमालय** पर्वत **सौम्य** अर्थात् शीतल है, इससे इन विंध्याचल और हिमालय पर्वत में प्रकट होनेवाली औषध, हेतुओं करके उन्हीं २ के अनुसार जाननी अर्थात् विंध्याचल पर्वत की औषधि गरमवीर्यवाली और हिमालय की शीतवीर्य औषधि हैं। ये केवल पर्वतों में ही नहीं होतीं, किन्तु अन्य वनोंमें, उपवनों में भी औषधि प्रकट होती हैं वो भी उसी २ क्षेत्र के अनुसार वीर्यवान् जाननी।

औषधि ग्रहण का मुहूर्त्त।

भैषज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलसंज्ञेद्व्यंगलग्ने।
शुक्रेन्द्वीज्येविदिचदिवसेचापितेषांरवेश्च।
शुद्धेरिष्फेद्युनमृतिगृहेसत्तिथौनोजनेभे।
दत्तं सर्वं भवति शुभदं प्राणिनां सुप्रयुक्तम्॥३०॥

अर्थ- लघु (ह. अश्वि पु. अभि.) **मृदु** (मृ. रे, चि. अनु.) **चर** (स्वा. पुन. श्र. ध. श.) और मूल इन **नक्षत्रों** में शु. चं. बृ. बु. और सूर्य ए द्विस्वभावलग्न (मि. क. ध. मी.) में स्थित हो, तथा इन्ही शुक्रचंद्रादि के **वार** में, लग्न से १२. ७. ८. ग्रह पापों करके रहित ऐसे शुभ समय में **भैषज्य** (औषध का लाना, बनाना और व्यवहार करना आदि) शुभ है।

औषध ग्रहण की विधि।

यतध्वमुत्खावशुचिप्रदेशजा
द्विजेनकालादिकतत्त्ववेदिना।
यथायथंचौषधयो गुणोत्तराः
प्रत्याहरंतेयमगोचरानपि॥ ३१॥

अर्थ-प्रथम झाड बुहारके पवित्र की हुई भूमिमें शुभाशुभ कालादि तत्वके जाननेवाला ब्राह्मण यथा योग्य गुणयुक्त (जैसी औषध लेनी चाहिये उसीके योग्य) छिपीहुई औषधोंको भी लावे। अर्थात् प्रथम पृथ्वी को **शुद्ध** करके देश, काल, औषध के कच्चे, पक्के और उसका कोनसा अंग लेना इसका विचार करके जो वृक्ष और पर्वतादिकोंमें छिपी हुई भी हो उनको **द्विज** (वैद्य) लावे। सो **क्रम** आगे लिखते हैं।

औषध ग्रहणका मंत्र

येनत्वांखनतेब्रह्मायेनत्वांखनतेभृगुः ।
येनेन्द्रोयेनवरुणोह्यपचक्रामकेशवः ॥३२॥
तेनाहंत्वांखनिष्यामिसिद्धिंकुरुमहौषधे ।
विप्रःपठन्निमंमंत्रंप्रयतात्मामहौषधीं ।
खात्वाखादिरकीलेनयथावत्तांप्रयोजयेत् ३३

अर्थ–ब्राह्मण **'येनत्वां'** इस मंत्रको पढ़ता हुआ एकाग्रचित्तसे खैरकी लकड़ीसे जड़को खोदकर औषधको उखाड़ लावे, और पत्रपुष्पादिक लेने होय तो इसी मंत्र से प्रार्थना पूर्वक ग्रहण करे। परंतु मंत्र शास्त्र में लिखा है कि पहले दिन रूखड़ी को सायंकाल के समय गंध पुष्प नैवेद्य आदि से विधि पूर्वक पूजन करके निमंत्रण दे आवे, और दूसरे दिन प्रातःकाल जायकर पूर्वोक्त मंत्र से उस को उखाड़ लावे। परंतु यह मुहूर्त्तादिक विधि शहर, ग्राम के समीपस्थ वनों की है। और जहां घोर जंगल है और दुष्ट जीवों का भय है वहां पर वैद्य इस विधि को त्यागदेवे, जल्दी अपना प्रयोजन कर लेवे। औषध सेवन का काल और उस के सेवन करने की विधि आगे इस भाग की समाप्ति में लिखेंगे।

औषध ग्रहण की विधि.

गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे ।
आदित्यसंमुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥३४॥
साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादुत्तराश्रितम्

अर्थ— औषध लाने के निमित्त प्रातःकाल उठ स्नान आदि से पवित्र हो, उत्तम दिन (अर्थात् उत्तम तिथि नक्षत्र, योग, करण और लग्न में) वनमें सूर्य के सन्मुख खड़ा हो मौन पूर्वक श्री शिव को हृदय में प्रणाम कर (जांगल देश और अनूपदेश को त्याग) साधारण पृथ्वी में जो प्रकट हुई तथा उत्तर दिशा में स्थित **औषधको** प्रसन्न चित्त हो **ग्रहण** करे अर्थात् **उखाड़े**, कोई उत्तराभिमुख होकर औषध को उखाड़े ऐसा कहते हैं।

त्याज्य औषधी.

वल्मीककुत्सितांऽनूपश्मशानोषरमार्गजाः ।
जंतुवह्निहिमव्याप्तानौषध्यःकार्यसाधिकाः ॥

१ अपने ग्राम से उत्तर दिशा लेनी चाहिये।

अर्थ–सांपआदि की बांबी, दुष्टपृथ्वी, जलप्राय स्थान, श्मशान, (जहां मुर्दे जलाए जावें, या गाड़े जावें), ऊपर जमीन और मार्ग (रास्ता) इनमें प्रकट होनेवाले औषध तथा जो (दीमक आदि) कीड़ोंकी खाई, आग से पजरी हुई, सर्दी की मारी, लू आदि गर्मी से पजरी हुई ऐसी **औषध** कार्यसाधक नहीं हो। अतएव ऐसे स्थान की बिगड़ी हुई औषधों को नहीं लानी चाहिये।

औषध रखने की विधि.

धूमवर्षानिलक्लेदैःसर्वर्तुष्वनभिद्रुते ।
ग्राहयित्वागृहेन्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

अर्थ–अनेक प्रकार के **औषध संग्रह** को धूआं वर्षा (वारिश) हवा और गीलापन वा सीड़ से किसी ऋतु में न बिगड़ने पावे ऐसे उत्तम स्थान में सावधानीके साथ रखे।

१ **कापोती** रूखड़ी सांपकी वामई पर उगी हुई ले यह उस दिव्यौषधी का प्रभाव है। वह उसी स्थान की वीर्यवान् होती है। परंतु अन्य औषध न लेवे। हमारे यहां औषध प्रायः पंसारी अत्तार आदि से लेते हैं परन्तु उनको जिस औषध से प्रायः अधिक काम पड़ता है उसको जानते हैं, बाकी में गड़बड़। दूसरे यहां वैद्य क्या हकीम अहेरिया आदि से औषध खरीदते हैं वह अहेरिया आदि भली बुरी पृथ्वी की परीक्षा क्यों करने लगे, फिर मित्र हो शास्त्र, वैद्यको ही औषध लाने को आज्ञा देता है और औषधज्ञाता को ही उत्तम वैद्य लिखा है किन्तु औषध परीक्षा सहज नहीं है सो वैद्यराज जी घर में बैठे २ जान लेवेंगे। महात्मारामजी यदि आप वैद्य बनना चाहो तो घड़ी दो घड़ी वन की हवा खाइये।

२ जड़ी बूटियों को डोरी में बांध के लटकाय देवे, पत्ते आदि को और फूलों को किसी शीशी आदि में रक्खे, बीजों को बोतल में, चूर्ण को शीशी में, छालआदि के टुकड़े को कपड़ों में बांधके, तेल घृत आदि को कुप्पी-या-चिकनी हांडी में, लंबी और भारी वस्तुओं को तख्ते आदि पर रखे, इस प्रकार सबको यथायोग्य पात्र में रख उन पर **नाम** लिख देवे कि जिससे मकान भी सजकर सुंदर दीखने लगे और औषधी बिखरे नहीं।

औषध रखने का उपाय.

प्रोतमृद्भांडफलकशङ्कुविन्यस्तभैषजम् ।
प्रशस्तायांदिशिशुचौभेषजागारमिष्यते ॥

अर्थ-औषधों को कपड़े के टुकड़ों में मिट्टीके पात्र (इमरतवान्, हांडी, चीनी के पात्र, प्याले, प्याली, सकोरा, गगरा, मांट और शीशेकी बोतल, शीशा, सीसी, गिलास, रकेबी आदि) **फलक** (तख्ता, पट्टी, चौकी, संदूक, आलमारी), शंकु (कील, मेख, खूंटी, इत्यादि) में रखी हैं औषधी जिसमें ऐसा **औषधालय** पूरब या उत्तर दिशा और पवित्रस्थान[1] में होना चाहिये ।

शरद्यखिलकार्यार्थंग्राह्यंसरसमौषधम् ।
विरेकवमनार्थंतुवसन्तान्तेसमाहरेत् ॥ ३७ ॥

अर्थ-संपूर्ण कार्योंके वास्ते रसयुक्त औषध **शरदृतु** में (आश्विन और कार्तिक में) **ग्रहण** करनी चाहिये । और वमन विरेचन के वास्ते **वसंत** ऋतु (फागुन चैत में) औषधी ग्रहण करे । कोई **वसंतांत** के कहनेसे ज्येष्ठ आषाढ़ में लेनेकी आज्ञा देते हैं । कोई **ग्रीष्म** में मंजरीमें, **वर्षा** ऋतुमें वृक्षोंके पत्ते और छाल में, और **वसंत**ऋतु में वृक्षों की जड़ में **रस** रहता है, अतएव इनको उसी २ ऋतु में लेवे तो गुणकारी हो । और कोई आचार्य प्रावृट् वर्षा, शरद, हेमंत, वसंत और ग्रीष्म इन ऋतुओंमें क्रम से जड़, पत्ते, छाल, दूध, गोंद, और औषधोंके फल लेवे ऐसा कहेहैं । परन्तु यह मत ठीक नहींहै, क्योंकि जगत् सौम्य और आग्नेय के भेद से दो प्रकार का ही है । इसीसे **सौम्य** औषध आश्विन में और **आग्नेय** औषध वसंत ऋतु में लेना ही ठीक है ।

अतिस्थूलजटायाःस्युस्तासांग्राह्यास्त्वचो-
ध्रुवम् ।
गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ॥
महांतियेषांमूलानिकाष्ठगर्भाणिसर्वतः ।
तेषांतुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिसर्वशः ॥३८॥

न्यग्रोधादेस्त्वचाग्राह्यासारःस्याद्बीजका-
दितः । तालीसादेस्तुपत्राणिफलंस्यात्-
त्रिफलादितः ॥ ३९ ॥

क्वचिन्मूलंक्वचित्कंदःक्वचित्पत्रंक्वचित्फलम् ।
क्वचित्पुष्पंक्वचित्सर्वंक्वचित्सारःक्वचित्त्वचः॥
चित्रकंसूरणंनिंबोवासाचत्रिफलाक्रमात् ।
धातकीकंटकारीचखदिरःक्षीरपादपः ॥ ४१ ॥

अर्थ-लंबी और मोटी जड़ वाले (वड़ पीपल आदि) की **छाल** लेनी, जिनकी छोटी जड़ हो (जैसे कटेरी धमासा आदि) उनके **सर्व अंग** अर्थात् जड़ पत्ता, फूल, फल, और शाखा सब लेवे, (कोई कहता है कि बड़े वृक्षोंके जड़ की छाल ले और छोटी वनस्पतियों की जड़ मात्र ले), और जगह भी लिखा है कि जिनकी बड़ी जड़ है और चारोंओर छालसे लिपटेहुए हैं उनका **वक्कल** ले, और छोटी जड़वालोंका **पंचांग** ले। तहां वड़ आदिकी **छाल** लें, विजेसार आदिका **सार**, तालीस आदिके **पत्ते**, और त्रिफला आदिके **फल** लेने चाहिये । किसीकी जड, किसीका कंद, किसीका पत्र, किसीका फल, किसीका फूल, किसीका पंचांग, किसीका सार, और किसी औषध की **छाल** लेनी चाहिये।तहां चित्रककी **छाल**, सूरनका कंद नीमके और वांसे आदिके **पत्ते**, त्रिफलेके **फल**, धायके **फूल**, कटेरी आदिका **पंचांग**, खैरका **सार** और दूध जिनसे निकले ऐसे वृक्षोंकी **छाल** लेनी चाहिये ।

---

१ पवित्र स्थान कहने का यह प्रयोजन है कि वैद्य का **औषधालय** बाहर भीतर से मिट्टी, गोबर, सफेदी आदिसें लिपा पुता होवे । मैला कुचेला न हो । चित्र विचित्र औषधी से सुशोभित पयाव में ऊंचा हो कि जिसमें पवन आने जाने की रोक न हो, चित्राम होरहा हो, उजले बिछैया बिछेहों, उजले परदा पड़े हों, तसवीर और झाड़ फानूस लगेहों, यथा स्थान पर मेज, कुरसी, टेबिल, संदूक, आलमारी रखी हों । अनेक प्रकारके खिलौने पुस्तक आदिसे सुसज्जित होवे, अपने स्थान पर घड़ी रखी हो । यह आजकल के औषधालयों की **सजावट** है परंतु जो वैद्य साधारण हैं उनको केवल स्थान की उज्ज्वलता अवश्य रखनी चाहिये ।

क्वचिन्निंबस्य गृह्णीयात्पत्राभावेत्ववामपि ।
बालंफलंतुबिल्वस्यपक्वमारग्वधस्यच ॥ ४२ ॥

अर्थ–कहीं नीमके पत्तेके अभाव (न मिलने) में छाल भी लेलेवे, बेलका कच्चाफल और अमलतास आदिका फल पक्का लिया जाता है ।

अंगेऽनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलंसमम् ।
पात्रेऽनुक्तेमृदःपात्रंकालेऽनुक्तेत्वहर्मुखम् ॥४३॥

अर्थ–जहां औषधका अंग न कहा हो वहां पर उसकी जड़ लेनी । जहां औषधों की तोल नहीं कही तहां सब समान भाग ले । जहां पात्र नहीं कहा हो वहांपर मिट्टी का पात्र लेवे । और जहां लेनेका काल नहीं कहा वहां प्रातःकाल जानना ।

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु ।
विनाविडंगकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः
पुराणंतुप्रशस्तंस्यात्तांबूलंकांजिकंतथा ।
शुष्कंनवीनद्रव्यंतुयोज्यंसकलकर्मसु ॥ ४५ ॥
आर्द्रंतुद्विगुणंयुंज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः ।
गुडूचीकुटजोवासाकूष्मांडश्चशतावरी ॥४६॥
अश्वगंधासहचरःशतपुष्पाप्रसारिणी ।
प्रयोक्तव्याःसदैवार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ॥४७॥
वासानिंबपटोलकेतकबलाकूष्मांडकेंदीवरी
वर्षाभूःकुटजाश्चकंदसहिताःसापूतिगंधामृता
ऐंद्रीनागबलाकुरंटकपुरोज्ञत्रासृतासर्वदा
सार्द्राएवतुनक्वचिद्द्विगुणिताःकार्येषुयोज्याः
बुधैः ॥ ४८ ॥
घृतंतैलंचपानीयंकषायंव्यंजनादिकम् ।
पक्त्वाशीतीकृतंचोष्णंतत्सर्वंस्याद्विषोपमम्

अर्थ–संपूर्ण कर्मोंमें सब औषध नवीन लेवे, परंतु वायविडंग, पीपल, गुड़, धान्य (गेंहूं, चावल आदि), घी और सहत ए सब पुराने लेवे, नये न लेय । पान और कांजी ए पुराने लेना उत्तम है [तथा मंडूर अनारदाना कपूर एभी पुराने लेने] । सूखी और नवीन द्रव्य सर्व कर्मोंमें लेनी । और जो औषधी गीली है उसको दूनी लेवे, यह सर्वत्र निश्चय है । असगन्ध, कटसरैया (पियावांसा), सोंफ, प्रसारणी, ए औषध सदैव गीली ले, परंतु दूनी कदाचित् न करे । अडूसा, नीम, पटोलपत्र, केतकी, बला (खिरेटी), पेठा, नीलाकमल, सतावर, सांठ (गदहपूर्ना), इन्द्रजौ, कंद, प्रसारिणी, गिलोय, इन्द्रायण, नागबला (गुलसकरी), पियावांसा, गूगल, सोंफ [हींग, अदरख, ईख] और आंमले, ए आर्द्र होनेपरभी बुद्धिमान् वैद्य कार्यमें दूने न लेवे । घृत, तेल, जल, काढ़ा और भोजन के पदार्थ (दालभात, साग, रोटी) इनको एकवार सिद्ध करके शीतल होनेपर फिर यदि गरम करे तो विषतुल्य होजाते हैं, इस वास्ते दूसरे गरम न करे ।

द्रव्यों की परीक्षा.

सूक्ष्मास्थिमांसलापथ्यासर्वकर्मणिपूजिता ।
जिर्णाभसिनिमज्जेयाभल्लातकयस्तथोत्तमाः ॥
वराहमूर्द्धवत्कंदोवाराहीकंदसंज्ञकः ।
सौवर्चलंतुकाचाभंसैंधवंस्फटिकप्रभम् ॥५१॥
सुवर्णच्छविकंज्ञेयंस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् ।
इंद्रपुष्पप्रतीकाशामनोह्वाचोत्तमामता ॥ ५२ ॥
श्रेष्ठंशिलाजतुज्ञेयंप्रक्षिप्तंनविशीर्यते ।
तोयपूर्णेकांस्यपात्रेप्रतानेनविवर्द्धते ॥ ५३ ॥
कर्पूरस्तुवरःस्निग्धएलासूक्ष्मफलावरा ।
श्वेतचंदनमत्यंतंसुगंधिगुरुपूजितम् ॥ ५४ ॥
रक्तचंदनमत्यंतंलोहितंप्रवरंमतम् ।
काकतुंडनिभःस्निग्धोगुरुःश्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥
सुगंधिलघुरूक्षंचसुरदारुवरंमतम् ।
सरलंस्निग्धमत्यर्थंसुगंधिचगुणावहम् ॥५६॥
अतिपीताप्रशस्तातुज्ञेयादारुनिशाबुधैः ।
जातीफलंगुरुस्निग्धंसमंशुभ्रांतरंवरम् ॥ ५७ ॥

१ सर्वाणिचार्द्राणिनवौषधानिसुवीर्यवंतानिवदंतिधीराः ।
सर्वाणिशुष्काणितुमध्यमानिशुष्काणिजीर्णानिचनिष्फलानि ॥ १ ॥
वासककुटजगुडूचीवासाकूष्मांडकादिशतपत्री । इत्यादितुनि-
त्यार्द्राग्राह्यचूर्णादौ तदाद्विगुणम् ॥ २ ॥

मृद्वीकासोत्तमाज्ञेयायास्याद्गोस्तनसंनिभा।
करमर्दफलाकारामध्यमासाप्रकीर्त्तिता ॥५८॥
खंडंतुविमलंश्रेष्ठंचंद्रकांतसमप्रभम्।
गव्याज्यसदृशंरुच्यंगंधमधुतरंमतम्॥ ५९॥

अर्थ–हरड़ छोटी और मोटी छालकी उत्तम होती है। जो जलमें गेरनेसे डूबजावे वो **भिलावा** उत्तम होता है। वाराहके मस्तकके समान जो कंद हो वह **वाराही कंद** कहाता है। कांचके समान **संचरनोन** उत्तम होताहै। स्फटिकमणिके समान चमकना **सेंधानिमक** उत्तम है। **सोनामक्खी** सुवर्णके समान पीला उत्तम होता है। **मनसिल** इन्द्रपुष्पके समान उत्तम होती है। **उत्तम शिलाजीत** वो है जो गिरनेपर फैले नहीं। और जलपूर्ण कांसके पात्रमें डालनेसे तंतु तंतुसे छूटें। कवेले स्वादकी और चिकनी **कपूर** उत्तम होतीहै। छोटे फलकी **इलायची** उत्तम होती है जिसमें अत्यन्त सुगंध आतीहो और भारी हो वो **सफेद चंदन** उत्तम है। अत्यंत लाल **लालचंदन** उत्तम होताहै। जो कौएके मुखके समान स्निग्ध और भारी ऐसा **अगर** उत्तम होताहै जिसमें सुगंध आतीहो, हलकी, रूक्ष ऐसी **देवदारु** उत्तम होतीहै। अत्यंत चिकनी और सुगंधित ऐसा **सरल** (छड़) उत्तम होतीहै। अति पीली **दारुहलदी** पंडितोंने उत्तम कहीहै। भारी, चिकना, गोल और तोड़नेपर भीतरसे सफेद निकले ऐसा **जायफल** उत्तम होता है। गौके थनोंके आकार **मुनक्कादाख** उत्तम होती है। और करौंदा फलके समान कोनेवाली **करोंदीदाख** मध्यम है। जो चंद्र–कांतिके समान सफेद और निर्मलहो वह **खांड़** उत्तम होतीहै। गौके घीके समान रुचिकारी और सुगंधदार सहत उत्तम होता है।

स्वभावसे हितकारी.

शालीनांलोहितःशालिःषष्टिकेषुचषष्टिकः।
शूकधान्येष्वपियवोगोधूमःप्रवरोमतः॥६०॥
शिंबीधान्येवरोमुद्गोमसूरश्चाढकीतथा।
रसेषुमधुरःश्रेष्ठोलवणेषुचसैंधवः॥ ६१॥
दाडिमामलकंद्राक्षाखर्जूरंचपरूपकम्।
राजादनंमातुलुंगंफलवर्गेषुशस्यते॥ ६२॥
पत्रशाकेषुवास्तूकंजीवंतीपोतिकावरा।
पटोलंफलशाकेषुकंदशाकेषुसूरणम्॥ ६३॥
एणःकुरंगोहरिणोजांगलेषुप्रशस्यते।
पक्षिणांतित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येषुरोहितः॥६४॥
हरिणस्ताम्रवर्णःस्यादेणःकृष्णतयामतः।
कुरंगस्ताम्रउद्दिष्टोहरिणःकृत्तिकोमहान्॥६५॥
जलेषुदिव्यंदुग्धेषुगव्यमाज्येषुगोभवम्।
तैलेषुतिलजंतैलमैक्षवेषुसिताहिता॥ ६६॥

अर्थ–शाली चांवलोंमें **लाल चांवल** उत्तम होतेहैं। **षष्टिक** चांवलोंमें **सांठी** (बारीक) **चावल** उत्तम, **शूक** (कांटेवाले) धान्योंमें **जौ** और **गेंहूं** उत्तम हैं। **शिंबी** (फली) के धान्योंमें **मूंग, मसूर, अरहर,** उत्तम है। **रसों** में **मीठारस, निमकों** में **सेंधानिमक, फलवर्गों** में अनार, आँवले, दाख (अंगूर), खिजूर (छुहारे) फालसे, खिरनी, और बिजौरा उत्तम है। **पत्ते** के साग में बथुए का साग, जीवंती, पोई, ए उत्तम है, । **फल** के सागों में परवल, **कंद के** सागों में सूरण (जमीकंद), **जंगली जीवोंमें** काला, लाल और चितकबरा **हिरण** उत्तम है। **पखेरुओंमें** तीतर और लवा, एवं **मछलियोंमें रोहू** मछली श्रेष्ठ है। तामेके रंग **हिरण** कहाता है। काले हिरणको **एण** कहते हैं और कुछ २ लालरंग के हिरणको **कुरंग** बोलते हैं। जलोंमें **आकाशका** जल उत्तम है। दूधोंमें **गौका** दूध उत्तम है, घृतोंमें **गौका** घृत श्रेष्ठ है। तेलोंमें **तिलीका** तेल उत्तम है, और जितने ईखके पदार्थ हैं उनमें **मिश्री** उत्तम है।

स्वभावसे अहित.

शिंबीषुमाषान्ग्रीष्मर्त्तौलवणेष्वौषरंत्यजेत्।
फलेषुलकुचंशाकेसार्षपंनहितंमतम्॥ ६७॥
गोमांसंग्राम्यमांसेषुनहितंमहिषीवसा।
मेषीपयःकुसुंभस्यतैलंत्याज्यंचफाणितम् ६८

अर्थ–सेम (फलीयोंके) अन्नमें उड़द अहितकारी है, **ऋतुओंमें** ग्रीष्मऋतु, **निमकोंमें** ऊपरका निमक अर्थात् रेहका निमक त्याज्य है। **फलोंमें** कटहर, **सागोंमें** सरसोंका साग हितकारी नहीं है। ग्रामसंचारी

जीवोंके मांसोंमें गौका मांस, वसाओंमें भैंसकी वसा हितकारी नहीं है । दूधोंमें भेड़का दूध, और तेलोंमें कसूम (करड़) का तेल, और मिठाइयोंमें फणित (राव) त्याज्य है ।

संयोगविरुद्ध.

मत्स्यमानूपमांसंचदुग्धयुक्तंविवर्जयेत् ॥
कपोतंसर्षपस्नेहभर्जितंपरिवर्जयेत् ॥ ६९ ॥
मत्स्यानिक्षौद्रविकारिणतथाक्षौद्रेणवर्जयेत् ।
सक्तून्मांसपयोयुक्तानुष्णैर्दधिविवर्जयेत् ॥
उष्णैर्नभोऽम्बुनाक्षौद्रंपायसंकृशरान्वितम् ॥
रंभाफलंत्यजेत्तक्रदधिबिल्वफलान्वितम् ॥
दशाहमुषितंसर्पिःकांस्येमधुघृतंसमम् ॥
कृतान्नंचकषायंचपुनरुष्णीकृतंत्यजेत् ॥७२
एकत्रबहुमांसानिविरुध्यंतेपरस्परम् ॥
मधुसर्पिर्वसातैलंपानीयंवापयस्तथा ॥ ७३ ॥

अर्थ –मछली का मांस और जल समीप रहनेवाले जीवों का मांस दूध के साथ भक्षण करना संयोगविरुद्ध है । कपोत (कबूतर) अथवा (कबूतर का भेद पिंडुकिया के) मांस को सरसों के तेल में भूनना संयोग विरुद्ध है । मच्छी को मिठाई के साथ अथवा सहत के साथ खाना वर्जित है । मांस और दूध युक्त सत्तू नहीं खना । एवं गरम पदार्थों के साथ दही खाना त्याज्य है। गरम पदार्थ और वर्षा के जलयुक्त सहत त्याज्य है । खिचड़ी के साथ खीर खाना वर्जित है । छाछ,दही और बेलफल,इनके संग केले की गहर न खाय । कांसेके पात्रमें दस दिन धरारहा ऐसा घी निषेध है । घी सहत बराबर मिले हुए खाना बुरा है, भोजन के पदार्थ और काढ़े को फिर दूसरे गरम करके खाना त्याज्य है । तथा बहुत से मांसों को मिलाने से वो आपस में एकसे दूसरा विरुद्ध हो जाता है । एवं सहत, घी, वसा, तेल,इन को पानी अथवा दूध के साथ मिलाना संयोग विरुद्ध हो जाता है ।

भेषज ग्रहणमें संकेत.

लवणंसैंधवंप्रोक्तंचंदनंरक्तचंदनम् ॥
चूर्णलेह्यासवस्नेहाःसाध्याधवलचंदनैः ॥७४॥
कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचंदनम् ।
अंतःसंमार्जनेज्ञेयाह्यजमोदायवानिका ॥
बहिःसंमार्जनेसैवविज्ञातव्याजमोदिका ॥
पयःसर्पिःप्रयोगेषुगव्यमेवहिगृह्यते ॥
शकृद्रसोगोमयकोमूत्रंगोमूत्रमुच्यते ॥७६ ॥

अर्थ--जहां केवल लवण लेना लिखा है तहां सैंधानिमक लेना, चंदनकी जगह लालचंदन लेना । तथा चूरन, अवलेह, आसव और तेल ए सफेदचंदन डालके बनावे । काढ़ा और लेप इनमें बहुधा लालचंदन लेना । अंतःसंमार्जन (जो खाने से पेट को शुद्ध करे) ऐसी औषधों में अजमोद के स्थान में अजमायन[1] लेनी । और बहिःसंमार्जन (जो देह के ऊपर लगाई जाने आदि से देह को शुद्ध करे ऐसी औषधियों में अजमोद के स्थान में अजमोद ही डालना । जहां केवल दूध और घी मात्र लेना लिखा है उस जगह गौ का दूध और घी लेवे, जहां शकृद्रस अर्थात् लीद गोवर आदि का रस लेना कहा है वहां पर गौ के गोबर का रस ले । जहां केवल मूत्र लेना कहा है वहां पर गो मूत्र डालना चाहिये ।

औषध प्रतिनिधि

चित्रकाऽभावतोदंतीक्षारःशिखिरजोऽथवा ।
अभावेधन्वयासस्यप्रदेयातुदुरालभा ॥७७
तगरस्याप्यभावेतुकुष्ठंदद्याद्भिषग्वरः ।
मूर्वाभावेत्वचाग्राह्याजिंगिनिप्रभवाबुधैः ॥७८
अहिंस्रायाअभावेतुमानकंदः प्रकीर्तितः ।
लक्ष्मणायाअभावेतुनीलकंठशिखामता ॥७९
बकुलाऽभावतोदेयंकह्लारोत्पलपंकजम् ।
नीलोत्पलस्याभावेतुकुमुदंदेयमिष्यते ॥८०॥
जातीपुष्पंनयत्रास्तिलवंगंतत्रदीयते ।
अर्कपर्णादिपयसोह्यभावेतद्रसोमतः ॥ ८१
पौष्कराभावतःकुष्ठंतथालांगल्यभावतः ।
स्थौणेयकस्याभावेतुभिषग्भिर्दीयतेगदः ॥८२

[1] जैसे हिंग्वष्टक चूर्ण में अजमोद लेना कहा है वहां पर अजमायन डालनी चाहिये तो ठीक ठीक गुण करे ।

चविकागजपिप्पल्यौपिप्पलीमूलवत्स्मृता ।
अभावेसोमराज्यास्तुप्रपुन्नाटफलंमतम् ॥८३॥
यदिनस्याद्दारुनिशातद्देयानिशाबुधैः ।
रसांजनस्याभावेतुस्रग्दार्वीप्रयुज्यते ॥८४॥
सौराष्ट्र्यभावतोदेयास्फटिकातद्गुणार्जनैः ।
तालीसपत्रकाभावेस्वर्णतालीप्रशस्यते ॥८५॥
भार्ङ्ग्यभावेतुतालीसंकंटकारीजटाऽथवा ।
रुचकाभावतोदद्याल्लवणंपांशुपूर्वकम् ॥८६॥
अभावेमधुयष्ट्यास्तुधातकींचप्रयोजयेत् ।
अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्यमिष्यते ॥८७॥
द्राक्षायदिनलभ्येतप्रदेयंकाश्मरीफलम् ।
तयोरभावेकुसुमंबंधूकस्यमतंबुधैः ॥८८॥
लवंगकुसुमंदेयंनखस्याभावतःपुनः ।
कस्तूर्यभावेकंकोलंत्वपर्णीयंविदुर्बुधाः ॥८९॥
कंकोलस्याप्यभावेतुजातीपुष्पंप्रदीयते ।
सुगंधिमुस्तकंदेयंकर्पूराभावतोबुधैः ॥९०॥
कर्पूराभावतोदेयंग्रंथिपर्णाविशेषतः ।
कुंकुमाभावतोदद्यात्कुसुंभकुसुमंनवम् ॥९१॥
श्रीखंडचंदनाभावेकर्पूरंदेयमिष्यते ।
अभावेत्वेतयोर्वैद्यःप्रक्षिपेद्रक्तचंदनम् ॥९२॥
रक्तचंदनकाभावेनवोशीरंविदुर्बुधाः ।
मुस्ताचातिविषाभावेशिवाभावेशिवामता ॥
अभावेनागकेशरस्य पद्मकेशरमिष्यते ।
मेदाजीवकयोर्मेलीऋद्धिद्वंद्वेऽपिवाऽसति ॥
वरीविदार्योः बालावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ।
वाराह्याश्चतथाभावेचर्मकारालुकोमतः ॥
वराहीकंदसंज्ञस्तुपाश्चिमेगृष्टिसंज्ञकः ॥९५॥
वाराहीकंदएवान्यश्चर्मकारालुकोमतः ।
अनूपसंभवेदेशेवराहइवलोमवान् ॥९६॥
भल्लातकासहत्वेतुरक्तचंदनमिष्यते ।
भल्लाताभावतश्चित्रंनलश्चेत्त्तोरभावतः ॥९७॥
सुवर्णाभावतःस्वर्णमाक्षिकंप्रक्षिपेद्बुधः ।
श्वेतंतुमाक्षिकंज्ञेयंबुधैरजतवद्ध्रुवम् ॥९८॥
माक्षिकस्याप्यभावेतुप्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम् ।
सुवर्णमथवारौप्यंमृतंयत्रनलभ्यते ॥९९॥
तत्रकांतेनकर्माणिभिषक्कुर्याद्विचक्षणः ।
कांताभावेतीक्ष्णलोहंयोजयेद्वैद्यसत्तमः ॥२००॥
अभावेमौक्तिकस्यापिमुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत् ।
मधुयत्रनलभ्येततत्रजीर्णगुडोमतः ॥१॥
मत्स्यंड्यभावतोदद्युर्भिषजःसितशर्कराम् ।
असंभवेसितायास्तुबुधैःखंडंप्रयुज्यते ॥
क्षीराभावेरसोमौद्गोमासूरोवाप्रदीयते ॥२॥
अत्रप्रोक्तानिवस्तूनियानितेषुचतेषुच ।
योज्यमेकतराभावेपरंवैद्येनजानता ।३॥

अर्थ–चित्रक के अभाव (न मिलने) में **दंती** ले अथवा ओंगाका क्षार मिलावे । **धमासे** के अभाव-में **जवासा** डाले । **तगर** के अभाव में **कूठ** लेना । **मूर्वा** के अभावमें **जिंगनी** की त्वचा लेय **अहिंस्रा** के अभाव में **मानकंद** लेवे । **लक्ष्मणा** औषध के अभाव में **मोरसिखा** मिलावे । **मोरसिखी** के अभाव में **लालकमल** नीलाकमल डाले । **नीलेक-मल** के अभावमें **कमोदिनी** (बघोंला) का फूल ले । जहांपर **चमेली**का फूल न मिले तहां **लौंग** डाले । जहां **आक** आदिका दूध न मिले उस जगे आक-आदिके पत्तोंका **रस** निकालके कार्य करे । **पुह-करमूल**के और **कलियारी** के अभावमें **कूठ** लेवे । **थूनेर**के अभावमें वैद्य **कूठ** मिलावे । जहां **पीपरामूल** न मिले वहां **चव्य** और **गजपी-पल** डालनी । **बावची** के अभाव में **पमार**के बीज लेवे । **दारुहलदी** के अभावमें **हलदी**, **रसोत** के अभावमें – **दारुहलदी**, **सोरठी** मिट्टीके अभावमें **फिटकरी**, **तालीसपत्र** के अभाव में **स्वर्ण-तालीस**, **भारंगी** के अभावमें **तालीस**, अथवा **कटेरी** की जड़, **रुचक** (चौहार) के अभाव में **रेह**का निमक ले । **मुलहटी** के अभावमें **धातकी** पुष्प ले । **अमलवेत**के अभावमें **चूका**, **दाख**के अभावमें **कंभारी**का फल, **दाख** और **कंभारी** दोनों के अभावमें **बंधुक**का फूल, **नखद्रव्य**के अभा-वमें **लौंग**, **कस्तूरी**के अभावमें **कंकोल**, **कंकोल**के

अभावमें **चमेली**का फूल, **कपूर**के अभावमें **सुगंधमोथा** अथवा **कपूर**के अभावमें **गठौना** देवे। **केशर** के अभावमें **कसूम** के नये फूल ले। **श्रीखंड** (सफेद चंदन) के अभाव में **कपूर** देवे। **केशर** और **चंदन** के अभावमें **लालचंदन** ले। **लालचंदन**के अभावमें **नई खस** ले। **अतीस** के अभावमें **नागरमोथा**। **हरड़** के अभावमें **आंवला**। **नागकेशर**के अभावमें **कमल**की **केशर** ले। **मेदा, महामेदा** के अभावमें **सतावर**। **जीवक ऋषभक**के अभावमें **विदारीकंद**। **काकोली, चीरकाकोली** के अभावमें **असगंध** और **ऋद्धिवृद्धि** के अभावमें **वाराहीकंद** डाले। **वाराहीकंद** के अभावमें **चर्मकारालु**, "**वाराहीकंद**को पश्चिमके देशोंमें **गृष्टि** (गेंठी) कहते हैं। और वाराहीकंदका ही भेद **चर्मकारालु** जानना यह अनूप देशमें उत्पन्न होता है और इसके ऊपर सुअरकेसे बाल होते हैं।" **भिलाए**के अभावमें **लालचंदन**, अथवा **भिलाए**के अभावमें **चित्रक**, **ईख**के अभावमें **नरसल**, **सुवर्ण** के अभावमें **सोनामक्खी**, **चांदी**के अभावमें **रूपामक्खी** ले। **दोनों माक्षिकों**के अभावमें **स्वर्णगेरू**, **सुवर्णभस्म** और **चांदीकी भस्म**के अभावमें **कांतलोह** की भस्म ले। **कांतलोह**के अभावमें **तीक्ष्ण** (खेरी) लोह, **मोती**के अभावमें मोती की सीप, जहां **सहत** न मिले उस जगह **पुराना गुड़**, **मिश्री** के अभावमें **सफेद** बूरा ले। **सफेदबूरे**के अभावमें **सफेदखांड** ले। **दूध**के अभावमें **मूंग**का रस ले अथवा **मसूर**का रस लेवे। इन कही हुई प्रतिनिधियों में एकके अभावमें वैद्य उसकी दूसरी औषध मिलावे, जैसे **चित्रक** के अभावमें **दंती** और **दंती** के अभावमें **चित्रक** लेवे। इसी प्रकार और भी जाननी।

रसवीर्यविपाकाद्यैःसमंद्रव्यंविचिंत्यच।
युंज्याद्विविधमन्यच्चद्रव्याणांतुरसादिवित्॥
योगेयदप्रधानंस्यात्तस्यप्रतिनिधिर्मतः।
यत्तुप्रधानंतस्यापिसद्दशंनैवगृह्यते॥ ५॥
व्याधेरयुक्तंयद्द्रव्यंगणोक्तमपितत्त्यजेत्।
अनुक्तमपियुक्तंयद्योजयेत्तद्रसादिवित्॥ ६॥

अर्थ—रस वीर्य विपाकज्ञाता वैद्य यदि किसी रोगकी कोई औषध न मिले और जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही है तो उस द्रव्यके रस वीर्य विपाकादिके के समान दूसरी औषध को विचार कर प्रयोगमें मिलावे। केवल इस प्रतिनिधिके भरोसेही न रहे। अब कहते हैं कि प्रयोगमें जो औषधि **अप्रधान** है उसकी **प्रतिनिधि** दूसरी औषध मिलावे और जो **प्रधान** औषधि है उसकी प्रतिनिधि नहीं ली जाती। (जैसे मंजिष्ठादि काढ़ेमें अन्य पीपल त्रिफला आदि **अप्रधान** औषध हैं उनके अभावमें उसकी प्रतिनिधि औषध मिलाय दे; परन्तु मुख्य **मजीठ**की प्रतिनिधि नहीं लीनी जावेगी)। जो प्रयोगमें कही हुई औषध रोगको **अहित** है उसको उस गणमेंसे निकाल डाले और जो रोगको **नाशक** है परन्तु उसका उस गणमें **पाठ** नहीं कहा हो तो रसादिवित् वैद्य उसमें मिलाय देवे। आगे इसी निघंटुमें हम जो प्रतिनिधि लिखेंगे वा इनसे पृथक् हैं।

द्रव्यगतपंचपदार्थ.

द्रव्यंरसोगुणोवीर्यंविपाकःशक्तिरेवच।
पदार्थाःपंचतिष्ठंतिस्वंस्वंकुर्वंतिकर्म च॥ ७॥
रसाःस्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः।
षड्द्रव्यमाश्रितास्तेचयथापूर्वबलावहाः॥ ८॥
तत्राद्यामारुतंघ्नंतित्रयस्तिक्तादयःकफम्।
कषायतिक्तमधुराःपित्तमन्येतुकुर्वते॥ ९॥
येरसावातशमनाभवंतियदितेखलु।
रौक्ष्यलाघवशैत्यानिनतेहन्युःसमीरणम्॥१०॥
येरसाःपित्तशमनाभवंतियदितेषुवै।
तीक्ष्णोष्णलघुताचैवनतेतत्कर्मकारिणः॥११॥
येरसाःश्लेष्मशमनाभवंतियदितेषु वै।
स्नेहगौरवशैत्यानिनतेहन्युःकफं तदा॥ १२॥

अर्थ—**द्रव्य** (औषध) में रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति, ए **पांच पदार्थ** रहते हैं अपने २ कर्मोंको करे हैं।

रस—स्वादु, खट्टा, लवण, कडुआ, चरपरा और कषेला ए **छःरस** द्रव्यों (औषधों) में रहते हैं

इनमें पहलेसे दूसरा **हीनबल** है। जैसे सबसे बली **मिष्टरस** और सबसे निर्बल **कषैला** रस यह **वाग्भट्ट** कहता है। तहां पहिले **तीन** (स्वादु, अम्ल और लवण) ए **वादी**को नष्ट करतेहैं और तिक्त, कटु, कषाय, ए तीनों **कफ**को दूर करें। एवं कषाय, तिक्त और मधुर ए **पित्त** नष्ट करते-हैं। बाकीके अम्ल, कटु और कषाय ए **पित्त**को करतेहैं। जो रस वादीके शमन करनेवाले हैं—परंतु उनमें रौक्षता (रूखापन), लाघव (हलकापन) और शीतलता ए गुण होवेंगे वो **वादी**को कदाचित् नाश नहीं करनेके। जो रस पित्तके शमन करनेवाले हैं यदि उनमें तीक्ष्णता, उष्णता और लघुता ए गुण होंयगे तो वो **पित्त**को नाश नहीं करेंगे। इसीप्रकार जो रस कफनाशक हैं उनमें यदि स्नेह (चिकनाई), गौरव (भारीपना) और शीतलता गुण होवेंगे तो वो **कफ**को नष्ट नहीं करनेके।

मधुररसके गुण.

मधुरोहिरसःशीतोधातुस्तन्यबलप्रदः।
चक्षुष्योवातपित्तघ्नःकुर्यात्स्थौल्यमलक्रमीन्
रसेषुप्रवरश्चापिस्निग्धःप्रीत्यायुषोर्हितः।
बालवृद्धक्षतक्षीणवर्णकेशेंद्रियौजसाम् ॥ १४॥
प्रशस्तोबृंहणःकंठ्योगुरुःसंधानकृन्मतः।
विषघ्नःपिच्छिलश्चापिस्निग्धःप्रीत्यायुषोर्हितः

अर्थ—मिष्टरस शीतल, धातु और स्तनसंबंधी दूध और बलको बढावे, नेत्रोंको हित, वातपित्तनाशक, यह स्थूलता, मलसंग्रह और कृमिरोगको करेहै। सब रसोंमें (मीठा रस) श्रेष्ठ है। चिकनाई, प्रीति, आयु, बालक, वृद्ध, क्षतक्षीण, वर्ण, केश (बाल), इन्द्रिय और ओज इनको हितकारी है। बृंहण (पुष्टाई करता), कंठको शुद्ध करे, भारी और टूटेको जोड़नेवाला, विषनाशक, पिच्छलता (गिलगिलापन) इनको करेहै।

अतियुक्त मधुर रसके अवगुन.

सोऽतियुक्तोज्वरश्वासगलगंडार्बुदक्रमीन्।
स्थौल्याग्निमांद्यमेहांश्चकुर्यान्मेदःकफामयान् ॥ १६ ॥

अर्थ—यदि **मिष्टरस**का **अत्यंत सेवन** करे तो ज्वर, श्वास, गलगंड, अर्बुद, कृमिरोग, स्थूलता, मंदाग्नि, प्रमेह, तथा मेद और कफके रोगोंको करेहै।

अम्लरसके गुण.

रसोऽम्लःपाचनोरुच्यःपित्तश्लेष्मास्रदोलघुः।
लेखनोष्णोबहिःशीतःक्लेदनःपवनापहः ॥१७॥
स्निग्धस्तीक्ष्णःसरःशुक्रविबंधानाहदृष्टिहा।
हर्षणोरोमदंतानामक्षिभ्रूविनिकोचनः ॥ १८ ॥

अर्थ—अम्ल (खट्टा) **रस—**पाचक, रुचिकारी, पित्त, कफ, रुधिरका करनेवाला, हलका, लेखन, गरम, स्पर्श करनेसे शीतल, क्लेदनकारी और वादीको नाश करेहै। स्निग्ध, तीक्ष्ण, सर (दस्तावर) वीर्य, विबंध, अफरा, नेत्रदृष्टि इनको नष्ट करनेवाला। रोमांच और दांतोंको हर्षदाता है। एवं नेत्र और भौंहोंको संकोचन करताहै।

अतियुक्त अम्लरसके अवगुण.

सोऽतियुक्तोभ्रमंकुर्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान्
कंडुपांडुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् १९

अर्थ—अत्यंत खट्टे रसके सेवन करनेसे भ्रम, प्यास, दाह, तिमिर, ज्वर, खुजली (खारिश) पीलिया, वीसर्प, सूजन, विस्फोट और कुष्ठरोग इनको करेहै।

लवणके गुण.

लवणःशोधनोरुच्यःपाचनःकफपित्तदः।
पुंस्त्ववातहरःकायशैथिल्यमृदुताकरः॥
चक्षुर्नासास्यजलदःकपोलगलदाहकृत् २०

अर्थ—लवण अर्थात् निमकीन रस मलको शुद्ध करे। रुचिकारी, पाचन, कफपित्तका देनेवाला, पुरुषार्थ और वादीको हरनेवाला, देहमें शिथिलता (ढीलापना) और नम्रता करेहै। नेत्र, नाक, मुख, इनमें जलका लानेवाला एवं कपोल (गाल) और गलेमें दाह करेहै।

अतियुक्त लवणके दोष.

सोतियुक्तोक्षिपाकास्रपित्तकोठक्षतादिकृत् ॥
वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः ॥२१॥

अर्थ—अत्यंत निमक खानेसे नेत्रपाक, रक्त-

पित्त, कोठ और क्षतादिरोगोंको करे। गुजलट, सफेदबाल, बालोंका उड़ जाना, कुष्ठ, वीसर्प और प्यास इनको करेहै।

कटुरसके गुण.

कटुरुष्णश्चतीक्ष्णश्चविशदोवातपित्तकृत्।
श्लेष्महल्लघुराग्नेयःकृमिकंडूविषापहः ॥२२॥
रूक्षःस्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्यापकर्षणः
अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेजकोमतः
दीपनःपाचनोरुच्योनासिकाशोषणोभृशम् ॥
क्लेदमेदोवसामज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः।
स्रोतःप्रकाशकोरूक्षोमेध्योयचोविबंधकृत् ॥

अर्थ–कटु (चरपरा) **रस** गरम, विशद (फैलनेवाला) वातपित्तकर्त्ता कफ हरणकारी, हलका, इसमें अग्निका अंश अधिक है। कृमि, कंडु और विषरोगको दूर करे, रूखा है। स्त्रीके दूधको सुखाता है, मेदा और स्थूलताको हरण करता, आंसू लानेवाला, नाक, मुख, नेत्र और जीभको उद्वेग करता, दीपन, पाचन, रुचिकारी, अत्यंत नाकको सुखानेवाला, क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, मल और मूत्रोंका सुखानेवाला। छिद्रोंको खोलनेवाला रूखा, बुद्धिवर्द्धक और मलको रोकनेवाला है।

अतिसेवित कटुरसके दोष.

सोऽतियुक्तोभ्रांतिदाहमुखताल्वोष्ठशोषकृत्
कंठादिपीडामूर्च्छांतर्दाहदोवलकांतिहृत् २५

अर्थ–कटु (तीक्ष्ण) **रसके** अत्यंत सेवन करनेसे भ्रांति, दाह करे, मुख, तालु, होठ, इनको सुखावे। कंठमें पीडा करे, मूर्च्छा और अंतर्दाहको करे, तथा बल और कांतिको हरण करे है।

तिक्तरसके गुण.

तिक्तःशीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत्। कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः २६
रुच्यःस्वयमरोचिष्णुःकंठस्तन्यविशोधनः।
वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरूक्षणोलघुः ॥

अर्थ–तिक्त (कड़वा) **रस** शीतल, प्यास, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ, कृमि, कुष्ठ, विष, उत्क्लेद, दाह और रुधिरकी बीमारी इनको **नाश** करे। आप अरुचिकारीभी होकर अरुचिवालेको रुचि प्रकट करे। कंठ और स्त्रीके दूध दोनोंको शोधन करे है। वातकारी, अग्नि बढ़ावे, नासिकाको सुखावे, रूखा और हलका है।

अतिसेवित तिक्तरसके दोष.

सोऽतियुक्तःशिरःशूलमन्यास्तंभश्रमार्तिकृत्।
कंपमूर्च्छातृषाकारी बलशुक्रक्षयप्रदः ॥ २८ ॥

अर्थ–तिक्तरसके अत्यंत सेवनसे मस्तकशूल, गरदनका स्तंभ, श्रम, पीड़ा, कंप, मूर्च्छा और तृषा इन रोगोंको करे, बल और शुक्रका क्षय करनेवाला है।

कषेलेरसके गुण.

कषायोरोपणोग्राहीस्तंभनःशोधनस्तथा।
लेखनःपीडनःसौम्यःशोषणोवातकोपनः ॥
कफशोणितपित्तघ्नोरूक्षःशीतोलघुर्मतः।
त्वक्प्रसाधनआमस्यस्तंभनोविशदोमतः ॥
जिह्वायाजाड्यकृत्कंठस्रोतसांचविबंधकृत्

अर्थ–कषेला रस रोपण (घावको भरनेवाला) मलबद्धक, अंगोंको स्तंभनकारी, व्रणको शोधनकर्त्ता, व्रणादि पर उठेहुए मांसको छीलनेवाला, पीडनकर्त्ता, शीतल, चन्द्रमासे उत्पन्नहुआ है, और व्रण मज्जादिकोंको शोषण करता, वादीको कुपित करेहै, कफ, रुधिर और पित्तको नाश करे, रूखा, शितल और हलका है, त्वचाको सम्हारनेवाला, आमका स्तंभक, फैलनेवाला, जीभको जड़ करता, कंठ और छिद्रोंको रोकनेवाला है।

अति सेवित कषेले रसके दोष।

सोतियुक्तोग्रहाध्मानहृत्पीड़ाक्षेपणादिकृत् ॥

अर्थ–कषेले रसका अत्यंत सेवन करना ग्राही अफरा हृदयकी पीड़ा और क्षेपण (गिरना) इत्यादि रोगोंको करे।

पूर्वोक्त रसोंमें विचित्रता.

मधुरंश्लेष्मलंप्रायोजीर्णशालियवादृते।
मुद्गाद्गोधूमतःक्षौद्रात्सितायाजांगलामिषात्
अम्लंपित्तकरंप्रायोविनाधात्रींचदाडिमम्।
लवणंप्रायशोक्ष्णिभ्नेअयोःसैंधवंविना ॥ ३२

प्रायःकट्वतथातिक्तमवृष्यंवातकोपनम्।
ऋतेशुंठीकृष्णारसोनानिपटोलममृतांविना ॥ ३४॥

अर्थ-यावन्मात्र **मीठे रस**के पदार्थ हैं सब **कफकारी** हैं, परन्तु उनमें पुराने चांवल, जौ, मूंग, गेंहू, सहत, सफेदबूरा, वा मिश्री और जंगली जीवोंका मांस ए **कफकारी नहीं हैं।** **खट्टे** पदार्थ सब पित्त करता हैं, परंतु उनमें आंवले और अनार ए **पित्त नहीं** करते। **निमक** सब नेत्रोंको विगाड़नेवाले हैं, परंतु उनमें **सैंधानिमक** नेत्रनाशक नहीं हैं। और प्रायः **चरपरे** और **कड़वे** पदार्थ सब अवृष्य और वातको कुपित करनेवाले हैं, परंतु उनमें सोंठ, पीपल, लहसन, परवल और गिलोय ए **अवृष्य** और **वात कुपित** कर्त्ता नहीं हैं। **चरक** में भी लिखा है जैसे-

पिप्पलीनागरंवृष्यंकटुचावृष्यमुच्यते।
प्रायशःस्तंभनंप्रोक्तं कषायमभयांविना ॥ ३५॥
सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणाःषड्रससंभवाः।
रसानांयोगतस्तुस्यादन्यएवगुणोदयः ॥ ३६॥
संयोगाद्विषतांयातिसममाज्येनमाक्षिकम्।
अमृतत्वंविषंयातिसर्पदष्टस्यवैयथा ॥ ३७॥

अर्थ-पीपल, सोंठ, ए **वृष्य** हैं; बाकी सब **चरपरे** पदार्थ अवृष्य हैं **हरड** के सिवाय सब कषैले पदार्थ **स्तंभक** हैं।

ए सामान्यता करके छः रसोंसे उत्पन्न गुण कहेहैं। परंतु परस्पर रसोंके संयोग होनेसे उनमें और २ ही गुण हो जातेहैं। जैसे अमृतके सदृश **घी** में समान **सहत** मिलाने से **विष** (ज़हर) हो जाता है। दूध आदि अमृत पदार्थ सांपके डसने से विषरूप हो जाते हैं।

गुण.

लघुर्गुरुश्चस्निग्धोरूक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात्।
नभोभूवार्वातानांवह्नेरेतेगुणाःस्मृताः ॥ ३८॥

अर्थ-लघु, गुरु, स्निग्ध, रूक्ष और तीक्ष्ण, ए क्रमसे आकाश, पृथ्वी, जल, पवन और अग्निके गुण हैं।

लघुआदि पदार्थों के धर्म.

लघुपथ्यंपरंप्रोक्तंकफघ्नंशीघ्रपाकिच।
गुरुवातहरंपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकिच ॥ ३९॥
स्निग्धंवातहरंश्लेष्मकारिवृष्यंबलावहम्।
रूक्षंसमीरणकरंपरंकफहरंमतम् ॥ ४०॥
तीक्ष्णंपित्तकरंप्रायोलेखनंकफवातहृत्।

अर्थ-**लघु** (हलका) पदार्थ अत्यंत पथ्य, कफनाशक, शीघ्र पचनेवाला है। **गुरु** (भारी) पदार्थ वात हरणकर्त्ता, पुष्टिकारी, कफकारी और देरमें पचे। **स्निग्ध** (चिकना) पदार्थ वातको हरे, कफ करे, वृष्य और बल बढ़ाता है। **रूक्ष** (रूखा) पदार्थ वादीकरे और अत्यंत कफ हरण कर्त्ता है। **तीक्ष्ण** (तीखा) पदार्थ प्रायः पित्तकरता, लेखन (छीलनेवाला) और कफवातको हरण करे है।

सुश्रुतोक्त बीस गुण.

सुश्रुतेतुगुणाएतेविंशतिस्तान्प्रवेश्मृणु ॥४१॥
गुरुर्लघुःस्निग्धरूक्षौतीक्ष्णःश्लक्ष्णःस्थिरस्सरः
पिच्छिलोविशदःशीतउष्णश्चमृदुकर्कशौ ॥
स्थूलःसूक्ष्मोद्रवःशुष्कआशुर्मंदःस्मृतागुणाः।
श्लक्ष्णःस्नेहंविनापिस्यात्कठिनोऽपिहिचिक्कणः
स्थिरोवातमलस्तंभीसरस्तेषांप्रवर्त्तकः।
पिच्छिलस्तंतुलोबल्यःसंधानःश्लेष्मलोगुरुः ॥
क्लेदच्छेदकरःस्यातोविशदोव्रणरोपणः।
शीतस्तुह्लादनःस्तंभीमूर्च्छातृट्स्वेददाहनुत् ॥
उष्णोभवतिशीतस्यविपरीतश्चपाचनः।
स्थूलःस्थौल्यकरोदेहेस्रोतसामवरोधकृत् ॥
देहस्यसूक्ष्मच्छिद्रेषुविशेद्यत्सूक्ष्ममुच्यते।
द्रवःक्लेदकरोव्यापीशुष्कस्तद्विपरीतकः ॥ ४७॥

---

१ लघु, गुरु, द्रव्य, रसोंमें जानना, जैसे लिखा है-

गुर्वादयो गुणा द्रव्ये पृथिव्यादौ रसाश्रये।
रसेषु व्यपदिश्यंते साहचर्योपचारतः ॥

अर्थात् गुरु, लघु आदि गुण द्रव्यमें पृथ्वी आदि रसोंके आश्रित हैं, इसीसे साहचर्य के उपचार से वो गुण रसोंमें माने जाते हैं।

आशुराशुकरोदेहेधावत्यंभसितैलवत् ।
मंदःसकलकार्येषुशिथिलोऽल्पोऽपिकथ्यते ॥

अर्थ-सुश्रुतमें ए बीस गुण हैं, उनको कहताहूं-गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष, तीक्ष्ण, श्लक्ष्ण, स्थिर, सर, पिच्छल, विशद, शीत, उष्ण, मृदु, कर्कश, स्थूल, सूक्ष्म, द्रव, शुष्क, आशुकारी, और मंद । तहां लघु, गुरु, स्निग्ध, रूक्ष, तीक्ष्ण गुणोंको कह चुके हैं-अब बाकीके गुणोंको कहते हैं । **श्लक्ष्ण** पदार्थ चिकनाई के विना भी कठोर होने पर चिकना होता है । जैसे--घोटा-हुआ पत्थर । **स्थिर** पदार्थ वात और मलको रोकताहै । सरपदार्थ वातमल को निकालता है **पिच्छल** (मलाई के सदृश) पदार्थ तंतु (रेशे) वाला, बलकारी, भारी, टूटे को जोड़नेवाला, कफकर्त्ता, क्लेद और छेदनकर्त्ता जानना । **विशद** (फैलनेवाला) पदार्थ व्रणको भरे है । **शीतल** पदार्थ सुखकर्त्ता, रुधिर आदिके बहने को रोकनेवाला, मूर्च्छा, प्यास, पसीने और दाहको दूर करे है । **गरम** पदार्थ शीतल पदार्थके विपरीत गुणवाला है, और पाचक है । **स्थूल** पदार्थ देहको मोटा करे और छिद्रोंको बंद करता है । जो देहके छोटे २ छिद्रोंमें प्रवेश करे (धसजावे) उसको **सूक्ष्म** पदार्थ कहते हैं । **द्रव** पदार्थ क्लेदकारी और व्यापक है । और **शुष्क** पदार्थ इससे विपरीत गुणवाला है । **आशुकारी** पदार्थ देहमें शीघ्रता करे, जैसे-तेल जलमें जल्दी तैर जाता है । और मंद पदार्थ सब कार्योंमें शिथिलता करे इसको **अल्प** भी कहते हैं ।

अब गुण के प्रसंग से दीपनादिक गुणोंको भी लक्षणसहित लिखते हैं ।

पचेन्नामंवह्निकृच्चदीपनंतद्यथामिसिः ।
पचेत्त्वामंनवह्निंचकुर्याद्यत्तद्धिपाचनम् ॥ ४९ ॥
नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचनः ।
नशोधयतियद्दोषान्समान्नोदीरयत्यपि ॥५०॥
समीकरोतिविषमान्शमनंतद्यथाऽमृता ।
कृत्वापाकंमलानांचभित्वाबंधमधोनयेत् ॥
तच्चानुलोमनंज्ञेयंयथाप्रोक्ताहरीतकी ॥ ५१ ॥
पक्तव्यंयदपक्त्वैवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम् ।
नयत्यधःस्रंसनंतद्यथास्यात्कृतमालकम् ॥५२॥
मलादिकमबद्धंयद्बद्धंवापिंडितंमलैः ।
भित्वाऽधःपातयतियद्भेदनंकटुकीयथा ॥५३॥
विपक्वंयदपक्वंवामलादिद्रवतांनयेत् ।
रेचयत्यपितज्ज्ञेयंरेचनंत्रिवृतायथा ॥ ५४ ॥
अपक्वंपित्तश्लेष्माणंबलादूर्ध्वंनयेत्तुयत् ॥
वमनंतद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा ॥ ५५ ॥
स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसंचयम् ।
देहसंशोधनंतत्स्याद्देवदालीफलंयथा ॥ ५६ ॥
दीपनंपाचनंयत्स्यादुष्णत्वाद्द्रवशोषकृत् ॥
ग्राहितच्चयथाशुंठीजीरकंगजपिप्पली ॥ ५७ ॥
रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् ।
वातकृत्स्तंभनंतत्स्याद्यथावत्सककुंटुकौ ॥५८॥

अर्थ-जो द्रव्य आमको न पचावे और जठराग्निको दीपन करे वो **दीपनऔषधी** है जैसे-**सौंफ** । और जो आमको पचावे और अग्निको दीपन करे उसको **पाचन औषध** कहते हैं। जैसे-**नागकेशर**। और जो आमको पचावे तथा अग्निको दीप्त करे उसको **दीपनपाचन** कहतेहैं। जैसे-**चित्रक**। जो द्रव्य दोषोंको वमन विरेचनादि कर्मोंसे शोधन न करे और जो समान दोषहैं उनको बढावेभी नहीं, एवं जो दोष विषम (न्यूनाधिक) हो रहे हों उनको समान करदेवे उसको **शमन** [संशमन] औषधी कहतेहैं । जैसे-**गिलोय** । जो औषध अपक्व वात,पित्त,कफ मलोंका पाक

---

१ वहां पर यह शंका होती है कि जो अग्निको प्रदीपन करे है वो आमको कैसे नहीं पच[illegible] १ तहां कहते हैं कि **दीपन द्रव्य** उतनी ही अ[illegible] दीपन करे है कि जिससे अन्न भोजन करने की इ[illegible]होती है, परन्तु आम पचाने की सामर्थ्य नहीं रखती जैसे छोटे दीपक की अग्नि केवल प्रकाश (उजेला)[illegible] करे है किंतु टोकनी के चांवलों को नहीं पकास[illegible] । फिर शंका होताहै कि जो अग्निको दीपन [illegible] करे वो आमको कैसे पचाती है ? तहां कहते[illegible] कि जैसे अंग्रीठी के अंगार अन्नको पचाते हैं पर[illegible] दीपक के समान सर्वत्र प्रकाश नहीं करते, इसी री[illegible]से **पाचन द्रव्य** आमको पचानेकी सामर्थ्य रखता है, दीपन की नहीं ।

करके और वातके बंधको तोड़ फोड़के मलोंको नीचे गेर देवे, उसको, **अनुलोमन** औषधी जाननी। जैसे-**हरड़**। जो कोठेमें चिपटेहुए पकाने योग्य मलादिक हैं उनको विना पकाएही नीचे लावे अर्थात् दस्त करावे, उसको **स्रंसन** औषधी कहतेहैं। जैसे **अमलतास**। जो वातादि दोषोंकरके अबद्ध (ढीले) और बद्ध (बंधेहुए) वा वादीसे मेंगनीके समान हुए मलादिकोंको **भेद्** (तोड़) कर गुदाके मार्गसे नीचे गेरे उसको **भेदन औषध** कहते हैं। जैसे--**कुटकी**। जो पके अथवा कच्चे मलादिकको पतला करदे और गुदाद्वारा नीचे गेरे, उसको **रेचन औषध** कहतेहैं। जैसे-**निसोथ**। जो पके नहीं ऐसे पित्त और कफको बलपूर्वक मुखके द्वारा होकर निकाल (वमन करावे) वो **वमन संज्ञक** है जैसे-**मैनफल**। जो स्वस्थानमें संचित मलोंको ऊपरके भागमें लाकर (मुखनासिकाद्वारा) वाहर निकाले अथवा उस संचयको अधोभाग (गुदा लिंग भगद्वारा) वाहर निकाले, वो **देहसंशोधक** है। जैसे-**देवदाली** (बंदाल, सोनैया, घंघरवेल) जो दीपन पाचन है और गरम होनेके कारण देहकी द्रवता (तरी) को सुखाय देवे, उसको **ग्राही औषध** कहतेहैं। जैसे-**सोंठ, जीरा** और **गजपीपल**। जो रूक्ष, शीतल, कषेले और लघुपाकी होनेके कारण प्रतिलोमवात करदेवे। वो **स्तंभन औषध** है। जैसे-**कुड़ा** और **सोनापाठा**।

श्लिष्टान्क[illegible]दिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात्
छेदनंतद्यथाक्षारामरिचानिशिलाजतु ॥ ५९ ॥
धातून्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयम् ।
लेखनंतद्यथाक्षौद्रंनीरमुष्णंवचायवाः ॥ ६० ॥
यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजीकरंहितत् ।
यथाश्वगंधामुसलीशर्कराचशतावरी ॥ ६१ ॥
यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलंहितदुच्यते ।
यथानागबलाद्याःस्युर्बीजंचकपिकच्छुजम् ।
दुग्धंमाषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच ।
प्रवर्तिनीस्त्रीशुक्रस्यरेचनंबृहतीफलम् ।
जातीफलंस्तंभकंस्यात्कालिंगक्षयकारिच ॥६४॥
रसायनंतुतज्ज्ञेयंयज्जराव्याधिनाशनम् ।
यथाहरीतकीदंतीगुग्गुलुश्चशिलाजतु ॥ ६५ ॥
पूर्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकंचगच्छति ।
व्यवायितद्यथाभंगाफेनंचाहिसमुद्भवम् ॥६६॥
संधिबंधांस्तुशिथिलान्यःकरोतिविकाशितत्
विशोष्यौजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ ॥
बुद्धिंलुंपतियद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते ॥
तमोगुणप्रधानंचयथामद्यंसुरादिकम् ॥ ६८ ॥
व्यवायिचविकाशिस्यात्सूक्ष्मच्छेदिमदाव-
हम् । आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतं-
विषम् ॥ ६९ ॥
निजवीर्येणयद्द्रव्यंस्रोतोभ्योदोषसंचयम् ।
निरस्यतिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा ॥७०

अर्थ-जो परस्पर मिले कफादि दोषोंको अपनी शक्तिसे तोड़ फोड़कर अलग २ कर देवे, उसको **छेदन औषध** कहतेहैं। जैसे-**खार** (जवाखारादि), **कालीमिरच** और **शिलाजीत**। जो द्रव्य रसादि धातु और वातादि दोषोंको सुखायके देहको लटाय डाले, उस औषधको **लेखन** कहतेहैं। जैसे-**सहत, गरम जल, वच,** और **जौ**। जिस द्रव्यके भक्षणसे स्त्रियोंमें यह पुरुष हर्षको प्राप्त हो अर्थात् मैथुन करनेका उत्साह हो वो **वाजीकर औषध** जाननी। जैसे-**असगंध, मूसली मिश्री,** और **सतावर**। जिससे शुक्र (वीर्य, मनी) की वृद्धि हो उसको **शुक्रल** कहतेहैं। जैसे-**नागबला** आदि और **कौंचके बीज**। दूध, उड़द, भिलाएकी मिंगी, और आमले ए अपने २ प्रभाव से शीघ्र रसादि उत्पादन पूर्वक शुक्रको प्रकट करें और उसके अधिक होने से रेचन अर्थात्, निका- [illegible] (स्मरण, कीर्तन, संभाषण, [illegible]नन और मैथुन ए संपूर्ण [illegible]को प्रवृत्त करें। **कटेरी** का [illegible]। **जायफल** वीर्यका स्तंभन

१ 'मलादिक' इसमें जो आदिशब्द है उससे कफ पित्त जाने।

१ "यथामृतारुदंतीच" इतिपाठांतरम्।

करता है। और इन्द्रजौ शुक्र को क्षय करते हैं। जो द्रव्य देह की वृद्धावस्था और ज्वरादि रोगों को दूर करे उसको **रसायन औषधि** कहते हैं। जैसे-**हरड़, दंती, गूगल** और **शिलाजीत**। जो द्रव्य प्रथम अपक्वही अपने गुणों से सब देहमें व्याप्त होकर फिर पचे, वो व्यवायी **औषधी** है। जैसे **भांग** और **अफीम**। जो धातु (सकल शरीरस्थ वीर्यों) से ओजको शोषण करके देहके संधिबंधनों को शिथिल (ढीला) कर देवे, उसको **विकाशी** औषध जानना जैसे **सुपारी** और **कोदों**। जो द्रव्य बुद्धिका लोप करे और तमोगुण प्रधानहो उसको **मदकारी** (मादक) **औषधि** जानना। जैसे **मद्य** (दारू) **सुरादिक**। जो व्यवाई, विकाशी, कफ नाशक, मादक, अधिक अग्नि गुणवाला और प्राणनाशक वह **योगवाही औषध** कहाता है। जैसे-**विष** (वत्सनाभ शङ्कुकादिक)। जो द्रव्य अपने वीर्य करके देहके छिद्रों से वातादि दोषसंचय को निकाले उसको **प्रमाथी औषध** कहते हैं। जैसे-**काली मिरच** और **बच**।

पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यंरुद्ध्वारसवहाःशिराः।
धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यंदियथादधि ॥७१॥
विदाहिद्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्यात्तथातृषाम।
हृदिदाहंचजनयेत्पाकंगच्छातिताच्चिरात् ॥७२॥
गृह्णातियोगवाहिद्रव्यंसंसर्गिवस्तुगुणान्।
पच्यमानंयथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादि ॥

अर्थ-जो द्रव्य अपने पिच्छल गुणकरके भारीपनेसे रसवाहिनी २४ शिराओं को रोककर शरीर को भारी करदे उस पदार्थको **अभिष्यंदी** कहते हैं। जैसे-**दही**। **दाहकद्रव्य**-खट्टी डकार और तृषा को करे है। तथा हृदयमें दाह करे और पाक इसका बहुत जल्दी होता है। **योगवाही** जो द्रव्य होता है वह संसर्गी (जो उसमें अन्य वस्तु मिली है उसके) गुण दोषोंको करे और उसी प्रकार का उसका पाक होय। जैसे-**सहत, जल, तेल, घी, पारा,** और **लोह** आदि ए **योगवाही औषध** हैं।

वीर्य.

उष्णशीतगुणोत्कर्षाद्बुधैर्वीर्यंद्विधास्मृतम्।
यत्सर्वमग्निसोमीयंदृश्यतेभुवनत्रयम् ॥७४॥
उष्णंवातकफौहन्याच्छीतंतुतनुतेजराम्।
शीतंवातकफातंकान्कुरुतेपित्तहृत्परम् ॥ ७५॥
तत्रोष्णंभ्रमतृड्ग्लानिस्वेददाहाशुपाकताम्।
शमंचवातकफयोःकरोतिशिशिरंपुनः।
ह्लादनंजीवनंस्तंभंप्रसादंरक्तपित्तयोः ॥ ७६ ॥

अर्थ-उष्ण (गरम) और शीत (शीतल) गुणके उत्कर्षसे पंडितोंने **वीर्य** दो प्रकारका माना है, इसका यह कारण है कि संपूर्ण जगत् अग्नि और सोमात्मक दीखता है, तीसरे प्रकारका नहीं है। [हमारी समझमें दोष भी वात और पित्त दो ही मुख्य हैं]। **वीर्योंके गुण-उष्णवीर्य** वात कफको नाश करे, और अत्यंत गरमी तथा बुढ़ापेका करनेवाला है। और **शीतवीर्य,** वातकफके विकारोंको करे और पित्तको हरण करेहै, यह **वाग्भटमें** कहाहै। **अन्य आचार्य** कहतेहैं कि **उष्णवीर्य** भ्रम, तृषा, ग्लानि, पसीने, दाह, शीघ्रपाकता और वातकफको शमन करताहै। एवं **शीतवीर्य** ह्लादन (आनंद) जीवन, स्तंभन और रक्तपित्तकी स्वच्छता को करताहै।

विपाक

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरसांतरम् ॥
रसानांपरिणामांतेसविपाकइतिस्मृतः ॥७७॥
मिष्टःपटुश्चमधुरमम्लोऽम्लंपच्यतेरसः
कटुतिक्तकषायाणांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः ॥

अर्थ-जठराग्नि (पेटकी अग्नि) के योगसे जो रस प्रकट होकर फिर उस रसके पचनेसे जो परिणाम (मीठा,

१ **वाग्भट** कहताहै "त्रिधा रसानां पाकःस्यात्स्वादुरम्लकटुकात्मकः" अर्थात् रसोंका पाक स्वादु, अम्ल, और कटु तीन प्रकारका होता है। "प्रायः पदेन व्रीही स्यात् स्वादुरम्लो विपाकतः" ऊपर जो ७८ के श्लोक में **'पाकःस्यात्प्रायशः कटुः'** इसमें प्रायशब्द रखनेसे यह प्रयोजन है कि कहीं कहीं उक्त नियमके विपरीतभी पाक होताहै। जैसे मिष्ट **चावलोंका** पाक खट्टा होताहै इस जगह व्रीही (चांवल) मीठेहैं तो मीठाही पाक होना चाहिये सो न हुआ, किंतु खट्टा हुआ यही विपरीतता है। इसीप्रकार **हरड़** कषेलीहै सो इसका कटुपाक होना चाहिये, परंतु **मीठा** होताहै। इसीप्रकार सोंठकाभी कटुपाककी जगह मीठा पाक होताहै।

खट्टा आदि) होताहै, उसको **विपाक** (परिपाक-पकना) ऐसा कहते हैं। तहां **विपाक** तीन प्रकार का है। मीठा, खारी और खट्टा, तहां **मीठे** और खट्टे रसवाले **पदार्थका पाक** मीठा ही होता है। और खट्टे पदार्थका खट्टा होता है। एवं कटु (चरपरा) कड़वा और कषेले रसोंका पाक कटु (चरपरा) ही होता है।

श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः।
अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः॥७९॥
कटुःकरोतिपवनंकफपित्तंचनाशयेत्।
विशेषएवरसतोविपाकानांनिदर्शितः॥ ८०॥

अर्थ--अब **विपाकोंके गुण** कहते हैं। मधुरपाकी द्रव्य कफ करे है और वातपित्तको हरण करे, अम्लपाकी द्रव्य पित्त करे, और वातकफको नष्ट करे। और कटु पाकी द्रव्य वात करे तथा कफपित्तको नाश करनेवाला है। यह विपाक विशेष करके रससे दिखाया है।

प्रभाव.

रसादिसाम्येयत्कर्मविशिष्टंतत्प्रभावजम्॥
दंतीरसाद्यैस्तुल्यापिचित्रकस्यविरेचनी॥
मधूकस्यचमृद्वीकाघृतंक्षीरस्यदीपनम्॥८१॥
प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः॥
समाऽपिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम्॥८२॥
कचित्तुकेवलंद्रव्यंकर्मकुर्यात्प्रभावतः॥
ज्वरंहंतिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा॥ ८३॥

अर्थ--जो समान (यकसां) रसवाली अनेक औषधमें किसी एकका जो विशेष कर्म है वो कर्म उस औषधका **प्रभाव** जानना। जैसे--**दंती** और **चित्रक** दोनों रस वीर्य विपाकादिक गुणोंमें तुल्य भी हैं-परन्तु **दंती** जैसी विरेचक है ऐसी **चित्रक** नहीं है। दंती में जो विशेष शक्ति रहती है उसीसे वो दस्त कराती है। उसी शक्तिको **प्रभाव** कहते हैं। उसी प्रकार **महुआ** और **दाख** ए दोनों रसादि गुणोंमें समान हैं। परन्तु **दाख**में विरेचनशक्ति अधिक है। तथा **घी**-दूधके समान गुण होनेपर भी अग्निको दीपन करनेकी अधिक शक्ति रखताहै। **आमले-लकुच** (बड़हर) के समान गुण होनेपर भी त्रिदोष शांतिकारक हैं, किंतु **बड़हर** इससे विपरीत है। किसी जगह केवल द्रव्यविशेषका विशेष प्रभाव दीखने में आता है। जैसे-**सहदेई**की जड़ मस्तकमें बांधनेसे **ज्वर** दूर होय।

इसीसे अनेक प्रकारकी औषधोंके योगोंके फलमें उनका स्वभाव (प्रभाव) ही ग्रहण करना, रस, गुण, वीर्य, विपाकादि रूपका हेतु (कारण) विचार नहीं करना चाहिये। जैसे **सुश्रुत** कहता है।

अमीमांसान्यचिंत्यानिप्रसिद्धानिस्वभावतः।
आगमेनोपयोज्यानिभेषजानिविचक्षणैः॥
प्रत्यक्षलक्षणफलाप्रसिद्धाश्चस्वभावतः।
नौषधीर्हेतुभिर्विद्वान्परीक्षेतकदाचन॥
सहस्रेणापिहेतूनांनाम्बष्ठादिर्विरेचयेत्।
तस्मात्तिष्ठेत्तुमतिमानागमेनतुहेतुभिः॥ इति॥

अर्थ--बहुतसी जगह हेतु वादवशवर्ती नहीं होना"
"शास्त्रानुसार औषध व्यवस्था करना उचित है, कारण"
"कि संपूर्ण द्रव्योंके गुण अमीमांस्य (अकथनीय)"
"अचिंत्य (अचिंतनीय) तथा स्वभावसे ही प्रसिद्ध हैं"
"उन औषधोंको चतुरवैद्य शास्त्रद्वाराही वर्ते। जिस"
"औषधके फल प्रत्यक्ष से मिलते हैं इसी प्रकार जिसका"
"जैसा स्वरूप शक्तिमान् स्वभावसे प्रसिद्ध है। उसके"
"विषय में और प्रकार से हेतु दिखाय के विपरीत"
"गुणोंकी कल्पना कदाचित् विद्वान् परीक्षा में न"
"करे। जैसे हजार हेतु दिखाने पर भी **अंबष्ठादि**"
"गणमें विरेचन शक्ति नहीं उपस्थित होवेगी। इसीसे"
"बुद्धिमान् वैद्य हेतुवादको त्याग के शास्त्रोक्त विधिका"
"अनुवर्त्तन करे।"

विरुद्धगुणसंयोगेभूयसाल्पंहिजीयते॥
रसंविपाकस्तौवीर्यंप्रभावस्तान्व्यपोहति॥८४॥

अर्थ--जहां औषधों के गुणसंयोगों की आपस में विरुद्धता आन पड़ती है वहां प्रायः अल्पको बलवान् जीत लेता है, जैसे रसको **विपाक** जीत लेता है। और रस विपाकको **वीर्य**, और रसवीर्य विपाक को **प्रभाव** जीत लेता है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी रोगीको ऐसी औषधी दीनी जिसमें अनेक औषधी अनेक गुण विशिष्ट होवें तो उसमें जो औषध रस, वीर्य, विपाक और प्रभाव में अधिक होगी

वो सबके गुणोंको दावकर सबके ऊपर अपने गुणको करेगी ।

इति श्री अभिनवनिघंटौ मिश्रवर्गः समाप्तः ।

अथ हरीतक्यादिवर्गः प्रारभः ।

इस प्रकार रस, गुण, वीर्य, विपाक और प्रभावोंके स्वरूपको कहकर किस २ द्रव्य में कौन २ रस, वीर्य, विपाक और प्रभाव है, उनके ज्ञानके वास्ते प्रत्येक औषधगत रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभावोंको कहते हैं । तहां प्रथम हरड़की उत्पत्ति, नाम, लक्षण और गुणादिकों को कहते हैं ।

दक्षंप्रजापतिस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः ।
कुतोहरीतकीजातातस्यास्तुकतिजातयः ॥१॥
रसाःकतिसमाख्याताःकतिचोपरसाःस्मृताः ।
नामानिकतिचोक्तानिकिंवातासांचलक्षणम् ॥
केचवर्णागुणाःकेचकाचकुत्रप्रयुज्यते ।
केनद्रव्येणसंयुक्ताकांश्चरोगान्व्यपोहति ॥ ३ ॥
प्रश्नमेतद्यथापृष्टंभगवन्वक्तुमर्हसि ।
अश्विनोर्वचनंश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥

अर्थ–स्वथ्य (रोगरहित वा प्रसन्नचित्त) प्रजापति **दक्ष** से **अश्विनीकुमार** बोले, हे प्रभो ! **हरड** कहां से उत्पन्न हुई और इसकी कितनी जाती हैं । और कितने रस तथा कितने उपरस हैं । और उन प्रत्येक के कितने २ नाम तथा उन औषधों का क्या २ लक्षण है। और उनके कौन २ वर्ण (रंग), कौन २ गुण और कोनसी औषध किस २ स्थल (रोगों) में दीनी जाती है । और किस द्रव्य (अनुपान) के साथ वो कौन २ से रोगों को नष्ट करे है ? हे भगवन् ! इस हमारे प्रश्नके अनुसार आप कहिये । इस प्रकार अश्विनीकुमारों के वाक्यको सुनके **दक्षप्रजापति** बोले ।

उत्पत्ति.

प्रपातबिंदुर्मेदिन्यांशक्रस्यपिबतोऽमृतम् ।
ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी ॥ ५ ॥

अर्थ–इन्द्रके अमृत पीनेके समय अमृतकी बूंद (उसके कटोरे से झलक कर) पृथ्वीमें गिरी, उससे सात जातिकी **हरड** उत्पन्न हुई ।

हरीतक्यभयापथ्याकायस्थापूतनाऽमृता ।
हैमवत्यव्यथाचापिचेतकीश्रेयसीशिवा ॥
वयस्थाविजयाचापिजीवंतीरोहिणीतिच ।

अर्थ–हरीतकी, अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हैमवती, अव्यथा, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, वयस्था, विजया, जीवंती, और रोहिणी ये हरड़ के १५**संस्कृत** नाम हैं । **हिन्दी** भाषामें हरड़, हड़, हर्र कहते । **बंगालमें** हरीतकी इस संस्कृत नामसे ही प्रसिद्ध है । **मरेठी** में हिरडा, हरडे; **कर्नाटकमें** आणिले। **गुजरातीमें** हरडा, ता कडकाई; **फारसीमें** हलेलज, अस्फर, हलेलेजर्द कहते हैं, । **इंग्रेजी** में टरमिनेलिआ केबुला Terminalia Chebula कहते हैं । **हरड शाखी** वा **वानस्पती** जातिके वृक्षका फल है । इसकी उत्पत्ति प्रायःशरद (वर्फान्) और पर्वती देशोंमें है । इसके दो दो **पत्ते** आमने सामने और मोटे तथा अमरूद वृक्षके समान और कोमल तथा लाल रंगके होतेहैं इसका **फूल** बारीक मौरके सदृश होताहै । तथा **फल** १ या १॥ इंच

१ आगे हम नामका आदि अक्षर लिखेंगे । जैसे- **सं.** से संस्कृत, **हिं.** हिन्दी **बं.** बंगाली, **म.** मरेठी, **क.** कर्नाटक, **गु.** गुजराती, **फा.** फारसी, **इं.** इंग्रेजी, **ला.** से. लाटिन् इत्यादि–इनसे बुद्धिमान् समझ लेंगे।

हमारे संस्कृतमें जो औषधों के नाम हैं वो सब सार्थक हैं, निरर्थक नहीं है । जैसे–सब रोगोंको हरती हैं इससे हरड़का नाम **हरीतकी** है । रोग के भयसे रहित करे इसीसे हरडको **अभया** कहा है । पथ्यरूप होनेसे **पथ्या** नाम है । देहको बुढ़ापे से बचाती है इसी से इसका नाम **कायस्था** है । अमृत तुल्य गुण करने से **अमृता** नाम कहा है। और हिमालय पर्वत में इसकी पैदाइश होने से **हेमवती** नाम कहा है । इसी प्रकार क़िसी नाम से औषधीके गुण जाने जाते हैं । किसी से **उत्पत्ति,** किसी से उसका **स्वरूप** जाना जाता है ।

लंबा होता है । इसको सुखाने से इसके ऊपरकी छाल सूख कर खडी पांच रेखा हो जाती हैं । जब यह वृक्षके ऊपर कच्चा रहता है तब अनींदार कांटा और धारयुक्त होताहै । **बड़ीहरड** तोलमें २ से ५ तोलेतककी होती है। और बीचकी कि जिनको हरी कहते हैं वो वजन में ½ से लेकर १ तोले तककी होती हैं। यह त्रिफलेमें गेरीजाती हैं । मात्रा १० रत्ती से ले ३॥ माशे पर्यन्त है। तीसरी छोटी (जंगी) हरड होती है । ये साधारण जुल्लाव में लीनी जाती है। मात्रा ३॥ माशे से लेकर ७ माशे पर्यन्त, और इसके भीतर लंबा **बीज** निकलता है । हरड़ जैसी नवीन होयगी ऐसीही अधिक गुणवाली होती है । और प्रयोगोंमें हरेके फलकी छाल लेनी चाहिये। **चित्रनंबर १ देखो।**

सप्तजाति.

विजयारोहिणीचैवपूतनाचामृताऽभया।
जीवंतीचेतकीचेतिपथ्यायाःसप्तजातयः॥ ७॥

अर्थ–विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवंती और चेतकी, ए हरडकी **सात जाति** हैं।

विंध्याद्रौविजयाहिमाचलभवास्याच्चेतकीपूतना सिन्धौस्यादथरोहिणीतुविजयाजाताप्रतिस्थानके।पंपायाममृताभयाचजनितादेशेसुराष्ट्राह्वये जीवंतीतिहरीतकीनिगदितासप्तप्रभेदाबुधैः॥

अर्थ–विंध्याचल पर्वतपर **विजया** नामकी हरड पैदा होती है। **पूतना** और **चेतकी** ए दो जातिकी हरडें हिमालय पर्वत में होती हैं। **रोहिणी** हरड सिंधुदेशमें होतीहै । और **विजया** नामकी हरड **प्रतिस्थानक** देशमें होती है। **अमृता** और **अभया**, **पंपा** (किष्किंधा के समीप) में, एवं **जीवंती** और **हरीतकी** नामकी हरड **सौराष्ट्र** देश में होती है। ये पंडितोंने **सात** भेद कहे हैं।

लक्षण.

अलाबुवृत्ताविजयावृत्तासारोहिणीस्मृता।
पूतनास्थिमतीसूक्ष्माकथितामांसलाऽमृता॥८॥
पंचरेखाऽभयाप्रोक्ताजीवंतीस्वर्णवर्णिनी।
त्रिरेखाचेतकीज्ञेयासप्तानामियमाकृतिः॥ ९॥

१ चम्पायाममृतेति पाठान्तरम्।

अर्थ–जो घीयाके समान लंबी होकर गोल होय उसको **विजया** हरड जाननी और जो गोल है वो **रोहिणी** है । पतली और रेखा (लकीर) वाली **पूतना** है । और मोटी तथा रेखावाली **अमृता** कही है । जिसमें पांच रेखा हों वो **अभया** है । सुवर्ण के समान पीली **जीवंती** है और तीन रेखावाली **चेतकी** हरड जाननी । यह सातों प्रकारकी हरडों का स्वरूप है।

सातोंके पृथक् पृथक् प्रयोग.

विजयासर्वरोगेषुरोहिणीव्रणरोहिणी।
प्रलेपपूतनायोज्याशोधनार्थेऽमृताहिता॥१०॥
अक्षिरोगेऽभयाशस्ताजीवंतीसर्वरोगहृत्।
चूर्णार्थेचेतकीशस्तायथायुक्तंप्रयोजयेत्॥११॥

अर्थ–सर्व रोगोंमें **विजया** हरड देनी। व्रण (घाव) को अंकुर लानेवाली **रोहिणी** है । लेपमें **पूतना**को डाले । शोधन (जुल्लाब आदि) में **अमृता** लेनी हित है। नेत्ररोगमें **अभया** उत्तम है। और **जीवंती** सर्व रोग हरण करनेवाली है । चूर्णमें **चेतकी** हरड डाले। इस प्रकार इनको यथा योग्य प्रयोगोंमें मिलावे।

चेतकीद्विविधाप्रोक्ताश्वेताकृष्णाचवर्णतः।
षडंगुलायताशुक्लाकृष्णात्वेकांगुलास्मृता॥१२॥
काचिदास्वादमात्रेणकाचिद्गंधेनभेदयेत्।
काचित्स्पर्शेनदृष्ट्याऽन्याचतुर्धाभेदयेच्छिवा॥
चेतकीपादपच्छायामुपसर्पंतियेनराः।
भिद्यंतेतत्क्षणादेवपशुपक्षिमृगादयः॥ १४॥
चेतकीतुधृताहस्तेयावत्तिष्ठतिदेहिनः।
तावद्भिद्येतवेगैस्तुप्रभावान्नात्रसंशयः॥ १५॥
नृपादिसुकुमाराणांकृशानांभेषजद्विषाम्।
चेतकीपरमाशस्ताहितासुखविरेचनी॥ १६॥

अर्थ–चेतकी जातिकी हरड **दो प्रकारकी** होती है। एक **सफेद**, दूसरी **काली** । तिसमें छः अंगुल लंबी **सफेद** (बड़ी हरड़) और १ अंगुल की **काली** (छोटी, जिसको जंगी हरड कहते) हैं। कोई हरड़, **खाने** से दस्त लाती है। कोई **सूंघने** से, कोई **छूने** से और कोई **देखनेमात्र** से ही दस्तोंको लाती है इसप्रकार इसमें **चार प्रकार** की भेदन शक्ति

है। जो प्राणी **चेतकी** नामक हरड के दरख्त के नीचे जाकर खड़े होते हैं, उन पशु, पत्ती और मृगादिकों को तत्क्षण दस्त होने लगते हैं। **चेतकी हरड** को प्राणी जब तक हाथमें लिये खड़ा रहेगा तब तक उसको उस हरड के **प्रभाव** से बराबर दस्त होते रहेंगे [सुनते हैं कि ऐसे दरख्त (वृक्ष) पहिले काबुलके राज्यमें थे, परन्तु अब नष्ट होगये] इस तीव्र हरडको सुकुमार (नाजुक) मनुष्य, कृश और जो औषधों से द्वेष करते हैं उनको कदाचित् हाथमें नहीं लेनी चाहिये, परन्तु यह चेतकी परमोत्तम हितकारी और सुखपूर्वक विरेचन करनेवाली है।

सप्तानामपिजातीनांप्रधानंविजयास्मृता ।
सुखप्रयोगासुलभासर्वरोगेषुशस्यते ॥ १७ ॥

अर्थ–सातों जातिकी हरडोंमें **विजया** हरड प्रधान है। इसका प्रयोग सुखकारी और सुलभ (सर्वत्र मिलनेवाली) है तथा सर्व रोगोंमें देना कहा है।

रस, गुण, वीर्य और विपाक.

हरीतकीपंचरसाऽलवणातुवरापरम् ।
रूक्षोष्णादीपनीमेध्यास्वादुपाकारसायनी ॥
चक्षुष्यालघुरायुष्याबृंहणीचानुलोमिनी ।

अर्थ–हरडमें (मिष्ट, अम्ल, कटु, तिक्त और कषाय) पांच **रस** हैं. परंतु **लवण** रस नहीं है और **कषेला** रस बहुत है। **गुण**। रूक्ष (रूखी) है **दीपनादि गुणों** में दीपनी, मेध्य, रसायनी, नेत्रों को हितकारी, हलकी, आयुकर्त्ता, बृंहणी और अनुलोमिनी है। **वीर्य** उष्ण (गरम) है। **विपाक** (पाक) इसका मीठा है।

प्रयोग.

श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरकृमीन् ॥१६॥
वैस्वर्यग्रहणीरोगविबंधविषमज्वरान् ।
गुल्माध्मानतृषाच्छर्दिहिक्काकंडूहृदामयान् ।
कमलांशूलमानाहंसीहानंचयकृत्तथा ।
अश्मरीमूत्रकृच्छ्रंचमूत्राघातंचनाशयेत् ॥२१॥

अर्थ–श्वास, खाँसी, प्रमेह, बवासीर, कोढ़, सूजन, उदर, कृमि, स्वरभंग, संग्रहणी, कोष्ठबद्धता, विषमज्वर, गुल्म, अफरा, तृषा, वमन, हिचकी, खुजली, हृदयके रोग, कामला, शूल, अफरा, तापतिल्ली, यकृत् (कलेजा), पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात, इन सब रोगोंको नाश करे। अर्थात् इन रोगों पर हरड़ देवे।

स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहृत्कफहृत्त्वसा ।
कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा॥२२॥
पित्तकृत्कटुकाम्लत्वाद्वातकृन्नकथंशिवा ।
प्रभावाद्दोषहंतृत्वंसिद्धंयत्तत्प्रकाश्यते ॥ २३ ॥
हेतुभिःशिष्यबोधार्थंनापूर्वंक्रियतेऽधुना ।
कर्मान्यत्वंगुणैःसास्यंदृष्टमाश्रयभेदतः ॥ २४ ॥
यतस्ततोनेतिचिंत्यंधात्रीलकुचयोर्यथा ।

अर्थ–हरड़को वातादि दोष हरणमें कारण कहते हैं– जैसे इसमें मिष्ट, कटु और कषेले रसोंके होनेसे हरड **पित्त** हरण करे है, तथा कटु, तिक्त और कषेले रसों के होनेसे हरड **कफ**को नाश करती है। और खट्टे रसके होनेसे हरड **बादी** को हरण करे है। " तीखी और खट्टे रसवाली होनेसे [illegible] **वात** और **पित्त** को किस प्रकार प्रकट नहीं करे [illegible] ऐसी शंका होनेपर कहते हैं। **समाधान**। हरण हैं स्वाभाविक प्रभाव के कारण दोषों का हरणकर्तृत्व जो सिद्ध है उसका इस जगह हम शिष्योंके समझाने के वास्ते कारण दिखायकर प्रकाश करते हैं। परन्तु कुछ अपूर्व (नवीन) रचकर नहीं दिखाते हैं। जैसे–आंमले और बड़हल ए दोनों, रस और गुणोंमें समान होने पर भी जुदे जुदे कार्य को करें हैं ऐसा देखनेमें आता है। तथा गुण समान होनेपर भी गुणोंके आश्रय भेद से उनके कर्म भिन्न भिन्न हैं। उसी प्रकार हरड़में भी तीक्ष्ण और खट्टे रसके आश्रय भेदसे **पित्त** और **बादी**को उत्पन्न कर्तृत्वपना नहीं है। इस प्रकार विचार लेना चाहिये"।

१ द्रव्योंके रस, गुण, वीर्य, विपाक, इस ग्रंथ में संलग्न नहीं लिखे–इसका कारण यह है कि जहां कहीं संस्कृत मूल के विपरीत अर्थ लिखाहैं वो संगति मिलाने के वास्ते आगे पीछे लिख दीनाहै–जैसे (रूक्षोष्णा दीपनी) इस जगह हमने रूक्षका रूखा अर्थ लिखकर उष्ण वीर्य इस जगह लिखने का अर्थ संगति मिलाने को गुण के पश्चात् वीर्यकी जगह लिखा है।

पथ्यायामज्जनिस्वादुःस्नायावम्लोव्यवस्थितः
वृंतेतिक्तस्त्वचिकटुरस्थिस्थस्तुवरोरसः ॥२५॥

अर्थ–हरड़की **मज्जा**में मीठा रस है । **नसों**में खट्टा रस है । **डंडी**में कड़आ और **छाल**में चरपरा, तथा उसकी **हड्डी** (गांठें) में कषेला रस रहता है ।

उत्तमकी परीक्षा.

नवास्निग्धाघनावृत्तागुर्वीक्षिप्ताचयांभसि ॥
निमज्जेत्साप्रशस्ताचकथितातिगुणप्रदा ॥२६॥
नवादिगुणयुक्तत्वंतथैकत्रद्विकर्षता ॥
हरीतक्याःफलेयत्रद्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥ २७ ॥

अर्थ–जो हरड़ नवीन, चिकनी, घन, गोल और भारीहो, तथा जल में गेरने से डूब जावे, वो **हरड उत्तम** गुणकारी है । जिस हरड के फल में नवीनादि ऊपर कहेहुए गुण हों, और तोलमें भी दोकर्ष अर्थात् दो तोले की होवे जिसमें ए दोनों गुण हो उसको **श्रेष्ठ** जाननी ।

चर्वितावर्द्धयत्यग्निंपेषितामलशोधिनी ।
स्विन्नासंग्राहिणीपथ्याभ्रष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत् ॥

अर्थ–हरडको **चबाकर** खानेसे **अग्निको** बढ़ावे, **पीस**के खानेसे **मल**को शोधन करे (अर्थात् दस्त करावे) । **औटाई** हुई हरड मलवर्द्धक और **भुनी** हरड वातादि तीनों दोषोंको हरण करे है ।

उन्मीलिनीबुद्धिबलेंद्रियाणाम् ।
निर्मूलनीपित्तकफानिलानाम् ॥
विस्रंसिनीमूत्रशकृन्मलानाम् ।
हरीतकीस्यात्सहभोजनेन ॥ २८ ॥
अन्नपानकृतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् ।
हरीतकीहरत्याशुभुक्तस्योपरियोजिता ॥३०॥

अर्थ–**भोजनके** साथ सेवन करी हरड बुद्धि, बल करे, इन्द्रियोंको प्रकाशित करनेवाली, कफ, पित्त और वादीको निर्मूल (नाश) कर्त्ता, विष्ठा, मूत्र और मलोंको निकानेवाली है । अन्नपान के दोष तथा वात, पित्त और कफके दोषोंको **भोजन** करनेके **पश्चात्** सेवन करनेसे हरड तत्काल हरण करे ।

अनुपान.

लवणेनकफंहंतिपित्तंहंतिसशर्करा ।
घृतेनवातजान्रोगान्सर्वरोगान्गुडान्विता ॥

अर्थ–**निमक**के साथ कफको, **मिश्री**के साथ पित्त, **घृत**के साथ वादीके रोग, और **गुड़**के साथ खाई हुई हरड सर्व रोगों को दूर करे है ।

षड्ऋतुमें सेवन.

सिंधूत्थशर्कराशुंठीकणामधुगुडःक्रमात् ।
वर्षादिष्वभयाप्राश्यारसायनगुणैषिणा॥ ३२ ॥

अर्थ–**वर्षाऋतु**में सैंधे निमकके साथ, **शरद** में मिश्रीके साथ, **हेमंत**में सोंठके साथ, **शिशिर** में पीपल के साथ, **वसंत**में सहतके साथ एवं **ग्रीष्मऋतु** में गुड़के साथ हरड **रसायन** गुणों की इच्छावालेको सेवन करनी चाहिये ।

हरडके बीज.

बीजंशिवायाश्चक्षुष्यं पाचनंगुरुवातहृत् ।
कासश्वासौदाहपित्तौ नाशकंसंप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ–हरडके भीतर की गुठली नेत्रोंको हितकारी, पाचक, प्रबलवात, पित्त, दाह, खांसी और श्वासकी नाशक कही है ।

वर्जित.

अध्वातिखिन्नोबलवर्जितश्च ।
रूक्षःकृशोलंघनकर्षितश्च ॥
पित्ताधिकोगर्भवतीचनारी ।
विमुक्तरक्तस्त्वभयांनखादेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ–मार्ग चलने से थका, दुर्बल, रूक्षप्रकृति, कृश, लंघन (उपवासादिद्वारा) क्षीणदेह' पित्तप्रबल धातुवाला, गर्भवती स्त्री और जिसका रुधिर निकाला गया इतने मनुष्यों को **हरडभक्षण** (खाना) **निषेध** है [ज्वरवाले प्राणोंको पीली हरड़ से बचना चाहिये] ।

औषध के प्रयोगमें हरड के फलकी **छाल** लेनी । **मात्रा** इसकी ४ माशेकी है । अधिक सेवन करनेसे उपद्रव करे तो इसका **दर्पनाशक** सहत है । अर्थात् सहतको चाटे तो हरड के उपद्रवों की शांति होय ।

यदि हरड़ न मिले तो इसकी प्रतिनिधिमें निसोथ आंवले और काबिली हरड़ लेवे* ।

बहेड़ा.

बिभीतकस्त्रिलिंगःस्यादक्षःकर्षफलस्तुसः ॥
कलिद्रुमोभूतवासस्तथाकलियुगालयः ॥३४॥
बिभीतकंस्वादुपाकंकषायंकफपित्तनुत् ॥
उष्णवीर्यंहिमस्पर्शंभेदनंकासनाशनम् ॥३५॥
रूक्षंनेत्रहितंकेश्यंकृमिवैस्वर्यनाशनम् ॥
बिभीतमज्जातृट्छर्दिकफवातहरोलघुः ॥
कषायोमदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्गुणः ॥ ३६ ॥

अर्थ-विभीतक, विभीतकी, अक्ष, कर्षफल, कलिद्रुम भूतवास और कलियुगालय, ए **सं.** नाम है, **हिं. बं.** बहेरा और बहेड़ा, **म.** बेहेडा, **ता.** तनिकाईक, **कों.** बेहेला, **फा.** तोरे, **गु.** बेहेडा, **फा.** बलेलज और बलेलय, **ला.** टरमीनेलिया बेलेरिका Terminalia Bellerica, **इं.** Belleric myrabolum. ये शाखीजाति के वृक्ष का फल है। बहेडे के दरखत ऊंची जमीन में होते हैं । **पत्ते** इसके महुए के समान होते हैं । और **फूल** बहुत बारीक होता है। **फल** जायफलसे कुछएक बड़े होते हैं । और हिन्दुस्तान में प्रायः सर्वत्र होता है । तंत्रशास्त्रमें भी इसको बहुत से प्रयोगों में कहा है । इसका उत्तम फल १ तोले का होता है । मथुरा और बड़ी कोशी की रास्तेमें इसके बहुत दरखत हैं । दूसरे नंबर का **चित्र** देखो । **रस** इसका मीठा, **पाक** कषैला है । इसीसे कफपित्तको हरण करे है । उष्ण **वीर्य,** शीतल **स्पर्श, गुणों** में भेदक, खांसीका नाशक, रूखा, नेत्रों को हितकारी, बालों का उत्तम और दृढ़ करता । **आमयिक प्रयोगोंमें** कृमिरोग और स्वरभेद को नष्ट करे । बहेड़े की **मज्जा,** तृषा, छर्दि, कफ, वातको हरण करे, और हलकी कषैली । तथा मद (अमल) करता है तथा विषैल है। इसीप्रकार **आमले** की **मज्जाके** गुण जानने । **प्रयोगमें** बहेड़के फलकी छाल लीनी जाती है । **मात्रा**

---

* **हरडका** फल जिस वक्त बहुत छोटा जीरेके समान होताहै उस समय **हलीलेजीरा** नाम से बोला जाता है । जब जौके बराबर होजाती है उसको **हलेलेजवा** (जवाहरड) और जब दाखके बराबर बड़ी होती है तब **हलेलेजंगी** (जंगीहरड) अथवा **हलेले हिन्दी** । और जब आधी पकके पिलास देने लगेहै उसको हलेले-**ई. चीनी** । इससे भी अधिक पकजाय उसको हलेले-**ई. अस्फर** । और जब सब पकजाती है तब इलेले-**ई. काबुली** नामसे विख्यात होती है । इन छः जातिकी हरडोंमें हलेले जीरा, हलेले जंगी और हलेले काबुली ए तीन जातिकी साधारण रीतिसे वर्ती जाती हैं। **मखजन ।**

हरडको १ ड्रामकी मात्रा से दिनमें दोवार देनेसे दस्त और ऐंठन दूर होजाती है । यह **डा० डामक** कहता है:—

हरडोंमें सैकडे पीछे ४५ ठका टेनिक एसिड रहता है, इसके सिवाय थोडा गोलिक एसिड और भूरा पीले रंगका रंग रहता है। **डा. स्टेन हाउसः—**

छः छोटी हरडोंका क्वाथ कर देय तो ४-५ उत्तम जुल्लाव होकर उससे पेटमें शूल, उलटी अथवा किसी प्रकार के दुष्ट असर नहीं होते । इस क्वाथमें थोड़ीसी तज डाल दीनी जाय तो कहीं अधिक स्वादिष्ट होजाय, इस वास्ते कि ग्राही गुणोंके कारण वह जुल्लाव में उपयोगी होता है । इतनाही नहीं परंतु माजूफल के बदले पिचकारी मारने में उसीप्रकार घावोंके धोनेमें उसका पानी उपयोगमें आय सक्ता है ।**डा. वोरिंगः—**

हरडका क्वाथ कर दरदवाले बवासीर के मस्से और स्त्रियों की गुह्येन्द्रिय से अधिक प्रवाह निकलता होय तो इसमें बहुतही उत्तम असर करे है ।

दो माशेकी है । इसका दर्पनाशक शहदका शर्बत है । और प्रतिनिधि इसकी छोटी हरड़ कही है* ।

आमला.

त्रिष्वामलकमाख्यातंधात्रीतिष्यफलाऽमृता।
हरीतकीसमंधात्रीफलंकिंतुविशेषतः॥
रक्तपित्तप्रमेहघ्नंपरंवृष्यंरसायनम्॥ ३८॥
हन्तिवातंतदम्लत्वात्पित्तंमाधुर्यशैत्यतः।
कफंरूक्षकषायत्वात्फलंधात्र्यास्त्रिदोषजित्
यस्ययस्यफलस्येहवीर्यंभवतियादृशम्॥
तस्यतस्यैववीर्येणमज्जानमपिनिर्दिशेत्॥४०॥

अर्थ–आमलक, आमलकी, धात्री, तिष्यफला और अमृता, इतने **संस्कृत** नाम हैं । **हिं०** आमला, आंमरो, **बं.** आमलकी, **म.** आंवले, आंवली, **का.** नेल्लि, **गु.** आमली, **ता.** उसरकाय, **फा.** आमलज, आमलय, **ला.** फाईलेन्थस Phyllanths कह-ते हैं । यह **शाखी** जातिके वृक्षका फल होता है और हिंदुस्तानमें सर्वत्र मिलता है । आंवलेके दो भेद हैं । एक बागी (बागमें होनेवाला) दूसरा जंगली । इनमें बागी उत्तम होता है । यह शरदऋतुमें **फलता** है । **आंवले** काशी (बनारस) के बहुत बड़े और उत्तम होते हैं । इसके **पत्ते** छोटे २ इमली के समान होते हैं । इसकी डालियों पर छोटे २ राईके दाने २ से पीले २ **फूल** होते हैं । और उत्तम **फल** माह फागुनके महीनेमें आते हैं । पथरीली जमीनमें होता है । फल सुपारीके बराबर गोलेके आकार होतेहैं । परंतु काशीके आवलें बहुत बड़े और सर्वत्र प्रसिद्ध हैं । इस फलके ऊपर बहुत बारीक रेखासे छः विभाग किये हुए होते हैं । और भीतर कठोर गुठली होतीहैं । उसमें भी छः कोनेसे होते हैं । इसका अत्ता-रलोग मुरब्बा बहुत बनाते हैं ।

इसके रस, गुण, वीर्य और विपाकादि सब हर-

---

* **हिंदुस्तानी** वैद्य **बहेड़े**को ग्राही और किंचिन्मात्र दस्तावर भी मानते हैं । इसे गले और छातीकी पीडामें देते हैं । प्रायः इसके **फलकी** ऊपरकी **छाल** प्रयोगमें अधिक लीनी जायतो यह सुस्ती उत्पन्न करे है, और कई वखत **सूजन**के ऊपर घिसकर लगाते हैं ।

यूनानी वैद्य इसे वर्द्धक, पाचक, खुलासा दस्त लानेवाला, बदहजमी और सफरा (पित्त) से जो मस्तकपीड़ा होय कि जिससे आंख दूखनी आयजाती हैं उसपर लेप करनेमें परमोपयोगी है ।

इंग्रेजी डाक्टरभी अपने हिन्दुस्तानकी वनस्पति औषधोंके लिखनेके समय और २ औषधोंके सदृश फलके भीतरकी छाल लेनेकी प्रशंसा करते हैं ।

कर्नल डुरीके मतानुसार इस वृक्षके धडमें चोट मारनेसे जो गोंद निकले हैं वह मोमवत्तीके समान जले है, परंतु डॉ. **डीमक** इस मतके अनुकूल नहीं हैं ।

इण्डयन एनल्स ऑफ् मेडिकल सायन्सकी पुस्तक २ पत्र ७०६ में लिखा है कि इस फलकी ऊपरकी छाल जैसे खानेसे मी. सी. ई. रेकोडके हाथ नीचे रहनेवाले चार मनुष्योंको विषका असर हुआ था, और उसके चिह्न अत्यंत भयंकर थे परंतु इतनी ही ईश्वरकी कृपा हुई कि किसीकी मृत्यु न हुई ।

आंख दूखने आई होय तो बहेड़ेको शहदमें घिसके लगावे या लेप करे तथा जलंधर, दस्त, बवा-सीर, कोढ़ और खांसीकी बीमारीमें लेते हैं । इति **चक्रदत्त । सुश्रुतसंहितामें** बहेड़ेको मेदनाशक और शुक्रदोष (वीर्यके यावन्मात्र विकार हैं कि जिनसे वीर्य बिगड़ रहा है उनको सुधारनेवाला) वर्णन कराहै ।

फलके ऊपरकी छाल स्तंभक है और त्रिफलाके चूर्ण बनानेमें बहुत उपयोगी गिनी जाय है ।

चरकसंहितामें बहेड़ा ज्वरहर (ज्वरको काढ़नेवाला) और विरेचनोपग (मल विसर्जन करनेवाला) गिनते हैं ।

सुश्रुतसंहितामें बहेड़ेको मेदनाशक, शुक्रदोषहर, बिगड़ेहुए दोषका निकालनेवाला कहा है। फलके ऊपरकी छाल दस्त बंद करनेवाली है तथा त्रिफला बनानेमें इसको डालते हैं ।

डके समान जानने । विशेषता इतनी है कि रक्तपित्त और प्रमेहको नाश करे, वीर्यवर्द्धक और रसायन है, इसमें खट्टे रस होनेके कारण **वात**को हरण करे । मधुर और शीतल गुणों करके **पित्त**को, रूखे और कंपले गुणोंसे **कफ**को, इस प्रकार आमरा त्रिदोषनाशक है ।

वैद्योंके अवश्य जानने योग्य यह वार्त्ता है कि जिस २ वृक्षादिकोंके फलमें जैसा २ वीर्य है, वैसा वैसाही उसकी गुठलीमें जान लेना । **प्रयोग**में आंवलेके फलकी छाल लेते हैं । **मात्रा** इसकी ४ माशेकी है । इसके **अवगुण**का नाशक **शहद** है अर्थात् आंवले कोई प्रकारका उपद्रव करें तो उसके ऊपर शहद खाय और इसकी **प्रतिनिधि**में हरड़ या आंमलेका रस लेवे ।

शुष्कंधात्रीफलंतिक्तमम्लंपाकेकटुस्मृतम् । कषायंमधुरंकेश्यंभग्नसंधानकृन्मतः ॥

अर्थ–सूखे आमले कड़वे, खट्टे और पाकमें चरपरे, कसेले और मीठे हैं । बालोंको बढ़ावें तथा टूटी हड्डीको जोड़नेवाले हैं ।

त्रिफला.

पथ्याविभीतधात्रीणांफलैःस्यात्त्रिफलासमैः । फलत्रिकंचत्रिफलासावराचप्रकीर्तिता ॥ त्रिफलाकफपित्तघ्नीमेहकुष्ठहरासरा । चक्षुष्यादीपनीरुच्याविषमज्वरनाशिनी ॥

अर्थ–हरड़, बहेड़ा, आंवला, तीनोंकी छाल समान लेना, इसको **त्रिफला** कहते हैं । तथा फलत्रिक, वरा [और जितने वराके संस्कृत में पर्यायवाचक शब्द हैं । जैसे–श्रेष्ठा, अग्रया सब त्रिफलाके जानलेने] हिन्दुस्तानकी सर्व भाषाओं में यह **त्रिफला**के नामसेही प्रसिद्ध है. त्रिफलामें बड़ी हरड़का बक्कल डाले, कोई त्रिफलाका प्रमाण इस प्रकार कहते हैं कि एक हरड़, दो बहेड़े और ४ आंवले लेना इसको त्रिफला कहते हैं सो यह भी ठीक है । **फारसी**में इसको **इतरीफल** कहते हैं ।

गुण—त्रिफला कफ, पित्त, प्रमेह, कुष्ठ, इनको हरण करे, सर (कफपित्तादि दोषोंको दस्त के मार्ग से निकालनेवाला) नेत्रोंको हितकारी, अग्निदीपन करता, रुचिकरता और विषमज्वरको नाश करे है ।

सोंठ,

शुंठीविश्वाचविश्वंचनागरंविश्वभेषजम् ॥ ऊषणंकटुभद्रंचशृंगवेरंमहौषधम् ॥ ४३ ॥ शुंठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघुः । स्निग्धोष्णामधुरापाकेकफवातविबंधनुत् ॥ वृष्यास्यर्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान् । हंतिश्लीपदशोथार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ आग्नेयगुणभूयिष्ठतोयांशपरिशोषियत् ॥ संगृह्णातिमलंतत्तुग्राहिशुंठ्यादयोयथा ॥ ४६॥ विबंधभेदनीयातुसाकथंग्राहिणीभवेत् ॥ शक्तिर्विबंधभेदस्याद्यतोनमलपातने ॥ ४७ ॥

अर्थ–शुंठी, विश्वा, विश्व, नागर, विश्वभेषज ऊषण, कटुभद्र, (यानी चरपरे पदार्थोंमें श्रेष्ठ) शृंगवेर, और महौषध इतने संस्कृत नाम हैं और जितने संस्कृत में नागर और लोकवाचक शब्द हैं वो सब सोंठके नाम जान लेने । **हिं.** सोंठ, सूंठ कहते हैं । **बं.** सुंठ, **मं.** सुंठ, **गु.** शुन्ध, **तै.** शोंठी और २ हिन्दुस्तानकी भाषाओंमें इसी नाम से प्रसिद्ध है । फारसीमें **जंजबील**, इंग्रेजीमें **ड्राइ जंजर** Dryginger कहते हैं । यह गुल्म अथवा औषध जातिकी वनस्पतिका कंद है । पूरव आसाम आदि मुल्क से आती है इसकी अनेक जाति हैं, परन्तु इनमें घारकी सोंठ उत्तम होती है । जिसमें रेशे (तुष) अधिक हों उसको **न लेवे** । मोटी वेरसेकी तोड़नेमें नरम और सफेद जो होती है वो **लेनी** चाहिये ।

सोंठका **रस** चरपरा है, **गुणों**में स्निग्ध और हलकी, **वीर्य**में उष्ण, **विपाक**में मीठा है । **गुण** । रुचिकारी, आमवातकी नाशक, पाचन करता, कफ वातको और मलादिकके रुकनेको नाश करता, बलकारक, तथा सर (मलादिक प्रवर्त्तक), वमन, श्वास, शूल, खांसी, हृदय के रोग, श्लीपद, शोथ, बवासीर, अफरा, उदर और वादीके रोग इनको नष्ट करे । जो संपूर्ण द्रव्य,

१ यद्यपि बहुतसी औषधोंमें दो दो तीन तीन आदि कई रस होते हैं । परंतु मुख्य रस एक ही होता है । जैसे **हरड़**में यद्यपि **पांचरस** है, परंतु मुख्य कषेला एक ही रस है इसीप्रकार और जगह भी जानो ।

अधिक परिमाण करके आग्नेय गुण विशिष्ट हैं और जलांशशोषक है वो मलको संग्रह (जमा) करते हैं। जैसे सोंठ आदि संग्राही हैं। " **शंका**। जो विबंध (अर्थात् वायुप्रभृतिद्वारा मल रुकने) को दूर करे है अतएव वो किस प्रकार ग्राहक हो सक्ती है ?। इसका **समाधान** यह है कि, सोंठ में विबंध भेद की शक्ति है किंतु मल निकालने की शक्ति नहीं है।"

उष्णांभसापीतमनुष्यचूर्णं सूर्णंसशूलाम-
विनाशनंस्यात्। मेधास्मृद्धिवितनोति-
नित्यं शिरोगलस्थंहरतेचशैत्यं ॥

अर्थ--सोंठ के चूर्ण को गरम जल के साथ फांके तो पीड़ायुक्त आमवात को नाश करे, बुद्धि को बढ़ावे और शिर के तथा गले की शरदी को नष्ट करे।

मात्रा इसकी दो माशे की है, इसके **दर्पनाशक** कपूर और शहद कहे हैं। **सोंठ** के अभाव में अदरक डालना चाहिये।

अदरक.

आर्द्रकंशृंगवेरंस्यात्कटुभद्रंतथार्द्रिका।
आर्द्रिकाभेदनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता ॥
कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा
येगुणाःकथिताःशुंठ्यास्तेपिसंत्यार्द्रकेखिलाः
भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् ॥
अग्निसंदीपनंरुच्यंजिह्वाकंठविशोधनम् ५०
कुष्ठपांड्वामयेकृच्छ्रेरक्तपित्तेव्रणेज्वरे ॥
दाहेनिदाघेशरदिनैवपूजितमार्द्रकम् ॥ ५१ ॥

अर्थ--[illegible] शृंगवेर, कटुभद्र, आर्द्रिका, ए **संस्कृत** नाम[illegible]। हिं॰ अदरक--ख, **बं.** आंदा, **म.** आलें, **क.** अल्लं, **गु.** आदु. **फा॰** जंजबीलतर **अ॰** जंजबील रतब, **इं॰** जिंजर Ginger **ला॰** जंजीबर आफीसिनेली Gingiber officinale कहते हैं।

यह गुल्म जाति की वनस्पति का कंद है। रेतली जमीन में और जलके किनारे बहुत होती है। इसका **रस** (ज़ायका) कटु (चरपरा); **गुण** तीक्ष्ण, रूक्ष, भेदक, भारी, अग्निदीपक, **वीर्य** उष्ण, **पाक** मीठा एवं वातकफका नाशक है। जितने गुण सोंठ में कहे हैं वो सब अदरकमें भी मौजूद हैं। **प्रयोग**। भोजन के प्रथम सैंधानिमक और अदरक का सदैव सेवन करना पथ्य है। अग्निको दीपन करे, रुचि प्रकट करे, एवं जिह्वा और कंठको शोधन करे है।

निषेध ; कुष्ठ, पांडु, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, व्रण, ज्वर, दाह इन रोगोंमें तथा गरमियों में और शरद ऋतुमें **अदरकसेवन वर्जित** है। अदरक की **मात्रा** दो मांशेकी है और **प्रतिनिधि** तथा **दर्पनाशक** ये सोंठके समान जान लेने अर्थात् परस्पर प्रतिनिधि है।

पीपल.

पिप्पलीमागधीकृष्णावैदेहीचपलाकणा।
उपकुल्योषणाशौंडीकोलास्यात्तीक्ष्णतंडुला ॥
पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी।
अनुष्णाकटुकास्निग्धावातश्लेष्महरीलघुः ५३
पिप्पलीरेचनीहंतिश्वासकासोदरज्वरान्।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥ ५४॥
आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरुः।
पित्तप्रशमनीसातुशुष्कापित्तप्रकोपिणी ॥ ५५ ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्तामेदःकफविनाशिनी।
श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्द्धिनी।
जीर्णज्वरेऽग्निमांद्येचशस्यतेगुडपिप्पली ॥
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पांडुकृमिरोगनुत्।
द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजां मतः ॥

अर्थ--पिप्पली, मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला, कणा, उपकुल्या, ऊषण, शौंडी, कोला और तीक्ष्णतण्डुला, ए॰ **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** पीपल, पीपर, **बं.** पिपुल, **म.** पिंपली, **क.** हिप्पली, **गु.** लींडीपीपल, पींपर, **तै.** पिप्पलु, **फा.** फिलफिल दराज, **अ.** दार फिलफिल, **इं.** लॉंग पेपर Long Pepper कहते हैं ये गुल्म जातिकी औषधका फल है। हिंदुस्तान में, मालवे आदि देशोंमें बहुत होती है और पंसारी गंधीलोगों की दुकानमें बहुत मिलती है। पीपल दो प्रकारकी होती है--छोटी और बड़ी। इनमें छोटी पीपल अधिक गुण करती है, परंतु छोटीके भ्रमसे कच्ची छोटी न लेनी किंतु पुरानी पीपल लेनी।

गुण। पीपल अग्निदीपन करता, बलकारक, **पाक** इसका मीठा है। रसायन, गरम नहीं है। **स्वाद**

(जायका) चरपरा है । स्निग्ध, वात, कफ हरणकर्त्ता और हलके गुणवाली है । दस्त कराती है । श्वास, खांसी, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गोला, बवासीर तिल्ली, शूल और आमवात इनको नष्ट करे । **गीली-पीपल** कफकारी, स्निग्ध, शीतल, मीठी, भारी और पित्तको शांत करनेवाला है । और **सूखी पीपल** पित्तको कुपित करता है । **पीपलके चूर्ण** को सहत में मिलायके खाय तो मेद, कफ, श्वास खांसी, ज्वर इनको हरण करे । बलकारक, मेधा और अग्निको बढ़ावे । पीपल के चूर्णको **गुड़** में मिलाय के सेवन करे तो जीर्णज्वर, मंदाग्नि, खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृदयरोग, पांडु और कृमिरोग इनको दूर करे । एकभाग पीपल के चूर्णमें दोभाग पुराना गुड मिलाकर गुड़ पिप्पली देनी चाहिये । **मात्रा** पीपल की १ मासे की है ।

इसकी **प्रतिनिधि** कालीमिरच और सोंठ है । इसके **दर्पनाशकर्त्ता** गुलाब के फूल और पीला चंदन है ।

मरिच.

मरिचंवेल्लजंकृष्णमूषणंधर्मपत्तनम् ।
मरिचंकटुकंतीक्ष्णंदीपनंकफवातजित् ॥ ४८ ॥
उष्णंपित्तकरंरूक्षंश्वासशूलकृमीन्हरेत् ।
तदार्द्रंमधुरंपाकेनात्युष्णंकटुकंगुरु ॥
किंचित्तीक्ष्णगुणंश्लेष्मप्रसेकिस्यादपित्तलम् ।

अर्थ–मरिच, वेल्लज, कृष्ण, ऊषण और धर्मपत्तन ए संस्कृत नाम है । **हिं.** कालीमिरच, गोलमिरच, **बं.** मरिच, **म.** मिरें, **क.** मेणसु, **तै.** मरिया–मरियन, **अ.** फिलफिले अवीदक, **गु.** मरी, तिखां, **फा.** फिलफिले, अरवद, स्याहगिर्द, **इं.** ब्लेक, पेपर, Pepper,, **ला.** पाईपर निग्रम् Piper Nigrum कहते हैं । यह गुल्मजातिकी औषध का फल है । कालीमिरच दो प्रकारकी प्रायः देखनेमें आती है । एक पूरबी और दूसरी दक्खनी; इनमें **दक्षणीमिरिच** उत्तम होती है । और कोई धुलीहुई मिरचों को सफेद मिरच कहते हैं । परंतु सफेद मिरचकी जातिही पृथक् है ।

मिरचका **रस** चरपरा है । **गुण** तीक्ष्ण, अग्निदीपक, कफ वात हरणकर्त्ती, उष्णवीर्य, अतएव पित्तकर्त्ता, रूक्ष, श्वास, शूल और कृमिरोगको दूर करे है । **आर्द्र** (गीली) कालीमिरच पाकमें मधुर, अत्यन्त गरम नहीं हैं, चरपरी और भारी है । किंचित् तीक्ष्ण गुणविशिष्ट, कफनिःसारक, और पित्तकर्त्ता नहीं है ।

श्लेष्मजालासिरुद्दंशःसन्निपातज्वरांतकम् ।
पित्तरक्ताविरुद्धंचहिक्कांहंतिसमीरजाम् ॥
ग्रंथिगंडापचीकर्णशूलंचक्रकवलीकृतम् ।
समस्तनेत्ररोगघ्नंसितयासर्पिषायुतम् ॥
गोमूत्रयावशूक्राभ्यांलेपाद्विस्फोटकुष्ठनुत् ।
दर्पघ्नंशर्करासर्पिःक्षीरंक्षौद्रंचशालयः ॥

अर्थ–मिरच कफके जाल काटने को तलवार के समान है । सन्निपात ज्वरको नाश करता, रक्तपित्त को बढ़ानेवाली, वादीकी हिचकीको दूर करती है गांठ, गलगंड, अपची, कानका शूल, इनको नष्ट करे । कालीमिरच, कचीखांड और घी इनको मिलायके खाय तो समस्त नेत्ररोगों को नष्ट करे । काली मिरचके साथ जौ मिलाय गोमूत्रमें पीसकर लेप करने से विस्फोट (खाज) और कोढ़को दूर हो ।

इसकी **मात्रा** १ माशेकी है । यदि सेवन करने से अवगुण करे तो मिश्री, घी, दूध, शहद और चांवल ए सब इसके **दर्पनाशक** जानने । मिरचकी **प्रतिनिधिमें** पीपल लेनी चाहिये ।

सितमरिच । स्निग्ध

सितमरिचंशीतोत्थं, सितवृक्षबीजंचबालकं बहुलम् । धवलंचंद्रकमेतन्मुनिनामगुणाधिकंचवश्यकरम् ॥
कटूष्णंश्वेतमरिचंविषघ्नंभूतनाशनम् ।
अवृष्यंदृष्टिरोगघ्नंयुक्त्याचैवरसायने ॥

अर्थ–सितमरिच, शीतोत्थ, सितवृक्षबीज, बालक, बहुल, धवल, चंद्रक, ए सात नाम **सफेद मिरचके** हैं । **गुण** । वश्यकरता, चरपरी, गरम, विषनाशक भूतनाशक, बलनाशकर्त्ती, दृष्टिरोगनाशक और युक्तिपूर्वक रसायनके गुण करे है । इसके अन्य प्रतिनिधि आदि कालीमिरचके सदृश जान लेने ।

---

१ बहुत से प्राचीन वैद्यों की अनुमति है कि पीपल कामदेवको प्रबल करती है ।

एक लालमिरच होती है वो विलायती मिरच है। उसके गुणागुण हमारे **औषधरत्नाकर निघंटुमें** अर्थात् अभिनवनिघंटु के परिशिष्ट भाग में देखो।

त्रिकटु.

विश्वोपकुल्यामरिचंत्रयंत्रिकटुकथ्यते।
कटुत्रिकंतुत्रिकटुत्र्यूषणंव्योषउच्यते॥ ६०॥
त्र्यूषणंदीपनंहंतिश्वासकासत्वगामयान्।
गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान्॥६१॥

अर्थ–सोंठ, पीपल और मिरच ए तीनों वस्तु समान लेना, इसके त्रिकटु, कटुत्रिक [त्र्यूष], त्र्यूषण और व्योष ए **संस्कृत**के नाम हैं। **हिंदी** भाषामें **त्रिकुटा** कहते हैं। **गुण**। त्रिकुटा दीपन है और श्वास, खांसी, त्वचा (चमड़ी) के रोग, गोला, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद और पीनसरोग इनको नाश करे है।

पीपरामूल.

ग्रंथिकंपिप्पलीमूलमूषणंचटकाशिरः।
दीपनंपिप्पलीमूलंकटूष्णंपाचनंलघु॥ ६२॥
रूक्षंपित्तकरंभेदिकफवातोदरापहम्।
आनाहप्लीहगुल्मघ्नंकृमिश्वासक्षयापहम्॥६३॥

अर्थ–ग्रंथिक, पिप्पलीमूल, ऊषण और चटकाशिर, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** पीपरामूल, **बं.** पिपुलमूल, **म.** पिंपलमूल, **क.** हिप्पलियबेरु, **गु.** पीपली मूलना गंठोडा, **फा.** फिलफिलमोया. **अ.** असलुल् फिलफिल, **तै.** पिप्पली वेंरु, **इं.** पाईपर रूट Piper Root, **ला.** पाईपर ओफिसीनेरम् कहते हैं। यह पीपलकी जड़की गांठ टुकड़े २ होती है। यह बारीक और मोटी दो प्रकारकी होती हैं परंतु मोटी बहुत जल्दी घुन जाती है। इसवास्ते नई पुरानी देखकर लेनी।

गुण। पीपरामूल–दीपन, चरपरा, पाचन, हलका, रूक्ष, पित्तकर्त्ता, भेदी (दस्तावर), कफ, वात, उदर, अफरा, प्लीह, गोला, कृमि, श्वास और क्षय, इनको नष्ट करे है।

१ लालमिरचको **इं.** कापसीकम् Capcicum कहते हैं। **गुण**। गरम और वात हरण कर्त्ता। **मात्रा** आधीरत्तीसे लेकर २॥ रत्ती पर्यन्त है।

चतुरूषण.

त्र्यूषणंसकणामूलंकथितंचतुरूषणम्।
व्योषस्यैवगुणाःप्रोक्ता अधिकाश्चतुरूषणे॥६४॥

अर्थ–पूर्वोक्त त्रिकुटामें पीपरामूल मिलानेसे उसको **चतुरूषण** कहते हैं। इस चतुरूषणमें त्रिकुटके समान ही गुण हैं।

चव्य.

भवेच्चव्यंतुचविकाकथितासातथोषणा।
कणामूलगुणंचव्यंविशेषाद्गुदजापहम्॥ ६५॥

अर्थ–चव्य, चविका, ऊषणा, ए **सं.** नाम, **हिं.** चव्यं, **बं.** चइ, **म. गु.** चवक, **ला.** चवीका ऐक्सवर्धीआई कहते हैं। यह क्षुपजातिकी लकड़ी है और सर्वत्र प्रसिद्ध है। चव्य पीपरामूल के समान गुण करे है। विशेष करके बवासीरको दूर करे है। इसकी छाल लेनी। **मात्रा** १ माशेकी है।

गजपीपल.

चविकायाःफलंप्राज्ञैःकथितागजपिप्पली।
कपिवल्लीकोलवल्लीश्रेयसीवशिरश्चसा॥६६॥
गजकृष्णाकटुर्वातश्लेष्महृद्वह्निवर्धिनी।
उष्णानिहंत्यतीसारंश्वासकंठामयकृमीन्॥

अर्थ–चव्यके फलको विद्वान् गजपीपल कहते हैं। **सं.** कपिवल्ली, कोकवल्ली, श्रेयसी, वशिर और गजकृष्णा, **हिं.** गजपीपर, **गु.** गजपिंपली, **बं.** गजपीपुल, **म.** मीरवेलीला, मोठी पिंपली (सिंहली), **क.** गजहिप्पली, **तै.** पेद्दापिप्पलु, **ला.** सींडापसस आफिसीनेलीस कहते हैं। **गुण**। गजपीपल–चर्परी, वात कफनाशक, अग्निवर्द्धक और गरम है। **प्रयोग**। अतिसार, श्वास, कंठरोग, और कृमिनाश करे। इसके फलकी ६ रत्तीकी **मात्रा** है।

सिंहली पीपल.

"सैंहलीसर्पदंडाच सर्पांगीब्रह्मभूमिजा।
पार्वतीशैलजामूलं लंबबीजातथोत्कटा।
अद्रिजासिंहलस्थाच लंबदंताचजीवला।

१ इसकी बेल बड़ी कठोर होती है। कोई काली मिरचके वृक्षका भाग, कोई गजपीपरकी जड़, और कोई इसकी बेल पृथक् मानते हैं।

जीवालाजीवनेत्राच कुरवीषोडशाह्वया ।
सैंहलीकटुरुष्णाच जंतुघ्नीदीपनीपरा ।
कफश्वाससमीरार्त्तिशमनीकोष्ठशोधिनी ”

अर्थ–सैंहली, सर्पदंडा, सर्पांगी, ब्रह्मभूमिजा, पार्वती, शैलजामूल, लंबबीजा, उत्कटा, अद्रिजा, सिंहलस्था, लंबदंता, जीवला, जीवाला, जीवनेत्रा और कुरवी, ए सोलह नाम सिंहली पीपलके हैं। यह सिंहलद्वीपके पहाड़ोंमें होतीहै। इसका रंग, रूप सांपके समान होताहै। और लंबे २ बीज होते हैं। **गुण**। सिंहलीपीपर चरपरी, गरम, कृमिनाशक, अग्निदीपनी, कफ, श्वास और वादीकी पीड़ाको दूर करे तथा कोठेको शुद्ध करती है।

वनपीपल.

“ वनादिपिप्पल्यभिधानयुक्तं सूक्ष्मादिपिप्पल्यभिधानमेतत्। क्षुद्राचपिप्पल्यभिधानयोग्यं वनाभिधापूर्वकणाभिधानम् ॥
वनपिप्पलिकाचोष्णातीक्ष्णारुच्याचदीपनी
आमाभवेद्गुणाढ्यातुशुष्कास्वल्पगुणास्मृता”

अर्थ–वनपिप्पली, सूक्ष्म पीपली, क्षुद्रपिप्पली। विपिनपिप्पली, इत्यादि इस **वनपीपल**के अनेक नाम हैं। **म.** रानपिंपली, **क.** काहिप्पली कहते हैं। **गुण**। वनपीपली गरम है, तीक्ष्ण, रुचिकर्ता, अग्निदीपनकर्त्ती है, वनपीपल **कच्ची** गुणकर्त्ती होतीहै। और सूखीमें अल्पगुण होतेहैं।

चित्रक (चीता).

चित्रकोऽनलनामाचपीठोव्यालस्तथोषणः ।
चित्रकःकटुकःपाकेवह्निकृत्पाचनोलघुः ॥६८॥
रूक्षोष्णोग्रहणीकुष्ठशोथार्शःकृमिकासनुत् ।
वातश्लेष्महरोग्राहीवातार्शःश्लेष्मपित्तहृत् ॥

अर्थ–चित्रक, अनलनामक (यावन्मात्र अग्निके संस्कृतमें नाम हैं सब चित्रकके जानलेने। जैसे–अनल, अग्नि, वह्नि, इत्यादि) तथा पीठ, व्याल और ऊषण, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं** चित्रक, चीता, चितरक, **बं.** चिता, **म.** चित्रक, **का.** चित्रमूल, **तै.** चित्रमूलम्, **ता.** शिवपु, चित्रिर, **गु.** चित्रो, **अ.** शीतरज, **फा.** बेख बरंदा, **इं.** संबेगो कोरुलेएसो *Plumbago coera and roulase.* यह क्षुप जाति की वनस्पति है। हिन्दुस्थानमें सर्वत्र होती है।

गुण। चित्रकका पाक चरपरा है [जायका तीक्ष्ण है.] अग्निवर्द्धक, पाचन, हलकी, रूक्ष, गरम और ग्राही है। **प्रयोग**। ग्रहणी, कुष्ठ, सूजन, बवासीर, कृमिरोग, खांसी, वात, कफ, वातार्श और पित्त श्लेष्माको नाश करे। यदि शिर्कामें पक्क करके लेप करे तो सफेद कुष्ठ, खुजली, तिल्ली, अंडवृद्धि और ऊरुस्तंभको दूर करे। इसके **प्रतिनिधि**में पीपरामूल अथवा अकरकरा लेवे। **प्रयोग**में इसकी छाल ले। **मात्रा** ४॥ माशेकी है। इसके दर्पनाशक रूमीमस्तगी और पीला चंदन कहाहै।

पंचकोल.

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः ।
पंचभिःकोलमात्रंयत्पंचकोलंतदुच्यते ॥७०॥
पंचकोलंरसेपाकेकटुकंरुचिकृन्मतम् ।
तीक्ष्णोष्णंपाचनंश्रेष्ठंदीपनंकफवातनुत् ।
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नंपित्तकोपनम् ॥७१॥

अर्थ–पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ ए पांचों द्रव्य कोल २ अर्थात् आठ २ माशे ले इसको **पंचकोल** कहतेहैं। पंचकोलका **रस** और **पाक** चरपरा है। रुचिकारी, तीक्ष्ण, उष्ण–वीर्य पाचन और कफवात, गोला, प्लीहा, उदर, अफरा शूल, इनको नष्ट करे और पित्तको कुपित करेहै।

षडूषण.

पंचकोलंसमरिचंषडूषणमुदाहृतम् ।
पंचकोलगुणंतत्तुरूक्षमुष्णंविषापहम् ॥ ७२

अर्थ–पंचकोलमें काली मिरच मिलानेसे षडूषण कहाताहै। षडूषण गुणोंमें पंचकोलके समान विशेष करके रूक्ष, गरम और विषनाशक है।

अजमायन.

यवानिकोग्रगंधाचब्रह्मदर्भाऽजमोदिका ।
सैवोक्तादीप्यकादीप्यातथास्याद्यवसाह्वया ॥
यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णाकटुकालघुः ।
दीपनीचतथातिक्तापित्तलाशुक्रशूलहृत् ।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् ॥७४

अर्थ– यवानिका, उग्रगंधा, ब्रह्मदर्भा, अजमोदिका, दीप्यका, दीप्या और यवसाह्वया (यवपर्याय), ए **संस्कृत** नाम है । **हिं.** अज [मा] वायन, **बं.** यमानी, योयन, **म.** ओंवा, **क.** ओंड़, **गु.** यवान, जवाइन, वोडी, अजमों, **तै.** वामु, **ता.** अमन, **फा.** नानखां, **अ.** कमून मुलूकी, **इं** ओममसन्, **ला.** टाईकोटीस, ये सुपजातिकी वनस्पति के बीज हैं । शाक आदि में डाली जाती है । **गुण** । अजमायन पाचन, रुचिकर्ता, तीक्ष्ण, गरम, हलकी, दीपनकर्त्ता, स्वाद में चरपरी और कड़वी, पित्तकर्ता, वीर्य और शूल को हरण करे, वादी, कफ, उदर, अफरा, गोला, सीह और कृमिरोग को दूर करे । *

अजमोदा.

अजमोदाखराश्वाचमयूरोदीप्यकस्तथा ॥
तथाब्रह्मकुशाप्रोक्ताकाखोलीचसमस्तका ॥
अजमोदाकटुस्तीक्ष्णादीपनीकफवातनुत् ॥
उष्णाविदाहिनीहृद्यावृष्याबलकरीलघुः ॥
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजोहरेत् ॥

अर्थ– अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, काखोली और समस्तका, इतने **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** अजमोद, **बं.** वनयमानी, **म.** अजमोदा, **गु.** अजमो, **तै.** आजमोदा, **फा.** बज्रलूक, रम्स तुख्म-करफ्स, **इं.** एप्यंग्रेवियोलेन्स. सेलेरीसीड, कहते हैं, यह अजमायन का भेद है । और वन में बहुत होती है इसी सें इसको वनयवानी कहते हैं ।

गुण । अजमोद का **रस** चरपरा और तीक्ष्ण है । अग्निदीपनी, कफ वात के रोगोंका नाशक, **उष्णवीर्य**, दाहकर्ता, हृदयको हितकारी, वृष्य, बलकारी हलका, नेत्ररोग, कफविकार, वमन, हिचकी, और वस्ति (मसाने) की पीडा को दूर करेहे । इसकी **प्रतिनिधि** सोंफ है । **अथवा** पर्वती अजमोद है । **प्रयोग** में इस के फल की मात्रा ६ माशे की है । और **दर्पनाशक** काहु के फूल और मस्तंगी है । †

* **मि० वुड्** — कहता है कि, अजमायन में मिर्चों अथवा राई की तीक्ष्णता, चिरायते की कड़वास और हींग का एठन वंद करना, वादी का काढ़ना, यह तीन गुण एकत्र रहते हैं ।

अजमायन का तेल—संधिवात के दरद में संधियों के ऊपर लगाने में आता है ।

मि० लिन्सडेल—कहता है कि, अजमायन का तेल काढ़ने के लिये ३ सेर दुचली हुई अजमायन में १५ सेर पानी डाल के मद्यसंधान की विधि से १० सेर पानी काढ़ना चाहिये ।

इंग्रेजी औषधों में – अजमायन गरम, पेट के दर्द को नष्ट करता, तथा शूल को बैठारने वाली गणना करी जाय है । पेट के भितर का वायगोला, मरोडा, वदहजमी, दस्त वगैरह बिमारियों में यह अमूल्य कीमती इलाज निकल पड़ता है । विसूचिका (हैजा) की बीमारी में यद्यपि स्वल्प असर करे है, परंतु तो भी सेवन करने से फायदा होता है ।

देशी वैद्य—केवल अजमायन अथवा उस को सैंधानिमक, हींग और हरड़ के साथ देने से पेट का मरोड़ा दूर करे हैं और इस प्रकार मानते हैं कि, इस से शरीर में से निकलता हुआ प्रवाह वंद होय है और इसके धोने का पानी, अंजन वगैरह बनाने में वर्त्ता जाता है ।

युनानी हकीम – फेंफड़े के, गले के पास की नली सूज गई होय और कफ अधिक निकलता होय तो वंद करने के लिये अजमायन देने की अनुमति देते हैं, और अजमायन को पीस उसकी पुलटिश बांधने से दरद बिलकुल नष्ट हो जाता है ।

† **डा० बीडी** – इस विषय की टीका करता हुआ लिखता है कि **अजमोद** वदहजमी और दस्त की बिमारीमें अत्यंत उपयोगी है । तथा खराब स्वाद वाली दवा अजमोद के पानी के साथ देने से उलटी आने की सी शंका नहीं होय । इस से ये सब दवा पेट में शूल होने की सी शंका होने को बंद करे इस से लार अधिक निकलती है । इस से पेटके अंदर पाचक करनेवाला प्रवाही भी अधिक निकले और पेटका शूल नष्ट होजाय और पाचनशक्ति बढ़े । गलेके भीतरकी सूजनपर भी **अजमोद**को अन्यग्राही पदार्थ के साथ मिलायके देवे ।

चरकसंहितामें – अजमोदको शूलप्रशमन और दीपनी (भूंख प्रदीप्त) करनेवाला वर्णन करा है ।

सुश्रुतसंहितामें – इसको [illegible] अरुचिनाशक, दीपन, [illegible] और आमपाचक कहा है ।

खुरासानी अजमायन.

पारसीकयवानीतुयवानीसदृशीगुरुः ॥ ७७ ॥

अर्थ—पारसदेशकी अजमायनको किरमानी अजमायन या खुरासानी अजमायन कहते हैं । **म.** किरमणि ओवा, सुरवंदीचें फूल, **अ.** तुख्मइन्स, **फा.** बजुलबंज, वंगदीवाना कहते हैं । यह सफेद और लाल उत्तम होती है । इसमें अजमायन के समान सब गुण हैं परंतु विशेषकरके पाचनी, ग्राही, मादक (मस्तीकरता) और भारी है ।

धीचत्तुर्मांद्यकृत्कर्णगौरवोत्पादनीपरा ।
कंठग्रहंचमनसोविक्षेपंवितनोति च ॥
रक्तनिष्ठीवनंसर्वपीडामाशुव्यपोहति ।
विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरुः ॥

अर्थ—बुद्धि और नेत्र इनको मंद करे, कानोंमें भारीपना, कंठका रुकना, चित्तका चलायमान होना, इनको करे तथा रुधिरका गेरना और सर्व प्रकारकी पीडाओंको नष्ट करे। विशेष करके पाचनी रुचिकारी, ग्राही, मादक और भारी है। **प्रयोगमें** इसके फलकी मात्रा आधे तोलेकी है ।

जीरक (जीरा, कालाजीरा, कलौंजी.)

जीरकोजरणोजाजीकणास्याद्दीर्घजीरकः ।
कृष्णजीरःसुगंधश्चतथैवोद्गारशोधनः ॥ ७८ ॥
कालाजाजीतुसुषवीकालिकाचोपकालिका ।
पृथ्वीकाकारवीपृथ्वीपृथुकृष्णोपकुंचिका॥७९॥
उपकुंचीचकुंचीचवृहज्जीरकइत्यपि ।
जीरकत्रितयंरूक्षंकटूष्णंदीपनंलघु ॥
संग्राहिपित्तलंमेध्यंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥८०॥
ज्वरघ्नंपाचनंवृष्यंवल्यंरुच्यंकफापहम् ।
चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारहृत् ॥८१॥

अर्थ—जीरक, जरण, अजाजी, कणा, तथा दीर्घजीरक, ए सब सफेद **जीरेके** पर्यायवाचक शब्द हैं । कृष्णजीर, सुगन्ध, उद्गारशोधक ए सब **काले जीरेके** नाम हैं । कालाजाजी, सुषवी कालिका, उपकालिका पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथुकृष्णा, उपकुंचिका, उपकुंची, कंची और वृहज्जीरक ए सब **कलौंजीके** संस्कृत नाम हैं । **म.** सफेद जीरेको, पांढरें जिरें, जिरें, **क.** विलियजीरगे, काले जीरेको कालें जिरें, **क.** कारिजीरगे, कलौंजी, **क.** मंकरिजोदुजीरगे, **तै.** जिलकरर कहते हैं। **बं.** शुक्लजीरा, कृष्णाजीरा और कलौंजी कहते हैं। **गु.** धोलुंजीरुं, कालीजीरी और कलौंजी जरू, **फा.** कमूनी शोनीजत, हब्ब असवद, **इं.** कम्मिनन् सीड Cumminon-seed कहते हैं । यह भी **क्षुपजातिकी** वनस्पति है और सर्वत्र प्रसिद्ध है । कालाजीरा काबुलके राज्यमें तथा हिंदुस्तानके उत्तरी पहाडोंमें होता है ।

गुण। तीनों प्रकारके जीरे रूक्ष, कटु (चरपरे), गरम, अग्निदीपक, हलके, संग्राहक, पित्तकर्त्ता, स्मरणशक्तिवर्द्धक (भूलके रोगको दूर करनेवाले), गर्भाशय (जरायु) शोधक, ज्वरनाशक, पाचक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, रुचिकारक, कफनाशक, और नेत्रोंको हितकारी हैं ।

प्रयोग। वादीसे पेटका फूलना, गोलेका रोग, वमन और अतिसारको नष्ट करे [इसके चूर्णको सिर्काके साथ पीवे तो मिट्टीखानेके रोगोंको दूर करे, दांतोंसे कुचल कपडेसे रस छानके अंजन करे तो नेत्रोंका नाखूना विकार दूर हो, शूल, अजीर्णको नष्ट करे, और पक्वाशयको बल देता है] **प्रयोगमें** इसके फलकी २ माशेकी **मात्रा** कही है उसके उपद्रवका नाशक **कतीरा** है और अजमायन इसकी **प्रतिनिधि** है। *

१. किसीके मतसे जीरा पांचप्रकारका है। जैसे १ साधारण जीरा, २ कालाजीरा, ३ स्याहजीरा, ४ कलौंजी, ५ शस्तजीरा.

* **यूनानी हकीम**—सफेद जीरेको खुशबूदार, पेटकी ऐंठन नष्टकर्त्ता, और ग्राही गिनते हैं इसमेंसे वह आंख धोनेका पानी बनाते हैं कि जो उनके मतानुसार नेत्रका तेज बढाता है और छातीके दर्दमें भी उसको वर्त्तते हैं और इससे मूत्र अधिक आता है, तथा पेटके जीव (कीडे) निकलजाते हैं ऐसा मानतेहैं । गर्भस्थानमें सूजन आकर अधिक दर्द होता होय तो इस जीरेके पानीमें स्त्रीको बैठाल्नेकी प्रशंसा करते हैं । उसीप्रकार

धान्यक (धनिया)

धान्यकंधानकंधान्यंधानाधानेयकंतथा।
कुनटीधेनिकाछत्राकुस्तुंबुरुवितुन्नकम् ॥ ८२॥
धान्यकंतुवरंस्निग्धमवृष्यंमूत्रलंलघु।
तिक्तंकटूष्णवीर्यंचदीपनंपाचनंस्मृतम् ॥ ८३॥
ज्वरघ्नंरोचकंग्राहिस्वादुपाकित्रिदोषनुत्।
तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यकृमिप्रणुत् ॥
आर्द्रंतुतद्गुणंस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ८४

अर्थ–धान्यक, धानक, धान्य, धाना, धानेयक, कुनटी, धेनिका, छत्रा, कुस्तुंबुरु और वितुन्नक, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** धनिया, **बं.** धनियां **म.** धणे **कों.** कोथिंबऱ्या, **तै.** कोथमीलूं, **गु.** धाणा, **फा.** कजबुर, कशनीज, **अ.** तुरुमे कसनीज, **इं.** कॉरिएन्डर Coriander कहते हैं। इसकी भी **क्षुप**जाति है और सर्वत्र प्रसिद्ध है।

गुण। धनियेका **रस** कषेला, चिकना, बलनाशक, मूत्रकारी, हलका, कडुआ, चरपरा, **उष्णवीर्य**, दीपन, पाचन, ज्वरघ्न, रोचक, ग्राही, इसका **पाक** मिष्ट, और त्रिदोष, तृषा, दाह, वमन, श्वास, खांसी, कृशता, और कृमिरोगको नाश करे है। **कच्चा धनियां** (कोथमीर) भी धनियेके समान गुण करे है, स्वादु है और विशेष करके पित्तको नाश करे है। **प्रयोगमें** इसके फलकी २ माशेकी मात्रा है। *

शतपुष्पा (सोंफ, सोआ)

शतपुष्पाशताह्वाचमधुराकारवीमिसिः।
अतिलंबीसितच्छत्रासंहिताछत्रिकापि च ॥८५॥
छत्राशालेयशालीनौमिश्रेयामधुरामिसिः।
शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृद्दीपनीकटुः ॥८६॥
उष्णाज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत्।
मिश्रेयातद्गुणाप्रोक्ताविशेषाद्योनिशूलनुत् ॥
अग्निमांद्यहरीहृद्याबद्धविट्कृमिशूलहृत्।
रूक्षोष्णापाचनीकासवमिश्लेष्मानिलान् हरेत् ॥

अर्थ–शतपुष्पा, शताह्वा, मधुरा, कारवी, मिसि, अतिलंबी, सितच्छत्रा संहिता और छत्रिका, इतने **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** सोफ, **बं.** शुलफा, मौरी, **म.** बालंतशोप, बड़ी सोप, **क.** कासब्बसिगे, **गु.** वरीयाली, **फा.** एजयानज, एजयाना, बादियां, **इं.** पीम्पेनेल अनीसम् Pimpenella anisum

इस जीरेको पीस पुलटिश बनायके बांधनेसे बाहर निकलेहुए **मस्से** और अत्यन्त दरद करनेवाली **बवासीर** जाती रहती है।

पंजाबप्रांतमें—जीरेसे मूत्र अधिक उतरे तथा स्तनमें दूध अधिक उत्पन्न होता है ऐसा मानते हैं।

इंग्रेजी औषधोंमें—इसे पाचक और पेटकी ऐंठन नष्टकर्त्ता कहा है और इसको पेटमें वायगोला, पेटफूलनेकी ऐंठन, बदहजमी और आतड़ोंका शूल होता होय तो यह उपयोगी गिनते हैं।

चरकसंहितामें—जीरेको शूलप्रशमन (शूलनष्टकर्त्ता) मानते हैं।

सुश्रुतसंहितामें—इसको वातकफनाशक, अरुचिनाशक, दीपन, गुल्मशूल और आमको नष्ट करे है ऐसा कहा है (अर्थात् सूजन, शूल और आमपड़तीको बंद करनेवाला है)।

* **यूनानी हकीम**—धनियेको औषधके तरह पेटकी पीड़ा नष्ट करता, पेशाब अधिक लानेवाला, पाचक और कामोद्दीपन करनेवाला मानते हैं। और बदहजमीमें अनेकवार देनेकी अनुमति देते हैं और उसको दरद नष्ट कर नींद लानेवाला, छातीमेंसे कफको निकालनेवाला, पेटकी पीडा नष्ट करता समझते हैं। वह, धनियेका पानी बनाते हैं कि जिससे आंख धोनेसे, शीतला निकली होय तो आंखको ईजा पहुंचती रुके है ऐसा मानते हैं और बहुत मुद्दतसे आंख दूखने आई होय उसको आराम होय है और इसतरह भी मानते हैं कि धनियेसे केफी पदार्थोंका (मदकारी पदार्थोंका) मद कम होता है। जौके चूनके साथ धनियेको पीसके पुलटिश बनायके बांधनेसे बहुत दिनकी सूजन उतर जाय है।

चरकसंहितामें—धनियेको तृषानिग्रहण और शीतप्रशमन (सरदी बंद करता) कहा है।

सुश्रुतसंहितामें—इसे सर्व ज्वरनाशक, दीपक, दाहनाशक, अरुचिनाशक और उलटी बंद करनेवाला कहा है।

कहते हैं। छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा और मिसि ए संस्कृत नाम हैं। **हिं.** सोआ, वनसौंफ, **बं.** मौरी, **म.** बड़ीशोप **का.** कासब्बसिगे, **गु.** सुवा, **फा.** वअलतवा, तुख्मशिस, कहते हैं। ए दोनों औषध प्रसिद्ध हैं। चैत्र, वैशाखमें ये फूलती हैं। और दूर २ तक इसकी सुगंधि जाती है।

गुण। सौंफ हलकी, तीक्ष्ण, पित्तकर्त्ता, दीपन, चरपरी, गरम, ज्वर, बादी, कफ, व्रण, शूल, और नेत्रके रोगोंको हरण करे है। **सोआमें** भी सौंफके समान गुण हैं। विशेष करके योनिशूल, मंदाग्नि, हृदय को हितकारी, मलकी बद्धता, कृमि और शूल को हरण करे है। रूखी, गरम, पाचनी, खांसी, वमन कफ और बादी इनको हरण करे है। *

मेथी वनमेथी.

मेथिकामेथिनीमेथीदीपनीबहुपत्रिका।
बोधिनीबहुबीजाचजातिर्गंधफलातथा॥८६॥
बल्लरीचक्रिकामन्थामिश्रपुष्पाचकैरवी।
कुंचिकाबहुपर्णीचपित्तजिह्वागुनुद्विधा॥
मेथिकावातशमनीश्लेष्मघ्नीज्वरनाशिनी।
ततःस्वल्पगुणावल्यावाजीनांसातुपूजिता॥

अर्थ–मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, बोधिनी, बहुबीजा, जाति, गंधफला, बल्लरी, चक्रिका[१] मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुंचिका और बहुपर्णी, ए संस्कृत नाम हैं। सब भषाओंमें भी **मेथी** के नामसे प्रसिद्ध है। **ता.** वेनव्यम्, **गु.** गदभ, **फा.** तुख्मे शमपीत, **अ.** बजरुलू हुल्बा, **क.** मेथयक, **तै.** मेतुलु **इंग्रेजीमें** फेनुग्रीक, **ला.** ट्राइगोनेला कहते हैं।

गुण। मेथी वायुनाशक, कफनाशक, ज्वरघ्न, रुचिप्रद, अग्निदीपक और रक्तपित्तप्रकोपक है। **वनमेथी** इसकी अपेक्षा गुणों में न्यून (अल्प गुणवाली) है घोड़ोंके वास्ते हितकारी है। †

१ "चकामन्था" इति पाठांतरम्।

* **चरकसंहितामें**—सौंफको प्रजास्थापन और शूलप्रशमनकर्त्ता कही है।

सुश्रुतसंहितामें—सौंफको कफसंशमन (कफनष्ट करता) मानी है।

हकीमलोग–सौंफके पत्तोंको गरम मानते हैं और इसके तेलको गरम तरीकेसे राध पड़गई होय ऐसी सूजन के ऊपर लगाने की प्रशंसा करते हैं। प्रसव हुई स्त्रियों को इसका क्वाथ रुधिर शुद्ध करने को उसी प्रकार गर्भस्थान शुद्धि होनेके वास्ते देते हैं। तथा इसको पाचक और जठराग्नि प्रदीप्तकर्त्ता मानते हैं।

हकीमलोग–सूआको पानीमें भिगोय फिर इस पानीको प्रसूता स्त्रियों को पिलाने की प्रशंसा करते हैं और उसको पेटकी पीड़ा नष्टकर्त्ता, मूत्र अधिक लानेवाला और पित्तको हरणकर सूजन उतारनेवाला गिनते हैं।

चरकसंहितामें–सूआको रुधिरमें से पित्तको निकालनेवाला और स्तनों के रुधिर को शुद्ध करनेवाला लिखा है।

† **आयुर्वेदग्रंथोंमें**–मेथीमें दर्द नष्ट करने की, पाचन करने की, उसीप्रकार कामोत्तेजन करने की शक्ति है बदहज़मी, अरुचि, स्त्रियों का अतिसार और संधिवात के दरद में खानेको मेथीमोदक वगैरह नाम से उसके लड्डू बनाने की विधि कही है और उसमें बहुत से खुशबूदार पदार्थों का एक एक भाग और सबके बराबर मेथी लेनी कही है।

यूनानी हकीम–मेथीके बीजों को गरम, फोड़े पकानेवाले, खुश्क दस्त खुलासा लानेवाले, [illegible] निकालनेवाले, और पुरानी खांसी तथा तिल्ली और कलेजा मोटा होगया होय ऐसे रोगों में अत्यंत गुणदाता मानते हैं। बाहर और भीतरकी सूजन के लिये और जली हुई चमड़ीके ऊपर तथा बाल झड़ते हों उनके रोकने को मेथीके पत्तों की पुलटिश बहुतही गुणकारी होय है।

प्राचीन ग्रीक वैद्य डायोसकोराइडीस–सूजन के दर्दों में मेथीके चूनकी पुलटिश बांधने की प्रशंसा करता है।

दक्खिनके वैद्य–मेथीके बीजों को प्रथम अग्निपर सेकके फिर पानीमें मिलाय एंठन के रोगमें देते हैं

चंद्रशूर (हालों)

चंद्रिकाचर्महंत्रीचपशुमेहनकारिका ॥
नंदिनीकारवीभद्रावासपुष्पासुवासरा ॥९२॥
चंद्रशूरंहितंहिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ॥
असृग्वातगदद्वेषिबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ९३ ॥

अर्थ–चंद्रिका, चर्महंत्री, पशुमेहनकारिका, नंदिनी, कारवी, भद्रा, वासपुष्पा और सुवासरा, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** हालों, आसालबीज, **बं.** हालिम, **म.** हलिम, अहालीव, **गु.** अशेरीओ, अशेलियो, **फा.** तुख्मतरातेजक, बत्रुल्लिशाद, **इं.** लीपीडीअम् सटीव्हम् Lepidium sativum कहते हैं। ये एकप्रकारके काले २ बीज होते हैं।

गुण । **चंद्रशूर** हिचकी, वातकफ, अतिसार और वातरक्तरोगको हितकारी है। तथा बलकारक, और पुष्टिजनक (पुष्टि करता) है। [मूत्रकृच्छ्र, वीर्यवर्धक, कामदेवको उद्दीपन कर्त्ता है]। इसके बीजकी मात्रा ७ माशेकी है इसकी **प्रतिनिधिमें** गंदना लेना, और इसके **दर्पका** नाशक **कतीरा** है। *

चतुर्बीज (चारदाना)

मेथिकाचंद्रशूरश्चकालाऽजाजीयवानिका ।
एतच्चतुष्टयंयुक्तंचतुर्बीजमितिस्मृतम् ॥ ९४ ॥
तच्चूर्णभक्षितंनित्यंनिहंतिपवनामयम् ।
अजीर्णशूलमाध्मानंपार्श्वशूलंकटिव्यथाम् ॥

अर्थ–मेथी, हालों, कालाजीरा और अजमायन, ए चारों द्रव्य एकत्र मिलीहुईको **चारदाना** कहते हैं। इनके चूर्णका सेवन वादीके रोगको, अजीर्ण, शूल, अफरा, पसवाड़ेका शूल और कमरकी पीड़ाको नष्ट करे।

हिंगु (हींग).

सहस्रवेधिजतुकंबाह्लीकंहिंगुरामठम् ।
हिंगूष्णंपाचनंरुच्यंतीक्ष्णंवातबलासहृत् ॥
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नंपित्तवर्द्धनम् ।
स्त्रीपुष्पजननंबल्यंमूर्च्छापस्मारहृत्परम् ॥९६॥

अर्थ–सहस्रवेधि, जतुक, बाह्लीक, हिंगु और रामठ, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** हींग, **बं.** हिं, **म.** हिंग, **क.** लेङ्ग, **तै.** इंगु, **गु.** हींग, हिंगडो (वघारणी), **फा.** हिलतीस, अंगोज़ा, **इं.** आरसाफोयटीडा Arthex asafoetida कहते हैं। इसकी उत्पत्ति बाह्लीक देश (बलख जो काबूलके राज्यमें है तथा हिरात, खुरासान आदि में होती है। यह एक वृक्षका गोंद है कि, जिसको इंग्रेजी में (आर्थेक्स असाफोटीडा) कहते हैं। इसके पत्ते और कंदमें चीरा देकर इसे निकालते हैं। इसकी अनेक जाति हैं, परन्तु इनमें **हीराहींग** उत्तम होती है। और बेचनेवाले पठान लोग जो इसको लाते हैं, वो एक लहसनी हींग बनीहुई लाते हैं कि जिसके डालने से खाने के पदार्थ का सर्वथा स्वाद बिगड़ जाता है। और एक इसीका भेद **हींगड़ा** होता है। जैनी लोग उसीको वरतते हैं। और हींग को अभक्ष्य मानते हैं। जैपुरके राज्यमें बहुत मिलता है।

गुण । **हींग** गरम है, पाचन, रुचिकारी, तीक्ष्ण, [पित्तवर्द्धक, बलकारक, रजःप्रवर्त्तक, हिंगके सेवन करने से वातकफ, शूल, गोला, उदर, कृमिरोग, मूर्च्छा, अपस्मार (मृगी) रोगको नष्ट करे।] [चातुर्थिक ज्वरको दूर करे, इसको सिर्के में मिला-

सुश्रुतसंहितामें—मेथी पित्तशोणित और वादीनाशक है (अर्थात् पित्त काटकर रुधिरको सुधारनेवाली), बृंहण (पौष्टिक), स्तन्य (स्तनमें रुधिर शुद्धकर दूध उत्पन्न करता) माना है।

यूनानी हकीम—मेथीको मूत्रल और आर्त्तवदोषहर मानतेहैं और संधिवातमें और प्रसूतमें स्त्रियोंकी भूँख मंद होगई होय तो मेथीके लड्डू खानेको कहतेहैं।

***मखजनउलूअदवियाका बनानेवाला**–लिखताहै कि, हालोंके बीज अत्यंत गरम और उनके खानेसे पेशाब अधिक उतरताहै। और पुरुषार्थ बढे, पेटमें, तिल्लीकी गांठ मोटी होगई होय तो उसको जहांकी तहां बैठार देनेको उसीप्रकार सरदीसे होनेवाले और २ दरदोंके नष्ट करनेको हालोंके बीज देनेकी आज्ञा देताहै।

संस्कृत वैद्यकग्रंथोंमें—हालोंको कुव्वत देनेवाला और पाचनशक्ति सुधारनेवाला गिनाहै।

यके लेप करे तो बालोंके गिरनेको दूर करे] इसके देनेकी मात्रा २ से ४ रत्ती तककी है। *

वचा (वचा).

वचोग्रगंधाषड्ग्रंथागोलोमीशतपर्विका।
क्षुद्रपत्रीचमंगल्याजटिलोग्राचलोमशा॥
वचोग्रगंधाकटुकातिक्तोष्णावांतिवह्निकृत्
विबंधाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी।
अपस्मारकफोन्मादभूतजंत्वनिलान्हरेत्॥

अर्थ–वचा, उग्रगंधा, षड्ग्रंथा, गोलोमी, शतपर्विका, क्षुद्रपत्री, मंगल्या, जटिला, उग्रा, और लोमशा, ए. **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** वच, घुड़वच, सोसन जर्द, **तै.** वासा, **बं.** वच, **म.** वेखंड, **गु.** वज, **क.** विलीय वजे, **फा.** सवेववा, अकारून्, **अ.** उदल बुज, **इं.** अकोरस केलोमस Acorus Calomus कहते हैं। यह **गुल्म** जातिकी वनस्पतिकी लकड़ी है। इसका काला रंग और सुगंधित होती है। कलकत्ते में असल मिलती है और इधरके शहरों में पंसारी लोग एक सफेद २ लकड़ी देते हैं। उसमें सर्वथा सुगंध नहीं है परंतु सुगंधादि गणमें पाठ होनेसे सुगंधयुक्त ही ठीक है।

गुण। वचमें उग्र सुगंधि होती है, **ज़ायका** इसका चरपरा और कड़वा है। उष्ण **वीर्य,** वमन और जठराग्निको बढावे। **आमयिक प्रयोग।** विबंध (मलादिकका बंधन), अफरा (पेटका फूलना) कफजन्य उन्माद रोग, अपस्मार (मृगी) और शूलरोग इनको नष्ट करे। वचका सेवन करना मल मूत्रको शुद्ध करे, भूतादि भय और वातके रोगोंको

* **संस्कृत वैद्यक ग्रंथोंमें**—हींगको वर्त्तनेके पहिले भूननेकी आज्ञा है और अपने देश जैसे वनस्पति खानेवाले लोगोंमें हींग पेटकी पीड़ा नष्ट करने को मसाले में डालनेको कहते हैं और ज्ञानतंतुओं के दर्दोंमें शूलके कम करने को वर्त्तना लिखा है परंतु इसप्रकार मानते हैं कि हींगका हमेशा सेवन करने से भेजवाली जगह में आनेवाला ज्वर रुकता है।

यूनानी हकीम—हींगको कामोत्तेजक पदार्थोंमें से १ गिनते हैं, ये हकीम अनेक रोगों में देहके ऊपर लेप करने और खानेकी प्रशंसा करा करते हैं।

पुराने ग्रीक और **लाटिन लिखनेवाले** उसीप्रकार **अरबवाले** और **फारसी ग्रंथकार** हींगको दो जातिकी कहते हैं। एक **तैअब** (उत्तम) और दूसरी **मुनतीन** (दुष्ट दुर्गंधवाली) इनमें पहिली मीठी होती है और दूसरी लहसनी गंधदार। ये दोनों जुदे जुदे वृक्षों से प्रकट होती हैं। इन दोनोंमें एक वृक्ष **सफेद अंजूदन** (जो प्रथम जातिकी हींग को प्रकट करे है) नामसे बोलते हैं और दूसरी को **स्याहअंजूदन** (जो दूसरी जातिकी हींगको उत्पन्न करेहै) नामसे पहिचानेहैं।

थिओफ्रेस्टिस—अपनी वनस्पति इतिहासके छठे पुस्तकमें थर और मूलवाली दोनोंमें से उत्पन्न होनेवाली दो जातिकी हींगके विषयमें लिखते हैं कि जिसके वर्णन ऊपरसे यूरोप में हाल मिलनेवाली जातिकी हींगसे मिली हुई आती है।

मिलीअर—कहता है कि प्रत्येक १०० भाग हींगमें ३७॥ भाग तेल, ३८॥ भाग गोंद और बाकी थर (परत) और वनस्पतिसे बनी हींग होती है।

डाक्टरी ग्रंथोंमें—हींगको शूल नष्ट करता, जागृत करता और पेटमें से कीड़े निकालनेवाला मानते हैं, स्त्रियों में होनेवाले हिस्टिरियाके रोगमें उसीप्रकार श्वास, बड़ीभारी खांसी, और पेटमें वायुकरके पीड़ा होय उसके देनेकी आज्ञा देते हैं। छोटे २ बच्चों के फेंफड़े की सूजन अत्यंत बढ़गई होय और पेटमें कीड़े होनेके सबब जब ज्ञानतंतुओं के ऊपर असर होय उस समय उन कीड़ोंको निकाल डालनेको अत्यंत उपयोगी कही है।

चरकसंहितामें–हींगको श्वासहर, दीपनीय, चेतनास्थापन और वातकफहर कही है।

सुश्रुत संहितामें–हींगको कफहर, दीपन और गुल्मादि रोगहरणकर्ता कही है।

दूर करे । प्रयोगमें इसकी लकड़ी की छाल १ माशेकी **मात्रा** देवे ।

खुरासानी वच.

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहैमवतीतिसा ।
हैमवत्युदितातद्वद्वातंहान्तिविशेषतः ॥ ९९ ॥

अर्थ–खुरासानीवच सफेद रंगकी, इसका दूसरा नाम हैमवती है । हिंदीमें खुरासानी या किरमानी वच कहते हैं । **गुण** । खुरासानी वचम सामान्य वचके समान गुण हैं । वादीको नाश करे यह विशेषता है ।

महाभरीवच (कुलिंजन.)

सुगंधाप्युग्रगंधाचविशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कंठमुखशोधिनी ॥१००॥

अर्थ–सब प्राणी इसको महाभरी वच कहते हैं । और दूसरा नाम इसका कुलिंजन या कुलीजन है । पानकी जड़को कुलिंजन कहते हैं । **फा.** खीरदारु, **अ.** इर्कैलोलिजान्, **इं.** ग्रेटर गेलं गाब, **ला.** अल्पिनिया अफिसीनेरम् कहते हैं । **गुण** । महाभरीवच सुगंधित होकर भी उग्र गंध, विशेष करके कफनाशक और खांसीको नाश करे । रोचक, कंठको सुधारनेवाली, एवं हृदय, कंठ और मुखको निर्मल करे । सब प्रकारकी वचकी **मात्रा** १ माशेकी है ।

दूसरी वच सुगंधयुक्त मोटी गांठकी जिसको लोकमें महाभरा कहते हैं उसके गुण–

स्थूलग्रंथिःसुगंधास्यात्ततोहीनगुणास्मृता ॥१॥

अर्थ–मोटी गांठकी वच सुगंधयुक्त और कुलिंजनसे गुणोंमें हीन होती है ।

चोबचीनी.

द्वीपांतरवचाकिंचित्तिक्तोष्णावह्निदीप्तिकृत् ।
विबंधाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
वातव्याधीनपस्मारमुन्मादंतनुवेदनाम् ।
व्यपोहतिविशेषेणफिरंगामयनाशिनी ॥ ३ ॥

अर्थ–द्वीपांतर की अर्थात् अन्य विलायतकी वच जिसको चोबचीनी कहते हैं] **म.** चोबचीनी **तै.** फिरंगीचक्का, **इं.** चाईनारुट् चका, **ला.** स्माईलाक्स चाईना, **फा.** एवन । **गुण** । **रसमें** किंचित् कड़वी, गरम, अग्निको दीपन करता, विबंध अफरा, शूल, मलमूत्रको शोधन कर्त्ता, वातव्याधि, अपस्मार, उन्माद, देहकी पीड़ा, इनको दूर करे । विशेष करके फिरंगवात (गरमीके रोग) को नाश करे है ।

सुधामूली.

अमृताजीवनीजीवासुधामूल्यमृतोद्भवा ।
प्राणदाप्राणभृत्प्रोक्तावीरकंदामताबुधैः ॥
दीपनीतुसुधामूलीशुक्रकृद्बलवर्धिनी ।
रक्तदोषहरीहृद्याकामसंजननीपरा ॥
रसायनीपरंवृष्यावयस्थापुष्टिदामता ।

अर्थ–अमृता, जीवनी, जीवा सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राणभृत् और वीरकंदा, ए बुद्धिमान् वैद्योंने सुधामूली (सालममिश्री) के नाम कहे हैं ।

गुण । सुधामूली अर्थात् सालममिश्री अग्नि को दीपन करे, वीर्यकारक, बल बढ़ानेवाली, रुधिरके दोषोंको हरण करे, हृदयको हितकारी, कामदेवको प्रकटकर्त्ता, रसायनी, वृष्य, अवस्थाको स्थापन करता और पुष्टि करता है ।

हाउबेर.

हाउबेर दो प्रकारका है । उनमें **पहिला** फल मछलीके सदृश आमकीसी दुर्गंधतायुक्त, **दूसरा** पीपर के फल के समान मछलीकीसी गंधका । उन दोनों के नाम और गुण–

हवुषावपुषाविस्राऽपराऽश्वत्थफलामता ।
मत्स्यगंधाप्लीहहंत्रीविषघ्नीध्वांक्षनाशिनी ॥
हवुषादीपनीतिक्ताकटूष्णातुवरागुरुः ।
पित्तोदरसमीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ।
पराप्येतद्गुणाप्रोक्तारूपभेदोद्वयोरपि ॥ ५ ॥

अर्थ–प्रथम प्रकारके नाम-हवुषा, वपुषा और विस्रा । दूसरे प्रकारवाले के नाम-अश्वत्थफला, मत्स्यगंधा प्लीहहंत्री, विषघ्नी, और ध्वांक्षनाशिनी । **हिं.** हाउबेर, **बं.** हपुषा, **क.** परडुद्दे, **ला.** येवेटियनेरिफोलिया, **गुण** । **हवुषा** अग्निदीपक, कड़वी, तिक्त, मृदु, गरम, कषेली और भारी है । यह पित्त, उदररोग, वायु, बवासीर, संग्रहणी, गोला और शूल रोगको नष्ट करे । **दूसरे** प्रकारका जो फल है, उसके भी

इसीप्रकार गुण हैं। हवुषाकी **प्रतिनिधिमें चव्य** लेनी चाहिये। जो आजकल सब पसारीलोग और अत्तारलोग हवुषा नाम करके द्रव्य देते हैं वह हवुषा नहीं है। वह कबाबचीनीका अथवा मिरचका डांठरा है।

वायविडंग.

पुंसिक्लीवेविडंगःस्यात्कृमिघ्नोजंतुनाशनः।
तंडुलश्चतथावेल्लममोघाचित्रतंडुला॥ ६॥
विडंगंकटुतीक्ष्णोष्णंरूक्षंवह्निकरंलघु।
शूलाध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबंधनुत्॥ ७॥

अर्थ–विडंग, कृमिघ्न, जन्तुनाशन, तंडुल, वेल्ल, अमोघा और चित्रतंडुला, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** वायविडंग, **बं.** विडंग, **म. गु.** वावडींग, कारकुनी, **क.** वायुवीडंग, **ता.** वायविलं, **तै.** वायुवीडंगमु, **फा.** विरंजकावली, **ला.** इंबेलियारीबीस Embeliaribes **इं.** बेब्रेंग्।

गुण। वायविडंग चरपरी, तीक्ष्ण, गरम, रूक्ष, अग्निकारक, लघु, किंचिन्मात्र कड़वी, विषनाशक और भ्रांतिनिवारक है। **आमयिक प्रयोग** यह शूल, अफरा, उदररोग, कफ, कृमि, वादी और मलबद्धताको निवारण करे। इसके **दर्पका** नाशक **कतीरा** है। और **प्रतिनिधिमें** वाक्‌लाकी फलीके बीज लेना। **मात्रा** २ माशेहै। *

* **मीरमुहम्मद हुसेन**—लिखताहै कि, वायविडंग खानेसे पेशावका रंग लाल होजाताहै इस वास्ते इसे ताजे दूध के साथ देनी चाहिये।

डा. रोकसवर—उसका वर्णन करते समय लिखताहै कि, अनेकवार वायविडंग कालीमिरचके साथ मिलाकर पसारीलोग वेचदेतेहैं। वायविडंगके चूर्णकी मात्रा छोटे २ बालकोंको एक छोटी चमचीभरके दिनमें दो वक्त और बड़े मनुष्यको बड़ा चमचाभरके देनी चाहिये। इसका स्वाद उत्तम, कुछ २ कषेला और थोड़ी खुशबूदार होय है। छोटे बच्चोंको पिलानेके दूधमें वायविडंगके थोड़े दाने मिलानेसे उनके पेटमें वादीका कोप नहीं होय।

सुश्रुतसंहितामें—वायविडंगको शरीरमें शक्ति पैदा करनेको तथा वृद्धावस्थाका असर न हो आवे ऐसा करनेके वास्ते मुलहटीके साथ देनेकी प्रशंसा करी है।

चरकसंहितामें—वायविडंगको कृमिनाशक, कुष्ठनाशक और शिरोविरेचन (नासिकासे जल निकालनेवाला), गुल्म, शूलनाशक, खांसी, श्वास हरणकर्त्ता कहाहै।

आजकलके लिखनेवालोंने—लिखाहै कि, वायविडंग पेटका दर्दनाशक है, पाचनशक्ति बढ़ानेवाला, पेटके कीड़े, निकालनेवाला, बदहजमीनाशक, और त्वचाके रोगनाशक है।

यूनानी हकीम—वायविडंगको जुल्लाबद्वारा पेटके बिगाड़ निकालनेवाला गिनतेहैं। उसीप्रकार पेटके चपटे कीड़े काढ़नेको सूखे वायविडंग के फल पीसकर नौ बरसके भीतर उमर वाले बालकको १ चमचा भरके और बड़ी उमरके मनुष्यको दो चमचे मक्खन और मिश्रीके साथ मिलायके देनेकी प्रशंसा करते हैं।

डा. रोयल्– कहता है कि, इससे जुलावभी लगता है और पानीमें मिलायके देय तो पेटके कीड़े निकल जाते हैं तथा मूलव्याधि (बवासीर) की बिमारी में वह देनेकी प्रशंसा करे है।

डा. डेकनडोल्– कहता है कि, इस बाजको कुछ तीक्ष्णताका कारण उसमें रहनेवाला खारा वा राल जैसा पदार्थ है।

सुश्रुतसंहितामें– इस फलको दर्द (पित्तके बढ़नेसे शरीर के ऊपर छोटे २ जो फोड़े उत्पन्न होंय उनके) नष्ट करनेवाला कहा है।

इंग्रेजी ग्रंथकर्त्ताओं के– मतसे मूल और छालका स्वाद कड़वा है। उसके गुण सिंकोना (कीना जो एक वृक्षकी छालमें से निकले है) उस वृक्षके समान यह शीतलहै। **फल** खांसी, सरदी और श्वासके रोगमें अति गुणकारी गिना गयाहै। **फलके** ऊपरकी **छाल** साबुदाना और माखन के साथ मिलाकर देनेसे दस्तकी बिमारीमें अत्यंत फायदा करे है। दूधमें मिलायके पीवे तो कामला और पित्तके अन्यरोगों में भी देते हैं। यदि दस्त होनेके ज्यादे जोर पड़ता होय और आम पड़ता होय तो नीबूके रसके संग मिलायके खाय।

तुंबुरु.

तुंबुरुः सौरभः सौरो वनजः सानुजोंधकः।
तुंबुरुप्रथितं तिक्तं कटु पाकेऽपि तत्कटु ॥ ८ ॥
रूक्षोष्णं दीपनं तीक्ष्णं रुच्यं लघु विदाहि च।
वातश्लेष्माक्षिकर्णौष्ठशिरोरुग्गुरुताकृमीन् ॥
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत्।

अर्थ–तुंबुरु, सौरभ, सौर, वनज, सानुज और अंधक, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं. बं.** तुंबुरुफल, **म.** चिरफल, **कों.** चिरफल, कालीमिरच के समान फटे मुखका होता है।

गुण। तुंबुरु कड़वा, पाक के समय कटु, रूक्ष, गरम, अग्निदीपक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, लघु और विदाही है। **प्रयोग।** यह वात, श्लेष्मा, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरःपीड़ा, देह का भारीपना, कृमि, कोढ़, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र इनको दूर करे। इस का **फल** लेना; **मात्रा** १ माशे की है।

वंशलोचन.

स्याद्वंशरोचना वांशी तुगाक्षीरी तुगा शुभा।
त्वक्क्षीरी वंशजा शुभ्रा वंशक्षीरी च वैणवी ॥१०॥
वंशजा बृंहणी वृष्या बल्या स्वाद्वी च शीतला।
रूक्षा कषाया पित्तघ्नी दुष्टशोणितशोधिनी ॥
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः।
हरेत्कुष्ठं व्रणं पांडुं दाहनुद्वातकृच्छ्रजित् ॥१२॥

अर्थ–वंशरोचन, वांशी, तुगाक्षीरी, तुगा, शुभा, त्वक्क्षीरी, वंशजा, शुभ्रा वंशक्षीरी और वैणवी ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं. बं.** वंशलोचन, **गु.** वांसकपूर, **फा.** तवाशीर, **तै.** वंशरोचना, **ला.** बाम्बुसाएरंडीनेशिआ। यह मोटे और दृढ़ बांस के भीतरसे निकलता है। यह एक प्रकार का पत्थर है। जब वांस में यह सफेद रस सूख जाता है तब वंशलोचन के कंकर बन जाते हैं।

गुण। वंशलोचन पुष्टिकारक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, स्वादु, शीतल, रूक्ष, कषैला, पित्तनाशक और रक्तदोष को हरण करे है।

प्रयोग। वंशलोचन का सेवन करना तृषा, खांसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्तपित्त, कामला, कुष्ठ, व्रण, पांडु, दाह और वातजन्य मूत्रकृच्छ्र को दूर करे। **मात्रा** इसकी ६ रत्ती की है।

तवाखीर.

तवक्षीरं पयःक्षीरं यवजं गवयोद्भवम् ॥
अन्यच्च धूमजं चान्यत् पिष्टिकातंडुलोद्भवम् ॥
अन्यच्च तालसंभूतं तालक्षीरादिनामकम् ॥
वनगोक्षीरजं श्रेष्ठमभावेऽन्यदुदीरितम् ॥
तवक्षीरं तु मधुरं शिशिरं दाहपित्तनुत् ॥

अर्थ–तवक्षीर, पयःक्षीर, यवज, गवयोद्भव, गोधूमज, तंडुलोद्भव, तालसंभूत और तालक्षीरादि नामक ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** तवाखीर, **म.** तवखीर, **फा.** तवासीर, **इं.** अरारोट, **ला.** कर्क्यमाणाष्टिफोलिया। सब तवाखीरोंमें वनकी गौके दूधसे जो बनता है वह उत्तम है। इसके अभाव में अन्य तवाखीर लेने।

गुण। तवाखीर मधुर, शीतल और दाहनाशक है।

समुद्रफेन.

समुद्रफेनः फेनश्च डिंडीरोऽब्धिकफस्तथा ॥
समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शीतलश्च सः ॥
कषायो विषपित्तघ्नः कर्णरुक्कफहल्लघुः ॥ १३ ॥

अर्थ–समुद्रफेन, फेन, डिंडीर, अब्धिकफ, **हिं. बं.** समुद्रफेन, **गु.** समुद्रफीण **का.** कड़लनागले, **तै.** सामुद्र नालिक, **फा.** कफे दरया, **अ.** जुबदुल् बेहेर, **ला.** सेपिया औपिसीनेलीस्त, **इं.** कटल फीसबोन्। यह भी एक जातिका पाषाण है।

गुण। समुद्रफेन नेत्रोंको हितकारी, कृशकारी (शोषक) शीतल, कषेला और हलका, इसमें विषनाशक शक्ति है। यह कर्णकी पीड़ा और कफको नष्ट करे है। इसकी **मात्रा** दो माशेकी है।

अष्टवर्ग.

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ ऋद्धिवृद्धिके ॥
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः ॥१४॥
अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्बृंहणः शुक्रलो गुरुः ॥
भग्नसंधानकृत्कामबलासबलवर्द्धनः ॥
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ॥ १५ ॥

अर्थ–जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि, ए आठ औषधोंके मिलने से अष्टवर्ग चरकादि ऋषियोंने कहा है। गुण। अष्टवर्ग शीतल, स्वादु, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, भारी, टूटेहुए स्थानको जोड़नेवाला, कामवर्द्धक, कफ प्रकट करता और बलकारक, एवं वायुजन्य रक्तपित्त, तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय इन सब रोगोंको नष्ट करे।

जीवक, ऋषभक.

जीवकर्षभकौज्ञेयौहिमाद्रिशिखरोद्भवौ।
रसोनकंदवत्कंदौनिःसारौसूक्ष्मपत्रकौ ॥१६॥
जीवकःकूर्चकाकारऋषभोवृषशृंगवत्।
जीवकोमधुरःशृंगोह्रस्वांगःकूर्चशीर्षकः॥
ऋषभोवृषभोधीरोविषाणीद्राक्षइत्यपि।
जीवकर्षभकौबल्यौशीतौशुक्रकफप्रदौ।
मधुरौपित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥१८॥

अर्थ–जीवक, और ऋषभक ए दोनों प्रकार के उद्भिद (रूखड़ी) हिमालय पर्वतकी शिखर (शृंगों) पर प्रकट होते हैं। इन दोनोंका कंद लहसनके कंदके समान होता है। यह सारहीन और छोटे २ पत्तोंवाले होते हैं।

इनमें जीवक, कूर्चक (बुहारी, झाड़ू) के आकारवाला और ऋषभक बैलके सींगके समान होता है। जीवक, मधुर, शृंग, ह्रस्वांग, कूर्चशीर्षक, ए जीवकके संस्कृत नाम हैं। ऋषभ, वृषभ, धीर, विषाणी, द्राक्ष, ए ऋषभक के संस्कृत नाम हैं। गुण। जीवक और ऋषभक दोनों बलकर्त्ता, शीतलवीर्य और कफवर्द्धक, मधुर (जायका मीठा), पित्त, दाह, रुधिरविकार, कृशता, वादी और क्षयरोगको नष्ट करते हैं।

मेदा, महामेदा.

महामेदाभिधःकंदोमोरंगादौप्रजायते।
महामेदावनेमेदास्यादित्युक्तंमुनीश्वरैः ॥१९॥
शुक्लार्द्रकनिभःकंदोलताजातःसुपांडुरः।
महामेदाभिधोज्ञेयोमेदोलक्षणमुच्यते ॥ २० ॥
शुक्लकंदोनखच्छेद्योमेदोधातुमिवस्रवेत्।
यःसमेदेतिविज्ञेयोजिज्ञासातत्परैर्जनैः ॥ २१ ॥
स्वल्पपर्णीमणिच्छिद्रामेदामेदोभवाध्वरा।
महामेदावसुच्छिद्रात्रिदंतीदेवतामणिः ॥ २२ ॥
मेदोयुगंगुरुस्वादुवृष्यंस्तन्यकफावहम्।
बृंहणंशीतलंपित्तरक्तवातज्वरप्रणुत् ॥ २३ ॥

अर्थ–महामेदा नामक कंद मोरङ्गदेश आदि स्थानों में प्रकट होता है। जिस जगह महामेदा उत्पन्न होती है उसी जगह मेदा प्रकट होय है। महामेदा देखनेमें सफेदरंग अदरख के कंदके समान कंद होताहै और इसकी पीलेरंगकी लता (बेल) चलती है। यह महामेदाके लक्षण कहे। अब मेदाके लक्षणोंको कहते हैं। मेदाका भी सफेद कंद होता है। नखके छेदने से अर्थात् छीलने से उसमें से मेदा (चरबी) के समान रस टपकता है। उसको मेदा जानना। स्वल्पपर्णी, मणिच्छिद्रा, मेदा, मेदोद्भवा, अध्वरा, [वा धरा] ए सं. मेदाके नाम। महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदंती, देवता और मणि इतने संस्कृत नाम महामेदाके हैं। गुण। मेदा और महामेदा दोनों भारी, स्वादिष्ट, वीर्य प्रकटकारी, स्तन्य (दूध) वर्द्धक, कफजनक, पुष्टिकारक, शीतल, रक्तपित्तनाशक, तथा वातज्वर शांति करे हैं।

काकोली, क्षीरकाकोली.

जायतेक्षीरकाकोलीमहामेदोद्भवस्थले।
यत्रस्यात्क्षीरकाकोलीकाकोलीतत्रजायते ॥
पीवरीसदृशःकंदःक्षीरंस्रवतिगंधवान्।
सप्रोक्तःक्षीरकाकोलीकाकोलीलिंगमुच्यते ॥
यथास्यात्क्षीरकाकोलीकाकोल्यपितथाभवेत्।
एषाकिंचिद्भवेत्कृष्णाभेदोऽयमुभयोरपि ॥
काकोलीवायसोलीचवीराकायस्थिकातथा।
साशुक्लाक्षीरकाकोलीवयस्थाक्षीरवल्लिका।
कथिताक्षीरिणीधाराक्षीरशुक्लापयस्विनी ॥
काकोलीयुगलंशीतंशुक्रलंमधुरंगुरु।
बृंहणंवातदाहास्रपित्तशोषज्वरापहम् ॥ २८ ॥

अर्थ–जिस देश और स्थानमें महामेदा उत्पन्न होती है उसी स्थानमें काकोली और क्षीरका

कोली प्रकट होती है। **क्षीरकाकोली** कंद देव-नेमें **सतावर**के कंदके समान होताहै, यह एक प्रकार का गंधयुक्त कंद है इसमें से **रस** निकलताहै। **काकोली** किंचित् कालेरंगकी होती है। इन दोनों में इतनाही फरक है। काकोली, वायसोली, वीरा और काय-स्थिका, इतने **संस्कृत** नाम **काकोली**के हैं। **क्षीरकाकोली** सफेद रंगकी और इसके अन्य **संस्कृत** नाम यह हैः—वयस्था, क्षीरवल्लिका, क्षीरणी, धारा, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी। **गुण**। दोनों प्रकारकी **काकोली** शीतल, शुक्रकर्त्ता, मधुर, भारी, पुष्टि-कारक और वायुनाशक, दाह, रक्तपित्त, शोष और ज्वररोग इनको नष्ट करे है।

ऋद्धि, वृद्धि.

ऋद्धिर्वृद्धिश्चकंदौद्वौभवतःकोशयामले।
श्वेतलोमान्वितःकंदोलताजातःसरंध्रकः॥
सएवऋद्धिर्वृद्धिश्चभेदमप्येतयोर्ब्रुवे।
तूलग्रंथिसमाऋद्धिर्वामावर्त्तफलाचसा॥३०॥
वृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्तफलाप्रोक्तामहर्षिभिः।
ऋद्धिर्योग्यंसिद्धिलक्ष्म्योर्वृद्धेरप्याह्वयाइमे॥
ऋद्धिर्बल्यात्रिदोषघ्नीशुक्रलामधुरागुरुः।
प्राणैश्वर्यकरीमूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी॥३२॥
वृद्धिर्गर्भप्रदाशीताबृंहणीमधुरास्मृता।
वृष्यापित्तास्रशमनीक्षतकासक्षयापहा॥३३॥
राज्ञामप्यष्टवर्गस्तुयतोऽयमतिदुर्लभः।
तस्मादस्यप्रतिनिधिंगृह्णीयात्तद्गुणंभिषक्॥
मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वंद्वेऽपिचासति।
वरीविदारीश्वगंधावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत्

अर्थ—**ऋद्धि** और **वृद्धि** ए एक लताजातिके कंद हैं। ए कोशयामल देशमें उत्पन्न होते हैं। इन कंदोंका **स्वरूप** सफेदरंगका ऊपर इसके रोमांच के सदृश वालसे होते हैं। और बीच बीचमें छिद्र होते हैं। ऋद्धि और वृद्धिमें इतनाही फरक है कि ऋद्धिका **फल** कपासकी गांठके आकार जैसे शंखमें आंटे होती हैं, उसीप्रकार की बांईतरफ आंटे होय हैं। और वृद्धिमें दाहिनी तरफ आंटें होती हैं। ऋद्धि, सिद्धि और लक्ष्मीके योग्य होती है किन्तु दोनोंके नाम एकसे ही होते हैं

गुण। **ऋद्धि** बलकारक, त्रिदोषनाशक, **शुक्रजनक**, मधुर, भारी, आयुवर्द्धक ऐश्वर्यप्रद, मूर्च्छा और रक्तपित्तको नाश करे। **वृद्धि** गर्भप्रद, शीतल, पुष्टिकारक, मधुर, शुक्र उत्पन्नकर्त्ता, रक्तपित्तनाशक, क्षत, खांसी, और क्षयको नाश करे है।

यह **अष्टवर्ग** राजादिकों को भी अति दुर्लभ है, अतएव **अष्टवर्ग**के पलटेमें इनके समान गुणवान् द्रव्य लेने चाहिये। यद्यपि पहिले ही भावप्रकाश ग्रंथके पंचम मिश्रप्रकरण में अष्टवर्ग की **प्रतिनिधि** लिख-चुकेहैं, तथापि यहां फिर लिखते हैं। **मेदा, महामेदा** के स्थानमें **शतावर**। **जीवक, ऋषभक**के स्थानमें **विदारीकंद**। **काकोली, क्षीरकाको-ली**के स्थानमें **असगंध** और **ऋद्धि, वृद्धि** के स्थानमें अर्थात् अभाव में **वाराहीकंद** डालना चाहिये।

यष्टीमधु (मुलहटी)—

यष्टीमधुतथायष्टीमधुकंक्लीतकंतथा।
अन्यत्क्लीतनकंतत्तुभवत्युपमधूलिका॥३६॥
यष्टीहिमागुरुःस्वाद्वीचक्षुष्याबलवर्णकृत्।
सुस्निग्धाशुक्रलाकेश्यास्वर्यापित्तानिलास्र-जित्॥
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा।
शोषदाहारुचिघ्नीचकासानाशुविनाशयेत्॥३७॥

अर्थ—यष्टीमधु, यष्टीमधुक, क्लीतक, क्लीतनक, उपमधूलिका, इतने **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** मुल[र]हटी, मीठीलकड़ी, **तै.** यष्टीमधूकम्, **बं.** यष्टीमधु, **म.** जेठीमध, **गु.** जेठीमध, **फा.** रुबुलसूस, **अ.** वेखम-हक, **इं.** लीकरीसरूट्, Liquorice root कहतेहैं। **मुलहटी** की बेल हिमालयपर्वत, कोचीन, चीन तथा दक्षिणयूरप में होती है।

गुण। **मुलहटी** शीतल, भारी, मिष्ट, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक, वर्णको उज्ज्वल कर्त्ता, सुस्निग्ध, शुक्र उत्पन्नकर्त्ता, बालोंको बढानेवाली, स्वरभंग-नाशक। **प्रयोग** मुलहटीके सेवनसे व्रण, सूजन, विषदोष, वमन, तृषा, ग्लानि, क्षयरोग, वातपित्त,

शोष, दाह, अरुचि और खांसीका रोग ए नष्ट होय इसकी लकड़ीकी **मात्रा** २ माशेकी है । *

वल्ली यष्टीमधु.

अन्यक्लीतनमुक्तंतुमधुकंक्लीतनीयकम् ॥
मधुवल्लीचमधूलीमधुरनाममधुरसातिरसा ॥
शोषापहाचसौम्यास्थलजाजलजाचसाद्वि-
धाभूता ॥
सामान्येनमतेयंद्वादशसंज्ञाबहुज्ञधिया ॥
क्लीतनकंमधुकंरुच्यंबल्यंवृष्यंव्रणापहम् ॥
शीतलंगुरुचक्षुष्यंअम्लपित्तापहंपरम् ॥

अर्थ–दूसरा क्लीतन, मधुक, क्लीतनीयक, मधुवल्ली, मधूली, मधुरनाम, मधुरसा, अतिरसा, शोषापहा, सौम्या स्थलजा और जलजा, ए **बेलवाली** मुलहटीके बारह **संस्कृत** नाम हैं । **गुण** । **क्लीतन** मधुक रुचिकारी, बलकर्त्ता, वृष्य, व्रणनाशक, शीतल, भारी, नेत्रोंको हितकारी और अम्लपित्तका नाशक है ।

वृष्यवल्ली (सालसा).

रागिनीसुरवल्लीचरक्तलावृष्यवल्लरी ।
वृष्यवल्लरिकास्वाद्वीवृष्याबलकरीमता ॥
रसायनीपुष्टिदात्रीमूत्रकृत्कार्श्यहारिणी ।
उपदंशादिरोगाणांनाशिनीस्वेदकारिणी ।
वर्णप्रसादिनीहृद्यारक्तदोषहरीपरा ॥

अर्थ–रागिनी, सुरवल्ली, रक्तला और वृष्यवल्लरी, ए **संस्कृत** नाम हैं । **हिं**. भाषामें **सालसा** कहते हैं । **गुण** । **सालसा** स्वादु, वृष्य, बलकारी, रसायन, पुष्टिकरता, मूत्रकरता, कृशता और उपदंश आदि रोगोंका नाशक, पसीने लानेवाला, देहके वर्णको सुंदर करता, हृदयको हितकारी और रुधिर के दोषोंको हरण करता इससे परे और नहीं हैं ।

कबीला.

कांपिल्लःकर्कशश्चंद्रोरक्तांगोरोचनोऽपिच ।
कांपिल्लःकफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ॥
हंतिरेचीकटूष्णश्चमेहानाहविषाश्मनुत् ।

अर्थ–कांपिल्ल, कर्कश, चंद्र, रक्तांग और रोचन, ए **संस्कृत** नाम । **हिं**. कबी [मी] ला, **बं**. कामला गुड़ी, **म**. कपिला, **गु**. कपिलो, **फा**. कन्बिलाय, **अ**. किन्बीर, **इं**. कैमिला, **ला**. रोटलेरा टींकटोरिया, यह पर्वतीवृक्षके डालीपर गांठसी २ होता है । उनमें लाल चूर्णसा निकलतों है ।

गुण । **कबीला** कफ, पित्त, कृमि, गोला, उदर, व्रण, प्रमेह, अफरा, विषदोष और पथरी इनको नष्ट करे । रेचक, चरपरा और गरम है । **मात्रा** ६ रत्तीकी है ।

आरग्वध (अमलतास)

आरग्वधोराजवृक्षःशम्याकश्चतुरंगुलः ।
आरेवतोव्याधिघातःकृतमालः सुवर्णकः ॥
कर्णिकारोदीर्घफलः स्वर्णांगःस्वर्णभूषणः ।

---

* **सुश्रुतसंहितामें** – मुलहटी को कफहर, मेदहर, दीपन और गुल्मादिरोग हरणकर्त्ता कहा है । **चरकसंहितामें** – इसको कांतिकारी, कंठको हितकारी, दाहप्रशमन कर्ता रक्तशुद्धिकर तथा [illegible] कहा है इसवास्ते इसको चिकने, शीतल और खांसीके रोगमें उपयोगी गिनते हैं ।

मखजन उल् अदवियाका कर्त्ता – जड़को वर्त्तने के पहिले उस जड़की छाल निकालनेकी आज्ञा देता है । और इसको गरम और खुश्क व्रणको पकानेवाली, चिकनी प्यास और खांसीको बैठानेवाली, तथा श्वासको और फैंफड़ेके रोगमें असर करनेवाली मानता है ।

शेखउल्रईस – कहताहै कि, सरदीके सबब जो पेटमें पीड़ा होती होय तो मुलहटी का क्वाथ देना चाहिये, और आंखकी रोशनी सुधारने को इसके रसकी बूंद आंखमें डाले, माँथेमें यदि फुंसी होगई होय तो मुलहटीके पत्तोंकी पुलटिश बांधे । और मर्दन करने से पैर और बगल से निकलती वासको नष्ट करे ।

मुहम्मद बिन अहमद गुहाना बिन शिरापिया – लिखताहै कि, इस क्षुपके भी अन्य अवयव भागोंसे बीज सबसे उत्तम प्रकारका असर करते हैं । और वे बीज खास आब हवा वाले मुलकमें (बसरे में) उत्पन्न होते हैं ।

**आरग्वधोगुरुःस्वादुःशीतलःस्रंसनोगुरुः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलनुत् ॥४०॥
तत्फलंस्रंसनंरुच्यंकुष्ठपित्तकफापहम् ।
ज्वरेतुसततंपथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ ४१ ॥**

अर्थ–आरग्वध, राजवृक्ष, शम्याक, चतुरंगुल, आरेवत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णक, कर्णिकार, दीर्घफल, स्वर्णांग और स्वर्णभूषण, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** घनवहेरा, सोनालू, अमलतास, किरवारों, **बं.** सोंदाल, **म.** वाहवा, **गु.** गरमालो, **क.** हेग्गके, **तै.** रेलाकाया, **फा.** खियार शंवर, **ला.** काथरटोकर्पस फिस्टुला Cathartocurpus fistula कहते हैं । अमलतास का वृक्ष बड़ा होताहै, पत्ते बड़े और कुमाशदार होते हैं और आमने सामने ऊगते हैं । **फूल** इसके पांच २ पंखड़ी के हरदी के समान पीले, प्रत्येक डालीपर बहुतसे होते हैं । इसका **फल** (फली) एक फुट अथवा दोफुट लंबी होती है । भीतर इसके गूदा और इमलीके से चीआं निकलते हैं । इसका गूदा प्रयोगमें लिया जाताहै । **चित्र** नंबर ४ का देखो ।

गुण । अमलतास भारी, शीतल और मिष्ट, उत्तम स्रंसन (कोष्ठस्थ मलादिक को ढीला करनेवाला) । ज्वर, हृद्रोग, रक्तपित्त, ऊर्ध्वगतवायु और शूलरोगको नष्ट करे । **अमलतासकी फली** कोठेके मलादिकको शिथिल करे, रुचिकारी, कुष्ठ, पित्त और कफनाशक, अमलतास ज्वरमें सर्वथा **पथ्य** है । इसके द्वारा कोठेकी शुद्धि विलक्षण अर्थात् अद्भुत प्रकारसे होती है । [अनेक चमड़ी के रोगोंमें इसके पत्तोंकी मालिश आदि व्यवस्था करी जाती है ।] **मात्रा** ३॥ माशे से लेकर १। तोलेतक है । *

कुटकी.

**कट्वीतुकटुकातिक्ताकृष्णभेदाकटुंभरा ।
अशोकामत्स्यशकलाचक्रांगीशकुलादनी ॥
मत्स्यपित्ताकांडरुहारोहिणीकटुरोहिणी ।
कट्वीतुकटुकापाकेतिक्तारूक्षाहिमालघुः ॥
भेदनीदीपनीहृद्याकफपित्तज्वरापहा ।
प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठक्रिमिप्रणुत् ॥४३॥**

अर्थ–कट्वी, कटुका, तिक्ता, कृष्णभेदा, कटुंभरा, अशोका, मत्स्यशकला, चक्रांगी, शकुलादनी, मत्स्यपित्ता, कांडरुहा, रोहिणी और कटुरोहिणी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** कुटकी, **बं.** कटकी, **म.** कालीकुटकी, **गु.** कडू, **तै.** काटक रोहिणी, **फा.** खर्वकेसियाह, **इं.** ब्लाकहेलीबोर, **ला.** हेलीबोरस नाइजर Helleborus niger कहते हैं । कुटकी की जड़ प्रयोगमें लीनीजाती है । यह औषधजातिकी रूखड़ी है ।

गुण । कुटकीका रस कटु, **पाकमें** कड़वी, रूक्ष, शीतल, हलकी, भेदक, अग्निदीपक और हृदयको हितकर्त्ता । **कुटकी** सेवन करने से कफ, पित्तज्वर, प्रमेह, श्वास, खांसी, रुधिरविकार, दाह, कुष्ठ और कृमिरोग ए नष्ट होंय । **मात्रा** ५ रत्तीसे दो माशे तककी है ।

चिरतिक्त (चिरायता.)

**किराततिक्तः कैरातःकटुतिक्तःकिरातकः ।
कांडतिक्तोनार्यतिक्तोभूर्निबोरामसेनकः ॥४४॥**

---

* **मखजनउलअदवियाका कर्त्ता** – लिखता है कि, उत्तम जुलाव होनेके वास्ते अमलतासकी फलियों की प्रशंसा करता है । उनको थोड़ी गरमकर उसका गूदा निकाल थोड़े बादामरोगन के साथमें मिलाने से छातीका दरद नष्ट होय । रुधिरकी गरमी अत्यंत न्यून होती है और इसका असर अत्यंत नाजुक होनेसे बालक तथा गर्भवती स्त्रियोंके वास्तेभी हितकारी है । एकत्रहुए पित्तके दूर करने को इसको इमली के साथ पिलाना, संधिवातकी पीड़ा दूर करनेके लिये उसका रस चुपड़े, ५ से ७ बीजोंको पीसके देनेसे उलटी होतीहै और फलीके ऊपरकी छाल, केसर, मिश्री और गुलाबजलके साथ पीसके देवे तो स्त्रियोंको तुरंत प्रसव होय । छाल और पत्तोंको तेलमें पीसकर फोड़ाके ऊपर लगाने से फायदा होताहै ।

चरक संहितामें–इसको कंडु (खुजली) नाशक लिखाहै ।

सुश्रुतसंहितामें–कफवातप्रशमन लिखाहै ।

यूनानी वैद्य–पत्ते और फूलमें दस्त लानेवाला गुण रहताहै ऐसा कहतेहैं ।

किरातकोऽन्योनैपालःसोऽर्द्धतिक्तोज्वरांतकः
किरातःसारकोरूक्षःशीतलस्तिक्तकोलघुः ॥
सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्रदाहनुत् ।
कासशोथतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ॥ ४६ ॥

अर्थ–सं. किराततिक्त, कैरात, कटुतिक्त, किरातक, काण्डतिक्त, नार्यतिक्त, भूनिंब और रामसेनक। एक प्रकारका चिरायता नेपालदेशमें होताहै। उसके **सं.** अर्द्धतिक्त, ज्वरान्तक और नेपालनिंब, **हिं.** चिरायता, चिरेता, **बं.** चिराता, **म.** किराईत, **दे.** चिराईत, **कों.** काडेकिराइत, फूलकिराईत, **का.** नेलबेउवु, **गु.** करीआतुं, **तै.** नेलानेमु, **फा.** कसबुज्जरीरा, **अ.** ननिहाद, **इं.** चिरेटा Chiretta कहते हैं यह क्षुपजातिकी वनस्पति है।

गुण। चिरायता सारक (दस्तावर) रूक्ष, शीतल, कड़वा और हलका। **प्रयोग।** यह सन्निपात-ज्वर, श्वास, कफ, रक्तपित्त, दाह, खांसी, श्वास [शोथ], तृषा, कुष्ठ, ज्वर, व्रण और कृमिरोगको नष्ट करे। मात्रा १ मासेकी है। **प्रतिनिधि** पीलाचंदन और केशर है।

नेपालनिंब.

नेपालनिंबोनैपालस्तृणनिंबोज्वरांतकः ।
नाडीतिक्तोर्धतिक्तःस्यादिन्द्रारिःसन्निपातहा ॥
नेपालनिंबोऽतितोष्णोयोगवाहीलघुस्तथा ।
तिक्तोऽनिलकफपित्तास्रशोफतृष्णाज्वरापहा ॥

अर्थ–सं. नेपालनिंब, नेपाल, तृणानिंब, ज्वरांतक, नाडीतिक्त, अर्द्धतिक्त, इंद्रारि, और सन्निपातहा। **गुण। नेपालनिंब** शीतल, गरम, योगवाही, हलका, अत्यंत कड़वा, कफ, रक्तपित्त, सूजन, प्यास और ज्वरको नष्ट करेहै।

इन्द्रजौ.

उक्तंकुटजबीजंतुयवमिन्द्रयवंतथा ।
कलिंगंचापिकालिंगंतथाभद्रयवंस्मृतम् ॥
क्वाचिदिंद्रस्यनामैवस्यवेतदभिधायकम् ।
फलानीन्द्रयवास्तस्यतथाभद्रयवाअपि ॥ ४८ ॥
ऐन्द्रयवंत्रिदोषघ्नंसंग्राहिकटुशीतलम् ।
तिक्तंदाहहरंहन्तिरक्तपित्तप्रवाहिकाम् ॥
ज्वरातिसाररक्तार्शोवमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।
दीपनंगुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित् ॥

अर्थ–कुटजबीज, यव, इन्द्रयव, कलिंग, कालिंग, भद्रयव, और किसी २ **कोशमें** इन्द्रवाचक शब्द इसके पर्यायवाचक शब्द हैं ऐसा कहाहै। **हिं.** इन्द्रजौ, **का.** कोडसिगेयबीज, **गु.** इंदरजव, **फा.** लिसानुल, असाफीर, कुंजवुजवा, **ला.** राइट्यांडिसेंटेरिका, Wrightea antidysenterica कहते हैं यह कुड़ावृक्षके बीज हैं।

गुण। इन्द्रयव त्रिदोषनाशक, संग्राही, कटु, तिक्त, शीतल, अग्निदीपक और दाहनाशक है। **प्रयोग** इन्द्रजौके सेवन करनेसे रक्तपित्त, प्रवाहिका, ज्वर, अतिसार, कृमि, विसर्प, कुष्ठ, खूनीबवासीर, गुदाके कीले, वादी, रुधिरके दोष, कफ और शूलरोग, एः हों। मात्रा ५ रत्तीसे लेकर ३० रत्तीपर्यंत है। इसके **दर्पनाशक** पीपाके बीज हैं। और **प्रतिनिधि** नारियलकी गिरी है। *

* **आयुर्वेदमें**—इन्द्रजौके वृक्षकी छाल और बीज बहुत प्राचीन कालसे जाने गयेहैं। पेटकी पीड़ा और दस्तोंमें छाल मुख्य इलाज गिना गयाहै। बीज ग्राही, ज्वरनाशक और पेटके जीव निकालनेवाले लिखेहैं।

अरबी और फारसी ग्रंथोंमें—इन्द्रजौके बीजको ग्राही और पेटकी पीड़ानाशक मानेहैं, और छातीके पुराने दर्दमें उसीप्रकार मरोड़ा और पेशाब अधिक आता होय तो उसमें देनेकी प्रशंसा करते हैं। यह पेशाबकी थैलीमेंसे पथरीको पिगलायके निकालनेवाला है; पाचन शक्ति बढानेवाला और कामोत्तेजक मानतेहैं।

डा० डीमक—कहताहै कि इन्द्रजौ, सहत और केशर के साथ मिलाय स्त्रियोंकी जननेन्द्रियमें रक्खे तो गर्भधारण करनेकी ताकत बढ़े, तथा सबके समुझ [illegible]

मदन (मैनफल).

मदनश्छर्दनः पिंडीराठः पिंडीतकस्तथा ।
करहाटोमरुवकःशल्यकोविषपुष्पकः ॥ ५१ ॥
मदनोमधुरस्तिक्तोवीर्योष्णोलेखनोलघुः ।
वांतिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणांतकः ॥
रूक्षःकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः ।

अर्थ-सं. मदन, छर्दन, पिंडी, राठ, पिंडीतक करहाट, मरुवक, शल्यक और विषपुष्पक । **हिं.** मैनफल, **बं.** मयनाफल, **उड़ियामें** पातर, **नेपालमें** मेदल, **ता.** मड्डकरुय, **तै.** वसंत कडिमिचेट्टू, **राजपूतानेमें** मेढल, **म.** गेलफल, **का.** वोनगेर रणय मेणाहल, **गु.** मींढल, **फा.** अजौजुलूक, **ला.** रेन्डीआ ड्यूमेटोरम् Randia dumetorum कहते हैं । मैनफलका वृक्ष मध्यम कदका होता है । **पत्ते** लंबे और गोल खरदरे आमने साम्हने होते हैं, इसका फूल पांच पंखरीका, रंग सफेद और पिलाई लिये होता है । **फल** इसके अखरोट के समान होतेहैं । चित्र नंबर पांचका देखो ।

गुण । मैनफल मधुर, कड़वा, उष्णवीर्य, लेखन, लघु, वमनकारक, प्रतिश्याय (मुख नाक आदिसे जलके गिरनेका) नाशक । रूक्ष, कफ, आनाह, सूजन, गोला, कुष्ठ, व्रण और विद्रधिरोग इनको नाश करे । **मात्रा** २ माशेकी है ।

बड़ामैनफल.

वाराहोन्यःकृष्णवर्णोमहापिंडीतकोमहान् ।
स्निग्धपिंडीतकश्चान्यः स्थूलवृत्तफलंतथा ॥
मदनौकथितौश्रेष्ठौकटुतिक्तरसान्वितौ ।
छर्दनौकफहृद्रोगपक्कामाशयशोधनौ ॥

अर्थ-एक वाराहसंज्ञक काले रंगका बड़ा मैनफल होता है । उसको महापिंडीतक कहते हैं, और एक स्निग्धपिंडीतक है, यह बड़े भारी वृक्षका फल है । **गुण ।** ए दोनों मैनफल कटु, तिक्त, रसवाले हैं । वमन करानेवाले, कफ तथा हृदयरोग नाशक और पक्काशय एवं आमाशयको शोधन करते हैं ।

रास्ना.

रास्नायुक्तरसारस्यासुवहारस्नारसा ।
एलापर्णीचसुरसासुगंधाश्रेयसीतथा ॥ ५३ ॥
रास्नामपाचनीतिक्तागुरूष्णाकफवातजित् ।
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ।
कासज्वरविषाशीतिवातिकामयहिध्महृत् ॥

अर्थ-सं. रास्ना, युक्तरसा, रस्या, सुवहा, रस्ना

मुसलमानी हकीम—बहुत दिनसे अंतर देकर आनेवाले ज्वर में तथा रक्तस्रावमें इसकी छाल बहुत बर्तते हैं । तथा बीजोंको सेक गरम जलमें भिगोयदे, फिर इस पानी के पीनेसे आंतडोंके दरद में फायदा होताहै इस प्रकार मानते हैं ।

डा० कस्ताग्री—लिखता है कि, १५ महिनेकी अवस्थामें एक बच्चेको मरोड़के वास्ते जब अन्य यत्न न चलसके तो इस कुड़ाके वृक्षकी छाल ५ रुपयेभर को २॥ सेर पानीमें औटाया जब १। सेर जल बाकी रहा तब उतारके इसमेंसे १। रुपये भरकी मात्रासे दिनमें ४ वक्त प्रत्येक समय उसमें १ बूंद अफीमके अर्ककी डालकर देनेसे आराम हुआथा ।

डा० उदयचंद्रदत्त—कहता है कि, मरोड़ेकी बिमारीमें छालके बदले जड़की छालका सत्व काढ़के ३ ग्रेनकी मात्रासे आधाग्रेन अफीमके साथ मिलायके देनेसे बहुत फायदा होताहै ।

तालीफ शरीफका कर्त्ता—लिखताहै कि, बीजोंको गरम जलमें भिगोय उस पानीके देनेसे दर्द करनेवाला अर्श कि जिसमेंसे रुधिर गिरता होय वह दूर होताहै ।

सुश्रुतसंहितामें—बीज और छालको मूलव्याधि (बवासीर) नाशक, कंडुनाशक, स्तन्यशोधक, और आमातिसारनाशक वर्णन कराहै ।

चरकसंहितामें - छाल और बीजको मूलव्याधिहर, कंडुनाशक, कृमिनाशक, वातविकारनाशक, स्तन्यशोधक और अर्शनिषूदन कहाहै ।

रसा, एलापर्णी, सुरसा, सुगंधा और श्रेयसी, **हिं.** रासना, रायसन, **बं.** रास्ना, **म.** नावलीचा मूल्य. **तै.** रासनापुडका, **फा.** जंजबीलशामी, **इं.** टीलोफोरा आस्थमेटीका। यह एकप्रकार बांदाके समान होती है, और केदारनाथ में प्रसिद्ध है। औषधमें इसका सर्वांश ग्रहण करा जाता है।

गुण। रास्ना आम (अपक्व अन्नरस) की पाचक, कड़वी, भारी और गरम। यह वादी, कफ, सूजन, श्वास, वातरक्त, वातशूल, उदररोग, खांसी, ज्वर, विषरोग और अस्सीप्रकारकी वातव्याधि दूर करे है। **मात्रा** आधे माशे से लेकर २ माशे पर्यंत है।

रास्नातुत्रिविधाप्रोक्तामूलपत्रतृणैस्तथा।
श्रेयौमूलदलौश्रेष्ठौतृणरास्नाचमध्यमा॥

अर्थ–रास्ना तीन प्रकारकी होती है– १ मूल, २ पत्र, और ३ तृण। तहां **मूल** और **पत्रवाली** दोनों रास्ना उत्तम हैं और **तृणरास्ना** अधम है।

नाकुली (नाई.)

नाकुलीसुरसानागसुगंधागंधनाकुली।
नकुलेष्टाभुजंगाक्षीसर्पांगीविषनाशिनी॥
नाकुलीतुवरातिक्ताकटुःकोष्णाविनाशयेत्।
भोगीलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान्॥

अर्थ–सं. नाकुली, सुरसा, नागसुगंधा, गंधनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, सर्पांगी [वा सूर्यांगी] और विषनाशिनी। **हिं.** नाई, **म.** मुंगुसवेल, **गु.** नोरवेल, सापसंद, **फा.** छोटाचांदा, **क.** विषमुंगरी, **ला.** रोवाल कियासर्वेटीना। औषध में इसका सर्वांश ग्रहण करा जाता है।

गुण। नाकुली कषेली, चरपरी और गरम। यह सांपका विष, लूताविष (मकड़ी आदिका), विच्छू और मूसा इनके विष, एवं विषमज्वर, कृमि तथा व्रण, इनको नष्ट करे। **मात्रा** दो माशे की है।

माचिका (मोइआ.)

माचिकाप्रस्थिकांबष्ठातथाचांबालिकांबिका।
मयूरविदलाकेशीसहस्रावालमूलिका॥५७॥
माचिकाम्लारसेपाकेकषायाशीतलालघुः।
पक्वातीसारपित्तास्रकफकंठामयापहा॥५८॥

अर्थ–सं. माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा, अंबालिका, अंबिका, मयूरविदला, केशी, सहस्रा और बालमूलिका, **हिं.** मोइआ, **बं.** माचिका, **म.** आंबाडा, **का.** पुढेन, **गु.** नहानीपीलुडी।

गुण। मोइआका रस खट्टा, **पाकमें** कषेली, **शीतल वीर्य** और हलकी। पक्वातिसार, रक्तपित्त, कफ और कंठके रोगोंको दूर करे है। इस वृक्षका सर्वांग ग्रहण कराजाता है। **मात्रा** २ माशे की है।

तेजवती (तेजोवल्कल.)

तेजस्विनीतेजवतीतेजोह्वातेजनीतथा।
तेजस्विनीकफश्वासकासस्यामयवातहृत्॥
पाचन्युष्णाकटुस्तिक्तारुचिवह्निप्रदीपनी।

अर्थ–तेजस्विनी, तेजवती, तेजोह्वा और तेजनी, ए **संस्कृत** नाम। **हिं. बं.** और **मरेठी** आदि सब भाषाओं में तेजवल कहते हैं। **ला.** जेन्थोक्सीलमरेहतसा, यह वृक्षकी छाल है। इसके फल कालीमिरच के समान होते हैं। यह सुगंध द्रव्य है। **मात्रा** १ माशे की है।

गुण। तेजवल पाचक, गरम, कटु, तिक्त, रोचक और अग्निदीपक। **तेजवलके** सेवन करने से कफ, श्वास, खांसी, मुखरोग और वादी नष्ट होय।

मालकांगनी.

ज्योतिष्मतीस्यात्कटभीज्योतिष्काकंगुनीतिच
पारावतपदीपण्यालताप्रोक्ताककुंदनी॥
ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित्।
अत्युष्णावामनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा।

अर्थ–ज्योतिष्मती, कटभी, ज्योतिष्का, कंगुनी पारावतपदी, पण्यालता और ककुंदनी ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** मालकांगनी, **बं.** लताफट्की, **म.** मालकांगोणी, **कों.** करडकांगोणी, पिंगवी, **का.** कौंगु एरड्ड, **तै.** वावंजी, **गु.** मालकांकणां, **ला.** सिलास्ट्रस सपॅनिक्युलटा। इसकी वेल होती है। गोल पत्ते कुछ अनीदार और थोड़े कंगूरेदार होते हैं। फूल छोटे, पांच पंखड़ीके और झूमकेदार होते हैं, **फल** भी झूमकेदार **चना** अथवा **मटर** के समान होताहै। इसके भीतर लाल रंगके **छः बीज** होते हैं **चित्र** नंबर ६ का देखो।

गुण। **मालकांगनी**लता कटु, तिक्त, सर (वायु, मलादिकों को निकाले), अत्यंत उष्ण, वमनकारक, तीक्ष्ण, अग्निकारक, बुद्धिस्मृतिदायक, तथा कफवायुनाशक। *

कुष्ठ (कूठ)

कुष्ठरोगाह्वयंवाप्यंपारिभव्यंतथोत्पलम्।
कुष्ठमुष्णंकटुस्वादुशुक्रलंतिक्तकंलघु।
हंतिवातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान्॥६२॥

अर्थ–जितने संस्कृत में कुष्ठरोगके नाम हैं सब कुष्ठ औषधके जानने। तथा वाप्य, पारिभव्य और उत्पल, **हिं**· कूठ–ट, **बं**· कुड, **म**· कोष्ठ **गु**· कठ, **फा**· कोश्रह, **अ**· कुस्तबहरी, **तै**· चंगल कुष्ठ, **इं**· कोसृस्रुट्, **ला**· सौसुरीआलेप्या। इसका सुगंधादि गणमें पाठ है परंतु यह असल नहीं मिलता और सिंधुनद के किनारे होताहै।

गुण। गरम, कटु, स्वादु, शुक्र उत्पन्नकर्त्ता, कड़आ और हलका। **प्रयोग।** वातरक्त, विसर्प, खांसी, कुष्ठ, वादी और कफ इनको नष्ट करे। इसकी जड़ लीनी जाती है। **मात्रा** ६ रत्ती की है।

पुहकरमूल.

उक्तंपुष्करमूलंतुपौष्करंपुष्करंचतत्।
पद्मपत्रंचकाश्मीरंकुष्ठभेदमिमंजगुः॥६३॥
पौष्करंकटुकंतिक्तमुक्तंवातकफज्वरान्।
हंतिशोथारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत्॥

अर्थ–पुष्करमूल, पौष्कर, पुष्कर, पद्मपत्र और काश्मीर यह **संस्कृत** नाम हैं। **हिं**· गांठदार पुहकरमूल, **म**· पुष्करमूल, **गु**· पोकरमूल।

यह कूठकाही भेद है। **गुण।** यह कटु और तिक्त है। **प्रयोग।** वातकफज्वर, सूजन, अरुचि, श्वासरोग, इनको नष्ट करे। विशेष करके पसवाड़े के दर्दको अत्यंत उपकारी है। **मात्रा** ६ छः रत्तीकी है। गांठवाला **पुहकरमूल** उत्तम होताहै। **कूठ**के अभावमें इसको और इसके अभावमें **कूठ**को डाले। †

---

* **युनानी हकीम**—मालकांगनीके बीज गरम, निद्रानाशक और कामोद्दीपक गिनते हैं। और वे संधिवात, लकवा, कुष्ठ और दूसरे शरदीसे प्रकट रोगोंमें वर्त्तनेमें उसीप्रकार बाहिर लगाने में वर्त्तते हैं। ऊपर लिखे रोगोंमें बीज प्रथम रोगके प्रारंभमें १ से प्रतिदिन एक, २ वृद्धि–क्रममें ५० तक बढ़ाकर केवल अकेले अथवा अन्य गरम औषधके साथ मिलायके खाने की प्रशंसा करते हैं।

सुश्रुत संहितामें–इसको व्रणशोधन और कुष्ठप्रशमन कहा है।

चरक संहितामें–इसको शिरोविरेचनकर्त्ता कहा है। इसके पत्तोंके रससे जीभका जड़त्व दूर होय। और उनसे पेशाव अधिक आवे तथा जलंधरकी व्याधिमें देनेसे सूजन न्यून होती है। उसीप्रकार जुलाब होय। पत्तोंका रस देनेसे स्त्रियोंका नष्ट हुआ ऋतुकाल फिर जारी होय।

† **चक्रदत्त और शार्ङ्गधरमें**–इस जड़को सुगंधदार और जागृतकर्त्ता कहा है। और उसको खांसी, श्वास, ज्वर, बदहज़मी और त्वचारोगमें देनेकी प्रशंसा करे हैं।

थिओफ्रे कसरुस नामक पुस्तकमें–लिखता है कि, मीलिप्स शहरके सूर्यमंदिर में [illegible] सन् के २४३ वर्ष पहिले सालमें सिरिआके राजा सेलूकस और उसका भाई एन्टीओकस इन दोनोंने पुहकरमूलका होम कराया था।

डायोस कोराइडिस–लिखताहै कि, अरबसे आनेवाली वस्तुओं में पुहकरमूल सबसे उत्तम सौगात प्रशंसाके योग्य है। यह सफेद रंगकी और हलकी होती है। और इसकी मीठी खुशबूदार वास आती है।

तोफेतुल् मिजामीनमें–लिखाहै कि, यह जड़ हिंदुस्तानके किनारे से आती है। और यह जिस वृक्षमें से उत्पन्न होयहै वह थड़के विना और पीले पत्तोंका होताहै। इसकी ३ जाति हैं ए तीनों गरम और खुश्क, पेशाव अधिक लाती हैं, पित्तको निकाल डाले, कलेजेके दर्दको नष्ट करे, पेटके विगाड़को दूर करे, जंगम विष (सर्पादि) को उतारनेवाला, कामोद्दीपन करता, पेटके कीड़े निकालनेवाला, और पेशाव की थैलीमें प्रकट होनेवाली पथरीको पिलगायके निकाल देवे है।

चोक.

कटुपर्णीहैमवतीहेमक्षीरीहिमावती।
हेमाह्वापीतदुग्धाचतन्मूलंचोकमुच्यते ॥६५॥
हेमाह्वारेचनीतिक्ताभेदिन्युत्क्लेशकारिणी।
कृमिकंडूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥६६॥

अर्थ—कटुपर्णी, हैमवती, हेमक्षीरा, हिमावती, हेमाह्वा और पीतदुग्धा ए **संस्कृत** नाम हैं। इस वृक्षकी जड़को **चोक** कहतेहैं। **हिं.** चोक, (सत्यानासी, कटेरी), पिसोला, **बं.** चोक, **म.** पिवळा धोत्रा, **ता.** ब्रह्मदंडूविरई, **कौं.** पीतकांटेधोत्रा, **दे.** कडसराचोक, **का.** चिकिणिकेयभेद, **गु.** दारुडी, **इं.** मेक्सिकनपॉपी, **ला.** आरगेमोनी मेक्सीकाना। **स्वरूप**। यह क्षुपजातिका वृक्ष जंगलमें बहुत होताहै। पत्ते लम्बे और कोनेवाले, उन कोनोंमें और पत्तोंके नीचे कांटे होते हैं और उन पत्तोंके बीचमें सफेद सफेद नस होतीहैं। **फूल** पीले रङ्गके पृथक् पांच पांखडीका होताहै। **फलका** डोडा पांच हिस्सेवाला और कांटेयुक्त होताहै। इसके भीतरसे दारूके समान काले काले गोल चमकदार बीज निकलते हैं। इनमेंसे तेल निकलता है। **चित्र** नंबर ७ का देखो।

गुण। रेचक कड़वा और भेदक। इसका सेवन उत्क्लेश (वमन होनेकीसी इच्छा) को दूर करे, कृमि, खुजली, विषजन्यरोग, अनाह, कफ, रक्तपित्त और कुष्ठरोगको नष्ट करेहै। **मात्रा** १ माशे, इसके बीज और तेल प्रयोगमें लेते हैं।

मखज़न उल् अदवियामें—लिखाहै कि, यह जड़, कामोत्तेजक, कुव्वत देनेवाली, दुष्ट हवासे उत्पन्न होनेवाली, बिमारियोंमें अत्यन्त उपयोगी है। दमके रोगमें तथा सुद्दा खोलनेके काममें आतीहै।

डा. इरविंग—लिखताहै कि राजपूतानेमें अफीम उत्पन्न होने लगी उसके पहिले इसको तमाकूकी तरह पीतेथे और उसका मुख्य उपयोग खुशबू और मालकी गठरीमें जीव न लगने पावें इसके दूर करनेको उसका वर्त्ताव करतेथे।

मि. बेडन पोवेल्—कहताहै कि, पंजाबमें इसका चूर्ण करके पुराने नासूरपर और जिस घावमें जीव पड़गये हों उसमें तथा दांतोंके दरदके वास्ते वर्त्ततेहैं। इसको सुखाय चूर्णकर सखत छिलीहुई चमड़ी के ऊपर जल्दी सुखानेको मल्हमके समान काम आताहै। और सुखाय चूर्णकर बाल धोनेमेंभी लीनी जातीहै। कौलेरा (हैजा) की बिमारीमें १ ड्राम इलायची और ३ ड्राम कूठ दोनोंको ४ औंस गरम जलमें भिगोयदे यह पानी १ औंस मात्रासे प्रत्येक आधे २ घण्टेमें देवे तो अत्यंत उत्तम असर करताहै।

डा. पोर्टर स्मिथ—कहताहै कि, पुहकरमूल खुशबूदार जल्दी जगानेवाला पदार्थ है और शूल तथा दस्तका सिलसिला आदि बिमारियोंमें उपयोगी है। कश्मीरी कपडे (सालधुस्सों) में कीड़े न लगनेको कपड़ेके बीच उसका उपयोग करतेहैं। सूखीहुई-पुहकरमूलकी जड़ खुशबूदार हवा उत्पन्न करनेकेवास्ते जलातेहैं। चीन देशमें इस जड़के जलानेका अत्यंत शौक है, इसका खुशबूदार धूंआ चीनाईलोग अपने त्रिबुद्धदेव के पास जलाते हैं।

सर जॉर्ज बर्डवुड्—कहता है कि, इससे सफेद होनेवाले बाल काले होजाते हैं। और इसमें पेटकी पीडा समान हवाका असर रोकना, ग्राही और नींद लानेका गुण है।

चरकसंहितामें—इसको शुक्रशोधन, लेखनीय (धातुओं को पतली करता), शुक्रजनक (वीर्य उत्पन्न करनेवाली) और हिचकी की नष्टकर्त्ता कहा है।

सुश्रुतसंहितामें—इसको योनिदोष हरणकर्ता और स्तन्यशोधन, वर्णप्रसादन (त्वचाका रंग सुधारनेवाला) तथा खुजली और दूसरे विकार दूर करनेवाला कहा है।

चक्रदत्तमें—लिखाहै कि, हरड, अजमान, हींग और सोंठके साथ मिलायके खांसी, श्वास, ज्वर, जठराग्नि की मंदतामें देय तो ए सब रोग नष्ट होंय।

रेवतचीनी.

पीतमूलीचपीताचगंधनीमृदुरेचनी ।
बल्याजीर्णहरीख्यातासातिसारविबंधनुत् ॥
आमवातमतीसारंमंदाग्निंचाप्यरोचकम् ।
शीतपित्तंमलस्तंभंदुष्टव्रणविरोहिणी ॥

अर्थ–पीतमूली, पीता और गंधनी, ए **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** रेवतचीनी, **बं.** रेओचिनि, **म.** रेवाचिनी, **अ.** रावन, **फा.** रेवन, **ला.** रेहेरेदिकस, **इं.** रुबर्ब कहते हैं । रेवतचीनी नरम जुलाब करानेवाली और बलकर्त्ता । अजीर्ण, अतिसार, मलके बंध, आमवात, अतिसार, मंदाग्नि, अरुचि, शीतपित्त, मलका स्तंभ इनको दूर करे । और घावके ऊपर इसका चूर्ण बुरकने से उसको भरलाती है । यदि दस्त कराने होंय तो वैद्य इसके द्वारा करावे. [बहुतसे धूर्त्त जो मंत्रशास्त्री (स्याने) बनते हैं और लड़कोंकी झाड़ा फूंकी किया करते हैं वे इसकी गोली बनायके अपने पास रखते हैं और पेटकी बिमारी में प्रायः इसीकी गोली लड़कों को देते हैं यह हमने आंखों देखी है ।] *

कर्कटशृंगी (काकरासिंगी.)

शृंगीकर्कटशृंगीचस्यात्कुलीरविषाणिका ।
अजशृंगीचरक्ताचकर्कटाख्याचकीर्तिता ॥
शृंगीकषायातिक्तोष्णाकफवातक्षयज्वरान् ।
श्वासोर्ध्ववाततृट्कासहिक्कारुचिवमीन्हरेत् ॥

अर्थ–शृंगी, कर्कटशृंगी, कुलीरविषाणिका, अजशृंगी और रक्ता, तथा जो जो संस्कृतमें केंकडे के नाम हैं सब इसके जानने । **हिं. म.** कांकडासिंगी, **कों.** जंगली हरड्याचें फूल, **बं.** काकडाशृंगी, **गु.** काकडाशींग, **ला.** Rhus-succeedeneum न्हससक्सीडेनियम् । यह एक वृक्षकी डालीनके ऊपर जीवोंके रहने के वास्ते ऊंचे २ टीलेसे होते हैं । और सींगके छिलके के माफिक **फल** होता है । बहुत से पसारी और अत्तार सड़ी हुई हरड़के छिलके को काकडासिंगीके पलटे में बेचते हैं ।

गुण । यह कषैली, कड़वी और गरम है । **प्रयोग** । कफ, वायु, क्षयरोग, ज्वर, श्वास, ऊर्ध्ववात, तृषा, खांसी, हिचकी, अरुचि और वमन होना इनको दूर करे । औषधके प्रयोग में इसके फलकी १ माशेकी **मात्रा** है । †

कायफल.

कट्फलःसोमवल्कश्चकैटर्यःकुंभिकाऽपिच ।
श्रीपर्णिकाकुमुदिकाभद्राभद्रवतीतिच ॥६९॥
कट्फलस्तुवरास्तिक्तःकटुर्वातकफज्वरान् ।
हंतिश्वासप्रमेहार्शःकासकंठामयारुचीः ॥७०॥

अर्थ–कट्फल, सोमवल्क, कैटर्य, कुंभिका, श्रीपर्णिका, कुमुदिका, भद्रा और भद्रवती, ए **संस्कृत** नाम है । **हिं.** कायफल (र) कहते हैं । **बं.** कटफल, कायफ़ाल, **क.** किरुसिवनी, **म.** कुंभ्याची साल, **फा.**

---

* **यूनानी हकीम** – कहते हैं कि, पत्तों और इसकी डंडीका रस निकालके नेत्रोंमें बूंद टपकावे उसी प्रकार पेटमें मरोडा होता होय तो इसके तेलकी ३० बूंद बतासे में डालके देय तो आराम होय एवं रोगी तत्काल निद्रा लेनेलगे और दस्त खुलासा आता है । मस्तक पीड़ा होयतो इस तेलके चुपड़ने से मस्तक का दुःख दूर होय इस चुपका रस, जो घाव न भरता होय उसपर लगाने से घाव जल्दी भर आवे । इसकी ताजी जड़को कुचलकर बिच्छूके डंकपर लगाने से बिच्छूका जहर उतर जाय ।

† **प्राचीनआयुर्वेदके ग्रंथोंमें** – काकडासिंगीको पौष्टिक, कफको निकालनेवाली, तथा खांसी, श्वास, ज्वर, अरुचि और पेटके दर्दोंको नष्ट करता लिखी है ।

मुसलमान ग्रंथकार – इसको गरम, खुश्क और मुख्य करके बच्चों के छातीके पुराने दर्दोंमें उसी प्रकार अजीर्णकी उलटी और दस्तोंकी बिमारी में उपयोगी है । इसीवास्ते ज्वरकी पीड़ामें इसके बर्ताव करने की प्रशंसा करते हैं ।

चरकसंहितामें—इसे कासहर तथा हिचकी बंदकर्त्ता कही है ।

सुश्रुतसंहितामें – इसे जीवनप्रद, पौष्टिक, बृंहण और पित्तशोणितके चक्रनाशक मानी हैं ।

दारसिशयाना, **ला.** मीरीकासापीडा Myrica sapida. **उत्पत्ति** । यह हिमालयकी तरफ एक प्रकारका बड़ा दरख्त होताहै । उसकी छाल कायफलके नामसे विख्यात है और वर्त्तावमें आती हैं ।

गुण । कषेला, कड़वा और चरपरा । **प्रयोग** । इसके द्वारा वातकफज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कंठरोग और अरुचि ए सब नष्ट होंय । **मात्रा** २ माशे ।

भारंगी.

भार्ङ्गीभृगुभवापद्माफंजीब्राह्मणयष्टिका ।
ब्राह्मण्यंगारवल्लीचखरशाकाचहंडिका ॥
भार्ङ्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः
दीपनीतुवरागुल्मरक्तनुन्नाशयेद्ध्रुवम् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥७२॥

अर्थ–भार्ङ्गी, भृगुभवा, पद्मा, फंजी, ब्राह्मणयष्टिका, ब्राह्मणी, अङ्गारवल्ली, खरशाका और हंडिका ए **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** भारंगी, भाडंगी, ब्रह्मनेटी, **बं.** बामुनहाटी, **म.** भारंग, **का.** किरुदेगू, **तै.** भरट भारंगी, **नैपाली** चूया, **ला.** क्लेरोडन्ड्रोन् Clerodendron । यह औषधजातिकी वनस्पति है ।

गुण । रूक्ष, कटु, तिक्त, रोचक, गरम, पाचक, हलकी, अग्निदीपिकारी और कषेली है । **प्रयोग** । इसका सेवन रक्तगुल्म, सूजन, खांसी, कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वायु शांति करे । इसकी जड़ प्रयोगमें लीनी जाती है । **मात्रा** १ माशे की है । कोई २ आचार्य इसका सर्वांग ग्रहण करते हैं ।

पाषाणभेद.

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नोगिरिभिद्भिन्नयाजनी ।
अश्मभेदोहिमस्तिक्तःकषायोबस्तिशोधनः ॥
भेदनोबस्तिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः ।
योनिरोगान्प्रमेहांश्चप्लीहशूलव्रणानिच ॥७४॥

अर्थ–पाषाणभेद, अश्मघ्न, गिरिभित्, भिन्नयाजनी और अश्मभेद, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** पखानभेद, **बं.** पाथरचूर, **म.** पाषाणभेद, **फा.** गोशाद, **अ.** जंतीआना, **क.** आललेगया, **तै.** तेल्ला पुरुपिंडी, **ला.** आयरोशास्युडोकोरस । पखानभेद दो प्रकारका है । एक वनस्पतियों की जड़ होय है उसको पाषाणभेद लकड़ी कहते हैं । दूसरा खनिज होताहै उसको पाषाणभेद पत्थर कहते हैं । (कार्बोनेट ऑफ् आयर्न एन्ड लाइम) अजमान् के पत्तेको भी पाषाणभेदी कहते हैं ।

गुण । **पखानभेद** कड़वा, कषेला, बस्तिशोधक और भेदक (दस्तकर्त्ता) है । **प्रयोग** । यह दोषज बवासीर, गोला, कठिनपथरी, हृद्रोग, योनिरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल और व्रणरोग को नष्ट करे । इसकी जड़ प्रयोगमें लेते हैं । **मात्रा** १ माशे की है ।

धायके फूल.

धातकीधातुपुष्पीचताम्रपुष्पीचकुंजरा ।
सुभिक्षाबहुपुष्पीचवह्निज्वालाचसास्मृता ॥
धातकीकटुकाशीतामदकृत्तुवरालघुः ।
तृष्णातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित् ॥

अर्थ–धातकी, धातुपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुंजरा, सुभिक्षा, बहुपुष्पी और वह्निज्वाला, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** धायके फूल, धावई के फूल, **रा.** धावड्याका फूल, **बं.** धाइफूल, **म.** धायटीफूल, **गु.** धावडीनां फूल, **क.** धायिफूल, **तै.** धातुकी पुऊ, **इं.** ग्रीसलीआ टॉमेन्टोजा Grislea tomentosa कहते हैं । यह क्षुपजातिकी वनस्पति है । पत्ते अनारके समान होते हैं और आमेसामे बराबर ऊगते हैं । फूल गुलाबी तथा लालरंग के होते हैं । छोटे छोटे आधे इंचके लंबे घंटाके आकार के और फल छोटी इलायचीके समान भीतर से दो भाग और बीजवाले होते हैं । **चित्र** नंबर ८ का देखो ।

गुण । **धायके फूल** कटु, शीतल, मादक, कषेले और हलके । **प्रयोग** । तृष्णा, अतिसार, रक्तपित्त, विष, कृमि और विसर्परोग इनको निवारण करे । प्रयोगमें इसके **फूल** लिये जाते हैं । **मात्रा** १ माशेकी है ।

मजीठ.

मंजिष्ठाविकसाजिंगीसमंगाकालमेषिका ।
मंडूकपर्णीभंडीरीभंडीयोजनवल्ल्यपि ॥७७॥
रसायन्यरुणाकालारक्तांगीरक्तयष्टिका ।
भंडीतकीचगंडीरीमंजूषावस्त्ररंजिनी ॥७८॥

मंजिष्ठामधुरातिक्ताकषायास्वरवर्णकृत् ।
गुरुरुष्णाविषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ।
रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्पव्रणमेहनुत् ॥ ७६ ॥

अर्थ–मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, कालमेषिका, मंडूकपर्णी, भंडीरी, भंडी, योजनवल्ली, रसायनी, अरुणा, काला, रक्तांगी, रक्तयष्टिका, भंडीतकी, गंडीरी, मंजूषा और वस्त्ररंजनी, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** मजीठ, **बं.** मंजिष्ठा, **म.** मंजिष्ठ, **ता.** मंजिदी, **फा.** रुनास, **अ.** फुवह तुसिवग. उरुकुस्सुवागीन, **इं.** मेडररुट्, **ला.** रुलीया Rulia। यह लताजाति की औषधी है। बहुत लंबी वेल और पत्ते कुछ लंबे मेड़कके रंगके होते हैं। इसकी उत्पत्ति नेपाल, अफगान और ग्रीकके मुल्कमें होती है। वहां इससे कपड़े रंगते हैं। और यह खेतोंमें बोईजाती है, मजीठकी जड़ लालरंगकी होती है। यही प्रयोग में लीनी जाती है।

गुण। मजीठ मीठी, कड़वी, कषेली, भारी और उष्णवीर्य है। **प्रयोग। मजीठके** सेवन करनेसे स्वर और वर्ण उत्तम होय। एवं विषदोष, कफ, सूजन, योनिरोग, कर्णरोग, रक्तातिसार, कुष्ठ, रुधिरके दोष, वीसर्प, व्रण और प्रमेहरोग, इनको शमन करे। *

मजीठके भेद.

वौलस्त्रियोजनीकौचिभाहिलीचचतुर्विधा ।
मंजिष्ठाचैवसाप्रोक्ताविलोमेचोत्तमोत्तमा ॥

अर्थ–वौल, त्रियोजनी, कौचि और भाहिली ए चारभेद मजीठके हैं। इसमें विलोम गिनने से एक दूसरासे उत्तम जाननी। जैसे भाहिली से कौंची; कौंचीसे त्रियोजनी और त्रियोजनी से उत्तम वौलसंज्ञक मजीठ सर्वोपर है।

कसूम.

स्यात्कुसुंभंवह्निशिखंवस्त्ररंजकमित्यपि ।
कुसुंभंमधुरंरूक्षंवह्निकृद्रेचनंमतम् ॥
विरमूत्रदोषशमनंकटूष्णंगुरुपित्तलम् ।
कृमिहृद्वातलंकृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ॥ ८० ॥

अर्थ–कुसुंभ, वह्निशिख और वस्त्ररंजक, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कसूम, कर्र, **बं.** कुसुमफूल, **म.** करड्याचें फूल, कसूम दो प्रकारका होताहै। एक कसूम, दूसरा वनकसूम। इसका बीज सफेद होता है। उसको **हिं.** कर्र वा करड़ कहते हैं। **फा.** गुल्मास्फर, **अ.** अखरीज हब्बुलअस्फर, **इं.** आफिसिनल् कार्थेमस्, **ला.** कार्थेमसर्टिटोरियस्।

गुण। कसूम मधुर, रूक्ष, अग्नि दीप्तकरता, रेचक, मलमूत्रके दोषोंको नष्ट करता, कटु, उष्ण, भारी, पित्त उत्पन्न करता, कृमिनाशक, वातको बढ़ानेवाला, घोर रक्तपित्तनाशक, तथा कफशांतिकारक। इसके फूलकी **मात्रा** १ माशे की है। †

लाख.

लाक्षापलंकषाऽलक्तोयावोवृक्षामयोजतुः ।
लाक्षावर्ण्याहिमाबल्यास्निग्धाचतुवरालघुः ॥
अनुष्णाकफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत् ।
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा ।
अलक्तकोगुणैस्तद्वद्विशेषाद्व्यंगनाशनः ॥८२॥

अर्थ–लाक्षा, पलंकषा, अलक्त, याव, वृक्षामय.

* **चक्रदत्त** और **शार्ङ्गधरमें**—धायके ग्राहक गुणोंके कारण उसको पीसके शहद के साथ मिलाय शूलके दर्दमें देना लिखते हैं। स्त्रियों के यदि आर्तव अधिक जाता होय तो इस फूलके देनेकी आज्ञा देते हैं। उसके दूसरे २ ग्राही गुणोंके वास्ते बाहरके भागपर पीसकर मालिश करने में आती है।

चरकसंहितामें–धायके फूलोंको पुरीषसंग्रहण, मूत्रविरंजनीय और स्त्रीगर्भवती होय तो गरमी देनेके वास्ते इस फूलको सावित देना कहा है।

सुश्रुतसंहितामें–इसे पक्वातिसारनाशक, संधानीय, व्रण्य और पित्तको निकालनेवाला गिनते हैं।

† **मुसलमानी वैद्य**–कसूमके बीज (कर्ड) का तेल, संधिवात और लकवाकी बिमारी में देते हैं। अर्थात् लगाते हैं।

डा. एन्स्ली—कहताहै कि, सैंकड़ों प्राणी इस तेलको संधिवात और लकवेपर लगाते हैं। तथा दुष्ट नासूरपर भी चुपड़ते हैं। जुल्लावके वास्ते बीजोंको शहद में पीसके देते हैं।

और जतु, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** लाख, लाहीं, **बं.** लाहा, **का.** अरगू, **तै.** लाका **फा.** लाक, **अ.** लुक्, लुकमकसूल, **इं.** सेललाक, **ला.** कोकुस लासिफेरा Coccus laccifera; लाख एक वृक्षका गोंद है। पीपलकी लाख उत्तम होतीहै । **मात्रा** १ माशेकी है । इसकी **दर्पनाशक** मरतंगी है । **प्रतिनिधि** रेवतचीनी है । विशेष गुण देखने होंय तो हमारे **द्रव्यरत्नाकरको** देखो ।

गुण । लाख वर्णोत्पादक, शीतल, बलकारक, स्निग्ध, कषेली, हलकी और अनुष्ण । **प्रयोग ।** कफ, रक्तपित्त, हिचकी, खांसी, ज्वर, घाव, उरःक्षत, वीसर्प, कृमि और कुष्ठरोग इनको नाश करे । **अलक्तकि** जिसको हिन्दी में **महावर** और मरेठी में **आलता** कहते हैं उसके **गुण** लाखके सदृश हैं । अधिकता यह है कि व्यंगरोगको नाश करे है ।

हलदी.

हरिद्राकांचनीपीतानिशाख्यावरवर्णिनी ।
कृमिघ्नाहलदीयोषित्प्रियाहट्टविलासिनी ॥८३॥
हरिद्राकटुकातिक्तारूक्षोष्णाकफपित्तनुत् ।
वर्ण्यात्वग्दोषमेहास्रशोथपांडुव्रणापहा ॥८४॥

अर्थ–हरिद्रा, कांचनी, पीता, वरवर्णिनी, कृमिघ्ना, हलदी, योषित्प्रिया, हट्टविलासिनी और जितने रात्रिके **संस्कृत** नाम हैं सब हलदी के जानने । **हिं.** हलदी, हरदी, **बं.** हरिद्रा, **म.** हलद, **का.** अरसिन, **तै.** पासुपु, **गु.** हलदर, **फा.** अरुकुल सबागीन, जर्देचोब, **इं.** टरमेरीक Termeric, **ला.** करक्युमालोंगा । यह एक प्रकारका कंद है और मसालेमें गिरती है ।

गुण । हलदी कटु, तिक्त, रूक्ष, गरम और वर्णकर्त्री, है । **प्रयोग ।** इसके सेवन करने से कफ,पित्त, त्वचाके दोष, प्रमेह, रक्तदोष, सूजन, पांडुरोग और व्रण ए नष्ट होवें । इसकी **मात्रा** २ माशेकी है । **प्रतिनिधिमें** दारुहलदी लेनी । इसका दर्पनाशक कपूर और **नेत्रवाला** है ।

वनहरिद्रा. वनहरदी.

अरण्यहलदीकंदःकुष्ठवातास्रनाशनः ।

अर्थ–वनहलदीका कंद–जंगली हलदी, म. रान हलद, **गु.** वनहलदर, यह कोढ, और वातरक्तको नाश करेहै । **मात्रा**, २ माशेकी है ।

कपूरहलदी.

दार्वीभिदाम्रगंधाचसुरभीदारुदारुच ।
कर्पूरापद्मपत्रास्यात्सुरीमत्सुरतारका ॥ ८५॥
आम्रगंधिर्हरिद्रायासाशीतावातलामता ।
पित्तहृन्मधुरातिक्तासर्वकंडुविनाशिनी ॥८६॥

अर्थ–दार्वीभिदा, आम्रगंधा, सुरभीदारु, दारु कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरीमत् , सुरतारका, ए **कपूरह**लदीके संस्कृत नाम हैं । **हिं.** कपूरहल्दी, आंबाहलदी, **बं.** आमआदा, **म.** आंबेहलद, **का.** हली अरसीन **तै.** कारुपासुपु, **इं** मेंगोजिंजर, **ला.** कर्क्यूमाएंगस्टिका कहते हैं । **गुण । कपूरहलदी** शीतल, वातकर्ता, पित्तको हरण करे, मीठी, कडवी, और सर्व प्रकारकी खुजलियोंको नाश करे है । इसकी जड लेनी **मात्रा** २ माशेकी है ।

दारुहलदी.

दार्वीदारुहरिद्राचपर्जन्यापर्जनीतिच ।
कटंकटेरीपीताचभवेत्सैवपचंपचा ॥
सैवकालीयकःप्रोक्तस्तथाकालेयकोऽपिच ।
पीतद्रुश्चहरिद्रुश्चपीतदारुकपीतकम् ॥
दार्व्युष्णाकटुकातिक्तानेत्रकर्णास्यरोगनुत् ।
मेहकंडुविसर्पघ्नीत्वग्दोषव्रणनाशिनी ॥
विषघ्नीस्वेदनीपित्तकफशोथविनाशिनी ॥

अर्थ–दार्वी, दारुहरिद्रा, पर्जन्या, पर्जनी, कटेरी, पीता, पचंपचा, कालीयक, कालेय, पीतद्रु हरिद्रु, पीतदारु और कपीतक ए **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** दारुहलदी, **बं.** दारुहरिद्रा, **का.** मरनरिसि **गु.** दारुहलदर, **तै.** पासुपु, **इं.** पीकाक, **ला.** बरबेरिस Berberis कहते हैं ।

गुण । उष्णवीर्य, कटु, तिक्त, विषघ्न, स्वेद उत्पन्न करता और कफपित्तनाशक । **प्रयोग ।** नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग प्रमेह, खुजली, विसर्प, त्वचाके घाव और सूजन इनको दूर करे । **मात्रा** २ माशेकी इसकी लकडी लीनी जाती है ।

रसांजन (रसौत)

दार्वीक्काथसमंक्षीरंद्व्यंपक्त्वायदाघनम् ।
तदारसांजनाख्यंतन्नेत्रयोःपरमंहितम् ॥ ८९ ॥
रसांजनंतार्क्ष्यशैलंरसगर्भंचतार्क्ष्यजम् ।
रसांजनंकटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ।
उष्णंरसायनंतिक्तंछेदनंव्रणदोषहृत् ॥ ९० ॥

अर्थ–दारुहलदी के काढ़ेकी बराबर गौका दूध मिलायके औंटावे जब दोनों औटकर गाढ़ा होजावें तब उतारके सुखाय ले । इसको **रसांजन** (रसौत) और रसवत कहते हैं । **रसौत** नेत्रोंको अत्यंत हितकारी है । इसके **संस्कृत** नाम तार्क्ष्यशैल, रसगर्भ और तार्क्ष्यज है । **हिं.** रसौत, **म.** रसौत, **ला.** रसांजन, **तै.** रसांजनमु, **अ.** हुजुज, **गु.** रसवन्ती, **इं.** इक्सट्रेक् मविरबिरस ।

गुण । **रसौत** कटु, उष्ण, कड़वी और रसायन है । यह गाढ़ेहुए कफ आदिको दूर करे । एवं विष, नेत्ररोग और घावको दूर करे । **मात्रा** १ माशे की है ।

बाकुची (बावची.)

अवल्गुजोबाकुचीस्यात्सोमराजीसुपर्णिका ।
शशिलेखाकृष्णफलासोमापूतिफलीतिच ॥
सोमवल्लीकालमेषीकुष्ठघ्नीचप्रकीर्त्तिता ।
बाकुचीमधुरातिक्ताकटुपाकारसायनी ॥
विष्टंभहृद्धिमारुच्यासराश्लेष्मास्रपित्तनुत् ।
रूक्षाहृद्याश्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत् ॥
तत्फलंपित्तलंकुष्ठकफानिलहरंकटु ।
केश्यंत्वच्यंवमिश्वासकासशोथामपांडुनुत् ॥

अर्थ–अवल्गुज, बाकुची, सोमराजी, सुपर्णिका, शशिलेखा, कृष्णफला, सोमा, पूतिफली, सोमवल्ली, कालमेषी और कुष्ठघ्नी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** बावची, **बं.** सोमराज, **म.** बावचा, **क.** बाउचिगे, **तै.** तिप्पतीगे, **ता.** वोगिविरलू, **इं.** एस्क्यूलंटलफाकुरी, **ला.** सोरालीआ कोरीलीफोलिआ Corylifolia कहते हैं । यह तुपजातिकी औषधी है, इसके पत्ते छोटे २ अरनीके समान कटे हुए गोल होते हैं । फूलका गुच्छा बालके माफिक होताहै । इन्हीं बालोंमें बावचीके दाने काले और चपटे प्रकट होते हैं । चित्र नंबर ६ देखो ।

गुण । यह मधुर, तिक्त, पाककेसमय कटु, रसायन, विष्टंभनाशक, शीतल, रोचक, सारक, कफनाशक, रक्तपित्तनाशक, रूक्ष और हृद्य । **प्रयोग** । **बाकुची** श्वास, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर और कृमिरोग इनको नष्ट करे । **बावचीका फल** पित्तकर्त्ता, बालोंको हितकारी, त्वचाको उत्तम करता और कटु । यह कुष्ठ, कफ, वादी, वमन, श्वास, खासी, सूजन और पांडु इनको नष्ट करे है । **प्रयोगमें** इसके बीज लिये जाते हैं । **मात्रा** १ माशे की है । *

* **आयुर्वेदग्रंथोंमें**–बावची के बीज गरम माने हैं, बहुतसे वैद्य इनको सरद और खुलासा दस्त लानेवाला, जागृत करता, तथा सौहतवको बढ़ावेहै । कुष्ठ तथा रुधिरके विकारसे होनेवाले त्वचाके रोगमें इसका वर्तना लिखते हैं । तथा पित्तविकार और पेटके कीड़े काढ़नेमें भी इसका उपयोग करना लिखते हैं ।

डा. एनस्ली–कहता है कि, यह बीज पेटमें मरोड़ा होता होय तो और कोढ़में एवं और २ जबरदस्त त्वचाके रोगोंमें वर्तनेसे बहुत उत्तम असर होताहै ।

डा. भाऊदाजीने—इस बीजका कोढ़के रोगोंमें अत्यंत उपयोग कियाहै और इसीसे उसको फते मिलीहै ।

कलकत्तेका डा. कन्हैयाललदेव तथा **मुंबईका डा. लिस्बो**–इस बीजसे निकाले हुए तेलको सादा मल्हम के साथ मिलायके कोढ़के रोगमें उपयोग करके कहताहै कि, "थोड़े दिन कोढ़के दागोंपर लगानेसे उनका रंग सफेद मिटकर लाल पड़गया । किसी २ को थोड़ा २ दरद मालूम होताहै । किसी २ समय इस दागमें छोटी २ फुंसी होजाती हैं । यदि उनको किसी प्रकारकी ईजा न पहुंचे तो थोड़ेही दिनमें सूख जावे और बीचमें काला दाग रहताहै । दागके आसपाससे वह बढ़ने लगताहै और धीरे २ कोढ़का संपूर्ण दाग निकल जाताहै । और ऐसाभी देखा गया है कि, इस तेलके लगानेसे कोढ़के नये दाग शरीरमें होनेवाले रुक गयेहैं ।"

पमाड-र.

चक्रमर्दः प्रपुन्नाटो दद्रुघ्नो मेषलोचनः।
पद्माटः स्यादेडगजश्चक्री पुन्नाट इत्यपि॥
चक्रमर्दो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः।
हृद्यो हिमः कफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन्हरेत्॥
हंत्युष्णं तत्फलं कुष्ठकंडुदद्रुविषानिलान्।
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनं कटुकं स्मृतम्॥९७॥

अर्थ–चक्रमर्द, प्रपुन्नाट, दद्रुघ्न, मेषलोचन, पद्माट, एडगज, चक्री और पुन्नाट, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** पमार–ड, चकवड, हरमल, **बं.** चाकुन्दा, **म.** टांकला, **का.** चगचे, **दे.** तरवटा, **गु.** कुवाडीओ, **तै.** तांट्यमु, **फा.** संजिसबोया, **ला.** कश्या आलेटा Cassa कहतेहैं। यह क्षुपजातिकी वनस्पति है, इसके फूल पीले होतेहैं और फली लगती हैं, उनमें काले रंगके बीज निकलते हैं।

गुण। यह लघु, स्वादु, रूक्ष, पित्तवातनाशक, हृद्य, शीतल। **प्रयोग**। कफ, श्वास, कुष्ठ, दाद, कृमिरोग इनको नष्ट करे। **पमाडका फल** उष्ण और कटु, तथा कोढ, खुजली दाद, विषरोग, वादी, गोला, खांसी, कृमि और श्वास इन सबको नष्ट करे।

अतीस.

विषा त्वतिविषा विश्वा शृंगी प्रतिविषारुणा।
शुक्लकंदा चोपविषा भंगुरा घुणवल्लभा॥९८॥
विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत्।
जीर्णज्वरातिसारामविषकासवमिकृमीन्॥

अर्थ–विषा, अतिविषा, विश्वा, शृंगी, प्रतिविषा, अरुणा, शुक्लकंदा, उपविषा, भंगुरा और घुणवल्लभा, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** अतीस, **बं.** आतइच, **म.** अतिविष, **गु.** अतिवखनी कली. **क.** अतीविषा, **तै.** अतिवासा, **ला.** एकोनाईटम् हैटरोफाइलम् Aconitum heterophyllum कहते हैं। अतीस यह क्षुपजातिकी औषध है। यह करेलेके शाकके समान होताहै। इसके नीचे कंद होताहै। वह तीन प्रकारका है।

गुण। **अतीस** गरम, कटु, तिक्त, पाचनी और दीपन करता है। **प्रयोग**। जीर्णज्वर, अतिसार, आमवात, विष, खांसी, वमन, और कृमिरोग को दूर करे। इसका चूर्ण ज्वरकी पारी बंद करने में कुनेन के समान है, ऐसा किसी आचार्य का मत है। **मात्रा** ५ रत्तीसे लेकर ३॥ माशे तक है।

अतिस के भेद.

त्रिविधातिविषा ज्ञेया शुक्ला कृष्णा तथारुणा।
रसवीर्यविपाकेषु निर्विशेषगुणा च सा॥

अर्थ–अतीस तीन प्रकारकी होतीहै–सफेद, काली और लाल। तीनों रसवीर्य और विपाक में समानहीं हैं। परंतु सफेद जातिकी उत्तम होती है।

लोध–पठानीलोध.

लोध्रस्तिरिटकश्चैव शाबरो गालवस्तथा।
द्वितीयः पट्टिकालोध्रः क्रमुकः स्थूलवल्कलः॥
जीर्णपत्रो बृहत्पत्रः पट्टी लाक्षाप्रसादनः।
लोध्रो ग्राही लघुः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत्।
कषायो रक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहृत्॥१[illegible]

अर्थ–लोध्र, तिरिटक, शाबर, और गालव, ए लोधके **संस्कृत** नाम। दूसरी जो लोध होती है उसको **पट्टिका लोध्र** कहते हैं। उसके नाम पट्टि कालोध्र, क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र पट्टी और लाक्षाप्रसादन। **हिं.** लोध और पठानी लोध कहते हैं। **म.** लोध्र **गु.** लोदर, पटियालोदर, **फा.** [illegible] **ला.** सिम्लोकोस रासीमोसा। लोधवृक्षके जड़की छाल प्रयोगमें लीनी जाती हैं।

गुण। **लोध्र** ग्राही, हलकी, शीतल, नेत्रोंको हित कफपित्तनाशक और कषाय। **प्रयोग**। रक्तपित्त, ज्वर अतिसार और शोथरोग, इनको दूर करे। विशेष करके इसमें विषनाशक गुण है। **मात्रा** ५ रत्तीसे लेकर ५ माशेतक। *

* **संस्कृतके ग्रंथोंमें**–लोधको शीतल और ग्राही मानते हैं और आंतड़े, आंख तथा नासूरके घाव उपयोगी गिनते हैं। मसूढ़े नरम होगये होंय अथवा उनमें से रुधिर निकलता होय तो छालका क्वाथकर कुल्ले करने वर्तते हैं।

लसुन (ल्हसन)

लशुनस्तुरसोनःस्यादुग्रगंधामहौषधम् ।
अरिष्टोम्लेच्छकंदश्चयवनेष्टोरसोनकः ॥२॥
यदामृतंवैनतेयोजहारसुरसत्तमात् ॥
तदाततोऽपतद्बिंदुःसरसोनोऽभवद्भुवि ॥ ३ ॥
पंचभिश्चरसैर्युक्तोरसेनाम्लेनवर्जितः ॥
तस्माद्रसोनइत्युक्तोद्रव्याणांगुणवेदिभिः ॥४॥
कटुकश्चापिमूलेषुतिक्तःपत्रेषुसंस्थितः ।
नालेकषायउद्दिष्टोनालाग्रेलवणःस्मृतः ॥
बीजेतुमधुरःप्रोक्तोरसस्तद्गुणवेदिभिः ॥ ५ ॥
रसोनोबृंहणोवृष्यःस्निग्धोष्णःपाचनःसरः ॥
रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरकोमतः ॥ ६ ॥
भग्नसंधानकृत्कंठ्योगुरुःपित्तास्रवृद्धिदः ॥
बलवर्णकरोमेधाहितोनेत्र्योरसायनः ॥ ७ ॥
हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-
विबंधगुल्मारुचिकासशोफान् ॥
दुर्नामकुष्ठानलसादजंतु-
समीरणश्वासकफांश्चहंति ॥ ८ ॥
मद्यंमांसंतथाम्लंचहितंलशुनसेविनाम् ॥
व्यायाममातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम् ॥
रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतान्निरंतरम् ॥ ९ ॥

अर्थ–लशुन, रसोन, उग्रगंधा, महौषध, अरिष्ट, म्लेच्छकंद, यवनेष्ट और रसोनक, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** लहसन, **बं.** रसुन, **म.** लसूण पांढरी, **का.** विलियबेल्लुलि, **तै.** तेलाउल्ली, **मु.** लसन, काजुवा, **गु.** लसण, **अ.** सूम, **फा.** शीर, **इं.** गार्लीक, **ला.** आल्यम सटाइवम् । इसकी क्षुपजाति है ।

उत्पत्ति । जिस समय गरुड़ने इंद्रसे अमृत हरण करा, उस समय अमृत की बूंद गिरी उससे इस पृथ्वीमें लहसन प्रगट हुई । छः रस हैं उनमें से **पांचरस** इसमें विद्यमान हैं । एक **खट्टारस** नहीं है । इसीसे इसको **रसोन** (एकेन रसेन ऊनः) कहते हैं । इसकी **जड़में** चरपरारस, **पत्तोंमें** कड़वारस, **नालमें** कषेला, नालके **अग्रभागमें** लवणरस और **बीजोंमें** मधुर रस हैं ।

गुण । लहसन पुष्टिकारक, शुक्रजनक, स्निग्धोष्ण, पाचन, सर (कोष्ठस्थ वायुमलादिकका निकालनेवाला है) । **रसमें** कड़आ, तीक्ष्ण, **पाकमें** मधुर, टूटेहुए स्थानको जोड़नेवाला, कंठको शुद्ध करता, बल वर्ण का उत्कर्ष करता, स्मरणशक्तिवर्द्धक, तथा नेत्रोंको हितकारी और रसायन । **प्रयोग** । लहसन के सेवन करने से हृदयरोग, अजीर्ण, ज्वर, कूंखका दर्द, विबंध (मलोंका बद्ध होकर रहना) गुल्म, अरुचि, खांसी, सूजन, बवासीर, कोढ़, मंदाग्नि, कृमिरोग, बादी, श्वास और कफ, इनको नष्ट

चक्रदत्तमें—मसूढ़ोंकी पीड़ा नष्ट करनेको लोध, रसोत और नागरमोथा को मिलाकर वर्तनेकी प्रशंसा कीगई है ।

अमृतसागरमें—लोध, मुलहटी, फुलाई फिटकरी और रसोत समान भाग ले पानीमें घिसके नेत्रोंपर लेप करे तो दूखते नेत्र अच्छेहों ।

डा. शेकसवरों–कहताहै कि, कलकत्तेमें इस वृक्षकी छाल रंगरेज लोग लालरंग रंगनेमें अधिक वर्ताव करते हैं ।

मुंबईके इलाक़ेमें–लोध अनेकजातिके लेप बनाने में वर्त्तते हैं और इससे भराहुआ रुधिर और गांठ पिगल जाती है ऐसा मानते हैं ।

डा. चार्लस और **कन्हैयालालदेव**–स्त्रियोंकी गुह्येन्द्रिय से निकलतेहुए प्रवाहके लिये इस वृक्षकी छाल २० ग्रेन खांड़के साथ मिलायके देनेकी तारीफ करते हैं ।

चरकसंहितामें – छालको रक्तशुद्धिकर और स्तंभक मानते हैं ।

सुश्रुतसंहितामें – इसे मेदोहर, कफहर, योनिदोषहर, स्तंभक, व्रणशोधक, पक्वातिसारनाशक, रक्तपित्तहर और रक्तप्रदरनाशक वर्णन कराहै ।

करे । प्रतिनिधि सफद प्याज है । और इसके दर्पका नाशक मांस है ।

पथ्यापथ्य । लहसन खानेवाला प्राणी मद्य, मांस, खटाईको नित्य सेवन करे, यह हितकारी हैं । दंड, कसरत, धूममें डोलना, क्रोध करना, अत्यंत जल पीना, दूध और गुड़ ए लहसन सेवन करनेवालेको अपथ्य हैं । ए त्याग देने चाहिये । *

गृंजन.

गृंजनंशिखिमूलंचयवनेष्टंचवर्तुलम् ।
ग्रन्थिमूलंशिखाकंदंकंदंडिंडीरमोदकम् ॥
गृंजनंकटुउष्णंचकफवातरुजापहम् ।
रुच्यंचदीपनंहृद्यंदुर्गंधंगुल्मनाशनम् ॥

अर्थ–गृंजन, शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्तुल, ग्रंथिमूल, शिखाकंद, कंद, डिंडिरमोदक, ए संस्कृत नाम । **हिं. म.** लालमूला, **का.** सेठीमूल, चंडिकेयमूलंगी, **म.** रानगाजर, **गु.** अडवाऊ गाजर, **फा.** जर्दक, **इं.** कयारटरूट् । यह मूलीकाही भेद है । गृंजनशब्दसे जो गाजर लेतेहैं वह असत्य है ।

गुण । गृंजन चरपरा, गरम, कफवातके रोगनाशक, रुचिकारी, दीपन, हृदयको प्रिय, दुर्गंध और पेटके गोलेको नष्ट करे ।

पिंडमूल.

पिंडमूलंगजीडंचपिंडकंपिंडमूलकम् ।
पिंडमूलंकटूष्णंचगुल्मवातादिदोषनुत् ॥

अर्थ–पिंडमूल, गजीड, पिंडक, पिंडमूलक, ए सं. । **हिं.** गोलमूली. **का.** वट्टमूलंगी ।

गुण । पिंडमूली चरपरी, गरम, गोला और वातादिदोषोंको नष्ट करेहै ।

गाजर.

गार्जरंपिंगमूलंचपीतकंचसुमूलकम् ।
स्वादुमूलंसुपीतंचनारंगंपीतमूलकम् ॥
गार्जरंमधुरंरुच्यंकिंचित्कटुकफापहम् ।
अध्मानकृमिशूलघ्नंदाहपित्ततृषापहम् ॥

अर्थ–गार्जर, पिंगमूल, पीतक, सुमूलक, स्वादुमूलक, सुपीत, नारंग और पीतमूलक, ए संस्कृत नाम । **हिं.** गाजर ।

गुण । मधुर (मीठी), रुचिकारी, किंचिन्मात्र चरपरी, कफनाशक, अफरा, कृमि, शूल, दाह, पित्त और तृषा इनको दूर करे ।

द्वितियस्सोर्न.

रसोनोन्योमहाकंदोगृंजनोदीर्घपत्रकः ।
पृथुपत्रःस्थूलकंदोयवनेष्टोऽवलेहितः ॥

* **हारीतसंहितामें**—लहसनकी उत्पत्तिके बाबत एक कथा चली आतीहै–कि समुद्रमंथनके पश्चात् अमृत निकलते समय देवासुरसंग्राम हुआ उसवक्त गरुड़ अपनी चोंचमें अमृतकलशको पकड़ आकाशमें उड़ताहुआ चला जाताथा कि बेहोशीमें एक बूंद अमृतकी घड़ेसे झलक पृथ्वी में गिरपड़ी जिससे एक छोटासा क्षुप ऊगकर खड़ा होगया । फिर उसीस्थलमें १२ वर्षका घोर अकालपड़ा कि सब वनस्पति और घासफूंस बिलकुल सूखगये तब तो ऋषियोंको अत्यंत त्रास हुआ, उनमें ऋषियोंमें एक वृद्ध ऋषि था उससे चला नहीं जाताथा और उसके सब अंग जीर्ण होगएथे वह हाथमें लकड़ी लेकर चलताथा रास्ते चलनेसे थककर बैठ गया मुखसे दांत गिर गए इसवास्ते भूंखसे पीडितहो पृथ्वीमें जहाँ जहाँ फलके वृक्ष सुनता वहीं वहीं भटकताथा । इस प्रकार भटकते २ पुण्ययोगसे उसने छोटे २ क्षुप देखे वह हरे काईके सदृश थे और उनके पास अत्यंत हरी घास ऊगरही थी । इस वृद्धऋषिने भूंखके मारे उसके पत्ते छःमहिने खाये छःमहिनेके बाद जब सुकाल होगया तब छःमहिने औरभी खाए फिर १ महिने तक इसके कंदको खाया । सुकाल होनेपर जब सब ऋषि एकत्र हुए तो यह पुराना ऋषिभी जवान होकर उनमें गया । इसे देखकर सब ऋषियोंको विस्मय हुआ और उससे पूंछा तब प्रथम तो उसने कही नहीं, जब बहुत पूंछी तब उसने लहसनके पत्ते १ वर्ष खाने की और १ महिने कंद खानेकी हकीकत कह सुनाई । यह सुनके वह बड़े प्रसन्न हुए परंतु उसके प्रथम छिपानेसे उस क्षुपको शाप दिया कि लहसन ब्राह्मणमात्रको अभक्ष्य होजाय ।

गृंजनस्यमधुरंकटुकंदंनालमप्युपदि-
शंतिकषायम् । पत्रसंचयमुशंति-
चतिक्तंसूरयोलवणमस्थिवदंति ॥

अर्थ-दूसरे लहसन को महाकंद, गृंजन, दीर्घ-पत्रक, पृथुपत्र, स्थूलकंद, यवनेष्ट और यवनेहित कहते हैं।

गुण। इसका कंद मीठा और चरपरा है। नाल इसकी कषेली है, पत्तेआदि कड़वे हैं, और इसकी हड्डीमें लवण रस है।

पलांडु (प्याज)

पलांडुर्यवनेष्टश्चदुर्गंधोमुखदूषकः ।
पलांडुस्तुगुणैर्ज्ञेयोरसोनसदृशोगुणैः ॥ ११० ॥
स्वादुःपाकेरसेऽनुष्णःकफकृन्नातिपित्तलः ।
हरतेकेवलंवातंबलवीर्यकरोगुरुः ॥ १११ ॥

अर्थ-पलांडु, यवनेष्ट, दुर्गंध और मुखदूषक, ए संस्कृत नाम । हिं प्याज, बं. पेयाज, म. कांदा, का. लोहिवीउल्ली, गु. डुंगरी, तै. नीरउल्ली, फा. अस्कील वसलुल्फार उनसल् अस्कीलुल् अवियज, इं. एलियम् Allium इसकी क्षुपजाति है.

गुण। प्याज गुणोंमें लहसनके समान है। पाकमें मिष्ट, कफवर्द्धक, अधिक पित्तकर्त्ता नहीं है। गुरु, बलकारक, वीर्योत्पादक और वायुनाशक है।

राजपलांडु.

अन्योराजपलांडुःस्याद्यवनेष्टोनृपाह्वयः ।
राजप्रियोमहाकंदोदीर्घपत्रश्चरोचकः ॥
नृपेष्टोनृपकंदश्चमहाकंदोनृपप्रियः ।
रक्तकंदश्चराजेष्टोनामान्यत्रत्रयोदश ॥
पलांडुर्नृपपूर्वःस्याच्छिशिरःपित्तनाशनः ।
कफहृद्दीपनश्चैवबहुनिद्राकरस्तथा ॥
वदयतेनृपपलांडुलक्षणंक्षारतीक्ष्णम-
धुरोरुचिप्रदःकंठशोषशमनोतिदीप-
नःश्लेष्मपित्तशमनोऽतिबृंहणः ॥

अर्थ-एक राजपलांडु होताहै उसके नाम-यवनेष्ट, नृपाह्वय, राजप्रिय, महाकंद, दीर्घपत्र, रोचक, नृपेष्ट, नृपकंद, महाकंद, नृपप्रिय, रक्तकंद, और राजेष्ट ए तेरह नाम हैं।

गुण। राजपलांडु शीतल, पित्तनाशक, कफ हरणकर्त्ता, दीपन और अधिक निद्रा करेहै। तथा राजपलांडु खारी, कड़वा, मधुर, रुचिदायक, कंठके सूखनेका नाशक, अत्यंत दीपन, कफ, पित्तका शमनकर्त्ता और अत्यंत बृंहण है।

भल्लातक (भिलाया)

भल्लातकंत्रिपुंस्यग्निमरुष्कोऽरुष्करोऽग्निकः ।
तथैवाग्निमुखीभल्लीवीरवृक्षश्चशोफकृत् ॥ १४ ॥
भल्लातकफलंपक्वंस्वादुपाकरसंलघु ।
कषायंपाचनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णंछेदिभेदनम् ॥
मेध्यंवह्निकरंहंतिकफवातव्रणोदरम् ।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरकृमीन् ॥
तन्मज्जामधुरावृष्याबृंहणीवातपित्तहा ।
वृंतमारुष्करंस्वादुपित्तघ्नंकेश्यमग्निकृत् ॥ १५ ॥
भल्लातकःकषायोष्णःशुक्लोमधुरोलघुः ।
वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान् ॥
हंतिगुल्मज्वरंश्वित्रवह्निमांद्यकृमिव्रणान् ।

अर्थ-भल्लातक, अरुष्क, अरुष्कर, अग्निक, अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष और शोफकृत्, ए संस्कृत नाम हैं। हिं. भिलाए, भिलावा, बं. भेला, उड़िया. भल्लिप, तै. शनकोट्टई, म. बिबवा, बिब्बा, का. गोड़वी, केरबीज, दे. भिलामा, कों. बिबा, बिबे, तै. नाल्लजीडी, गु. भीलामुं, फा. बिलादर, अ. हबुल्-कल्ब, इं. मार्किंगनट, ला. सेमिकार्पस आनाकार्डीयम Semicarpus anacardium कहते हैं।

गुण। पके भिलायेके फलका पाक स्वादु, रस हलका, कषेला, पाचक, स्निग्ध, भेदक, तीक्ष्णोष्ण, छेदन, भेदन, स्मरणशक्तिवर्द्धक और अग्निकारक। यह कफ, वायु, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, बवासीर, संग्रहणी, गोला, सूजन, अफरा, ज्वर और कृमिरोग-निवारक। इसकी मज्जा मीठी, वृष्य, बृंहण, वात-पित्तनाशक। भिलायेकी डंडी स्वादु, पित्तनाशक और केशोंको बढ़ानेवाली; तथा अग्निकर्त्ता।

प्रयोग। भिलाया कषेला, गरम, शुक्रवर्द्धक, मधुर, हलका, वातकफोदर, अफरा, कोढ़, बवासीर, संग्रहणी, गोला, ज्वर, सफेद-कुष्ठ, मंदाग्नि, कृमिरोग

और व्रण इनको दूर करे । इसके **दर्पनाशक** तिल और नारियलकी गिरी है । **मात्रा** १ फलकी है । परंतु किसीकी संमति है कि यह विष है इस वास्ते चार रत्तीसे लेकर ३॥ माशे तक है । *

भंगा (भांग)

भंगागंजामातुलानीमादिनीविजयाजया ।
भंगाकफहरीतिक्ताग्राहिणीपाचनीलघुः ॥
तीक्ष्णोष्णापित्तलामोहमदवाग्वह्निवर्द्धिनी ।
मदनोद्दीपनीनिद्राजननीहर्षदायिनी ॥
धनुस्तम्भंजलत्रासंविषूचींचमदात्ययम् ।
प्रवृत्तिंरजसाबह्नींहंत्यापत्यप्रसूतिकृत् ॥ १८ ॥

अर्थ–भंगा, गंजा (पत्रा), मातुलानी, मादिनी, विजया और जया, ए संस्कृत नाम । **हिं.** भांग, भंग, **बं.** सिद्धि, भां, **म. गु.** भांग, **तै.** जनपरितुलु, **ब्रह्मीमें** बिन, **फा.** कनब, जुजबआजम्, **ला.** क्यानाबीस इंडिका । **स्वरूप** । भांगकी क्षुपजाति है । इसके **पत्ते,** लंबे कंगुरेदार और नीमके पत्तेके समान होते हैं, परन्तु नीमके पत्तोंसे छोटे होते हैं । प्रत्येक डालीपर तीन, पांच अथवा सात पत्ते होतेहैं । **भांग** और **गांजा** दोनों एकही वृक्षसे उत्पन्न होते हैं । **चरसका** रस इसी वृक्षमेंसे निकलता है । **चित्र** नंबर १० का देखो ।

गुण । कफनाशक, कड़वी, ग्राही, पाचक, लघु, तीक्ष्ण, गरम, पित्तकारक, मोहकारक, मादक, अग्निवर्द्धक, कामोद्दीपक, निद्राजनक और हर्षदायक । **प्रयोग** । भांगके सेवन करनेसे धनुरतंभ, वायु, जलत्रास, विषूचिका, मदात्यय और अधिक रजःप्रवृत्ति निवारण होय । इसके द्वारा जरायुकी शिथिलता दूर होकर प्रसवबाधा दूर होय । **मात्रा** चाररत्तीकी है ।

गांजा.

गांजा अग्निय, बलकारक, कामोद्दीपक, निद्राकारक, गर्भस्रावक, विकाशी, पीड़ानिवारक, आक्षेपनाशक और मादक है । कुत्ते और स्यार आदिके काटने से जो जलत्रास (जलको देखकर भोंकना) बाह्यायाम, अंतरायाम, विषूचिका, मदात्यय, शूल, अम्लपित्त, मंदाग्नि, अत्यन्त रजोदर्शका रुधिर निकलना, इन सबके दूर करनेको इसे देवे । **गांजेमें** से सत्त निकालते हैं । इसके गुण गांजेके समान हैं । गांजेकी **प्रतिनिधिमें** गांजेका **सत्त** देना चाहिये । चरस और गांजा एक प्रकारका रस है । **मात्रा** आधरत्ती की है । **इं.** इंडियन हिंप कहते हैं ।

पोस्त.

तिलभेदःखसतिलःकासश्वासहरःस्मृतः ।
स्यात्खसखसफलोद्भूतंवल्कलंशीतलंलघु ॥

---

* **आयुर्वेदके ग्रंथोंमें**—यह फल तीखा, गरम, जागृतकरता, पाचक, ज्ञानतंतुओंको बलदाता और त्वचापर फोड़ा प्रगट करनेवाला गिनते हैं । इसको बदहजमी, बवासीर त्वचाके रोग और संधिके रोगमें वर्त्तते हैं ।

हकीमलोग—इसे गरम और खुश्क गिनते हैं । इसीसे त्वचाके तमाम रोग, मृगी और संधिके दूसरे रोगमें १२ से २४ पर्यंत ग्रेनकी मात्रासे देना उपयोगी समझते हैं । शरीरके बाहरी भागपर सरदीकी सूजनपर इस रसके लगानेकी प्रशंसा करते हैं ।

गोवाप्रांतोंमें—श्वासके रोगपर भिलाएको छाछमें मिलायकर देते हैं । तथा पेटके कृमि निकालनेके वास्ते भी वर्त्तते हैं । वहांके मनुष्य इसको औटाकर तेल निकालते हैं । यह अत्यंत गरम होनेके कारण संधिवात और नसके टूट जानेपर चुपड़नेमें काम आता है । यदि इसमें कोई दूसरी औषधको मिलायकर इसकी न्यून शक्ति न करे तो इससे चमड़ीके ऊपर छाला पड़के फफोला उछर आवे ।

सुश्रुतसंहितामें—इसवृक्षकी छाल स्तंभक और रोचक मानी है । और फलका तेल त्वचाके ऊपर घाव करता और कृमिनाशक तथा ऊर्ध्ववातनाशकर्त्ता वर्णन कराहै ।

चरकमें—इस फलके दीपनीय (क्षुधा लगानेवाला), भेदनीय (दस्तावर), विदाही (जलन करनेवाला) और कुष्ठहर कहाहै ।

ग्राहितिक्तंकषायंचवातकृत्तत्कफास्नहृत् ॥
धातूनांशोषकंरूक्षंमदकृद्वाग्विवर्द्धनम्।
मुहुर्मोहकरंरुच्यंसेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ॥ १६ ॥

अर्थ–तिलभेद, खसतिल और खाखस, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** पोस्त, खसखसका फल, पोस्तके डोड़े, **रा.** छूंतरा, **बं.** टेरीवृक्ष, **कों.** खसखसीचे भाडाचे फलाचें बोंड़, **फा.** कोकनार, **अ.** अबुनास, **ला.** पापावरिसकाप्स्युले, **इं.** पोपीं सीड।

गुण। **पोस्त**के डोड़ा शीतल, हलके, ग्राही (धारक), कड़वे, कषेले, वादीकर्त्ता, कफघ्न, खांसीनाशक, धातुशोषक, रूक्ष, मादक, बोलनेकी शक्तिको बढ़ानेवाले, मोहोत्पादक, रुच्य और पुरुषत्वके नाशक हैं। यह कफघ्न और शोषक होने से पीड़ाके स्थानपर इसके क्वाथसे स्वेदन करना हितकारी है। **मात्रा** १० रत्ती की है।

अफीम.

उक्तंखसफलक्षीरमाफूकमहिफेनकम्।
आफूकंशोषणंग्राहिश्लेष्मघ्नंवातपित्तलम् ॥
आक्षेपशमनंनिद्राजननंमदकारिच।
स्वेदनंवेदनाहृच्चमूत्रातीसारनुत्परम् ॥
कासश्वासातिसारघ्नंशोणितस्रुतिवारणम्।
तथाखसफलोद्भूतवल्कलंत्रायमित्यपि ॥ २० ॥

अर्थ–खसफलक्षीर, आफूक और अहिफेनक, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** अफीम, अमल, आफू, **बं.** अहिफेन, **म.** अफू, आफू, **दे.** कड़वी **गु.** अफीण, **तै.** नाल्लामंदु, **क.** अफेन, **फा.** अफयून, तिर्याक, **अ.** लबनुलक्खसखाश, **ला.** ओप्यस, **इं.** ओप्यम्, **ग्रीकवाले** ओपीआन कहते हैं। यह मालवा, खानदेश, पटना और सिंध इनमें बहुत होय है। यह क्षुपजातिकी वनस्पति है। इसके फलमें चीरा देनेसे जो रस निकलता है उसको अफीम कहते हैं। **चित्र** नंबर ११ देखो।

गुण। **अहिफेन** शोषक, ग्राही, कफनाशक, वात वर्द्धक, पित्तजनक, आक्षेप- वातनाशक, निद्राकरता, मादक, स्वेदजनक और वेदनानाशक। **प्रयोग**। मूत्रातिसार, खांसी, श्वास, अतिसार, और रक्तस्रावको निवारण करे और विशेष करके जो जो गुण पोस्त के डोडानमें हैं वो वो गुण सब इस अफीममें हैं।

चतुर्विधमहिफेनंस्याज्जारणंमारणंतथा।
धारणंसारणंचैवक्रमाद्वक्ष्येतुलक्षणम् ॥
श्वेतंतुजारणंप्रोक्तंकृष्णवर्णंचमारणम्।
धारणंपीतवर्णंतुकर्बुरंसारणंतथा ॥
जारणंजारयेदन्नंमारणंमृत्युदायकम्।
धारणंचवयस्तंभंमारणंमलसारणम् ॥

अर्थ–**अफीम** चार प्रकार की है–जारण, मारण, धारण और सारण। अब क्रमसे इनके लक्षण कहता हूं। सफेद रंगकी अफीम **जारण** है, कालेरंगकी **मारण**, पीलेरंगकी **धारण** और चित्र विचित्र रंगकी अफीम **सारण** है। तहां **जारण** अफीम भोजन करे अन्नको **जारण** करती है। **मारण** मृत्यु करे। **धारण** अवस्थाका स्तंभकरे और **मारण** अफीम मल तोड़ देती अर्थात् दस्त करावे है। इसकी **मात्रा** १ मसूर अथवा दो मसूरके बराबर या पाव रत्तीकी है। इसके **वेगमारने**वाले तवासीर और घी हैं। **प्रतिनिधि** आसवच है।

खसखस.

उच्यंतेखसबीजानितेखाखसतिलाअपि।
खसबीजानिबल्यानिवृष्याणिसुगुरूणिच ॥
शमयंतिकफंतानिजनयंतिसमीरणम् ॥ २१ ॥

अर्थ–खसबीज और खाखसतिल, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** खसखस, खसखसदाने, **बं.** पोस्तदाना, **म.** पोस्तबीज, **फा.** तुख्मकोकनार, **अ.** हबुल्कोकनार, **इं.** पोपीसीड्स् **ला.** पापावरसोम्निफरम्। यह पोस्तके बीज हैं। इसके तेलको मुसलमानी हकीम पौष्टिक पाकोंमें डालते हैं।

गुण। **खसखस** बलकारक, शुक्रल, अत्यंतगुरु, कफघ्न और वातनाशक है।

सैंधव (सैंधानोंन.)

सैंधवोऽस्त्रीशितशिवंमणिमंथंचसिंधुजम्।
सैंधवंलवणंस्वादुदीपनंपाचनंलघु ॥ २२ ॥

अर्थ–सैंधव, शितशिव, मणिमंथ और सिंधुज ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** सैंधानिमक, निमक, **ला.**

हौरी, म. सैंधव, गु. सींधालूण, तै. सिंदुउप्पु, फा. नमकसंग (लाहोरी निमक), अ. नमकसंग, इं. क्लोराइड ऑफ् सोडियम् । यह सिंधुदेशके पहाडोंमें से निकलताहै ।

गुण । सैंधानिमक मीठा, अग्निदीपक, पाचन, लघु, स्निग्ध, रोचक, शीतल, बलकारक, सूक्ष्म, नेत्रोंको हितकारी और त्रिदोषनाशक है ।

शाकंभरी (साम्हर.)

स्निग्धंरुच्यंहिमंवृष्यंसूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत् ।
शाकंभरीयंकथितंगुडाख्यंरौमकंतथा ॥ २३ ॥
गुडाख्यंलघुवातघ्नमत्युष्णंभेदिपित्तलम् ।
तीक्ष्णोष्णंचापिसूक्ष्मंचाभिष्यंदिकटुपाकिच ॥

अर्थ–शाकंभरीय, रौमक और गुडाख्य–अर्थात् जितने गुडके नाम हैं सब साम्हर निमक के नाम हैं–ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** साम्हर निमक कहते हैं । यह राजपूताने के साम्हर सरसे प्रगट होताहै ।

गुण । साम्हर निमक हलका, वातनाशक, और अत्यंत गरम, भेदक, पित्तजनक, तीक्ष्णोष्ण, सूक्ष्म और अभिष्यंदी । यह पचनेके समय चरपरा है ।

समुद्र (पांगा)

सामुद्रंयत्तुलवणमक्षीवंवशिरंचतत् ।
सामुद्रजंसागरजंलवणोदधिसंभवम् ॥ २५ ॥
सामुद्रंमधुरंपाकेसतिक्तंमधुरंगुरु ।
नात्युष्णंदीपनंभेदिसक्षारमविदाहिच ।
श्लेष्मलंवातनुत्तिक्तमरूक्षंनातिशीतलम् ॥२६॥

अर्थ–सामुद्रलवण के अन्य नाम अक्षीव, वशिर, सामुद्रज, सागरज, और लवणोदधिसंभव । **हिं.** पांगा, समुद्रनिमक, **बं.** करकचलवण, **म.** मीठ, **गु.** दरियाईलूण, मीठु, **तै.** उप्पु, **क.** बडागर लवण, **इं.** सॉल्ट, **अ.** मिलहशोरी कहते हैं ।

गुण । समुद्रलवण पाकमें मधुर अथवा किंचित् कड़वाई लिये, मधुर, भारी, दीपन, भेदी अविदाही, कफवर्द्धक, वायुनाशक, तिक्त, अरूक्ष और अत्यंत शीतोष्ण नहीं है । यह समुद्र के जलसे बनाया जाता है ।

विड (विरिआ, सोंचर.)

विडंपाकंचकतकंतथाद्राविडमासुरम् ।
विडंसक्षारमूर्ध्वाधःकफवातानुलोमनम् ॥२७॥
दीपनंलघुतीक्ष्णोष्णंरूक्षंरुच्यंव्यवायिच ।
विबंधानाहविष्टंभहृद्ग्रुगौरवशूलनुत् ॥ २८ ॥

अर्थ–विड, पाक, कतक, द्राविड और आसुर, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** विरिआ संचरनिमक, कटीला-नोंन, **बं.** विड्लवण, **गु.** वीडलूण ।

गुण । विड निमक, क्षारगुणयुक्त, दीपन, हलका, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, रोचक और व्यवाई । यह कफ और वादीके अनुलोमन अर्थात् कफको ऊपरकी तरफ और वातको नीचे की तरफ निकाले हैं । एवं विबंध, अफरा और विष्टंभको हरण करे तथा पीड़ा एवं देहके भारीपने को दूर करे ।

सौवर्चल (चोहारकोड़ा.)

सौवर्चलंस्याद्रुचकमक्षंपाक्यंचतन्मतम् ।
रुचकंरोचनंभेदिदीपनंपाचनंपरम् ॥ २७ ॥
सुस्नेहंवातनुन्नातिपित्तलंविशदंलघु ।
उद्गारशुद्धिदंसूक्ष्मंविबंधानाहशूलजित् ॥३०॥

अर्थ–सौवर्चल, रुचक, अक्ष, और पाक्य ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** चोहारकोड़ा, कालानिमक, **बं.** संचललवण, **म.** पादेलोण, **फा.** निमकस्याह, **अ.** मलाअसवद, **तै.** नालुउप्पु, **इं.** ब्लॅकसॉल्ट, **ला.** ऑन् अक्वा सोडिअम् क्लोराइड् ।

गुण । कालानिमक रोचक, भेदक, अग्निदीप्तिकारक, अत्यंत पाचक, स्नेहयुक्त, वायुनाशक, विशद हलका, सूक्ष्म, डकारकी शुद्धि करता, पित्तको अधिक नहीं बढ़ावे, एवं विबंध, अफरा और शूलरोग नाश करे । यह हिमालयपर्वत के सक्षार जल से लवण बनाया जाता है ।

रेहगवा (रेहका निमक.)

औद्भिदंपांशुलवणंयज्जातंभूमितःस्वयम् ।
क्षारंगुरुकटुस्निग्धंशीतलंवातनाशनम् ॥३१॥

अर्थ–औद्भिद, पांशुलवण वो है जो खारी जमीन में से स्वयं प्रकट होताहै, इसे **रेहगवानोन** बोलते हैं । यह क्षारगुणयुक्त, भारी, कटु, स्निग्ध, शीतल और वायुनाशक है ।

कचिया लवण-

नीलकाचोद्भवंकाचतिलकंकाचसंभवम् ।
काचसौवर्चलंकृष्णालवणंपाकजंस्मृतम् ॥

काचोत्थंहृद्यगंधंचतत्काललवणंतथा।
कुरुविंदंकाचमलंकृत्रिमञ्चचतुर्दश॥
काचादिलवणंरुच्यंईषत्क्षारंचपित्तलम्।
दाहकंकफवातघ्नंदीपनंगुल्मशूलहृत्॥

अर्थ–नील, काचोद्भव, काचतिलक, काचसंभव, काच, सौवर्चल, कृष्णलवण, पाकज, काचोत्थ, हृद्यगंध, तत्काललवण, कुरुविंद, काचमल और कृत्रिम, ए चौदह नाम **संस्कृत** हैं। **हिं.** कचियानिमक, **म.** वांगडखार कहते हैं।

गुण। रुचिकारी, किंचित् खारा, पित्तकर्त्ता, दाहकारी, कफवातनाशक, दीपन, गोला और शूलको नाश करे।

द्रौणीलवण.

द्रौणेयंवार्द्धेयंद्रौणीजंवारिजंचवार्द्धिभवम्।
द्रौणीलवणंद्रोणंत्रिकट्टुलवणंचवसुसंज्ञम्॥
द्रौणेयंलवणंपाकेनात्युष्णमविदाहिच।
भेदनंस्निग्धमीषच्चशूलघ्नंचाल्पपित्तलम्॥

अर्थ–द्रौणेय, वार्द्धेय, द्रौणीज, वारिज, वार्द्धिभव, द्रौणीलवण, द्रोण और त्रिकट्टलवण ए आठ **सं.** नाम हैं। **हिं.** वरतन का निमक कहाता है, यह खार लगने से मिट्टीके वरतनों में प्रकट होता है।

गुण। **द्रौणीलवण** पाकमें अत्यंत गरम नहीं है, न बहुत दाह करे, भेदन, कुछ २ स्निग्ध, शूलनाशक और अल्पपित्त करता है।

औषरलवण.

औषरकंसार्वगुणंसार्वसंसर्वलवणमूषरजम्।
सांभारंबहुलवणंक्षारंचमिश्रकंनवधा॥
औषरंतुपटुक्षारंतिक्तंवातकफापहम्।
विदाहिपित्तकृद्ग्राहीमूत्रसंशोषकारिच॥

अर्थ–औषरक, सार्वगुण, सार्वस, सर्वलवण, ऊषरज, सांभार, बहुलवण, क्षार और मिश्रक ए नौं नाम **संस्कृत**। **हिं.** खारी निमक, **अ.** वोदकहव, **फा.** वेरेअर्मनी, **इं.** कार्वोनेट ऑफ् सोडा कहते हैं।

गुण। ऊषर जमीनका **निमक खारी,** कड़वा, वातकफनाशक, दाहकर्त्ता, पित्तकारी, ग्राही और मूत्रका सुखानेवाला है।

चनाखार.

चणकाम्लकमत्युष्णंदीपनंदंतहर्षणम्।
लवणानुरसंरुच्यंशूलाजीर्णविबंधनुत्॥ ३२॥

अर्थ–चनाखारको **संस्कृतमें** चणकाम्ल और चणकलवण कहते हैं। **हिं.** चनाखार, चनकलोनी, **म.** हरभेरेची आंब, **गु.** चण्यानो खार कहते हैं। इसके बनानेकी विधि अन्यत्र लिखेंगे।

गुण। यह अत्यंत गरम, अग्निदीपक और दांतोंको हर्षकर्त्ता है। इसका **स्वाद** खट्टा और नमकीन है। यह शूल, अजीर्ण और विबंधको नष्ट करे है।

जवाखार, सज्जी, सोरा.

पाक्यक्षारोयवक्षारोयावशूकोयवाग्रजः।
स्वर्जिकापिस्मृतःक्षारःकापोतःसुखवर्चकः॥
कथितःस्वर्जिकाभेदोविशेषज्ञैःसुवर्चिकः।
यवक्षारोलघुःस्निग्धःसुसूक्ष्मोवह्निदीपनः॥
निहंतिशूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान्।
पांड्वर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान्॥३५॥
स्वर्जिकाल्पगुणातस्माद्विशेषाद्गुल्मशूलहृत्।
सुवर्चिकास्वर्जिकावद्बोद्धव्यागुणतोजनैः॥३६॥

अर्थ–पाक्यक्षार, यवक्षार, यावशूक और यवाग्रज, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** जवाखार, **बं.** यवक्षार, **म.** जवाखार, **अ.** नुतरुन्, **इं.** कार्बोनेट ऑफ् पोट्याश। सज्जी भी एक प्रकारका खार है। उसको **संस्कृतमें** सर्जिका, कापोत और सुखवर्चक कहते हैं। और एक प्रकारका क्षार होता है उसको सुवर्चिक अर्थात् **सोरा, गु.** सुरोखार, **तै.** चिट्लु भस्मयु, **इं.** नाइटर, सॉल्टपिटर, **अ.** अवकेर कहते हैं। यह भी सज्जीकाही भेद है।

गुण। **जवाखार** हलका, स्निग्ध, अत्यंत सूक्ष्म, अग्निदीपक। यह शूल, वादी, आम, कफ, श्वास, गलेका रोग, पांडुरोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, अफरा, प्लीहा और हृदयरोग इनको दूर करे। **सज्जीके गुण**। **सज्जी** जवाखार की अपेक्षा अल्प गुणवाली

१ सज्जीको **म.** साजीक्षार, **गु.** साजीखार, **फा.** संजार कलिया, **अ.** कलीवसम्बुल असफर, **इं.** कार्बोनेट् ऑफ् सोडा, **ला.** केरोक्सीलन् फिटिड,

है । परंतु गुल्म और शूलरोगको अधिक गुण करे है । और सोरा में सज्जीके समान गुण हैं । (परन्तु मूत्रकृच्छ्रको दूर करे है और जलको शीतल करे.)

नरसार (नौसद्दर).

औष्ट्रं वा माहिषंगव्यंपुरीषंभस्मतांगतम् ।
क्षारपाकविधानेन नृसारः सिद्धउच्यते ॥

अर्थ–ऊंट, भैंस अथवा गौके गोबरकी भस्मको पाक विधिके साथ पचानेसे **नौसद्दर** प्रकट होता है । परन्तु एक नौसद्दर मनुष्य और सूकरकी विष्ठाद्वारा पँजावेमें-से निकलता है (यह भी एक प्रकारका तीव्रक्षार है.) **म.** नवसागर, **गु.** नवसार **बं.** निशादल **अ.** नवसादर खुरासानी, **ला.** आमोनियम् क्लोरीडम् ।

सुहागा.

सौभाग्यंटंकणंक्षारोधातुद्रावकमुच्यते ।
टंकणंवह्निकृद्रूक्षंकफहृद्वातपित्तकृत् ॥ ३७ ॥
कासघ्नोबलकृत्प्रोक्तः स्त्रीपुष्पजननोभृशम् ।
व्रणघ्नोरेचकश्चैवमूढगर्भनिवर्तकः ॥ ३८ ॥

अर्थ–सौभाग्य,टंकण,क्षार, धातुद्रावक ए **संस्कृत** नाम **हिं.** सुहागा, **बं.** सोहागा, **म.** टांकणखार, **गु.** टंकण पाटियो, टंकण कुलियो, **तै.** एलीगार, **फा.** तींगार, **अ.** बुरग, **इं.** बोराक्स ।

गुण । **सुहागा** अग्निकर्त्ता, रूक्ष, कफको हरण-करे, तथा वातपित्तको करे है । तथा खांसीको नष्ट करे बल बढ़ावे, स्त्रियों के पुष्पको प्रकट करे, व्रणनाशक, रेचक और मूढगर्भको निकालनेवाला है ।

क्षारद्वय और क्षारत्रय.

स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारद्वयमुदाहृतम् ॥
टंकणेनयुतंतत्तुक्षारत्रयमुदीरितम् ।
मिलितंतूक्तगुणकृद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥ ३९ ॥

अर्थ–सज्जीखार और जवाखार ए **क्षारद्वय** कहातेहैं । इनमें सुहागा मिलनेसे **क्षारत्रय** कहाते हैं । ए मिलेहुए भी अपने २ गुणोंको करते हैं और विशेष करके गोलेके रोगको हरणकर्त्ता जानने ।

क्षाराष्टक.

पलाशवज्रिशिखरिचिंचार्कतिलनालजाः ।
यवजःस्वर्जिकाचेतिक्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥
क्षाराएतेऽग्निनातुल्यागुल्मशूलहराभृशम् ॥

अर्थ–पलास (ढाक), थूहर, ओंगा (चिरचिरा), इमली, आक, तिलनाल, इनका खार और जवाखार, सज्जीखार, इन आठ खारोंके मिलनेसे **क्षाराष्टक** कहाताहै। ए **आठों** क्षार अग्निके तुल्य दाहक और गोला, शूलरोगको हरण करते हैं ।

चुक्र (चूका).

चुक्रंसहस्रवेधिस्याद्रसाम्लंशुक्तमित्यपि ।
चुक्रमत्यम्लमुष्णंचदीपनंपाचनंपरम् ॥ ४० ॥
शूलगुल्मविबंधामवातश्लेष्महरंपरम् ।
वमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यहृत् ॥

अर्थ–चुक्र, सहस्रवेधी, रसाम्ल, शुक्त, ए **संस्कृत** नाम हैं । हिं. चूका कहते हैं ।

गुण । **चूका** अत्यंत खट्टा, गरम, अग्निदीपक, पाचक । **प्रयोग** । शूल, गोला, विबंध, आमवात और कफको हरण करे तथा दस्तावर है । वमन, तृषा, मुखकी विरसता, पीड़ा और मंदाग्निको दूर करे है ।

इतिश्री माथुरकृष्णलालपाठकतनुजदत्त-रामानिर्मितअभिनवनिघंटौ माथुरीभाषाटीका-हरीतक्यादिवर्गः प्रथमः ॥

कर्पूरादिवर्गः

कर्पूर. (कपूर).

पुंसिक्लीबेचकर्पूरःसिताभ्रोहिमवालुकः ।
घनसारश्चंद्रसंज्ञोहिमनामापिसंस्मृतः ॥ १ ॥
कर्पूरःशीतलोवृष्यश्चक्षुष्योलेखनोलघुः ।
सुरभिर्मधुरस्तिक्तःकफपित्तविषापहः ॥ २ ॥
दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गंध्यनाशनः ।
आक्षेपशमनोनिद्राजननोघर्मवर्द्धनः ॥
वेदनाहारकःकामशांतिकृच्छुक्रमेहहृत् ।
कर्पूरोद्विविधःप्रोक्तःपक्वापक्वप्रभेदतः ॥
पक्वात्कर्पूरतःप्राहुरपक्वंगुणवत्तरम् ॥ ३ ॥

अर्थ–कर्पूर, सिताभ्र, हिमवालुक, घनसार

जितने चंद्रमाके और हिमके संस्कृत नाम हैं वे सब कर्पूर के जानने । **हिं.** कपूर, **बं.** कर्पूर, **म.** कापूर, **गु.** बरास कपुर, **तै.** कर्पूरामृं, **फा.** काफूर, **इं.** कॅम्फर Camphor कहते हैं।

यह कपूर तीन प्रकार का है—भीमसेनी, पत्री और चीनिआ । ए तीनों आजतक बराबर व्यवहार में आते हैं । यह इब्नखुर्दा, चीन, हिंदुस्थान, इनमें प्रकट होता है हिंदुस्तानमें एक केलेकी जाति से प्रकट होताहै उसको कपूरकेला कहते हैं। कानसूरशहरको बरासभी कहतेहैं । उसमें प्रगट होनेसे यह **बरासकर्पूर** कहाती है । बरास वा (भीमसेनी) कपूरका बड़ा भारी दरख्त होताहै । एक वृक्षमें से अनुमान ६ सेर सवा छः सेर निकले है और उसीजगह १४० रुपये सेर विकजाता है । दूरसे आता है और खर्चा अधिक पड़ता है इसीसे इसकी अधिक प्रशंसा है।

गुण । **कपूर** (बरास वा भीमसेनी) शीतल, बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, हलका, सुगंधित, मधुर, दुर्गंध नाशक, कड़वा, आक्षेपवातनाशक, निद्राको प्रकट कर्त्ता, पसीने बढानेवाला, वेदनानाशक, कामवेगको शांतिकर्त्ता, **प्रयोग** । इसके सेवन करने से पित्त, कफ, विषदोष, दाह, तृषा, मुखकी, विरसता, मेदरोग और शुक्रप्रमेह, इनको दूर करे । इस कर्पूरके भी दो भेद हैं । एक **पक्क** (पका हुआ) और दूसरा **अपक्क** (कच्चा)। इन दोनों में **अपक्ककर्पूर** विशेष गुणकारी है । इसकी **मात्रा** ४ रत्तीकी हैं । इसके **अभावमें** सुगंधित मोथा लेना चाहिये । *

कर्पूरकी परीक्षा.

स्वच्छंभृंगारपत्रंलघुतरविशदंतोलनेतिक्तकं- चेत् । स्वादेशैत्यंसुहृद्यंबहुलपरिमलामोद- सौरभ्यदायि ॥ निःस्नेहंदार्ढ्यपत्रंशुभत- रमितिचेद्राजयोग्यप्रशस्तम् । कर्पूरंचान्य- थाचेद्बहुतरसमलंस्फोटदायिव्रणाय ॥

अर्थ—भांगरेके पत्तोंके समान छोटे २ टुकड़े, अत्यंत हलके और तोलमें अधिक चर्टे, खाने से कड़वा लगे, शीतल, हृदयको प्रिय, और अत्यंत सुगंधिकी लपट देनेवाला, चिकनाई रहित, कठोर पत्रका ऐसा शुभ **कर्पूर** राजाओं के योग्य है । इससे **विपरीत** प्रायः फोड़े और घावको प्रकट करने के वास्ते कहा है ।

शिरोमध्यंतलंचेतिकर्पूरस्त्रिविधःस्मृतः । शिरस्तंभाग्रसंजातंमध्यंपर्णतलेतलम् ॥

अर्थ—वृक्षके शिर, मध्य और तल इन तीन भागोंके होनेसे **कपूर** तीन प्रकार का है । जो वृक्षके ऊपरके भागमें हो वह **शिर** है । मध्यमें **मध्य** और पत्तेके नीचे जो होवे वो **तल** संज्ञक कपूर जानना । स्तंभके **गर्भमें** स्थित जो कपूर वो **श्रेष्ठ** है । और **स्तंभके** बाहर होनेवाली **मध्यम** जाननी । जो स्वच्छ और कुछ २ हलदीके समान पिळास लिये हो, वो **मध्य** है और जो करडा, सफेद और रुखाई लिये हो वो **बाह्यज** (अधम) जानना ।

एक **पत्रीकपूर**—होता है । यह एक छोटे चुपजातिके वृक्षके पत्तोंसे निकलता है । यह वृक्ष **चीनदेशमें** होताहै इस वृक्षसे **ब्रह्माके** मुल्कके मनुष्य औंटायके कपूर निकालते हैं । यह भीमसेनी कपूर की अपेक्षा भारी है । परंतु हवामें रखने से बहुत जल्दी उड़जाता है । और इसमें दौनामरुएके वृक्षके समान गंध आती है । और चीनाईलोग इसको **नागाई** कहते हैं ।

चीनिआकपूर.

चीनकश्चीनकर्पूरःकृत्रिमोधवलःपटुः ।

* **मखजनउलअदवियाका कर्त्ता**—कपूरके वर्णन करनेमें ऐसा लिखता है कि, एकसमय हुगलीमें मकान बननेको बड़े २ लकड़ीके लट्ठे आये थे उनके चीरनेमें एकके भीतर कपूर निकला था ।

देशीवैद्य—भीमसेनी कपूरको साधारण कपूरके बनिस्बत बहुत जल्दी कामोत्तेजक मानते हैं ।

मुसलमीनग्रंथकर्त्ता—इसे शीतल और भेजे तथा हृदयको जागृतकर्त्ता मानते हैं तथा अनेक प्रकारके रोगोंमें वर्त्तनेकी प्रशंसा करते हैं । परंतु नेत्ररोग में लेनेको वर्जित करते हैं ।

मेघसारस्तुषारश्चद्वीपकर्पूरजःस्मृतः ।
चानाकसंज्ञःकर्पूरःकफक्षयकरःस्मृतः ॥ ४ ॥
कुष्ठकंडूवमिहरस्तथातिक्तरसश्चसः ।

अर्थ–चीनक, चीनकर्पूर, कृत्रिम, धवल, पट्ट, मेघसार, तुषार, द्वीपकर्पूरज ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** चीनिआकपूर कहते हैं । यह बरास और पत्रीकपूर दोनों से हलका है और बाजारमें बहुत सस्ता मिलता है ।

इसको पक्क (पक्की) कपूर कहते हैं, यह भी एक-वृक्षसे निकलता है । इसीसे देवमंदिरों में आरती करते हैं । और बहुतसे हिंदुस्तान के पामरजन इसको उड़ायकर स्वच्छकर लेतेहैं, फिर इसीको भीमसेनी कपूर के नाम से बेचते हैं । भाइयो ! इन दुष्टोंके जालसे बचो मथुरा, काशी, दिल्ली, आगरा, लखनौ, इनमें इसको ठगलोग बेचकर भोरेभारे मनुष्यों को ठगते हैं । होशयार ! होशयार !!

चिनिआ कपूरके गुण । यह कफ, कोढ, खुजली और वमनको हरण करता है और इसका जायका कड़वा है ।

कस्तूरी.

मृगनाभिर्मृगमदःकथितस्तुसहस्रभित् ॥ ५ ॥
कस्तूरिकाचकस्तूरीवेधमुख्याचसास्मृता ।
कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानैपालीमध्यमाभवेत् ॥६॥
कामरूपोद्भवाकृष्णानैपालीनीलवर्णयुक् ।
काश्मीरदेशसंभूताकस्तूरीह्यधमामता ॥ ७ ॥
कामरूपोद्भवाकृष्णानैपालीनीलवर्णयुक् ।
काश्मीरीकपिलच्छायाकस्तूरीत्रिविधास्मृता

अर्थ–मृगनाभि, मृगमद, सहस्रभित्, कस्तूरिका, कस्तूरी, वेधमुख्या इतने **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** कस्तूरी, **बं.** मृगनाभि, **म.** कस्तूरी, **तै.** कास्तूरी, **फा.** मुश्क, **अ.** मिस्क, **इं.** मस्क Musk, **ला.** मोस्कसस् ।

कस्तूरी तीन प्रकारकी है । एक तो **कामरू** देशमें होती है, यह **उत्तम** है, **नैपालकी** कस्तूरी मध्यम है और **कश्मीर** देशकी कस्तूरी **अधम** होती है । तहां **कामरू** देशकी कस्तूरी काले रंगकी, **नेपालकी** नीले रंगकी और **काश्मीरकी** कस्तूरी कपिल (भूरे) रंगकी होती है ।

१ साधारण कपूरमें चनाखार, इलायची और सोधा आदि डालके इसका फूल उड़ाय लेतेहैं ।

कस्तूरीके भेद.

साप्येकाखरिकाततश्चतिलकाश्चैयाकुलित्था-
परा । पिंडान्यापिचनायिकेतिचपरायापंच-
भेदाभिधा ।

अर्थ–खरिका, तिलका, कुलित्था, पिंडा और नायिका, इसप्रकार कस्तूरी **पांच प्रकारकी** है ।

चूर्णाकृतिस्तुखरिकातिलकातिलाभा ।
कौलत्थबीजसदृशीचकुलत्थकाया ॥
स्थूलाततःकियदियंकिलपिण्डिकाख्या ।
तस्याश्चकिंचिदधिकायदिनायिकासा ॥

अर्थ–चूर्णके समान **खरिका** कस्तूरी होती है। तिलकवृक्षके समान **तिलका**, कुल्थीके बीजके समान **कुलत्था**, इससे भी कुछ मोटी **पिंडिका** और पिंडिकासे भी अधिक मोटी **नायिका** कस्तूरी जाननी।

कस्तूरीकी परीक्षा.

स्वादेतिक्तापिंजराकेतकीनाम् ।
गंधंधत्तेलाघवंतोलनेच ॥
यास्तुन्यस्तानैववैवर्ण्यमीयात् ।
कस्तूरीसाराजभोग्याप्रशस्ता ॥

अर्थ–जो खानेसे स्वादमें कड़वी, रंगमें पीली केतकीपुष्प के सदृश गंधवाली, तोलमें हलकी हो और जलमें डालने से उसका रंग न पलटे, वह कस्तूरी **उत्तम** राजाओं के भोगने योग्य है ।

यागंधंकेतकीनामपहरतिमदंसिंधुराणांच
वर्णं स्वादेतिक्ताकटुर्वालघुरथतुलितामर्दि-
ताचिक्कणास्यात् । दाहंयानैतिवह्नौशिमि-
शिमितिचिरंचर्मगंधाहुताशे साकस्तूरी-
प्रशस्तावरमृगतनुजाराजतेराजभोग्या ॥

अर्थ–जो **कस्तूरी** केतकीके फूलोंकीसी गंधको देवे, और वर्ण (रंग) में हाथियों के मदके

चुरावे, अर्थात् हाथीके मदके समान रंगवाली जिसका जायका कड़वा या चरपरा हो, तोलमें हलकी अर्थात् बहुत चढे, मसलने से चिकनी, होवे, अग्निमें डालने से जले नहीं, किंतु बहुत देरतक शिमिशिमि शब्द करे, और चमड़े जलानेकीसी वास आवे, वह मृगनाभिकी **कस्तूरी** राजभोग्य **उत्तम** कही है।

दुष्टकस्तूरीके लक्षण.

या स्निग्धाधूमगन्धावहतिविनिहितापीतता यापटान्तर्निःशेषंयानिविष्टाभवतिहुतवहेभस्मसादेवसद्यः। याचन्यस्तातुलयांकलयति गुरुतांमर्दितारूक्षतांच ज्ञेयाकस्तूरिकेयंखलु कृतमतिभिःकृत्रिमानैवसेव्या॥

अर्थ–जो देखनेमें चिकनी, जिसके धूंएमें गंध आवे, कपड़े में बांधने से कपड़ा पीला हो जावे, और अग्निमें डालने से तत्काल जलकर सब भस्म (खाक) हो जावे, और तोलमें भारी होवे अर्थात् थोड़ी चढ़े, और मीड़ने से रूखी हो जावे ऐसी **कस्तूरी** बुद्धिमान् **कृत्रिम** अर्थात् **बनाई हुई** जाने। इसको कदाचित् सेवन नहीं करनी। **परंतु** यदि देखते हैं तो प्रायः ऐसीही कस्तूरी सर्वत्र **विक**रहीहै। इस निघंटुके पढ़नेवालों से प्रार्थना है कि आप लोग कस्तूरी स्वयं लेवें अथवा और को दिलवे तो इस परीक्षा के अनुसार लेवें।

करतलजलमध्येस्थापनीयामहाद्भिः पुनरपितदवस्थंचिंतनीयंसुहूर्त्तम्॥ यदिभवतिचरक्तंतज्जलंपीतवर्णं- नभवतिमृगनाभिःकृत्रिमोयंविकारः॥

अर्थ–कस्तूरी को हथेली में रख जल डाले फिर मुहूर्त भर देखे कि यदि वह जल पीले या लाल रंगका होगयाहै तो समझना कि यह कस्तूरी नहीं है, बनावटी कस्तूरी है।

कस्तूरिकाकटुस्तिक्ताक्षारोष्णाशुक्रलागुरुः। कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गंध्यशोषहृत्॥ ८॥

गुण। **कस्तूरीका रस** चरपरा, कड़वा और कुछ खारी है। **उष्ण वीर्य**, वीर्यको पुष्ट करे, भारी, कफ, वात, विष, वमन, सरदी, दुर्गंध और शोषरोगको हरण करे।

आक्षेप वातको हरण करे, पसीने लावे, कामदीपन करे, हिचकी को नष्ट करे, मूत्र लावे, बल करे और कुछ २ मद करता है।

श्रीखंडंचतवाशीरदर्पघ्नमुभयंस्मृतम्। प्रतिनिध्यंवरंख्यातंमात्रास्याद्रत्तिकाद्वयम्॥

अर्थ–कस्तूरी के दर्पको नाश करनेवाले **चंदन** और **तवाखीर** हैं। और यदि कस्तूरी न मिले तो इसकी **प्रतिनिधिमें** अंबर डालना चाहिये और कस्तूरीकी **मात्रा** २ रत्तीकी है।

मुश्कदाना.

लताकस्तूरिकातिक्तास्वाद्वीवृष्याहिमालघुः। चक्षुष्याच्छेदनीश्लेष्मतृष्णावस्त्यास्यरोगहृत्॥ ६॥

अर्थ–लताकस्तूरी (मुश्कदाना–वेदमुश्क) कड़वी, मिष्ट, वीर्य–पुष्टिकर्त्ता, शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी और छेदक है **प्रयोग**। यह कफ, तृषा, वस्तिरोग और मुखरोग, इनको निवारण करे। इसकी **मात्रा** ७ माशे की है। **प्रयोग** में इसके बीज लिये जाते हैं।

गौरासाखमेदआंडी.

गंधमार्जारवीर्यंतुवीर्यकृत्कफवातहृत्। कंडुकुष्ठहरंनेत्र्यंसुगन्धंस्वेदगन्धनुत्॥ १०॥

अर्थ–गंधमार्जारवीर्य (जवादिया कस्तूरी) वीर्यकर्ता, कफवात हरता, खुजली, कोढ़, पसीने और दुर्गंध इनको हरण करे। तथा नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी है।

चन्दन.

श्रीखंडंचंदनंनस्त्रीभद्रश्रीस्तैलपर्णिकः। गंधसारोमलयजस्तथाचंद्रद्युतिश्चसः॥ ११॥

स्वादेतिक्तंकषेपीतंछेदेरक्तंतनौसितम्। ग्रंथिकोटरसंयुक्तंचंदनंश्रेष्ठमुच्यते॥ १२॥

१ कस्तूरीको भी बनाकर बेचते हैं, और बांटते भी हैं; परंतु लोभी जनहो! आप क्यों व्यर्थ विश्वास में आनकर इस रोगकारिणी प्राणनाशिनी को लेते हो जल्दी त्यागो २ पटको फेंको!

चंदनंशीतलंरूक्षंतिक्तमाह्लादनंलघु ।
श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत् ॥

अर्थ–श्रीखंड, चंदन, भद्रश्री, तैलपर्णिक, गंधसार, मलयज और चंद्रद्युति, ए **संस्कृत** सफेद चंदनके नाम हैं । **गु.** सुक्खड़ कहते हैं, **का.** बेटपंचेगंध, प्रायः **हिंदुस्थान**की सर्व भाषाओं में **चंदन** नामसे प्रसिद्ध है । **फा.** सफेद संदल, **अ.** संदले अबियद, **इं.** सांडल वुड्, **ला.** संटेलं एलबं Santalum album कहते हैं ।

यह **शाखी**जातिका वृक्ष है और हिंदुस्तान में बहुत होताहै । *

उत्तम चंदन । जो स्वादमें कड़वा, घिसनेमें पीला, तोड़ने में लाल और रूपमें सफेद, तथा गांठ और खोंतर करके युक्त ऐसा **चंदन उत्तम** कहा है ।

गुण । **चंदन** शीतल, रूक्ष, कड़वा, आनंददायक, हलका है । **प्रयोग** । श्रम, शोष, विष, कफ, प्यास, रक्तपित्त और दाह इनको दूर करे । चंदनकी लकड़ीकी ४ माशे की **मात्रा** है । **प्रतिनिधि** इसकी कपूर है ।

उत्तम चंदनके लक्षण.

श्रेष्ठंकोटरकर्परोपकलितंसुग्रंथिसद्गौरवम् ।
छेदेरक्तमयंतथाचविमलंपीतंचयद्धर्षणे ॥
स्वादेतिक्तकटुःसुगंधबहुलंशीतंयदल्पंगुणे ।
क्षीणंचार्धगुणान्वितंतुकथितंतच्चन्दनंमध्यमम् ॥

अर्थ–जिसमें खोंतरहो और उसके ऊपर वक्कल चढाहुआ गांठदार भारी हो, **तोड़नेमें** लाल और उज्ज्वल, **घिसनेमें** पिलाई लिएहो, **खानेमें** कड़वा और चरपरा होवे, अत्यंत सुगंधयुक्त और शीतल ऐसा **चंदन उत्तम** होताहै । और जो इन गुणोंकरके रहित है तथा क्षीण है वो अर्ध गुणयुक्त **मध्यम चंदन** जानना ।

चंदनंद्विविधंप्रोक्तंवेट्टसुक्काडिसंज्ञकम् ।
वेट्टंतुसार्द्रंविच्छेदंस्वयंशुष्कंतुसुक्काडि ॥

अर्थ–चंदन दोप्रकारका है–एक **वेट्ट** दूसरा **सुक्काडि** । इनमें जो गीला और छिद्र रहित होवे वह वेट्ट संज्ञक, और स्वयंशुष्क (सूखे) को **सुक्काडि** कहते हैं ।

मलयाद्रिसमीपस्थाःपर्वतावेट्टसंज्ञिकाः ।
तज्जातंचंदनंयत्तुवेट्टवाच्यंक्वचिन्मते ॥

अर्थ–मलयाचल पर्वतके समीप जो पर्वत हैं उनकी **वेट्ट** संज्ञा है । उन **वेट्ट**संज्ञक पर्वतों में जो चंदन होताहै किसी किसीके मतसे वो **वेट्ट** संज्ञक कहाता है ।

वेट्टचंदनके गुण.

वेट्टचंदनमतीवशीतलं दाहपित्तशमनंज्वरापहम् । छर्दिमोहतृषिकुष्ठतैमिरोत्कासरक्तशमनंचतिक्तकम् ॥

अर्थ–वेट्ट चंदन अत्यंत शीतल, दाह, पित्त, ज्वर, वमन, मोह, तृषा, कोढ, तिमिररोग, खांसी और रुधिर विकारको दूर करे और खानेमें कड़वा है ।

सुक्कडि चंदनका गुण.

सुक्कडिश्चंदनंतिक्तंकृच्छ्रपित्तास्रदाहनुत् ।
शैत्यंसुगंधिदंचार्द्रंशुष्कलेपेतदन्यथा ॥

* **दत्तकृत मेटरिया मेडीकामें**—तीनप्रकारकी चंदनकी लकड़ी वर्णन करी है । जैसे–श्रीखंड (सफेदचंदन), पीत (पीलाचंदन) और रक्तचंदन (लालचंदन) । इनमें लालचंदनकी लकड़ी ग्राही और पौष्टिक मानीहै । सूजनमें शीतलता करने को उसीप्रकार मस्तक दूखता होय तो घिसके लगानेकी तारीफ करी है । बाहर लगाने से यह सफेद चंदनसे अधिक शीतलता करे है और भीतर देने में उससे न्यून गुण करे है ।

शकाउल अस्कमका कर्त्ता—लिखता है कि, यदि पित्तके दस्त होतेहोंय तो सफेद चंदनकी लकड़ी घिसके पिलावे, और दस्तमें रुधिर आता होय तो लालचंदन घिसके पिलाना, और पित्तरुधिर दोनों जाते होंय तो दोनों चंदन घिसके पिलावे । रुधिरकी वमन आदि रोगोंमें लालचंदनको दूधमें पीसके और जूओंके रोगमें शहतके साथ पीसकर देनेकी प्रशंसा करे है ।

अर्थ-सुक्काडि चंदन कड़वा, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, दाह इनको दूर करे। शीतल, सुगंधकर्ता, ए गीले चंदनके गुण हैं। और सूखे चंदनके गुण इससे विपरीत जानने।

पीतचंदन.

कालीयकंतुकालीयंपीताभंहरिचंदनम्।
हरिप्रियंकालसारंतथाकालानुसार्यकम्॥
कालीयकंरक्तगुणंविशेषाद्व्यंगनाशनम्॥१४॥

अर्थ-कालीयक, कालीय, पीताभ, हरिचंदन, हरिप्रिय, कालसार और कालानुसार्यक, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** कलंबक, पीलाचंदन कहते हैं। **म.** पिंवलाचंदन, **फा.** संदलअवियज, **ला.** सेन्टेलम् फ्लेअम् Santalum Flauam

गुण। **पीलेचंदनमें** लालचंदनके समान सब गुण हैं। विशेषकरके व्यंगको नाश करेहै।

लालचंदन.

रक्तचंदनमाख्यातंरक्तांगंक्षुद्रचंदनम्।
तिलपर्णंरक्तसारंतत्प्रवालफलंस्मृतम्॥१५॥
रक्तंशीतंगुरुस्वादुच्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत्।
तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम्॥१६॥

अर्थ-रक्तचंदन, रक्तांग, क्षुद्रचंदन, तिलपर्ण, रक्तसार और प्रवालफल, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** लालचंदन, **गु.** रतांजली, **तै.** एरगंध पुचेक, **ता.** सेन्शांडनम्, **फा.** संदलसुर्ख **अ.** संदल अहमर, **ला.** स्टीरोकार्पस लिग्नम, **इं.** रेड सांडल वुड।

गुण। **लालचंदन** शीतल, भारी, स्वादु, कड़वा। **प्रयोग।** वमन तृषा, रक्तपित्त, ज्वर, व्रण, विष, इनको दूर करे। नेत्रोंको हितकारी, वीर्य-पुष्टि करता है।

वक (पतंग).

पतंगंरक्तसारंचसुरंगंरंजनंतथा।
पट्टरंजकमाख्यातंपत्तूरंचकुचंदनम्॥१७॥
पतंगंमधुरंशीतंपित्तश्लेष्मव्रणास्रनुत्।
हरिचंदनवद्वेद्यंविशेषाद्दाहनाशनम्॥१८॥
चंदनानितुसर्वाणिसदृशानिरसादिभिः।
गंधेनतुविशेषोऽस्तिपूर्वःश्रेष्ठतमोगुणैः॥१९॥

अर्थ-पतंग, रक्तसार, सुरंग, रंजन, पट्टरंजक, पत्तूर और कुचंदन, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** पतंगकी लकड़ी, आलह, **वं.** वक, **म.** पतंगल, **फा. अ.** वकम्, **ला.** सीसालपीनी आसापम्.

गुण। **पतंग** मधुर, शीतल, पित्त, कफ, व्रण, रुधिरविकार, इनको दूर करे। और सब गुण इसमें **पीलेचंदनके** समान जानने।

शवर चंदन.

यन्नातिपीतममलंकैरातंशवरचंदनंसुगंधम्।
वन्यंचगंधकाष्ठंकिरातकांतंचशैलगंधंच॥
कैरातकंशीतलतिक्तकंचश्लेष्मानिलघ्नंश्रमपित्तहारि। विस्फोटपामादिकनाशनंचतृषापहंतापविमोहनाशनम्॥

अर्थ-**शवर** चंदन अत्यंत पीला नहीं होता, कुछ २ पीला होताहै, उसके **संस्कृत** नाम कैरात, शवरचंदन, सुगंध, वन्यचंदन, गंधकाष्ठ, किरातकांत और शैलगंध।

गुण। कैरात अर्थात् **शवर चंदन** शीतल, कड़वा, कफ, वात, परिश्रम और पित्तको नाश करे। **प्रयोग।** विस्फोटक, खुजली आदि और तृषा, ताप तथा मोहको नष्ट करे। शवरचंदन **कोंकण** देशमें प्रसिद्ध है।

वरवर चंदन.

बर्बरोऽम्लंबर्बरकंश्वेतबर्बरकंतथा।
शीतंसुगंधिपित्तारिःसुरभिश्चेतिसप्तधा॥
बर्बरंशीतलंतिक्तंकफमारुतपित्तजित्।
कुष्ठकंडुव्रणान्हंतिविशेषाद्रक्तदोषजित्॥

अर्थ-बर्बर, अम्ल, बर्बरक, श्वेतबर्बरक, शीत, सुगंधि, पित्तारि और सुरभि ए सात **सं.** नाम हैं।

गुण। **बर्बर चंदन** शीतल, कड़वा, कफ, वादी, और पित्तको नष्ट करे। **प्रयोग।** कोढ, कंडु, व्रण इनको और विशेषकरके रुधिरके विकारों को दूर करे।

हरिचंदन.

हरिचंदनंसुरार्हंहरिगंधंचंद्रचंदनंदिव्यम्।
दिविजंचमहागंधंनंदनजंलोहितंचनवसंज्ञम्॥

हरिचंदनंतुदिव्यंतिक्तहिमंतादिहदुर्लभंमनुजैः।
पित्ताटोपविलोपिचंदनवच्छ्रमहरंच शोषहरम्॥

अर्थ–हरिचंदन, सुराई, हरिगंध, चंद्रचंदन, दिव्य, दिविज, महागंध, नंदनज, और लोहित ए ६ नाम **हरिचंदन**के हैं। **गुण। हरिचंदन** दिव्य, कड़वा और शीतल है। यह चंदन मनुष्योंको प्राप्त होना दुर्लभ है। यह पित्तकी व्याधिको नष्ट करे, और सफेद चंदनके समान श्रम और शोषको हरण करता है। यह भी **कोंकण** देशमें प्रसिद्ध है।

चंदनानिसमानानिरसतोवीर्यतस्तथा।
विद्यंतेकिंतुगंधेनतत्राद्यंगुणवत्तरम्॥

अर्थ–संपूर्ण चंदन रसोंमें और वीर्यादिमें समान हैं। परंतु पाहिला चंदन गंधमें सब चंदनों से श्रेष्ठ है।

अगर.

अगुरुप्रवरंलोहंराजार्हंयोगजंतथा।
वंशिकंकृमिजंवापिकृमिजग्धमनार्यकम्॥२०॥
अगुरूष्णंकटुत्वच्यंतिक्तंतीक्ष्णंचपित्तलम्।
लघुकर्णाक्षिरोगघ्नंशीतवातकफप्रणुत्॥२१॥
कृष्णंगुणाधिकंतत्तुलोहवद्वारिमज्जति।
अगुरुप्रभवःस्नेहःकृष्णागुरुसमःस्मृतः॥२२॥

अर्थ–अगुरु, प्रवर, लोह, राजार्ह, योगज, वंशिक, कृमिज, कृमिजग्ध और अनार्यक, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** अगर, कालीअगर, अगरसत और सब हिंदुस्तानकी भाषाओं में इसी नाम से प्रसिद्ध है। **अ. फा.** कशवेववा, ऊदगर की कहते हैं। **इं.** ईगलवुड्, **ला.** एक्किलेरिया एगेलोका.

गुण। अगर गरम, कटु, त्वचाको हितकर, कड़वी, तीक्ष्ण, पित्तकर, हलकी। **प्रयोग।** कान, नेत्रके रोग, सरदी, वादी, कफ इनको नष्ट करे। **अगर** दो प्रकारकी है–उसमें **काली** अगर गुणोंमें अधिक गुण करनेवाली है और यह लोहेके समान जलमें डूब जाती है। **अगर का तेल** कृष्णागरके समान गुण करता है। अगरका **दर्पनाशक** गुलाब है। **मात्रा** ३॥ माशेकी है। इसकी **प्रतिनिधिमें** चंदन, दालचिनी, केशर, बालछड और रूमीमस्तगी है।*

पीलीअगर.

अन्योऽगरुःपीतकंचलोहवर्णप्रसादनम्।
अनार्यकमसारंचकृमिजग्धंचकाष्ठकम्॥
काष्ठागरुःकटूष्णंचलेपेरूक्षंकफापहम्॥

अर्थ–दूसरी जो अगर होतीहै उसका लाल रंग, देहके वर्णको स्वच्छ करेहै। पीतक, लोह, वर्णप्रसादन, अनार्यक, असार, कृमिजग्ध और काष्ठक ए काष्ठागरुके **संस्कृत** नाम हैं।

गुण। काष्ठागर चरपरी, गरम, लेपमें रूक्ष और कफनाशक है।

दाहागरु.

दाहागरुदहनागरुदाहककाष्ठंचवह्निकाष्ठंच।
धूपागरुतैलागरुपुरंचपुरमथनवल्लभंचैव॥
दाहागरुकटुकोष्णंकेशानांवर्द्धनंचवर्णंच
अपनयतिकेशदोषानातनुतेसंततंचसौगंध्यम्॥

अर्थ–दाहागरु, दहनागरु, दाहककाष्ठ, वह्निकाष्ठ, धूपागरु, तैलागरु, पुर और पुरमथनवल्लभ, ए आठ नाम **संस्कृत**, दाहागरके हैं।

गुण। दाहागर चरपरी, गरम, बालोंको बढानेवाली, देहके वर्णको उजला करे, बालोंके दोषोंको दूर करे और देहको सुगंधित करें है। यह **गुर्जरदेश**में प्रसिद्ध है।

मंगल्यागुरु.

मंगल्यामल्लिकागंधंमंगलागरुवाचका।
मंगल्यागरुशिशिरागंधाढ्यायोगवाहिका॥

अर्थ–मंगल्या, मल्लिकागंध और यावन्मात्र मंगलागरवाचक शब्द हैं वे सब मंगल्यागरुके नाम जानने।

* **चरकसंहितामें**—अगरको शीतप्रशमन (सरदीनाशक) और खाँसी नष्टकर्त्ता मानी है।
सुश्रुतसंहितामें—उसको वात, कफहर, वर्णप्रसादक (देहका रंग सुधारनेवाला), खुजलीनाशक और कुष्ठनाशक वर्णन कराहै। अगरकी **लकड़ी**को जलमें औंटाय उस पानीके पीनेसे ज्वरमें लगनेवाली **तृषा** दूर होती है और इसे मृगी उन्मत्तता आदि रोगोंमें परमोपयोगी गिनते हैं।

गुण। **मंगल्यागर** शीतल, गंधवाली और योगवाही अर्थात् जैसे पदार्थके साथ मिले उसीकेसे गुण करने लगेहै।

देवदारु.

देवदारुस्मृतंदारुभद्रंदार्वीन्द्रदारुच।
मस्तदारुद्रुकिलिमंकृत्रिमंसुरभूरुहः ॥ २३ ॥
देवदारुलघुस्निग्धंतिक्तोष्णंकटुपाकिच।
विबंधाध्मानशोथामतंद्राहिक्काज्वरास्रजित्।
प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकंडुसमीरनुत् ॥ २४ ॥

अर्थ–देवदारु, दारु, भद्रदारु, दार्वी, इन्द्रदारु, मस्तदारु, द्रुकिलिम, कृत्रिम, और सुरभूरुह, ए **संस्कृत** नाम, **म.** तेलियादेवदारु, **अ.** क्षजरतुलजीन, **तै.** देवदारुचेका, **हिन्दी**की प्रायः समस्त भाषाओंमें देवदारु इसी नामसे प्रसिद्ध है। **इं.** पाइनस देवदार Pinus Deodara कहतेहैं।

गुण। लघु, स्निग्ध, कडवा और गरम तथा पाकके समय चरपरा है। **प्रयोग।** विबंध, अफरा, सूजन, आम, तंद्रा, हिचकी, ज्वर, रुधिरके विकार, प्रमेह, पीनस, कफ, खांसी, खुजली और वादीको नष्ट करे।

देवदारुद्विधाज्ञेयंतत्राद्यंस्निग्धदारुकम्।
द्वितीयंकाष्ठदारुस्याद्वयोर्नामान्यभेदतः।
स्निग्धदारुस्मृतंतिक्तंस्निग्धोष्णंश्लेष्मवात-
जित्। आमदोषविबंधार्शःप्रमेहज्वरनाशनम्॥

अर्थ–देवदारु दो प्रकारकी है–एक **स्निग्ध** अर्थात् चिकनी देवदारु और दूसरी **काष्ठदारु**। इन दोनोंके नाम एकही हैं। इनमें **चिकनी** देवदारु कड़वी, चिकनी, गरम, कफवातनाशक, आमदोष, विबन्ध, प्रमेह और ज्वरको नष्टकरे है। इसको दक्षिणमें **चौपड़ा देवदारु** कहतेहैं।

देवकाष्ठंतुतिक्तोष्णंरूक्षंश्लेष्मानिलापहम्।
भूतदोषापहंधत्तेलिप्तमंगेषुकालिमाम् ॥

अर्थ–काष्ठदेवदारु कड़वी, गरम, रूक्ष, कफवातनाशक, भूतदोष हरण करे और इसको देहमें लेप करनेसे देहको काला कर देतीहै।

देवदारुका भेद चीढ़.

चीडाचदारुगंधागंधवधूर्गंधमादनीतरुणी।
ताराचभूतमारीमंगल्यातुकपाटनीग्रहजित् ॥
चीडाकटूष्णाकासघ्नीकफजिद्दीपनीपरा।
अत्यंतसेवितासातुपित्तदोषश्रमापहा ॥

अर्थ–चीडा, दारुगंधा, गंधवधू, गंधमादनी, तरुणी, तारा, भूतमारी, मंगल्या, कपाटनी, ग्रहजित् ए ६ नाम **संस्कृत** हैं। **हिं.** चीढ़ कहतेहैं।

गुण। चीढ चरपरा, गरम, खांसीनाशक, कफको नष्ट करे, अग्निको दीपन करे है। इसके अत्यंत सेवन करनेसे पित्तदोष और परिश्रम दूर होताहै।

धूप, सरल.

सरलःपीतवृक्षःस्यात्तथासुरभिदारुकः।
सरलोमधुरस्तिक्तोकटुपाकरसोलघुः ॥ २५ ॥
स्निग्धोष्णःकर्णकंठाक्षिरोगरक्षोहरःस्मृतः
कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः॥२६॥

अर्थ–सरल, पीतवृक्ष और सुरभिदारुक ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** धूपसरल, ब्रीट, **बं.** सरल काष्ठ **इं.** लौंगलिव पाईन।

गुण। यह मधुर, कडवा, हलका, पाकमें कटु, इसके गोंदको गंधविरोजा कहतेहैं। **प्रयोग।** इसके द्वारा कर्णरोग, कंठरोग, नेत्ररोग, कफ, वायु, पसीना, दाह, खांसी, मूर्च्छा और व्रणरोग एवं राक्षसभय दूर होवे।

तगर.

कालानुसार्यंतगरंकुटिलंलघुसंनतम्।
अपरंपिंडतगरंदंडहस्तीचबर्हिणम् ॥ २७ ॥
तगरद्वयमुष्णंस्यात्स्वादुस्निग्धंलघुस्मृतम्।
विषापस्मारशूलाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥ २८॥

अर्थ–कालानुसार्य, तगर, कुटिल और लघुसंनत, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** तगर, **बं.** तगर पादुका, **म.** गांठ्या तगर, गोंडे तगर, नेपालमें चम्पा कहतेहैं। **फा.** असारून। यह एक प्रकार का सुगंधित तृण अल्मोड़ेके पहाड़पर होता है। दूसरी एक प्रकारकी अगर और है। उसके नाम पिंडतगर, दंडहस्ती

और बर्हिण । **गुण** । दोनों प्रकारकी **तगर** गरम, स्वादु, स्निग्ध और हलकी हैं । **प्रयोग** । तगरका सेवन विषदोष, अपस्मार, शूल, नेत्ररोग और वातादि दोषत्रयको नष्ट करे । **मात्रा** ३॥ माशेसे ले ४॥ माशेतक है, और **प्रतिनिधि** वच, कचूर और सोंठ है । *

पद्माख.

पद्मकंपद्मगंधिस्यात्तथापद्माह्वयंस्मृतम् ।
पद्मकंतुवरंतिक्तंशीतलंवातलंलघु ॥ २९ ॥
वीसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तनुत् ।
गर्भसंस्थापनंरुच्यंवमिव्रणतृषाप्रणुत् ॥ ३० ॥

अर्थ–पद्मक, पद्मगंधि और पद्माह्वय (पद्मवाचक शब्द सब इसके पर्याय हैं), **हिं.** पद्माख, **बं.** पद्मकाष्ठ, **क.** पद्मक, **तै.** पद्मचेकवा, **ला.** प्रनस् पदम् और सब भाषाओंमें इसी नामसे प्रसिद्ध है । यह केदार और हिमालयपर्वतमें उत्पन्न होता है । कोई वैद्य इसको गुलाबका भेद मानतेहैं ।

गुण । पद्मकाष्ठ कषेला, कड़वा, शीतल, बातकरता और हलका । **प्रयोग** । यह विसर्प, दाह, विस्फोट, कोढ़, कफ, रक्तपित्त, वमन, व्रण और तृष्णाको नष्ट करे । तथा गर्भसंस्थापक और रुचिकर्त्ता है ।

गुग्गुलु (गूगर).

गुग्गुलुर्देवधूपश्चजटायुःकौशिकःपुरः ।
कुस्तालूखलकंक्लीवेमहिषाक्षःपलंकषः ॥ ३१ ॥
महिषाक्षोमहानीलः कुमुदःपद्मइत्यपि ।
हिरण्यःपंचमोज्ञेयोगुग्गुलोःपंचजातयः ॥३२॥
भृंगांजनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः ।
महानीलस्तुविज्ञेयःस्वनामसमलक्षणः ॥३३॥
कुमुदःकुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसंनिभः
हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपंचानांलिंगमीरितम् ॥
महिषाक्षोमहानीलोगजेंद्राणांहितावुभौ ॥
हयानांकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरौपरौ ॥३५॥
विशेषेणमनुष्याणांकनकःपरिकीर्तितः ।
अभावान्महिषाक्षश्चयतःकैश्चिन्नृणामपि॥३६॥
गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तोवीर्योष्णःपित्तलःसरः ।
कषायःकटुकःपाकेकटूरूक्षोलघुःपरः ॥ ३७॥
भग्नसंधानकृद्वृष्यःसूक्ष्मःस्वर्योरसायनः ।
दीपनःपिच्छिलोबल्यःकफवातव्रणापचीः ॥
मेदोमेहाश्मवातांश्चक्लेदकुष्ठाममारुतान् ।
पिडिकाग्रंथिशोफार्शोगंडमालाकृमीञ्जयेत् ।
माधुर्याच्छमयेद्वातंकषायत्वाच्चपित्तहा ।
तिक्तत्वात्कफजित्तेनगुग्गुलुःसर्वदोषहा ॥
सनवोबृंहणोवृष्यःपुराणस्त्वतिलेखनः ।
स्निग्धःकांचनसंकाशःपक्वजंबूफलोपमः ॥४१॥
नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगंधिर्यस्तुपिच्छिलः ।
शुष्कोदुर्गंधकश्चैवत्यक्तप्रकृतिवर्णकः ॥
पुराणःसतुविज्ञेयोगुग्गुलुर्वीर्यवर्जितः ॥ ४२ ॥
अम्लंतीक्ष्णमजीर्णंचव्यवायंश्रममातपम् ।
मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यग्गुणार्थीपुरसेवकः ॥४३॥

अर्थ–गुग्गुलु, देवधूप, जटायु, कौशिक, पुर, कुस्तालू, खलक, महिषाक्ष और पलंकष, [सर्वंगम] इतने **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** गूगर–ल, **बं.** गुग्गुलु, **म.** गुगुल, **गु.** गुगल, **क.** इडबोल, **अ.** मुशकिल अर्जक, **फा.** बोयजुदान, **इं.** बेडल्यम्, **ला.** बाल्सामाडेन्ड्रोन रोकस वरघाई कहते हैं ।

गूगलका बड़ावृक्ष पर्वती जमीनमें होताहै। इसकी छाल से बकल बकलसे उतरते हैं । **पत्ते** छोटे २ नीमके सदृश मिलेहुए परंतु इनमें अनी नहीं होती, **फूल** छोटे २ पांच २ पंखड़ीके मंजरी के बीच उगतेहैं । **फल** छोटे २ खिरनीके समान तीन धारवाले होते हैं । गूगलके वृक्षमेंसे **गूगल** गोंदकी जगहसे

* **चरकसंहितामें**—तगरको शरदी नष्टकर्त्ता, चेतनास्थापक (होशयारीकर्त्ता) कहीहै ।

सुश्रुतसंहितामें—तगरको वातकफहर, विषहर, वर्णप्रसादन, खुजली और कुष्ठनाशक वर्णन करी है ।

निकलती है । गूगल नवीन लेना और प्रयोग में शुद्ध करके डालनी चाहिये । *

गूगलकी पांच जाति हैं; जैसे—महिषाक्ष (भैंसागूगल) महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य तहां भौंराके समान काले रंगकी और भैंसा के नेत्रके समान चमकनेवाली तथा कज्जल सदृश **महिषाक्ष** (भैंसा-गूगल) होती है; **महानील** गूगल अत्यंत नीले रंगकी होती है; **कुमुदाख्य** गूगल का रंग कुमुद (कमोदनी) के समान; **पद्म** गूगलका रंग मानिक रत्नके समान लाल; **हिरण्याख्य** गूगल सुवर्णके समान पीले रंगकी होती है । ए पांचों के लक्षण कहे ।

महिषाख्य और **महानील** जातिकी गूगल **हाथियोंके** वास्ते हितकारी है; **कुमुद** और **पद्म** नामकी गूगल **घोड़ोंके** रोगमें देवे, और **मनुष्योंके** वास्ते **हिरण्य** (सुवर्ण) संज्ञक गूगल देनी चाहिये । यदि **सुवर्ण** गूगल न मिले तो **भैंसा** गूगल लेवे ऐसा किसीका मत है ।

गुण । गूगल विशद, कडवी, उष्णवीर्य, पित्त-कर्त्ता, दस्तावर, कषैली, कटु और पाक इसका चरपरा है । रूक्ष, हलकी, टूटेहुए स्थान को जोड़नेवाली, बलकर्त्ता, सूक्ष्म, स्वरको उत्तम, करता, रसायन, अग्नि-दीपक और पिच्छिल । **प्रयोग** । यह कफ, वादी, व्रण, अपची, मेदरोग, प्रमेह, पथरी, वायु, शरीरका क्लेद, कुष्ठ, आमवात, पिडका, गांठका रोग, सूजन, बवासीर, गंडमाला और कृमिरोगको नाश करे । यह **मधुर** होने से **वादी**, **कषैली** होने से **पित्त**, और **कडवी** होनेसे **कफको** नष्ट करे । अतएव **गूगल** त्रिदोषनाशक है ।

नवीन गूगल पुष्टिकारक और बलवर्द्धक; **पुरानी गूगल** अत्यंत लेखन है । **नवीन गूगल** के ये **चिह्न** हैं कि वह चिकनी, सुवर्ण के समान उज्ज्वल, सुगंधित, पकी जामन के समान हो और पिच्छिल हो । **पुरानी गूगल** सूखी, दुर्गंधयुक्त, स्वाभाविक वर्णादि रहित और हीनवीर्य है ।

पथ्य । गूगल सेवनके समय खटाई, मिरच आदि तीक्ष्णपदार्थ, अजीर्णकर्त्ता पदार्थ, मैथुन करना, परिश्रम, धूपमें डोलना, मद्यपान, क्रोध करना, त्याग देवे ।

जायंतेसुरपादपामरुभुविग्रीष्मेऽर्कसं-
तापिताः शीतार्त्ताःशिशिरेऽपिगुग्गुलु-
रसंमुंचंतितेपंचधा । हेमाभंमहिषाक्ष-
तुल्यमपरंसत्पद्मरागोपमं भृंगाभं-
कुमुदद्युतिंचविधिनाग्राह्यंपरीक्षाततः ॥

अर्थ—गूगल के वृक्ष मारवारदेशकी पृथ्वीमें होते हैं । वह गरमियों की ऋतुमें सूर्यकी धूपसे संतापित हो और शिशिरऋतुमें सरदीके मारे पांचप्रकारके गूगल रसको छोड़ते हैं । जैसे **सुवर्ण** के समान **महिष-नेत्रोपम**, **पद्मरागके** सदृश, **भौंराके** समान और **कुमुदकी** कांतिके सदृश, उस रसको विधिपूर्वक लेकर **परीक्षा** करे ।

परीक्षा ।

वह्नौज्वलंतितपनेविलयंप्रयान्ति
क्लिद्यन्तिकोष्णसलिलेपयसःसमानाः ।
ग्राह्याःशुभाःपरिहरेच्चिरकालजाता-
नंगारवर्णसमपूयविगंधवर्णान् ॥

* **हिंदुस्थानी वैद्य**—गूगलको प्रमेह और अन्य २ बिमारियों में घीके साथ मिलायके तथा खुजली आदि तथा दुष्ट नासूर और घावपर लगानेको **नींबूके** रस और **नारियलके** तेलके साथ मिलायके देनेकी प्रशंसा करते हैं ।

हकीम—गूगलको रुधिरशुद्धकर्त्ता, बलवर्द्धक और दस्तखुलासा लानेवाला मानते हैं । तथा दूसरी सुगंधित द्रव्योंके साथ मिलाय संधिवात और अन्य संधिके रोग, त्वचारोग और मूत्रस्थान के रोगोंमें देनेको कहते हैं ।

चरकसंहितामें—गूगलको पुरीषविरंजनीय (मलका रंग बदलनेवाला), स्वरशुद्धकर, कफहर और मूत्रस्थान तथा फैंफडेकी बीमारी नाशकर्त्ता मानी है ।

सुश्रुतसंहितामें—गूगलको मेद और कफहर तथा योनिदोषहर माना है ।

अर्थ-जो **गूगल** अग्निमें डालने से जल उठे, और धूपमें धरने से पिगल जावे, गरम जलमें डालनेसे गलकर जलके समान होजावे, इत्यादि लक्षणवाली **गूगल उत्तम** होती है। तहां तत्कालकी उत्पन्न हुईको वैद्य ग्रहण करें। और जो पुरानी है तथा जिसका रंग अंगारे के समान है, जिसमें राधके समान दुर्गंध आती हो वह निकृष्ट है, ऐसी गूगलको औषधमें नहीं लेनी चाहिये। गूगलकी **मात्रा** ३ माशे की है। **दर्पनाशक** कतीरा और केशर है। बहुत खाना इसका रूह और जिगरको नुकसान करे है।

कणगुग्गुलु.

गंधराजः स्वर्णकणः सुवर्णः कणगुग्गुलुः।
कनकोवंशपीतश्चसुरसश्चपलंकषा॥
कणगुग्गुलुःकटूष्णःसुरभिर्वातनाशनः।
शूलगुल्मोदराध्मानकफघ्नश्चरसायनः॥

अर्थ-गंधराज, स्वर्णकण, सुवर्ण, कणगुग्गुलु, कनक, वंशपीत, सुरस और पलंकषा, ए **कणगूगल**के **संस्कृत** नाम है। **गुण**। **कणगूगल** चरपरी, गरम, सुगंधित, वातनाशक और रसायन है। **प्रयोग**। शूल, वायुगोला, उदर, अफरा और कफको नष्ट करे है।

भूमिजगुग्गुलु.

गुग्गुलुश्चतृतीयोऽन्योभूमिजोदैत्यमेदजः।
दुर्गाह्लादाइडाजाताआशादिरिपुसंभवः॥
मज्जाजोमेदजश्चैवमहिषासुरसंभवः।
गुग्गुलुर्भूमिजस्तिक्तःकटूष्णःकफवातजित्।
उमाप्रियश्चभूतघ्नोमेध्यसौरभ्यदःसदा॥

अर्थ-तीसरी **भूमिजगूगल** है उसके **संस्कृत** नाम-भूमिज, दैत्यमेदज, दुर्गाह्लादा, इडाजाता, आशादिरिपुसंभव, मज्जाज, मेदज और महिषासुरसंभव। **गुण**। **भूमिजगूगल** कड़वी, चरपरी, कफवातको दूर करे, दुर्गाको परम प्रिय है। भूतनाशक, पवित्र और सदैव सुगंध देनेवाली है। यह काशी आदिमें प्रसिद्ध है।

सरलनिर्यासगुग्गुलु.

श्रीवासःसरलस्रावःश्रीवेष्टोवृक्षधूपकः।
श्रीवासोमधुरस्तिक्तःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः॥
पित्तलोवातमूर्धाक्षिस्वररोगकफापहः।
रक्षोघ्नःस्वेददौर्गंध्ययूकाकंडुव्रणप्रणुत्॥ ४५॥
स्वेदनश्चकफोत्सारीशोणितस्रुतिवारणः।
आक्षेपहरणोमूत्रजननोज्वरनाशनः।
वेदनाशमनोबल्यआमवातप्रशांतिकृत्॥

अर्थ-श्रीवास, सरलस्राव, श्रीवेष्ट और वृक्षधूपक, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** सरलका गोंद, गुगरी, इसे चंद्रस भी कहते हैं। **बं.** टार्पिन् तेल, यह सरलवृक्षका गोंद है।

गुण। यह मधुर, कड़वा स्निग्धोष्ण, कषेला, दस्तावर, पित्तकर्त्ता, राक्षसादिके भयका नाशक, पसीने लानेवाला, कफको निकालनेवाला, मूत्रकर्त्ता, पीडानाशक और बलकारी। **प्रयोग**। इसके द्वारा बादी, मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभंग, कफ, स्वेद, दुर्गंध, कृमि, खुजली, व्रण, रुधिरका गिरना, आक्षेपवायु, ज्वर और आमवात ए दूर हों।

राल.

रालस्तुशालनिर्यासस्तथासर्जरसःस्मृतः।
देवधूपोयक्षधूपस्तथासर्वरसश्चसः॥ ४६॥
रालोहिमोगुरुस्तिक्तःकषायोग्राहकोहरेत्।
दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः।
ग्रहभग्नाग्निदग्धाश्रीशूलातीसारनाशनः॥ ४७

अर्थ-राल, शालनिर्यास, सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप और सर्वरस, ए **संस्कृत**। **हिं.** रार, राल, धुना, **पंजाब**में राल अर्तु, **क.** सर्जरस, **अ.** कीर्वा कहकर, **ला.** सोरिआ रोबष्टा, **इं.** रेजीन कहते हैं यह शालवृक्षका गोंद है। *

* **मखजनउल्अदवियामें**—लिखाहै कि बीमार मनुष्यके मकानमें **राल**की धूनी देना बहुत फायदा करेहै। रालका वृक्ष जैसे-जैसे बड़ा होताहै उसी-उसी प्रकार उसकी लकड़ियोंके बीचमें राल अधिक जमती जायहै, और उस लकड़ी की छाल गिरती जायहै। पुराने नासूरके घावपर **रालकी मल्हम** लगाना अत्यंत उपयोगी है।

गुण। शीतल, भारी, कड़वा, कषेला और ग्राहक। **प्रयोग।** यह वातादिदोष, रुधिरदोष, पसीने, विसर्प, ज्वर, व्रण, विपादिका, ग्रह, भग्नरोग, अग्निदग्ध, शूल और अतिसार रोगको दूर करे। **मात्रा** ७ रत्ती है। **प्रतिनिधि** इसका कुंदरू है और मिश्री इसकी **दर्पनाशक** है।

कुंदरु.

कुंदुरुस्तुमुकुंदःस्यात्सुगंधःकुंदइत्यपि।
कुंदुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यःकटुर्हरेत्॥
ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफाऽनिलान्।

अर्थ–कुंदुरु, मुकुंद, सुगंध और कुंद, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कुंदरू, सुगंधद्रव्य, **बं.** कुंदरखोटी, **म.** शालईडीक, **क.** इडवोल, **गु.** किंदरु, शेशगुंदर, **तै.** कुन्दुरुमू, **फा.** लोबान, **ला.** वटरिया इंडीका कहते हैं। यह शल्लकीका गोंद है।

गुण। मिष्ट, कड़वी, तीक्ष्ण, कटु और त्वचाको हितकर। **प्रयोग।** यह ज्वर, स्वेद, ग्रह, अलक्ष्मी, मुखरोग, कफ, वादी, दाह, प्रदर और पित्तसंबंधी पीडाको दूर करे। इसका लेप शीतलता करे है। **मात्रा** ६ रत्तीकी है। **प्रतिनिधि** दोनों वहमन अथवा रूमीमस्तगी है। **दर्पनाशक** इसकी उन्नाव है।

शिलारस.

सिल्हकस्तुतुरुष्कःस्याद्यतोयवनदेशजः।
कपितैलंचसंख्यातस्तथाचकपिनामकः॥४६॥
सिल्हकःकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःशुक्रकांति-
कृत्। वृष्यःकंठ्यःस्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः॥

अर्थ–सिल्हक, तुरुष्क, यवनदेशज, कपितैल, ए **संस्कृतनाम** । तथा जितने वानरवाचक शब्द हैं, सब इसके नाम हैं। **हिं.** शिलारस, **दक्षिणमें** पिंडतैल, **क.** पिंडतैल कहते हैं। **इं.** लिक्विडएम्बर।

गुण। कटु, स्वादु, स्निग्धोष्ण, शुक्रल, कांतिकारक, बलकर और कंठशोधक। **प्रयोग।** **शिलारस** स्वेद, कोढ, ज्वर, दाह, ग्रहदोष, मूत्राघात, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और खुजली, इन सबको नष्ट करे। **मात्रा** ४ रत्तीकी है।

जायफल.

जातीफलंजातिकोशंमालतीफलमित्यपि।
जातीफलंरसेतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरोचनंलघु॥५१॥
कटुकंदीपनंग्राहिस्वर्यंश्लेष्मानिलापहम्।
निहंतिमुखवैरस्यंमलदौर्गंध्यकृष्णताम्।
कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः॥५२॥
मूत्रघाताश्मरीमूत्रकृच्छ्रकंडुविनाशनः॥

अर्थ–जातिफल, जातिकोश और मालतीफल ए **संस्कृत** नाम। प्रायः **हिंदुस्तानके** सर्व भाषाओंमें जायफल कहते हैं। **ता.** जोदिकराय, **तै.** जाजीकाया, **ब्रह्मी.** जादिच्चु, **अ.** जोजवूया, **फा.** जोजउल्तीव, **इं** नटमग् **ला.** मीरीस्टीका Myristica नामसे कहते हैं। इसका **वृक्ष** बड़ा होता है, उसके **फल** जामुनके समान बड़े होते हैं। इसकी **छाल** निकाल डालनेसे लाल गुच्छा निकलताहै, उसको **जावित्री** जाननी। थोड़ी देरमें उसका रंग पीला होजाताहै। इसके भीतर कठोर छालका **बीज** होताहै। उसके तोड़नेसे **जायफल** निकलता है। अर्थात् जायफल इस फलका बीज है।

गुण। **जायफल** कडवा, तीक्ष्णोष्ण, रोचक, लघु, कटु, दीपन, ग्राही और स्वरशोधक है। **प्रयोग।** **जायफलके** सेवन करनेसे वादी, कफ, मैलकी दुर्गंध और कृष्णवर्ण, कृमि, खांसी, वमन, श्वास, शोष, पीनस, हृद्रोग मूत्राघात, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और खुजली इनको नष्ट करे। **मात्रा** २ माशेकी है। **प्रतिनिधि** जावित्री है। यदि अधिक खानेसे अवगुण करे तो इसके **दर्पनाशक** बनफसा और धनियां हैं।

जावित्री.

जातीफलस्यत्वक्प्रोक्ताजातीपत्रीभिषग्वरैः।
जातीपत्रीलघुःस्वादुःकटूष्णारुचिवर्णकृत्॥
कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ५३
रक्तवैशद्यजननीतिक्तादौर्गंध्यनाशिनी।

अर्थ–**जायफलकी** त्वचाको **सं.** जातीपत्री कहते हैं। **हिं.** जावित्री, **बं.** जायित्री, **म.** जायपत्री, **कोंकणमें** पत्री, **गु.** जावंत्री, **तै.** जाजीपत्री, **अ.**

विसवासह, **फा.** वजवार, **इं.** मेस, **ला.** मिरिष्टिका फूंगस कहते हैं।

गुण। **जावित्री** हलकी, स्वादु, चरपरी, गरम, रुचिकारक, वर्णको उज्ज्वल करे। मुखको स्वच्छ करे, कड़वी और दुर्गंधिनाशक है। **प्रयोग।** कफ, श्वास, खांसी, वमन, तृषा, कृमि, विषदोष, इन सबको नष्ट करे। **मात्रा** ३॥ माशेकी है। **प्रतिनिधि** जायफल, **दर्पनाशक** गुलाबके फुल और अरबी बब्बूलका गोंद है।

लौंग.

लवंगंदेवकुसुमंश्रीसंज्ञंश्रीप्रसूनकम्।
लवंगंकटुकंतिक्तंलघुनेत्रहितंहिमम्॥ ५४॥
दीपनंपाचनंरुच्यंकफपित्तास्रनाशकृत्।
तृष्णाच्छर्दितथाध्मानंशूलमाशुविनाशयेत्॥
कासंश्वासंचहिक्कांचक्षयंक्षपयतिध्रुवम्॥५५॥

अर्थ—लवंग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञक और श्रीप्रसून ए **संस्कृत** नाम **हिं.** लौंग, **बं.** लवंग, **गु.** लवींग, **तै.** किरमवेर, **अ.** करनफल, **फा** मेहक, **इं.** कलव्ज, **ला.** काफिओफिईलस Cafyophyllus. कहते हैं। यह यवद्वीप, वलीद्वीप, चीन, यूरप आदि स्थानोंमें यहांसे जाती है।

गुण। **लौंग** कटु, तिक्त, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, दीपन, पाचन, रुचिकारी। **प्रयोग।** कफ, पित्त, रुधिरके विकार, तृषा, वमन, अफरा, शूल, खांसी, श्वास, हिचकी और क्षयरोग, इनको शीघ्र दूर करे। **मात्रा** ३॥ माशेकी है। **प्रतिनिधि** दालचीनी, कुलिंजन, और जायफल है। **दर्पनाशक** अरबी बंबूलका गोंद है। यह रसयुक्त, नवीन, लंबी, लाल और कालेरंगकी तथा मोटी लौंग **उत्तम** होती है। यह प्रायः **मसाले**में डाली जातीहै। *

इलायची बड़ी वा पूर्वी.

एलास्थूलाचबहुलापृथ्वीकात्रिपुटापिच।
भद्रैलाबृहदेलाचचंद्रबालाचनिष्कुटिः॥ ५६॥
स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृल्लघुः॥
रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डुश्वासतृषापहा॥
हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत्॥

अर्थ—स्थूलएला, बहुला, पृथ्वीका, त्रिपुटा, भद्रैला, बृहदेला, चंद्रबाला और निष्कुटि ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** बड़ी इलायची, लायची, **बं.** पूर्वीइलायची, **वं.** बडएलाइच, **म.** वेलदोडा, थोरवेला, **तै.** पेद्दएलकुलु, **ता.** एलम्, **का.** यरढूलकी, **गु.** एलची, **अ.** कंकलेकीबर, **फा.** हेलकलां, **ला.** अमोमम् Amomum

गुण। **बड़ी इलायची** रस और पाकमें कटु (चरपरी) अग्निकारक, हलकी, रूक्ष और गरम। **प्रयोग।** यह कफ, रक्तपित्त, खुजली, श्वास, प्यास, हल्लास (उबाकी लेना), विषरोग, खांसी, वमन, बस्तिरोग, मुखरोग और शिररोग, इनको नष्ट करे। **मात्रा** १॥ माशे है। **प्रतिनिधि** छोटी इलायची, **दर्पनाशक,** गुलाबके फूल हैं।

* **हिंदुस्थानी वैद्य**—लौंगको गरम, पाचक, कफ नष्टकर्ता, कुपित आमको विठालनेवाली मानते हैं। उसीप्रकार पेटकी एंठन नष्टकर्त्ता, तथा प्यास बंद करनेको और वमन तथा वायुआदिके दूर करनेको औषधके तरीके देते हैं।

यूनानी हकीम—लवंगको खुश्क और गरम गिनतेहैं और देहके बाहरी भागमें लगानेको अथवा खानेमें आवे तो उसको विषके असर न्यून करनेकी तथा मांथेके दूखने के नष्टकरनेकी इसमें शक्ति है ऐसा मानतेहैं। तथा वह ऐसाभी मानतेहैं कि इसके चूर्णको खाने या लगानेसे मसूढे मजबूत होते हैं, श्वास सुगंधित निकलेहै, कफ बैठ जाताहै, तथा पाचनशक्ति बढेहै।

इंगरेजी औषधोंमें—लौंगको गरम, जागृतकर्त्ता तथा पेटकी पीडा नष्टकर्त्ता मानाहै। तथा बदहज्मी और अन्य २ बीमारियोंमें अनेक पदार्थोंके साथ मिलायके देते हैं। गर्भवती स्त्रियोंको यदि उलटी होती होय तो लवंगको गरम जलमें भिगोयके उस जलके पिलानेकी प्रशंसा करतेहैं।

गुजराती [छोटी] इलायची.

सूक्ष्मोपकुंचिकातुत्थाकोरंगीद्राविडीत्रुटिः। एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत्। रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरीमता ॥ ५८ ॥

अर्थ–सूक्ष्मैला, उपकुंचिका, तुत्था, कोरंगी, द्राविडी और त्रुटि, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** गुजराती इलायची, छोटी इलायची, **बं.** छोट एलाइच, **म.** लघुवेला, एलदोडा, **गु.** एलचीकागदी, **तै.** एलाकु,–इसके भी नाम अन्य भाषाओंमें बड़ी इलायचीके समान हैं । **अ.** काकले सगीर–खीर, ववावहीलखुर्द, **ला.** इलेटिरिया । यह मलेवारमें बहुत होती है । **चित्र** नंबर ११ देखो ।

गुण । यह चरपरी, शीतल, हलकी, और वायुनाशक । **प्रयोग** । यह कफ, खांसी, श्वास ववासीर और मूत्रकृच्छ्र रोगको शमन करे । **प्रतिनिधि** बड़ी इलायची, **दर्पनाशक** गुलावके फूल या मिश्री है ।

तज.

त्वक्पत्रंचवरांगंस्याद्भृंगंचोचंतथोत्कटम्। त्वचंलघूष्णंकटुकंस्वादुतिक्तंचरूक्षकम् ॥५९॥ पित्तलंकफवातघ्नंकंड्वामारुचिनाशनम्। हृद्बस्तिरोगवातार्शःकृमिपीनसशुक्रहृत् ॥६०॥

अर्थ–त्वक्पत्र, वरांग, भृंग, चोच और उत्कट, यह **संस्कृत** नाम । **हिं.** तज कहते हैं । यह दालचीनीका भेद है । अर्थात् मोटी छालकी **तज** और बारीक छालकी **दालचीनी** कहाती है ।

गुण । **तज** हलकी, उष्ण, कटु, स्वादु, तिक्त, रूक्ष और पित्तकर्त्ता । **प्रयोग** । यह कफ, वादी, खुजली, आम, अरुचि, हृदयका रोग, वातार्श, कृमि, पीनस इनको हरण करे और शुक्रको क्षय करे ।

दालचीनी.

त्वक्स्वाद्वीतुगुडत्वक्स्यात्तथादारुसितामता। उक्तादारुसितास्वाद्वीतिक्ताचानिलपित्तहृत् ॥ सुरभिःशुक्रलावर्ण्यामुखशोषतृषापहा ॥ ६१ ॥

अर्थ–स्वादुत्वक्, गुडत्वक् और दारुसिता, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** दालचीनी, **बं.** दारुचीनी, **ता.** कारुवाकरु उपट्टाई, **तै.** डारचीनी, **अ.** सलीखा, **ब्र.** मिटस्यावो, **लुसाई** थ्याक, थ्विन, **इं.** सीनामम कहते हैं । दालचीनी का बड़ा भारी वृक्ष होता है । इसकी छाल और तेल काममें आते हैं । यह मलेवार, लंका और चीनकी तरफसे आती है। **चित्र** नंबर १२ का देखो ।

गुण । दालचीनी, मीठी, कड़वी, सुगंधित, शुक्रजनक, तथा शरीरका उत्तम वर्णकर्त्ता । **प्रयोग** । यह वात, पित्त, मुखशोष और तृषा इनको दूर करे । **मात्रा** ६ माशे, **प्रतिनिधि** कुलीजन, सुगंधवाला, तालीसपत्र और तज, **दर्पनाशक** खांड और मिश्री है ।

पत्रज.

पत्रंतमालपत्रंचतथास्यात्पत्रनामकम्। पत्रकंमधुरंकिंचित्तीक्ष्णोष्णंपिच्छिलंलघु ॥ निहंतिकफवातार्शोहृल्लासारुचिपीनसान्।

अर्थ–पत्र, तमालपत्र और जितने पत्रके पर्यायवाचक शब्द हैं सब पत्रजके जानने । **हिं.** पत्रज, तेजपात, **बं.** तेजपत्र, **म.** तमालपत्र, संभारपान, **तै** आकुपत्री, **क.** पत्रक, **फा.** साजज, **ला.** सीनामोमी टमाला । इसको स्वादिष्ट करनेकेवास्ते औषधोंमें डालते हैं । इसके तालीसपत्रके पत्तोंसे मोटे पत्ते होते हैं । दालचीनीके वृक्ष के पत्तोंको **पत्रज** कहते हैं ।

गुण । **पत्रज** कुछ मधुर, तीक्ष्णोष्ण, पिच्छिल और लघु । **प्रयोग** । यह कफ, वादी, ववासीर, उवाकी, अरुचि और पीनस रोगको दूर करे । **मात्रा** ३॥ माशे या ४॥ माशे की है । **प्रतिनिधि** वालछड़, इसका बहुत खाना फैंफडेको नुकसान करता है । इसकी **दर्पनाशक** रूमीमस्तंगी है ।

नागकेशर.

नागपुष्पःस्मृतोनागःकेशरोनागकेशरः। चांपेयोनागकिंजल्कःकथितःकांचनाह्वयः ॥ नागपुष्पंकषायोष्णंरूक्षंलघ्वामपाचनम्। ज्वरकंडुतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥ दौर्गंध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ ६४ ॥

अर्थ–नागपुष्प, नाग, केशर, नागकेशर, चांपेय, नागकिंजल्क और कांचनके जितने **संस्कृत** में पर्यायवाचक शब्द हैं सब इसके जानने। **हिं**. नागकेशर, **बं**. नागेसर, **ता**. नांगल, **फा**. नारमुश्क और सर्व हिंदुस्थानकी भाषामें इसी नाम से प्रसिद्ध है। **ला**. मेसिआ फेरिआ। यह पुन्नाग नामक वृक्षके सूखे हुए गोलाकार फूल हैं। पुन्नागका बड़ा वृक्ष होताहै। **मरेठीमें** इसको **उंडी** कहते हैं।

गुण। कषेला, गरम, रूक्ष, हलका और आमपाचक। **प्रयोग**। ज्वर, खुजली, तृषा, पसीने, वमन, हृल्लास, दुर्गंधि, कुष्ठ, वीसर्प, कफ, पित्त और विषदोष इनको नष्ट करे। *

त्रिजातक.

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगंधित्रिजातकम्।
नागकेशरसंयुक्तंचातुर्जातकमुच्यते॥ ६५॥
तद्द्वयंरोचनंरूक्षंतीक्ष्णोष्णंमुखगंधहृत्।
लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यंकफवातविषापहम्॥६६॥

अर्थ–दालचीनी, बड़ी इलायची और तेजपात इन तीन द्रव्योंको **त्रिसुगंधि** और **त्रिजातक** कहते हैं। और इस **त्रिजातकमें** नागकेशर मिलाने से **चातुर्जात** कहते हैं।

गुण। रोचक, रूक्ष, तीक्ष्ण, गरम, मुखकी दुर्गंधनाशक, लघु, पित्तकर्त्ता जठराग्निवर्धक, सुंदर वर्णकर्त्ता, कफनाशक, वातनाशक और विषहरण कर्त्ता है।

केशर.

कुंकुमंघुसृणंरक्तंकाश्मीरंपीतकंवरम्।
संकोचंपिशुनंधीरंवाल्हीकंशोणिताभिधम्॥
काश्मीरदेशजेक्षेत्रेकुंकुमंयद्भवेद्धितत्।
सूक्ष्मकेशरमारक्तंपद्मगंधितदुत्तमम्॥ ६८॥
वाल्हीकदेशसंजातंकुंकुमंपांडुरंमतम्।
केतकीगंधयुक्तंतन्मध्यमंसूक्ष्मकेशरम्॥ ६९॥
कुंकुमंपारसीकेयस्मधुगंधिसदीरितम्॥
ईषत्पांडुरवर्णंतदधमंस्थूलकेशरम्॥ ७०॥

अर्थ–**केशरके** पर्यायवाचक नाम कुंकुम, घुसृण, काश्मीर, वाल्हीक और रक्तवाचक जितने **संस्कृतमें** नाम हैं सब केशरके जानने। **हिं**. केशर, **बं**. कुंकुम, **तै**. कुंकुमपुवु, **अ**. लरकीमास, **फा**. जाफरान्, **ला**. Caocusrotundus कोकसूरोटन्डस्, **इं**. सॅफ्रन। यह क्षुपजातिके फूलकी केशर है। नवीन लाल रंगकी, तेज गंधवाली केशर **उत्तम** होती है।

कश्मीर, बाल्हीक (बलख) और पारसीक (ईरान्) इन तीन देशोंमें केशर **उत्पन्न** होतीहै। इनमें **कश्मीर** देशमें जो केशर होतीहै वह बहुत छोटे २ वारीक वालोंकेसमान और कुछ २ रक्तवर्ण तथा कमलकी गंधके समान होतीहै। यह सब केशरोंसे **उत्तम** है। **बाल्हीक** अर्थात् **बलख** देशकी केशर पीले रंगकी और उसमें केतकीके फूलसमान सुगंध आती है, तथा बारीक होतीहै यह **मध्यम** है और **फारस** देश अर्थात् **ईरान्**की केशरकी गंध शहदके समान और इसका वर्ण कुछ २ पीला और इसके सब तंतु मोटे होते हैं, यह **अधम** केशर है।

अव्यक्तरक्तिमामोदिमर्दनात्कर्णिकात्मकम्।
स्थिररागंकरेलग्नंभग्नंकेशरमुत्तमम्।
हीनंयदग्निकाश्मीरंगरंपांडुरकेशरम्।
कुंकुमंकटुकंस्निग्धंशिरोरुग्व्रणजंतुजित्॥
तिक्तंवमिहरंवर्ण्यंव्यंगदोषत्रयापहम्॥ ७१॥

अर्थ–जिसमें लाली कम हो, सुगंधयुक्त, मीडनेसे कमलकी केसरके समान रंग हाथोंसें चिपट जावे वह केशर श्रेष्ठ है। और अग्निके रंगकी पीली केशर त्याज्य है इसमें विष होताहै।

गुण। **केशर** चरपरी, स्निग्ध, कडवी वमननाशक और देहके वर्णको उज्वल कर्त्ता है। **प्रयोग**। मस्तकरोग, व्रण, कृमि (कीडा), व्यंग (झांई)

* **हिन्दुस्तानी वैद्य**—नागकेशरके सूखेहुए फूलोंको पीस घीके साथ मिलायके दूखते हुए बवासीर तथा पैरके तलुएमें होनेवाली जलन दूर करनेको इसकी प्रशंसा करते हैं। तथा इस वृक्षकी **छाल** और **जड़**को पानीमें भिगोयदे, इस पानीके पीनेसे पाचनशक्ति बढ़े है। तथा बीजोंको दुचलके निकाले हुए तेलको संधिवातपर लगानेको कहते हैं।

इन रोगोंको नष्ट करे। **मात्रा** १ माशे। **प्रतिनिधि** तज और इसके **दर्पनाशक** अनेसूं (रूमीसोंफ) और सेवकी जवारिश है।

तृणकेशर.

तृणकुंकुमंतृणास्रंगंधितृणंशोणितंचतृणपुष्पम्
गंधाधिकंतृणोत्थंतृणगौरंलोहितंचनवसंज्ञम
तृणकुंकुमंकटुष्णंकफमारुतशोफनुत्।
कंडूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नंभास्करंपरम्॥

अर्थ–तृणकुंकुम, तृणास्र, गंधितृण, शोणित, तृणपुष्प, गंधाधिक, तृणोत्थ, तृणगौर और लोहित, ए नौ नाम **तृणकेशरके** हैं। यह भी कश्मीरमें होती है। यह तिनकेकी जाति है। **गुण**। कटु और गरम है। वादी, सूजन, खुजली, पामा, कोढ़, आमके दोष इनको दूर करे और देहमें कांति करे है।

गोरोचन.

गोरोचनातुमंगल्यावंद्यागौरीचरोचना।
गोरोचनाहिमावृष्यावश्यामंगलकांतिदा॥
विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत्॥

अर्थ–गोरोचना, मंगल्या, वंद्या, गौरी और रोचना ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** गोरोचन, गोलोचन, **बं.** गोरोचना, **अ.** हजरुलवक्कर, **तै.** गोरोचनमु और प्रायःसमग्र हिंदुस्थानी भाषाओं में इसी नाम से प्रसिद्ध है। **इं.** गोलस्टोन्, कहते हैं। यह गौ अथवा बैलके पित्ताशय मेंसे कंकरके समान निकलता है। उसको **गोलोचन** कहते हैं। इसका **रंग** लाल, पीला, नारंगी के समान होता है। इसको तोड़नेसे एक ऊपर एक नीचे परत मालूम होता है। यह कंकरी, सुपारी से लेकर नीबूतक बड़ी होती है, परंतु कठोर नहीं होती। इसी प्रकार बकरीके और ऊंटके पेटमें से भी कंकरी निकलती है। **गुण गोरोचन** शीतल (कड़वा), बलकारक, वशीकरण कर्त्ता, मंगल और कांतिको देता है। विषनाशक और अलक्ष्मीको निवारण करे। **प्रयोग**। घावसे रुधिर जानेको अथवा गर्भस्रावके रुधिर गिरनेको दूर करे। ग्रहजन्य तथा दोषजन्य उन्मादरोगको हरण करे है। **मात्रा** ३ रत्ती तक है।

नख–नखी.

नखंव्याघ्रनखंव्याघ्रायुधंतच्चक्रकारकम्।
नखंस्वल्पंनखीप्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी॥
नखद्रव्यंग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत्।
लघूष्णंशुक्रलंवर्ण्यंस्वादुव्रणविषापहम्॥
अलक्ष्मीमुखदौर्गंध्यहृत्पाकरसयोःकटुः।

अर्थ–नख, व्याघ्रनख, व्याघ्रायुध, चक्रकारक, ए नखके नाम हैं। **म.** नखला, **फा.** नाखून पर्या, **अ.** अजफारुतिब्ब। छोटे नखको **नखी** कहते हैं। इसके पर्यायवाचक शब्द–हनु और हट्टविलासिनी। यह सुगंधित पदार्थ इसी नामसे प्रसिद्ध है। **दोनों के गुण**। **नखद्रव्य** हलका, गरम, शुक्रोत्पादक, वर्णकर्त्ता, **रस** में मिष्ट और **पाक**में चरपरा, ग्रह और अलक्ष्मीनाशक। **प्रयोग**। व्रण विषजन्यपीड़ा, मुखकी दुर्गंधआदि रोगोंको दूर करे।

नेत्रवाला.

वालंह्रीबेरबर्हिष्ठोदीच्यंकेशांबुनामच।
बालकंशीतलंरूक्षंलघुदीपनपाचनम्॥
हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित्७५

अर्थ–वाल, ह्रीबेर, बर्हिष्ठ और उदीच्य तथा केशवाचक और जलवाचक सब शब्द इस **नेत्रवालाके** नाम जानने; ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** नेत्रवाला, सुगंधवाला, **बं.** वाला, **गु.** वालो, **तै.** वाट्टिवेल्लू. **क.** वालदवेरू. **फा.** असारूं, **इं.** एनड्रोमोगन्। यह एक प्रकारका सुगंधित तृण होता है। परन्तु पंसारी लोग इसकी जगह नाडीके सूखे सागको देते हैं। सो नहीं लेना चाहिये। **गुण**। शीतल, रूक्ष, हलका, दीपन और पाचक। **प्रयोग**। हृल्लास, अरुचि, विसर्प, हृदयरोग और आमातिसार, इनको दूर करे। **मात्रा** १ माशेकी है।

वीरण.

स्याद्वीरणंवीरतरुर्वीरंचबहुमूलकम्।
वीरणंपाचनंशीतंवांतिहृल्लघुतिक्तकम्॥७६॥
स्तंभनंज्वरनुद्भ्रांतिमदघ्नजित्कफपित्तहृत्।
तृष्णास्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम्॥

अर्थ–वीरण, वीरतरु, वीर और बहुमूलक, यह

संस्कृत नाम । हिं. वीरन, बं. व्याणातृण, म. कालावाला, तै. नलवादीवेरु, क. वालदवेस, ता. वेत्तेवेर । यह भी एक सुगंधद्रव्य है। गुण । पाचक, शीतल, वमननाशक, हलका, कड़वा, स्तंभक और कफपित्तनाशक । प्रयोग । ज्वर, मस्तपना, तृषा, रुधिरविकार, विषरोग, विसर्प, प्रबलदाह और व्रणरोग, इन पर देवे । मात्रा १ माशेकी है ।

उशीर (खस)

वीरणस्यतुमूलंस्यादुशीरंनलदंचतत् ।
अमृणालंचसेव्यंचसमगंधिकमित्यपि ॥ ७८ ॥
उशीरंपाचनंशीतंस्तंभनंलघुतिक्तकम् ।
मधुरंज्वरहृद्वांतिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ॥७९॥

अर्थ–वीरणतृणकी जड़को उशीर अथवा खस कहतेहैं। इसके पर्यायवाचक शब्द–उशीर, नलद, अमृणाल, सेव्य और समगंधिक कहते हैं । हिं खस, बं. व्याणारमूल, म. पीलावाला, कालावाला, वाला, का. वालदवेस, इं. अंड्रोपोगन म्यूरीकेटूस । यह गांडर घासकी जड़ है । गुण । पाचक, शीतल, हलका, तिक्त, स्तंभन, मधुर और कफपित्तनाशक । प्रयोग । ज्वर, मद, तृषा, वीसर्प, विषदोष, तीव्रदाह और व्रणरोग इनको दूर करे । मात्रा २ माशेकी है ।

जटामांसी.

जटामांसीभूतजटाजटिलाचतपस्विनी ।
मांसीतिक्ताकषायाचमेध्याकांतिबलप्रदा ॥
स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ८०

अर्थ–जटामांसी, भूतजटा, जटिला, तपस्विनी, और मांसी ए संस्कृत नाम हैं । हिं. बं. जटामांसी, गु. बालछड़, फा. सुंबुल, अ. सुंबुलुतीब, क. बहुलगंध और सब भाषाओंमें इसी नाम से प्रसिद्ध है । ला. नार्डोस्टीक्टस कहते हैं - इसका वृक्ष सुगंधदार होता है। इसकी जड़ कुछ२ कड़वी होती है । गुण । कड़वी कषैली, स्मरणशक्ति बढ़ानेवाली, बलकारक, कांतिप्रद, स्वादु, शीतल, त्रिदोष और रूक्षतानाशक । प्रयोग । रुधिरके दोष, दाह, अपस्मार (मृगी) कोढ़, ज्वर और अनेक प्रकारके चर्मरोग अर्थात् कोढ़रोग इनको दूर करे । प्रयोगमें इसकी जड़ ६ रत्ती लीनी जाती है ।

भूरिछरीला.

शैलेयंतुशिलापुष्पंवृद्धंकालानुसार्यकम् ।
शैलेयंशीतलंहृद्यंकफपित्तहरंलघु ॥
कण्डुकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्गुदरक्तहृत् ॥८१॥

अर्थ–शैलेय, शिलापुष्प, वृद्ध और कालानुसार्यक ए संस्कृत नाम । हिं. भूरिछरीला, छड़, पत्थरका फूल बं. शैलज, म. दगड़फूल, का. कल्हू, अ. आशीना

*मखजनमें–लिखा है कि जटामांसी पेटके विकार निकालने वाली है, जागृत करता, साफ पेशाब लाने वाली और पित्तको निकालने वाली कही है । फेंफड़ेकी बिमारी में तथा ज्ञानतंतुओं के बलिष्ठ करने में तथा हिस्टरिया के रोगमें देनेकी प्रशंसा करते हैं । और इस प्रकार कहा है कि इस के उपयोग से मस्तकके बाल काले और लंबे होते हैं ।

डा. एन्स्ली–कहता है कि, इस पदार्थ में से मस्तक में डालने का सुगंधित तेल निकलता है, तथा रुधिर शुद्ध करनेको इसे खानेके वास्ते देते हैं ।

सरविलियम् ओधशांगनेसी–जटामांसीको वेलेरियन् दवाके पलट में वर्त्तनेकी तारीफ करता है।

चरकसंहितामें–इसे विकृति, चेतनास्थापन और उन्माद, अपस्मार तथा वादी के विकारोंके ऊपर अक्सीर दवा मानते हैं ।

सुश्रुतसंहितामें–इसे वातकफ-हरणकर्त्ता, वर्णप्रसादन, दुष्टखुजली-नष्टकर्त्ता और पीडाशामक वर्णन करी है ।

फा. दहाल । **गुण** । शीतल, हृदयको हितकारी, हलका और कफपित्तनाशक । **प्रयोग** । खुजली, कुष्ट, पथरी, दाह, विषदोष और खूनी बवासीर आदि रोगोंको हरण करे । **मात्रा** ३॥ माशे से ७ माशेतक है । **प्रतिनिधि** किरमानी अजमायन और **दर्पनाशक** सौंफ है ।

मुस्तक (मोथा)

मुस्तकंनस्त्रियांमुस्तंत्रिषुवारिदनामकम् ।
कुरुविंदश्चसंख्यातोऽपरःक्रोडकसेरुकः ॥
भद्रमुस्तंचगुंद्राचतथानागरमुस्तकः ॥ ८२ ॥
मुस्तंकटुहिमंग्राहितिक्तंदीपनपाचनम् ।
कषायंकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजंतुहृत् ८३
अनूपदेशेयज्जातंमुस्तकंतत्प्रशस्यते ॥-
तत्रापिमुनिभिःप्रोक्तंवरंनागरमुस्तकम् ॥८४॥

अर्थ–मुस्तक, मुस्त, कुरुविन्द, क्रोड, कसेरुक, और जितने मेघवाचक संस्कृतमें शब्द हैं सब इसके नाम हैं । **हिं.** मोथा, **बं.** मुथा, **गु.** मोथ, **क.** भद्रमुस्त, **तै.** तुंगमुस्त, **अ.** सादकफी, **फा.** मुश्कजमीन, **ला.** साइ-पेरसरोटंडस Cyperus rotundus कहते हैं । **भद्रमुस्तक** के नाम भद्रमुस्ता, गुंद्रा, नागरमुस्तक, **हिं.** नागरमोथा । यह क्षुपजातिकी वनस्पति है । **गुण** । चरपरा, शीतल, ग्राही, कड़वा, दीपन, कषेला और पाचक । **प्रयोग** । कफवृद्धि, रक्तपित्त, तृषा, ज्वर, अतिसार और कृमिरोग आदि नष्ट करे । अनूप (जलप्राय पृथ्वी) में जो प्रकट होवे उसको **मोथा** कहते हैं । इसमें भी मोथा और नागरमोथा दो भेद है । इनमें नागरमोथा **प्रयोग** में लेना चाहिये । **मात्रा** २ माशे, **प्रतिनिधि** पीपलामूल और दालचीनी है । **दर्पनाशक** सौंफ, खीरेके बीज और चंदन है ।

कचूर.

कर्चूरोवेधमुख्यश्चद्राविडःकल्पकःशठी ।
कर्चूरोदीपनोरुच्यःकटुकस्तिक्तएवच ॥८५॥
सुगंधिःकटुपाकःस्यात्कुष्ठार्शोव्रणकासनुत् ।
उष्णोलघुर्हरेच्छ्वासंगुल्मवातकफक्रमीन् ॥
गलगंडंगंडमालामपचींमुखजाड्यहृत् ॥८६॥

अर्थ–कर्चूर, वेधमुख्य, द्राविड, कल्पक और शठी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** कचूर, आंबियाहलदी, **बं.** शटी, **म.** कचोरा, **कों.** नरकचोरा, **का.** हुलिअरसिन, पट्कचोरा, **गु.** कचोरा, कचुरो, **तै.** कचोरालु, **अ.** एरुकुल काफूर, **फा.** जरंबाद, **इं.** लांगजेडोरी, **ला.** करक्यूमा जेडोरीआ । कचूरके चपटे, गोल, रुपाके माफिक सुगंधवाले जड़के टुकडे होते हैं । यह एक हलदीकी जाति है । मलेवार, मुंबई, थाना इत्यादि स्थानोंमें होती है । **गुण** । अग्निदीपक, रोचक, चरपरा, कड़वा, सुगंधित, गरम और हलका । **प्रयोग** । कोढ, बवासीर, व्रण, खासी, श्वास, गोला, वादी, कफ, कृमि, गलगंड, गंडमाला, अपची और मुखकी जड़ता, इनको नष्ट करे । **मात्रा** ४ माशेकी है । **प्रतिनिधि** सतावर है । यह दिल और दिमागको अवगुण करे तो इसका **दर्पनाशक** सफेद चंदन है ।

वनसटी.

अन्यातुगंधापत्रास्यास्थूलास्यातिक्तदंतिका ।
वनजासटिकावन्यास्तवल्पीयैकपत्रिका ॥
गंधपीतापलाशांतागंधाढ्यागंधपत्रिका ।
दीर्घपत्रागंधनिशावेदमुख्यासुपाकिनी ॥
गंधपत्राकटुःस्वादुस्तीक्ष्णोष्णाकफवातजित् ॥
कासच्छर्दिज्वरान्हंतिपित्तकोपंकरोतिच ॥

अर्थ–दूसरी सटीके **संस्कृत नाम** गंधा, पत्रास्या, स्थूलास्या, तिक्तदंतिका, वनजा, सटिका वन्या, स्तवल्पीया, एकपत्रिका, गंधपीता, पलाशांता, गंधाढ्या, गंधपत्रिका, दीर्घपत्रा, गंधनिशा और सुपाकिनी, ए १४ नाम वनमें होनेवाली सटीके हैं । **गुण** । **गंधपत्रका रस** चरपरा, स्वादु, तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक । **प्रयोग** । खांसी, वमन, ज्वर, इनको दूर करे और पित्तको कुपित करे है ।

एकांगी.

मुरागंधकटीदैत्यासुरभिःशालपर्णिका ।
मुरातिक्ताहिमास्वाद्वीलघ्वीपित्तानिलापहा ॥
ज्वरास्रग्भूतरक्षोघ्नीकुष्ठकासविनाशिनी ॥

अर्थ–मुरा, गंधकटी, दैत्या, सुरभि, और शालपर्णिका ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** कपूरकचरी, एकांगी,

बं. मुरामांशी, म. एकांगीमुरा, क. मुर। यह शाखाजातिकी सुगंधित वनस्पति गुजरातमें प्रसिद्ध है। **गुण**। कड़वी, शीतल, स्वादु, हलकी और वातपित्तनाशक। **प्रयोग**। ज्वर, रुधिरके विकार, कोढ़ और खांसी इनको दूर करे। **मात्रा** छः रत्तीकी है।

गंधपलाशी.

शठीपलाशीषड्ग्रंथासुव्रतागंधमूलिका।
गंधारिकागंधवधूर्वधूःपृथुपलाशिका॥ ८८॥
सैवोक्तागंधपलाशीतुकषायाग्राहिणीलघुः।
तिक्तातीक्ष्णाचकटुकानुष्णास्यमलनाशिनी॥
शोथकासव्रणश्वासशूलाहिध्मग्रहापहा॥८६॥

अर्थ–शठी, पलाशी, षड्ग्रंथा, सुव्रता, गंधमूलिका, गंधारिका, गंधवधू, वधू और पृथुपलाशिका, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** गंधपलाशी वा छोटा कचूर, **गु.** कठ, **म.** कपूरकचरी, **ला.** करक्यूमा आरोमाटीका। यह क्षुपजातिकी वनस्पति है। इसकी जड़को तोड़ने से कपूरकीसी सुगंध देती है। यह सुगंधद्रव्य कश्मीर में प्रसिद्ध है **गुण**। कषेली, ग्राही, हलकी, कड़वी, तीक्ष्ण, कटु, अनुष्ण (उष्णतारहित) मुखके मलको दूर करनेवाली तथा अहदोषनाशक। **प्रयोग**। सूजन, खांसी, व्रण, श्वास, शूल और हिचकी इनको नष्ट करे। मात्रा ६ रत्ती कही है।

प्रियंगु–गंधप्रियंगु.

प्रियंगुःफलिनीकांतालताचमहिलाह्वया।
गुंद्रागुंद्रफलाश्यामाविष्वक्सेनांगनाप्रिया॥
प्रियंगुःशीतलातिक्तातुवरानिलपित्तहृत्।
रक्तातियोगदौर्गंध्यस्वेददाहज्वरापहा॥६१॥
वांतिभ्रांत्यतिसारघ्नीरक्तजाड्यविनाशिनी॥
गुल्मतृड्विषमेहघ्नीतद्वद्गंधप्रियंगुका॥६२॥
तत्फलंमधुरंरूक्षंकषायंशीतलंगुरु।
विबंधाध्मानबलकृत्संग्राहिकफपित्तजित्॥

अर्थ–प्रियंगु, फलिनी, कांता, लता, गुंद्रा, गुन्द्रफला, श्यामा, विष्वक्सेना, अंगनाप्रिया, ए तथा जितने स्त्रीवाचक **संस्कृत** नाम हैं वे सब प्रियंगुकेहैं। **हिं.**फूल प्रियंगु, **बं.** प्रियंगु, गंधप्रियंगु, **म.** गहला, **गु.** घउला, **क.** नर्पीलगु, **तै.** प्रेंकणपुचेट्ट, **ला.** प्रनस् महालिब। **गुण**। प्रियंगुके फूल और गंधप्रियंगु दोनों शीतल, कड़वे, कषेले, वातपित्तनाशक हैं। प्रियंगुके **फल** मधुर, रूक्ष, कषेले, शीतल और भारी हैं। **प्रयोग**। अत्यंत रुधिरके निकलनेको, दुर्गंधि, पसीना, दाह, ज्वर, वमन, भ्रम, अतिसार, मुखकी जडता, गोला, तृषा, विषजन्यरोग और प्रमेह ए नष्ट होंय। इसके फलका सेवन करना विबंध और अफ़रा इनके बलको बढ़ावे, संग्राहक और कफपित्तनाशक। इसकी छालकी **मात्रा** १ माशेकी और **फल**की मात्रा ६ रत्ती कही है।

रेणुका.

रेणुकाराजपुत्रीचनंदिनीकपिलाद्विजा।
भस्मगंधापाण्डुपुत्रीस्मृताकौंतीहरेणुका॥६४॥
रेणुकाकटुकापाकेतिक्तानुष्णाकटुर्लघुः।
पित्तलादीपनीमेध्यापाचनीगर्भपातनी।
बलासवातकृच्चैवतृट्कंडुविषदाहनुत्॥ ६५॥

अर्थ–रेणुका, राजपुत्री, नंदिनी, कपिला, द्विजा, भस्मगंधा, पांडुपुत्री, कौंती और हरेणुका ए **संस्कृत** नाम। **हिं** रेणुका, **बं.** रेणुक, **ता.** मेट्टी, **ला.** विटेक्स स्पेसियोजा, **म.** रेणुकबीज कहते हैं। रेणुकबीजोंको बहुतसे वैद्य मेंहदीके बीज और बहुतसे मनुष्य निर्गुंडीके बीज मानतेहैं। इसकी आकृति काली मिरचके समान होतीहै **गुण**। **पाक**में चरपरी, **रस**में कड़वी, अनुष्ण, कटु (चरपरी) हलकी, पित्तकर्त्ता, अग्निकारक, स्मरणशक्तिवर्द्धक, पाचक, गर्भको गिरानेवाली, कफकर्त्ता और वादीको बढ़ाने वाली है। **प्रयोग**। तृषा, खुजली, विषरोग और दाह इनको नष्ट करे।

गठिवन.

ग्रंथिपर्णंग्रंथिकंचकाकपुच्छंचगुच्छकम्।
नीलपुष्पंसुगंधंचकथितंतैलपर्णकम्॥ ६६॥
ग्रंथिपर्णंतिक्ततीक्ष्णंकटूष्णंदीपनंलघु।
कफवातविषश्वासकंडुदौर्गंध्यनाशनम्॥६७॥

अर्थ–ग्रंथिपर्ण, ग्रंथिक, काकपुच्छ, गुच्छक, नीलपुष्प, सुगंध और तैलपर्ण, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** गठिवन, गठोना, **बं.** गेटेला, **र.** गाठीवनामूल, चोरवेल, **दे.** गठोनाचा झाड़ कहते हैं। **गुण**। तिक्त, तीक्ष्ण,

कटु, उष्ण, अग्निदीपक और लघु। **प्रयोग।** कफवृद्धि, वातवृद्धि विषजन्य रोग, श्वास और खुजली इनको दूरकरे। और इसमें दुर्गंधनाशक शक्ति है।

स्थौणेयक.

स्थौणेयकंबर्हिबर्हंशुकबर्हंचकुक्कुरम्।
शीर्णरोमशुकंचापिशुकपुष्पंशुकच्छदम् ॥९८॥
स्थौणेयकंकटुस्वादुतिक्तंस्निग्धंत्रिदोषनुत्।
मेधाशुक्रकरंरुच्यंरक्षोघ्नंज्वरजंतुजित् ॥ ९९ ॥
हंतिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गंध्यतिलकालकान्।

अर्थ–यह औषधी गठिवनके ही समान होती है। और कुछ २ गंध आती है, इसके **संस्कृत** नाम स्थौणेयक, बर्हिबर्ह, शुकबर्ह, कुक्कुर, शीर्णरोम, शुक, शुकपुष्प और शुकच्छद, **हिं.** थूनेर, **म.** थुनेर, **गु.** भरूंठ, **का.** स्थौणजे कहते हैं। **गुण।** कटु, स्वादु, तिक्त, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधा–शक्तिवर्द्धक, शुक्र प्रगट कर्त्ता, रुचिकारक, राक्षसनाशक, और कृमि (कीड़ा) नाश करे। **प्रयोग।** ज्वर, कुष्ठ, रुधिरदोष, तृषा, दाह, दुर्गंधि और तिलकालक (तिल) इनको दूर करे। **मात्रा** २ माशे की है। *

भटेउर.

निशाचरोधनहरःकितवोगणहासकः १००
रोचकोमधुरस्तिक्तःकटुःपाकेकटुर्लघुः।
तीक्ष्णोहृद्योहिमोहंतिकुष्ठकंडुकफानिलान्
रक्षोऽश्रीस्वेदमेदोऽस्रज्वरगंधविषव्रणान् ॥

अर्थ–निशाचर, धनहर, कितव, और गणहासक, ए **संस्कृत** नाम **हिं.** भटेउर, यहभी गठिवनका भेद है। इसकी उत्पत्ति नैपाल देशमें है। **गुण।** रोचक, मधुर,कड़वा, चरपरा, पाकके समय भी कटु, लघु, तीक्ष्ण, हृद्य, शीतल, राक्षस भयनाशक, शोभाका बढ़ानेवाला है। **प्रयोग।** कोढ़, खुजली, कफ, बादी, पसीना, मेदारोग, रुधिरविकार, ज्वर, दुर्गंध, विष और व्रणरोगको नष्ट करे। **मात्रा** २ माशेकी है।

तालीसपत्र.

तालीसमुक्तंपत्राढ्यंधात्रीपत्रंचतत्स्मृतम्।
तालीसंलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासकासकफानिलान्
निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान्

अर्थ–तालीस, पत्राढ्य, और धात्रीपत्र, ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** तालीसपत्र, **बं.** तांबट, **द्रा.** पंनिअल, **अ.** तालीसफर, **फा.** जरनव, **इं.** टेकसस्बेकटा,**ला.** टाक्सस बकटा Taxus baccata कहते हैं। यह हिमालय पर्वतपर उत्पन्न होता है। इसके भूयआंवलेकेसे पत्ते होते हैं **गुण।** लघु, तीक्ष्ण, उष्ण, कफनाशक और वायुनाशक। **प्रयोग।** अरुचि, गोला, आम, मंदाग्नि और क्षयरोगको नष्ट करे।

कंकोल.

कंकोलंकोलकंप्रोक्तंतथाकोशफलंस्मृतम्।
कंकोलंलघुतीक्ष्णोष्णंतिक्तंहृद्यंरुचिप्रदम् ४
आस्यदौर्गंध्यहृद्रोगकफवातामयांध्यहृत्।

अर्थ–कंकोल, कोलक और कोशफल, ए **संस्कृत** नाम, यह सुगंधित पदार्थ है। **हिं.** शीतलचीनी, **बं.** कांकला, कोई २ कबाबचीनी, **गु.** चणकबाब, **इं.** क्यूबेब पेपर, **फा.** कबाब, **अ.** कबाबे तबा हब्बउलरुस कहते हैं। इसकी बेल प्रथम चीनमें होती थी परन्तु अब हिमालयपर्वतमें भी मिली है। **गुण।** हलकी, तीक्ष्ण, उष्ण, कड़वी, हृदयको हितकारी, रोचक, मुखकी दुर्गंधतानाशक और कफनाशक। **प्रयोग।** हृदयरोग, वातव्याधि और नेत्ररोग इनको दूर करे। फारसी वैद्य इसको प्रमेह दूर करने वाली कहते हैं इसके फलकी **मात्रा** २ माशेकी है। यह मसाने को नुकसान पहुंचाती है। **दर्पनाशक** मस्तंगी और चंदन हैं। **प्रतिनिधि** दालचीनी और छोटी इलायची हैं।

गंधकोकिला गंधमालती.

स्निग्धोष्णाकफहृत्तिक्तासुगंधागंधकोकिला
गंधकोकिलयातुल्याविज्ञेयागंधमालती ॥

अर्थ–गंधकोकिलाको **बंगालेमें** घोड़बच और गंधमालतीको **गंधमात्रा** कहते हैं। **गुण।** ए दोनों

* भरूंठ यह मारवाड़में प्रसिद्ध है.

द्रव्य स्निग्ध, गरम, कफनाशक, कड़वी और सुगंधित हैं। **मात्रा** १ माशेकी है।

लामज्जक.

लामज्जकंसुनालंस्यादमृणालंलयंलघु।
इष्टकापथकंसेव्यंनलदंचावदातकम् ॥ ६ ॥
लामज्जकंहिमंतिक्तंलघुदोषत्रयास्रजित्।
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ७

अर्थ–लामज्जक खसके समान थोड़ा पीले रंगका तृण होता है उसके नाम। लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लय, लघु, इष्टकापथ, सेव्य, नलद और अवदातक, **बं.** गंधवेणा, **म.** पिवला वाला. **गु.** जलवालो। **गुण**। शीतल, कड़वा, हलका, वात, पित्त, कफ और रक्तदोषनाशक। **आमयिक प्रयोग**। त्वचा के रोग, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह और रक्तपित्त रोगको दूर करे। **मात्रा** २ माशेकी है।

एलवालुक.

एलवालुकमैलेयंसुगंधिहरिवालुकम्।
एलवालुकमेलालुकपित्थंपत्रमीरितम् ॥ ८ ॥
एलवालुकटुकंपाकेकषायंशीतलंलघु।
हंतिकंडुव्रणच्छर्दितृट्कासरुचिहृद्रुजः।
बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगदक्रमीन् ॥ ९ ॥

अर्थ–एलवालुक–कंकोल अर्थात् शीतलचीनी के समान होता है और उसमें कूठकीसी सुगंध आती है। उसके **संस्कृत** नामः–एलवालुक, ऐलेय, सुगंधि, हरिवालुक, एलालु और कपित्थपत्र, **हिं.** एलवा, **बं.** लालू, **तै.** कुतुखुड्डम कहते हैं। **गुण**। **एलवालुक** कषेला, शीतल, हलका और पाकमें कटु है। **प्रयोग**। खुजली, व्रण, वमन, तृषा, खांसी अरुचि, हृद्रोग, कफ, विष, रक्तपित्त, कोढ़, मूत्रकृच्छ्र और कृमिरोगको नाश करे। **मात्रा**। १ माशेकी है।

केवटी मोथा.

कुटन्नटंदासपुरंवालेयंपरिपेलवम्।
प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानिच ॥ १० ॥
मुस्तावत्पेलवपुटंशुक्लाभंस्याद्वितुन्नकम्।
वितुन्नकंहिमंतिक्तंकषायंकटुकांतिदम्।
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकंडुविषप्रणुत् ॥ ११ ॥

अर्थ–केवटी मोथा वितुन्नक वृक्षकी छाल है। वितुन्नकवृक्ष यह मोथेके समान होता है और पेलवपुर थोड़ा सफेदरंगका होता है। उसको **सं.** कुटंनट, दासपुर, वालेय, परिपेलव, प्लव, गोपुर, गोनर्द और कैवर्तमुस्तक, **हिं.** केवटी, **बा.** कोमटी मोथा, **बा.** गुडतर्जा, **बं.** वेउटमुथा, **गु.** केवडी मोथ। **गुण**। **वितुन्नक** शीतल, कड़वा, कषेला, चरपरा, कांतिकारी, विषघ्न और कफनाशक। **प्रयोग**। विसर्प, रक्तपित्त, कोढ़ और खुजली, इनको नाश करे। **मात्रा** १ माशेकी है।

—

स्पृका.

स्पृकास्पृक्ब्राह्मणीदेवीमरुन्मालालतालघुः।
समुद्रांतावधूःकोटिवर्षालंकायिकेत्यपि ॥
स्पृकास्वाद्वीहिमावृष्यातिक्तानिखिलदोषनुत्।
कुष्ठकंडुविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत् ॥

अर्थ–स्पृका–सुगंधित द्रव्य एक प्रकारका शाक है। इसको लोकमें लंकोदकपुरी कहते हैं। इसको **सं.** स्पृका, असृक्, ब्राह्मणी, देवी, मरुन्माला, लता, लघु, समुद्रान्ता, वधू, कोटि और वर्षालंकायिका, **हिं.** असवरग, **बं.** गंधपिंडिम् **म.** कर्पूवल्ली, **तामिल** भाषामें कारितुंब कहते हैं। ये दो प्रकारकी होती है एकके पत्तोंमें कपूरकी सुगंध आती है और दूसरेमें नहीं आती। **गुण**। स्वादु, शीतल, बलकारक, कड़वी और सर्वदोषनाशक। **प्रयोग**। कुष्ट, कंडु, विष, स्वेद, दाह, रक्तगत ज्वर और रुधिरके विकारको दूर करे।

पर्पटी.

पर्पटीरंजनाकृष्णाजतुकाजननीजनी।
जतुकृष्णाग्निसंस्पर्शाजतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥१२॥
पर्पटीतुवरातिक्ताशिशिरावर्ण्यकृल्लघुः ॥
विषव्रणहरीकंडुकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ १३ ॥

अर्थ–पर्पटीको पद्मावती कहते हैं। यह सुगंधितद्रव्य उत्तर देशमें होती है। **सं.** पर्पटी, रंजना, कृष्णा, जतुका, जननी, जनी, जतुकृष्णा, अग्निसंस्पर्शा, जतुकृत् और चक्रवर्तिनी, **हिं.** पपरी, पनडी वा पद्मावती, **म.** पापडी, रंगवासा–जंतुवासा, कहतेहैं यह मालवेमें प्रसिद्धहै

इसको साल दुशाले आदि रेशमी या ऊनी कपड़ोंमें रखने से कसाई जानवर नहीं खाते। **गुण**। कषेली, कड़वी, शीतल, वर्णकारक और हलकी। **प्रयोग**। विष-दोष, व्रण, खुजली, कफ, पित्त, रक्तदोष और कुष्ठको दूर करे। **मात्रा** १ माशेकी है।

नलिका.

नलिकाविद्रुमलताकपोतचरणानटी। धमन्यंजनकेशीचानिर्मध्यासुषिरानली नलिकाशीतलालघ्वीचक्षुष्याकफपित्तहृत्॥ कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकंडुज्वरापहा १५

अर्थ–नलिका औषधी उत्तराखंडमें प्रसिद्ध है। यह सुगंधित और मूंगाके आकार होती है। कहीं २ **पवारी** इस नाम से प्रसिद्ध है। **सं.** नाम–नलिका, विद्रुमलता, कपोतचरणा, नटी, धमनी, अंजनकेशी, निर्मध्या, सुषिरा और नली। **गुण**। शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, कफको शांतिकर्त्ता और पित्तनाशक है। **प्रयोग**। कठोर पथरी रोग, वातरोग, तृषा, रुधिरके दोष, कुष्ठ, खुजली, और ज्वर रोगको दूर करे। इसकी **मात्रा** १ माशेकी है।

प्रपौंडरीक.

प्रपौंडरीकंपौंडर्यंचक्षुष्यंपौंडरीयकम्। पौंडर्यंमधुरंतिक्तंकषायंशुक्रलंहिमम्। चक्षुष्यंमधुरंपाकेवर्ण्यंपित्तकफप्रणुत्॥१६॥

अर्थ–प्रपौंडरीक सुगंधित द्रव्य है। इसको लोकमें पुंडेरि कहते हैं। **सं.** नामः–प्रपौंडरीक, पौंडर्य, चक्षुष्या और पौंडरीयक, **हिं.** पुंडरिया। **गुण**। मधुर, तिक्त, कषेला, शुक्रकर्ता, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पकनेके समय मीठा, रंग निखारनेवाला, पित्तनाशक और कफ-शांति करे।

इति अभिनवनिघंटौ कर्पूरादिवर्गः॥

इति श्रीअभिनवनिघंटौ भाषायां कर्पूरादिवर्गः

अथ गुडूच्यादिवर्गः प्रारंभः

गुडूची (गिलोय) की उत्पत्ति.

अथलंकेश्वरोमानीरावणोराक्षसाधिपः। रामपत्नींबलात्सीतांजहारमदनातुरः॥१॥ ततस्तंवलवान्रामोरिपुंजायापहारिणम्। हतोवानरसैन्येनजघानरणमूर्द्धनि॥२॥ हतेतस्मिन्सुरारातौरावणेबलगर्विते। देवराजःसहस्राक्षःपरितुष्टोऽतिराघवे॥३॥ तत्रयेवानराःकेचिद्राक्षसैर्निहतारणे। तान्निंद्रोजीवयामाससंसिच्याऽमृतवृष्टिभिः। ततोयेषुप्रदेशेषुकपिगात्रात्परिच्युताः॥ पीयूषबिंदवःपेतुस्तेभ्योजातागुडूचिका॥५॥

अर्थ–एक समय राक्षसोंका अधिपति लंकेश्वर रावण अभिमानीने कामपीडित हो श्रीरामचंद्र की

---

*डा. **वाइट**–लिखता है कि, गिलोय पाचन शक्तिको अधिक बढ़ाती है, इस वास्ते २॥) रुपये भर गिलोय को १। सेर शीतल पानीमें ३ घंटे भिगोयदे फिर इसको छान लेवे। इसमें से दिनमें तीनवार पीवे। गिलोयकी दंडीको कूटकर १५–२० ग्रेनकी मात्रासे देनेपर उलटी होती है तथा सांपके काटे हुए मनुष्यको ऊपर लिखी मात्राके अनुसार २० मिनिटके अंतरसे तीनवार देवे तो जहर उतर जाय

हिंदुस्थानी वैद्य—बहुत दिनों से अंतर देकर आनेवाले तथा दूसरे प्रकारके ज्वरों के रोकनेको और कामोद्दीपन करनेको **गिलोयमें** तज, लौंग आदि गरम पदार्थ मिलायके देनेकी प्रशंसा करते हैं। कामला और संधि-वातके रोगमें भी उपयोगी मानते हैं। **गिलोयके** पत्तोंको शहदके साथ पीस फोड़ेके ऊपर लेप करा जाता है। तथा तेलमें पीसकर मस्तक पर लगाने से शरदी से दूखता मांथा अच्छा होय। **गिलोय सत्व** मूत्रके रोगमें तथा तिल्लीकी गांठमें अत्यंत हितकारी है। संधिवातमें **गिलोयको** औटायके पिलावे तो इससे पेशाब अधिक होताहै।

पत्नी सीताको बलात्कारसे हरण करी। तब बलवान् रामने, स्त्रीहरणकर्त्ता अपने शत्रु (रावण) को वानरोंकी सेनासहित संग्राममें पछाड़ा। जब वह बलगर्वित देवशत्रु रावण मरगया तब इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उस रणभूमिमें जो वानर राक्षसोंके हाथोंसे मारे गयेथे उनको अमृतकी वर्षाकरके जिवाता भया, उस समय उन बंदरों के देहसे उछटकर अमृतके कण जिस २ देशकी भूमिमें गिरे उनसे यह **गिलोय** प्रकट हुई।

गुडूचीमधुपर्णीस्यादमृताऽमृतवल्लरी।
छिन्नाछिन्नरुहाछिन्नोद्भवावत्सादनीतिच॥६॥
जीवंतीतंत्रिकासोमासोमवल्लीचकुंडली।
चक्रलक्षणिकाधीराविशल्याचरसायनी॥७॥
चंद्रहासावयस्थाचमंडलीदेवनिर्मिता।

अर्थ–गुडूची, मधुपर्णी, अमृता, अमृतवल्लरी, छिन्ना, छिन्नरुहा, छिन्नोद्भवा, वत्सादनी, जीवंती, तंत्रिका, सोमा, सोमवल्ली, कुंडली, चक्रलक्षणिका, धीरा, विशल्या रसायनी, चंद्रहासा, वयस्था, मडली और देवनिर्मिता, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** गिलोय, **कन्नौजमें** गुरुच, **बं.** गुलंच, **म.** गुलवेल, गरुडवेल, गरोल, **का.** अमरदवल्ली **गु.** गलो, **पञ्जाहमें** गलाह्न **मा.** गिलवे, **ता. सिंदी.** लकोदी, **तै.** तिप्पतिगा, **फा.** गलो, **इं.** गुलांचा, **ला.** टिनोस्पोरे कार्डिफोलीआ Tinosporacordifolia कहते हैं। गिलोयकी **बेल** होती है। इस में गुच्छेदार फूल और गुच्छेदार **फल** होता है। **पत्ते** लम्बाई लिये गोल और अनीदार। तथा गांठ २ पर दो भागवाले होते हैं। नीमके वृक्षकी गिलोय उत्तम होती है।

गुण.

गुडूचीकटुकातिक्तास्वादुपाकारसायनी।
संग्राहिणीकषायोष्णालघ्वीबल्याग्निदीपनी।
दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्चपांडुताम्॥६॥
कामलाकुष्ठवातास्रज्वरकृमिवमीन्हरेत्।
प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत्॥१०

अर्थ–गिलोय मधुर, कड़वी, पकनेके समय स्वादुरसवाली, रसायन, ग्राहक, कषेली, उष्णवीर्य, हलकी, बलकारक, अग्निदीपनी और वातादि त्रिदोषनाशक है। **आमयिक प्रयोग**। आम, तृषा, दाह, धातुक्षीण, खांसी, पांडुरोग, कामला, कोढ़, वात, रक्त, ज्वर, कृमिरोग, वमन, प्रमेह, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वादीके रोग इन सबको नष्ट करे। गिलोय की **मात्रा** ४ माशेकी है।

गिलोयका सत्व.

सत्वंगुडूच्याः सुस्वादुपथ्यंलघुचदीपनम्।
चक्षुष्यंधातुकृन्मेध्यंवयसःस्थापनंपरम्॥
त्रिदोषंवातरक्तंचपांडुतीव्रज्वरंतथा।
वमिंजीर्णज्वरंपित्तंकामलांचप्रमेहकम्॥
अरुचिंश्वासकासौचहिक्कांचार्शःक्षयंचतत्।
सदाहंमूत्रकृच्छ्रंचप्रदरंसोमरोगकम्॥
नाशयेदितिसंप्रोक्तंपित्तंमेहंसशर्करम्।

अर्थ–गिलोयका सत्व स्वादिष्ट, पथ्य, हलका, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्धक, मेध्य, पवित्र अवस्थाको स्थापन करता और त्रिदोष, वातरक्त, पांडुरोग, तीव्रज्वर, वमन, जीर्णज्वर, पित्त, कामला, प्रमेह, अरुचि, श्वास, खांसी, हिचकी, बवासीर, क्षय, दाहयुक्तमूत्रकृच्छ्र, प्रदर, सोमरोग पित्तका प्रमेह और शर्करा इन सबको दूर करे है। **गिलोय सत्व बनाने**की यह रीति है कि गिलोयके छोटे २ टुकड़े कतरके कूट डाले, फिर जलमें डालकर चलनी से छानलेवे कि जिससे तुस न रहें फिर रईसे मथकर किसी चौरस लोहेके पात्रमें भरके रखदेवे, दूसरे दिन नितर हुए पानीको सावधानीके साथ निकालके फिर उसको सुखायलेवे, पाकआदिमें या चूर्णमें जहां गिलोय डालना लिखा है वहां पर इस सत्वको डालना चाहिये।*

*__गिलोयकी बेल__—पीपरके पत्तेके समान पत्रवाली होती है. और इसके कोने अधिक निकले हुए होतेहैं। चौमासे के मौसममें इसमें फूल आता है। पत्ते अधिक हरियाली लिये होते हैं, तथा चनेके बराबर गुच्छेदार हरे रंगका फल होता है परंतु पकने पर काले रंगका होजाता है, और शरदी गरमीके मौसममें पत्ते, फल नहीं रहते।

कंदगिलोय.

**अन्याकंदोद्भवाकंदामृतापिंडगुडूचिका।
बहुच्छिन्नाबहुरुहापिंडालुःकंदरोहिणी॥
कंदोद्भवागुडूचीचकटूष्णासन्निपातहा।
विषघ्नीज्वरभूतघ्नीवलीपलितनाशिनी॥**

अर्थ—दूसरी **कंदगिलोय** अर्थात् कंदके समान गांठदार गिलोय होती है, उसके **संस्कृत** नाम—कंदोद्भवा, कंदा, अमृता, पिंडगुडूचिका, बहुच्छिन्ना, बहुरुहा, पिंडालु, और कंदरोहिणी हैं। **गुण।** **कंदगिलोय** कड़वी, गरम, वली और पलितको नाश कर्त्ता। **प्रयोग।** संनिपात, विषम—ज्वर और भूतबाधा इनको दूर करे।

पान.

**तांबूलवल्लीतांबूलीनागिनीनागवल्लरी।
तांबूलंविशदंरुच्यंतीक्ष्णोष्णंतुवरंसरम्॥
वश्यंतिक्तंकटुक्षारंरक्तपित्तकरंलघु।
बल्यंश्लेष्मास्यदौर्गंध्यमलवातश्रमापहम्॥**

अर्थ—तांबूलवल्ली, तांबूली, नागिनी, नागवल्लरी, ए **संस्कृत नाम।** हिं. पान, नागरवेलका पान, **कों.** पानवेल, **गु.** नागरवेल, **फा.** तंबोल, **इं.** बीटललीफ Betel-leaf कहते हैं। **गुण।** विशद, रोचक, तीक्ष्ण, गरम, कषेला, सर, वश्यकर्त्ता, कड़वा, कटुक्षार, रक्तपित्तकर्त्ता, हलका, बलकारक, कफनाशक, मुखकी दुर्गंधता नाशक, मैलनाशक, वादी हरणकर्त्ता और श्रमको शांति कर्त्ता। [बाकी इसके गुण दिनचर्या में लिखे हैं सो देखलेना]। पानकी **प्रतिनिधि** कुलिंजन है। और इसकी **दर्पनाशक** सुपारी है।

पानके भेद. सिरवाडीपान.

**श्रीवाटीमधुरातीक्ष्णावातपित्तकफापहा।
रसाढ्यासरसारुच्याविपाकेशिशिरास्मृता॥**

अर्थ—सिरवाडी पान—मधुर, चरपरा, बात, पित्त, कफका नाशक, रसयुक्त, स्वादिष्ट रुचिकारी, और पाकके समय शीतल है।

अंबाडे पान.

**स्यादम्लवाटीकटुकाम्लतिक्ता
तीक्ष्णातथोष्णामुखपाककर्त्री।
विदाहपित्तास्रविकोपनी च
विष्टंभदा वातनिबर्हिणी च॥**

अर्थ—अंबाडा पान—खट्टा, चरपरा, कड़वा, तेज, गरम, मुखमें छाले करनेवाला, दाहकर्त्ता, रक्तपित्तको कुपित कर्त्ता, विष्टंभकारी और वातनाशक है।

सातसी पान.

**सातसीमधुरातीक्ष्णाकटुरुष्णाचपाचनी।
गुल्मोदराध्मानहरारुचिकृद्दीपनीपरा॥**

अर्थ—सातसीपान—मधुर, तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, पाचन, गोला, उदर, अफरा इनको दूर करे रुचिकारी और दीपनकर्त्ता है।

पुराने पान.

तत्पर्णजीर्णातिरसातिरुच्या सुगंधितीक्ष्णामधुरातिहृद्या। संदीपनी पुंस्त्वकरातिबल्या विरेचनी वक्त्रसुगंधकारिणी॥

अर्थ—पुराने पान—अतिरसयुक्त, अतिरुचिकारी, सुगंधित, तीक्ष्ण, मधुर, हृद्य, जठराग्निको दीपन कर्त्ता, पुरुषार्थ कर्त्ता, अतिबलकारी, विरेचनकर्त्ता और मुखको सुगंधित करनेवाले हैं।

नाम्नान्याम्लरसासुतीक्ष्णमधुरारुच्याहिमादाहनुत् पित्तोद्रेकहरासुदीपनकरीबल्यासुखामोदिनी। स्त्रीसौभाग्यविवर्धनीमदकरी राज्ञांसदावल्लभा गुल्माध्मानविबंधजिच्चकथितासामालवेतुस्थिता॥

अर्थ—मालवेके **अंगरापान,** खट्टे, दस्तावर, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारी, शीतल, दाहनाशक, पित्तके बढ़नेको हरण कर्त्ता, जठराग्निदीपनकर्त्ता, बलकारी, मुखमें सुगंध कर्त्ता, स्त्रीकी सुंदरताको बढानेवाले, नशा लानेवाले और राजालोगोंको सदैव प्रिय, गोला, अफरा, विबंध, इनको जीतनेवाले हैं।

द्राविडके पोटकुलीपान.

**अंध्रेपटुलिकानामकषायोष्णाकटुस्तथा
मलापकर्षाकंठस्यपित्तकृद्वातनाशिनी॥**

अर्थ—अंध्रदेश (द्रविड आदिदेश) में जो **पट्टुलिक** पान होता है। वह कषेला, गरम, चरपरा, कंठके मलको निकालनेवाला, पित्तकर्त्ता और वात-नाशक है।

समुद्र देशके पान.

व्हेसणीयाकटुस्तीक्ष्णाहृद्यादीर्घदलाचसा। कफवातहरारुच्याकटुर्दीपनपाचनी॥

अर्थ—समुद्रके किनारेके पान **व्हेसणिया** कहाते हैं। वह चरपरे, तीक्ष्ण, हृद्य, बड़े पत्तेवाले, कफ-वात नाशक, रुचिकारी, चरपरे, दीपन और पाचन हैं।

नवीन पुराने पानोंके गुण.

सद्यस्त्रोटितभक्षितंमुखरुजोजाड्यापहंदोष-कृद्दाहारोचकरक्तदायिमलकृद्विष्टंभिवांति-प्रदम्। यद्भूयोजलपानपोषितरसंतच्चोचि-रात्त्रोटितंतांबूलीदलमुत्तमंचरुचिकृद्वर्ण्यंत्रि-दोषार्त्तिनुत्॥

अर्थ—तत्कालके तोड़े हुए पान खाना, मुख रोग और, जड़ताको दूर करे, वातादि दोष करे, दाह, अरुचि, रुधिरको बिगाड़ना, मलकर्त्ता, विष्टंभी और वमन करानेवाले हैं। यदि उनको बहुत दिन जल से सिंचनादि द्वारा बढ़ायके बहुत दिनमें तोड़े वो पान उत्तम रुचिकारी, वर्णकर्त्ता और त्रिदोषनाशक जानने।

कृष्णंपर्णंतिक्तमुष्णंकषायं धत्तेदाहंवक्त्र-जाड्यंमलंच। शुभ्रंपर्णंश्लेष्मवातामयघ्नं-पथ्यंरुच्यंदीपनंपाचनंच॥

अर्थ—**कालेरंगका पान** कड़वा, गरम, कषेला, दाहकारी, मुखको जड़करे और मैल करे हैं। **सफेद रंगका** पान कफवातरोग नाशक, पथ्य, रुचिकारी, दीपन, पाचन है।

शिरापर्णंतुशैथिल्यंकुर्यात्तस्याश्चहृद्रसः। शीर्णंत्वग्दोषदंतस्यतच्छित्वाचाशितंसदा।

अर्थ--पानकी **नस** देहमें शिथिलता करे और उन सिराओंका रस रुधिरको हरण करे है। **सड़े और गले** हुए **पान** सेवन करने से त्वचाके रोग (कुष्ठ आदि) को करे है। इस वास्ते पानकी नसको निकालके खाना चाहिये।

अनिनायमुखेपर्णंयःपूगंखादतेनरः। मतिभ्रंशोदरिद्रीस्याद्दंतेनस्मरतेहरिम्।

अर्थ--जो प्राणी विना पान सुपारी खाता है उसकी बुद्धि विगड़जावे, दरिद्री और अंतमें हरिको नहीं स्मरण करे।

बेल.

बिल्वःशांडिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि। श्रीफलस्तुवरस्तिक्तोग्राहीरुक्षोऽग्निपित्तकृत्। वातश्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचनः॥

अर्थ--बिल्व, शांडिल्य, शैलूष, मालूर और श्रीफल, **हिं.** वेल, **गु.** वीली, **ता.** विल्व प्राभाम, **म.** वेलफल **क.** वेललु, **तै.** मिरीडी, **ई.** वेंगालर किन्स, **ला.** इगलमारमेलांज, **अ.** अनारहिंदी, **ई.** वेलफूट। यह वृक्ष मध्यम कदका होता है। **पत्ते** एक डंडीमें तीन २ त्रिशूलके आकार होते हैं। **फूल** हरा चार पंखडीका होता है। **फल** अमरूदके समान बड़ा कठोर और गिरीवाला होता है। **गुण**। कषाय, कड़वा, ग्राही, रूक्ष, अग्निवर्द्धक, पित्तकर्त्ता, वातकफनाशक, बलकारक, लघु, उष्ण और पाचक। **मात्रा** ७ मासेकी है। वेलफल कच्चा **प्रयोगमें** लीना जाता है। बहुत से बेलफलकी जगह वेलगिरी प्रयोगमें डालते हैं। वेलकी **प्रतिनिधि** इमलीके बीज हैं और **दर्पनाशक** अजमायन है।*

*डाक्टर **डीमक**--कहता है कि यह **फल** पौष्टिक और रुधिर शुद्ध करता जाना गया है, तथा इसे सेवन करने से हलकासा जुलाब होता है, और पेटकी कब्जियत दूर होती है। **छाल और जड़का** क्वाथ वारंवार आनेवाले ज्वरमें दिया जाता है। यदि आंख दूखने आई होय तो **पत्ते** पीस इसकी पुलटिश बांधने से आराम होताहै। फल कच्चे होंय तब उनको लेकर सुखाय लेवे फिर इनके भीतरका गूदा पीसकर शूलपर देनेसे उत्तम असर

गंभारी.

गंभारीभद्रपर्णीचश्रीपर्णीमधुपर्णिका ।
काश्मीरिकाश्मरीहीराकाश्मर्यःपीतरोहिणी
कृष्णवृंतामधुरसामहाकुसुमिकापिच ।
काश्मरीतुवरातिक्तावीर्योष्णामधुरागुरुः १५
दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोषजित् ।
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा १६
तत्फलंबृंहणंवृष्यंगुरुकेश्यंरसायनम् ।
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबंधनुत् ॥ १७ ॥
स्वादुपाकेहिमंस्निग्धंतुवराम्लंविशुद्धिकृत् ।
हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥१८॥

अर्थ—गंभारी, भद्रपर्णी, श्रीपर्णी, मधुपर्णिका, काश्मीरी काश्मरी, हीरा, काश्मर्य, पीतरोहिणी, कृष्णवृंता, मधुरसा और महाकुसुमिका, ए **सं-स्कृत** नाम । **हिं.** कंभारी, खुमेर, **बं.** गांभारी, **म.** शिवण, **द्रे.** शिवणगंभारी, **गु.** सीवण कहते हैं । **गुण** । कषेली, कड़वी, उष्णवीर्य, मधुर, दीपनी, पाचनी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, दस्तावर, भ्रमरोगनिवा-रक और शोषनाशक । **प्रयोग** । त्रिदोषज तृषा, आमका शूल, बवासीर, विष, दाह, ज्वररोग, इनको दूरकरे । **गंभारीके फलके गुण** । पुष्टिकारक, बलकारी, भारी, बालोंको पुष्टितावर्द्धक, रसायन, रोग-नाशक, शीतल, स्निग्ध, कषेला और खट्टा इन दोनों रसोंको शुद्धिका करनेवाला, पाकमें मधुर और वात-पित्तनाशक । **प्रयोग** । तृषा, रुधिर की क्षीणता, मूत्रा-घात, दाह, रक्तपित्त, क्षतक्षयादि रोगोंको नष्ट करे ।

पाडरि कठ पाडरि ।

पाटलिःपाटलामोघामधुदूतीफलेरुहा ।
कृष्णवृंताकुबेराक्षीकालस्थाल्यलिवल्लभा ॥
ताम्रपुष्पीचकथितापरास्यात्पाटलासिता ।
मुष्ककोमोक्षकोघंटापाटलिःकाष्ठपाटला ॥२०॥
पाटलातुवरातिक्तानुष्णादोषत्रयापहा ।
अरुचिश्वासशोथास्रच्छर्दिहिक्कातृषाहरी ॥२१॥
पुष्पंकषायंमधुरंहिमंहृद्यंकफास्रनुत् ।
पित्तातिसारहृत्कंठ्यंफलंहिक्कास्रपित्तहृत् ।

अर्थ—पाटलि, पाटला, मोघा, मधुदूती, फलेरुहा, कृष्णवृंता, कुबेरांक्षी, कालस्थाली, अलिवल्लभा और ताम्र-पुष्पी. यह एक प्रकारकी पाडरके **सं.** नाम । दूसरी सफेद रंगकी पाडर उसके **सं.** नाम—मुष्कक मोक्षक, घंटापाटलि और काष्ठपाटला. हैं । **हिं.** पाडर और

करता है । तथा **पक्के फलका** गूदा इमलीके रसमें मिलाय देनेसे शीतलता होती है । **वृक्षकी छालका** क्वाथ हृदयकी धकधकी नरम करनेको काममें आती है । तथा **पत्ते** श्वासरोगमें दीने जाते हैं ।

डा० ग्रीन—कहता है कि **पक्के फलके** गूदेका **सरवत** बनावे और नित्य प्रातःकाल पीवे तो बदहज्मी दूर होय । और **कच्चे फलको** ६ घंटे भूभलमें सेकके देनेसे दस्त और ऐठन दूर होय । रुधिरके बिगाड़में इसका गूदा ५) रुपेभर लेवे. उसमें ५ से ७॥ रुपेभर जल और थोड़ी सी मिश्री और बरफ डालके दिनमें २ से ३ वखत देनेसे उत्तम गुण करे है, तथा दस्त और पेटकी ऐठनको भी यह मेल अत्यंत उत्तम करता है ।

मखजनमें—लिखा है कि बेलके पत्तोंका रस दस्तकी क़ब्जियत और ज्वरकी बिमारीमें सहतके साथ मिलायके और कामलामें काली मिरचके साथ मिलायके देते हैं । वह **बेलफलको** ग्राही, पाचक और कुव्वत देने वाला मानते हैं, तथा इसके सेवन से बवासीर उत्पन्न होय है, इस वास्ते सदैव मिश्रीके साथ मिलायके देनेकी प्रशंसा करता है । अधपके फलोंको आगमें भून उनका गूदा मिश्री और गुलाबजलके साथ मिलायके प्रातःकाल भोजन करनेके प्रथम सेवन करने से दस्तोंको बंद करे है ।

चरकसंहितामें—बेलफलको बवासीरनाशक, सूजन उतारनेवाला और दस्तमें आम पड़ती होय तो उसको बंद करनेको बेलकी गिरी अत्यंत उपयोगी मानते हैं ।

सुश्रुतसंहितामें—इसको स्तंभितास्रावक और पित्तनाशक लिखे हैं ।

कठपाडर, **बं.** पारुल, **म.** श्वेतपारुल, **गु.** काकच कहते-हैं। **गुण**। कषेली, कड़वी, अनुष्ण और त्रिदोषनाशक, **प्रयोग**। अरुचि, श्वास, सूजन, रुधिरके विकार, वमन, हिचकी और प्यास, इनको दूर करे। **पाटलाका फूल** कषेला, मधुर, शीतल, हृदयको हित, कफनाशक और रक्तविशोधक। **प्रयोग**। पित्तातिसाररोगको हरण करे और कंठको सुधारे। **पाढरका फल**-रक्तपित्त और हिचकियोंको नाश करे।

अरनी.

अग्निमंथोजयःसस्याच्छ्रीपर्णीगणिकारिका।
जयाजयंतीतर्कारीनादेयीवैजयंतिका ॥२३॥
अग्निमंथःश्वयथुनुद्वीर्योष्णःकफवातहृत्।
पांडुनुत्कटुकस्तिक्तस्तुवरोमधुरोऽग्निदः ॥२४॥

अर्थ-अग्निमंथ, जय, श्रीपर्णी, गणकारिका, जया, जयंती, तर्कारी, नादेयी और वैनयंतिका, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** अरनी, अगेथु, गणियारी, **म.** थोर एरण, टांकला, नरवेल, **गु.** अरणी, **तै.** नेल्लीचेट्ट, **क.** नरुवल, ऐरणा, **ता.** नेलीचेट्ट **ला.** क्लीरोडेड्रम्, इस वृक्षके **पत्ते** आमने सामने होते हैं और वो अनीदार होते हैं। उनकी जड़में से एक २ छोटा २ पत्ता निकलता है। इसका **फूल** सफेद पांच पंखडीका बाहरके आच्छादन से ढका हुआ जिसमें पांच पुरुष केशर और एक स्त्री केशर होती है। **फल** बहुत छोटे २ गोल २ होते हैं **चित्र** नंबर १२ का देखो। **गुण**। **अरनी** उष्णवीर्य, चरपरी, कड़वी, कषेली, मधुर, अग्निवर्धक, कफनाशक और वात नाशक है। **प्रयोग**। सूजन और पांडुरोगको दूर करे है।

छोटी अरनी.

क्षुद्राग्निमंथस्तपनाविजयागणकारिका।
अरणिर्लघुमंथश्च तेजोमंथस्तनुस्त्वचः॥
अग्निमंथद्वयंचैवतुल्यंवीर्यरसादिषु।
तत्प्रयोगानुसारेणयोजयेत्स्वमनीषया॥

अर्थ-छोटी अरनीको **संस्कृतमें** क्षुद्र अग्निमंथ, तपन, विजया, गणकारिका, अरणी, लघुमंथ, तेजोमंथ और तनुत्वच कहते हैं। **गुण**। दोनों अरनी वीर्यमें और रसादिकमें तुल्य हैं इसवास्ते जहां जैसा प्रयोग होय उसीके माफिक लेना। छोटी अरनीको **मरेठीमें** नरवेल कहते तथा टाकली, नरयेलर, **का.** तल्ली कहते हैं।

सोनापाठा.

स्योनाकःशोषणश्चस्यान्नटकट्वङ्गटुण्टुकाः।
मंडूकपर्णपत्रोर्णशुकनासकुटन्नटाः॥ २५॥
दीर्घवृन्तोऽरलुश्चापिपृथुशिंबःकटंभरः।
स्योनाकोदीपनःपाकेकटुकस्तुवरोहिमः॥२६॥
ग्राहीतिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासप्रणाशनः।
टुण्टुकस्यफलंबालंरूक्षंवातकफापहम् ॥२७॥
हृद्यंकषायंमधुरंरोचनंलघुदीपनम्।
गुल्मार्शः कृमिहृत्प्रौढंगुरुवातप्रकोपनम् २८

अर्थ-स्योनाक, शोषण, नट, कट्वंग, टुंटुक, मडूकपर्ण, पत्रोर्ण, शुकनास, कुटंनट, दीर्घवृन्त, अरलु, पृथुशिम्ब और कटंभर, ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** सोनापाठा, अरलू, टैंटू, **बं.** सोना, **म.** डिंडा, **का.** शोणा, शोडितमर, **ता.** पन, **तै.** पेद्दामानु, **पं.** मुलिन, **उड़ि.** फणफणा, **नै.** करुमकंद, **ला.** ओरोक सिलं इंडिकम्। **गुण**। अग्निदीपक, **पाक** चरपरा, **सवादमें** कषेला शीतल, ग्राही, तिक्त और त्रिदोषनाशक। **प्रयोग**। इसको खांसीमें देना चाहिये। **टैंटूका कच्चा फल** रूखा, वातकफनाशक, हृद्य, कषेला, रोचक, हलका और अग्निदीपक। गोला, बवासीर और कृमिरोगको हरण करे और इसका **पकाफल** भारी और वातको कुपित कर्त्ता है।

दूसरा स्योनाक.

स्योनाकःपृथुशिंबोऽन्योभल्लकोदीर्घपत्रकः।
पीतवृक्षश्चटेंटूकभूतसारोमुनिद्रुमः।
निस्सारःफल्गुवृंताकःपूतिपात्रावतंसकः।
कटुकर्षणपीतागोजंबूकःपीतपादकः।
वातारिपीतकःशोणःकुनटश्चविरोचनः।
भ्रमरेष्टोबर्हिजंघोनेत्रनेत्रमिताभिधः।
स्योनाकयुगलंतिक्तंशीतलंचत्रिदोषजित्।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नंसंनिपातज्वरापहम्॥

अर्थ–स्योनाक, पृथुशिंब, भल्लक, दीर्घपत्रक, पीतवृक्ष, टेंटूक, भूतसार, मुनिद्रुम, निस्सार, फल्गुवृंताक, पूतिपात्र, अवतंसक, कट्वकर्षण, पीतांग, जंबूक, पीतपादक, वातारि, पीतक, शोण, कुनट, विरोचन, भ्रमरेष्ट और बर्हिजंघ, ए दोनों स्योनाकोंके ३३ नाम हैं। इसमें ११ नाम प्रथम लिख आए हैं। **गुण**। दोनों **स्योनाक** कड़वे, शीतल, त्रिदोषके नाशक, पित्त, कफ, अतिसार, सन्निपात और ज्वर इनको दूर करते हैं।

बृहत्पंचमूल.

श्रीफलःसर्वतोभद्रापाटलागणिकारिका।
स्योनाकःपंचभिश्चैतैःपंचमूलंमहन्मतम् ॥२९॥
पंचमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफवातनुत्।
मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम् ॥३०॥

अर्थ–बेल, गंभारी, पाडर, अरनी और स्योनाक, इन पांच वृक्षोंकी जड़को **बृहत्** (बड़ा) **पंचमूल** कहते हैं। **गुण**। **बृहत्पंचमूल** कड़वा, कषेला, वातकफनाशक, मधुर, गरम, हलका और अग्निदीपक है। **प्रयोग**। खांसी श्वासको दूर करे।

शालपर्णी.

शालपर्णीस्थिरासौम्यात्रिपर्णीपीवरीगुहा।
विदारिगंधादीर्घांगीदीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥३१॥
शालपर्णीगुरुश्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ॥
शोषदोषत्रयहरीबृंहण्युक्तारसायनी ॥
तिक्ताविषहरीस्वादुःक्षतकासकृमिप्रणुत् ३२

अर्थ–शालपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिगंधा, दीर्घांगी, दीर्घपत्रा और अंशुमती, ए **संस्कृत** नाम। **हिं** सारिवन, **बं.** शालपानि, **म.** शालवण, रानगांजा, रानभाल, **का.** भूइसेवरा, मुरुलुवोंने, **गु.** शालवण, समेरवो, **तै.** शीयाकुपना, **उडि.** शारपाणी, **ला.** डेसमोडियम् गेंगेटीकम् कहते हैं। इसका **वृक्ष** अनुमान चार फुटके ऊंचा होता है। और **पत्ते** तीन २ शालके समान परन्तु कुछ २ लंबे और बहुत सुंदर दीखते हैं। **गुण**। पुष्टिकारक, रसायन, कड़वी, विषघ्न, मीठी और त्रिदोषनाशक है। **प्रयोग**। वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष, क्षतकास (घावकी खांसी) और कृमिरोगको दूर करे। यदि इसकी जड़ न मिले तो सर्वांग लेना। **मात्रा** १ माशेकी है।

पृष्ठपर्णी (पिठवन)

पृष्ठपर्णीपृथक्पर्णीचित्रपर्ण्यंहिपर्ण्यपि।
क्रोष्टुविन्नासिंहपुच्छीकलशीधावनीगुहा ३३
पृष्ठपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णामधुरासरा।
हन्तिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीः ३४

अर्थ—पृष्ठपर्णी, पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अंहिपर्णी, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, और गुहा, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** पिठवन **बं.** चाकुले, **म.** पिटवण, **कों.** भाल, डवला, नवरी, **दे.** भद्रसेंवरा, **उडि.** क्रष्टपर्णी, **तै.** कोलाकुपना, **का.** सेवरा, नरियलबोने, पिटौनी, **गु.** पृष्ठिपर्णी, नहानो समेरवो, गंधसमेरवो, **ला.** डरेरियां पीकटा कहते हैं। इसके **पत्ते** सिंहकी पूंछके माफिक लंबे चित्रविचित्र होते हैं। **गुण**। त्रिदोषनाशक, बलकारक, उष्ण, मधुर और दस्तावर। **प्रयोग**। दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा और वमनको दूर करे। मूलके अभावमें सर्वांग ग्रहण करे। **मात्रा** १ माशेकी है।

वरहंटा–डा (वार्त्ताकी)

वार्त्ताकीक्षुद्रभण्टाकीमहतीबृहतीकुली॥
हिंगुलीराष्ट्रिकासिंहीमहोष्ट्रीदुःप्रधर्षिणी ३५
बृहतीग्राहिणीहृद्यापाचनीकफवातहृत्।
कटुस्तिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी॥
उष्णाकुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमांद्यजित्

अर्थ–वार्त्ताकी, क्षुद्रभंटाकी, महती, बृहती, कुली, हिंगुली, राष्ट्री और दुःप्रधर्षिणी ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कटाई, वरहंटा–डा, **बं.** बृहती, व्याकुड, **म.** डोरली, **गु.** उभी रिंगणी, **का.** हेग्गुलु, वनभंटी, **तै.** पेद्दामुलंगा, **ता.** चेरुचूंट, **फा.** उस्तरगार, **ला.** सोलानम् इंडीकम् कहते हैं। यह ऊंट कटेरा है। इसका वृक्ष खड़ा हुआ और बैंगनके समान होता है और इसीको **बड़ी कटेरी** कहते हैं। **गुण**। ग्राही, हृद्य, पाचक, वातश्लेष्मनाशक, कटु, तिक्त और उष्ण। **प्रयोग**। अरुचि, ज्वर, श्वास,

कुष्ठ, शूल, खांसी, मंदाग्नि, मुखकी विरसता और मलादि को निवारण करे। इसकी **जड़के** अभावमें **पंचाग** लेना। **मात्रा** १ माशेकी है।

कटेरी (कंटकारी)

कंटकारीतुदुःस्पर्शाक्षुद्राव्याघ्रीनिदिग्धिका
कंटालिकाकंटकिनीधावनीबृहतीतथा ॥३७॥
क्षुद्रायाक्षुद्रसद्राख्याबृहतीतिनिगद्यते।
श्वेताक्षुद्राचंद्रहासालक्ष्मणाक्षेत्रदूतिका ॥
गर्भदाचंद्रभाचंद्रीचंद्रपुष्पाप्रियंकरी।
कंटकारीसरातिक्ताकटुकादीपनीलघुः ॥३६॥
रूक्षोष्णापाचनीकासश्वासज्वरकफानिलान्
निहंतिपीनसंश्वासपार्श्वपीडाहृदामयान् ॥
तयोःफलंकटुरसेपाकेचकटुकंभवेत्।
शुक्रस्यरेचनंभेदितिक्तंपित्ताग्निकृल्लघु ॥४१॥
हन्यात्कफमरुत्कण्डुकासमेदकृमिज्वरान्
तद्वत्प्रोक्तासिताक्षुद्राविशेषाद्गर्भकारिणी ॥

अर्थ—कंटकारी, दुःस्पर्शा, क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका, कंटालिका, कंटकिनी, धावनी और बृहती ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कटेरी, बड़ी कटेरी, भटकटैया, रेंगनी, **राजपूतानेमें** कटाली, कण्ठाली, **बं.** कंटकारी, **म.** रिंगणी, **का.** नेलगुल्ल, **गु.** भोरींगणी, **तै.** श्वटीमुलंजा, **उडि.** कंटमारिष, **ला.** सोलानम् इंडीकम् कहते हैं। यह क्षुपजातिकी वनस्पति है। कटेरीका दरखत पृथ्वीमें फैला हुआ होता है। नीले रंगका **फूल** होता है। और **फल** पीले रंगका गोल बेरसे कुछ छोटा होता है। बृहती और कंटकारी इन दोनोंका साधारण नाम **बृहती** है। यह हेतु **सुश्रुत** ने कहा है। जैसे कि क्षुद्रा (कटेरी) और क्षुद्रभंटाकी इन दोनोंका साधारण नाम बृहती है। **सफेद कटेरीके नाम।** चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, क्षेत्रदूतिका, गर्भदा, चन्द्रभा, चन्द्री, चन्द्रपुष्पा और प्रियंकरी। **हिं.** सफेद कटेरी, **म.** श्वेतरिंगणी, **का.** विलियनेलगुल्ल कहते हैं। **गुण। कटेरी** दस्तावर, **स्वाद** कड़वा, चरपरा, दीपन, हलकी, रूक्ष, गरम और पाचक। **प्रयोग।** खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, बादी, पीनस, श्वास, पार्श्वपीडा और हृदयरोग आदिको दूर करे। **फलके गुण।** दोनोंका फल **स्वादमें** और **पाकमें** चरपरा, वीर्यरेचक, भेदक, कड़वा, पित्तकर्त्ता, अग्निवर्द्धक, लघु और कफवायुनाशक। **प्रयोग।** खुजली, खांसी, कृमि और ज्वरादि रोग निवारण करे। **सफेद कटेरी** गर्भकर्त्ता है। इसीको लक्ष्मणा कहते हैं। परंतु **सुश्रुतने** शारीरक भागमें लक्ष्मणाके अन्य ही लक्षण कहे हैं। तथा इसी ग्रन्थमें आगे पृथक् कही है। परन्तु गुणोंमें दोनों समान हैं। इसकी **जड़** लेनी और जड़ न मिले तो **पंचांग** लेना। **मात्रा १** माशेकी है।

गोखरू (गोक्षुर)

गोक्षुरःक्षुरकोपिस्यात्त्रिकंटःस्वादुकंटकः
गोकंटकोगोक्षुरकोवनशृंगाटइत्यपि ॥ ४३ ॥
पलंकषाश्वदंष्ट्राचतथास्यादिक्षुगंधिका।
गोक्षुरः शीतलःस्वादुर्बलकृद्बस्तिशोधनः ॥
मधुरोदीपनोवृष्यःपुष्टिदश्चाश्मरीहरः।
प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ४५

अर्थ—गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकंटक, स्वादुकंटक, गोकंटक, गोक्षुरक, वनशृंगाट (बनके सिंघाड़े) पलंकषा, अश्वदंष्ट्रा और इक्षुगंधिका, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** गोखरू, **बं.** गोक्षुरी, **म.** गोखरू, वेडिली, सराटी, **का.** दोड्डनेग्गिलु, **तै.** पालेरु, **उडि.** गोखरू, **अ.** बजरउलखसक, **फा.** तुरुमखारखसक, **ला.** पेडाल्यस स्यूरेच कहते हैं। गोखरू **बड़ा** और **छोटा** ऐसे दो प्रकारका है। एक खड़ा और दूसरा पृथ्वीपर फैला होय है। तहां **बड़ा गोखरू** ऊंट कटेरेके समान क्षुपजातिका वृक्ष होता है। **पत्ते** इमलीके समान बारीक होते हैं। और डालियों पर **रुआं** तथा थोड़े २ अंतरपर **गांठ** होती हैं। इन्ही गांठोंपर से **पत्ते** और फूल निकलते हैं। **फूल** सौंफके समान पीलेरंगके होते हैं। **फल** छोटे, गोल तथा कांटेदार होते हैं। प्रत्येक फलकी बाजूपर पांच २ कंगूरे और उन प्रत्येक कंगूरों पर दो दो कांटे तथा भीतर एक बीज रहता है। **चित्र** नंबर १३ का देखो। **गुण।** शीतल, स्वादु, बलकारक, बस्तिशोधक, मधुर, दीपन, शुक्रजनक, वायुनाशक और पुष्टिकारी है। **प्रयोग।** पथरी, प्रमेह, श्वास, खांसी, बवासीर

और कठिन हृदयरोग इनपर देवे । **गोखरूका शाक** वृष्य, कड़वा और छिद्रोंको शुद्ध करता है। **प्रयोग**में इसकी जड़ वा फल वा पंचांग लीना जाताहै। **मात्रा** १ माशेकी है। *

छोटागोखरू.

क्षुद्रोपरोगोक्षुरकस्त्रिकंटकःकंठीषडंगोबहुकंटकःक्षुरः । गोकंटकःकंटफलःपलंकषाक्षुद्रक्षुरोभक्तटकश्चणद्रुमः ॥ स्थलशृंगाटकश्चैववनशृंगाटकस्तथा । इक्षुगंधःस्वादुकंटःपर्यायाःषोडशस्मृताः ॥ स्यातामुभौगोक्षुरकौसुशीतलौबलप्रदौतौमधुरौचबृंहणौ । कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौरसायनौतत्रबृहद्गुणोत्तरः ॥

अर्थ-दूसरा **क्षुद्र** (छोटा) गोखरू होता है उसके नाम-गोक्षुरक, त्रिकंटक, कंठी, षडंग, बहुकंटक, क्षुर, गोकंटक, कंटफल [कंटकफल], पलंकषा, क्षुद्रक्षुर, भक्त [कं] टक, चणद्रुम, स्थलशृंगाट, वनशृंगाट, इक्षुगंध, स्वादुकंटक, ए छोटे गोखरूके सोलह नाम हैं । **गुण** । दोनों गोखरू शीतल, बलकर्त्ता, मीठे, बृंहण । **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह और दाहको नाश करे तथा रसायन है । इन दोनों में **बडा गोखरू** कि जिसको दक्षिणीगोखरू कहते हैं वह लेना चाहिये । दोनों गोखरुओंका **दर्पनाशक** बादाम तथा नारियलका घी है। और **प्रतिनिधि** खीरे के बीज हैं । **मात्रा** इसकी छः माशेकी है।

लघुपंचमूल.

शालपर्णीपृष्ठपर्णीवार्ताकींकंटकारिका । गोक्षुरःपंचभिश्चैतैःकनिष्ठंपंचमूलकम् ॥ ४६ ॥

पंचमूलंलघुस्वादुबल्यंपित्तानिलापहम् । नात्युष्णंबृंहणंग्राहिज्वरश्वासाश्मरीप्रणुत् ॥

अर्थ—शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ीकटेरी और गोखरू इन पांचोंका नाम **लघुपंचमूल** है । **लघुपंचमूलके गुण** । हलका, स्वादु, बलकारी, वातपित्तनाशक, अति उष्णतारहित और पुष्टिकारी है । **प्रयोग** । **लघुपंचमूल** ज्वर, खांसी, पथरी आदि रोगोंको दूर करे।

दशमूल.

उभाभ्यांपंचमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम् । दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः । तंद्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ४८

अर्थ—लघुपंचमूल और बृहत्पंचमूल, इन दोनोंको मिलाने से **दशमूल** कहाता है। **दशमूल** त्रिदोषको नष्टकरे । **प्रयोग** । श्वास, खांसी, मस्तक रोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, अफरा, पसवाडेकी पीड़ा और अरुचि इनको दूर करे है।

जीवंती (डोडी) का शाक.

जीवंतीजीवनीजीवाजीवनीयामधुस्रवा । मंगल्यनामधेयाचशाकश्रेष्ठापयस्विनी ॥४६॥ जीवंतीशीतलास्वादुःस्निग्धादोषत्रयापहा । रसायनीबलकरीचक्षुष्याग्राहिणीलघुः ॥५०॥

अर्थ—जीवंती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा, मंगल्यनामधेया, शाकश्रेष्ठा और पयस्विनी ए **संस्कृत** — हिं. डोडी, **बं.** जीवंती, **म.** लहान हरणवेल, **का.** किरिय दाले, **गु.** मिठीखरखोडी कहतेहैं। यह भी क्षुप जातिकी रूखडी है । इसकी डाली

*__चरकसंहितामें__—गोखरूको मूत्रविरेचनीय, शुक्रदोषहर और शोथहर मानते हैं।
सुश्रुतसंहितामें—इसको श्लेष्मसंशमन, पित्तसंशमन और मूत्रदोषनिवारक माना है।
यूनानी हकीम—पत्ते और जड़का क्वाथ मूत्र अधिक करनेको देते हैं। और उसके बीज अन्य रोगोंमें तथा जलंधर और प्रमेहके रोगमें देना कहते हैं। वह गोखरू तथा उसके वृक्षको शीतल, पेशाव बढ़ानेवाला, पौष्टिक और कामोत्तेजक माने हैं।
अन्यसंहितावाले—इसकी छालको और पत्तोंको कफहर, दीपन, गुल्मशूलनाशक और कृमिहर कहते हैं।

तोड़ने से दूधके माफिक रस निकलता है। **फल** कंदूरीके समान ऊपर से पतला और नीचे मोटा होता है। **गुण**। शीतल, स्वादु, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, रसायनी, बलकारक, नेत्रोंको हितकर्ता, ग्राही और हलकी। **प्रयोग**। रक्तपित्त, क्षय, दाह और ज्वरदोषको दूर करे। इसका **फल** लिया जाता है। **मात्रा** ४ माशेकी है।

दूसरी बड़ी जीवंती.

जीवंत्यन्याबृहत्पूर्वापुत्रभद्राप्रियंकरी।
मधुराजीवपृष्ठाचबृहज्जीवायशस्करी॥
एवमेवबृहत्पूर्वारसवीर्यबलान्विता।
भूतविद्राविणीज्ञेयावेगाद्रसनियामिका॥

अर्थ–दूसरी जीवंती, बड़ी जीवंती कहातीहै। उसके **संस्कृत** नाम-पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा, जीवपृष्ठा, बृहज्जीवा और यशस्करी। **गुण**। जो गुण छोटी जीवंतीमें हैं वही रस, वीर्य और बल बड़ीमें जानने। यह भूतबाधाको दूर करे और तत्काल पारेको बंधन (बांधने) करनेवाली है।

स्वर्णजीवंती.

हेमाहेमवतीसौम्यातृणग्रंथिर्हिमाश्रया।
स्वर्णपर्णीसुजीवंतीस्वर्णजीवासुवर्णिका॥
हेमपुष्पीस्वर्णलतास्वर्णजीवंतिकाचसा।
हेमवल्लीहेमलतानामान्यस्याश्चचतुर्दश॥
स्वर्णजीवंतिकावृष्याचक्षुष्यामधुरातथा।
शिशिरावातपित्तास्रदाहजिद्बलवर्द्धिनी॥

अर्थ–हेमा, हेमवती, सौम्या, तृणग्रंथि, हिमाश्रया, स्वर्णपर्णी, सुजीवंती, स्वर्णजीवा, सुवर्णिका, हेमपुष्पी, स्वर्णलता, स्वर्णजीवंतिका, हेमवल्ली और हेमलता ए चौदह नाम **स्वर्णजीवंता**के हैं। **हि.** पीलीजीवंती, **क.** होगहाले। **गुण**। **स्वर्णजीवंती** वृष्य, नेत्रोंको हितकारी, मीठी, शीतल, वातपित्त, रुधिरके विकार और दाह इनको दूर करेहै। तथा बलको बढ़ाती है।

डोडी.

विषमुष्टिःकेशमुष्टिःसुमुष्टिरणुमुष्टिका।
क्षुपडोडिसमायुक्तोमुष्टिपंचाभिधःस्मृतः॥
विषमुष्टिःकटुस्तिक्तोदीपनःकफवातहृत्।
कंठामयहरोरुच्योरक्तपित्तार्त्तिदाहकृत्॥

अर्थ–विषमुष्टि, केशमुष्टि, सुमुष्टि, अणुमुष्टिका और डोडीक्षुप ए पांच नाम मुष्टि अर्थात् डोडीके हैं। **गुण**। विषमुष्टि अर्थात् **डोडी** चरपरी, कड़वी, दीपन, कफवातनाशक, कंठरोगको हरण कर्ता, रुचिकारी, रक्तपित्तको और दाहको करे है।

अन्यडोडी.

अन्याडोडीतुजीवंतीशाकश्रेष्ठासुखालिका।
बहुपर्णीदीर्घपत्रासूक्ष्मपत्राचजीवनी॥
डोडीतुकटुतिक्तोष्णादीपनीकफवातजित्
कंठामयहरारुच्यारक्तपित्तार्त्तिदाहनुत्
रक्तपित्तंक्षयंहंतिदाहहृत्स्वरशोधनी॥

अर्थ–दूसरी जो **डोडी** होती है उसको जीवंती, शाकश्रेष्ठा, सुखालिका, बहुपर्णी, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मपत्रा और जीवनी कहते हैं। **का.** कडसिंगे कहते हैं। **गुण**। **डोडी** चरपरी, कड़वी, गरम, दीपनी, और कफवातके रोगों को, कंठके रोगों को, रक्तपित्तकी पीडा और दाहको दूर करे, तथा रुचिको प्रकट करती है। बहुत से वैद्य जीवंती के नाम से **डोडी** लेते हैं सो महाभूल है।

मुद्गपर्णी.

मुद्गपर्णीकाकपर्णीसूर्यपर्ण्यल्पिकासहा।
काकमुद्गाचसाप्रोक्तातथामार्जारगंधिका॥
मुद्गपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वादुश्चशुक्रला।
चक्षुष्यावातशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत्।
दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यर्शोऽतिसारजित्॥

अर्थ–मुद्गपर्णी, काकपर्णी, सूर्यपर्णी, अल्पिका, सहा, काकमुद्गा और मार्जारगंधिका ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** मुगवन, **बं.** मुगानि (वनमाष), **म.** रानमुग, **का.** काहेसरू, **गु.** जंगली मग, **तै.** कारु पेसारा, **ला.** फेशि पोलसंस कहते हैं। यह भी मुग जातिकी वनस्पति है। इसके मूंगकेसे पत्ते होते हैं। और इसमें बिल्ली जानवरकी सी दुर्गंध आती है। यह एक प्रकारकी वनकी मूंग है

गुण। शीतल, रूक्ष, कड़वी, स्वादु, शुक्रजनक,नेत्रोंको हितकारी, ग्राही, हलकी और त्रिदोषनाशक। **प्रयोग**। घाव, सूजन, ज्वर, दाह, संग्रहणी, बवासीर, अतिसार, खांसी, वातरक्त और क्षय आदिरोगको दूर करे। इसका **पंचांग** लिया जाता है। **मात्रा** २ मासेकी है।

माषपर्णी.

माषपर्णीसूर्यपर्णीकांबोजीहयपुच्छिका ।
पांडुलोमशपर्णीचकृष्णवृंतामहासहा ॥५३॥
माषपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलासकृत् ।
मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्रजित् ॥

अर्थ--माषपर्णी, सूर्यपर्णी, कांबोजी, हयपुच्छिका, पांडु लोमशपर्णी, कृष्णवृंता और महासहा ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** मषवन, **बं.** माषानी (वनमाष) **म.** रान-उडीद, **तै.** रानोडिंड, **का.** काउट्टु, **गु.** जंगली अडद, **ता.** ग्रेंजिश्रा। यह **क्षुप** जातिकी वनस्पति है। यह वनके उडदका **क्षुप** है। इसकी **जड़** बड़ी कठोर होती है। डंडी काले रंगकी होती है। **पत्तोंपर** रुंए होते हैं और पीले होते हैं। **गुण**। शीतल, कड़वी, रूक्ष, शुक्र-जनक, बलकर्त्ता, रुधिरकर्त्ता, मधुर और ग्राही। **प्रयोग**। सूजन, वातपित्त, ज्वर और रुधिरके विकारोंको दूर करे। इसका **सर्वांग** ग्रहण करा जाता है। **मात्रा** २ माशेकी है।

अष्टवर्गःसयष्टीकोजीवंतीमुद्गपर्णिका ।
माषपर्णीगणोऽयंतुजीवनीयगणःस्मृतः ॥५५॥
जीवनोमधुरश्चापिनाम्नासपरिकीर्तितः ।
जीवनीयगणःप्रोक्तःशुक्रकृद्बृंहणोहिमः ॥५६॥
गुरुर्गर्भप्रदःस्तन्यकफकृत्पित्तरक्तहृत् ।
तृष्णाशोषंज्वरंदाहंरक्तपित्तंव्यपोहति ॥५७॥

अर्थ--पूर्वोक्त अष्टवर्ग (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि) और मुगद्पर्णी, माषपर्णी, जीवंती और मुलहटी, इन बारह औषधोंको **जीवनीय गण** कहते हैं। और इनमें से ऋद्धि,वृद्धिको निकालकर बाकीके दश द्रव्योंको **जीवनीय** दशक कहते हैं। यह भी **जीवनीय गणमें** गिना जाता है। **गुण**। **जीवनीयगण** मधुर, शुक्रकर्त्ता, बृंहण, शीतल, भारी, गर्भकर्त्ता, स्तनोंमें दूध बढानेवाला, कफकारी और रक्तपित्तको हरण करे। **प्रयोग**। तृषा, शोष, ज्वर, दाह और रक्तपित्त, इनको दूर करे।

सफेद अरंड, लाल अरंड.

शुक्लएरंडआमंडश्चित्रोगंधर्वहस्तकः ।
पंचांगुलोवर्द्धमानोदीर्घदंडोऽप्यदंडकः ॥५८॥
वातारिस्तरुणश्चापिरुबूकश्चनिगद्यते ।
रक्तोऽपरोरुबूकःस्यादुरुबूकोरुबूतथा ॥५९॥
व्याघ्रपुच्छश्चवातारिश्चंचुरुत्तानपत्रकः ।
एरंडयुग्मंमधुरमुष्णंगुरुविनाशयेत् ॥ ६० ॥
शूलशोथकटीवस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ।
ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ॥६१॥
एरंडपत्रंवातघ्नंकफकृमिविनाशनम् ।
मूत्रकृच्छ्रहरंचापिपित्तरक्तप्रकोपनम् ॥६२ ॥
वातार्यग्रदलंगुल्मवस्तिशूलहरंपरम् ।
कफवातकृमीन्हंतिवृद्धिंसप्तविधामपि ॥६३॥
एरंडफलमत्युष्णंगुल्मशूलानिलापहम् ।
यकृत्प्लीहोदराशोघ्नंकटुकंदीपनंपरम् ।
तद्वन्मज्जाचविड्भेदीवातश्लेष्मोदरापहः ॥

अर्थ--श्वेत **एरंडके** नाम-शुक्ल (सादा) एरंडको आमंड, चित्र, गंधर्वहस्तक, पंचांगुल, वर्द्धमान, दीर्घदंड, अदंडक, वातारि, तरुण और रुबूक। **हिं.** अंड, अरंड, अंडैआ, **रा.** एरंडोली, **बं.** शुक्ल एरंड, भ्यारेन्दा, **म.** एरंड, **का.** एरड्ड आंडलके, **गु.** एरंडो, **तै.** आमुडामु, **अ.** खरूप, **फा.** वेदअंजीर, **तुरकीमें** करकच, **ला.** रिसिनस Ricinus, **इं.** केस्ट्राइल कहते हैं। लाल **एरंडके** नाम रुबूक, उरुबूक, रुबू, व्याघ्रपुच्छ, वातारि, चंचू और उत्तानपत्रक। **हिं.** लाल-अंड, **बं.** लोहित एरंड। अंडका वृक्ष मंजरीयुक्त, पुष्प हस्तपर्ण और चित्रविचित्र फलवाले होते हैं। इसके प्रत्येक डोडोंमें तीन २ अंडी निकलती हैं और वो डोडा कांटेवाले अथवा विना कांटेकेभी होते हैं। और उनके ऊपर बहुतसे रुआंते २ होते हैं। **चित्र** नम्बर १४ देखो।

गुण । दोनों प्रकारके **अरंड** मधुर, गरम और भारी । **अंडके पत्ते** वातनाशक, कृमिनाशक और रक्तपित्तको कुपितकर्ता । **अंडके फल** (अंडी) अत्यंत गरम, वातनाशक, चरपरे और अत्यंत अग्निदीपक हैं । **प्रयोग** । दोनों प्रकारके **अंड** शूल, सूजन, कमर और मस्तकरोग, उदररोग, ज्वर, ब्रध्न (बद) श्वास, कफवृद्धि, अफरा, खांसी, कोढ़ और आमवात रोगोंको नाश करे । **अंडके पत्ते** मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे, इसके आगेके कोमल २ पत्ते गोला, वस्तिशूल, कफ, वादी, कृमि और सात प्रकार की अंडवृद्धिको दूर करे । गोला, शूल, यकृत्, प्लीहा, उदररोग और अर्शरोग इन रोगोंमें **फल** देना चाहिये । **अंडकी मज्जा** भेदक, वादी, कफ और उदररोगको नष्ट करे । **प्रयोग** में इसकी जड़, पत्ते, तेल और बीज लिये-जाते हैं । **मात्रा** २ माशेकी है ।

त्रीणिषण्नवबीजानिमधुनाक्रमशोलिहन् ।
देहशुद्धिलभेद्देहीरेचनात्कफवातयोः ॥
निद्राप्रदंकज्जलसंजनंस्यात्रिदोषकद्रू-
भवतार्क्ष्यतुल्यम् । अहृद्यमत्यंतकृतं
कतीरात्वमुष्यदर्पघ्नइतीरयंति ॥
बदल्मूलकबीजंस्यान्निर्गुंडीबीजमित्यपि ।

अर्थ--अंडीके तीन बीज, वा छः बीज, अथवा नौ बीजोंको पीस सहतमें मिलायके चाटे तो कफ और वातको रेचनकर इस प्राणीकी देहशुद्धि होवे । अंडीको लोहेकी सलाईमें छेद कर जलायकर कज्जल पाड़े तो जिसको नींद न आती हो उसको नींद आवे । और त्रिदोषरूप सांपके मारनेको गरुड़के समान है । यह अत्यंत हृदयको अप्रिय है । इसके **दर्प**को नाश करनेवाला **कतीरा** है । और **प्रतिनिधि** मूली के बीज अथवा निर्गुंडी के बीज हैं ।

बड़ा अंड.

स्थूलैरंडोमहैरंडोमहापंचांगुलादिकः ।
स्थूलैरंडोगुणाढ्यःस्याद्रसवीर्यविपाक्तिषु ॥

अर्थ--स्थूलएरंड, महाएरंड और महापंचांगुल, इत्यादिक इस **बड़े अंडके** नाम हैं । **म.** थोर एरंड कहते हैं । यह बड़ा अंड रस, वीर्य और विपाकमें पहिले अंडके समान गुणवाला जानना ।

सफेद, लाल आक

अलर्कोगणधूपःस्यान्मन्दारोवसुकोऽपिच ।
श्वेतपुष्पःसदापुष्पःसवालार्कःप्रतापसः ॥६५॥
रक्तोऽपरोऽर्कनामास्यादर्कपर्णोविकीरणः ।
रक्तपुष्पःशुक्लफलस्तथास्फोटःप्रकीर्तितः ॥६६॥
अर्कद्वयंसरंवातकुष्ठकंडुविषव्रणान् ।
निहंतिप्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरशकृत्कृमीन् ॥
आलर्ककुसुमंवृष्यंलघुदीपनपाचनम् ।
अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम् ६८
रक्तार्कपुष्पंमधुरंसतिक्तम्
कुष्ठकृमिघ्नंकफनाशनंच ॥
अर्शोविषंहंतिचरक्तपित्तम्
संग्राहिगुल्मेश्वयथौहितंतत् ॥ ६९ ॥
क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णंस्निग्धंसलवणंलघु ।
कुष्ठगुल्मोदरहरंश्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ ७० ॥
अर्कमूलंकफोत्सारिस्वेदनंवामनंतथा ।
श्वासकासप्रतिश्यायानतीसारंप्रवाहिकाम् ॥
रक्तपित्तंशीतपित्तंग्रहणींचाप्यसृग्दरम् ।
नाशयेत्कफजान्रोगान्विषंकीटसमुद्भवम् ॥

अर्थ--स्वेतअर्कके नाम अलर्क, गणधूप, मंदार, वसुक, श्वेतपुष्प, सदापुष्प, वालार्क और प्रतापस, **हिं.** सफेदआक, सफेद अकौआ, पूरवमें मदार, **बं.** श्वेत-आकंद, **म.** रुई, **का.** यक्के, **गु.** आकडो, **तै.** तेलाजल्लेडु, **फा.** खुर्क, **अ.** उषर, **ला.** केलोट्रोपीस जाइगाटिया Calotropis gigautea । **रक्तार्कके नाम**-अर्कपर्ण, विकीरण, रक्तपुष्प, शुक्लफल और स्फोट । **हिं.** आक, अकौआ, आकड़ा और सब नाम श्वेत आकके समान जानने । **गुण** । दोनों **आक** दस्तावर और वायुनाशक । **प्रयोग** । इनके सेवन करने से कोढ़, खुजली, विष, व्रण, तिल्ली, गोला, बवासीर, कफ, उदररोग और मलके कृमि नष्ट हों । **सफेद आकका फूल** बलकारक, हलका, अतिदीपन और पाचक । **प्रयोग** । इसके

अरुचि, प्रसेक (मुखसे लारका बहना) बवासीर, खांसी और श्वास ए दूर होवें। **लाल आकका फूल** मधुर, कड़वा, कफनाशक और संग्राही। **प्रयोग**। यह कोढ़, कृमि, विष, रक्तपित्त, गोला और सूजनरोगमें देवे। **आकका दूध** कड़वा, गरम, स्निग्ध, निमकीन, रसयुक्त और श्रेष्ठविरेचक है। इसके द्वारा कोढ़, गोला और उदर-रोग नष्ट होय। **आककी जड़** कफको निकालनेवाली, पसीने लानेवाली और वमनकारक। **प्रयोग**। इसके सेवन करने से, श्वास, खांसी, सरकमा, अतिसार, प्रवाहिका, रक्तपित्त, संग्रहणी, प्रदर और कफजन्य समस्त व्याधियोंको दूर करे। इसको घिसकर लेप आदि करने से बिच्छू आदिके विषको दूर करे।*

राजार्क.

राजार्कोवसुकोलर्कोमंदारोगणरूपकः
काष्ठीलश्चसदापुष्पोज्ञेयोत्रवसुसंमितः॥

*__चक्रदत्तमें__--लिखता है कि आककी जड़की छाल देनेसे देहके भीतरका प्रवाही अधिकताके साथ निकले हैं। त्वचाके रोगमें तथा पेटके भीतरके अवयव मोटे होगये होंय तथा पेटके जीव, खांसी, जलंधर आदि रोगोंमें उत्तम असर करता है।

आकका दूध देनेसे तीव्र जुल्लाव लगता है और देहमें लगाने से चमड़ी लाल हो जाती है। इसके **फूल** पाचनशक्ति बढ़ानेवाले, कुव्वत देनेवाले पेटका दर्दनाशक निश्चय करे गये हैं। तथा खांसी, श्वास, सरकमा और अरुचि में देते हैं। इसकी **जड़की** छाल आकके दूध में भिगोय के सुखाय लेवे फिर इस छालको आग में डाल के इसकी धूनी श्वास रोगमें लेने से खांसी जाती रहे। श्लीपद और अंडवृद्धिके रोगमें जड़की छाल छाछमें पीसके लगाने से आराम होय।

मीरमुहम्मद हुसेन--कहता है आकका दूध त्वचाको लाल करके ब्लिस्टर (फफोला) उठानेवाला, कफको काढ़नेवाला, बालोंको नष्ट करता तथा समग्र जातिके दूध सदृश रसोंमें सबसे अधिक तेज गिना जाता है। औषधके तरह से दादको मिटावे, बवासीरको जड़से खोयदे और दांत पोले पड़गये होंय और दर्द होता होय तो इसका दूध सहतके साथ मिलायके उसमें थोड़ी सी रुई भिगोयके दांत के नीचे रक्खा जाता है।

मीर अबदुल हमीद--आकके दूधको कोढ़के रोगमें तथा कलेजा और तिल्ली बढ़गई होय तो देनेकी सलाह देता है, उसके देनेकी यह रीति है कि, नाजके दानोंको उसमें भिगोयके सुखायले इन्हें खानेको देय। संधिका दर्द और सूजनके ऊपर लगानेको दूध साधारण इलाज तरीके बर्त्तावमें आता है। तथा पत्ते थोड़े से सेककर उसी काममें आते हैं। शरीरके जिस भागमें लकवा मार गया होय उसी भागपर पत्ते तेलमें सेककर उस तेलको लगावे घावमें अंकुर न आता होय तो सूखे पत्तोंका चूर्ण बुरकने से बहुत जल्दी अंकुर भर आता है।

डा० एन्सली—कहता है कि आकके पत्ते और जड़ आदिमें से जो दूधके समान रस निकलता है वह सुखानेके बाद देनेसे बहुत जल्दी जुल्लाव लाता है। और शरीर सुधारनेवाला जाना गया है, तथा **तामिल वैद्य** इसे सफेद कोढ़में अत्यंत गुणकारी गिनते हैं।

मि० सेफर--लिखता है कि छालमें शरीर सुधारनेका, जागृत करनेका और शरीरमें से विगाड़ निकालनेका गुण है।

डा० डीमक—कहता है कि छालकी वनिस्वत् दूध या रसको सुखायके देनेसे अधिक और उत्तम, असर करता है।

डा० डंकनके मत से इसमें उलटी लानेका गुण रहता है।

चरक संहितामें--इसको भेदनीय, पसीने लानेवाला, वमन लानेवाला, कफहर, योनिदोषहर, आस्थापन (पिचकारी मारनेका उपयोगी) तथा इसके बीज मूत्र लानेवाले निश्चय करे गये हैं।

सुश्रुत संहितामें--इसको कृमिहर, व्रणशोधन और वातविकारनाशक कहा है।

राजार्कः कटुतिक्तोष्णः कफमेदोविषापहः ।
वातकुष्ठव्रणान्हन्ति शोफकंडुविसर्पनुत् ॥

अर्थ–राजार्क, वसुक, अलर्क, मंदार, गणरूपक, काष्ठील और सदापुष्प; ए आठ नाम हैं। **गुण**। राजार्क–चरपरा, कड़वा, गरम, कफ, मेदा, विष, बादी, कोढ़, सूजन, खुजली और विसर्प रोग इनको नष्ट करे।

श्वेतमंदार,

श्वेतमंदारकस्त्वन्यः पृथ्वीकुरवकः स्मृतः ।
दीर्घपुष्पः सितालर्को दीर्घात्यर्कशराह्वयः ॥
श्वेतमंदारकोत्युष्णस्तिक्तोमलविशोधनः ।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान्हंति कृमीनत्यंतदारुणान् ॥

अर्थ–एक सफेद मंदार होता है उसके पृथ्वी, कुरवक, दीर्घपुष्प, सितअलर्क, दीर्घ और अतिअर्क ए पांच नाम हैं। **सफ़ेद मंदार** गरम, कड़वा, मलको शोधन कर्त्ता, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, इनको तथा अत्यन्त दारुण कृमियोंको नष्ट करे।

सेहुंड.

सेहुंडः सिंहतुण्डः स्याद्वज्रीवज्रद्रुमोऽपिच ।
सुधासमंतदुग्धाचस्नुक्स्त्रियांस्यात्स्नुहीगुडा ।
सेहुंडोरेचनस्तीक्ष्णोदीपनः कटुकोगुरुः ।
शूलमष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ।
उन्मादमोहकुष्ठार्शः शोथमेदोऽश्मपांडुताः ।
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषंहरेत् ॥
उष्णवीर्यंस्नुहीक्षीरंस्निग्धंचकटुकंलघु ।
गुल्मिनांकुष्ठिनांचापितथैवोदररोगिणाम् ॥
हितमेतद्विरेकार्थेयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥ ७४ ॥

अर्थ–सेहुंड, सिंहतुंड, वज्री, वज्रद्रुम, सुधा, समंतदुग्धा, स्नुक्, स्नुही और गुडा, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** थूहर, सेंहुड, **बं.** सिजवृत्त, मनसागाछ, **म.** निवडुंग, **दे.** सावर, **गु.** थोर, **क.** निवडुंग, **तै.** चेमुड, **फा.** लादनाम; **अ.** जकुम, **इं.** युफोर्व्या कहते हैं। थूहर छः प्रकारकी होती है। कांटेवाला थूहर, तिधारा थूहर, चौंधारा थूहर, नागफनी थूहर, खुरासानी थूहर और विलायती थूहर, इनमें खुरासानी थूहरका दूध ज़हरीला है। इसके सेवन करने से दस्त और उलटी होती हैं। तथा दाह होकर मृत्यु होय है। इसको बादीके रोगपर तथा संधियोंके दरदपर चुपड़नेसे तत्काल अपना फ़ायदा दिखाता है। और बाकी दूसरी जातिके थूहर यकृत्, तिल्लीकी गांठके लगानेके वास्ते देते हैं। तथा इसके पत्ते फोड़ा पकनेको उसपर बांधते हैं थूहर सात उपविषोंमें है। इसका **वृक्ष** लंबा होता है, **पत्ते** दो दो अंगुल लंबे होते हैं। इसके चारों तरफ़ कांटे होते हैं। **गुण**। रेचक, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, कटु और भारी। **प्रयोग**। इसके सेवन करनेसे शूल, **अष्ठीलिका**, अफरा, कफगोला, उदररोग, बादी, उन्माद, मूर्च्छा, कोढ़, बवासीर, सूजन, मेदरोग, पथरी, पांडुरोग, व्रण, सूजन, ज्वर, तिल्ली, विष और दूषीविष ए दूर हों। **थूहरका दूध**। उष्णवीर्य, स्निग्ध, कटु और हलका। **प्रयोग**। यह गोला, कुष्ठ और उदररोग मस्तके वास्ते हितकारी विरेचन है। और जो बहुत दिनके रोगी हैं उनको हितकारी है। इसके दूधकी **मात्रा** १ माशेकी है।

तिधारा थूहर.

स्नुहीरन्यस्त्रिधारः स्यात्तिस्रोधारास्नुहीश्चसः ।
पूर्वोक्तगुणवानेषविशेषाद्रससिद्धिदः ॥

अर्थ–दूसरी त्रिधार, तिस्रोधारा स्नुही है। इसके गुण पूर्वोक्त थूअरके समान हैं, परंतु विशेषकरके रससिद्धि अर्थात् पारदका बद्धक है।

शातला.

शातलासप्तलासाराविमलाविदुलाचसा ।
तथानिगदिताभूरिफेनाचर्मकषेत्यपि ॥७५॥
शातलाकटुकापाकेवातलाशीतलालघुः ।
तिक्ताशोथकफानाहपित्तोदावर्तरक्तजित् ॥

अर्थ–शातला, सप्तला, सारा, विमला, विदुला, भूरिफेना और चर्मकषा, ए **संस्कृत** नाम. **हिं.** सातला, **बं.** सिजविशेष, **म.** पांतनिवडुंग, **दे.** शिकेकाई, कांटेरबूल, **का.** चडिलसोनुली, हिरियचटकनख, **गु.** सीकाई, चीकाखाई, **ला.** एकेशिआ कानसीना–यह थूहरका भेद है। इसमें से पीलेरंगका दूध निकलता है स्वरूप। इस कांटेवाली बेलके खैरके पत्तेके समान पत्ते

होते हैं। फूल पीला होताहै। उसमें चपटी फली लगती है। और यह रीठेकी जगह वर्त्ती जाती है। इसके भीतर काले **बीज** होते हैं। **गुण**। पाक में कटु, वातकारी, शीतल, हलकी और कड़वी। **प्रयोग**। सूजन, कफ, अफरा, पित्त, उदावर्त्त और रक्तदोष को दूर करे। इसके दूधकी **मात्रा** २ माशे की है। इसको बाल साफ़ करनेके वास्ते मार्थेमें डालते हैं।

कंथारी.

कंथारीकंथरीकंथादुर्धर्षातीक्ष्णकंटका।
तीक्ष्णगंधाक्रूरगंधादुःप्रवेशाष्टकाभिधा॥
कंथारीकटुतिक्तोष्णाकफवातनिकृंतनी।
शोफघ्नीदीपनीरुच्यारक्तग्रंथिरुजापहा॥

अर्थ–कंथारी, कंथरी, कंथा, दुर्धर्षा, तीक्ष्ण-कंटका, तीक्ष्णगंधा, क्रूरगंधा, दुःप्रवेशा, ए आठ नाम कंथारिके हैं। **गुण**। **कंथारी** चरपरी, कड़वी, गरम, कफ, वात और सूजनको नाश करे। जठरा-ग्निको दीपन करे। रुचिकारी, रुधिरविकार, गांठकी पीडाको दूर करे है।

कलिहारी.

कलिहारीतुहलिनीलांगलीशक्रपुष्पिका।
विशल्याग्निशिखानंतावह्निवक्त्राचगर्भनुत्॥
कलिहारीसराकुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित्।
सक्षाराश्लेष्मजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच॥
तीक्ष्णोष्णाकृमिहृल्लघ्वीपित्तलागर्भपातिनी॥

अर्थ–कलिहारी, हलिनी, लांगली, शक्रपुष्पिका, विशल्या, अग्निशिखा, अनंता, वह्निवक्त्रा और गर्भनुत्, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कलियारी, करिहारी, कलहिंस, **बं.** ईशलांगला, **म.** कललावी, **द्रे.** कलावी, **कों.** खड्यिा-नाग, **का.** लांगुली, लांगुलिका, राडागारि **गु.** कलगारी, **इं.** ग्लुफसेन, **ला.** एकोनाइटम् नेपिलम् कहते हैं। यह सात उपविषोंमें एक प्रकारका विष है। **गुण**। दस्तावर, क्षारगुणविशिष्ट कफनाशक, कड़वी, चरपरी, कषेली, तीक्ष्ण, उष्ण, कृमिघ्न, हलकी, पित्तवर्द्धक और गर्भस्रावकारक। **प्रयोग**। कोढ़, सूजन, बवासीर, व्रण और शूलरोगको नष्ट करे। इसकी जड़ प्रयोगमें लेते हैं। **मात्रा** ६ रत्तीकी है।

सफेद और लाल कनेर.

करवीरःश्वेतपुष्पःशतकुंभोऽश्वमारकः।
द्वितीयोरक्तपुष्पश्चचंडातोलगुडस्तथा॥७९॥
करवीरद्वयंतिक्तंकषायंकटुकंचतत्॥
व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम्॥
वीर्योष्णंकृमिकंडुघ्नंभक्षितंविषवन्मतम्॥८०॥

अर्थ–करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुंभ, अश्वमारक, ए श्वेतकरवीरके नाम। **हिं.** सफेद कनेर, **बं.** श्वेतकरवी, **म.** श्वेतकणेर, **का.** बाकड़लिंगे, **गु.** धोलीकणेर, **इं.** ओलीअांडर कहते हैं। रक्तपुष्प, चंडात, लगुड, ए रक्तकर-वीरके **संस्कृत** नाम। **हिं.** लालकनेर, **बं.** रक्तकरवी, **म.** तांबडीकणेर, **का.** कंगणलिंगे. **गु.** रातीकणेर, **तै.** कानेरचेट्टु, **अ.** सुमुल, **फा.** खरजेहरा, **इं.** अलियंडर। कनेर **चार** जातिकी है। एक सफेद फूलकी, दूसरी लाल फूलकी, तीसरी पीले फूलकी और चौथी गुलाबी फूलकी होती है। यह भी सात उपविषोंमें एक प्रकारका उपविष है। **गुण**। दोनों **कनेर** कड़वी, कषेली कटु, और उष्णवीर्य। **प्रयोग**। व्रण, नेत्रपीडा, कोढ़, घाव, कृमि और खुजली आदि रोगको दूर करे। और भक्षण करे तो विषके समान प्राण हरण करे।

पीली कनेर और काली कनेर.

पीतकरवीरकोऽन्यपीतप्रसवःसुगंधि-
कुसुमश्च। कृष्णस्तुकृष्णकुसुमश्च-
तुर्विधोऽयंगुणेतुल्यः॥

अर्थ–पीली कनेरका फूल पीला होता है उसको सुगंधिकुसुम भी कहते हैं। और काली कनेर का फूल कालेरंगका होता है। इस प्रकार चार प्रकारकी कनेर है। परंतु कालेरंगकी कनेर हमने नहीं देखी अलबत्त गुलाबी रंगकी तो देखी है।

धतूरा.

धत्तूरधूर्तधुत्तूराउन्मत्तःकनकाह्वयः।
देवताकितवस्तूरीमहामोहीशिवप्रियः॥८१॥
मातुलोमदनश्चास्यफलेमातुलपुत्रकः।
धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत्॥८२॥
कषायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशकः।
उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकंडुकृमिविषापहः॥८३॥

अर्थ–धत्तूर, धूर्त्त, धुत्तूर, उन्मत्त, देवता, कितव, तूरी, महामोही, शिवप्रिय, मातुल और मदन इतने और जितने संस्कृतमें सुवर्णवाचक शब्द हैं सब धतूरेके **संस्कृत** नाम जानने। इसके फलको **मातुलपुत्रक** कहते हैं। **हिं.** धतूरा, **बं.** धुतूरा, **म.** धोतरा, धोत्रा, **का.** मदकुणिके, **तै.** नाल्लाउम्मीते, **अ.** जोजअलासिल, **फा.** तातूरह, **इं.** इस्टेमुनियम्, **ला.** इस्ट्रेमुनियाई कहते हैं। **स्वरूप**। धतूरेके **पत्ते** मध्यम कदके होते हैं। **फूल** सफ़ेद लंबे आकारका होता है उसके **पांच** विभाग होते हैं। उसमें पांच पुंकेशर और एक स्त्रीकेशर होती है। उसकी बाहरकी ढकनेकी पांखडी पांच लील रंगका होती हैं। **फल** गोलाकार, कांटेदार, ऊपर टोपीवाला और भीतर बहुत से मिरचकेसे बीजवाला होता है। **चित्र** नंबर १४ का देखो। **गुण**। मादक (मस्तकर्त्ता) वर्णकर्त्ता, अग्निकारक, वातजनक, कषेला, मधुर, कड़वा, गरम, भारी, विषनाशक, पीडानिवारक, निद्राकर्त्ता, मूत्रवर्धक। नेत्रके ऊपर चारों ओर इसका लेप करने से नेत्रका तारा फैलता है। **प्रयोग**। ज्वर, कुष्ठ, कफकी वृद्धि, खुजली, जूंआ, लीख, आदि कीड़ा और व्रण इनकों नष्ट करे। (इसका धूम्रपान करे तो तत्काल श्वासको दूर करे है) यह भी उपविषोंमें है। **प्रयोग** में इसके पत्ते और फल तथा फलके बीज लिये जाते हैं। **मात्रा** १ रत्तीकी है।

कार्पासमज्जादर्पघ्नोनस्यप्राशेवुधैःस्मृतः।
क्षीरंस्वभावोष्णमथाज्यपानम्।
दर्पघ्नमेतस्वबुधावदन्ति॥

अर्थ–धतूरेके **दर्पनाशक** अर्थात् **मदके** दूर करनेवाली बिनोलेकी मिंगी है। उसको जलमें पीसके **नाश** देवे, और पिलावे तथा तत्कालका दुहा हुआ दूध और घी मिलायके पिलावे। यह रुधिरको बिगाड़ता है।

कालाधतूरा.

कृष्णधत्तूरकःसिद्धःकनकःसचिवःशिवः।
कृष्णपुष्पोविषारातिःक्रूरधूर्त्तश्चकीर्तितः॥

अर्थ–काले रंगका धतूरा सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, बिषाराति और क्रूरधूर्त्त कहलाता है। ए काले धतूरेके **संस्कृत** नाम हैं। कान्हडीमें करिय मदकुणिके कहते हैं।

राजधतूरा.

राजधत्तूरकश्चान्योराजधूर्त्तोमहाशठः।
निस्त्रैणिपुष्पकोभ्रांतोराजस्वर्णःषडाह्वयः॥
सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्च-
संतिधत्तूराः। सामान्यगुणोपेतास्ते-
षुगुणाढ्यस्तुकृष्णकुसुमःस्यात्॥

अर्थ–एक राजधतूरा होता है उसके राजधत्तूर, राजधूर्त, महाशठ, निस्त्रैणि, पुष्पक, भ्रांत, राजस्वर्ण ए छः नाम हैं। सफेद, नीले, काले, लाल और पीले फूलके धतूरे होते हैं इन सबमें सामान्य गुण हैं परंतु इनमें काले फूलका धतूरा अत्यंत गुणकारी है।

अडूसा.

वासकोवासिकावासाभिषङ्माताच
सिंहिका।
सिंहास्योवाजिदंतास्यादाटरूषोऽटरूषकः॥
आटरूषोवृषस्ताम्रःसिंहपर्णश्चसस्मृतः।
वासकोवातकृत्स्वर्यःकफपित्तास्रनाशनः॥
तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघुःशीतस्तृडार्त्तिहृत्।
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः॥८६॥

अर्थ–वासक, वासिका, वासा, भिषङ्माता, सिंहिका, सिंहास्य, वाजिदंत, आटरूष, वृषताम्र और सिंहपर्ण, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** अडूसा, रूसा, बांसा, **बं.** वासक, **म.** अडूलसा, **का.** आडसोगे, **तै.** आडसारं, आडापाकु, **तै** अघडांडे, **गु.** अरडूसी, **ला.** आधाटोढा वासीका। **स्वरूप**। यह क्षुपजातिकी वनस्पति है उंचाईमें गज ड़ेढ गजका होता है। इस वृक्षके लम्बे **पत्ते** अनीदार आमे सामे चक्करमें होते हैं। **फूल** सफ़ेदरंगका नागफेनके समान और **फल** मोगराकी कलीके समान होता है। इसमें से पिस्तेके समान चार बीज निकलते हैं और वो चपटे होते हैं। **चित्र** नंबर १५ देखो। अडूसा काले रंगका दूसरा होता है। उसमें **फूल** काले रंगका लगता है। यह बड़ा उत्कट है। १० वर्षकी अवस्था वाले से कम उमरवालेको नहीं देना। **गुण**। वातकारक

स्वरशोधक, कड़वा, कषेला, हृद्य, हलका और शीतल। **प्रयोग**। कफवृद्धि, रक्तपित्त, तृषारोग, श्वास,खांसी,ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ और क्षयरोग इनको दूर करे दांतों को मज़बूत करे है। इसके पत्ते और फूल, प्रयोगमें लिये जाते हैं। **मात्रा** ४ मासेकी है।

पित्तपापड़ा.

पर्पटोवरतिक्तश्चस्मृतःपर्पटकश्चसः।
कथितःपांशुपर्यायस्तथाकवचनामकः ॥८७॥
पर्पटोहंतिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान्।
संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः ॥८८॥

अर्थ–पर्पट, वरतिक्त, पर्पटक और जितने संस्कृतमें पांशुके और कवचके पर्यायवाचक नाम हैं सब इसके जानने। **हिं.** पित्तपापड़ा, दवनपापड़ा, **बं.** क्षेतपापड़ा, **गु.** खडसलीओ, पीठपपडो, **अ.** शाहतरज, **फा.** शाहतरा कहते हैं। **कों.** थरमेर,**उत्क.** जडपांपुडी, **इं.**जस्टिसयाप्रो-कंवेन्स **ला.**फुमेरियापार्वीफ्लोरा। **स्वरूप**। यह क्षुपजातिकी वनस्पतिहै। इसका **क्षुप** बहुत छोटा होताहै। **गुण**। संग्राही, शीतल, कडवा, दाहनाशक, वातकर्त्ता और हलका। **प्रयोग**। रक्तपित्त, भ्रमरोग, तृषा (प्यास) और कफज्वर इनको दूर करे। **मात्रा** काढ़ेमें १ माशे पांच रत्ती से लेकर २॥ तोले तककी है। चूर्ण आदिमें ६ माशेसे २१ माशे पर्यंत लेवे।

विपत्तोनिंबुकंक्षौद्रंवदल्पथ्यासनायच।
विरेकविषयेग्राह्यानीममानानचापरे॥

अर्थ–पित्तपापडेके **मद**को मारनेवाला नीबूका रस और सहत है। **प्रतिनिधि** इसकी मर्कईसनाय और हरड है। यदि इसको जुल्लाबमें देना होय तो इसकी जो मात्रा कही है उससे आधी लेवे।

नीम (निंब).

निंबःस्यात्पिचुमर्दश्चपिचुमंदश्चतिक्तकः।
अरिष्टःपारिभद्रश्चहिंगुनिर्यासइत्यपि ॥८९॥
निंबःशीतोलघुर्ग्राहीकटुपाकोऽग्निवातनुत्।
अहृद्यःश्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत्।
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत् ॥९०॥
निंबपत्रंस्मृतंनेत्र्यंकृमिपित्तविषप्रणुत्।
वातलंकटुपाकंचसर्वारोचककुष्ठनुत् ॥ ९१ ॥
निंबफलंरसेतिक्तंपाकेतुकटुभेदनम्।
स्निग्धंलघूष्णंकुष्ठघ्नंगुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ९२

अर्थ–निंब, पिचुमर्द, पिचुमंद, तिक्तक, अरिष्ट, पारिभद्र और हिंगुनिर्यास, ए **संस्कृत** नाम हैं ॥ ९६ ॥ **बं.** निम, **म.** कडुनिंब, **का.** बेड, **गु.** लिंबडो, **गु.** बालंतनिंब, **क.** बेउ, **तै.** वेपा, टायचेद्दु, **ता.** [illegible], मरम, **अ.** अजाद दरख्त, **फा.** दरख्तहक, निम्बट्री **ला.** आकाडीरेकटा इंडीका कहते हैं। **स्वरूप**। नीम दो प्रकारका होता है–कड़वा और मीठा। इन में औषधोपयोगी कड़वा नीम है। इसका **वृक्ष** बड़ा होताहै, **पत्ते** छोटे, उनकी कोर कंगनी–दार और अनीदार होतीहै। **फूल** सफेद छोटा पांच पंखड़ीका तथा **झूमकेदार** होताहै। **फल** अर्थात् **निबौरी** खिरनी के माफिक होती है। इसका बीज ज्वरघ्न है। लकड़ी पीले रंगकी होतीहै। यह वसं–तऋतु में फूलता है। नंबर १६ का **चित्र** देखो। **गुण**। शीतल, हलका, ग्राही, पाकके समय कटु, अग्नि और वातको हरण करे, हृदयको अप्रिय श्रमको शांति करे (कोई रूक्ष, भेदी भी कहाता है।) **प्रयोग**। तृषा, खांसी, ज्वर, अरुचि, कृमि, व्रण, पित्त, कफ, वमन, कुष्ठ, हल्लास और प्रमेहरोगको नष्ट करे। **नीमके पत्ते** नेत्रोंको हितकारी, कृमिनाशक,

* **राजनिघंटुमें**—लिखाहै कि अडूसेके वृक्षकी छालमें कडवास है और छाल पत्तोंको दीपन, रोचक और आमनाशक वर्णन कियाहै। और इन गुणोंके कारण यह पुरानी संग्रहणी और कफके ऊपर दिया जाताहै। **छालका क्काथ** दोसे लेकर तीन औंसकी मात्रामें देनेसे बदहज्मी दूर होती है।

देशी वैद्य—इस छालको ज्वरकी बिमारीमें और नाताकतीमें पौष्टिक विधिसे वर्त्तते हैं। और प्रसव होनेके बाद स्त्रियों को इस वृक्षकी छाल तथा पत्तोंका क्काथ करके पिलाने की तारीफ करते हैं।

पित्तनाशक, विषघ्न, वातकर्त्ता; **पाक** में कटु, सर्व प्रकारकी **अरुचि** नाशक और कोढ़ रोगको नष्ट करे। **नीमके फल** (निंबौरी) खानेमें कड़वी और पाकके समय कटु, दस्त करानेवाली, स्निग्ध, उष्ण, हलकी तथा कोढ़, गोला, बवासीर, कृमि और प्रमेहरोगको नष्ट करे। इसकी **छाल** और कहीं **पत्ते** प्रयोगमें लिये जाते हैं। **मात्रा** २ माशेकी है।*

मीठानीम.

कैडर्योऽन्योमहानिंबोरामणोरमणस्तथा।
गिरिनिंबोमहारिष्टःशुक्तशालोऽलकाह्वयः॥
कैडर्यःकटुकस्तिक्तःकषायःशीतलोलघुः।
संतापशोषकुष्ठास्रकृमिभूतविषापहः॥

अर्थ–एक महानिंब कैडर्य संज्ञक है। उसके रामण, रमण, गिरि निंब, महारिष्ट, शुक्तशाल और अलकाह्वय ए **संस्कृतमें** नाम हैं। **हिं.** मीठानीम, कढ़ानीम, **म.** गोड़निंब, **का.** कयांहेवेऊ, फलितमहानिंबु कहते हैं। **गुण।** कैडर्य अर्थात् **मीठानीम** चरपरा, कड़वा, कषेला, शीतल और हलका है। **प्रयोग।** संताप, शोष, कोढ़, रुधिरविकार, कृमिरोग और विषबाधाको दूर करे।

[कोई कहता है कि दाह, बवासीर, शूल, सूजन, भूतबाधा इनकोभी नष्ट करता है]

बकायन (महानिंब.)

महानिंबःस्मृतोद्रेकारम्यकोविषमुष्टिकः।
केशमुष्टिर्निंबकश्चकार्मुकोजीवइत्यपि॥९३॥
महानिंबोहिमोरूक्षस्तिक्तोग्राहीकषायकः।
कफपित्तभ्रमच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित्।
प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः॥९४॥

अर्थ–महानिंब, द्रेका [नेता] रम्यक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निंबक, कार्मुक और जीव ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** बकाय [इ] न, **ब** बोडानिम, **म.** वकाणनिंब, कवड्यानिंब, **गु.** वकान, **ता.** मालाइवेतु वाँवरयम्, **क.** महाबेड, **तै.** गंगरा विचेट्ट, **ला.** मेलिया एजेडेरेक। **गुण।** शीतल, रूक्ष, कड़वी, ग्राही और कषेली। **प्रयोग।** कफ पित्त, भ्रमरोग, वमन, कोढ़, हृल्लास, रक्तदोष, प्रमेह, श्वास, गुल्म और बवासीर इन सब रोगोंको बकायन दूर करे।

*__आयुर्वेदमें__––नीमका वर्णन नीचे लिखे प्रमाण है। नीमकी छाल पाचक, कड़वी और ग्राही है। इसके **पत्तोंको** गेंहूके चूनकी पुलटिश बनानेमें लेनेसे फोड़ेकी गांठ बैठजाती है। **पत्तोंको** पीस शीतलाके घावों पर लगानेसे उत्तम फायदा होता है। **पत्तोंका** रस पीने से पेटके कीड़े निकल जाते हैं और कामला तथा शरीर पर होनेवाले गूमड़ा (गांठ या फोड़ा) पर दीने जाते हैं।

चक्रदत्तमें––दुष्ट नासूरपर नीमके **पत्ते** और तिल पीसकर इसकी पुलटिश बांधनेकी तारीफ करी है। तथा नीमके फल (निबौरी) को जुल्लाब और पेटके कीड़े निकालनेको लिखा है। **निबौरीका तेल** गांठवाले फोड़े और कोढ़के ऊपर बहुत उत्तम असर करे है।

अंग्रेज़ी औषधोंमें––नीमकी छाल ज्वरनाशक, और पत्त त्वचारोगनाशक गिने गये हैं। तथा घाव पर नीमके पत्तोंको ओंटायके उस पानी से सेक करनेको कहते हैं। तथा उस से सूजन आये विना जल्दी से पककर अंकुर आय जाता है। कीननके बदले ज्वरके ऊपर तथा संधिवात पर नीमकी छालको पानीमें भिगोयके पिलानेकी प्रशंसा करते हैं।

मेजर लोथर–लिखता है–नीमके वृक्षमें से कभी २ अपने आप रस झड़ने लगता है, वह पुराने घाव पर और नासूर पर अत्यंत गुण करता है उसके पत्तोंका **क्वाथ** ओंटायके पिलानेसे कोलेरा (हैज़ा) के रोग में फायदा हुआ था, **पत्तोंका रस** तिजारी, ज्वर, बदहज़मी और संधिके रोगमें काम आता है।

चरकसंहितामें––नीमको दीपनीय और खुजलीनाशक गिना है।

सुश्रुतसंहितामें––इसको कफवातहर और शरीरके किसी भागपर सूजन आनेकर जलन होती होय उसके दूर करनेवाला मानते हैं। **कोमल फलको** प्रमेहके रोगमें उपयोगी गिनते हैं। तथा ज्वरकी गरमी नष्ट करता मानते हैं।

फरहद (पारिभद्र)

पारिभद्रोनिंबतरुर्मदारः पारिजातकः ।
पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदःकृमिप्रणुत् ॥
तत्पत्रंपित्तरोगघ्नंकर्णव्याधिविनाशनम् ॥९५॥

अर्थ–पारिभद्र, निंबतरु, मदार और पारिजातक, ए **संस्कृत** नाम । **हिं** फरहद, **बं** पालिदामादार, **का.** पांगरा, हरिवाल, **तै.**मुच्चमेतिचेट्टु , **द्रा.** पंजीर, **ता.** मुरुक, **गु.** पांडरेवा, **ला.** एरिथ्रिना-इंडिका । **गुण** । वादी, कफ, सूजन, मेदरोग और कृमि-रोगको नाशकरे, इसका **पत्र** पित्तके रोगोंको और कर्णपीड़ाको दूर करे । इसकी छाल तथा स्वरस **प्रयोग** में लेते हैं । **मात्रा** २ माशे की है । *

कचनार (कांचनार)

कांचनारःकांचनकोगंडारिःशोणपुष्पकः ।
कोविदारश्चमरिकःकुद्दालोयुगपत्रकः ॥ ९६ ॥
कुंडलीताम्रपुष्पश्चाश्मंतकःस्वल्पकेशरी ।
कांचनारोहिमोग्राहीतुवरःश्लेष्मपित्तनुत् ॥
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगंडमालाव्रणापहः ।
कोविदारोऽपितद्वत्स्यात्तयोःपुष्पंलघुस्मृतम् ।
रूक्षंसंग्राहिपित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत् ॥ ९८ ॥

अर्थ–कांचनार, कांचनक, गंडारि और शोणपुष्पक, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** कचनार, **बं.** लालकांचन, **म.** रक्तकंचन, **का.** काचनू , कोचाले, **ता.** देवकांचन, **गु.** कंचनवृक्ष, कांचनार, **ला.** वोहीनीआवेर्येगेटा कहतेहैं । कोविदार, मरिक [चमरिक], कुद्दाल, युगपत्रक, कुंडली, ताम्रपुष्प, अश्मंतक और स्वल्पकेशरी, यह कचनारका भेद कोविदार है उसके यह **संस्कृत** नाम हैं । **हिं**· सफेद-कचनार, **बं.** श्वेतकांचन । **स्वरूप** । ये दोनों प्रकारकी औषधी पादपजातिकी है । **वृक्ष** बड़ा होताहै, और **पत्ता** बीचमेंसे फटा हुआ होताहै । मुंबईमें इस पत्तेमें तमाखू भरके पीनेकी बीड़ी बनातेहैं । **गुण** । शीतल, ग्राही कषेली, पित्तकफनाशक । **प्रयोग** । कृमि, कुष्ठ, गुदभ्रंश, गंडमाला और व्रणको दूर करे । सफेद कचनारके- कोविदारके समान गुण हैं । इन दोनोंके **फूल** हलके, रूखे और संग्राही । रक्तपित्त, प्रदर, क्षय और खांसीरोगको नष्ट करे । इन दोनोंकी छाल प्रयोगमें लेनी । **मात्रा २** माशे । कचनारकी फलीका साग होताहै और कचनारके रसकी पुट देनेसे सुवर्ण की भस्म होती है ।

सहजना (शोभांजन.)

शोभांजनःशिग्रुतीक्ष्णगंधकाक्षीवमोचकाः ।
तद्वीजंश्वेतमरिचंमधुशिग्रुःसलोहितः ॥ ९९ ॥
शिग्रुःकटुःकटुःपाकेतीक्ष्णोष्णोमधुरोलघुः ।
दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारस्तिक्तोविदाहकृत् ॥
संग्राहीशुक्रलोहृद्यःपित्तरक्तप्रकोपनः ।
चक्षुष्यःकफवातघ्नोविद्रधिश्वयथुकृमीन् ॥
मेदोपचीविषप्लीहगुल्मगंडव्रणान्हरेत् ।
श्वेतःप्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषाद्दाहकृद्भवेत् ॥
प्लीहानंविद्रधिंहंतिव्रणघ्नःपित्तरक्तहृत् ।
मधुशिग्रुःप्रोक्तगुणोविशेषाद्दीपनःसरः ॥
शिग्रुवल्कलपत्राणांस्वरसःपरमार्त्तिहृत् ।
चक्षुष्यंशिग्रुजंबीजंतीक्ष्णोष्णंविषनाशनम् ॥
अवृष्यंकफवातघ्नंतन्नस्येनशिरोर्तिनुत् ॥ ४

अर्थ–शोभांजन, शिग्रु, तीक्ष्णगंधक, अक्षीव और मोचक ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** सहजना, **रा.** सोहिजना, **बं.** सजिणा, **म.** शेवगा, **दे.** सेगट, **कौं.** शेगवा, **का.** अरसिनवणदह्लविननु. नुग्गी, **गु.** सरगवा । **तै.** मुलगा, **ता.** मोरंग, **ला.** हार्सरेडीशट्री । इसके तीन भेदहैं-श्याम, श्वेत और लाल । सहज-

* **डा० ऐन्स्ली**—कहताहै फरहदके वृक्षकी जड़का रस पुराने नासूर तथा पत्तोंकी पुलटिश उसीप्रकार त्वचारोगके फोड़े नष्ट करनेको वर्त्ताव में लीनी जाती है ।

डा० गिवसन—फरहदके बीजमेंसे निकलेहुए तेलको त्वचाके रोग और संधिवातके रोगमें वर्त्तनेकी प्रशंसा करताहै ।

चरकसंहितामें—फरहदके तेलको लेखनीय (धातु पतली करता) मानाहै ।

सुश्रुतसंहितामें—उसको कफवातप्रशमन, रक्तशोधन, कुष्ठघ्न तथा कफमेदोनिवारक मानाहै ।

नेके बीजको **श्वेतमिरच** कहते हैं। और लालरंगके सहजनेको **मधुशिग्रु** कहते हैं। **गुण। कटु रस** और इसका **पाक** भी कटु है। तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, दीपन, रोचन, रूक्ष, खारीगुणयुक्त, कड़वा, दाहकर्त्ता, संग्राही, शुक्रकर्त्ता, हृदयको प्रिय, नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्तको कुपित करता है। **प्रयोग।** बादी, कफ, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदरोग, अपची, विष, प्लीहा, गोला, गंडमाला और व्रणको नष्ट करे। **सफेदसहजना** भी पूर्वोक्त गुणोंको करे है। अधिक गुण ये हैं कि दाह करे और प्लीहा, विद्रधि, व्रण और रक्तपित्त रोगको दूर करे है। **मधुशिग्रु** अर्थात् लाल सहजना पूर्वोक्त गुण करे। विशेषता यह है कि दीपन, और दस्तकारी। सहजनेकी **छाल** और पत्तोंका **स्वरस** घोर पीडाको दूर करे। **सहजनेके बीज** तीक्ष्ण, गरम, विषनाशक, बलनाशक और वातकफनाशक। इसकी **नस्य** शिरःपीडाको शांति करती है। इसकी **छाल** तथा **फली** प्रयोगमें लीनी जाती हैं। **मात्रा** ४ माशे।*

*__हिंदुस्थानी वैद्य__—सहजनेको गरम, तीक्ष्ण, मूत्रवर्धक और त्वचापर लगाने से चमड़ीको लाल करनेवाला मानते हैं। सहजनेके बीजोंको भी गरम मानते हैं। और उसको **श्वेत मरीचके** नाम से बोलते हैं।

हारीतसंहितामें—सहजनेकी दो जाति कही हैं–लाल और सफेद। चमड़ीको लाल करनेसे लालकी अपेक्षा सफेद अधिक गुणवाला है। तथापि भीतरी खानेके उपयोग करनेको लालजातिका अधिक पसंद आता है। तथा यह कलेजा और तिल्लीकी गांठ मोटी होगई होय तो इसको देते हैं। शरीरके भीतरी भागमें गहरी सूजन होय तो जड़की छालका क्वाथ करके सूजनके ऊपर सेक करनेको काम आती है। तथा पेशाबकी थैलीमें पथरीके वास्तेमी परमोपयोगी है। इस वृक्षका गोंद तिलके तेलके साथ मिलायके कानमें टीस मारती होय तो डालनेसे आराम होता है।

मुसलमान ग्रंथकार—लिखते हैं कि सहजनेके फूल गरम हैं और उनके देनेसे सरदी मिटजाती है, सूजन उतर जाय है, पाचनशक्ति बढ़ती है, पेशाब अधिक उतरता है। तथा पेशाबकी थैलीमें पथरीका उत्पन्न होना बंद होता है। तथा श्वासके रोगमें उत्तम फायदा करे है। जड़का चूर्ण डालके बनी हुई पुलटिश बांधने से सूजन बिलकुल उतर जाती है; परंतु चमड़ीमें खुजाल चलकर पीड़ाको उत्पन्न करे है। इसकी **फली** शाकमें तथा कढ़ी आदिमें डालते हैं, और इसका अचारभी बनाते हैं। इसके सेवन करनेसे पेटमें कीड़े कदापि नहीं पड़ते।

डा० पेन्स्ली—कहता है कि सहजनेके वृक्षकी जड़ २० ग्रेनकी मात्रा से लकवाकी बिमारी तथा वारंवार आनेवाले ज्वरमें दिनी जाय है। तथा मृगी और स्त्रियोंके होनेवाली हिस्टीरियाकी बिमारीमें उत्तम असर करता है। बीजमें से निकाला हुआ तेल संधिवातके रोगमें संधियोंके ऊपर चुपड़ते हैं। खिचाव अथवा शूल होता होय तो इसकी जड़का क्वाथ करके उस से सेक करा जाता है। **जापानकी** विलायतमें इसकी जड़को जलंधरके रोगमें देते हैं।

डा० रीड—कहता है कि सहजनेके पत्ते, छाल और जड़में खिचाव बंद करनेकी शक्ति है। पत्तोंका **रस** निकाल उसमें काली मिरचोंको पीस **मिरगी आनेवालेके** नेत्रोंको चुपड़ते हैं। तथा **निमक** मिलायके छोटे २ बच्चोंके पेट **अफरआने** पर दिया जाय है। फोड़े पर पत्तोंको पीसके बांधनेसे जल्दी पकताहै। छाल और जीरा चांवलके जलमें पीसके मुखमें रक्खे तो मसूड़ोंका फूलना और दांतोंमें टीस मारना न्यून होता है। **पत्तोंको** गरमकर नासूर और नहरूआ पर बांधा जाय है। माथेके दूखने पर इस वृक्षका गोंद कनपटी तथा वद और गुह्येन्द्रियके रोगमें लेप करा जाय है।

चरकसंहितामें—इस वृक्षकी छाल और जड़को शिरोविरेचन और पसीने निकालनेवाली माना है।

सुश्रुतसंहितामें—इसको कफमेदनिवारक, मस्तकशूलनाशक और गुल्म तथा विद्रधिनाशक माना गया है।

कोयल (अपराजिता)

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्विष्णुकांताऽपराजिता।
अपराजितेकटूर्मेध्येशीतेकंठ्येसुदृष्टिदे॥
कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रणविषापहे।
कषायेकटुकेपाकेतिक्तेचस्मृतिबुद्धिदे॥

अर्थ–आस्फोता, गिरिकर्णी, विष्णुकांता और अपराजिता ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** सफेद और नीली कोय [इ] ल, **बं.** श्वेत और नील अपराजिता, **म.** गोकर्णीचे वीज, सुपनी, **का.** विष्णुकांके, **गु.** गरणी, **तै.** नीलगंट्ठना, **ला.** क्लीटोरिआ टरनेटआ कहते हैं। **गुण**। कड़वी, स्मरणशक्तिको बढ़ानेवाली, शीतल, कंठकी शुद्धि करता, दृष्टिको प्रसन्नताकारक, त्रिदोषनाशक, कषेली, कड़वी, पचनेमें कटु, बुद्धिदाता और विषघ्न। **प्रयोग**। कुष्ठ, शूल, आम, शोथ और व्रणरोगको दूर करे।

सह्मालू (सिंदुवार)

सिंदुवारःश्वेतपुष्पःसिंदुकःसिंदुवारकः।
नीलपुष्पीतुनिर्गुंडीशेफालीसुवहाचसा॥
सिंदुकःस्मृतिदस्तिक्तःकषायःकटुकोलघुः।
केश्योनेत्रहितोहंतिशूलशोथाममारुतान्॥८॥
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीलापितद्विधा।
सिंदुवारदलंजंतुवातश्लेष्महरंलघु॥ ६॥

अर्थ–सिंदुवार दो प्रकारका होता है। तहां सिंदुवार, श्वेतपुष्प, सिंदुक और सिंदुवारक ए श्वेत सिंदुवारके **संस्कृत** नाम। नीलपुष्पी, निर्गुंडी, शेफाली और सुवहा ए नील सिंदुवारके **संस्कृत** नाम। सिंदुवारको **हिं.** सह्मालू, निर्गुंडी, मेउडी, सेदुआरि, **बं.** निसिन्दा, **म.** निर्गुंडी, निगडी, वनय, **कों.** निगूड, **का.** करियल्लोकि, **गु.** नगोड, नगड, **तै.** तेलावावीली, **ता.** नोकची, **द्रा.** सान्वालि, **पं.** वणालहरी, **फा.** पंज, **ला.** वाइटेक्स निगंडी Vitex nigundi कहते हैं। **स्वरूप**। निर्गुंडीके वृक्षकी प्रत्येक डालियोंमें लंबे और पतले तीन २ अथवा पांच पांच पत्ते होते हैं। **फल** आमके मौरके समान गुच्छादार और जांफलीरंगका होताहै निर्गुंडीके बीजोंको बहुतसे वैद्य रेणुकबीज कहते हैं। दोनों प्रकारकी निर्गुंडीमें सह्मालूके पत्ते नामके पत्तेसे कुछ २ चौड़े और कंगनी तथा अनीदार होते हैं और काले रंगके सह्मालूको निर्गुंडी कहते हैं। इसके **पत्ते** अरहरके पत्तेके समान और मखमलके सदृश बहुत नरम और गिलगिले होते हैं। पुस्तक या कपड़ेमें रखने से उनमें कीड़ा नहीं लगे। **चित्र** नंबर १७ का देखो। **गुण**। स्मरणशक्तिदाता, कड़वा, कषेला, चरपरा, हलका, बालोंको हितकारी, नेत्रोंको गुणकारी। **प्रयोग**। शूल, श्वास, आमवात, कृमि, कोढ़, अरुचि और कफज्वरको दोनों प्रकारका सह्मालू दूर करे। इसकी जड़ लेनी चाहिये। **मात्रा** २ माशेकी है। सह्मालूके पत्ते कृमि आदि कीड़े और वातकफनाशक हैं।

कत्तरीनिर्गुंडी.

निर्गुंडीकर्त्तरीयुक्तातिक्ताकट्वीकफास्रजित्।
शूलंक्षयंतथावातंकुष्ठंकंडुंचनाशयेत्॥

अर्थ–एक कत्तरी निर्गुंडी होती है। **म.** कात्री-निगुड कहते हैं। यह कड़वी, चरपरी, कफ और रुधिरविकारको नाश करे। तथा शूल, क्षय, वादी, कोढ़ और खुजलीको दूर करती है।

वनकी निर्गुंडी.

अरण्यजातुनिर्गुंडीहितापित्तज्वरंजयेत्।
वर्ण्याविषंचवातंचगृध्रसींचनियच्छति॥
पर्णंतुकटुकंचास्याअग्निसंदीपनंलघु।
कृमीन्कफंतथावातनाशकंवर्त्ततेखलु॥
तत्पुष्पंकटुकंचोष्णंतिक्तंजंतुकफापहम्।
प्लीहंगुल्मंतथावातंकुष्ठंशोथंचनाशयेत्।
नाशयेच्चारुचिंसद्यत्कंडुंहरतिसत्वरम्॥

अर्थ–वनकी निर्गुंडी पथ्य है। पित्तज्वर, विषरोग, वादी, गृध्रसीवात इनको नष्ट करे। देहके वर्णको उजला करे। इसके **पत्ते** चरपरे, अग्निको दीपनकारी और हलके हैं। ये कृमि, कफ, वातको नष्ट करे। इसके **फूल** चरपरे, गरम, कड़वे और कृमि, कफ, तथा तिल्ली, गोला, वादी, कोढ़, सूजन, अरुचि और खुजली इनको तत्काल नाश करे।

कुड़ा (कुटज.)

कुटजःकूटजःकीटोवत्सकोगिरिमल्लिका।
कालिंगःशक्रशाखीचमल्लिकापुष्पइत्यपि॥
इंद्रोयवफलप्रोक्तोवृत्तकःपांडुरद्रुमः।
कुटजःकटुकोरूक्षोदीपनस्तुवरोहिमः॥ ११॥
तिक्तःसंग्राहकःप्रोक्तस्त्वग्दोषज्वरनाशनः।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत्॥

अर्थ–कुटज, कूटज, कीट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कालिंग, शक्रशाखी, मल्लिकापुष्प, इन्द्र, यवफल, वृत्तक और पांडुरद्रुम, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कुड़ा, कोरैया. [आं] **ता.** वेपलेइ, **बं.** कुंडची, **म.** श्वेतकुडा, **का.** कोडसिगेयमरनू, **तै.** अकेलूचांगल कुष्ठ, **फा.** तिवाज, **ला.** पोंगामिश्रा ग्लाब्रा Pongamia glabra कहतेहैं। **गुण**। कटु, रूक्ष, अग्निदीपक, कषेला, शीतल, तिक्त और संग्राही। **प्रयोग**। बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त कफजतृष्णा, त्वचाके दोष, ज्वर, आम और कुष्ठरोगको दूर करे। इसके बीजोंको **इन्द्रयव** कहतेहैं। कुड़ाकी **मात्रा** इन्द्रयव के समान है।

कंजा (करंज)

करंजोनक्तमालश्चकरंजश्चिरबिल्वकः।
घृतपूर्णकरंजोऽन्यःप्रकीर्यःपूतिकोऽपिच॥ १३
सचोक्तःपूतिकरजःसोमवल्कश्चसस्मृतः।
करंजःकटुकस्तीक्ष्णोवीर्योष्णोयोनिदोषहृत्॥
कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणकृमिकफापहः।
तत्पत्रंकफवातार्शःकृमिशोथहरंपरम्॥
भेदनंकटुकंपाकेवीर्योष्णंपित्तलंलघु॥ १५॥
तत्फलंकफवातघ्नंमेहार्शःकृमिकुष्ठजित्।
घृतपूर्णकरंजोऽपिकरंजसदृशोगुणैः॥ १६॥

अर्थ—करंज, नक्तमाल, करंज और चिरविल्वक, ए **संस्कृत** नाम **हिं.** कंजा, करंजुवा, कंटकरंजा, **रा.** कणगच, **बं.** डहरकरंज, **म.** करंजाचे वृक्ष, चोपडाकरंज, **क.** नापसीय मरन्न, **तै.** कंज, **ला.** पोनगेम्याग्लेबरा कहतेहैं। दूसरा **घृतकरंज** होताहै। उसको घृतपूर्ण करंज, प्रकीर्य, पूतिक, पूतिकरंज, और सोमवल्कल **संस्कृत** में कहतेहैं। **हिं.** घोराकरंज, **बं.** नाटाकरंज, **म.** चोपडाकरंज, **का.** तपसियमरनु। **स्वरूप**। कंजा शाखीजातिका वृक्ष है। इसके **पत्ते** गोल, आगेसे अनीदार और गुच्छेदार सफेद पुष्प होताहै। परन्तु **पत्ते** कसूलाकी कली के आकार के होतेहैं। फली लंबी और चपटी होती है। फलको फोड़ने से भीतरसे वदामी रंगका चपटा **बीज** निकलताहै यह प्रायः नदी के किनारे वहुत होताहै। एक २ डालीमें पांच पांच सात सात पत्ते होतेहैं। **चित्र** नंबर १८ का देखो। **गुण**। कटु, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, योनिके दोष हरण कर्ता है। **प्रयोग**। कुष्ठ, उदावर्त्त, गोलेका रोग, बवासीर, व्रण, कृमिरोग, और कफ इनको नष्ट करे। **कंजके पत्ते** भेदी, कटुपाकी, उष्णवीर्य, पित्तकर्ता और हलके। **प्रयोग**। कफ वात, बवासीर, कृमि, सूजनको दूर करे। कंजके **फल** कफ, वातनाशक, प्रमेह, बवासीर, कृमि, और कोढको दूर करे। **घृत करंज** के भी **गुण** कंजके समान जानने। **प्रयोग** में कंजाके बीज, तेल छाल और पत्ते लिये जातेहैं। **मात्रा** २ माशेकी है।

उदकीर्यस्तृतीयोऽन्यःषड्ग्रंथाहस्तिवारुणी।
मर्कटीवायसीचापिकरंजीकरभंजिका॥ १७॥
करंजीस्तंभनीतिक्तातुवराकटुपाकिनी।
वीर्योष्णावमिपित्तार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित्॥

अर्थ–तीसरा करंजका भेद उदकीर्य है। उसके **पर्याय शब्द**- षड्ग्रंथा, हस्तिवारुणी, मर्कटी, वायसी, करंजी और करभंजिका। **हिं.** अरारी करंज, करंजिया, **म.** थोर करंज कहतेहैं। **गुण**। स्तंभनकर्ता, कड़वी, कषेली, पाकके समय कटु, उष्णवीर्य। **प्रयोग**। वमन, पित्तकी बवासीर, कृमि, कोढ़ और प्रमेहको दूर करे। इसके **पत्ते** और **बीज** प्रयोगमें लिये जातेहैं। **मात्रा** २ माशेकी है।

ज्ञेयोमहाकरंजोन्यःषड्ग्रंथोहस्तिवारिणी।
उदकीर्णोविषघ्नीचकाकघ्नीमदहस्तिनी॥
अंगारवल्लीशार्ङ्गेष्टामधुमत्तावमायिनी।
हस्तिरोहणकश्चैवज्ञेयोहस्तिकरंजकः॥
सुमनःकाकभंडीचमदमत्तश्चषोडश।

महाकरंजस्तीक्ष्णोष्णःकटुकोविषनाशनः ॥
कंडूविचर्चिकाकुष्ठत्वग्दोषव्रणनाशनः ॥

अर्थ–महाकरंज, षड्ग्रंथ, हस्तिवारिणी, उदकीर्ण, विषघ्नी, काकघ्नी, मदहस्तिनी, अंगारवल्ली, शार्ङ्गेष्टा, मधुमत्ता, अवमायिनी, हस्तिरोहण, हस्तिकरंजक, सुमन, काकभंडी और मदमत्त, ए सोलह संस्कृत नाम हैं। **हिं.** बडाकरंज कहते हैं। **का.** हिरियहुलुगितु कहते हैं। **गुण। महाकरंज** तीक्ष्ण, गरम, कडवा, विषनाशक। **प्रयोग।** खुजली, विचर्चिका, कुष्ठ, त्वचा (चमडा) के दोष और व्रणको नष्ट करे है।

प्रकीर्योरजनीपुष्पःसुमनाःपूतिकर्णकः।
पूतिकरंजःकैडर्यःकलिमालश्चसप्तधा ॥
अन्योगुच्छकरंजःस्निग्धदलोगुच्छ-
पुष्पकोनंदी।
गुच्छीचमात्रिनंदीसानंदोदंतधावनोवसवः॥
करंजोकटुतिक्ताष्णोविषवातार्त्तिकृंतनः।
कंडूविचर्चिकाकुष्ठस्पर्शत्वग्दोषनाशनः ॥

अर्थ–प्रकीर्ण, रजनीपुष्प, सुमना, पूतिकर्णक, पूतिकरंज, कैडर्य और कलिमाल, ए सात नाम पूतिकरंज अर्थात् जिस करंज में दुर्गंध आती है उसके हैं। **म.** घाणेरा करंज, **का.** वारुवड्डलिगितु। एक गुच्छकरंज होता है, उसके संस्कृत नाम स्निग्धदल, गुच्छपुष्पक, नंदी, गुच्छी, मात्रिनंदी, सानंद और दंतधावन ए आठ नाम हैं। **गुण।** दोनों करंजे चरपरे, गरम, उष्ण, विषविकार, वादीके विकार, खुजली, विचर्चिका, कोढ और त्वचाके दोषों को दूर करे।

रीठाकरंज.

रीठाकरंजिकस्त्वन्योकृच्छ्लोगुच्छपुष्पकः।
रीठागुच्छफलोऽरिष्टोमंगल्यःकुंभबीजकः ॥
प्रकीर्यःसोमवल्कश्चफेनिलोरुद्रसंज्ञकः।
रीठाकरंजस्तिक्तोष्णःकटुःस्निग्धश्चवातजित्
कफघ्नःकुष्ठकंडूतिविषविस्फोटनाशनः ॥

अर्थ–एक रीठाकरंज होता है उसके नाम गुच्छल, गुच्छपुष्पक, रीठा, गुच्छफल, अरिष्ट, मंगल्य, कुंभबीजक, प्रकीर्य, सोमवल्क और फेनिल ए ११ नाम **संस्कृत** में रीठाकरंजके हैं। **गुण।** कडवा, गरम, चरपरा, चिकना, वातनाशक, कफघ्न। **प्रयोग।** कोढ, खुजली, विषविकार और विस्फोटक रोग को नष्ट करे।

लताकरंज.

लताकरंजोदुःस्पर्शोवीरास्योवज्रबीजकः।
धनदाक्षःकंटफलःकुवेराक्षश्चसप्तधा ॥
लताकरंजपत्रंतुकटूष्णंकफवातनुत्।
तद्बीजंदीपनंपथ्यंशूलगुल्मव्यथापहम् ॥

अर्थ–लताकरंज, दुःस्पर्श, वीरास्य, वज्रबीजक, धनदाक्ष, कंटफल और कुवेराक्ष ए सात नाम **संस्कृत** में हैं। **हिं.** लताकरंज, **बं.** कांटाकरंज, **म.** सागरगोटा, **का.** करंजिकातिरिगिच्छि, **गु.** कांचका, काकचीया, **ता.** गुचेपिका, **इं.** बोंडक। **स्वरूप।** इसका वृक्ष मध्यम कंदका होता है। एक इंचके अनुमान **लंबे** और गोल और मिले हुए पत्ते आमे सामे ऊगते हैं। डाली के पिछाडी के भागपर छोटे २ और टेढ़े कांटे होतेहैं। **फूल** मंजरीमें भरपूर पीलेरंग का होताहै। और उसकी पांच पंखडी होतीहैं। उनमें चार तो मध्यमें फीके रंगकी और पांचवीपर लाल कांटे होतेहैं। मध्यमें पुरुष और स्त्रीकेशर होती है। उसके फलपर कांटे होते हैं। उसमें सीपके समान दो परत होते हैं। उनमें १ अथवा २ बीज होते हैं। इसकी गिरी सफेद और कडवी होती है। **चित्र** नंबर १८ देखो। **गुण।** लताकरंजके पत्ते चरपरे और गरम तथा कफ वातको जीते। उसके **बीज** दीपन, पथ्य, शूल और गोलेकी पीडाको नष्ट करे। अन्यत्र लिखा है कि ज्वरमें पेटकी वादी और उलटी आदिपर इसका बीज दिया जाता है। **मात्रा** १ माशेकी है।

गुंचची (गुंजा.)

श्वेतारक्तोच्चटाप्रोक्ताकृष्णलाचापिसास्मृता।
रक्तासाकाकचिंचीस्यात्काकनंतीचरक्तिका ॥
काकादनीकाकपीलुःसास्मृताकाकवल्लरी।
गुंजाद्वयंतुकेश्यंस्याद्वातपित्तज्वरापहम् ॥
मुखशोषंभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशनम्।

नेत्रामयहरंवृष्यंबल्यंकंडुव्रणांहरेत्।
कृमींद्रलुप्तकुष्ठानिरक्ताचधवलापिच ॥ २१ ॥

अर्थ–गुंजा दो प्रकारकी है। एक सफेद, दूसरी रक्त। तहां सफेद गुंजाको उच्चटा और कृष्णला कहते हैं। और लालके काकचिंची, काकनंती, रक्तिका (रत्ती), काकादनी, काकपीलू और काकवल्लरी, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** सफेद और लाल घूंघची, चिरमिठी, गुंज, चोटली, **बं.** श्वेतकुच, लालकुच, **म.** गुंज, **का.** गुलुगुंजे, एरड, **गु.** चणोठी, **तै.** गुलुविंदे, **फा.** चश्मेखरूश, **अ.** हब्बशुर्खे, **उडि.** रुंज, **ला.** आब्रस प्रिकेटोरिअस कहते हैं। **स्वरूप**। चिरमिठीके इमलीके समान लंबे **पत्ते** होते हैं। और **सवादमें** मीठे होते हैं। **फूल** सफेद भूरेरंगका होता है। **फल** बबूलकी फलीके समान होता है। इसमें से घूंघची निकलती है। घूंघची सफेद और लालके भेदसे दो प्रकारकी है। इसमें सफेद घूंघची विगड़कर काली पड़जाती है। और लाल घूंघचीकी बेल बहुत कम होती है। इसकी जड़ मुलहटीके समान मीठी होती है। इसी से बहुत से पंसारी और अत्तार लोग मुलहटीके एवजमें घूंघचीकी जड़ दे देते हैं। घूंघचीभी सात उपविषोंमें एक प्रकारकी उपविष गिनी जाती है। **गुण**। दोनों प्रकारकी घूंघची बालोंको हितकारी, बलकारक, और शुक्र प्रकटकर्त्ता हैं। **प्रयोग**। वातपित्तज्वर, मुखशोष, भ्रमरोग, श्वास, तृष्णा, मदरोग, नेत्ररोग, खुजली, व्रण, कृमि और इन्द्रलुप्त, इन रोगोंपर दोनों प्रकारकी घूंघची देनी चाहिये। **प्रयोगमें** इसकी जड़, पत्ते और बीज लिये जाते हैं। **मात्रा** १ रत्ती से लेकर ३ रत्ती पर्यंत है। *

१ किसी २ पुस्तकमें उच्चटाके स्थानमें **घाट** ऐसा पाठ दिया है। अर्थात् उच्चटा नाम सफेद घुंघचीका नहीं है। उच्चटा एक दूसरी ओषधी है कि जिसको **उटंगन** कहते हैं।

कौंछ (कपिकच्छू)

कपिकच्छूरात्मगुप्तावृष्याप्रोक्ताचमर्कटी।
अजराकंडुराव्यंगादुःस्पर्शाप्रावृषायणी ॥
लांगलीशूकशिंबीचसैवप्रोक्तामहर्षिभिः।
कपिकच्छुर्भृशंवृष्यामधुराबृंहणीगुरुः ॥ २३ ॥
तिक्तावातहरीबल्याकफपित्तास्रनाशिनी।
तद्बीजंवातशमनंस्मृतंवाजीकरंपरम् ॥ २४ ॥

अर्थ–कपिकच्छू, आत्मगुप्ता, वृष्या, मर्कटी, अजरा, कंडुरा, व्यंगा, दुःस्पर्शा, प्रावृषायणी, लांगली और शूकशिंबी ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कौंछ, कौंच, किवांच, **बं.** आलकुशी, **म.** कुहिलीचें बीज, कपास-

*वक्रदत्तमें—गुंजा अर्थात् चिरमिठी दो जातिकी कही है। लाल और सफेद। **चिरमिठीके** बीज विषैल हैं अर्थात् खानेसे जहरका असर करते हैं। तथा ज्ञानतंतुके रोगमें लिये जाते हैं। तथा त्वचारोग और नासूरपर लेप करा जाता है। घूंघचीकी जड़ वमन लानेवाली है।

मुसलमान हकीम—चिरमिठीको गरम, पौष्टिक और कामोत्तेजक मानते हैं।

डाक्टर लोग—चिरमिठीकी जड़का उपयोग मुलहटीकी प्रतिनिधिमें करते हैं।

डा० ऐन्सली—कहता है कि चिरमिठीकी जड़ मुलहटीके समान हूबहू मिली हुई होती है कि बंगालेमें उसको मुलहटीके पलटेमें बेचते हैं।

मि० मोहीदीन सरीफ़—लिखता है कि चिरमिठीकी **डालीमें** पत्तेसेभी अधिक **मिठास** होता है। [त]था उसमें से सत्त्व काढ़ना होय तो निकलसक्ता है।

मि० वेकर—कहता है कि चिरमिठीका पानी नेत्रमें डालने से आंखका कंनजंकटाई वा परदा सूजकर [उ]समें से राध निकलना शुरू होता है इसवास्ते आंखके रोगमें उसका उपयोग नहीं करना। सफेद चिरमिठीकी जड़ [मी]ठी होती है वह खांसीके रोगमें बहुत उपयोगी जानी गई है।

मि० ल्यूनन—कहता है कि पत्तोंको सहतमें पीसके सूजनके ऊपर लेप करा जाता है। उसी प्रकार पीस[क]र मिश्रीके साथ चावने से खांसी कम होजाती है। **सफेद चिरमिठी** जहरीली है, इसवास्ते इसके खाने से वमन [औ]र खिचाव होता है, और कभी २ मृत्युभी होती है।

चरकसंहितामें—सफेद घूंघची दाहशांतिकर्त्ती और पित्तशामक मानी है।

कुहिरी, दे. काचकुहिली, कों. खाजकुहिली, गु. कवचा, कौंचा, तै. पिल्ली अडगु, ता. पुनाईक कालि, इं. कौहेज, ला. डोलीकोप्युरिस् कहते हैं। स्वरूप। कौंचकी बेल चातुर्मास्यमें बहुत होती है। डंडी तीन पत्तेवाली होती है। फूल काला जामुनके रंगका आकारमें केसूलाके फूलसे मिलता हुआ झुमेदार होता है। फली एक डंडीमें दो और इमलीके कतारके आकारसे कुछ २ मिली हुई होती है। इसके पत्ते और फलके रुआं देहमें लगनेसे बड़ीभारी खुजली होने लगती है। इसकी फलीमें इमलीके माफ़िक़ चीयां निकलते हैं। इनको कौंचके बीज कहते हैं। चित्र नंबर २० का देखो। गुण। अत्यंत वृष्य, मधुर, बृंहणी (पुष्टिकारक) गुरु, तिक्त, वातनाशक, बलकारी, कफनाशक, रक्तपित्तको शांतिकर्त्ता, व्रणदोषनाशक और श्वासकासनिवारक। कौंछके बीज वादीको शांति करता, अत्यंत वाजीकरणकर्त्ता हैं। प्रयोगमें इसकी जड़, पत्ते और बीज लिये जाते हैं। मात्रा २ माशेकी है। *

रोहिणी.

मांसरोहिण्यतिरुहावृत्ताचर्मकरीकृशा।
प्रहारवल्लीविकशावीरवल्यपिकथ्यते॥
स्यान्मांसरोहिणीवृष्यासरादोषत्रयापहा॥

अर्थ–मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकरी, कृशा, प्रहारवल्ली, विकशा और वीरवल्ली, [ती] बं. चामारकशा और हिंदुस्थानकी अन्य भाषाओंमें इसी नामसे प्रसिद्ध है। गुण। मांसरोहिणी वृष्य, दस्तावर और त्रिदोषको नष्ट करनेवाली है।

चिल्ह (चिल्हक)

चिल्हकोवातनिर्हारःश्लेष्मघ्नोधातुपुष्टिकृत्।
आग्नेयोविषवद्यस्यफलंमत्स्यनिषूदनम्॥२६॥

अर्थ–चिल्हकको हिन्दीमें चिल्ह कहते हैं। पर्वती इसको गंधारी कहते हैं। यह वातका नाशक, कफघ्न, आग्नेय और धातुपुष्टि करता। इसका फूल विषके समान गुणकारी है। इस के फल द्वारा धींवरलोग मछलियोंको मारते हैं। मात्रा २ माशेकी है।

टंकारी.

टंकारीवातजित्तिक्ताश्लेष्मघ्नीदीपनीलघुः।
शोथोदरव्यथाहंत्रीहितापिचविसर्पिणाम्॥

अर्थ–टंकारी या तंकारी, म. फापटी कहते हैं। बं. टेपारी और टेकारी कहते हैं। इसका छोटासा क्षुप बैंगनके वृक्षके समान होता है। यह महाबलेश्वर आदि पर्वतोंमें मिलतीहै। गुण। वातनाशक, कड़वी, कफघ्न, अग्निदीप्तकर्त्ती और हलकी। प्रयोग। सूजन, उदररोग और विसर्परोगवालोंको हितकारी है। मात्रा २ माशेकी है।

बेंत (वेतस)

वेतसोनम्रकःप्रोक्तोवानीरोवंजुलस्तथा।
अभ्रपुष्पश्चविदुलोरथशीतश्चकीर्त्तितः॥२८॥
वेतसःशीतलोदाहशोथार्शोयोनिरुक्प्रणुत्।
हंतिवीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान्॥

अर्थ–वेतस, नम्रक, वानीर, वंजुल, अभ्रपुष्प, विदुल और शीत ए संस्कृत नाम हैं। हिं. वेत, बैंस, बं. वेत्र, का. वेडिसु, वेसयभेदबु, गु. नेतर, तै. पीपारुवा, फा. वेत, अ. खलाफ, ला. केलेमस्रोटन्, इं. रोटाकेन कहते हैं। गुण। वेत शीतल, वातनाशक और कफको शांति करता है। प्रयोग। दाह, सूजन, बवासीर, योनिकी पीडा, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त और पथरीको दूर करे। इसकी कोंपल और पत्ते लिये जातेहैं। मात्रा २ माशेकी है।

---

*यूरोपियन डाक्टर–कौंचकी जड़को ज्ञानतंतुओंको पुष्टकर्त्ता मानते हैं, तथा लक़वेकी बीमारीमें और पेटके कृमि निकालनेको फलीके ऊपरके बाल (रूंआ) शरबतमें मिलायके शहदके समान गाढ़ा करके वर्त्तते हैं। परंतु देशीवैद्य फलीके ऊपरके रूंआका उपयोग नहीं करते।

वेस्टइंडिअन टापुओंमें–इस वृक्षकी जड़का क्वाथ पेशाब अधिक लानेवाला और गुरदेको साफ करनेवाला मानते हैं। तथा इसकी मल्हम बनायके श्लीपदपर लेप करते हैं। पत्तोंको नासूरपर लगाते हैं और बीज कामोत्तेजक हैं। यह कौंचका बीज बिच्छूके विषको दूर करता है

वेत्रोवेतोयोगिदंडःसुदंडोमृदुपर्वकः ।
वेत्रःपंचविधःशैत्यःकषायोभूतपित्तहृत् ॥

अर्थ–वेत्र, वेत, योगिदंड, सुदंड, मृदुपर्वक,ए **सं.** नाम हैं । **गुण** । पांचों प्रकारका वेत शीतल और कषेला है । भूतबाधा और पित्तको हरण करै ।

जलवेतस.

निकुंचकःपरिव्याधोनादेयोजलवेतसः ।
जलजोवेतसःशीतःकुष्ठहृद्वातकोपनः ॥३०॥

अर्थ–निकुंचक, परिव्याध, नादेय और जलवेतस, ए **सं.** नाम । **हिं.** जलवेत, **म.** परंल, **का.** वंजालु, वेसेयमरलु, **गु.** जलजंबवा कहते हैं । **गुण** । शीतल, वातप्रकोपक और कुष्टनाशक ।

समुद्रफल (इज्जल.)

इज्जलोहिज्जलश्चापिनिचुलश्चांबुजस्तथा ।
जलवेतसवद्वेद्योहिज्जलोऽयंविषापहः ॥३१॥

अर्थ–इज्जल, हिज्जल, निचुल और अंबुज, ए **सं.** नाम **हिं.** समुद्रफल, यह तीन धारवाला बड़ी इलायचीके समान फल है । जूरी दूर करनेमें कोनेनके समान है । इसके वृक्षको मुंबई प्रातमें **तिवर** कहते हैं । **गुण** । इसके गुण जलवेतके समान हैं । अधिकता यह है कि विषघ्न है । इसका **फल** प्रयोगमें लिया जाता है । **मात्रा** १ माशेकी है ।

ढेरा (अंकोल.)

अंकोटोदीर्घकीलःस्यादंकोलश्चनिकोचकः ।
अंकोटकःकटुस्तीक्ष्णःस्निग्धोष्णस्तुवरोलघुः॥
रेचनःकृमिशूलामशोफग्रहविषापहः ।
विसर्पकफपित्तास्रमूषकाहिविषापहः ॥ ३३ ॥
तत्फलंशीतलंस्वादुश्लेष्मघ्नंबृंहणंगुरु ।
बल्यंविरेचनंवातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥३४॥

अर्थ–अंकोट, दीर्घकील, अंकोल और निकोचक ए **सं.** नाम । **हिं.** ढेरा, टेरा, **वं.** धल आंकोर, **म.** आंकुल, **का.** अंकुले, **तै.** उडीके, **गु.** अंकोल, **इं.** एलेनजियम् लेमारकीआय कहतेहैं । **गुण** । कटु, तीक्ष्ण, स्निग्धोष्ण, कषेला, हलका, रेचक और विषघ्न । **प्रयोग** । कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रह-पीडा, विसर्प और कफजन्य रक्तपित्तरोग इनको दूर करै । इससे सांप और मूसेका विष दूर हो । इसका **फल** शीतल, स्वादु. कफनाशक, पुष्टिकारी, भारी, बलकर्त्ता और रेचक है । **प्रयोग** । यह वातपित्तजन्य दाह, क्षयरोग, रक्तदोष, इनको निवारण करै । *

बलाचतुष्टय.

बलावाट्यालिकावाट्यास्त्रैववाट्यालकापिच।
महाबलापीतपुष्पासहदेवीचसास्मृता ॥ ३५॥
ततोऽन्यातिबलाऋष्यप्रोक्ताकंकतिकाचसा।
गांगेरुकीनागबलाझषाह्रस्वगवेधुका ॥ ३६॥
बलाचतुष्टयंशीतंमधुरंबलकांतिकृत् ।
स्निग्धंग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम्॥
बलामूलत्वचश्चूर्णंपीतंसक्षीरशर्करम् ॥
मूत्रातिसारंहरतिदृष्टमेतन्नसंशयः ॥ ३८ ॥
हरेन्महाबला कृच्छ्रंभवेद्वातानुलोमनी ॥
हन्यादतिबलामेहंपयसासितयासमम् ॥३९॥

अर्थ–बला चार प्रकारकी है । तहां बला, वाट्या-लिका, वाट्या, ए तीन **संस्कृत** नाम सफेद बलाके हैं । **हिं.** वरियाला, बीजवंद वा खिरेटी, श्वेतवंडेला, **म.** चिकणा, **कों.** चिकडनकडी, कर्ना. वेणगरग, **गु.** बलदाणा अथवा खपाट, **तै.** मुर्गिडि, **ला.** अबुटीलन् इंडीकम् कहते हैं । महाबला, पीत-पुष्पा और सहदेवी ए तीन नाम **पीतबला**

* **मिस्तर मोहीदीन सरीफ़**—कहताहै कि अंकोलके वृक्षकी जड़की छाल ५० ग्रेनकी मात्रामें देनेसे उलटी होती है उसके ओछी मात्रा देनेसे **ज्वर** उतर जाताहै । **छाल** बहुत कडवी है । यह त्वचापर बहुतही असर करती है । जड़का रस जुल्लाव लाताहै और पेटके कीडोंको निकाल देताहै । जलंधरके रोगमें भी देते हैं । तथा जड़को पीसके सांपके ज़हर उतारने में काम आती है ।

डा० सखाराम अर्जुन—कहताहै कि संधिवात के दर्द न्यून करने को पत्तोंकी पुलटिश बनाके दीनी जायहै ।

है। हिं. सहदेई, बं. बांजोकावेडला, का. वेणेगरगभेद, पेटारी, वेल्लदुरुवे कहते हैं। सहदेई, फूलोंके भेदसे चार प्रकारकी है। अतिबला, ऋष्यप्रोक्ता और कंकतिका ए तीन **अतिबलाके** नाम। हिं. कंग-[घ] ई, ककहिया, कंवी कहते हैं। गांगेरुकी-नागबला, ह्रस्वा और गवेधुका, ए चार सं. नाम **नागबलाके** हैं। हिं. गुलसकरी वा गंगेरन कहते हैं। का. तुप्पट्टी, और वट्टगरुके। बलाचतुष्टयकी छाल, पत्ता और बीज **प्रयोगमें** लिये जाते हैं। **गुण**। चारों प्रकारकी **बला** शीतल, मधुर, बलकारक, कांतिप्रद, स्निग्ध और ग्राही। **प्रयोग**। चारों प्रकारकी बलाओंकी जड़की छालके बारीक चूर्णको मिश्री मिले दूधके साथ सेवन करनेसे मूत्रातिसाररोग नष्ट होय। **महाबला** मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे। तथा वायु, अनुलोम होवे अर्थात् वादीको गुदाद्वारा निकाले। दूध मिश्रीके साथ **अतिबला** सेवन करनेसे प्रमेहरोग दूर होय। **मात्रा** २ माशेकी है।

लक्ष्मणा.

पुत्रकाकाररक्ताल्पबिंदुभिर्लाञ्छितासदा।
लक्ष्मणापुत्रजननीबस्तगंधाकृतिर्भवेत्॥
कथितापुत्रदाऽवश्यंलक्ष्मणामुनिपुंगवैः॥

अर्थ–लक्ष्मणा, पुत्रजननी और पुत्रिका, ए **संस्कृत** नाम हैं। कों. हरकय, गु. हनमानवेल कहतेहैं। इसकी आकृति और गंध बकरेके समान होतीहै। और इसके पत्तोंपर लाल २ रुधिरकी बूंद होती हैं। **गुण**। यह त्रिदोषनाशक, मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलकारक और रसायन। **प्रयोग**। सेवन करनेसे अवश्य गर्भोत्पत्तिके अवरोधको दूर करे।

स्वर्णवल्ली.

स्वर्णवल्लीरक्तफलाकाकायुःकाकवल्लरी।
स्वर्णवल्लीशिरःपीडांत्रिदोषान्हंतिदुग्धदा॥

अर्थ–स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु और काकवल्लरी, ए **संस्कृत** नाम। हिं. स्वर्णवल्ली नामसे प्रसिद्ध है। म. सोनवेली। सोनुली, **गुण**। **स्वर्णवल्ली** मस्तकपीड़ा और त्रिदोषको दूर करे तथा स्त्रीके दूधको पैदा करे है।

कपास (कार्पासी)

कार्पासीतुंडकेरीचसमुद्रांताचकथ्यते।
कार्पासकीलघुःकोष्णामधुरावातनाशनी॥
तत्पलाशंसमीरघ्नंरक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम्।
तत्कर्णपीडकानादपूयस्रावविनाशनम्॥
तद्बीजंस्तन्यदंवृष्यंस्निग्धंकफकरंगुरु॥४३॥

अर्थ–कार्पासी, तुंडकेरी और समुद्रांता ए **संस्कृत** नाम। हिं. कपास, रा. वण, कुपास, रुई, बं. कार्पास, म. कापसी, का. हत्ती, तै. पत्ती-चेट्टु, अ. कुतुन, फा. कुतुनपुंबेदाना, ला. गोसिपियम्, इं. काटन्। गु. वण कहते हैं। कपास दो प्रकारकी होती है। पहिली **पीलेफूलकी** और दूसरी **लालफूलकी**। **गुण**। हलकी, किंचित् उष्ण, मधुर और वातनाशक। **प्रयोग**। इसके सेवन करनेसे तृषा, दाह, चित्तकी बेकली, परिश्रम, भ्रम और मूर्च्छा, इनको दूर करे। **कपासके पत्ते** वायुनाशक, रक्तजनक हैं। **प्रयोग**। सेवन करनेसे कानका घाव, कर्णनाद और कानसे राधके बहनेको दूर करे। **कपासके बीज** स्तनोंमें दूध प्रकट करे, वृष्य, स्निग्ध, कफकर्त्ता और भारी हैं। कपासके बीजोंको म. सरक्या और फलको बोंड कहते हैं।

कालीकपास.

कृष्णकार्पासिकाकट्वीचोष्णाहृद्रोगनाशिनी।
कृमिमलंचामवातंउदरंचार्शकंहरेत्॥

अर्थ–काली कपासका **स्वाद** चरपरा और गरम है और हृदयरोग, कृमि, मल, आमवात, उदर, बवासीर, इनको दूर करे। इसको **संस्कृतमें कृष्णांजनी** तथा **कृष्णकार्पासी** कहते हैं।

वनकपास.

वनजारण्यकार्पासीभारद्वाजीवनोद्भवा॥
भारद्वाजीहिमारुच्याव्रणशस्त्रक्षतापहा।
रक्तरोगंचवातंचनाशयेदितिनिश्चितम्॥

अर्थ–वनजा, अरण्यकार्पासी, भारद्वाजी और वनोद्भवा ए **संस्कृत** नाम। हिं. वनकपास, रा. नांदणवण, म. रानकापसी, का. काडहत्ती कहते हैं। **गुण**। यह शीतल, रुचिकारी, व्रण और शस्त्रके घावको दूर करे, रुधिरविकार और वादीको दूर करे।

वांस (वंश.)

वंशस्त्वक्सारकर्मारत्वचिसारस्तृणध्वजः ।
शतपर्वाशतफलीवेणुमस्करतेजनाः ॥ ४४ ॥
वंशःसरोहिमःस्वादुःकषायोवस्तिशोधनः ।
छेदनःकफपित्तघ्नःकुष्ठास्रव्रणशोथजित् ॥४५॥
तत्करीरःकटुःपाकेरसेरूक्षोगुरुःसरः ।
कषायःकफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तलः ॥
तद्यवास्तुसरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ।
वातपित्तकराउष्णाबद्धमूत्राःकफापहाः ॥

अर्थ–वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, शतफली, वेणु, मस्कर और तेजन ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** **बं.** वांस-श, **म.** वांबू, **कौं.** वेलू, **का.** यरडविदिरु, **तै.** वेन्नेमुकू, **ता.** मंगिल्, **फा.** कसव, **इं.** बँबूकेन, **ला.** बँबूसावलगारिश् केहते हैं । **स्वरूप** । वांसके **डंडे** वड़े समूह में ऊगते हैं उसकी डंडोंमें कांटे होते हैं, और गांठके ठिकाने भालेके समान लंबे पत्तेकी डाली निकलती है । **फूल** घासके फूलकी समान होताहै । **चित्र** नंबर २१ का देखो । **गुण** । दस्तावर, शीतल, स्वादु, कषेला, वस्तिशोधक, छेदक, कफपित्तनाशक, कोढ, रक्तदोष, व्रण और सूजन इनको दूर करे । वांसके **अंकुर** अर्थात् वांसकी **कोंपल** कटु, तथा पाकमें भी कटु, रूक्ष, भारी, दस्तावर, कषेली, कफजनक, स्वादु, विदाही और वातपित्तकर्त्ता हैं । वांसके **चांवल** दस्तावर, रूक्ष, कषेले, पाकके समय कटु, वातपित्तकर्त्ता, गरम, मूत्ररोधक और कफनाशक हैं । वांसकी **कोंपल, छाल** और **चांवल** प्रयोगमें लीने जाते हैं । **मात्रा** २ माशेकी है ।

रंध्रवंश–वांसका भेद.

अन्यस्तुरंध्रवंशःस्यात्त्वक्सारःकीचकाह्वयः ।
मस्करोवादनीयश्चसुषिराख्यःषडाह्वयः ॥
वंशोत्वस्लौकषायौचाकिंचित्तिक्तौचशीतलौ ।
मूत्रकृच्छ्प्रमेहार्शःपित्तदाहास्रनाशनौ ॥

अर्थ–दूसरा **रन्ध्रवंश** है उसके त्वक्सार, कीचक, मस्कर, वादनीय, सुषिराख्य, ए छः नाम हैं । ए पोले वांस होते हैं । **गुण** । दोनों प्रकारके **वांस** खट्टे, कषेले, कुछ कड़वे और शीतल हैं । **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्, प्रमेह, बवासीर, पित्त, दाह और रुधिरके विकारको दूर करते हैं ।

विशेषोरंध्रवंशस्तुदीपनोऽजीर्णनाशनः ।
रुचिकृत्पाचनोहृद्यःशूलघ्नोगुल्मनाशनः ॥

अर्थ–अब पोले वांसके विशेष गुण कहते हैं कि **रंध्रवंश** दीपन, अजीर्णनाशक, रुचिकारी, पाचन, हृदयको हित, शूलनाशक और गुल्मनाशक है ।

नल.

नलःपोटगलःशून्यमध्यश्चधमनस्तथा ॥
नलस्तुमधुरस्तिक्तःकषायःकफरक्तजित् ॥
उष्णोहृद्वस्तियोन्यर्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ॥

अर्थ–नल, पोटगल, शून्यमध्य और धमन, ए संस्कृत नाम । **हिं.** नरसल, **बं.** नल, **म.** देवनल, देवनाल, **गु.** नाली, **कच्छी** आची, **तै.** मुंगुरुइरु, **इं.** इंडियन टोबेको, **ला.** लोविलिया, निकोटिया निफोलिया कहते हैं । **गुण** । मधुर, तिक्त, कषाय, कफनाशक, रुधिरदोषनिवारक और गरम । **प्रयोग** । हृदयरोग, वस्तिपीड़ा, योनिरोग, दाह और पित्तविसर्पको दूर करे । इसके डंडी, पत्ते प्रयोगमें लेते हैं । **मात्रा** २ माशेकी है ।

बड़ा नरसल.

अन्योमहानलोवन्योदेवनालोनलोत्तमः ।
स्थूलनालःस्थूलदंडःसुरनालःसुरद्रुमः ॥
देवनालोतिमधुरोवृष्यईषत्कषायकः ।
नलस्यादधिकंवीर्येशस्यतेरसकर्मणि ॥

अर्थ–दूसरा महानल, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूलनाल, स्थूलदंड, सुरनाल, और सुरद्रुम ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** बड़ानरसल, **म.** थोरुदेवनल, **का.** हिरियदेवनाल कहते हैं । **गुण** । **बड़ानरसल** मधुर, वृष्य, कुछ कषेला । यह नरसल वीर्यमें उत्तम है और पारे आदि रसकर्ममें लिया जाताहै । इसकी जड़ और कोंपल प्रयोगमें लेते हैं । **मात्रा** २ माशेकी है ।

(सरपता) रामशर.

भद्रमुंजःशरोबाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः ।
मुंजोमुंजातकोबाणःस्थूलदर्भःसुमेखलः ॥३६॥

अर्थ–भद्रमुंज, शर, बाण, तेजन और चक्षुर्वेष्टन, ए सं. नाम, हिं. रामशर, सरपता, म. थोरमुंजतृण, का. रामसपु, सरगोलु, ए बडीमूंजके नाम हैं।

मूंज.

मुंजद्वयंतुमधुरंतुवरंशिशिरंतथा।
दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रकृच्छ्राक्षिरोगजित्॥
दोषत्रयहरंवृष्यंमेखलासूपयुज्यते॥ ५०॥

अर्थ–मुंज, मुंजातक, बाण, स्थूलदर्भ, और सुमेखल, ए संस्कृत नाम। हिं. मूंज, म. मोल, तै. मुंजगड्डि, अनिस्फुलिंग कहते हैं। गुण। दोनों मूंज अर्थात् सरपता और मूंज–मधुर, कषाय, शीतल, त्रिदोषनाशक, वृष्य और मेखला (जो कमर में कसी जातीहै) उसमें काम आता है। इसीकी जेवरी बनती है। प्रयोग। दाह, तृषा, विसर्प, आम, मूत्रकृच्छ्र और नेत्ररोगको दूर करे। इसकी जड़ और पत्ते प्रयोग में लिये जातेहैं। मात्रा २ माशेकी है।

कांस (काश.)

काशःकाशेक्षुरुद्दिष्टःसस्यादिक्षुरसस्तथा।
इक्ष्वालिकेक्षुगंधाचतथापोटगलःस्मृतः॥५१॥
काशःस्यान्मधुरस्तिक्तःस्वादुपाकोहिमःसरः
मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्रक्षयपित्तजरोगजित्॥

अर्थ–काश, काशेक्षु, इक्षुरस, इक्ष्वालिका, इक्षुगंधा और पोटगल, ए संस्कृत नाम हिं. कांस, बं. केशे, म. कसई, कौं. कसाड, दे. कौस, का. काजलु, तै. रेलु, गु. कांसडा ला. कुड्स्क कारवेटा कहते हैं। गुण। मधुर, कड़वी, पकनेके समय स्वादिष्ट, शीतल, सर, तृप्तिकर, शुक्रजनक, बलकारक, रुचिकर्त्ता, परिश्रमनाशक, और शोषको दूर करे। प्रयोग। मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तकी क्षीणता और पित्तके रोग इन सबको दूर करे।

अन्योनिशिमिसिर्गुंडाश्वालोनीरजःशरः।
निशिर्मधुरशीतःस्यात्पित्तदाहक्षयापहः॥

अर्थ–एक जलका कांस होताहै उसके संस्कृत नाम–निशि, मिसि, गुंडा, अश्वाल, नीरज और शर। म. लहानकाउंसू, का. किरियकागच्छू। गुण। मीठा, शीतल, पित्त, दाह और क्षयरोगको दूर करे।

दर्भद्वौचगुणेतुल्यौतथापिचसितोधिकः।
यदिश्वेतकुशाभावेस्वपर्यायोजयेद्भिषक्॥

अर्थ–यद्यपि कुश और डाभ दोनों गुणोंमें तुल्य हैं तथापि सितदर्भ अर्थात् कुश गुणों में अधिक है। यदि कुशा न मिले तो उसके पलटेमें डाभ लेवे।

गुंद पटेरे (गुंद्र)

गुंद्रःपटेरकोरच्छःशृंगबेराभमूलकः॥
गुंद्रःकषायोमधुरःशिशिरःपित्तरक्तजित्॥
स्तन्यशुक्ररजोमूत्रशोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत्॥

अर्थ–गुंद्र, पटेरक, अच्छ और शृंगबेराभमूलक, ए संस्कृत नाम। हिं पटेरे, का. आपू, म. गुंद्रपटेर, पानीयगवत। गुण। कषेला, मधुर, शीतल, रक्तपित्तनाशक, स्तनों में दूधकर्त्ता, शुक्र, रज और मूत्र इनको शुद्ध करनेवाला, तथा मूत्रकृच्छ्रनाशक।

मोथीतृण (एरिका)

एरकागुंद्रमूलाचशिविर्गुंद्राशरीतिच॥
एरकाशिशिरावृष्याचक्षुष्यावातकोपिनी॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी॥

अर्थ एरका, गुंद्रमूला, शिवि, गुंद्रा और शरी, ए संस्कृत नाम। हिं. मोथीतृण, बं. होगला, म. एरका, पालनव्हाला। गुण। शीतल, बलकारी, नेत्रोंको हित और वादीको कुपित करे है। प्रयोग। मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह और रक्तपित्तको दूर करे।

कुसा (कुश)

कुशोदर्भस्तथाबर्हिःसूच्यग्रोयज्ञभूषणः॥

अर्थ–कुश, दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र और यज्ञभूषण, ए संस्कृत नाम। हिं. कुसा, म. पांढरीकुशी, का. बिलियवुद्दरशी, तै. कुश दुर्वालु, कौ. दाम, ला. एंड्रोपोगन।

डाभ (दर्भ.)

ततोऽन्योदीर्घपत्रःस्यात्क्षुरपत्रस्तथैवच।
दर्भद्वयंत्रिदोषघ्नंमधुरंतुवरंहिमम्॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णाबस्तिरुक्प्रदरास्रजित्।

अर्थ–एक प्रकारका कुश उसके पर्याय–दीर्घपत्र और क्षुरपत्र, हिं. दाभ–डाभ, का. कुचदर्भ,

उव्हाकुशि, **गु.** डाभडा कहतेहैं। **गुण** । कुशा और डाभ दोनों त्रिदोषनाशक, मधुर, कषेले और शीतल। **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, वस्तिरोग, प्रदररोग और रुधिरके विकारको दूर करे।

रोहिषतृण.

कत्तृणंरोहिषंदेवजग्धंसौगंधिकंतथा ।
भूतीकंव्यामपौरंचश्यामकंधूमगंधिकम् ॥५७॥
रौहिषंतुवरंतिक्तंकटुपाकंव्यपोहति ।
हृत्कंठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ॥

अर्थ—कत्तृण, रोहिष, देवजग्ध, सौगंधिक, भूतिक, व्यामपौर, श्यामक और धूमगंधिक, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** रोहिस सौधिआ, गंधेज-ल, घास, **बं.** रामकर्पूर, **म.** सुगंधरोहिषतृण, **का.** किरुगंजणी, **तै.** कामंचिगड्डि, **उडि.** पालखरि, **अ.** अजखर, **फा.** खलालमामून कहते हैं। **गुण**। कषाय, तीक्ष्ण, पाकके समय चरपरा है। **प्रयोग**। हृदयरोग, कंठरोग, रक्तपित्त, शूल, खांसी और कफज्वरको दूर करे।

बड़ा रोहिषतृण.

अन्यद्रोहिषकंदीर्घंदृढकांडंदृढच्छदम् ।
द्राघिष्ठंदीर्घनालश्चतिक्तसारश्चकुत्सितम् ॥
दीर्घरोहिषकंतिक्तंकटूष्णंकफवातजित् ।
भूतग्रहविषघ्नश्चव्रणक्षतविरोपणम् ॥

अर्थ—बड़े रोहिष तृणके **संस्कृत** नाम—दीर्घरोहिष, दृढकाण्ड, दृढच्छद, द्राघिष्ठ, दीर्घनाल, तिक्तसार और कुत्सित। **म.** मोठे सुगंधरोहिसतृण, **का.** वाट्टरोहिस, हिरियगंजणी कहते हैं। **गुण** । **बडारोहिष** कडवा, चरपरा, गरम, कफवातनाशक, भूतबाधा, ग्रहदोष, विषविकार इनको दूर करे, तथा फोडा और घावको रोपण कर्त्ता है।

भूस्तृण.

गुह्यबीजंतुभूतीकंसुगंधंजंबुकप्रियम् ।
भूतृणंतुभवेच्छत्रामालातृणकमित्यपि ॥
भूतृणंकटुकंतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरेचनंलघु ।
विदाहिदीपनंरूक्षमनेत्र्यंमुखशोधनम् ॥
अवृष्यंबहुविट्कंचपित्तरक्तप्रदूषणम् ॥६०॥

अर्थ—गुह्यबीज, भूतीक, सुगंध, जम्बुकप्रिय, छत्रा और मालातृणक, ए **संस्कृत** नाम। **हिं. बं.** शरवाण, **म.** पाण्यान्तील वाला, तथा खस, **द्राविड** में परिमलद्गंजणी, **ला.** एंड्रोपोगन। **गुण**। कटु, तिक्त, तीक्ष्ण, गरम, रेचक, हलका, विदाही, अग्निदीपक, रूक्ष, नेत्रोंको अहितकारी, मुखशोधक, बलनाशक, भेदक और रक्तपित्तको कुपित करता है। इसकी जड प्रयोग में लीनी जाती है। **मात्रा** १ माशे की है।

मंथानकतृण.

मंथानकतुहरितोदृढमूलस्तृणाधिपः ।
स्निग्धोधेनुप्रियोदोग्ध्रामधुरोबहुवीर्यकृत् ॥

अर्थ—मंथानक, हरित, दृढमूल और तृणाधिप ए **संस्कृत** नाम। **म.** सुरेगवत, मारवेलु, **का.** मारवल्ली। **गुण**। स्निग्ध, गौओंको प्रिय, दूध उत्पन्नकर्त्ता, मधुर और अत्यंत वीर्यकारी है।

वंशपत्रीतृण.

वंशपत्रीवंशदलाजीरिकाजीर्णपत्रिका ।
वंशपत्रीसुमधुराशिशिरापित्तनाशिनी ॥
रक्तदोषहरारुच्यापशूनांदुग्धदायिनी ।

अर्थ—वंशपत्री, वंशदला, जीरिका और जीर्णपत्रिका ए **संस्कृत** नाम। **म.** वेणुपत्रीगवत, **का.** विदिरयेले, यथाहुल्लु। **गुण**। मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रुधिरदोष हरणकर्ता, रुचिकारी और पशुओं के थनों में दूध बढ़ानेवाला।

पल्लीवाहतृण.

पल्लीवाहोदीर्घतृणःसुपत्रस्ताम्रवर्णकः ॥
अदृढःशाकपत्रादिपशूनामबलप्रदः ॥

अर्थ—पल्लीवाह, दीर्घतृण, सुपत्र, ताम्रवर्णक, अदृढ, शाकपत्रादि ए **संस्कृत** नाम। **म.** पोकती गवत तांबडे पातीचे, **का.** होते। **गुण**। दृढतारहित, पशुओंके बलको नाश करे है।

लवणतृण.

लवणतृणंलोणतृणं,
तृणाम्लपटुतृणंचह्रस्वकांडंच ॥
पटुतृणकंक्षाराम्लं,
कषायस्तन्यमश्ववृद्धिकरम् ॥

अर्थ–लवणतृण, लोडतृण, अम्लतृण, पट्टतृण और अम्लकांड ए संस्कृत नाम। म. लाणगवत. का. हुणुबुल्लु, । **गुण**। खारी, खट्टा, कषेला, स्तन्य (दूध) नाशक और घोड़ेको पुष्ट करनेवाला।

पण्यंध

पण्यंधः कंगुणीपत्रःपण्यध्वापणधाचसा। पण्यंधासमवीर्यास्यात्तिक्ताक्षारात्रसारिणी॥ तत्कालशस्त्रघातस्यव्रणसंरोपणीपरा। दीर्घामध्यातथाह्रस्वापण्यंधात्रिविधास्मृता॥ रसवीर्यविपाकेचमध्यमागुणदायिका।

अर्थ–पण्यंध, कगुणीपत्र, पण्यध्वा, पणधा ए संस्कृत नाम। म. पेघेगवत, पणघेतीणी, का. हण-जेमुरू। **गुण**। समानवीर्य, तिक्त, क्षार और दस्ता-वर है। तत्काल शस्त्रके घावको रोपणकर्त्ता है। पण्यंध तृण तीन प्रकारका है–दीर्घ, मध्य और ह्रस्व। इनमें रस, वीर्य और विपाकमें मध्यम गुण दाता है।

गुंड

गुडःसुकांडगुंडःस्याद्दीर्घकांडस्त्रिकोणकः छत्रगुच्छोसिपत्रश्चनीलपत्रस्त्रिधारकः॥ वृत्तगुंडोपरोवृत्तोदीर्घनालोजलाश्रयः। तत्रस्थूलोलघुश्चातस्त्रिधायंद्वादशाभिधः॥ गुंडास्तुमधुराःशीताःकफपित्तातिसारहा। दाहरक्तहरास्तस्यमध्येस्थूलांतराधिकाः॥

अर्थ–गुड, सुकांड, गुड, दीर्घकांड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ, असिपत्र, नीलपत्र, त्रिधारक, । **दूसरा** वृत्तगुंड, वृत्त, दीर्घनाल और जलाश्रय। इनमें एक **लघु** और दूसरी **स्थूल** इस प्रकार दो भेद हैं। म. गुंडावत, तिधारी, का. वलहातिनि, सुरुगेरु। **गुण**। मधुर, शीतल, कफपित्त और अतिसारको नष्ट करे दाह, रुधिरको दूर करे। दोनोंमें **स्थूल** गुंडातृण गुणोंमें **श्रेष्ठ** है।

चणिकातृण (घास)

चणिकादुग्धदागौल्याखुनालात्तेत्रजाहिमा। वृष्याबल्यातिमधुरावीजैःपशुहितातृणैः॥

अर्थ–चणिका, दुग्धदा, गौल्या, सुनाला और क्षेत्रजा ए संस्कृत नाम। म. चणेगवत, चणीया-गवत, का. चणगियहुलु। **गुण**। शीतल, वृष्य, बलकर्त्ता, बीज इसके अत्यन्त मीठे और इसके तृण पशुओंको अत्यन्त हितकारी हैं।

उखलतृण

अस्खलोभूरिपत्रश्चसुतृणश्चतृणोत्तमः। अस्खलोबलदोरुच्यःपशूनांसर्वदाहितः॥

अर्थ–अस्खल, भूरिपत्र, सुतृण, और तृणोत्तम, म. घोडेसर और जितारा गवत, तै. थेरसरु, का. हेवोरसु कहते हैं। यह बलकारी, रुचिकारी और पशुओंको सदैव हितकारी है।

शूलीतृण (घास)

शूलीतुशूलपत्रीस्यादशाखाधूमधूलिका। जलाश्रयामृदुलतापिविलामहिषीप्रिया॥ शूलीतुपिच्छिलाकोष्णागुरुर्गौल्याबलप्रदा। पित्तदाहहरारुच्यादुग्धवृद्धिप्रदायिनी॥

अर्थ–शूली, शूलपत्री, अशाखा, धूमधूलिका, जलाश्रया, मृदुलता, पिविला और महिषीप्रिया ए संस्कृत नाम। म. सुलेगवत, का. सोगले, कहतेहैं। **गुण**। पिच्छिल, कुछ २ गरम, भारी, मिष्ट, बलकारी, पित्तदाहको हरणकर्त्ता, रुचिकारी और दूधको बढ़ानेवाली।

इक्षुदर्भ.

इक्षुदर्भासुदर्भास्यात्पत्रालुस्तृणपात्रिका। इक्षुदर्भासुमधुरास्निग्धाकिंचित्कषायका॥ कफपित्तहरारुच्यालघुसंतर्पणास्मृता॥

अर्थ–इक्षुदर्भ, सुदर्भ, पत्रालु और तृणपत्रिक ए संस्कृत नाम। म. अश्वालु, सुठेंगवत, का. काग-वित्तभेद। **गुण**। **इक्षुदर्भ** मीठा, चिकना, किंचि-न्मात्र कषेला, कफपित्त हरणकर्त्ता, रुचिकारी, हलका आर इन्द्रियोंको तृप्त करता जानना।

गोमूत्रतृण.

गोमूत्रिकारक्ततृणात्तेत्राजाकृष्णभूमिजा। गोमूत्रिकातुमधुरावृष्यागोदुग्धदायिनी॥

अर्थ–गोमूत्रिका, रक्ततृणा, क्षेत्रजा और कृष्णभूमिजा ए लाल तृणके **संस्कृत** नाम । **म.** तांबेटी गवत, थोर शिपीगवत, **का.** गोढवी कहतेहैं लालतृण मधुर, वृष्य और गौओंमें दूध बढ़ानेवाला है ।

शिल्पिकतृण

शिल्पिकाशिल्पिनीशीताक्षेत्रजाचमृदुच्छदा ।
शिल्पिकामधुराशीतातद्बीजंबलवृष्यदम् ॥

अर्थ–शिल्पिका, शिल्पिनी, शीता, क्षेत्रजा और मृदुच्छदा ए **संस्कृत** नाम। **म.** लहान सीपीगवत, **का.** किरियसिंपिगे कहतेहैं। **गुण** । मधुर, शीतल । शिल्पिके बीज बलकारी और वृष्य हैं ।

निश्रेणीतृण.

निःश्रेणिकाश्रेणिकानीरसोनावनवल्लरी ।
निःश्रेणिकानीरसोष्णापशूनामबलप्रदा ॥

अर्थ–निःश्रेणिका, श्रेणिका, नीरसोना और वनवल्लरी ए निश्रेणी तृणके नाम हैं **म.** निश्रेणीगवत, **कों.** निरोणी । **गुण** । नीरस (रसरहित) गरम और पशुओंको निर्बल करतीहै ।

जरडीतृण.

गमोटिकासुनीलाचजरडीचजलाश्रया ।
जरडीमधुराशीतासारणीदाहहारिणी ॥
रक्तदोषहरारुच्यापशूनांदुग्धदायिनी ।

अर्थ–गमोटिका, सुनीला, जरडी और जलाश्रया ए **संस्कृत** नाम । **म.** गौडालोणा गवत, जरडी, **का.** हक्लेयहुल्लु । **गुण** । मधुर, शीतल, दस्तावर, दाहनाशक, रुधिरके दोष दूर करे। रुचिकारी और पशुओंमें दूधको बढ़ाताहै ।

मज्जरतृण.

मज्जरःपवनःप्रोक्तःसुतृणःस्निग्धपत्रजः ।
मृदुग्रंथिश्चमधुरोधेनुदुग्धकरश्चसः ॥

अर्थ–मज्जर, पवन, सुतृण, स्निग्धपत्रज और मृदुग्रंथि ए **सं.** नाम। **म.** पवनागवत, **का.** नले। **गुण।** मधुर और गौओंके थनोंमें दूधके बढ़ानेवाला है ।

तृणाख्य.

तृणाख्यंपर्वतृणंपत्राढ्यंचमृगप्रियम् ।
बलपुष्टिकरंरुच्यंपशूनांसर्वदाहितम् ॥

अर्थ–तृणाख्य, पर्वतृण, पत्राढ्य और मृगप्रिय, ए **संस्कृत** नाम । **म.** मृगप्रिय, शेंडगवत, **का.** सेंड । **गुण** । बल, पुष्टि और रुचिको करे, तथा पशुओंको सदैव प्रिय है ।

नीलदूर्वा.

नीलदूर्वारुहानंताभार्गवीशतपर्विका ।
शष्पंसहस्रवीर्याचशतवल्लीचकीर्त्तिता ॥६१॥
नीलदूर्वाहिमातिक्तामधुरातुवराहरा ।
कफपित्तास्रवीसर्पतृष्णादाहत्वजामयान् ॥

अर्थ–नीलदूर्वा, रुहा, अनंता, भार्गवी, शतपर्विका, शष्प, सहस्रवीर्या और शतवल्ली ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** नीलीदूब, हरीदूब, **कों.** नीली हरियाली **का.**हसुगरुके, **तै.** जरिकेगड्डी, **ता.** अरुगम् पुल्लु, **उत्क.** दुब्, **गु.** नीलोध्रो **इं.** कोपिंग् साइनोडन, कहतेहैं । **गुण** । शीतल, तिक्त, मधुर और कषाय। **प्रयोग** । कफजन्य रक्तपित्त, वीसर्प, तृषा, दाह और त्वचाकी बीमारियोंपर देवे ।

श्वेतदूर्वा

दूर्वाशुक्लातुगोलोमीशतवीर्याचकथ्यते । श्वेतादूर्वाकषायास्यात्स्वाद्वीव्रण्याचजीवनी ॥
तिक्ताहिमाविसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहहृत् ।

अर्थ–श्वेतदूर्वा, गोलोमी और शतवीर्या ए **संस्कृत** नाम **हिं.** सफेददूब, **म.** पांढरी हरियाली, **का.** बिलियकरुके, **गु.** धोलीध्रो । **गुण** । कषैली, स्वादु, बलकारक, जीवनीशक्तिसंपन्न, कडवी और शीतल । **प्रयोग** । विसर्प, रुधिरके दोष, तृषा, पित्तवृद्धि, कफवृद्धि और दाह आदि रोगोंको हरण करे ।

गांडरदूब (गंडदूर्वा)

गंडदूर्वातुगंडालीमत्स्याक्षीशकुलाक्षकः ।
गंडदूर्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणीलघुः ॥
तिक्ताकषायामधुरावातकृत्कटुपाकिनी ।
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ॥६५॥

अर्थ-गंडदूर्वा, गंडाली, मत्स्याक्षी और शकुलादक, ए संस्कृत नाम। हिं. गांडर दूब, म. गंडरदूर्वा, गाठीहरियाली, का. मीनगत्ते कहते हैं। गुण। शीतल, लोहद्रावक, ग्राही, लघु, तिक्त, कषाय, मधुर, वातजनक और पाकमें कटु। प्रयोग। दाह, तृषा, कफ, रुधिरके दोष, कोढ और पित्तज्वर इनको शान्ति करे।

विदारीकंद.

वाराहीकंदएवान्यैश्चर्मकारालुकोमतः।
अनूपसम्भवेदेशेवाराहइवलोमवान्॥
विदारीस्वादुकंदाचसालुकोष्ट्रीसितास्मृता।
इक्षुगन्धाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी॥
वाराहवदनागृष्टिर्बदरीत्यपिकथ्यते।
विदारीमधुरास्निग्धाबृंहणीस्तन्यशुक्रदा॥
शीतास्वर्यामूत्रलाचजीवनीबलवर्णदा।
गुरुपित्तास्रपवनदाहान्हंतिरसायनी॥ ६९॥

अर्थ-वाराहीकंदको कोई २ चर्मकारालुक कहते हैं। यह नीची जगहमें होताहै। इस कंद की गांठ के ऊपर सूअरकेसे मोटे २ बाल होते हैं। इसी से इसको वाराहीकंद कहते हैं। संस्कृत नाम-विदारी, स्वादुगंधा। सफेदविदारी को क्रोष्ट्री, इक्षुगंधा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, वराहवदना, गृष्टि और बदरी, हिं. विदारीकंद, बिलारीकंद, म. भूयकोंहले, का. नेलकुंबल, गु. फगवेलानोकन्द, उत्क. भूइकरवारु, तै. नेलगुंमुडू, ला. आईपोमियाडिजिटेडा। गुण। मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, स्तनों में दूध करता, शुक्रकर्त्ता, शीतल, स्वरशोधक, मूत्रकर्त्ता, जीवनशक्तिसम्पादक, बलकारक, रसायन, वर्णप्रद और भारी। प्रयोग। यह रक्तपित्त, वादी और दाहको नष्ट करे। वाराहीकन्द और विदारीकंद एकही जातिके कंद हैं। इसी वास्ते इस मध्यदेश में वाराही कंदकी प्रतिनिधि में विदारीकंद डालते हैं।

क्षीरविदारी.

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगंधेक्षुवल्लरी।
इक्षुवल्लीक्षीरकंदःक्षीरवल्लीपयस्विनी॥
क्षीरशुक्लाक्षीरलतापयःकंदापयोलता।
पयोविदारिकाचेतिविज्ञेयाद्वादशाह्वया॥
ज्ञेयाक्षीरविदारीचमधुराम्लाकषायका।
तिक्ताचपित्तशूलघ्नीमूत्रमेहामयापहा॥
क्षीरकंदोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालकः।
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वयस्तम्भीसनालकः॥

अर्थ-दूसरा क्षीरविदारी होता है उस के संस्कृत नाम-इक्षुगन्धा, इक्षुवल्लरी, इक्षुवल्ली, क्षीरकंद, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पयःकंद, पयोलता और पयोविदारिका। हिंदी में दूधविदारी अन्य भाषाओंमें क्षीरकंद। गुण। मधुर, खट्टा, कषेला, कडवा, पित्तशूल, मूत्ररोग और प्रमेह रोगको दूर करे। क्षीरकंद दोप्रकार का है-एक नालवाला, दूसरा विना नालका। इनमें विना नाल का रोग हरणकर्त्ता है। और नालवाला क्षीरकंद अवस्था को स्थापन करे है।

मूसली (मूशलीकंद.)

तालमूलीतुविद्वद्भिर्मुशलीपरिकीर्तिता।
सातालमूलीद्विविधाशुक्लाकृष्णाचवर्णतः॥
शुक्लाचाल्पगुणाकृष्णाकथिताचरसायनी।
मुशलीमधुरावृष्यावीर्योष्णाबृंहणीगुरुः॥
तिक्तारसायनीहंतिगुदजान्यनिलंतथा॥ ७०॥

अर्थ-तालमूलीको वैद्यजन मूशली कंद कहते हैं। मूसलीका वृक्ष एक घासकी जातिका है। उसका फूल पीला और कंद लंबा और चिकना होता है। हिं. सफेद और काली मूसली, बं. तालमूली, म. मुसली, क. नेलताडी, तै. निलयतली गड्डलु, ला. हाइपोक्सिस् आर्चि ओइडिस्। गुण। मधुर, बलकारक, उष्णवीर्य, पुष्टिकरता, भारी, कडवी, रसायन, वातनाशक और बवासीर को नष्ट करे।

मूसलीस्याद्द्विधाप्रोक्ताश्वेतावापरसंज्ञका।
श्वेतास्वल्पगुणोपेताअपराचरसायनी॥

अर्थ-मूसली दो प्रकारकी है। एक सफेद, दूसरी काली, इनमें सफेदमें थोड़े गुण हैं और काली मूसली रसायनी है अर्थात् इसमें अनेक गुण हैं।

शतावरी. महाशतावरी.

शतावरीबहुसुताभीरुरिंदीवरीवरी।
नारायणीशतपदीशतवीर्याचपीवरी॥ ७१॥

महाशतावरीचान्याशतमूल्यर्द्धकंटिका ।
सहस्रवीर्याहेतुश्चऋष्यप्रोक्तामहोदरी ॥७२॥
शतावरीगुरुःशीतातिक्तास्वाद्वीरसायनी ।
मेधाग्निपुष्टिदास्निग्धानेत्र्यागुल्मातिसार-
जित् ॥ ७३ ॥
शुक्रस्तन्यकरीबल्यावातपित्तास्रशोथजित् ।
महाशतावरीमेध्याहृद्यावृष्यारसायनी ॥
शीतवीर्यानिहंत्यर्शोग्रहणीनयनामयान् ॥

अर्थ–शतावरी, बहुसुता, भीरु, इन्दीवरी, वरी, नारायणी, शतपदी, शतवीर्या, और पीवरी, महाशतावरी । **हिं.** छोटी सतावर, शतमूली, सहस्रमूली, **म.** सांनी-कांटेसेरु, **का.** किरियआसडी, **गु.** सत्तावल, एकलकंटो, **फा.** वूजीदां, **अ.** शकाकुलमिश्री, **ला.** आस्पागस रासीमोसस Aspagus racemosus कहते हैं । **स्वरूप** । सतावरकी **वेल** होती है । इसके **पत्ते** सूएके सागसे मिलते हुए बारीक होते हैं । **फूल** सफेद होताहै। **प्रयोगमें** इसकी **जड** लीनी जाती है । **महाशतावरी** के नाम–महाशतावरी, शतमूलीय, अर्द्धकंटिका, सहस्रवीर्या, महती, ऋष्यप्रोक्ता और महोदरी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** बड़ी सतावर, **म.** शतावर, **का.** यरड, आसडियगुण । सतावर **मोटी** और **सफेद** उत्तम होतीहै। **गुण** । **शतावरी** भारी, शीतल, कडवी, स्वादिष्ट, रसायन, मेधाको वढ़ाने वाली, अग्निकारक, पुष्टिकर, स्निग्ध, नेत्रों को हितकारी, वीर्यकर्त्ता, स्तनों में दूध करता, वलकारक, वातनाशक । **प्रयोग** । यह गोला, अतिसार, रक्तपित्त और प्रमेहरोग को शान्तिकरे । इस के दर्पनाशक वडहल और सहत हैं । **मात्रा** ७ माशे, **बदल** इस की वहमन सफेद है । **महाशतावरी** स्मरणशक्तिवर्द्धक, हृद्य, वलकारक, रसायन और शीतवीर्य । **प्रयोग** । ववासीर, संग्रहणी और नेत्ररोग शान्ति हो ।

असगंध (अश्वगंधा.)

गंधांतावाजिनामादिरश्वगंधाहयाह्वया ॥
वाराहकर्णीवरदाबलदाकुष्ठगंधिनी ।
अश्वगंधानिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा ॥
बल्यारसायनीतिक्ताकषायोष्णातिशुक्रला ।

अर्थ–वाराहकर्णी, वरदा, वलदा, कुष्ठगंधिनी, अश्ववाचक शब्द अंतमें और गंधादि शब्द जितने हैं सब इस के पर्यायवाचक जानने । **हिं.** असगंध, नागौरीअसगन्ध, **म.** आसंध, **का.** अंगुर, आसंधिका, **गु.** आसोद, **तै.** पिल्लीआंगा, **इं.** विटरचेरी, **फा.** वेहमनवररी, **ला.** फिसेलिस् सोम्नीफेरा Physalis somnifera कहते हैं । **गुण** । **असगंध** वलकारक, रसायन, तिक्त, कषैली, गरम और अत्यन्त शुक्रकर्त्ती है । **प्रयोग** । इसके द्वारा वादी, कफ, सफेदकोढ़,सूजन, खईरोग, आमवात, व्रण, खांसी और श्वास ए नष्ट होंय। असगंध की **जड** प्रयोग में लीनी जाती है । यह रास्नाके समान होती है । इसी से अत्तार और पंसारी लोग असगंधके पलटेमें रास्ना की लकड़ी देते हैं ।

पाठा

पाठांबष्ठांबष्ठिकाचप्राचीनापापचेलिका ।
एकाष्ठीलारसाप्रोक्तापाठिकावरतिक्तिका ॥
पाठोष्णाकटुकातीक्ष्णावातश्लेष्महृल्लघुः ।
तिक्तारुचिकरीचाम्लाभग्नसंधानकारिणी ॥
हंतिशूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।
दाहकंडुविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ॥ ७८ ॥

अर्थ–पाठा, अंवष्ठा, अंवष्ठिका, प्राचीना, पापचेलिका-एकाष्ठीला, रसा, पाठिका और वरतिक्तिका ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** पाठ, **बं.** आकनादि, **म.** पहाडमूल, **गु.** करंढीउ, कालीपाट, **तै.** पाटचेट्ट, **उत्क.** पाकनविन्धि, **इं.** पररोरूट, **ला.** सिसापिलोस परिरा। **स्वरूप** । इसकी वेल चातुर्मास्यमें होती है । **पत्ते** कुछ गुलाई लिये होते हैं, उसके कोनों में से सफेद और वारीक मोरके समान **फूल** निकालता है । तथा लालरंग के मकोय के समान **फल** होते हैं । **चित्र** नंबर २२ का देखो । **गुण** । उष्ण, चरपरी, तीक्ष्ण, वातकफनाशक, हलकी, कडवी, अरुचिनाशक, **स्वाद** में खट्टी और टूट हुए को जोड़ने वाली । **प्रयोग** । शूल, ज्वर, वमन, कुष्ठ, अतिसार, हृदयका रोग, दाह, खुजली, विषविकार, श्वास, कृमि, गोला और विषका घाव इनको दूर करे । इसकी जड़ आदि प्रयोग में लीने जाते हैं । **मात्रा** १ माशे की है ।

निसोथसफेद.

श्वेतात्रिवृत्त्रिभंडीस्यात्त्रिवृत्तात्रिपुटापिच ।
सर्वानुभूतिःसरलानिशोत्रारेचनीतिच ॥७९॥
श्वेतात्रिवृद्रेचनीस्यात्स्वादुरुष्णासमीरहृत् ।
रूक्षापित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा ॥८०॥

अर्थ–श्वेतात्रिवृत्, त्रिभंडी, त्रिवृत्ता, त्रिपुटा, सर्वानुभूति, सरला, निशोत्रा और रेचनी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** निसोथ, श्वेतपनिलर, **बं.** श्वेततेउडी, **म.** निसोतर, **द्रे.** तेड, **का.** तिगडे, तियड, **गु.** नसोतर, **तै.** तलातेगडा, **ता.** फिवदइ, **फा.** तुर्बुद, **इं.** टरबीथरूट, **ला.** आईपोम्या टरपीथम Ipoma & turpethum कहते हैं । **स्वरूप** । निसोथ दो प्रकार की है–**सफेद** और **काली** । तहां कालीको दवामें नहीं डालना क्योंकि यह बड़ी तीव्र रेचक है । इसमें अमेरिकन् जलपकी जडके समान शक्ति है । इसकी **बेल** होती है, **पत्ते** मोटे होते हैं, **फूल** घंटे के आकार का सफेद और एक इंचके अनुमान लम्बा होता है । और **काली निसोथका फूल** नीले रंगका होता है । उसके डांठरे में तीन रेखा होती हैं । **फल** कुछ लम्बाई लिये सुपारी के समान होता है । पकने पर खिल जाता है और इस के भीतर चार काले बीज होते हैं । **चित्र** नम्बर २३ का देखो । **दर्पनाशक** । बदामरोगन तथा वर्जकतूना, **प्रतिनिधि** कालादाना और इन्द्रायनका गूदा है । **गुण** । रेचक, स्वादु, गरम, वातनाशक, और रूक्ष । **प्रयोग** । पित्त, कफज्वर, पैत्तिक शोथ और उदररोग इनको दूर करे । इसकी बेल की लकडी प्रयोग में लेते हैं । **मात्रा** २ माशे से लेकर ४॥ माशे तक है ।

श्यामनिसोथ.

त्रिवृत्श्यामार्द्धचन्द्राचपालिन्दीचसुषेणिका ।
मसूरविदलाकोलकैषिकाकालमेषिका ॥८१॥
श्यामात्रिवृत्ततोहीनगुणातीव्रविरेचनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रांतिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥

अर्थ–श्यामा, त्रिवृत्, अर्द्धचन्द्रा, पालिन्दी [न्धी] सुषेणिका, मसूरविदला, कोलकै [कौ] षिका और कालमेषिका, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** कालीनिसोथ, श्यामपनिलर, **बं.** श्यामते उडी, **का.** लोहिवीतियड, कृष्णनेयतिगडे कहते हैं । **गुण** । काली निसोथ, सफेद निसोथ की अपेक्षा अल्पगुणवाली है । परन्तु इस में विरेचक शक्ति अति तीव्र है । **प्रयोग** । मूर्च्छा, दाह, मद, भोर और कंठको सुलाने वालीहै । **मात्रा** १ माशेसे ३ माशे तक है ।

लघुदन्ती.

लघुदंतीविशल्याचस्यादुदुंबरपर्ण्यपि ॥
तथैरंडफलाशीघ्रश्येनघंटाघुणप्रिया ॥
वाराहांगीचकथितानिकुंभश्चमकूलकः ॥

अर्थ–लघुदंती, विशल्या, उदुंबरपर्णी, एरंडफला, शीघ्रा, श्येनघंटा, घुणप्रिया, वाराहांगी, निकुंभ और मकूलक, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** दंती, **राजपूतानेमें** दातूणी, **गु.** दातीमूल और सब हिन्दुस्थानकी भाषामें इसी नामसे प्रसिद्ध है । **अ.** हबुलंघुलुक, **फा.** दंद, **इं.** क्रोटनरूट Croton Root कहते हैं । यह जमालगोटेके वृक्षकी जड है । इसके मूलके समान पत्ते होतेहैं और महुआ के समान फूल होताहै ।

बृहद्दंती.

द्रवंतीसावरीचित्राप्रत्यक्दरयर्कपर्ण्यपि ।
चित्रोपचित्रान्यग्रोधीप्रत्यक्छ्रेण्याखुकर्ण्यपि ॥
दंतीद्वयंसरंपाकेरसेचकटुदीपनम् ।
गुदांकुराश्मशूलास्रंकंडुकुष्ठविदाहनुत् ॥
तीक्ष्णोष्णंहंतिपित्तास्रकफशोथोदरकृमीन्

अर्थ–द्रवंती, वरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, अर्कपर्णी, चित्रोपचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यक्छ्रेणी [प्रत्यक्श्रेणी] और आखुकर्णी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** बड़ीदंती, **का.** एरडेनदंती, **गु.** मोटानेपाल, कहते हैं । इसके वृक्षके **पत्ते** अंडके समान होते हैं । **गुण** । दोनों प्रकारकी दंती वातादि दोषोंको निकालनेवाली, **पाक** में और **रस** में चरपरी, अग्निदीप्तिकारक, तीक्ष्णोष्ण है । **प्रयोग** । बवासीर, आमशूल, रक्तदोष, खुजली, कोढ, दाह, रक्तपित्त, कफशोथ, उदररोग और कृमिरोग इनको दूर करे ।

क्षुद्रदंतीफल.

क्षुद्रदंतीफलंतुस्यान्मधुरंरसपाकयोः ।
शीतलंसृष्टविण्मूत्रंगरशोथकफापहम् ॥

गुण । छोटी दंतीका फल खानेमें और पाकमें मीठा, शीतल, मलमूत्रको निकालनेवाला, विषजन्य शोथनाशक और कफनाशक है ।

जयपाल.

जयपालोदंतिवीजंविख्याततन्तिलीफलम् ।
जयपालोगुरुःस्निग्धोरेचीपित्तकफापहः ॥

अर्थ–जयपाल, दंतिवीज और तन्तिलीफल, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** जमालगोटा, अजेपाल, **बं.** जयपाळ, **म.** जपाल, **कों.** जेपाल, मुगलानीअरंड, चंद्रघ्योति नामक वृक्ष हैं उसीको जमालगोटा कहते हैं । **गु.** नेपालो, **अ.** हब्बसलातीन, **फा.** तुख्मवेद-अंजीर, **इं.** क्रोटनसीड, **ला.** ओलियम क्रेटोनिस । यह बृहद्दंतीका फल है । **स्वरूप** । जमालगोटेके बीज छोटी अंडीके समान होते हैं, इसको तोड़ने से भीतर हरे रंगकी जिह्वासी निकलती है वही वमनादि कराती है । **गुण** । जमालगोटा भारी, चिकना, दस्त करानेवाला और कफपित्तको नष्ट करता है । **प्रयोग** में बीज लिया जाता है । सो शुद्धकरा हुआ लेना [शोधनेकी विधि हमारे बनाए **रसराजसुंदर** ग्रंथमें लिखी है] ।

कैश्चित्प्रतीचीभववैद्यवर्यैः ।
निराकृतःकोष्ठविघातकृच्च ॥
सर्पिःपयस्तक्रमथाज्यपानम् ।
दर्पघ्नमेतस्यबुधावदन्ति ॥

अर्थ-हकीमलोग जमालगोटे से कोठेमें वरम (सूजन) उत्पन्न होनेके कारण इसका देना वर्जित करते हैं । कदाचित् किसी ने इसको भूलसे खालिया होय तो इसके **दर्पनाशक** घी, दूध, छाछ और केवल घृतपान कहेहैं ।

इन्द्रायण (इन्द्रवारुणी.)

ऐन्द्रींद्रवारुणीचित्रागवाक्षीचगवादिनी ।
वारुणीचपराप्युक्तासाविशालामहत्फला ॥
श्वेतपुष्पामृगाक्षीचमृगैर्वारुमृगादनी ।
गवादिनीद्वयंतिक्तंपाकेकटुसरंलघु ॥ ८६ ॥
वीर्योष्णंकामलापित्तकफलीहोदरापहम् ।
श्वासकासापहंकुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत् ॥
प्रमेहमूढगर्भामगंडामयविषापहम् ॥ ९० ॥

अर्थ–ऐन्द्री, इन्द्रवारुणी, चित्रा, गवाक्षी और गवादिनी, यह **छोटी** इन्द्रवारुणीके **संस्कृत** नाम । **हिं.** इन्द्राय [इ] न, फरफेंदू, इन्द्रारुण, **रा.** तसतुंबो, गुडतुंबो, **बं.** राखालशशा, **म.** लघुकांवडल, **को.** इन्द्रावण, **दे.** घोड इन्द्रावण, घुलेइन्द्रावण, **का.** हामेके, **गु.** इंद्रवरणुं, **तै.** एतीपुच्छा, **अ.** हिंजल, **फा.** खुरपुजेतलख, **ला.** कोलोसिंथिस Colocynthis कहते हैं । **स्वरूप** । इंद्रायनकी रेतली जमीनमें बेल होती है, **पत्ते** लंबे बीच २ में कटेहुए, **फूल** पीले रंगका पांच पंखडीका होताहै । **फल** संतरेके समान पीलेरंगका सुहामना होताहै । इसके भीतर **बीज** बहुत होते हैं । व्रजभाषामें **फरफूँदू** कहते हैं । **चित्र** नंबर २४ का देखो । इसके भीतर से इलेटीरिअम् नामका सत्त्व निकलता है । **बड़ीइन्द्रवारुणी के** नाम—विशाला, महाफला, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगैर्वारु और मृगादनी । **हिं.** बड़ी इन्द्रफला, **म.** थोरकांवडल, **का.** हिरियमहामेके । इसका **फूल** सफेद और **फल** बड़ा होता है । **गुण** । दोनों प्रकारकी **इन्द्रायण**–कड़वी, पाकमें कटु, सर (दस्तावर) हलकी और गरम । **प्रयोग** । कामला, पित्त, कफ, प्लीहा, उदररोग, श्वास, खांसी, कोढ़, गोला, गांठ, घाव, प्रमेह, मूढगर्भ, आम, गंडरोग और विषरोग इनको दूर करे । यह आम और कफके निकालनेमें अद्वितीय है । **प्रयोगमें** इसके फलका गूदा लिया जाताहै । **मात्रा** ६ रत्तीसे लेकर दो माशे तक है । यह खून और फेंफड़ेको नुकसानकरेहै । **दर्पनाशक** । कतीरा, विहिदाना, मस्तंगी, निशास्ता, हैं । **प्रतिनिधि** । इसबंद, रसोत और निसोथ हैं । *

* **सुश्रुतसंहितामें**–इसको दस्तावर, दुष्टदोषहर, विषनाशक और व्रणरोपक मानते हैं ।
आयुर्वेदके ग्रंथोंमें—इन्द्रायनको कड़वा, तीखा और तीव्र–जुल्लाब लानेवाला वर्णन कराहै । तथा पित्त-विकार, दस्तकी कब्जियत, ज्वर और पेटके जीव निकालने को यह दीनी जाय है । इसकी **जड़से** जुल्लाब लगताहै तथा कामला, कलेजेमें पानीका भरना, जलंधर, मूत्रस्थानकी व्याधि और संधिवातपर उत्तम असर करेहै ।

कृष्णबीज.

कृष्णबीजंश्यामबीजंस्मृतंश्यामलबीजकम् ॥
कृष्णबीजंसरंस्निग्धंशोथोदरहरंपरम् ॥
ज्वरंविष्टंभहारीचमस्तकामयनाशनम् ॥
उदावर्त्तकफानाहेप्रयोज्यंबुद्धिमत्तरैः ॥

अर्थ–कृष्णबीज, श्यामबीज, श्यामलबीज, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** कालादाना, मिरचाई, **फा.** हब्बुलनील, **ला.** आईपोम्यासरोलिया कहते हैं । **गुण** । दस्तावर, स्निग्ध । **प्रयोग** । सूजन, उदररोग, ज्वर, विष्टंभ, मस्तकपीड़ा, उदावर्त्त, कफरोग और अफरा इन रोगों में देवे । **मात्रा** ४॥ माशे । **प्रतिनिधि** निसोथ अथवा इंद्रायन, **दर्पनाशक** सब यूष हैं ।

यवासशर्करा,

यवासशर्कराप्रोक्ताबृंहणीपित्तनाशिनी ।
ज्वरह्वदीपनीशीतारेचनीसापुरातना ॥
नार्याश्चापन्नसत्वायादुर्बलस्यतथाशिशोः ।
रेचनार्थंप्रयोज्येयंक्षीणस्यस्थविरस्यच ॥

अर्थ–यवासशर्करा को हिंदीमें **शीरखिस्त** और **बं.** म्यानाक, कहते हैं । यह खुरासान के जंगलमें उत्पन्न होती है । **गुण** । बृंहण, पित्तनाशक, ज्वरघ्न, क्षुधावर्धक और शीतवीर्य । **प्रयोग** । यह पुरानी दस्त करानेवाली होती है । गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीणदेह और वृद्ध इनको इसके द्वारा दस्त कराना हितकारी है

स्वर्णमुखी (सनाय.)

स्वर्णपत्रीस्वर्णमुखीकल्याणीहेमपत्रिका ।
रेचिकास्वर्णनीप्रोक्तारेचनीमलहारिणी ॥
मंदाग्नौविषमेऽजीर्णेप्लीहेबद्धगुदेतथा ।
यकृतेपांडुरोगेचकामलाकफह्वत्परा ॥

अर्थ–स्वर्णपत्री, स्वर्णमुखी, कल्याणी, हेमपत्रिका, रेचिका, स्वर्णनी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** सनाय, सोनामुखी, **इं.** टिनेवेली सिना, **ला.** सिनाइंडीका, पलासकेसे और कबूतरकी जिह्वा के समान लंबे बारीक **पत्ते**, रगमें कुछ २ पीली हो ऐसी **सनाय** उत्तम होतीहै । **गुण** । दस्त करानेवाली, मलको निकाले । **प्रयोग** । मंदाग्नि, विषमज्वर, अजीर्ण, प्लीह, बद्धगुद, कलेजेकेरोग, पांडुरोग, कामला और कफ इनको हरण करे । **मात्रा** । २ तोले की है । **प्रतिनिधि**, निसोथ और **दर्पनाशक** बिहीदाना, और ईसबगोल है ।

नील. (नीली.)

नीलीतुनीलिनीतूलीकालदोलाचनीलिका ।
रंजनीश्रीफलीतुत्थाग्रामीणामधुपर्णिका ॥
क्लीतकाकालकेशीचनीलपुष्पाचसास्मृता ।
नीलिनीरेचनीतिक्ताकेश्यामोहभ्रमापहा ॥
उष्णाहंत्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् ।
आमवातमुदावर्तंमेदंचविषमुद्धतम् ॥ ६३ ॥

अर्थ–नीली, नीलनी, तूली, कालदोला, नीलिका, रंजनी, श्रीफली, तुत्था, ग्रामीणा, मधुपर्णिका, क्लीतका, कालकेशी और नीलपुष्पा ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** नील, लील **म.** गुली, **गु.** गली, **का.** हिरिपनीली, **तै.** नीलीजेट्टु, **इं.** इंडीगो । **स्वरूप** । इसका वृक्ष मेथी के शाक के समान होताहै, कि जिसमें से लीलरंग निकलता है यह प्रसिद्धहै, । **गुण** । यह रेचक, कड़वी, बालोंको उत्तमकर्ता, मोह, भ्रमनाशक । **प्रयोग** । मूर्च्छा, भ्रम ,उदररोग,प्लीहा, वातरक्त,वातकफ,आमवात,उदावर्त, मेदरोग और विषदोषको नष्टकरे । जिसके सफेद बाल होगए हों वो प्रथम मेंहदी के

मुसलमानी ग्रंथकर्त्ता–इसके **फलका शरबत** जुल्लाब लानेवाला, बलगम काढनेवाला, जलंधर, कामला, पेटकी एंठन और श्लीपद नष्ट कर्त्ता मानतेहैं । गर्भाशयपर उसका असर होताहै । तथा इसकी धूनी जल्दी देनेसे नष्ट हुआ आर्तव फिरसे जारी होताहै । इसके **बीज** से जुल्लाब होताहै, तथा इसके वर्त्तने से बुढ़ापे में सफेदबाल होतेहुए रुकतेहैं । **अफ्रिकामुल्क** के मनुष्य इस बीजको अत्यन्त **पौष्टिक** मानते हैं । तथा **केप ऑफ गुड–होप** के रहनेवाले इसके ताजे फलके रसको खांडके साथ मिलायके जलंधरके रोगमें पीते हैं । तथा त्वचा के रंग पलटने को लेप करते हैं ।

चरकसंहितामें तथा **सुश्रुतसंहितामें**–इस फलको विकारनाशक, संशोधन और पिचकारी देनेमें उपयोगी मानतेहैं ।

पत्ते पीसके लगावे तो बाल लाल होजावें, फिर उनपर नीलके पत्ते पीसकर लगाने से बाल हूवहू काले भौंराके माफिक होजातेहैं । **मात्रा** २ माशे । *

महानीली.

अन्याचैवंमहानीलीअमलाराजनीलिका ।
तुत्थाश्रीफलिकामेलाकेशार्हाभृशपत्रिका ॥
महानीलीगुणाढ्यास्याद्रंगश्रेष्ठासुवीर्यदा ।
पूर्वोक्तनीलिकादेषासगुणासर्वकर्मसु ॥

अर्थ–एक दूसरी महानीली होतीहै, इसके नाम–आमला, राजनीलिका, तुत्था, श्रीफलका, एला, केशार्हा और भृशपत्रिका । **हिं.** बड़ानील, **म.** वडिलनीली, **का.** हरियनीली कहतेहैं । **गुण** । महानीली गुणवाली, रंगको उत्तम कर्त्ता, वीर्यदायिनी, **छोटी** नीलीसे यह सर्व प्रकार सब गुणोंमें उत्तम है ।

शरपुंख (सरफोका)

शरपुंखःप्लीहशत्रुर्नीलीवृक्षाकृतिस्तुसः ।
शरपुंखोयकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहः ॥
तिक्तःकषायःकासास्रश्वासज्वरहरोलघुः ॥

अर्थ–शरपुंख, प्लीहशत्रु, नीलवृक्षाकृति ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** सरफोंका, **म.** शरपुंखा, उन्हाली, जंगली-कुलटी, रानटनील, **गु.** शरपुंखा, **का.** येरड, कोगिि, **तै.** मपाराचेट्ट, **ता.** कोल्लुक व केल्लापि, **ला.** टेफ्रोसिया परपुरिया, Tephrosiapurporea । **स्वरूप** । यह छोटा दो फूट ऊंचा क्षुपजाति है । **पत्ते** मेथीके समान होतेहैं, **फूल** जामुनके आकार लाली लिये होते हैं, **फल** इसका चपटा होकर रेसे के आकार जैसे ग्वारकी फली होतीहै ऐसा होताहै । इसके पत्तेको बीचमें से पकड़कर तोड़नेसे खांचा पड़कर टूटता है । वर्षाऋतुमें यह बहुत होताहै । **चित्र** नंबर २५ का देखो । **गुण** । कड़वा, कषैला और हलका । **प्रयोग** । यकृत् (कलेजा), प्लीह (तिल्ली), गोला, व्रण, विष, खांसी, रुधिरके दोष, श्वास और ज्वरको नष्ट करे । इसका सर्वांश ग्रहण करा जाताहै । **मात्रा** २ माशेकी है ।

सफेदसरफोका.

शरासिंघाचपुंखास्याच्छ्वेतायासितसायका ।
सितपुंखाश्वेतपुंखाशुभ्रपुंखाचपंचधा ॥
श्वेतास्त्वेषागुणाढ्यास्यात्प्रशस्ताचरसायने ।

अर्थ–शरपुंखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेतपुंखा और शुभ्रपुंखा ए पांच नाम **संस्कृत** हैं । **म.** कं उन्हली, **का.** मुलुगोगी । **गुण** । दोनों सरफोका गुणमें समान हैं, तथापि सफेद सरफोका अत्यंत गुणकारी और रसायन कर्ममें उत्तम है । *

कंठपुंखा.

अन्यातुकंठपुंखास्यात्कंठालुःकंठपुंखिका ।
कंठपुंखाकटूष्णाचकृमिशूलविनाशिनी ॥

अर्थ–एक कंठपुंखा, उसको **संस्कृत**में कंठालु और कंठपुंखिका कहते हैं । **कंठपुंखा** चरपरा, गरम कृमि और शूलको नष्ट करती है ।

---

* **डा० ऐन्स्ली**—कहता है कि नीलकी जड़में जहरके असर नष्ट करनेका और पत्तोंमें निर्बलता नष्ट करनेका गुण है । कलेजेकी सूजनपर नीलके पत्ते, सिर्फ अथवा सहतके साथ पीसकर देते हैं । जड़को पानीमें औटाय पथरीपर देते हैं । तथा पत्तोंको पीस पेड़ूपर चुपड़नेसे पेशाब खुलासा आता है । हैजाकी बिमारीमें नीलका चूर्ण दिया जाताहै, तथा उस चूर्णको दुष्ट नासूरपर बुरकनेसे जल्दी अंकुर लेआता है । **कोमलडालीका** रस सहतमें मिलाय छोटे २ बच्चोंके मुखमें होनेवाली गरमी दूर करनेको काममें आती है ।

मुसलमानी ग्रंथकर्त्ता—पारेकी किसी प्रकार की दवाई खानेसे मुखमें होनेवाली गरमी नष्ट करनेको इस वृक्षकी डालीवगैरह औटाय उस पानीके कुल्ले करनेकी प्रशंसा करते हैं । तथा वे इस क्षुपको बड़ीभारी खांसी, फुफ्फुस और गुरदेमें होनेवाली बिमारियोंमें, हृदयका धड़कना और जलंधरके रोगमें अत्यंत उपयोगी मानते हैं ।

* **मीर मुहम्मद हुसेन**—कहता है कि सरफोका १ भाग, तथा भांगके पत्ते दो भाग मिलायके देनेसे दूखती बवासीर नष्ट होती है । और कालीमिरच के साथ मिलायके देनेसे पेशाब अधिक उतरे है तथा मुख्य करके प्रमेह को नष्ट करे है ।

जवासा (यवास.)

यासोयवासोदुःस्पर्शोधन्वयासःकुनाशकः।
दुरालभादुरालंभासमुद्रांताचरोदिनी ॥६५॥
गांधारीकच्छुराऽनंताकषायाहरविग्रहा।
यासःस्वादुःसरस्तिक्तस्तुवरःशीतलोलघुः॥
कफमेदोमदभ्रांतिपित्तासृक्कुष्ठकासजित्।
तृष्णावीसर्पवातास्रवमिज्वरहरःस्मृतः॥
यवासस्यगुणैस्तुल्याबुधैरुक्तादुरालभा।

अर्थ—यास, यवास, दुःस्पर्श, धन्वयास और कुनाशक, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** जवासा, **बं.** यवासा, **का.** तेरिंगुल, **गु.** जवासो, **अ.** हाज, **फा.** सुतरखार, **ला.** अलहागी मोरोरम Alhagi maurorum कहते हैं। जवासेका भेद दुरालभा उसके नाम दुरालम्भा, समुद्रांता, रोदिनी, गांधारी, कच्छुरा, अनंता कषाया और हर (दुर) विग्रहा, **हिं.** धमासा **बं.** दुराला, **म.** धमासा, वेलीकासुली, **का.** वल्लीदुधुवे कहते हैं। जवासा यह रेतली जमीन और तरी में होताहै। यह क्षुपजातिकी रूखडी है। जड़ लम्बी और यह सर्वत्र मिलताहै। छोटे २ कांटे होते हैं। तथा कांटों के पास छोटे २ पत्ते होते हैं। और बहुत बारीक फल होते हैं। इसे ऊंट और बकरी अधिक खाते हैं। **गुण**। स्वादु, सर, कडवा, कषेला, शीतल और हलका। **प्रयोग**। कफ, मेदरोग, मद, भ्रमरोग, रक्तपित्त, कोढ, खांसी, तृषा, विसर्प, वातरक्त, वमन और ज्वर इनको दूर करे। दुरालभा अर्थात् धमासे के गुण जवासे के समान जानने। इसका **दर्पनाशक** कतीराहै। **प्रतिनिधि** हिन्दीकोका। सर्वांग लेना. **मात्रा** ६ माशे की है।*

छोटाधमासा.

अन्याक्षुद्रदुरालम्भामरुस्थामरुसम्भवा।
विशारदाजभक्षाख्यादजादन्युष्ट्रभक्षिका॥
कषायाफणिहृच्चैवग्राहिणीकरभप्रिया।
करभादनिकाचेतिविज्ञेयाद्वादशाभिधा॥
दुरालम्भाद्वितीयाचगौल्यास्लज्वरकुष्ठनुत्।
श्वासकासभ्रमघ्नीचपारदेशुद्धिकारिका॥

अर्थ—एक छोटा धमासा होताहै उसके **संस्कृत** नाम—क्षुद्रदुरालम्भा, मरुस्था, मरुसम्भवा, विशारदा, अजभक्षा, अजादनी, उष्ट्रभक्षिका, कषाया, फणिहृत्, ग्राहिणी, करभप्रिया और करभादनि ए बारह नाम हैं। **म.** सार्म्हीवेल्लीकासुली, **का.** किरुवल्लीदुरुवे। **गुण**। छोटा धमासा मिष्ट, खट्टा और पारेको शुद्ध करता है। **प्रयोग**। ज्वर, कुष्ठ, श्वास, खांसी और भ्रम (भौर) रोगको नष्ट करे।

अथाग्निदमनीवह्निदमनीबहुकंटका।
वल्लिकंटारिकागुच्छफलाक्षुद्रफलाचसा॥

---

* **आयुर्वेदके ग्रंथोंमें**—जवासेको दस्त खुलासा लानेवाला, मूत्रवर्द्धक और कफका नाशक मानाहै। इसमेंसे जो **सत्त्व** निकलता है वह खांसी को नष्ट करे है।

हिकमतमें—इस क्षुपकी पुलटिश बांधने से अथवा उसकी धूनी देनेसे बवासीर नष्ट होती है। इसका रस नेत्रकी दृष्टि नष्ट करेहै तथा चूर्णका वादी के रोग में नास दिया जाता है। इस के पत्तों में से जो **तेल** बनता है वह संधिवातपर लगाया जाता है। तथा फूलको पीसके लेप करने से बवासीर गिर जाती है।

मीर मुहम्मद हुसेन—लिखताहै कि खुरासान, मवारुनहर, करजस्तान और हमदनके मुल्कों में इस क्षुपको काट कपडे में बांधके निचोडने से तुरंजबीन नामक शकरके समान पदार्थ बनता है। यह पदार्थ जौके पानीके साथ देनेसे दस्त खुलासा लाताहै। पित्तको निकाल डाले, कफको बैठाल देता है, और रुधिरको शुद्ध करे। दूधके साथ देनेसे शरीरको पुष्ट करता है और कामदेव बढ़े है।

चक्रदत्तमें—जवासेको मल शुद्धकर्ता, मूत्र लानेवाला और कफोत्सर्जक गिनाहै।

सुश्रुतसंहितामें—जवासेको **उष्ट्रभक्षिका** नामसे वर्णन कर उसको कफमेदहर, मूत्रकृच्छ्रहर और गुल्मनाशक गिना है। तथा उसी ग्रंथमें उसको **गिरिकर्णिका** नामसे लिखताहुआ उसे वातपित्त संशमनकर्त्ता वर्णन करा है।

चरकसंहितामें—उसको सारक मानाहै, तथा छोटे २ बच्चोंकी खांसी पर हरड, पीपर और दाखके चूर्णमें सहत और मक्खन के साथ देनेकी प्रशंसा करी है।

विशेयाक्षुद्रदुःस्पर्शाक्षुद्रघंटारिकातथा।
मर्त्येन्द्रमातादमनीस्यादित्येषादशाह्वया॥
कटूष्णाचाग्निदमनीरूक्षावातकफापहा।
रुचिकृद्दीपनीहृद्यागुल्मप्लीहापहाभवेत्॥

अर्थ–सं. अग्निदमनी, वह्निदमनी, बहुकंटका वह्निकंटारिका, गुच्छफला, क्षुद्रफला, क्षुद्रदुःस्पर्शा, क्षुद्रकंटारिका, मर्त्येंद्रमाता और दमनी ए दश **संस्कृत** नाम हैं। **म.** आगीदवण और अग्निदमनी, **का.** चित्तरटे। यह भी धमासेकाही भेद है। **गुण**। चरपरी, गरम, रूक्ष, वात कफनाशक, रुचिकर्त्ता, दीपन, हृदयको हितावह। **प्रयोग**। यह वायुगोलाको और प्लीह (तिल्ली) को दूर करे।

मुंडी, महामुंडी.

मुंडीभिक्षुरपिप्रोक्ताश्रावणीचतपोधना।
श्रवणाह्वामुंडतिकातथाश्रवणशीर्षका॥
महाश्रावणिकान्यातुसास्मृताभूकदंबिका।
कदंबपुष्पिकाचस्यादव्यथातितपस्विनी॥
मुंडतिकाकटुःपाकेवीर्योष्णामधुरालघुः।
मेध्यागंडापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्त्तिपांडुनुत्॥
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिहृत्।
महामुंडीचतत्तुल्यागुणैरुक्तामहर्षिभिः॥१॥

अर्थ–मुंडी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, श्रवणाह्वा, मुंडतिका और श्रवणशीर्षका। **दूसरी** जाति इसकी और होती है उसके नाम–महाश्रवणिका, भूकदंबिका, कदंबपुष्पिका, अव्यथा और अति तपस्विनी। **हिं.** छोटी बड़ी गोरखमुंडी, **बं.** मुइरी, मुंइकदम, **का.** कियोबोलतर, हिरियबोलतर **तै.** बोडसर पुसेट्टु, **ता.** कोदल, **अ.** कमादरयूस, **ला.** स्फिरेंथस् इंडिकम् कहतेहैं। **स्वरूप**। यह प्रसरजाति की रूखडी है। काली जमीनमें तथा जलप्राय स्थानमें बहुत होती है। इसका **छत्ता** पृथ्वीमें फैला हुआ रहताहै। **फूल** गोल कनेरी रंगका होता है। **गुण**। पाकमें कडवी, उष्णवीर्य, मधुर, हलकी, स्मरणशक्तिवर्द्धक। **प्रयोग**। गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग, पांडु, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेदरोग और गुदाकी पीडाको निवारण करे। **महामुंडीके गुण** छोटी मुंडीके समान जानने। सर्वांग ग्रहण करना। **मात्रा** ६ माशेकी है।

ओंगा (अपामार्ग).

अपामार्गस्तुशिखरीह्यधःशल्योमयूरकः।
मर्कटीदुर्ग्रहाचापिकिणिहीखरमंजरी॥२॥
अपामार्गःसरस्तीक्ष्णोदीपनस्तिक्तकःकटुः।
पाचनोरोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः।
निहंतिहृद्रुजाध्माशर्शःकंडुशूलोदरापचीः॥

अर्थ–अपामार्ग, शिखरी, अधःशल्य, मयूरक, मर्कटी, दुर्ग्र [गी] हा, किणिही और खरमंजरी ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** ओंगा, चिरचिरा, लटजीरा, **मा.** सुफेद आंधीझाडो, **रा.** अंधाहोली, **बं.** आपां, **म.** अघाडा, **का.** गुत्तरणि, **गु.** अघेडो, **तै.** दुच्चीणिके, **फा.** खारवासगोता, **इं.** चेलफलावर, **ला.** अचीरांथिस अस्पेरा Achyranthes aspera कहते हैं। **स्वरूप**। यह क्षुपजातिकी वनस्पति है और जंगलमें बहुत होताहै। **पत्ते** चौलाईके शाकके समान होतेहैं। **फूल** और **फल** एक लंबी डंडीमें लगे हुए होतेहैं वह कांटेके समान अनीवाले होतेहैं। यह कपडेमें चिपट जातेहैं। **चित्र** नंबर २६ देखो। **गुण**। दस्तावर, तीक्ष्ण, दीपक, कडवा, चरपरा, पाचक और रोचक। **प्रयोग**। वमन, कफ, मेदका रोग, वायु, हृद्रोग, अफरा, बवासीर, खुजली, शूल, उदररोग और अपची रोग. शांति होय। **प्रयोग** में सर्वांग लेना, **मात्रा** ४ माशेकी है।

लालओंगा.

रक्तोऽन्योवसिरोवृत्तफलोधामार्गवोऽपिच।
प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली॥
अपामार्गोऽरुणोवातविष्टंभीकफहृद्धिमः।
रूक्षःपूर्वगुणैर्न्यूनःकथितोगुणवेदिभिः॥
अपामार्गफलंस्वादुरसेपाकेचदुर्जरम्।
विष्टंभिवातलंरूक्षंरक्तपित्तप्रसादनम्॥

अर्थ–सं. रक्तापामार्ग, वसिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी और कपिपिप्पली, **हिं.** लालओंगा, लाल (रक्त) चिरचिरा, **रा.** आंधीझाडालाल, **बं.** लालआपां, **म..** तांवडा आघाडा, **का.**

कंपिगुत्तरणे, **गु.** रातो अवेडो। **गुण**। लालऔंगा, वातकारी, विष्टंभी, कफवर्द्धक, शीतल और रूक्ष। यह पहिले औंगाकी अपेक्षा गुणोंमें न्यून है। औंगाके **फल** (चांवल) खानेसे यह जीर्ण नहीं होते अर्थात् पचते नहीं हैं। और पाकमें चरपरे तथा ए चावल विष्टंभी, वातकर्त्ता, रूखे और रक्तपित्त दूर करनेवाले हैं। **मात्रा** ४ माशेकी है।

तालमखाने.

कोकिलाक्षस्तुकाकेक्षुरिक्षुरःक्षुरकःक्षुरः।
भिक्षुःकांडेक्षुरप्युक्तइक्षुगंधेक्षुवालिका॥
क्षुरकःशीतलोवृष्यःस्वाद्वम्लःपित्तलस्तथा
तिक्तोवातामशोथाश्मतृष्णादृंष्ट्यनिलास्र-
जित्॥ ८॥

अर्थ–कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर, क्षुरक, क्षुर, भिक्षु, कांडेक्षु, इक्षुगंधा और इक्षुवालिका, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** तालमखाने, **बं.** कुलेखाडा, **म.** विखरा, **कौं.** कोलिस्ता, कोलशी, **का.** कुलुगोलिके, **गु.** एखरो, **ला.** हाइग्रोफी **तै.** गोवी, गोविमिडिचेट्टु **उडि.** कुइलिरखा, **ला.** स्पाइनोभा कहतेहैं। इसका छोटासा क्षुप होताहै। इसकी डालीमें गांठ और उनपर बहुतसे रुआं होते हैं। यह तालाब आदि जलार्द्र पृथ्वीमें होताहै। **गुण**। शीतल, बलकारी, स्वादु, अम्ल-पित्त प्रकटकर्त्ता और कड़वे। **प्रयोग**। बादी, आमशोथ, पथरी, तृषा, अरुचि और वातरक्त रोगको दूर करे। **प्रयोग** में बीज, जड, पत्ता और भस्म लीनी जाती है। **मात्रा** ६ माशेकी है।

हडसंघारि.

ग्रंथिमानस्थिसंहारीवज्रांगीवास्थिशृंखला।
अस्थिसंहारकःप्रोक्तोवातश्लेष्महरोस्थियुक्
उष्णःसरःकृमिघ्नश्चदुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित्॥
रूक्षःस्वादुर्लघुर्वृष्यःपाचनःपित्तलःस्मृतः॥
कांडत्वग्रहितमस्थिशृंखलाया
माषार्द्धद्विदलमकंचुकंतदर्द्धम्।
संपिष्टंतदनुततस्तिलस्यतैले
संपक्वंवटकमतीववातहारि॥ ११॥

अर्थ–ग्रंथिमान्, अस्थिसंहारी, वज्रांगी और अस्थिशृंखला ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** हडसंघारि, हडसंकरी **बं.** हाडभांगा, **म.** हाडसंधी, **दे.** हाडसां-खल, **कौं.** तिधारीकांडवेल, **गु.** हाडसांकल कहतेहैं। **गुण**। वातकफनाशक, टूटीहड्डीका जोडनेवाला, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक, बवासीरनाशक, नेत्रोंको हितकारी, रूखा, स्वादु, हलका, बलकारी, पाचक और पित्तकर्त्ता। इसकी छालको छील उस लकड़ीका चूर्ण १ माशे तथा गीले उड़दोंकी दाल छिलकारहित आध माशे मिलावे, दोनोंको सिलपर बारीक पीस तिलके तेलमें इसकी मगौरी बनावे। यह मगौरी अत्यन्त वात-नाशक है। इस लताका सर्वांश ग्रहण करना। **मात्रा** २ माशेकी है।

घीगुवार (घृतकुमारी.)

कुमारीगृहकन्याचकन्याघृतकुमारिका।
कुमारीभेदनीशीतातिक्तानेत्र्यारसायनी॥
मधुरावृंहणीवल्यावृष्यावातविषप्रणुत्।
गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरीहरेत्॥
ग्रंथ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान्॥

अर्थ–कुमारी, गृहकन्या, कन्या और घृतकुमा-रिका ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** घीगुवार, ग्वारपाठा, **बं.** घृतकुमारी, **म.** कोरकांड, **कौं.** कोरफड, **का.** लोयिसर, **गु.** कुंवार, **तै.** पिन्नगोरिटिकलबंद, **फा.** दरख्तेसिब्र, **अ.** मुसब्बर, **ला.** आलोइ इंडीका Aloe Indica। **स्वरूप**। घीगुवार क्षुपजातिकी वनस्पति है। इसका **क्षुप** मैदान में रेतली जमीनमें तथा जलके किनारे बहुत होताहै। इसके **पत्ते** लंबे और मोटे होते हैं, भीतर इनके घीके समान गूदा निकलता है और पत्तेके दोनों तरफ कांटे होते हैं। और पत्तेके छोर अनीदार होते हैं। इसके बीचमें डंडा निकलता है उसमें लालरंगका **फूल** लगताहै। आजकल इसकी व्योपारियोंमें तीन जाति मिलती हैं। मक्का, जाफराबादी, तथा बार्बे जोड, **चित्र** नंबर २७ का देखो। **गुण**। भेदक, शीतल, कड़वी, नेत्रोंको हितकारी, रसायन, मधुर, पुष्टिकर्त्ता, बलकर्त्ता, शुक्रजनक, विषघ्न और वायुको नाश करे। **प्रयोग**। गुल्म, प्लीहा, यकृत्, अंडवृद्धि, कफज्वर, गांठ, अग्निदग्ध, विस्फोटक, रक्तपित्त

और त्वचाके रोग (कोढआदि) इनको दूर करे। **प्रयोग**में इसका गूदा लेना। **मात्रा** ६ माशेकी है। [इसमें वेधकशक्ति है और घावको तथा नेत्ररोगको दूर करे]

श्वेतपुनर्नवा.

पुनर्नवाश्वेतमूलाशोथघ्नीदीर्घपत्रिका ।
कटुःकषायानुरसापांडुघ्नीदीपनीपरा ॥
शोकानिलगरश्लेष्महरीव्रणयोदरप्रणुत् ॥१४॥

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा, श्वेतमूला, शोथघ्नी और दीर्घपत्रिका, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** विषखपरा, **बं.** श्वेतपुनर्नवा, **म.** पुनर्नवा, पांढरी घेंटुली, **का.** बिलियदुवेल्लडकिलु, **गु.** साटोडी, **ला.** बोरहव्हिआडीफ्युभा Boerhavia diffusa । **स्वरूप** । विसखपरा प्रसर जातिकी वनस्पति है। इसका **क्षुप** पृथ्वीपर फैलाहुआ होताहै । **पत्ते** गोल और किनारे उनके लाल होते हैं। और **फूल** छोटा सफेद रंगका होताहै । **गुण** । कटु, किंचिन्मात्र कषेली, अत्यंत अग्निकारक और वायुनाशक । **प्रयोग** । पांड, शोथ, वायुवृद्धि, कफाधिक्य, व्रणरोग, उदररोग, खांसी, हृदयरोग, बवासीर और शूलरोग इनको नष्ट करे। **प्रयोग**में समस्त अंश ले। **मात्रा** २ माशे है।

रक्तपुष्पापुनर्नवा.

पुनर्नवापरारक्तारक्तपुष्पाशिलाटिका ।
शोथघ्निःक्षुद्रवर्षाभूर्वृषकेतुःकपिल्लकः ॥१५॥
पुनर्नवाऽरुणातिक्ताकटुपाकाहिमालघुः ।
वातलाग्राहिणीश्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥

अर्थ–रक्तपुनर्नवा, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, शोथघ्नि, क्षुद्रवर्षाभू, वृषकेतु और कपिल्लक, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** सांठ, गदहपूर्ना, **बं.** लालपुनर्नवा, **म.** तांबडीघेंटुली, **का.** केंपिनवेलडकिलु, करियगणजिले, **गु.** रातीसाटोडी । **स्वरूप** । इसके **पत्ते** चौलाईके शाकके समान होते हैं। **फूल** लालरंगका होताहै, यह ककरीली जमीनमें बहुत होतीहै। **गुण** । कडवी, **पाक**में चरपरी, शीतल, हलकी, वातकर्त्ती और ग्राही । **प्रयोग** । कफ और रक्तपित्तको दूर करे। **प्रयोग**में समस्त अंश लेवे। **मात्रा** २ माशे है।

नीलीपुनर्नवा.

नीलापुनर्नवानीलाश्यामानीलपुनर्नवा ।
कृष्णाख्यानीलवर्षाभूर्नीलिनीस्वाभिधान्विता ।
नीलापुनर्नवातिक्ताकटूष्णाचरसायनी ।
हृद्रोगपांडुश्वयथुश्वासवातकफापहा ॥

अर्थ–नीलापुनर्नवा, नीला, श्यामा, नीलपुनर्नवा, नीलकृष्णा, वर्षाभू, नीलिनी ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** नीलीसांठ, **म.** कालीघेंटुली, **का.** करियवेल्लडकिलु, होगणगितु। **गुण** । कडवी, चरपरी, गरम रसायनी । **प्रयोग** । हृदयरोग, पांडुरोग, सूजन, श्वास, वादी और कफ इनको नष्ट करे।

वसु.

वसुकोथवसुःशैवोवसोथशिवमल्लिका ।
पाशुपतःशिवमतःसुरेष्टःशिवशेखरः ॥
सितोरक्तोद्विधाप्रोक्तोज्ञेयःसच्चनमाभिधः ।
वसुकौकटुतिक्तोष्णौपाकेशीतौचदीपनौ ॥
अजीर्णवातगुल्मघ्नौश्वेतश्चैवरसायनः ।

अर्थ–वसुक, वसु, शैव, वस, शिवमल्लिका, पाशुपत, शिव, सुरेष्ट, शिवशेखर इस प्रकार **संस्कृत** नाम हैं। **का.** यरडुगणजिले । **वसु** दो प्रकारका है। एक सफेद और दूसरा लाल, **गुण** । दोनों प्रकारके **वसु** चरपरे, कडवे, गरम, **पाक**के समय शीतल, दीपन । **प्रयोग** । अजीर्ण, वादी, गोलेके रोग इनको दूर करे, इन दोनोंमें सफेद वसु रसायन हैं।

सर्पिणी.

सर्पिणीभुजगीभोगीकुंडलीपन्नगीफणी ।
षडाभिधासर्पिणीस्याद्विषघ्नीकुचवर्द्धनी ॥

अर्थ–सर्पिणी, भुजगी, भोगी, कुंडली, पन्नगी और फणी ए छः नाम **सर्पिणी** ओषधी के **संस्कृत** हैं। इसकी वेल सांपके आकारवाली होतीहै। **गुण** । विषनाशक और कुचोंको बढानेवाली है।

वृश्चिका.

वृश्चिकानखपर्णीचपिच्छिलाप्यलिपत्रिका।
वृश्चिकापिच्छिलाम्लास्यादांत्रवृद्ध्यादिदो-पनुत्॥

अर्थ–वृश्चिका, नखपर्णी, पिच्छिला और अलिपत्रिका ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** विछवा, **म.** चिंचुका, **का.** इंगुले, मासमाहोत्र गत्रे। **गुण**। पिच्छिल, खट्टी और आंतोंके बढनेके दोष आदिको दूर करे।

गंधप्रसारणी.

प्रसारणीराजबलाभद्रपर्णीप्रतापनी।
सरणीसारणीभद्राबलाचापिकटंभरा॥१७॥
प्रसारणीगुरुर्वृष्याबलसंधानकृत्सरा।
वीर्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा॥

अर्थ–प्रसारणी, राजबला, भद्रपर्णी, प्रतापनी, सरणी, सारणी, भद्रा, बला और कटंभरा ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** पसरन, प्रसारनी, **बं.** गंधभादुल्या, **म.** चांदवेल, **दे.** राजबला, **का.** हेसरणे, **गु.** नारी, **तै.** गोन्तेमगोरुचेट्टु, **ला.** पिडेरिया फीटीडा। **स्वरूप**। यह प्रसरजातिकी वनस्पति है। **गुण**। भारी, शुक्रकर्त्ता, बलकारी, टूटेको जोड़नेवाली, दस्तावर, उष्णवीर्य, वायुनाशक, कड़वी और कफनाशक। **प्रयोग**। वातरक्तरोगको शमन करे। इसकी लताका समस्त अंग लेना। **मात्रा** २ माशेकी है।

कृष्णसारिवा.

इंद्रजंबूकवत्पत्रासुगंधाकलघंटिका।
कृष्णातुशारिवाश्यामागोपीगोपवधूश्चसा॥
धवलाशारिवागोपीगोपकन्याकृशोदरी।
स्फोटाश्यामागोपवल्लीलतास्फोटाचचंदना॥
सारिवायुगलंस्वादुस्निग्धंशुक्रकरंगुरु।
अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम्॥
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम्॥२१॥

अर्थ–सारिवा दो प्रकारकी है–काली और सफेद-इन दोनों सारिवाओंका साधारण नाम **श्यामा**। इनमें कालीशारिवाके **पत्ते** जामुनके पत्तेके समान और सुगंधयुक्त होतेहैं। **सं.** कलघंटिका, गोपी और गोपवधू, **हिं.** सरिवन, कालीसर, सालसा, करिआसांउ, **बं.** श्यामालता और अनंतमूल, **म.** उपरसाल, उपलसरी, **कों.** उपटमुली, शेंवेल, कावली, काष्टकावली, सुगंधकावली, शेतकावली, **गु.** उपलसरी, खनडी, **तै.** नीलतिग, **उडि.** गुपापान मूल, **इं.** इंडियन सारसापरीला, **ला.** हेमीडेसमथ इंडिकस। यह दो प्रकारका है सफेद और काला. **सफेद शारिवाके** भी **पत्ते** जामुनके समान होतेहैं। इस लताके भीतर दूधके समान वस्तु रहती है। इसको संस्कृतमें धवलाशारिवा, गोपी, गोपकन्या, कृशोदरी, स्फोटा, श्यामा, गोपवल्ली, लतास्फोटा और चंदना कहते हैं। **हिं.** गोरीसर, गोरिआसाऊ। **गुण**। दोनों सारिवा, स्वादु, स्निग्ध, शुक्रकर्त्ता, भारी, विषघ्न, त्रिदोषनाशक [पसीने लावे, मूत्र लानेवाली, बलवर्द्धक, वृष्य और रसायन]। **प्रयोग**। मंदाग्नि, अरुचि, श्वास, खांसी, आमजन्यरोग, विषदोष, रक्तप्रदर, ज्वरातिसार [उपदंशजन्य अनेक प्रकारके रोग, सब प्रकारके चर्मरोग, आमवात, वातरक्त और अविधिसे पारा खानेके रोग] इन सबको दूर करे। *

* **वैद्य**—सारिवाको रुधिर शुद्धकर्त्ता, पाचक और चिकनाहट तथा बदहज्मी, त्वचाके रोग और विस्फोटकके रोगोंमें वर्त्तनेकी प्रशंसा करतेहैं।

डा० ओशिंगनेसी—कहताहै कि इसके देनेसे पेशाब अधिक उतरता है। और पसीने अधिक आते हैं, पाचनशक्ति बढ़े, इससे भूंख इतनी बढ़ती है कि मैं अपने अस्पतालमें अधिक वर्त्तताहूं तथा रोगी जन स्वयं अपने आप इसको मांगते हैं। इस जड़को सालसापरीलाके बदले वर्त्तते हैं तथा इसको सुखाय पीसके शहदके साथ मिलायके देनेसे संधिवातका रोग और फोड़ाफुंसी नष्ट होते हैं।

डा० ऐन्स्ली—यह जड़ थोड़ी चिकनी और कड़वी होती है और **तामिल** वैद्य उसको पथरी तथा

भंगरा (भृंगराज.)

भृंगराजोभृंगरजोमार्कवोभृंगएवच ।
अंगारकः केशराजोभृंगारःकेशरंजनः ॥ २२ ॥
भृंगारःकटुकस्तीक्ष्णोरूक्षोष्णःकफवातनुत् ।
केश्यस्त्वच्यःकृमिश्वासकासशोथामपांडुनुत् ॥
दंत्योरसायनोबल्यःकुष्ठनेत्रशिरोर्त्तिनुत् ।

अर्थ–भृंगराज, भृंगरज, मार्कव, भृंग, अंगारक, केशराज, भृंगार और केशरंजन ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** भंगरा, भांगरा, भगरैया, **बं.** भीमराज, **म.** माका, **का.** गरुगमूरु, **गु.** भांगरो, **तै.** भृंगराज, पुचेट्ट, **उडि.** कलकेशपुरा, **अ.** हजीज, **फा.** जमर्दर, **लां.** इक्लिप्टा प्रोस्ट्रेटा Eclipta Prostrata । **स्वरूप** । भांगरेका क्षुप गीली ज़मीनमें होताहै । **पत्ते** करकेरे और भालेके आकार होते हैं । **गुण** । कटु, तीक्ष्ण, रूक्ष, उष्ण, वातकफनाशक, बाल, त्वचा और दांतोंको हितकारी, रसायन और बलकारी । **प्रयोग** । कृमि, श्वास, खांसी, शोथ, आमका रोग, पांडु, कोढ़, नेत्ररोग और शिरपीड़ा पर देवे । **केशराज** (कुकरभांगरा) अर्थात् जिसको बंगालमें केशुरिया भांगराजका भेद कहते हैं, यह क्षुप जाति है । दोनों प्रकारके भांगरे प्रायः गुणोंमें समान हैं । परन्तु कहीं कहीं भांगरेकी अपेक्षा कुकरभांगरा अधिक गुण करता है। इन दोनोंका सर्वांग लेना । **मात्रा** २ माशेकी है । *

पीलाभांगरा.

पीतोऽन्यःस्वर्णभृंगारोहरिवासोहरिप्रियः ।
देवप्रियोवंदनीयःपवनश्चषडाह्वयः ॥

अर्थ–एक पीले पुष्पका भांगरा होता है उसके स्वर्णभृंगार, हरिवास, हरिप्रिय, देवप्रिय, वंदनीय और पवन यह छः नाम हैं । **गुण** । सब भांगरोंके गुण समान हैं । परंतु सबसे उत्तम काला भांगरा है ।

(शणहुली, शणई, चणशणई.)

शणपुष्पीस्मृताघंटाशणपुष्पसमाकृतिः ।
शणपुष्पाकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित् ॥

अर्थ–शणपुष्पी, घंटा, शणपुष्पसमाकृति, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** शणहुली, शणई, चणई, **बं.** वाण-शणुई, **म.** शणताग, रानताग, **कों.** श्वेतखुलखुला खिलहिला, **का.** गिलुगिच्ची, **द्रा.** जनवकनर, **तै.** गिलुचेट्टु, **ता.** जेनप्पनर, **ब्र.** पन, **फा.** लादना, **इं.** फलाक्स हेंप्, **ला.** क्रेटेलेरिया जुनसिया कहते हैं। यह सनके समान होती है । **गुण** । कटु, तिक्त, वमन-

---

पेशाबके रोगमें **गौके दूधमें** पीसके देते हैं । तथा वह रुधिर सुधारनेको तथा **तेलका** विगाड़ निकाल डालनेको जीरेके साथ देते हैं ।

यूरोपियन डाक्टर—त्वचारोग, तथा जननेन्द्रियके रोगमें इसका क्वाथ करके देनेकी प्रशंसा करतेहैं। और अमेरिकाकी सारसापरेलाकी दवाके वनिस्बत् इसमें अधिक गुण हैं ऐसा कहते हैं ।

इंग्रेजी औषधोंमें—इस जड़ीको पाचक, पेशाब बढ़ानेवाली, पसीने लानेवाली, अशक्तता, विस्फोटक, पुरानी संधिवात और त्वचाके रोगमें फायदा करनेवाली मानते हैं ।

* **मखजन उल्अदवियामें**—भांगरेको कुव्वत देनेवाला, तिल्ली नष्टकर्त्ता, तथा बाल काले करनेवाला कहाहै ।

डाक्टर रोक्सबरा—कहताहै कि पेटके विकार निकालनेको **भांगरेका क्वाथ** आधेप्यालेकी मात्रासे दिनमें दो वक्त दिया जाताहै ।

मिस्टर वुडके—मतसे यह क्षुप कलेजेके रोगमें वर्त्ताव करा जाताहै, तथा **देशी मनुष्य** पेटका विगाड़ काढ़नेको तथा पाचनशक्ति बढ़ानेको भांगरेके रसको अजमायनके समान अन्य सुगंधित पदार्थके साथ मिलायके देते हैं। **पत्तोंको** कूटकर घाव तथा फोड़ेपर लगाया जाता है । **जड़में** जुल्लाव करानेकी शक्ति है, इसी वास्ते उसको कलेजा तथा तिल्लीके रोगमें और जलंधरमें वर्त्तते हैं ।

सुश्रुतसंहितामें—भांगरेको कफशोथनाशक, श्वेतकुष्ठहर और केशरंजनकर्त्ता कहा है ।

कारक और कफपित्तनाशक। इसके फल बीज आदि लेने। **मात्रा** ६ रत्तीकी है।

दूसरी शणपुष्पी.

द्वितीयान्यासूक्ष्मपुष्पास्यात्क्षुद्रशणपुष्पिका
विष्टिकासूक्ष्मपर्णीचबाणाह्वासूक्ष्मघंटिका।
शणपुष्पीक्षुद्रतिक्तावम्यारसनियामिका॥

अर्थ–दूसरी सूक्ष्म पुष्पकी होती है, उसको **क्षुद्रशणपुष्पिका** कहतेहैं। तथा विष्टिका, सूक्ष्मपर्णी बाणाह्वा और सूक्ष्मघंटिका ए पांच नाम। **म.** फुणफुणा। छोटी शणपुष्पी, कड़वी, वमन करानेवाली और पारदको बद्ध करती है।

तीसरीशणपुष्पी.

तृतीयान्यावृत्तपर्णीश्वेतपुष्पामहासिता।
सामहाश्वेतघंटीचसामहाशणपुष्पिका॥
महाश्वेताकषायोष्णाशस्तारसनियामिका।
कुतूहलेषुचप्रोक्तामोहनस्तंभनादिषु॥

अर्थ–तीसरी वृत्तपर्णी, श्वेतपुष्पा, महासिता, महाश्वेतघंटी और महाशणपुष्पिका ए **संस्कृत** नाम। **का.** चिक्कगिलुगुचि, मते काडविट्टि। **गुण**। महाश्वेता शणपुष्पी–कषेली, गरम और पारदको बंधन करे। तथा मोहन, स्तंभन आदि कौतुकोंमें ग्राह्य है।

सण

सणस्तुमाल्यपुष्पस्याद्वमनःकटुतिक्तकः।
निशावनोदीर्घशाखस्त्वक्सारोदीर्घपल्लवः॥
सणस्त्वम्लःकषायश्चमलगर्भास्रपातनः।
वांतिकृद्वातकफनुज्ज्ञेयस्तीव्रांगमर्दजित्॥

अर्थ–सण, माल्यपुष्प, वमन, कटुतिक्तक, निशावन, दीर्घशाख, त्वक्सार और दीर्घपल्लव ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** सन, **म.** ताग, सण। **स्वरूप**। यह क्षुपजाति है, **पत्ते** लंबे, **फूल** पीले रंगके, **फल** लंबा और पोला होताहै। इसके टाट, चरस निकालनेके वरत, सूतली आदि बनते हैं। सन दो प्रकारका है, एक सन दूसरा पटसन इनमें सन उत्तम होताहै। **गुण**। खट्टा, कषेला, मल, गर्भ और रुधिरको गिरानेवाला, वमन लानेवाला, तथा वातकफको दूर करे और तीव्र अंगट्टनेको दूर करे।

त्रायमाण.

बलभद्रात्रायमाणात्रायंतीगिरिसानुजा।
त्रायंतीतुवरातिक्तासरापित्तकफापहा॥
ज्वरहृद्रोगगुल्मार्शोभ्रमशूलविषप्रणुत्।

अर्थ–बलभद्रा, त्रायमाणा, त्रायंती और गिरिसानुजा ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** त्रायमान, **बं.** बलाडुमुर और सब भाषाओंमें त्रायमाण नामसे ही प्रसिद्ध है। यह क्षुपजातिकी वनस्पति सिलहट आदि हिमालय पर्वतमें उत्पन्न होतीहै। हकीम इसको **असफ़ाक** कहते हैं। प्रायः इस वनस्पतिके **फूल** और तुख़्मोंसे रेशमी कपड़े रंग जाते हैं। **गुण**। कषेली, कड़वी, सर, कफपित्तनाशक। **प्रयोग**। ज्वर, हृदयरोग, गोला, बवासीर, भ्रमरोग, शूल और विषजन्य पीडा दूर होय। सर्वांग लेना चाहिये। **मात्रा** ४ माशेकी है।

चुरनहार (मूर्वा.)

मूर्वामधुरसादेवीमोरटातेजनीस्रुवा।
मधूलिकामधुश्रेणीगोकर्णीपीलुपर्ण्यपि॥२६॥
मूर्वासरागुरुःस्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत्।
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकंडुकुष्ठज्वरापहा॥ २७॥

अर्थ–मूर्वा, मधुरसा, देवी, मोरटा, तेजनी, स्रुवा, मधूलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी और पीलुपर्णी ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** चुरनहार, **बं.** मूर्वा, **म.** गोनसपत्रा, मोरवेल, **कों.** लघुमोरवेल, **गु.** भुइंपीलुडी, मोरवेल, **क.** मुहरसि, **तै.** सांगा, **कन्नौजमें** मोरहरी, **ला.** क्लिमेटिस ट्राईलोवा कहतेहैं। **स्वरूप**। यह घीगुवारके समान लंबा और मोटे **पत्तेवाला** क्षुप है। इसका रस मीठा होता है तथा **पत्ते** चिकने होतेहैं। फल छोटा और मीठा होताहै। **गुण**। दस्तावर, भारी, स्वादु, कड़वी। **प्रयोग**। रक्तपित्त, प्रमेह, सन्निपातकी तृषा, हृदयरोग, खुजली, कोढ़ और ज्वररोग को दूर करे। इसकी जड़ और **पत्ते** लेवे। **मात्रा** २ माशेकी है।

कवैया (काकमाची.)

काकमाचीध्वांक्षमाचीकाकाह्वाचैववायसी
काकमाचीत्रिदोषघ्नीस्निग्धोष्णास्वरशुक्रदा॥
तिक्तारसायनीशोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित्।
कटुर्नेत्रहिताहिक्काच्छर्दिहृद्रोगनाशिनी॥

अर्थ-काकमाची, ध्वांक्षमाची, काकाह्वा और वायसी ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** मकोय, कवैया, **रा.** चिरपोटन, मको, **बं.** काकमाची, गुडकामाइ, **म.** लघुकावली, **का.** काके, कामोणी, **गु.** पीलुडी, **अ.** एनबुस्सालव, **फा.** रोवातरीख, **अं.** नाइट्सेड्, **ला.** सोलेनम नाइग्रम् कहते हैं । **स्वरूप** । यह क्षुप-जातिकी रूखड़ी है । **पत्ते** गोल, लंबे और अनीदार, **फूल** सफेद और छोटा तथा पांच पंखडीका होता है । **फल** चनेके समान बड़ा और गोल झुंगेदार होता-है । प्रथम हरा और पकनेपर लाल रंगका हो जाता है । **चित्र** नंबर २८ का देखो । **गुण** । त्रिदोषनाशक, स्निग्धोष्ण, शुक्रजनक, स्वरको सुधारनेवाली, कड़वी, चरपरी, रसायन और नेत्रोंको हितकारी । **प्रयोग** । कोढ़, बवासीर, सूजन, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन और हृदयरोग ए नष्ट होंय । इसकी **जड़** और पत्तोंका स्वरस लेना । **मात्रा** २ माशेकी है ।

कौआठोडी (काकनासा.)

काकनासातुकाकांगीकाकतुण्डफलाचसा।
काकनासाकषायोष्णाकटुकारसपाकयोः॥
कफघ्नीवामनीतिक्ताशोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत्।

अर्थ-काकनासा, काकांगी और काकतुंडफला ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** कौआठोडी-टी, **बं.** काकठू-टी, **म.** थोर श्वेतकावली, **का.** वर्डिल कहुडली । **गुण** । कसैली, गरम, स्वादिष्ट और पाकके समय चरपरी, कफघ्न, वमनकारक और कड़वी । **प्रयोग** । सूजन, बवासीर, श्वित्र कुष्ठरोग नष्ट होंय । इसकी जड़ आदि लेनी । **मात्रा** १ माशेकी है ।

मसी (काकजंघा.)

काकजंघानदीकांताकाकतिक्तासुलोमशा।
पारावतपदीदासीकाकाचापिप्रकीर्तिता॥३१॥
काकजंघाहिमातिक्ताकषायाकफपित्तजित्।
निहंतिस्वरपित्तास्त्रज्वरकण्डुविषकृमीन्॥

अर्थ-काकजंघा, नदीकांता, काकतिक्ता, सुलोमशा, पारावतपदी, दासी और काका ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** मसी, **बं.** काकजंघा, **म.** कांगाचें भाड़, जीरी, **का.** चीलेच । **गुण** । शीतल, कड़वी, कसैली, कफपित्तनाशक । **प्रयोग** । स्वरविगड़ा हुआ, रक्तपित्त, ज्वर, खुजली, विष और कृमि नष्ट होंय । इसकी जड़की **मात्रा** ६ रत्ती है ।

काकादनी.

काकादनीकाकपीलुःकाकशिंबीचरक्तला।
ध्वांक्षादनीवक्रशल्यादुर्मोहावायसादनी॥
काकतुंडीध्वांक्षनखीवायसीकाकदंतिका।
ध्वांक्षदंतीतिविज्ञेयास्तित्रश्चदशधाभिधा॥
काकादनीकटूष्णाचतिक्तादिव्यरसायनी।
वातदोषहरारुच्यापलितस्तंभनीपरा॥

अर्थ-काकादनी, काकपीलु, काकशिंबी, रक्तला, ध्वांक्षादनी, वक्रशल्या, दुर्मोहा, वायसादनी, काकतुंडी, ध्वांक्षनखी, वायसी, काकदंतिका और ध्वांक्षदंती ए १३ नाम हैं । **गुण** । **काकादनी** चरपरी, गरम, कड़वी, दिव्यरसायनी, वातदोषनाशक, रुचिकर्त्ती तथा पलितरोगको स्तंभन करनेवाली है । सर्वांश लेना । **मात्रा** ४ माशे है ।

नागपुष्पी.

नागपुष्पीश्वेतपुष्पानागिनीरामदूतिका।
नागिनीरोचनीतिक्तातीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत्॥
विनिहन्तिविषंशूलंयोनिदोषवमिक्रमीन्।

अर्थ-नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी और रामदूतिका ए **संस्कृत** नाम हैं । अन्य भाषाके नाम नहीं मिले । **गुण** । रुचिकर्त्ती, कड़वी, तीक्ष्णोष्ण, कफपित्त-नाशक । **प्रयोग** । विषके विकार, शूल, योनिके दोष, वमन और कृमिरोग को दूर करे । इस क्षुपका सर्वांश ग्रहण करना । **मात्रा** २ माशे ।

मेंढ़ासिंगी (मेषशृंगी.)

मेषशृंगीविषाणीस्यान्मेषवल्ल्यजशृंगिका।
मेषशृंगीरसेतिक्तावातलाश्वासकासहृत्॥
रूक्षापाकेकटुस्तिक्ताव्रणश्लेष्मादिशूलनुत्।

मेषशृंगीफलंतिक्तंकुष्ठमेहकफप्रणुत् ॥
दीपनंस्रंसनंकासकृमिव्रणविषापहम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-मेषशृंगी, विषाणी, मेषवल्ली और अजशृंगिका ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** मेंढ़ासिंगी, **बं.** मेंढ़सिंगा, **म.** मेंड [ढ] शिंगी, **गु.** मरडासिंगी । **गुण** । **रस** इसका कड़वा, रूखा और पचनेके समय कटु तथा तिक्त और बादी करे है । **प्रयोग** । श्वास, खांसी, व्रण, कफ, नेत्र दूखनेको दूर करे । **मेंढासिंगी का फल**-कड़वा, दीपन और स्रंसन । यह कोढ़, प्रमेह, कफ, खासी, कृमि, व्रण और विषको नष्ट करे । **मात्रा १** माशेकी है ।*

हंसपदी.

हंसपादीहंसपदीकीटमातात्रिपादिका ।
हंसपादीगुरुःशीताहंतिरक्तविषव्रणान् ॥
विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणीः॥३६॥

अर्थ-हंसपादी, हंसपदी, कीटमाता और त्रिपादिका ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** लालरंगका लजालू, **बं.** गोयले लता, **अ.** शारुलर्जान, **फा.** परस्याउशाने, **अं.** मेडनहेर, **का.** नविलडि । **गुण** । भारी और शीतल है । **प्रयोग** । रुधिरके विकार, विषविकार, घाव, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूतबाधा और अग्निरोहिणी, इन रोगोंको दूर करे । इसकी जड़की **मात्रा** ६ रत्तीकी है ।

सोमलता.

सोमवल्लीसोमलतासोमक्षीरीद्विजप्रिया ।
सोमवल्लीत्रिदोषघ्नीकटुस्तिक्तारसायनी ॥

अर्थ-सोमवल्ली, सोमलता, सोमक्षीरी और द्विजप्रिया ए **संस्कृत** नाम हैं । **तै.** पल्लटीजी, **ला.** सारकोष्टिमा ब्रवीस्टिग्मा । यह सोमलता नामसे ही प्रसिद्ध हिमालयमें होतीहै । इसकी अनेक जाति हैं परंतु सब १५ पत्तेवाली बेल होतीहैं । कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष में इसके पत्ते घटते. बढ़ते हैं । सुश्रुतमें इसके गुण बहुत कहे हैं । **गुण** । सोमवल्ली त्रिदोषको दूर करता, चरपरी, कड़वी और रसायनी है ।

अमरवेल.

आकाशवल्लीतुबुधैःकथितामरवल्लरी ।
खवल्लीग्राहिणीतिक्तापिच्छिलाक्ष्यामयापहा
तुवराग्निकरीहृद्यापित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥

अर्थ-आकाशवल्ली, अमरवल्ली और खवल्ली ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** अमरबेल, आकाशवौं, आकाशवरी, **म.** आकाशवेल, **कौं.** अंतर्वेल, **फा.** नेदमुदवल्ली, **तै.** इन्द्रजाल, **अ.** अफ्तीमून । **स्वरूप** । यह लता है वृक्षोंके ऊपर पीले रंगकी सूतसी २ लटकती है इसको ही अमरवेल कहते हैं । यह जिस वृक्षपर होतीहै उसको नष्ट करदेती है । **गुण** । ग्राही, तिक्त, पिच्छिल, कषेली, अग्निकारक और हृद्य । **प्रयोग** । पित्त, कफ, आम और नेत्ररोगको नष्ट करे । इसका सर्वांश लेना । **मात्रा** ४ रत्तीसे १॥ तोले । इसके **दर्पनाशक** सेव, कतीरा, बादामरोगन, **प्रतिनिधि** कालीनिसोथ है अथवा विशफायज है ।

पातालगरुडी.

छिलिहिंटोमहामूलःपातालगरुडाह्वयः ।
छिलिहिंटःपरंवृष्यःकफघ्नःपवनापहः ॥

अर्थ-छिलिहिंट, महामूल,पातालगरुड ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** छिरहिंटा, **बं.** पातालगुरुडी, **म.** तानीच्या वेल, **दे.** वासनवेल, वासनी, वासनसडा, **कौं.** पातालगरुडी, निवळीचावेले, भुइपाडल और सीता, **गु.** पातालतुंबडी । इसकी गिलोयके समान वेल होतीहै । गुजरातमें छोटे २ बालकोंको देते हैं । **गुण** । बलकारक, वातनाशक, और कफघ्न । इसकी लताका समस्त अंश लेना । **मात्रा** २ माशेकी है ।

वंदा.

वंदावृक्षादनीवृक्षभदयावृक्षरुहापिच ।
वंदाकःस्याद्धिमस्तिक्तःकषायोमधुरोरसे ॥
मांगल्यःकफवातास्रक्षोव्रणविषापहः ।

* **आर्यवैद्यक शास्त्रमें**—यह मेंढासिंगी कानकी फुंसी नष्ट करनेको लेते हैं। तथा बच्चेके पेटमें होनेवाली ऐंठन, आंतड़ोंका रोग और पेटके फूलनेमें वर्त्ती जाती है ।

सुश्रुतसंहितामें—इसको वातपित्तनाशक और स्तंभक गिना है ।

अर्थ–वंदा, वृक्षादनी, वृक्षभक्ष्या, वृक्षरुहा और वंदाक ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** वांदा, **बं.** परगाछा वांदरा, **म.** बादांगुल, **कों.** वांदे, **दे.** वधक, वांदगुड, **गु.** गुंदी, **तै.** वनिनिके, **ला.** लारेन्थस लोंगिफोलियम् । **गुण** । शीतल, कड़वा, कषेला और मीठा है । कफनाशक, विषशामक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, श्रमहर, बलकारक, वृष्य और रसायन । **प्रयोग** । वातरक्त और व्रणरोग आदिको दूर करे। इसका सर्वांश ग्रहण करना। **मात्रा** १ माशेकी है ।

वटपत्री.

वटपत्रीतुकथितामोहिनीरेचनीबुधैः ।
वटपत्रीकषायोष्णायोनिमूत्रगदापहा ॥

अर्थ–**हिं.** वटपत्री, **बं.** पातरकुचा, यह पाषाणभेदकी जाति है । **इं.** लेकोपेडियम् कहते हैं । **प्रयोग** । मोहकर्त्ता, रेचक, कषेली, गरम, योनिरोग, मूत्रविकार, इनको दूर करे ।

हिंगुपत्री.

हिंगुपत्रीतुकवरीपृथ्वीकापृथुकापृथुः ।
हिंगुपत्रीभवेद्रुच्यातीक्ष्णोष्णापाचनीकटुः ॥
हृद्वस्तिरुग्विबंधार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ।

अर्थ–हिंगुपत्री, कवरी, पृथ्वीका, पृथुका और पृथु ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** हींगपत्री, **बं.** रांदुनी, **म.** वाफली, बहुफली, फलहिंगु । यह क्षुपजातिकी वनस्पति है । **गुण** । रुच्य, तीक्ष्ण, गरम, पाचक और कटु । **प्रयोग** । हृदयरोग, वस्तिपीड़ा, विबंध, बवासीर, कफ, गोला और वादीको नष्ट करे । सर्वांग लेना । **मात्रा** २ माशेकी है ।

वंशपत्री.

वंशपत्रीवेणुपत्रीपिंडाहिंगुशिवाटिका ।
हिंगुपत्रीगुणाविज्ञैर्वंशपत्रीचकीर्तिता ॥

अर्थ–वंशपत्री, वेणुपत्री, पिंडा और हिंगुशिवाटिका, **हिं.** कीडामारी, वंशपत्री, नामसेही विख्यात है। यह **क्षुप** जातिकी रूखड़ी है । **म.** डीकेमाली, **अ.** कनवाभ, **क.** कलहत्ती, **तै.** चींभहींगवा । इसके और नाम नहीं मिले । **गुण** । वंशपत्री हिंगुपत्रीका भेद है अतएव इसमें हिंगुपत्रीके समान गुण हैं । इसके स्वरसकी **मात्रा** २ माशेकी है । *

मछेछी (मत्स्याची.)

मत्स्याक्षीवाह्लिकामत्स्यगंधामत्स्यादनीतिच । मत्स्याक्षीग्राहिणीशीताकुष्ठपित्तकफास्रजित् । लघुस्तिक्ताकषायाचस्वाद्वीकटुविपाकिनी ।

अर्थ–मत्स्याची, वाह्लिका, मत्स्यगंधा और मत्स्यादनी ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** मछेछी और अन्य सब हिंदुस्थानकी भाषाओंमें मत्स्याची नामसे प्रसिद्ध है । **गुण** । ग्राही, शीतल, हलकी, कड़वी, कषेली, स्वादु और पाकमें कटु । **प्रयोग** । कुष्ठ, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको निवारण करे । इसका पंचांग लेना। **मात्रा** २ माशेकी है ।

सरहटी गंडनी (सर्पाची.)

सर्पाक्षीस्यात्तुगंडालीतथानाडीकपालकः ।
सर्पाक्षीकटुकातिक्तासोष्णाकृमिनिकृंतनी ॥
वृश्चिकोंदुरसर्पाणांविषघ्नीव्रणरोपिणी॥ ४५॥

* **मुसलमान ग्रंथकर्त्ता**—कीडामारीको वायुगोला, तथा बदहजमी नष्टकर्त्ता मानते हैं । तथा जानवरोंकी दवाई में तथा ढोरोंपर मांखी बैठना दूर करनेको वर्त्तना लिखते हैं ।

डा० रोकसवरा—पेटमें ऐंठन होती होय तो अथवा उलटी बंद करनेको **कीडामारी** वर्त्तनेकी प्रशंसा करते हैं ।

तामिल वैद्य—इस वृक्षका **फल** उलटी लानेवाला, शरीरको उत्तेजन देनेवाला, मूत्र अधिक लानेवाला और जठराग्निकी मंदता होनेपर उपयोगी गिनते हैं ।

डा० पांडुरंग गोपाल—कहताहै कि छःसे दशवर्षकी अवस्थावाले लड़केको, पेटके कीड़े निकालनेको ३ रत्तीके बराबर कीड़ामारीकी मात्रा देनेसे बिना किसी प्रकार नुकसानके कीड़े निकल जाते हैं ।

अर्थ—सर्पाक्षी, गंडाली और नाडीकपालक ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** सरफोंका, सरहटी और गंडनी । **गुण** । कटु, तिक्त और उष्ण । **प्रयोग** । कृमिरोग, विच्छू, मूसा और सांप, इनके विषको नष्ट करे और व्रणको रोपण करे ।

शंखपुष्पी.

शंखपुष्पीतुशंखाह्वामांगल्यकुसुमापिच ।
शंखपुष्पीसरामेध्यावृष्यामानसरोगहृत् ॥
रसायनीकषायोष्णास्मृतिकांतिबलाग्निदा ।
दोषापस्मारभूताश्रीकुष्ठकृमिविषप्रणुत् ॥

अर्थ—शंखपुष्पी, मांगल्यकुसुमा और शंखवाचक समस्त शब्द शंखपुष्पीके नाम हैं । **हिं.** शंखाहूली, **बं.** चोरकांचकी, **म.** शंखाहुली, शंखली, **गु.** शंखावली, इसी नाम से कहते हैं । **गुण** । दस्तावर, स्मरणशक्तिवर्द्धक, बलकारक, मानसिकरोगनाशक, रसायन, कषाय, गरम, कान्तिकारी, अग्निकारक और वीर्य प्रकटकर्त्ता । **प्रयोग** । त्रिदोष, मृगी, भूतादिदोष, अशोभा, कोढ, कृमि और विष इनको नष्ट करे । इसके सर्वांगका स्वरस ग्रहण करे । **मात्रा** ३ माशेकी है ।

अर्कपुष्पी.

अर्कपुष्पीक्रूरकर्मापयस्याजलकामुका ।
अर्कपुष्पीकृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजित् ॥

अर्थ—अर्कपुष्पी, क्रूरकर्मा, पयस्या और जलकामुका । **हिं.** अर्कपुष्पी, **बं.** बडक्षीरुइ, **म.** सूर्यफूलवल्ली, **गु.** सूरजमुखी । **गुण** । कृमि, कफ, प्रमेह और पित्तरोगको नष्ट करे । इसका सर्वांग लेवे । **मात्रा** २ माशेकी है ।

लज्जालू.

लज्जालुःस्यात्शमीपत्रासमंगाजलकारिका ।
रक्तपादीनमस्कारीनाम्नाखदिरिकेत्यपि ॥४६॥
लज्जालुःशीतलातिक्ताकषायाकफपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारंयोनिरोगान्विनाशयेत् ॥

अर्थ—लज्जालु, शमीपत्रा, समंगा, जलकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी और खदिरिका । **हिं.** लजालू, लज्जावन्ती, छुइमुइ, **बं.** लज्जाबती, **म.** लाजरी, **का.** हिंदके मुट्टिदरे मुदुडयदु, **गु.** रीसामणी, लजामणी कहते हैं । यह **क्षुप** जातिकी वनस्पती है । इसके छोंकरकेसे **पत्ते** होते हैं, इसको उंगली लगातेही पत्ते सिमिटकर डाली गिरजाती है । **गुण** । शीतल, कड़वी, कषैली और कफपित्तनाशक । **प्रयोग** । रक्तपित्त, अतिसार और योनिरोग को नष्ट करे । सर्वांग लेना । **मात्रा** ३ माशे ।

दूसरा लजालु.

लज्जालुर्वैपरीत्यन्याअल्पक्षुपबृहद्दला ।
वैपरीत्यातुलज्जालुह्यभिधानेप्रयोजयेत् ॥
लज्जालुर्वैपरीत्याह्वःकटुरुष्णःकफामनुत् ।
रसेनियामकोत्यंतनानाविज्ञानकारकः ॥

अर्थ—दूसरा, विपरीत लजालु है इसको अल्पक्षुप, बृहद्दल, कहतेहैं । **गुण** । विपरीत लजालु चरपरा, गरम, कफ और आमको नष्ट करे । अत्यन्त पारेका बद्धक और अनेक चमत्कार दिखानेवाला है ।

लजालुका भेद (अलम्बुषा.)

अलम्बुषाखरत्वक्चतथामेदोगलास्मृता ।
अलम्बुषालघुःस्वादुःकृमिपित्तकफापहा॥५१॥

अर्थ—अलम्बुषा, खरत्वक् और मेदोगला, यहभी लजालुका भेद है । **गुण** । लघु, स्वादु, कृमिघ्न और कफपित्त नाशक । इसकाभी सर्वांग लेना । **मात्रा** २ माशेकी है ।

दुद्धी.

दुग्धिकास्वादुपर्णीस्यात्क्षीराविक्षीरिणीतथा ।
दुग्धिकोष्णागुरूरूक्षवातलागर्भकारिणी॥५२॥
स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तासृष्टमूत्रमलापहा ।
स्वादुर्विष्टंभिनीवृष्याकफकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ—दुग्धिका, स्वादुपर्णी, क्षीरा और आविक्षीरिणी, **हिं.** दुद्धी, दूधी, दुधिया, **बं.** क्षीरुइ, **म.** दुधी, खिल कुला, **कों** दुधनी, दूधुली, दार्दुडी, **गु.** दुधेली, नागार्जुनी । **गुण** । गरम, भारी, रुक्ष, वातकर्त्ता, गर्भसंस्थापक, स्वादु, दुग्धयुक्त, कड़वी, चरपरी, मृदु, नमकीन रसवाली, विष्टंभ और बलकारक । **प्रयोग** । मलमूत्रादिको निकाले, कफ, कुष्ठ और कृमिरोग नष्ट होंय । इसका सर्वांग लेना । **मात्रा** २ माशे की है ।

भूंइ आंवला (भद्रआंवला.)

भूम्यामलकिकाप्रोक्ताशिवातामलकीतिच । बहुपुत्राबहुफलाबहुवीर्याजटापिच ॥ ५४ ॥ भूधात्रीवातकृत्तिक्ताकषायामधुराहिमा । पिपासाकासपित्तास्त्रकफकंडुत्ततापहा ॥५५॥

अर्थ–भूम्यामलकिका, शिवा, तामलकी, बहुपुत्रा, बहुफला और बहुवीर्या ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** भूयआंवला, जरआंवला, **बं.** भूईआंमला, **म.** भूंयआंवली, **गु.** भोंआंमली, **का.** आरुनेल्ली, **तै.** नेलाउसीरके कहते हैं । **गुण** । वातकर्ता, कड़वा, कषेला, मधुर और शीतल । **प्रयोग** । प्यास, खांसी, रक्तपित्त, कफ, खुजली और घाव इनको दूर करे । इसके फल लेने । **मात्रा** २ माशे की है ।

ब्राह्मी–ब्रह्ममंडूकी.

ब्राह्मीकपोतवंकाचसोमवल्लीसरस्वती । मंडूकपर्णीमांडूकीत्वाष्ट्रीदिव्यामहौषधी ॥ ब्राह्मीहिमासरातिक्तालघुर्मेध्याचशीतला । कषायामधुरास्वादुपाकायुष्यारसायनी ॥५७॥ स्वर्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपांडुमेहास्त्रकासजित् । विषशोथज्वरहरीतद्वन्मंडूकपर्णिनी ॥ ५८ ॥

अर्थ–ब्राह्मी, कपोतवंका, सोमवल्ली और सरस्वती ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** ब्रह्मी, वरंभी, **बं.** ब्राह्मीशांक, **म.** ब्राह्मी, **अ.** ओंदिलग, **फा.** जरनब, **ला.** हाद्रोकोटाइल एसिआटिका Hydrocotyle Asiatica कहते हैं । ब्रह्मीका भेद **मंडूकपर्णी** है । उसके नाम, मंडूकपर्णी, मांडुकी, त्वाष्ट्री, दिव्या और महौषधी; **हिं.** मंडकपानी, ब्रह्ममांडूकी, **बं.** थुलकुडी । ब्राह्मी और मंडूकपर्णी ए दोनों प्रसर जातिकी औषधी हैं । **गुण** । ब्राह्मी और मंडूकपर्णी दोनों शीतल, सर, कड़वी, हलकी, स्मरणशक्तिवर्धक, कषाय, मधुर, पाकके समय स्वादिष्ट, आयुकर्त्ती, रसायन, स्वरशोधक । **प्रयोग** । कोढ, पांडु, प्रमेह, रक्तदोष, खांसी, विषदोष, सूजन और ज्वर ए दूर हों । इसके स्वरसकी **मात्रा** २ माशेकी है । ब्रह्मीका **दर्पनाशक** सफेद चन्दन और गुलाबजल है । तथा **प्रतिनिधि** दालचीनी है । **मात्रा** २ माशेकी है ।

गोमा.

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्तिता । द्रोणपुष्पीगुरुःस्वादूरूक्षोष्णावातपित्तकृत् ॥ सतीक्ष्णलवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी । कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् ॥

अर्थ–द्रोणा, द्रोणपुष्पी और फलेपुष्पी ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** गोमा, **बं.** गलघसिया, **म.** तुंबा, कुम्भा, देवकुंभा शेतघड, **तै.** गयस चेट्ट, **गु.** कुबा । **गुण** । गुरु, स्वादु, रूक्ष, गरम, वातपित्तकर्त्ता, तीक्ष्ण-लवण रसयुक्त, **पाक**के समय स्वादिष्ट, कटु, दस्तावर । **प्रयोग** । कफ, आम, कामला, सूजन, तमक-श्वास और कीटादि दूर हों । सर्वाङ्ग लेना । इसके रसकी **मात्रा** २ माशे की है ।

हुरहुर–ब्रह्मसोचली.

सुवर्चलासूर्यभक्तावरदाबदरापिच । सूर्यावर्त्तारविप्रीताऽपराब्रह्मसुदुर्लभा ॥६१॥ सुवर्चलाहिमारूक्षास्वादुपाकासरागुरुः । अपित्तलाकटुःक्षाराविष्टंभकफवातजित् ॥ अन्यातिक्ताकषायोष्णासरारूक्षालघुःकटुः । निहंतिकफपित्तास्त्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥ विस्फोटकुष्ठमेहास्त्रयोनिरुक्कृमिपांडुताः ।

अर्थ–सुवर्चला, सूर्यभक्ता, वरदा, बदरा, सूर्यावर्त्ता और रविप्रीता ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** हुरहुर, हुलहुल, सोचली ब्रह्मसोचली, **बं.** हुरहुरे, **म.** सूर्यफूलवल्ली, **गु.** तलवणी कहते हैं । इसका दूसरा भेद है उसको **ब्रह्मसुवर्चला** कहते हैं । **हिं.** ब्रह्मसोचली । **गुण** । शीतल, रूक्ष, स्वादुपाकी, दस्तावर, भारी, चरपरी, क्षारगुणयुक्त, पित्तकर्त्ता नहीं है । यह विष्टम्भ, कफ और वादीको दूर करे । दूसरी जो **ब्रह्मसुवर्चला** या ब्रह्मसुदुर्लभा है वह कड़वी, कषेली, गरम, दस्तावर, रूक्ष, हलकी और कटु । **प्रयोग** । कफजन्य रक्तपित्त, श्वास, खांसी, अरुचि, ज्वर, विस्फोट, कुष्ठ, प्रमेह, रक्तदोष, योनिरोग, कृमि और पांडुरोग इनको दूर करे । इसके पत्र आदि लेने । **मात्रा** २ माशेकी है ।

वांझखखसा.

वंध्याकर्कोटकीदेवीकन्यायोगीश्वरीतिच ।
नागारिर्नक्रदमनीविषकण्टकिनीतथा ॥ ६४ ॥
वंध्याकर्कोटकीलघ्वीकफनुद्व्रणशोधिनी ॥
सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी ॥ ६५ ॥

अर्थ–वंध्या, कर्कोटकी, देवी, कन्या, योगीश्वरी, नागारि, नक्रदमनी, और विषकंटकिनी, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** वांझखखसा, वामूखखसा, वनककोडा, **म.** वांझकर्टोली, **का.** वंजेमडवागलु, **गु.** फलवगरना कंटोला । **गुण** । हलकी, कफनाशक, व्रणशोधक, तीक्ष्ण और सांपकी तेजीको नष्टकरे । **प्रयोग** । विसर्प, रोग और विष नष्ट होय । इसका समस्त अंश लेना। **मात्रा** ३ मासेकी है ।

भूंइखखसा.

मार्कंडिकाभूमिवल्लीमार्कंडीमृदुरेचनी ।
मार्कंडिकाकुष्ठहरीऊर्ध्वाधःकायशोधिनी ॥
विषदुर्गंधिकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥

अर्थ–मार्कंडिका, भूमिवल्ली, मार्कंडी, और मृदुरेचनी ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** भूंइखखसा, **म.** भूंइतरवड, **कौं.** सोनामुखी, **दे.** आहुली, तगडवल्ली, **गु.** धोली मींढीआवर कहते हैं। **गुण** । विरेचक, वमनकारक, विषघ्न, और दुर्गंधनाशक । **प्रयोग** । कोढ, खांसी, गोला और उदर रोग इनको शमन करे । इसकी **मात्रा** ६ माशेकी है। *

देवदाली.

देवदालीतुवेणीस्यात्कर्कटीचगरागरी।
देवतांडीवृत्तकोशस्तथाजीमूतइत्यपि ॥
पीतापराखरस्पर्शाविषघ्नीगरनाशिनी ॥ ६७ ॥
देवदालीरसेतिक्ताकफार्शःशोफपांडुताः ।
नाशयेत्वामनीतिक्ताक्षयहिक्काकृमिज्वरान् ॥
देवदालीफलंतिक्तंकृमिश्लेष्मविनाशनम् ।
स्रंसनंगुल्मशूलघ्नमर्शोघ्नंवातजित्परम् ॥

अर्थ–देवदाली, वेणी, कर्कटी, गरागरी, देवतांडी, वृत्तकोश, और जीमूत ए **संस्कृत** नाम हैं। इसीका दूसरा भेद और है कि जिसको खरस्पर्शा, विषघ्नी और गरनाशिनी कहते हैं इसका रंग पीला होता है। **हिं.** सोनैया, बंदाल, घंवरबेल, देवदाली, **म.** देवडंगरी, **कौं.** डंगरी, **दे.** विदाली, **गु.** कुकडवेल। **स्वरूप** । इसकी बेल होती है। फल गोल २ लगते हैं। **गुण** । कडवी और वमनकारक । **प्रयोग** । कफकी बवासीर, सूजन, पांडुरोग, क्षयरोग, कृमि और ज्वर इनको दूर करे । इसका **फल** कड़वा, कृमिनाशक, कफघ्न, स्रंसन और अत्यंत वातनाशक, यह गोला, शूल और बवासीर इनको शांति करे।$

पनिसगा.

जलपिप्पल्यभिहिताशारदीशकुलादनी।
मत्स्यादनीमत्स्यगंधालांगलीत्यपिकीर्त्तिता ॥
जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुक्रलालघुः ।
संग्राहिणीहिमारूक्षारक्तदाहव्रणापहा ॥
कटुपाकरसारुच्याकषायावह्निवर्द्धिनी ।

अर्थ–जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यादनी, मत्स्यगंधा और लांगली । **हिं.** पनिसगा, जलपीपर, गंगतिरिया, **बं.** श्वेतकांचडा, **म.** जलपिंपल, **का.** होमुगुलु, **गु.** रतवेलीया । **गुण** । हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हित, शुक्र प्रकटकर्त्ता, हलकी, संग्राही, शीतल, रूक्ष, **पाकके** समय कटु, रोचक, कषेली, अग्निवर्धक, तथा रक्तदाह और व्रणनाशक है । इसका सर्वांश लेना। **मात्रा** २ माशेकी है।

गोभी.

गोजिह्वागोजिकागोभीदार्विकाखरपर्णिनी ।
गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीकफपित्तनुत् ॥

* **संस्कृतके वैद्यकग्रंथोंमें**—भुंइखखसेको कफ और रुकेहुए पित्तको निकालनेवाला, मस्तक शुद्धि करता, तथा साधारण रीतिसे शरीर स्वच्छ करनेको देतेहैं। संधिवातपर इसको अत्यंत उपयोगी गिनते हैं। इससे मुहांसे और फोड़ा नष्ट होजाते हैं, पेटकी कृमि निकल जातेहैं, तथा बवासीर होनेका भ्रम दूर होजाता है।

$ **हिन्दुस्थानी वैद्य**—इस फलको अत्यंत कड़वा होनेके कारण उसे कितनेक औषधोंके काथमें डालतेहैं। घोड़ेके पेटमें यदि कीड़े पड़गए होंय तो इस फलको अन्य मसालोंके साथ खिलाते हैं।

हृद्याप्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरीलघुः ।
कोमलातुवरातिक्तास्वादुपाकरसास्मृता ॥

अर्थ–गोजिह्वा, गोजिका, गोभी, दार्विका और खरपर्णिनी ए **सं.** नाम । **हिं.** गोभी, **बं.** गोजिया, **म.** पाथरी, **कों.** घाउना, **का.** यतुनालगे, **गु.** गलजिभी, भोंपाथरी कहते हैं । **चित्र** नंबर ३५ का देखो । **गुण** । वातल, शीतल, ग्राहिणी, कफपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, हलकी, कोमल, कषेली, कड़वी और पकनेमें स्वादिष्ट है । **प्रयोग** । प्रमेह, खांसी, रुधिरविकार, व्रण और ज्वरको दूर करे । यह खानेकी गोभी नहीं है कि जिसका साग करा जाता है । यह छोटे २ लंबे पत्तोंकी प्रसरजातिकी वनस्पति है । और ककरीली जमीनमें ऊगती है । इसका सर्वांश लेना । **मात्रा** २ माशेकी है ।

नागदमनी.

विज्ञेयानागदमनीबलामोटाविषापहा ।
नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेश्वरीतिच ॥ ७४ ॥
बलामोटाकटुस्तिक्तालघुःपित्तकफापहा ।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान्रक्षोनाशयेज्जालगर्दभम् ॥
सर्वग्रहप्रशमनीनिःशेषविषनाशिनी ।
जयंसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा ॥ ७६ ॥

अर्थ–नागदमनी, बलामोटा, विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा और महायोगेश्वरी ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** नागदौन, **बं.** नागदना, **म.** नागदवणी, **गु.** भीपटा कहते हैं । **गुण** । कटु, तिक्त, लघु, कफपित्तनाशक [क्षारगुणविशिष्ट कफवातनाशक] पेटके अफरे को दूर करता, कोष्ठविशोधक, ग्रहशांतिकर्त्ता, अशेष विषनाशक, सर्वत्र जयकारक, धनदायक और सुमतिप्रदायक है । **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्र, व्रणरोग, जालगर्दभ और राक्षसभय इनको दूर करे । इसके पत्ते लेने । **मात्रा** ८ रत्तीकी है ।

वरवेल (वेल्लंतर.)

वेल्लंतरोजगतिवीरतरुःप्रसिद्धः ।
श्वेतासितारुणविलोहितनीलपुष्पः ॥
स्याज्जातितुल्यकुसुमःशमिसूक्ष्मपत्रः ।
स्यात्कंटकीविजलदेशजपपवृक्षः ॥ ७७ ॥
वेल्लंतरोरसेपाकेतिक्तस्तृष्णाकफापहः ।
मूत्राघाताश्मजिद्ग्राहीयोनिमूत्रानिलार्त्तिजित् ॥

अर्थ–वीरतरुका दूसरा नाम **वेल्लंतर** है । यह वृक्ष चार प्रकारका होता है:–एक **सफेद** फूलका, एक **काले** फूलका, एक **लाल** फूलका और एक **लोहित** (घोर लाल) रंगका । इन सब वृक्षोंमें कांटे होते हैं और **पत्ते** शमी (छोंकरा) केसे छोटे २ होते हैं । यह वृक्ष उजाड़में होताहै । **म.** वेलत्तर **गु.** गलतोरा कहतेहैं । **गुण** । खानेमें तथा पाकमें कड़वा, तृषानाशक, कफघ्न और ग्राही । **प्रयोग** । मूत्राघात, पथरी, योनिरोग, मूत्रपीड़ा और बादीके रोग इनको दूर करे । इसकी छाल लेनी । **मात्रा** २ माशेकी है ।

नकछिकनी (छिकनी.)

छिक्कनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिक्किकाघ्राणदुःखदा
छिक्कनीकटुकारुच्यातीक्ष्णोष्णावह्निपित्तकृत्
वातरक्तहरीकुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ ७९ ॥

अर्थ–छिकनी, क्षवकृत्, तीक्ष्णा, छिक्किका, और घ्राणदुःखदा ए **सं.**, **हिं.** नकछिकनी, **बं.** हेचुटी, **म.** नाकशिंकणी, **फा.** वेख गाउजवी, **अ.** उफरकुदुश कहते हैं । **गुण** । कटु, रुचिदाता, तीक्ष्ण, गरम, अग्निकारी, पित्त प्रकटकर्त्ता, वातकफनाशक, मस्तकविरेचक । **प्रयोग** । वातरक्त, कोढ़, कृमिरोग और हंसलोके ऊपरके रोगोंको दूर करे ।

कुकुंदर.

कुकुंदरस्ताम्रचूडःसूक्ष्मपत्रोमृदुच्छदः ।
कुकुंदरःकटुस्तिक्तोज्वररक्तकफापहः ॥
तन्मूलमार्द्रंनिःक्षिप्तंवदनेमुखशोषहृत् ।

अर्थ–कुकुंदर, ताम्रचूड [पीतपुष्प], सूक्ष्मपत्र [कुकुरुद्रु] और मृदुच्छद । **हिं.** कुकुरबंदा, **बं.** कुकुसिमा, कुकुरसोंका, **म.** कुकुरबंदा । **गुण** । कटु, तिक्त, ज्वर, रुधिरविकार और कफनाशक । इसके सेवन करनेसे रक्तपित्त, अतिसार और दाह शांति हो । इसका सर्व अंग लेना । **मात्रा** २ माशेकी है ।

सुदर्शन.

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राह्वामधुपर्णिका ।
सुदर्शनास्वादुरुष्णाकफशोफास्त्रवातजित् ॥

अर्थ-सं. सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्राह्वा [अर्थात् जितने संस्कृतमें चक्रके नाम हैं सब सुदर्शनके हैं], और मधुपर्णिका, **हिं.** सुदर्शन और सब हिंदुस्थानकी भाषाओंमें इसी नामसे प्रसिद्ध है । **गुण** । स्वादिष्ट, गरम, कफ, शोथ और वातरक्तको दूर करे ।

मूसाकर्णी.

आखुकर्णीत्वाखुकर्णपर्णिकाभूदरीभवा ।
आखुकर्णीकटुस्तिक्ताकषायाशीतलालघुः ॥
विपाकेकटुकामूत्रकफामयक्रमिप्रणुत् ॥

अर्थ-आखुकर्णी, आखुकर्ण, पर्णिका और भूदरीभवा । **हिं.** मूसाकर्णी, **बं.** इन्दूरकाणिपाना, **म.** लघु उंदिरकानी, **दे.** भोपनी, **का.** वल्लिहरुहे, **गु.** उंदरकनी कहतेहैं । **गुण** । कटु, तिक्त, कषाय, शीतल हलकी और **पाकमें** चरपरी है । **प्रयोग** । मूत्रके रोग, कफरोग तथा क्रमिरोगको दूर करे । इसका सर्वांश ग्रहण करना । **मात्रा** १ माशेकी ।

मोरसिखा (मयूरशिखा.)

मयूराह्वशिखाप्रोक्तासहस्राहिर्मधुच्छदा ।
नीलकंठशिखालघ्वीपित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥

अर्थ-सहस्राहि, मधुच्छदा, मयूरशिखा और जितने मोरके नाम हैं, जैसे-नीलकंठशिखा, बर्हिशिखा इत्यादि, **हिं.** मोरशिखा, **फा.** असनानि, असलान् । **गुण** । हलकी और पित्त, कफ, तथा अतिसारको नष्ट करे । इसका सर्व अंश ग्रहण करना चाहिये ।

इति श्री अभिनवनिघंटौ माथुरीभाषाटीकायां गुडूच्यादिवर्गः ॥

पुष्पवर्गः

कमल.

वापुंसिपद्मंनलिनमरविंदंमहोत्पलम् ॥
सहस्रपत्रंकमलंशतपत्रंकुशेशयम् ॥ १ ॥
पंकेरुहंतामरसंसारसंसरसीरुहम् ।
बिसप्रसूनराजीवपुष्करांभोरुहाणिच ॥ २ ॥
कमलंशीतलंवर्ण्यंमधुरंकफपित्तजित् ।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥
विशेषतःसितंपद्मंपुण्डरीकमितिस्मृतम् ।
रक्तंकोकनदंज्ञेयंनीलमिंदीवरंस्मृतम् ॥ ४ ॥
धवलंकमलंशीतंमधुरंकफपित्तजित् ।
तस्मादल्पगुणंकिंचिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥

अर्थ-पद्म, नलिन, अरविंद, महोत्पल, सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय, पंकेरुह, तामरस, सारस, सरसरिह, बिसप्रसून, राजीव, पुष्कर और अंभोरुह, ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** कमल, **बं.** पद्म, **का.** विलियतामरे, **तै.** कालावा, **इं.** लोटस् । **गुण** । शीतल, वर्णकर्त्ता, मधुर, कफपित्तनाशक और विषनाशक है । **प्रयोग** । प्यास, दाह, रुधिरविकार, विस्फोट और विसर्परोगको नष्ट करे । **सफेदरंगके** कमलको पुंडरीक और **लालरंगके** कमलको कोकनद और **नीलेकमलको** इन्दीवर कहते हैं । **सफेदकमल** शीतल, मधुर, कफशांतिकर और पित्तनाशक है । और **लालकमल** आदि गुणोंमें इससे न्यून हैं ।

लालकमल.

कोकनदमरुणकमलंरक्तांभोजंचशोणपद्मंच ।
रक्तोत्पलमरविंदंरविप्रियंरक्तवारिजंवसवः ॥
कोकनदंकटुतिक्तंमधुरंशिशिरंचरक्तदोषहरम् ।
पित्तकफवातशमनंसंतर्पणकारकंवृष्यम् ॥

अर्थ-कोकनद, अरुणकमल, रक्तांभोज, शोणपद्म, रक्तोत्पल, अरविंद, रविप्रिय और वारिज ए आठ **सं.** नाम हैं । **क.** केदावेर । **गुण** । लालकमल-कटु, तिक्त, मीठा, शीतल, रक्तदोषहरता, कफवात शमनकर्त्ता, इन्द्रियोंको तृप्तकारी और बलकारक है ।

नीलकमल.

उत्पलंनीलकमलंनीलाब्जंनीलपंकजम् ।
नीलपद्मंचबाणाह्वंनीलादिकमलाभिधम् ॥

नीलाब्जंशीतलंस्वादुसुगंधिःपित्तनाशकृत् ।
रुच्यंरसायनेश्रेष्ठंदेहदार्ढ्यंचकेश्यदम् ॥

अर्थ–उत्पल, नीलकमल, नीलाब्ज, नीलपंकज और नीलपद्म ए पांच नीले कमलके नाम हैं । क. करियतांवरे । **गुण** । नीलकमल-शीतल, स्वादु, सुगंधित, पित्तनाशकर्त्ता, रुचिकारी, रसायन, प्रयोगमें उत्तम, देहको दृढ़कर्त्ता और बालोंको बढ़ानेवाला है ।

पद्मिनी.

मूलनालदलोत्फुल्लफलैःसमुदितापुनः ।
पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्बिसिन्यादिचसास्मृता ॥
पद्मिनीशीतलागुर्वीमधुरालवणाचसा ।
पित्तासृक्कफनुद्रूक्षावातविष्टंभकारिणी ॥

अर्थ–मूल, नाल और पत्र आदि समुदायको पद्मिनी, बिसिनी, नलिनी, कमलिनी इत्यादि कहते हैं । **गुण** । पद्मिनी–शीतल, भारी, मधुर, लवणरसयुक्त, रूक्ष और वातविष्टंभकर्त्ता है । **प्रयोग** । यह रक्तपित्त और कफको शांति करे ।

पद्मके नवपत्रादि.

संवर्त्तिकानवदलंबीजकोशस्तुकर्णिका ।
किंजल्कःकेसरःप्रोक्तोमकरंदोरसःस्मृतः ॥
पद्मनालंमृणालंस्यात्तथाबिसमितिस्मृतम् ।
संवर्त्तिकाहिमातिक्ताकषायादाहतृट्प्रणुत् ॥
मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशनी ।
पद्मस्यकर्णिकातिक्ताकषायामधुराहिमा ॥
मुखवैशद्यकृल्लघ्वीतृष्णास्रकफपित्तनुत् ।
किंजल्कःशीतलोवृष्यःकषायोग्राहकोऽपिसः ॥
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित् ।
मृणालंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रजिद्गुरु ॥
दुर्जरंस्वादुपाकंचस्तन्यानिलकफप्रदम् ।
संग्राहिमधुरंरूक्षंशालूकमपितद्गुणम् ॥ १३ ॥

अर्थ–कमलके **नवीनपत्तोंको** संवर्तिका, **बीजकोषको** कर्णिका, **केशरको** किंजल्क, **रसको** (मधुक) मकरंद और **नालको** मृणाल, बिस (भसींडा) कहते हैं । **संवर्त्तिका** (नवीनपत्र)–शीतल, तिक्त और कषाय । **प्रयोग** । दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, गुदाकी पीड़ा और रक्तपित्तको शांति करे । **कर्णिका** (बीजकोष)–तिक्त, कषेला, मधुर, शीतल, और हलका । **प्रयोग** । सेवन करनेसे मुखको शुद्धकर्ता तथा तृषा, रक्तदोष और कफ नष्ट हो । **कमलकी केशर**–शीतल, वृष्य, कषेली, संग्राही, कफपित्त और विषको नाश करे । **प्रयोग** । सेवन करनेसे तृषा, दाह, खूनीबवासीर और सूजन शांति होय । **कमलकी डंडी** शीलत, वृष्य, भारी, जल्दी नहीं पचे, जीर्ण होनेपर स्वादु हो । **प्रयोग** । स्त्रीके स्तनोंमें दूध प्रकट करे, वायुवर्द्धक, कफकर्त्ता, संग्राही, मधुर, रूक्ष, पित्तजन्य–दाह और रक्तदोष नष्ट करे । तथा शालूक (कंद–भसींड़ा) डंडीके समान जानना ।

स्थलकमल.

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथापद्माचशारदा ।
पद्मानुष्णाकटुस्तिक्ताकषायाकफवातजित् ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मशूलघ्नीश्वासकासविषापहा ॥

अर्थ–पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा और शारदा ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** गेंदेका फूल । **गुण** । अनुष्ण, कटु, तिक्त, कषाय, कफवात हरण कर्त्ता । **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, शूल, श्वास, खांसी और विषके विकारोंको नष्ट करे ।

कोई (कुमुदनी.)

श्वेतंकुवलयंप्रोक्तंकुमुदंकैरवंतथा ।
कुमुदंपिच्छिलंस्निग्धंमधुरंह्लादिशीतलम् ॥

अर्थ–सफेदकोईके कुवलय, कुमुद और कैरव ए सं. नाम । **हिं.** कमोदनी, कोई, बबोला, **बं.** सुंदिपुष्प, **गु.** पोयणां, **फा.** नीलोफर । **गुण** । पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, आह्लादजनक और शीतल ।

कुमुदिनी.

कुमुद्वतीकैरविकातथाकुमुदिनीतिच ॥
सालुमूलादिसर्वांगैरुक्तासमुदिताबुधैः ॥
पद्मिन्यायेगुणाःप्रोक्ताःकुमुदिन्याश्चतेस्मृताः ।

अर्थ–जड़सहित सर्वांग कुमुदको **कुमुदिनी** कहते हैं। इसके पर्याय कुमुद्वती, कैरविका और कुमुदिनी । इसके **गुण** कमलनीके समान जानने ।

काई (जलकुंभी)

वारिपर्णीकुंभिकास्याच्छैवालंशैवलंचतत् ।
वारिपर्णीहिमातिक्तालघ्वीस्वाद्वीसराकटुः ॥
दोषत्रयहरीरूक्षाशोणितज्वरशोषकृत् ।
शैवालंतुवरंतिक्तंमधुरंशीतलंलघु ॥
स्निग्धंदाहतृषापित्तरक्तज्वरहरंपरम् ॥ १८ ॥

अर्थ–वारिपर्णी, कुंभिका ए **संस्कृत** नाम। **हिं**. जलकुंभी, **बं.** पाना । शेवाल और शैवल ए काईके नाम । इसको सिवारभी कहते हैं । **बं**. शेहाला, **फा.** तुहिल, जम्वाल । **गुण** । वारिपर्णी–शीतल, कडवी, लघु, स्वादु, सर, कटु, त्रिदोषनाशक, रूक्ष, रक्तज्वर और सूजनको दूर करे । काई (सेवार) कषेली, तिक्त, मधुर, शीतल, हलकी और स्निग्ध । यह दाह, तृषा, पैत्तिक और रक्तगत ज्वरको निवारण करे । **मात्रा** २ माशेकी है । **प्रतिनिधि** जलकी कीच है । **दर्पनाशक** मायुलंरहां है ।

सेवती गुलाब.

शतपत्रीतरुण्युक्ताकर्णिकाचारुकेशरा ।
महाकुमारीगंधाढ्यालाक्षाकृष्णातिमंजुला ॥
शतपत्रीहिमाहृद्याग्राहिणीशुक्रलालघुः ।
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्यातिक्ताकट्वीचपाचनी ॥

अर्थ–शतपत्री, तरुणी, कर्णिका, चारुकेशरा, महाकुमारी, गंधाढ्या, लाक्षा, कृष्णा, अतिमंजुला [सुशीता, शिवप्रिया, सुमना] ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** गुलाब और सेवती । वहां **सेवती** सफेद फूल की और **गुलाब** गुलाबी रंगका होता है । गुलाब को फारसी में **गुलसुर्ख, अ.** वर्दे अहमर, **क.** चेवडे कहते हैं । **गुण** । शीतल, हृदयको हितकारी, ग्राही, शुक्रजनक, हलका, त्रिदोषनाशक, रुधिरविकारको दूर करे, रंगको उज्ज्वल करे, कडवी, चरपरी और पाचनी है । गुलाब-जीरेका **दर्पनाशक** मस्तंगी है । *

वसंती (नेवारी.)

नेपालीकथितातज्ज्ञैःसप्तलानवमालिका ।
वासंतीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयास्रजित् ॥

अर्थ–नेपाली, सप्तला, नवमालिका और वासन्त ए **संस्कृत** नाम । **हिं**. नेवारी, **का.** वीरवन्ती **गु.** बटमोगरो । **गुण** । शीतल, लघु, कडवी, त्रिदोषघ्न और रक्तदोषनाशक है । $

वार्षिकी (वेल.)

श्रीपदीषट्पदानंदावार्षिकीमुक्तबंधना ।
वार्षिकीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयापहा ॥
कर्णादिमुखरोगघ्नीतत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥

* **अरबीफारसी ग्रन्थोंमें**—गुलाबकी अनेक जाति कही हैं–जैसे कि सफेद जंगली गुलाब, लाल जंगली गुलाब, लाल बर्गाचेका गुलाब, पीला जंगली गुलाब, पीला वागीगुलाब, जंगली सफेद गुच्छादारगुलाब, और वर्द उलहमाक नामका गुलाब इत्यादि अनेक जातिके गुलाबों में से तथा लाल गुलाब से **अतर** निकलता है । गुलाबकी कली फूले हुए फूलकी अपेक्षा अधिक **ग्राही** होनेसे दवाके तरीकेसे अपने देश में वर्त्तनेमें आती है । तथा वह शीतल, खुश्क, पौष्टिक, दस्त लानेवाली और पित्त नष्टकर्त्ता मानी गई है । इसके पुंकेशरको गरम और ग्राही मानते हैं ।

$ **मि० वुडके मतसे**—इस फूलमें स्तनके दूधको बखेर देने का गुण हद्दसे ज्यादे है, जिस वक्त स्तनमें गांठ पडगई होय अथवा पकती होय उस समय दो वा तीन मुठ्ठीभर फूलों को पीसके स्तनों पर बांधे और दिनमें दो दफे पलट डाले तो २४ घंटे में स्तनों का दूध बिखर जाता है । **जंगलीनेवारीकी जड** पित्त निकालनेको वर्त्तने में आतीहै, तथा इसका **तेल** मस्तकपर लगाने से नेत्रकी दृष्टि बढती है ।

चक्रदत्तमें—ताजे पत्तों का रस नरम मस्सेपर लगाना लिखाहै तथा मुखमें छाले होगए होंय तो इसके वर्त्तने की प्रशंसा करी है ।

मुसलमानी ग्रन्थकार—नेवारीके क्षुपको पेट के विगाड निकालनेवाला, पेटके कीडे नष्टकर्त्ता, मूत्र अधिक लानेवाला, तथा पित्तके भरावको निकालनेवाला, तथा फूलोंको पीस जांघ और अंडकोशके नीचेके भागमें लगाने से कामोद्दीपन कर्त्ता गिनते हैं ।

अर्थ-श्रीपदी, षट्पदानन्दा, वार्षिकी और मुक्तबंधना, हिं. बेल, म. साठही मोगराचा भेद, गु. लवारा। गुण। शीतल, लघु, कडवी, त्रिदोषनाशक। इसके सेवन करने से कान, नेत्र और मुखके रोग दूर हों। इसके तेलमें इसीके अनुसार गुण जानने।

चमेली (जाती, स्वर्णजाती.)

जातिर्जातीचसुमनामालतीराजपुत्रिका।
चेतिकाहृद्यगंधाचसापीतास्वर्णजातिका॥
जातीयुगन्तिक्तमुष्णंतुवरंलघुदोषजित्।
शिरोक्षिमुखदन्तार्त्तिविषकुष्ठानिलास्रजित्॥

अर्थ-सं. जाति, जाती, सुमना, मालती, राजपुत्रिका, चेतिका और हृद्यगन्धा, पीले रंगकी स्वर्णजाती कहाती है। हिं. चमेली और पीली चमेली, म. जाजी, चंबेली, क. मोगराचा भेद। गुण। दोनों प्रकारकी चमेली गरम, कषेली, हलकी और दोष हरणकर्त्ता। इसके द्वारा मस्तक, नेत्र, मुख और दांतों की पीडा, विषजन्य रोग, कोढ, वादी और रुधिर के दोष दूर हों।

जुही. (सुवर्णजुही.)

यूथिकागणिकांबष्ठासापीताहेमपुष्पिका।
यूथीयुगंहिमन्तिक्तंकटुपाकरसंलघु॥
मधुरन्तुवरंहृद्यंपित्तघ्नंकफवातलम्।
व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम्॥

अर्थ-यूथिका, गणिका और अम्बष्ठा, ए जुहीके सं. नाम हैं। और पीली होयतो उसको हेमपुष्पिका वा स्वर्णयूथिका कहते हैं। हिंदी में जुही और पीली-जुही, का. यरडमोल्ले, म. पांढरी व पिंवली जुही, तै. जुइपुव्वालु। गुण। दोनों प्रकारकी जुही-शीतल, कडवी, पाक में कटुरस, लघु, मधुर, कषाय, हृद्य, पित्तघ्न, वातकफवर्द्धक और विषघ्न हैं। प्रयोग। व्रण, रक्तदोष, मुख, दांत, नेत्ररोग और शिरपीडा शान्ति होय।

चम्पा.

चांपेयश्चंपकःप्रोक्तोहेमपुष्पश्चसस्मृतः।
एतस्यकलिकागन्धफलीतिकथिताबुधैः॥

चम्पकःकटुकस्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः।
विषकृमिहरःकृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित्॥

अर्थ-चाम्पेय, चम्पक और हेमपुष्प ए संस्कृत नाम, हिं. चम्पा, म. चांपा, क. सम्पगे, तै. गंपग. चेट्टु, ला. मिचेलिया चम्पेका। गुण। कटु, तिक्त, कषाय, मधुर, शीतल, विषघ्न और कृमिनाशक। इसके द्वारा मूत्रकृच्छ्र, वातकफ, रक्तपित्त ए दूर हों।

मौलसरी (बकुल.)

बकुलोमधुगन्धश्चसिंहकेसरकस्तथा।
बकुलस्तुवरोऽनुष्णःकटुपाकरसोगुरुः॥
कफपित्तविषंश्वित्रकृमिदन्तगदापहः।

अर्थ-बकुल, मधुगन्ध और सिंहकेशर ए संस्कृत नाम, हिं. मौल [र] सरी, गु. बोलसिरी, ता. मोगदम, उडि. वउडकुडी, म. वगौले, बकुली, क. करक, तै. पावडा, इं. सुरीनाम मेडलर। गुण। कषाय, अनुष्ण, कटुपाकी और भारी है। इसके सेबन से कफ, पित्त, विष, चित्रकुष्ठ, दांतके रोग और कृमिरोग नष्ट होय।

बकुल (बृहद्बोलसरी.)

शिवमल्लीपाशुपतएकाष्ठीलोबुकोवसुः।
बुकोऽनुष्णःकटुस्तिक्तःकफपित्तविषापहः।
योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः॥३०॥

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक और वसु ए संस्कृत नाम। हिं. बृहद्बोलसिरी, बं. पञ्चवक, गु. मोठी बोलसिरी। गुण। अनुष्ण, कटु, तिक्त, कफपित्तनाशक और विषघ्न। प्रयोग। योनिशूल, तृषा, दाह, कुष्ठ, सूजन और रक्तदोष इनपर देनी चाहिये।

कदम (कदंब.)

कदंबःप्रियकोनीपोवृत्तपुष्पोहलिप्रियः।
कदंबोमधुरःशीतोकषायोलवणोगुरुः॥
सरोविष्टंभकृद्रूक्षःकफस्तन्यानिलप्रदः।

अर्थ-सं. कदंब, प्रियक, नीप, वृत्तपुष्प और हलिप्रिय, हिं. कदम, कदंब, म. राजकदम, क. कडऊ, तै. कदंब चेट्टु, ला. ऐंथोसि फालसकेडंवा। गुण। मधुर, शीतल, कषेला, [illegible]रसयुक्त, भारी,

दस्तावर, विष्टंभी, रूच, कफवर्द्धक, स्तनोंमें दूध प्रकट-कर्त्ता और वातकर्त्ता है ।

कुजा (कुब्जक.)

कुब्जकोभद्रतरणिर्बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः ।
महासहाकंटकाढ्यानीलालिकुलसंकुला॥३२॥
कुब्जकःसुरभिःस्वादुःकषायानुरसःसरः ।
त्रिदोषशमनोवृष्यःशीतहर्त्ताचसस्मृतः ॥

अर्थ–कुब्जक, भद्रतरणि, बृहत्पुष्प, अतिकेसर, महासहा, कण्टकाढ्या, नीला और अलिसंकुला ए **सं.** नाम हैं । **हिं**. कूजा, **गु.** कुंजडो । **गुण** । सुगंधित, स्वादु, किंचित्कषाय-रस, दस्तावर, त्रिदोषशांतिकारी, बलकारी और शीतहर्त्ता ।

मल्लिका.

मल्लिामदयंतीचशीतभीरुश्चभूपदी ।
मल्लिकोष्णालघुर्वृष्यातिक्ताचकटुकाहरेत् ॥
वातापित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ।

अर्थ–मल्लिका, मदयंती, शीतभीरु और भूपदी ए **सं.** नाम, **गु.** मोगरा । **गुण** । उष्ण, हलकी,बलकारक, कड़वी और चरपरी । इसके द्वारा वादी, पित्त, मुखरोग, नेत्ररोग, कोढ़, अरुचि, विष और व्रण नष्ट होय ।

माधवी.

माधवीस्यात्तुवासंतीपुंड्रकोमंडकोऽपिच ।
अतिमुक्तोविमुक्तश्चकामुकोभ्रमरोत्सवः ॥
माधवीमधुराशीतालघ्वीदोषत्रयापहा ।

अर्थ–माधवी, वासंती, पुंड्रक, मंडक, अतिमुक्त, विमुक्त, कामुक और भ्रमरोत्सव । **हिं**. माधवी, **का.** इंद्रगोच्चे । **गुण** । **माधवी**-मधुर, शीतल, हलकी और त्रिदोषनाशक ।

केवरा–सुवर्णकेतकी.

केतकःसूचिकापुष्पोजंबुकःक्रकचच्छदः ।
सुवर्णकेतकीत्वन्यालघुपुष्पासुगंधिनी ॥३६॥
केतकःकटुकःस्वादुर्लघुस्तिक्तःकफापहः ।
उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥

अर्थ–केतक, सूचिकापुष्प, जंबुक, क्रकचच्छद ए **केवरेके** नाम हैं । और सुवर्णकेतकी, लघुपुष्प और सुगंधिनी ए **केतकीके** नाम हैं । **गुण** । **केवड़ा**–कटु, स्वादु, लघु, तिक्त और कफनाशक । तथा **केतकी** गरम, कड़वी और नेत्रोंको हितकारी ।

किंकिरात.

किंकिरातोहेमगौरःपीतकःपीतभद्रकः ।
किंकिरातोहिमस्तिक्तःकषायश्चहरेदसौ ॥
कफपित्तपिपासास्रदाहशोषवमिक्रमीन् ।

अर्थ–किंकिरात, हेमगौर, पीतक और पीतभद्रक, यह बंगाले आदिमें प्रसिद्ध है । यह लाल पियावांसेकाही भेद है । **गु.** राम बावल । **गुण** । शीतल, तिक्त, कषेला । यह कफ, पित्त, प्यास, रक्तदोष, दाह, शोष, वमन और क्रमिरोग को दूर करे ।

कर्णिकार.

कर्णिकारःपरिव्याधःपादपोत्पलइत्यपि ।
कर्णिकारःकटुस्तिक्तस्तुवरःशोधनोलघुः ॥
रंजनःसुखदःशोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ।

अर्थ–कर्णिकार, परिव्याध और पादपोत्पल ए **सं.** नाम, **हिं.** कनेर, **रा.** कंडीर, **बं.** छोटासोंदाल, **म.** कर्णेर, **क.** वाकणलिंगे, **तै.** कनेरचेट्ट, **फा.** खरजेहरा, **अ.** सुमुल, **ला.** नीरीयं ओडोरम् । **गुण** । कटु, तिक्त, कषाय, शोधन, (विरेचक और वमनकारक), लघु, रंजन, सुखप्रद । **प्रयोग** । सूजन, कफ, रक्तदोष, व्रण और कोढ़को दूर करे । *

* **मद्रासका डा० वीडी और डा० शोटे**—इन्होंने इस वृक्षकी कड़वी और जुल्लाब लानेवाली छालको वारंवार आनेवाले ज्वरपर अनेकवार अनुभव कराहै । तथा उसका परिणाम संतोषकारक हुआ है । वह ताजी और सूखी छाल २॥ रुपे भर ले १२॥ रुपेभर दारूमें ८ दिन तक भीगी रहनेदे, फिर कपड़े में छान लेय, इस छनेहुए अर्कको १०–१५ बूंदकी मात्रासे दिनमें ३ समय देवे. यह अर्क ३०–६०

अशोक.

अशोकोहेमपुष्पश्चवंजुलस्ताम्रपल्लवः ।
कंकेलिःपिंडपुष्पश्चगंधपुष्पोनटस्तथा ॥४०॥
अशोकःशीतलस्तिक्तोग्राहीवर्ण्यःकषायकः ।
दोषापचीतृषादाहकृमिशोषविषास्रजित् ॥

अर्थ-अशोक, हेमपुष्प, वंजुल, ताम्रपल्लव, कंकेलि, पिंडपुष्प, गंधपुष्प और नट ए **अशोक** पुष्पके **सं.** नामहैं । **म.** अरुपाल, **गु.** आसोपालव । **गुण** । शीतल, तिक्त, ग्राही, वर्णकर्त्ता, कषेला है । यह वातादिदोष, अपची, तृषा, दाह, कृमिरोग, शोष, विष और रुधिरके विकार इनको दूर करे ।

बाणपुष्प.

अम्लातोऽम्लाटनःप्रोक्तस्तथाम्लातकइत्यपि
कुरंटकोवर्णःपुष्पःसएवोक्तोमहासहः ॥
अम्लाटनःकषायोष्णःस्निग्धःस्वादुश्चतिक्तकः

अर्थ-सं. अम्लात, अम्लाटन, अम्लातक, कुरंटक, वर्णपुष्प और महासह, यह गौडादिदेशमें **बाणपुष्प** इस नामसे प्रसिद्ध है और कोई वंगदेशी इसको **आयला** कहतेहैं । **गुण** । कषाय, उष्ण, स्निग्ध, स्वादु और तिक्त (कड़वा)।

कटसैरया.

सैरेयकःश्वेतपुष्पःसैरेयःकटसारिका ।
सहाचरःसहचरःसचभिंद्यपिकथ्यते ॥
कुरंटकोत्रपीतेस्याद्रक्तेकुरवकःस्मृतः ।
नीलेबाणाद्वयोरुक्तोदासीआर्त्तगलश्चसः ॥
सैरेयःकुष्ठवातास्रकफकण्डुविषापहः ।
तिक्तोष्णोमधुरोऽनम्लःसुस्निग्धःकेशरंजनः ॥

अर्थ-सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर और भिन्दी ए **संस्कृत**नाम, **हिं.** कटसैरया, पियाबांसा, **बं.** झिंटी, झांटी, **म.** कोरांटा, **का.** गोरेटे, **तै.** गोरेंड कहतेहैं । कटसैरया तीन प्रकारकी है-पीलेरंगका **कुरंटक**, लालरंगका **कुरवक** और नीलवर्णकी कटशरैयाको **दासी** और **आर्त्तगल** कहते हैं । **गुण**। तिक्त, उष्ण, मधुर, दांतों को हितकरता, सुस्निग्ध और केशरंजक (बालोंको रंगनेवाला) । **प्रयोग** । कोढ़, वादी, रुधिरके दोष, कफ, खुजली और विष नष्ट होय। समग्र अंश लेना । **मात्रा** २ मासे ।

कुंद.

कुंदंतुकथितंमाध्यंसदापुष्पंचतत्स्मृतम् ।
कुंदंशीतंलघुश्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहृत् ॥

अर्थ-सं. कुन्द, मान्ध्य और सदापुष्प, **हिं.** कुन्द, **का.** सुरगि, **गु.** जलर । **गुण** । शीतल और हलका। इस के सेवन करने से शिरोरोग, विष और पित्त नष्ट होय ।

मुचुकुन्द.

मुचुकुंदःक्षत्रवृक्षश्चित्रकःप्रतिविष्णुकः ।
मुचुकुंदःशिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः ॥

अर्थ-सं. मुचुकुंद, क्षत्रवृक्ष, चित्रक और प्रतिविष्णुक । **गुण** । शिरपीड़ा, रक्तपित्त और विष नष्ट करे । *

बूंदकी बड़ी मात्रामें देनेसे जुल्लाब और उलटी होतीहै, तथा इससे भी अधिक मात्रा देनेसे जहरका असर करेहै ।

डा० शोर्ट—कहताहै कि बीजकी मिंगीका तेल देनेसे उलटी होतीहै और जुल्लाब होताहै । वृक्षसे निकाला हुआ दूध अत्यंत जहरीला है, बीजकी मिंगी बहुत कड़वी होतीहै, इस कटसरैयाके खानेसे जीभके ऊपर गरमी मालूम होतीहै ।

आयुर्वेदके ग्रंथमें—कटसरैयाको कुव्वतदेनेवाला, पाचनशक्तिका सुधारनेवाला और इसके **बीजों**को जलमें मिलायदे इस चिकने पानीके पीनेसे खांसी दूर होतीहै ।

मुसलमानी ग्रंथमें—इसके **बीज**को बहुत गरम, मूत्रवर्द्धक और पुरुषार्थ बढ़ानेवाला मानाहै, तथा तिल्लीकी गांठ दूर करनेको और सरदीसे प्रकट बिमारियोंपर देनेकी अनुमति देते हैं ।

* **चक्रदत्तमें**—लिखताहै कि इस वृक्षके फूलकी **कली** चांवलके यूषमें पीसके मस्तकपर लेप करनेसे **आधासीसी** दूर होय ।

तिलक.

तिलकःक्षुरकःश्रीमान् सुपुष्पश्छत्रपुष्पकः ।
तिलकःकटुकःपाकेरसेचोष्णोरसायनः ॥
कफकुष्ठकृमीन्बस्तिमुखदंतगदान्हरेत् ।

अर्थ–तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, सुपुष्प और छत्रपुष्पक, यह तिलके फूलके समान **तिलक** नामसे ही प्रसिद्ध है । **गुण** । यह **स्वादमें** और **पाकमें** कटु, गरम और रसायन । **प्रयोग** । कफवृद्धि, कोढ़, कृमि, वस्तिपीड़ा, मुखरोग और दांतरोगको हरण करे ।

बंधूक.

बंधूकोबंधुजीवश्चरक्तोमाध्याह्निकोऽपिच ।
बंधूकःकफकृद्ग्राहीवातपित्तहरोलघुः ॥

अर्थ–बंधूक, बंधुजीव, रक्त और माध्याह्निक, ए **संस्कृत** नाम । **हिं**. गेजुनियां, दुपहरिया, **म**.दुपरी, **गु**. बपोरियो, **अं**. पेरोट पिटिस्-फिनिश्या । **गुण** । कफनाशक, ग्राही, वायुपित्तनाशक और लघु ।

जपा. ओडहुल. सांझी.

औंड्रपुष्पंजपाचाथत्रिसंध्यासारुणासिता ।
जपासंग्राहिणीकेश्यात्रिसंध्याकफवातजित् ॥

अर्थ–औंड्रपुष्पा, जपा ए **गुडहरके** नाम तथा त्रिसंध्या, अरुणा और सिता, **सांझीके** नाम । **म**. जासवंद, **गु**. जासुद, **अं**. शुफ्लावर । **गुण** । **गुडहर**-संग्राही, बालों को हित और सांझी कफवातको जीते है ।

सेंदूरिया.

सिंदूरीरक्तबीजाचरक्तपुष्पासुकोमला ।
सिंदुरीविषपित्तास्रतृष्णावांतिहरीहिमा ॥

अर्थ–सिंदूरी, रक्तबीजा, रक्तपुष्पा और सुकोमला, ए **संस्कृत** नाम । **हिं**. सिंदूरिया, जाफर, **अं**. आरनाटो, **ला**.विक्साओरमाना । **गुण** । शीतल और विषघ्न तथा सेवन करनेसे रक्तपित्त, तृषा और वमनको निवारण करे ।

अगस्तिया.

अथागस्त्योवंगसेनोमुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ।
अगस्तिःपित्तकफजिच्चातुर्थिकहरोहिमः ॥
रूक्षोवातकरस्तिक्तःप्रतिश्यायनिवारणः ।

अर्थ–सं. अगस्त्य, वंगसेन, मुनिपुष्प और मुनिद्रुम, **हिं**. अगस्तिया, हथिया, **बं**. वक, **म**. हदगा, **गु**. अगथियों, **का**. अगसेयमरनु, **तै**. अनीसे, **ता**. अगीति, **ला**. लार्जफ्लावर्डएगेटी, **इं**. ग्रांडीफ्लोरा । **स्वरूप** । यह वृक्ष लंबा होताहै और इसपर पत्तेवाली बेल अधिक चढ़ती हैं । पत्ते इमलीके समान छोटे होते हैं । फूल सफेद, पीला, लाल और काला इस प्रकार चार जातिका होताहै । वह केसूलाके फलके समान बांका और उत्तम होता है । इसकी लंबी, पतली और चपटी फली होती है । **चित्र** नंबर २८ का देखो । **गुण** । शीतल, रूक्ष, वातकर्त्ता और कड़वा । इसके सेवनसे पित्त, कफ, चातुर्थिकज्वर और सेरकमा दूर हो । *

तुलसी सफेद और काली.

तुलसीसुरसाग्राम्यासुलभाबहुमंजरी ।
अपेतराक्षसीगौरीशूलघ्नीदेवदुंदुभिः ॥ ५४ ॥
तुलसीकटुकातिक्ताहृद्योष्णादाहपित्तकृत् ।
दीपनीकुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥
शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणैस्तुल्याप्रकीर्तिता ।

अर्थ–तुलसी, सुरसा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमंजरी, अपेतराक्षसी, गौरी, शूलघ्नी और देवदुंदुभि ए **तुलसीके** पर्याय शब्द हैं । **म**. तुलस, **फा**. रेहान, **ला**. ओसिमंआलबम् और सब भाषाओंमें प्रायः इसी नामसे प्रसिद्ध है । **गुण** । कटु, तिक्त, हृद्य, उष्ण, दाहकारी, पित्तजनक और दीपन । **प्रयोग** । कोढ़,

* **मीर मुहम्मद हुसेन**—लिखता है कि सेरकमा अथवा मस्तक दूखता होय तो इसके पत्तोंका रस निकाल नाकमें बूंद टपकावे तो छींक आनकर नाकमेंसे पानी निकल जाय और मस्तकका भारीपन दूर होय । **फूलका** साग करके खाते हैं । **छाल** पाचनशक्ति बढ़ानेको दीनी जाती है । तथा **पत्तोंको** गरम जलमें भिगोय देवे इस पानीके पीनेसे जुल्लाब लगता है । **आंखमें** जाला पड़ गया होय तो अगस्तियाके फूलका रस आंखमें डालनेसे फायदा होता है ।

मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, पसवाडेकी पीडा, कफ और वायु नष्ट होय । दोनों तुलसियों के गुण समान हैं । इसके पत्तेका स्वरस लेना । मात्रा २ माशेकी है ।

मरुआ.

मारुतोऽस्त्रीमरुवकोमरुन्मरुरपिस्मृतः ।
फणीफणिज्जकश्चापिप्रस्थपुष्पःसमीरणः ॥
मरुदग्निप्रदोहृद्यस्तीक्ष्णोष्णःपित्तलोलघुः ।
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ।
कटुपाकरसोरुच्यस्तिक्तोरूक्षःसुगंधिकः ॥

अर्थ–मारुत, मरुवक, मरुत्, मरु, फणी, फणिज्जक, प्रस्थपुष्प और समीरण ए संस्कृत नाम । हिं. मरुआ, म. सवजा, मर्वा, तै. इन्द्रजाड । गुण । अग्निवर्द्धक, हृद्य, तीक्ष्णोष्ण, पित्तकर्त्ता, लघु, पाकके समय कटुरस, रोचक, तिक्त, रूक्ष और सुगंधित । प्रयोग । इसके द्वारा कफ, वादी, कुष्ठ, कृमि और विच्छू-आदिका विष नष्ट होय ।

दवना.

उक्तोदमनकोदांतोमुनिपुत्रस्तपोधनः ।
गंधोत्कटोब्रह्मजटोविनीतःकलपत्रकः ॥ ५७ ॥
दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगंधिकः ।
भ्रमखाद्विषकुष्ठास्रक्लेदकंडुत्रिदोषजित् ॥५८॥

अर्थ–दमनक, दांत, मुनिपुत्र, तपोधन, गंधोत्कट, विनीत और कलपत्रक, ए संस्कृत नाम, हिं. दवना, दौना, म. दवणा, क. चित्तरटे, गु. डमरो, तै. सावि-रेचट्टु, अं. वर्मवुड । गुण । कषेला, कड़वा, हृदयको हितकारी, बलकारक और सुगंधित । प्रयोग । सेवन करनेमें विषविकार, कोढ़, रुधिरविकार, क्लेद, खुजली और त्रिदोषको दूर करे ।

बर्बरी.

बर्बरीतुवरीतुंगीखरपुष्पाजगंधिका ।
पर्णाशस्तत्रकृष्णेतुकठिल्लककुठेरकौ ॥ ५० ॥
तत्रशुक्लेऽर्जकःप्रोक्तोवटपत्रस्ततोऽपरः ।
बर्बरीत्रितयंरूक्षंशीतंकटुविदाहिच ॥ ६० ॥
तीक्ष्णंरुचिकरंहृद्यंदीपनंलघुपाकिच ।
पित्तलंकफवातास्रकंडुकृमिविषापहम् ॥६१॥

अर्थ–सं. बर्बरी, तुवरी तुंगी, खरपुष्पा, अजगंधिका और पर्णाश, यदि यह कालेरंगकी होय तो कठिल्लक और कुठेरक कहतेहैं । और सफेद रंगकी को अर्जक कहते हैं । और दूसरी जातिकेको वटपत्र कहते हैं । सं. बर्बरी, हिं. वनतुलसी, म. आजवला, पांढरा आजवला । ए तीनों प्रकारकी बर्बरी–रूक्ष, शीतल, कटु, विदाही, तीक्ष्ण, रुचिकारी, हृद्य, दीपन, पचनेमें हलकी, पित्तकर्त्ता कफनाशक और विषघ्न । इसके सेवन करने से वातरक्त, खुजली, कृमि ए नष्ट होंय ।

॥ इति श्रीअभिनवनिघंटौ पुष्पादिवर्गः ॥

अथ वटादिवर्गः ।

वटोरक्तफलःशृंगीन्यग्रोधःस्कंधजोध्रुवः ।
क्षीरीवैश्रवणावासोबहुपादोवनस्पतिः ॥ १ ॥
वटःशीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापहः ।
वर्ण्योविसर्पदाहघ्नःकषायोयोनिदोषहृत् ॥२॥

अर्थ–वट, रक्तफल, शृंगी, न्यग्रोध, स्कंधज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद और वनस्पति, ए संस्कृत नाम । हिं. बड, बं. वट, का. आल, उडि. बोरु ला. तै. मरील चेट्टु, फा. दरख्ते रेशा, अं. बनि-यंट्री । एक नदीवट होता है जिसको वटी और दुजाबट्ट, तथा का. गालिआल कहते हैं । गुण । शीतल, भारी, ग्राही, कषेला, कफ और पित्तको दूर करे । देहका वर्ण उजला करे । प्रयोग । व्रणरोग, विसर्प और दाह इनको दूर करे । नदीवटके गुण । कषेला, मधुर, शीतल, पित्त, दाह, तृषा, श्रम, श्वास, वमन इनको दूर करे ।

पीपर.

बोधिद्रुःपिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशनः ।
पिप्पलोदुर्जरःशीतःपित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥
गुरुस्तुवरकोरूक्षोवर्ण्योयोनिविशोधनः ॥३॥

अर्थ–बोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन ए संस्कृत नाम । हिं. पीपल [र], म. पिंपल, का. अरलि । एक पीपली होती है उसके पत्ते छोटे होतेहैं । म. अश्वत्थी, का. हेणअरलि । तै. रावीचेट्टु,

फा. दरखतलजा, अं. पीप्लर लीटंड, फिगट्री। **गुण**। दुर्जर, शीतल, भारी, कषेला, रूक्ष, वर्णप्रकाशक, योनिशोधन कर्त्ता। पित्त, कफ, व्रण, और रुधिरके विकारको दूर करे है। **पीपल के गुण** मधुर, कषेला, रक्तपित्त, विष, दाहको दूर करे और गर्भिणी को हितकारी है।

पारस पीपर.

पारीषोऽन्यःपलाशश्चकपिरूतःकमंडलः।
गर्दभांडःकंदरालःकपीतनसुपार्श्वकः॥४॥
पारीषोदुर्जरःस्निग्धःकृमिशुक्रकफप्रदः।
फलेऽम्लोमधुरोमूलेकषायस्वादुमज्जकः॥५॥

अर्थ–एक पीपरका भेद **पारसपीपल** है, उसके पर्याय कहते हैं–पारीष, पलाश, कपिरूत, कमंडल, गर्दभांड, कंदराल, कपीतन और सुपार्श्वक, **हिं.** पारस-पीपल, गजहंडु, **म.** भेंड, **का.** वंगरली **ता.** पोरिश। **गुण**। दुर्जर (पचे नहीं), स्निग्ध, कृमि, शुक्र और कफको करे। इसका **फल** खट्टा है और **जड** में मीठा, तथा इसकी **मज्जामें** कषेलापन और मिठास है।

वेलिया पीपल.

नंदीवृक्षोऽश्वत्थभेदःप्ररोहीगजपादपः।
स्थालीवृक्षःक्षयतरुःक्षीरीचस्याद्वनस्पतिः॥
नंदीवृक्षोलघुःस्वादुःतिक्तस्तुवरउष्णकः।
कटुपाकरसोग्राहीविषपित्तकफास्रजित्॥७॥

अर्थ–नंदीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी और वनस्पति ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** वेलिया पीपल, **तै.** बट्टी चेट्टु। **गुण**। हलका, स्वादु, कडवा, कषेला, गरम, पकनेमें कटु, ग्राही, विषविकार, कफ और रुधिरके विकारको दूर करे। *

गूलर.

उदुंबरोजंतुफलोयज्ञांगोहेमदुग्धकः।
उदुंबरोहिमोरूक्षोगुरुःपित्तकफास्रजित्॥
मधुरस्तुवरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः॥८॥

अर्थ–उदुंबर, जंतुफल, यज्ञांग और हेमदुग्धक ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** गूलर-रा, ऊमरा, **बं.** यज्ञडुमर, **म.** उंबर, **का.** अत्ती, **तै.** बाड्डुचेट्टु, **अ.** जमीज, **फा.** अंजीरे आदम, **ला.** फाइकस् ग्लोमिरेटा, **अं.** केगट्री kegtree एक नदी उंबर अर्थात् **नदीका गूलर** होताहै। इसके **पत्ते** और **फल** छोटे होते हैं। **म.** नदी ऊंबर, **का.** नीरअत्ति। **गुण**। शीतल, रूक्ष, भारी, मधुर, कषेला, वर्णकारक, कफ, पित्त और रुधिरके विकारोंको दूर करे। तथा व्रणको शोधन और रोपण करे। **नदीका गूलर**-रस, वीर्य, विपाकमें गूलरकी अपेक्षा कुछ न्यून गुणवाला है। **गूलरकी त्वचाके गुण**। शीतल, कषेली, व्रणनाशक, गर्भवतीके गर्भकी रक्षा करे और स्त्रीके स्तनोंमें दूध बढाती है।

कठूमर.

काकोदुंबरिकाफल्गुर्मलयूर्जघनेफला।
मलयूस्तम्भकृत्तिक्ताशीतलातुवराजयेत्॥
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपांडुवर्शकामलाः॥९॥

अर्थ–काकोदुंबरिका, फल्गु, मलयू और जघनेफला, ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** कठूमर, **बं.** डुमुर, **म.** कालाऊंबर, **का.** काअत्ति। **गुण**। स्तंभनकर्त्ती, कडवी, शीतल, कषेली। **प्रयोग**। कफपित्तके विकार, व्रण, सुफेद कुष्ठ, पांडुरोग, बवासीर और कामलाको नष्ट करे।

पाक [खर].

प्लक्षोजटीपर्करीचपर्कटीचास्त्रियामपि।
प्लक्षःकषायःशिशिरोव्रणयोनिगदापहः।
दाहपित्तकफास्रघ्नःशोथहारक्तपित्तहृत्॥

अर्थ–प्लक्ष, जटी, पर्कटी और पर्करी ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** पाक [ख]र, **बं.** पाकुड, **म.** पिंपरी **गु.** पीपर्य, **का.** बसुरि, **ला.** फाईकस विरेन्स। एक **छोटी पाखर** होती है। उसके **पत्ते** बडीपाखरसे कुछ छोटे होते हैं। **का.** बसुरी कहतेहैं। **दोनोंके गुण**। कषेली, शीतल। **प्रयोग**। व्रण, योनिके

* **मि० वुड्**—कहताहै कि इस वृक्षकी लकडी बहुत दृढ और बारीक दानेकी होनेसे, गाडी बग्गी बनानेमें तथा चरखपर चढायके चकई लट्टू आदि खिलौने बनानेमें परमोपयोगी है। जडोंमेंसे चिकना पिलाई लिये रंग निकलताहै। उसको देशी वैद्य लचारोग, सुजाक आदिमें लगाते हैं।

रोग, दाह, पित्त, कफ, और रुधिरके विकार, सूजन और रक्तपित्तको हरण करे ।

शिरीष.

**शिरीषोभण्डिलोभंडीभंडीरश्चकपीतनः ।
शुकपुष्पःशुकतरुर्मृदुपुष्पःशुकप्रियः ॥ ११ ॥
शिरीषोमधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्चतुवरोलघुः ॥
दोषशोथविसर्पघ्नःकासव्रणविषापहः ॥ १२ ॥**

अर्थ–शिरीष, भंडिल, भंडी, भंडीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प और शुकप्रिय ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** सिरस, **म.** सिरसी, **तै.** दिरसन्, **फा.** दरख्तेजकरिया, **अ.** सुलतानुल असजार, **ला.** आल्वीझियालिबेक, **बं.** शिरीष । सिरसका **फूल** हरे रंगका बहुतही नरम होताहै और प्रायः तोता पक्षी इसी वृक्षमें अपना घोंसुआ बनाताहै । **गुण** । मधुर, अनुष्ण, कडवा, कषेला, हलका । **प्रयोग** । वातादिदोष, सूजन, विसर्प, खांसी, व्रण और विषविकारोंको नष्ट करे है ।

क्षीरवृक्ष और पंचवल्कल.

**न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपः ।
पंचैतेक्षीरिणोवृक्षास्तेषांत्वक्पंचवल्कलम् ॥
क्षीरवृक्षाहिमावर्ण्यायोनिरोगव्रणापहाः ।
रूक्षाःकषायामेदोघ्नाविसर्पामयनाशनाः ॥
शोथपित्तकफास्रघ्नाःस्तन्याभग्नास्थियोजकाः
त्वक्पंचकंहिमंग्राहिव्रणशोथविसर्पजित् ॥
तेषांपत्रंहिमंग्राहिकफवातास्रनुल्लघु ।
विष्टम्भाध्मानजित्तिक्तंकषायंलघुलेखनम् ॥**

अर्थ–वड, गूलर, पीपल, पारिसपीपल और पाखर, ए पांच **क्षीरीवृक्ष** अर्थात् दूधवाले वृक्ष हैं । इन पांचोंकी **छाल** (वक्कल) को **पंचवल्कल** कहते हैं । **गुण** । **क्षीरवृक्ष**—शीतल, वर्णकर्त्ता, रूखे, कषेले स्त्रीके स्तनोंमें दूध बढानेवाले, टूटी हड्डी आदिको जोडनेवाले हैं । **प्रयोग** । मेदरोग, विसर्प, सूजन, पित्त, कफ, रुधिरविकार, योनिरोग और व्रणरोग इनको दूर करतेहैं । **पंचवल्कल**—शीतल, ग्राही, व्रण, सूजन और विसर्पको दूर करे । इन पांचों वृक्षोंके पत्ते शीतल, ग्राही, कषेले, हलके, कडवे, लेखन, कफ, वात, रुधिरविकार, विष्टंभ और अफाराको नष्ट करें ।

शाल (सांखु)

**शालस्तुसर्जकार्श्याश्वकर्णिकाःसस्यशंबरः
अश्वकर्णःकषायःस्याद्व्रणस्वेदकफक्रमीन्
व्रध्नविद्रधिवाधिर्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥**

अर्थ–शाल, सर्जक, [कार्श्य] अश्वकर्णिका, सस्यशंबर ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** सांखु, साल, सागोन कहतेहैं । **म.** शालवण, **गु**. मोटागजना झाड, **तै.** एपचेट्टु, **का** सज्जर दागर, **ता.** कुंगिलियम्, **ला.** शोरियारोबष्ट । **गुण** । **अश्वकर्ण** कषेलाहै, तथा व्रण स्वेद, कफ, कृमि, एवं ब्रध्नरोग, विद्रधि, बेहरापना, योनिरोग और कानके रोगोंको दूर करे ।

शालभेद (सर्जक).

**सर्जकोजकर्णःस्याच्छालोमरिचपत्रकः ।
अजकर्णःकटुस्तिक्तःकषायोष्णोव्यपोहति ॥
कफपांडुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् ॥**

अर्थ–सर्जक, अजकर्ण, शाल और मरिचपत्रक यह शालका भेद है । **बं** झाजांशाल । **गुण** । **अजकर्ण** कटु, तिक्त, कषाय, गरम । **प्रयोग** । कफ, पांडु, कर्णके रोग, प्रमेह, कोढ, विष और व्रणरोग इनको दूर करे ।

शालई.

**शल्लकीगजभद्राचसुवहासुरभीरसा ।
महेरुणाकुंदुरुकीवल्लकीचबहुस्रवा ॥ १९ ॥
शल्लकीतुवराशीतापित्तश्लेष्मातिसारजित् ।
रक्तपित्तव्रणहरीपुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ २० ॥**

अर्थ–शल्लकी, गजभद्रा, सुवहा, सुरभी, रसा, महेरुणा, कुंदुरुकी, वल्लकी और बहुस्रवा ऐ **संस्कृत** नाम । **हि.** शालई, **म.** सालर्यावृक्ष, **गु.** शालेडा, धूपडो, **का.** तदीकु **ता.** कुलि. **ला.** बोसवेलिया थरीफेरा । **गुण** । कषेली, शीतल और पुष्टि करेहै । **प्रयोग** । पित्त, कफ, अतिसार, रक्तपित्त और व्रणको हरण करेहै ।

शीशव और कपिलवर्णाशीशव. (सीसों)

शिंशपापिच्छिलाश्यामाकृष्णसाराचसागुरुः।
कपिलासैवमुनिभिर्भस्मगर्भेतिकीर्तिता॥२१॥
शिंशपाकटुकातिक्ताकषायाशोफहारिणी।
उष्णवीर्याहरेन्मेदः कुष्ठश्वित्रवमिक्रमीन्॥
बस्तिरुग्व्रणदाहास्रवलासान्गर्भपातिनी।

अर्थ-सं शिंशिपा, पिच्छिला, श्यामा और कृष्णसारा, यह भारी है। एक और भूरेरंगकी सीसोंको भस्मगर्भा कहते हैं। **बं.** शिशु, **म.** शिसव, **तै.** चेट्ट, **इं.** ब्लाक्वुड्, **ला.** डालबरजिया लेटिफोलिया। **गुण**। **सीसों**-चरपरी, कड़वी, कषेली, शोथहरणकर्त्ता, उष्णवीर्य। **प्रयोग**। मेदरोग, कोढ़, श्वित्रकुष्ठ, वमन, कृमि, बस्तिके विकार, व्रण, दाह, रुधिरविकार और कफके विकारोंको दूर करे तथा गर्भको गिरातीहै।

कोह.

ककुभोर्जुननामाख्योनदीसर्जश्चकीर्तितः।
इंद्रद्रुर्वीरवृक्षश्चवीरश्चधवलः स्मृतः॥ २३॥
ककुभः शीतलोहृद्यः क्षतक्षयविषास्रजित्।
मेदोमेहव्रणान्हंतितुवरः कफपित्तहृत्॥२४॥

अर्थ-ककुभ, अर्जुननाम, नदीसर्ज, इन्द्रद्रु, वीरवृक्ष, वीर और धवल, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कोह, **बं.** अर्जुन, **म.** अर्जुनसादड़ा, आपटा, **तै.** मर्दाचेट्टु, **का.** तारेमती, **ला.** त्रिक्यूलिया मुरन्से, **कों.** श्वेतवर्णवृक्ष, सारटोल, **गु.** आसोदरो, **क.** अश्मर। **गुण**। **कोह**-शीतल, कषेला, हृदयको प्रिय, घाव, क्षय, विष और रुधिरविकारको दूर करे। **प्रयोग**। मेदरोग, प्रमेह, व्रणरोग और कफपित्तको दूर करे।

बिजेसार.

बीजकः पीतसारश्चपीतशालकइत्यपि।
बंधूकपुष्पः प्रियकः सर्जकश्चासनः स्मृतः॥
बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदक्रमीन्।
हंतिश्लेष्मास्रपित्तंचत्वच्यःकेश्योरसायनः॥

अर्थ-बीजक, पीतसार, पीतशालक, बंधूकपुष्प, प्रियक, सर्जक और असन ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** बिजेसार, आसन, **बं.** पियाल, **म.** बिवला, **कों.** असाणा, **गु.** बीयो, **का.** कमरकस, **ला.** टेरोकार्पस, मार्सुपियम्, **तै.** मद्दी, **फा.** कमरकस १ **गुण**। **बिजेसार**-कफ, रक्तपित्त इनको दूर करे, त्वचाको सुधारे, बालोंको बढ़ावे और रसायन है। **प्रयोग**। कोढ़, विसर्प, चित्रकुष्ठ, प्रमेह, गुदाके रोग, कृमिरोग, इनको दूर करे।

खैर.

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदंतधावनः।
कंटकीबालपत्रश्चबहुशल्यश्चयज्ञियः॥ २७॥
खदिरः शीतलोदंत्यःकंडुकासारुचिप्रणुत्।
तिक्तःकषायोमेदोघ्नःकृमिमेहज्वरव्रणान्॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपांडुकुष्ठकफान्हरेत्।

अर्थ-खदिर, रक्तसार, गायत्री, दंतधावन, कंटकी, बालपत्र, बहुशल्य और यज्ञिक ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** खैर, लालकथा, **म.** कात, **गु.** खेरियो, **क.** केंपिन खैर, **तै.** त्वाए। **गुण**। **खैर**-शीतल, दांतोंको हितकारी, कड़वा और कषेला है। **प्रयोग**। खुजली, खांसी, अरुचि, मेदरोग, कृमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, सफेदकोढ़, आमवात, रक्तपित्त, पांडुरोग, कोढ़ और कफके विकारोंको दूर करे। खैरके बड़े २ वृक्ष होते हैं। उनमें छोटे २ और टेढे २ कांटे होते हैं। इसकी लकड़ीके यज्ञमें स्रुवा स्रुची बनाय उनसे होम करते हैं और इसकी लकड़ीका कोला दारू (आतिशबाजी) में काम आता है। *

श्वेतखदिर.

खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कदरः सोमवल्कलः।
कदरोविषदोवर्ण्योमुखरोगकफास्रजित्॥

* **मदनपाल निघंटुमें**—लिखता है कि इस वृक्षकी अत्यंत रंगकी लकड़ी और कच्ची फलियोंमें से औटायके सत्त्व निकलताहै, उसीको **कत्था** कहते हैं। चिरायते को पानीमें भिगाय उस पानीमें १०–१२ ग्रेन कत्था डालके बहुत दिनोंसे अंतर देकर आनेवाली ज्वरकी बिमारीमें देनेसे बहुत उत्तम असर करता है। **रुधिरके** विकारके कारण मसूड़ोंमेंसे रुधिर निकलता होय तो कत्थेको मसूड़ेके ऊपर मले; तथा खानेको देनेसे अत्यंत फायदा करताहै।

अर्थ-एक **सफेदरंग** का खैर होताहै उसके **पर्याय**-कदर, सोमवल्कल, **हिं.** पपरियाकत्थ और इसीको शुद्ध करके खैरसार बनाते हैं । **म.** पांढरा कात, **गु.** खेरया, **तै.** चंडचेट्टू, **ला.** एकेश्याकेटेच्यु । **गुण** । सफेदकत्था-विशद, वर्ण्य, मुखरोग, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे ।

दुर्गंधखदिर.

इरिमेदोविट्खदिरःकालस्कंधोऽरिमेदकः ।
इरिमेदःकषायोष्णोमुखदंतगदास्रजित् ॥
हंतिकंडुविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ।

अर्थ-इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कंध, अरिमेदक, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** दुर्गंध खैर । **गुण** । कषाय, गरम । **प्रयोग** । मुख और दांतके रोग, रुधिरविकार, खुजली, विषके रोग, कफ, कृमि, कुष्ठ और विषजन्य व्रणोंको दूर करे ।

रोहीतक.

रोहीतकोरोहितकोरोहीदाडिमपुष्पकः ।
रोहीतकःप्लीहघातीरुच्योरक्तप्रसाधनः ॥

अर्थ-रोहीतक, रोहितक, रोही और दाडिमपुष्पक ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** रोहेडा **म.** रोहिडी, **का.** यरडुमुत्तलु, **तै.** प्रुलु मोदक चेट्टु, **ला.** टेकोमाअंड्युलेटा । यह कूटशाल्मलीकाही भेद है । सफेद और लाल फूलके कारण रोहितक दो प्रकारका है । जिसमें लाल फूलवालेको कूटशाल्मली कहते हैं । **गुण** । **रोहीतक**-प्लीह, तिल्लीके रोगको नष्ट करे, रुचि करे और रुधिरका शोधन करे है ।

बबूल.

बब्बूलःकिंकिरातःस्यात्किंकिराटःसपीतकः ।
सएवकथितस्तज्ज्ञैराभापदसोदिनी ॥
बब्बूलःकफनुद्ग्राहीकुष्ठकृमिविषापहः ।

अर्थ-बब्बूल, किंकिरात, किंकिराट, सपीतक, और आभापदसोदिनी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं** बबूल, कीकर, **रा.** बंवल, **वं.** बावला, **म.** बाभूल, **गु.** बावल, **क.** पुलई, **तै** बलबत्तह, **कों.** गुइडा, **अं.** एकाश्याट्री । एक बबूलका भेद जालबब्बूल होता है । **गुण** । बबूर कफ नष्ट करे, ग्राही, कोढ, कृमि रोग और विषविकारोंको नष्ट करे । **बबूरके गोंदके गुण** । संग्राही, शीतवीर्य, पित्तघ्न, वातनाशक, भग्नसंधायक और रुधिरके स्रावको बंद करे । **प्रयोग** ।

डा० एम् रोसना—अनुभवके तरीके बहुत दुष्ट नासूर और कोढके दागोंपर कत्थेको बारीक पीस अन्य पदार्थोंके साथ मलहममें मिलायके लगानेसे **घावको** जल्दी भर लावे ।

चरक संहितामें—खैरकी छालको कुष्ठनाशक वर्णन कराहै, तथा **सुश्रुतमें** उसको मेदहर, कुष्ठनाशक और मेदशोषणकर्त्ता मानाहै । इन पुस्तकों में कत्थेको स्तंभक माना है । पत्तोंका क्वाथ करके देनेसे मूत्रस्थानके रोग नष्ट होते हैं, और रुधिर शुद्ध होताहै । **हिन्दुस्तानी मनुष्य** कत्थेको शीतल, ग्राही और पाचक गिनते हैं । तथा गलेके भीतरके रोगोंमें मुखकी गरमी, फूले मसूड़े, खांसी, दस्त और शूलके रोगोंमें उपयोगी मानते हैं । पुराने नासूर, फोड़े और गांठपर इसको पीसकर लेप करते हैं । कत्थेको और दवाओंके साथ मिलायके देनेके वास्ते **शार्ङ्गधर**, **चक्रदत्त** और **भैषज्यरत्नावली** आदि ग्रंथोंमें बहुतसे योग वर्णन करेहैं ।

मुसलमानी ग्रंथोंमें—भी ऊपर कहेहुए सब गुण कत्थेमें माने है । खैरकी लकड़ीके प्राचीन गर्भमेंसे छोटे छोटे टुकड़े और लकड़ीके लाल टुकड़े मिले हुए आते हैं, उनको **खैरसारके** नाम से कहते हैं । उस खैरसारका स्वाद मीठा और कषैला होता है । तथा देशी दवाओंमें उसको छातीके रोगोंमें अत्यंत बेश कीमती माना गया है । इससे कफ जुदा होकर निकलता है । कत्थ और हीराबोल इन दोनोंके योगको **काथबोल** कहते हैं । तथा प्रसूत होनेके बाद स्त्रियोंको कुव्वत आनेके वास्ते तथा स्तनोंमें दूध बढानेके लिये दिया जायहै ।

रक्तातिसार रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदरको दूर करे। बं. गोंदको गंद कहते हैं। *

रीठा.

अरिष्टकस्तुमांगल्यःकृष्णवर्णोऽर्थसाधनः।
रक्तबीजःपीतफेनःफेनिलोगर्भपातनः॥ ३२॥
अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नोग्रहजिद्गर्भपातनः।

अर्थ–अरिष्टक, मांगल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल और गर्भपातन, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** रीठा, **म.** रिठा, **तै.** कुंकुड, **गु.** अरीठा, **फा.** फिंदकहिन्दी, **अ.** बुंदक, **ला.** सेपिंस्त इमार्जिनटस् **अं.** सोपबेरी, सोपनट्। यह वृक्ष विश्वपत्र, मंजरीकफूल और गुच्छफलवाला होताहै। **गुण।** **रीठा**–त्रिदोषनाशक, स्कन्दादिग्रहोंको जीते और गर्भको गिराता है।

जीयापोता.

पुत्रजीवोगर्भकरोयष्टीपुष्पोऽर्थसाधकः।
पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भदःश्लेष्मवातहृत्॥
सृष्टमूत्रमलोरूक्षोहिमःस्वादुःपटुःकटुः।

अर्थ–पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टीपुष्प और अर्थसाधक ए **संस्कृत**नाम। **हिं.** जीआपोता पिताजिया, **बं.** जीयापति, **म.** पुत्रजीववृक्ष, **तै.** कुंवरजुवि, पुत्रजीवा **ला.** एक्सबुर्घिआई। **गुण।** भारी, बलकर्त्ता, गर्भदायक, कफवात हरण कर्त्ता, मलमूत्रको करनेवाला, रूखा, स्वादु, शीतल, निमकीन और चरपरा है।

* **राजनिघंटुमें**—लिखताहै कि बबूरकी फलियोंमें से कालारंग निकलताहै, औषध तरीके छालका सत्त्व चीकना और ग्राही तरहसे व्यवहारमें आताहै। जाडेमें आम पडती होय तो इसके पत्ते दिये जातेहैं। फलियोंको खासीके रोगमें देते हैं। बबूलका गोंदभी बहुत उपयोगमें आताहै। तथा नरमडालियोंकी छाल अधिक रेशेवाली है इससे कागज बनसके ऐसी है।

मखजनउल्अद्वियाकाकर्त्ता—लिखताहै कि जिसको फारसीमें अमुधीलान् अथवा मुधीलान् कहतेहैं कि वह पीलाइलिये सफेदरंगका चमकता और पानीमें सब पिगल जाताहै; स्वच्छ चिकना मिश्री-बनाने योग्य होना चाहिये।

मुसलमानीहकीम—बबूलके गोंदको दवाके तरीके उपयोग करतेहैं। और इसको छातीकी पीडा मिटानेवाला, कुव्वत देनेवाला और नम्रता देनेवाला मानते हैं।

इंग्रेजी दवासें—जो मतहै उससे कोई गुण नहीं मिलते बबूरकी फलियोंका रस विकालके उसका सत्त्व निकालतेहैं. उसको फारसीमें तथा अरबीमें **अकाकिया** कहतेहैं। यह पदार्थ भारी, कठोर और खुशकारक और वासवाला होना चाहिये। इसके छोटे टुकडेको उजेलेमें देखा जाय तो कुछ २ नीलास लिये दीखहै। यदि वह टुकडा बडा होय तो इसका रंग काला दीखनेमें आताहै। यह शीतल, ग्राही और पाचक गिना जाताहै। आंखमेसे अत्यंत कीचड अथवा राध निकलती होयतो इसको आंजतेहैं। इसे पानीमें गलायके मुखपर लगानेसे चमडीका रंग सुधारताहै। इसको अंडेकी सफेदीके साथ मिलायके जलीहुई चमडीपर लेप करने से उत्तम असर करताहै। **आकाकिये** के चूर्णको बुरकनेसे घाव होनेसे जो नस कटगईहैं उनसे बहताहुआ रुधिर बंद होय।

धन्वंतरिनिघंटुमें—लिखाहै कि बबूलकी छाल अत्यंत ग्राही है। तथा पाचनशक्ति बढानेके लिये वैद्य देते हैं, तथा इंग्रेजी दवा ओककी छालके पलटेमें लीनी जातीहै। इसका क्वाथ घाव धोनेमें वर्त्तनेसे जल्दी अंकुर लायके भर जाताहै। बबूरके गोंदमें लाल किरमका गोंद अत्यंत गुणकारी गिना जाताहै। यह खांसी और संधिवातके सदृश रोगोंमें वर्त्ती जायहै, तथा पेशाबमें शक्करके समान पदार्थ निकलता होय तो यह खाया जाताहै। जिस नासूरमेंसे पीले रंगका पानी बहता होय उसके वास्ते कोमल बबूलके पत्तोंकी पुलटिश अत्यन्त गुण करे है। फलीभी खांसीके रोगमें उपयोगी है। **देशीलोग** बबूलके गोंदको तिलके साथ मिलायके खातेहैं

इंगुदी.

इंगुदोऽङ्गारवृक्षश्चतिक्तकस्तापसद्रुमः ।
इंगुदःकुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रमीन् ॥
हंत्युष्णश्चित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ॥

अर्थ–इंगुद, अंगारवृक्ष, तिक्तक, तापसद्रुम, ए **संस्कृत**नाम, **हिं.** हिंगोट **म.** हिंगणबेट, **दे.** डडिंगण, **गु.** इंगोरियो, **तै.** गरा, **ला.** बेलेनाईटिस् एक्स बुधिआई, **इं.** डेतिल कहतेहैं । **गुण** । गरम, कडवी, पचनेके समय चरपरी । **प्रयोग** । कोढ, भूतादिबाधा, ग्रह, व्रण, विष, कृमिरोग, चित्रकुष्ठ और शूल इनको दूर करे । *

जिंगनी.

जिंगिनीझिंगिनीझिंगीसुनिर्यासाप्रमोदिनी ।
जिंगिनिमधुरासोष्णाकषायाव्रणशोधिनी ॥
कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः ॥

अर्थ–जिंगिनी, झिंगिनी, झिंगी, सुनिर्यासा और प्रमोदिनी ए **संस्कृत**नाम । **हिं. बं.** जिंगनिया, **म.** मोय, सिमटी, **गु.** मोलेहु-मवेडी, **का.** श्रोरीथ, मरम, **ला.** ओडिनावोडियर । **गुण** । मधुर, गरम, कषेली, कटु, निमकीन, व्रणको शोधन करे । **प्रयोग** । व्रण, हृदयरोग और वातातिसार इनको हरण करे ।

तमाल.

तमालःशालवद्वेद्योदाहविस्फोटहृत्पुनः ।

अर्थ–तमालको हिंदीमें श्यामतमाल वा पसेंदू कहतेहैं । **बं.** तमालवृक्ष, इसमें शालके समान गुण जानने ।

तूणि.

तूणीतुन्नकआपीनस्तुणिकःकच्छकस्तथा ।
कुठेरकःकांतलकोनंदिवृक्षश्चनंदकः ॥ ३८ ॥
तुणीरक्तःकटुःपाकेकषायोमधुरोलघुः ।
तिक्तोग्राहीहिमोवृष्योव्रणकुष्ठास्रपित्तजित् ॥

अर्थ–तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कांतलक, नंदिवृक्ष और नंदक ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** तून, **बं.** तुंदवृक्ष, **म.** नांदुरखी, **कों.** नांदरुख । **गुण** । लालरंग, पाकमें चरपरी, कषेली, मधुर, हलकी, कड़वी, ग्राही, शीतल, बलकर्त्ती । **प्रयोग** । व्रण, कोढ़ और रक्तपित्तको दूर करे ।

भोजपत्र.

भूर्जपत्रःस्मृतोभूर्जेचर्मीबहुलवल्कलः ।
भूर्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ॥
कषायोरक्षसघ्नश्चमेदोविषहरःपरः ॥ ४० ॥

अर्थ–भूर्जपत्र, भूर्जचर्मी और बहुलवल्कल ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** भोजपत्र, **बं.** भूर्जपत्र, **इं.** जेकमोर्टा, **ला.** विट्यूला, भोजपत्रा । **गुण** । यह कषेला है तथा भूतबाधा, कफ, कानके रोग, रक्तपित्त और राक्षसनाशक, मेदरोग और विषको दूर करे ।

पलाश (ढाक).

पलाशःकिंशुकःपर्णोयज्ञियोरक्तपुष्पकः ।
क्षारश्रेष्ठोवातहरोब्रह्मवृक्षःसमिद्वरः ॥ ४१ ॥
पलाशोदीपनोवृष्यः सरोष्णोव्रणगुल्मजित् ।
कषायःकटुकस्तिक्तःस्निग्धोगुदजरोगजित् ॥
भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन्हरेत् ।
तत्पुष्पंस्वादुपाकेतुकटुतिक्तंकषायकम् ॥४३॥
वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहिशीतलम् ।
तृड्दाहशमकंवातरक्तकुष्ठहरंपरम् ॥
फलंलघूष्णंमेहार्शःकृमिवातकफापहम् ।
विपाकेकटुकंरूक्षंकुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ॥ ४५ ॥

अर्थ–पलाश, किंशुक, पर्ण, यज्ञिय, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातहर, ब्रह्मवृक्ष और समिद्वर ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** पलास, ढाक, **रा.** छीला, केसूला, **उडि.** पराशु, **ता.** परसन्, **गु.** खाखरो, **क.** मुत्तुग, **तै.** मातुका चेट्टु, **ला.** डाउनी ब्रांच ब्युटिया । विशेष यज्ञादिकमें इसकी समिधा हवन करी जाती हैं । **गुण** । दीपन, बलकर्त्ता, दस्तावर, गरम कषेला, चरपरा, कड़वा, स्निग्ध । **प्रयोग** । व्रण, गोलेके और गुदाके रोगको नष्ट करे । तथा टूटे हाड़को जोड़े, वातादि दोष, संग्रहणी, बवासीर और कृमि इनको हरण करे । **पलासका फल** । पाकमें स्वादिष्ट, कटु, तिक्त और

* **सुश्रुतसंहितामें**—हिंगोटके फलके गूंदको मेदकफहर, योनिदोषहर और गुल्मनाशक मानाहै ।

कषेला, वातकारी, ग्राही, शीतल, कफपित्त, रक्तके विकार, मूत्रकृच्छ्र, तृषा, दाह, वातरक्त, और कोढ़ इनको हरण करे। **पलासके फूल**। हलके, गरम, पाकमें चरपरे, रूखे। **प्रयोग**। प्रमेह, बवासीर, कृमि, वातकफ, कोढ़, गोला और उदररोग इनको दूर करे।*

समर.

शाल्मलिस्तुभवेन्मोचापिच्छिलापूरणीतिच
रक्तपुष्पास्थिरायुश्चकंटकाढ्याचतूलिनी॥
शाल्मलीशीतलास्वाद्वीरसेपाकेरसायनी॥
श्लेष्मलापित्तवातास्रहारिणीरक्तपित्तजित्॥

अर्थ–शालमलि, मोचा, पिच्छिला, पूरणी, रक्तपुष्पा, स्थिरायु, कंटकाढ्या और तूलनी ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** सेमर–ल, **बं.** सिमुल, **म.** सेमला, सांवर, **गु.** शीमलो, **इं.** बोम्बेक्स मेलबारीकम् Bombax malabaricum कहतेहैं। **तै.** रगचेट्ट, **ता.** पुला, **उ.** बोनरी, **का.** बलदमर, **अं.** सिल्क कान्ट्री। **स्वरूप**। इसके बड़े २ वृक्ष पर्वती, जमीनमें होतेहैं, इस वृक्षकी डालियोंपर कांटे होतेहैं, डांठरेके छोरपर अनीदार पांच पांच **पत्ते** होतेहैं। **फूल** बड़ा कसूमी लालरंगका पांच पखड़ीवाला होताहै इसमें बहुत पुंकेशर स्त्रीकेशर होतेहैं। **फल** छोटा केलाके आकारका भीतरसे अत्यंत कुमासदार

* **चरकमें**—कफसंशमन, व्रणशोधन और कुष्ठप्रशमन वर्णन कराहे।

चक्रदत्तमें—पलास (ढाक) को ग्राही तरीकेसे लगाना लिखाहै। तथा वर्तनमें अन्यग्राही पदार्थ और सैंधेनिमक के साथ मिलातेहैं। यह योग आंखमें जाला झाईपड़ी होय तो वर्त्ता जायहै।

मखजनउलअद्वियाकाकर्त्ता—पलासके पत्ताको ग्राही, पौष्टिक और कामोत्तेजक कहताहै, और कहताहै, कि उसको फोड़ा, मुहासे आदि दूर करनेको लगातेहैं। तथा पेटमें वादीके कारण से ऐंठन होती होय, कृमि तथा बवासीर रोगमें खानेकी प्रशंसा करताहै। सफेदजातके फूल ग्राही, मूत्रवर्धक, तथा काम उत्पन्नकर्त्ता मानतेहैं, और पुलटिशके तरीके बांधनेसे सूजन उतर जाताहै, पेशाब और रजोदर्शको अधिक करताहै।

डाक्टर ऐनसली—कहताहै कि मदरासके इलाकेमें तामिलवैद्य पेटके गोल तथा चपटे कीड़े निकालनेको पलासपापड़ोंका चूर्ण २॥ रुपे भरकी मात्रासे दिनमें २ दफे देतेहैं।

होरटस-मलबारीकस—नामकी पुस्तकमें लिखाहै कि पलासकी छाल, सोंठकेसाथ मिलायके सांपकेकाटे प्राणीको देते हैं।

डाक्टरसेरवुड़—पलासकेबीज शोरेके साथ ओटायके देशीवैद्य पेशाबकी थैलीमें होनेवाली पथरीके वास्ते देते हैं, हालमें इस वृक्षका गोंद इंग्रेजी दवाईमें वर्त्ता जाताहै। पलासपापड़ेको नीबूके रसमें पीसकर शरीरपर लगानेसे चमड़ी लाल होजातीहै और खुजली जाती रहे।

डा० रोकसवर—कहता है कि फूलकारस गरमीसे गाढ़ा करके उसमें थोड़ीसी फिटकरी डालनेसे रंगनेके वास्ते रेवतचीनीके दूधसे भी अधिक चमक देनेवाला रंग आताहै। अतएव वह कहता है कि सूखे फूल में से काढ़ा हुआ सत्त्व ताजे फूलकासा उत्तम नहीं निकले, यह सत्त्व बहुत दिन रखने से बिगड़ता नहीं है।

सुश्रुतमें—उसको रक्तपित्तहर, तथा योनिदोषहर, माना है। **गोंद** एकसे दोरत्तीकी मात्रा में देनेसे अतिसार और पीले रुधिरका दस्त बंद होताहै। बीजोंको पीसके लगाने से दाद जाती रहती है, मूत्र यदि कठिनतासे उतरता होय उस समय फूलको पानी में ओटायके सेक करनेसे आराम होता है। इस वृक्ष के ऊपरकी लाखभी बहुत समय मिलीहुई आतीहै, इस वृक्षके लकड़ीके कौले बंदूककी दारूके बनाने में बहुत वर्ते जातेहैं। जड़की छाल निकालके उसके बड़े मजबूत डोरे बनाते हैं और होली आदि त्यौहारों में केसूके फूलका रंग बहुत वर्तने में आताहै।

चरकमें—पलासपापड़ को संधानीय (ग्राही) पुरीषसंग्रहण (मलबद्धकरनेवाला) तथा वेदना स्थापनकर्त्ता मानाहै। तथा **सुश्रुतमें** उसको योनिदोषहर तथा शुक्रशुद्धिकर (वीर्यके शोधनकर्ता) माना है।

होताहै। **चित्र** २६ नंबरका देखो। **गुण**। शीतल, रस और पाकमें स्वादिष्ट, रसायन, कफकारी, पित्त वादीका नाशक और रक्तपित्तको हरण कर्त्ता है।

मोचरस.

निर्यासःशाल्मलेःपिच्छोशाल्मलीवेष्टकोऽपिच
मोचास्रावोमोचरसोमोचनिर्यासइत्यपि ॥
मोचास्रावोहिमोग्राहीस्निग्धोवृष्यःकषायकः।
प्रवाहिकातिसारामकफपित्तास्रदाहनुत् ॥

अर्थ-सेमर के गोंद के शाल्मलीनिर्यास, पिच्छा, शाल्मलीवेष्टक, मोचरस, मोचास्राव और मोचनिर्यास ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** मोचरस, **म.** सावरीचा डीक। **गुण**। **मोचरस**-शीतल, ग्राही, स्निग्ध, वृष्य, कषेला। **प्रयोग**। प्रवाहिका, अतिसार, आमवात, कफ, रक्तपित्त और दाह इनको दूर करे।

कूटशाल्मलि.

कुत्सितःशाल्मलिःप्रोक्तोरोचनः
कूटशाल्मलिः।
कूटशाल्मलिकस्तिक्तःकटुकःकफवातनुत् ॥
भेदुष्णःप्लीहजठरयकृत्गुल्मविषापहः।
भूतानाहविबंधास्रमेदःशूलकफापहः ॥ ५१ ॥

अर्थ-सं. कुत्सित शाल्मलि, रोचन और कूटशाल्मलि, **हिं.** कालसेमर, **म.** कालीसांवरी। यह सेमरका भेद है। **गुण**। कड़वा, चरपरा, दस्तावर और गरम है। **प्रयोग**। कफ वातके रोग, प्लीह, उदर, यकृत् (कलेजा) गोला, विष, भूतबाधा, अफरा, विबंध, रुधिरके विकार, मेदरोग, शूल और कफ इनको नष्ट करे।

धौं (धव).

धवोघटोनंदितरुःस्थिरोगौरोधुरंधरः।
धवःशीतःप्रमेहार्शःपांडुपित्तकफापहः ॥
मधुरस्तुवरस्तस्यफलंचमधुरंमनाक् ॥५२॥

अर्थ—धव, घट, नंदतरु, स्थिर, गौर और धुरंधर ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** धौ, **बं.** धाओयावृक्ष, **म.** धावड़ा। **गुण**। शीतल, मधुर और कषेला। **प्रयोग** प्रमेह, बवासीर, पांडुरोग, पित्त और कफको नष्ट करे। इसका फल कुछ २ मीठा है।

धामिन.

धन्वंगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्षःसुतेजनः।
धन्वंगःकफपित्तास्रकासहृत्तुवरोलघुः ॥
बृंहणोबलकृद्रूक्षःसंधिकृद्व्रणरोपणः ॥५३॥

अर्थ-सं. धन्वंग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष और सुतेजन, **हिं.** धामिन, **बं.** धाओयावृक्ष भेद, **म.** धामिणीचा वृक्ष, **गु.** धामण। **गुण**। कषेला, हलका, बृंहण, रूक्ष। **प्रयोग**। कफ, पित्त, रुधिर, खांसी, इनको हरण करे, संधिकर्त्ता, (मिलाने वाला) और व्रणरोपण कर्त्ता है।

करीर,

करीरःक्रकरीपत्रोग्रन्थिलोमरुभूरुहः।
करीरःकटुकस्तिक्तःस्वेद्युष्णोभेदनःस्मृतः ॥
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ ५४ ॥

अर्थ-करीर, क्रकरीपत्र, ग्रन्थिल और मरुभूरुह ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** करील, **म.** चढ़ भारंगी, **गु.** केरडो। यह क्षुपजातिका वृक्ष उजाड़ में बहुत होताहै, इसके फलको **टैंटी** कहतेहैं। और फूल लालरंगका होता है, यह अपत्रवृक्ष है। **गुण**। **करील**-चरपरा, कड़वा, पसीना लानेवाला, गरम, भेदन (दस्तावर)। **प्रयोग**। बवासीर, कफ, आमवात, विष, सूजन और व्रणको दूर करे।

सहोरा.

शाखोटःपीतफलकोभूतावासःखरच्छदः।
शाखोटोरक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित् ॥

अर्थ-शाखोट, पीतफलक, भूतावास और खरच्छद ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** साहोड़ा (रा) **बं.** श्याओड़ा, **म.** सहोड, **गु.** साहोडा, **ता.** मारिणीके चेट्टू, **लं.** स्ट्रेप्ल्यूसांसपर। **गुण**। रक्तपित्त, बवासीर और वातकफके अतिसार को दूर करे।

वरना.

वरुणोवरणःसेतुस्तिक्तशाकःकुमारकः ॥
वरुणःपित्तलोभेदीश्लेष्मकृच्छ्राश्ममारुतान्

निहंतिगुल्मवातास्रकृमींश्चोष्णोऽग्निदीपनः
कषायोमधुरस्तिक्तःकटुकोरूक्षकोलघुः ॥

अर्थ-वरुण, वरण, सेतु, तिक्तशाक और कुमारक ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** वरना, **बं.** वरुण, **म.** वायवरना, **कों.** हाडवर्णी, **गु.** वरणो, **का.** मदवसले, **ता.** मरलिंगम्, **तै.** उरुमट्टी, **ला.** क्रेटिया रोक्स बुर्धि अई। **गुण**। कषाय, मधुर, तिक्त, कटुक, रूक्ष, हलका, पित्तकर्त्ता, दस्तावर, गरम और अग्निदीपक है। **प्रयोग**। इसका फल, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वादी, गोला, वातरक्त और कृमि इनको नष्ट करे।

कटभी.

कटभीस्वादुपुष्पश्चमधुरेणुःकटंभरः।
कटभीतुप्रमेहार्शोनाडीव्रणविषकृमीन् ॥ ५७ ॥
हंत्युष्णाकफकुष्ठघ्नीकटूरूक्षाचकीर्तिता ।
तत्फलंतुवरंज्ञेयंविशेषात्कफशुक्रहृत् ॥ ५८ ॥

अर्थ-कटभी, स्वादुपुष्प, मधुरेणु और कटंभर, ए **संस्कृत** नाम। हिन्दीआदिभाषाओंमें कटभी नामसे प्रसिद्ध है। **गु.** वापुंगा **का.** वेल्लाल, **अं.** केरिसट्री **ला.** केरिहा आर्वोरिया। **गुण**। **कटभी**-गरम, कटु, रूक्ष, **प्रयोग**। प्रमेह, बवासीर, नाडीव्रण (नासूर) विष, कृमि, कफ और कुष्ठ इनको नष्ट करे। **कटभीका फल**-कषेला और विशेष करके कफ, शुक्रको हरण करे है।

मोखावृक्ष.

मोक्षस्तुमोक्षकोऽपिस्याद्गोलीढोगोलिहरतथा।
क्षारश्रेष्ठःक्षारवृक्षोद्विविधःश्वेतकृष्णकः ॥
मोक्षकःकटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णःकफवातहृत्।
विषमेदोगुल्मकंडुवस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत् ॥ ६० ॥

अर्थ-सं. मोक्ष, मोक्षक, गोलीढ, गोलिह, क्षारश्रेष्ठ और क्षारवृक्ष, यह दो प्रकार का है एक—सफेद और दूसरा कृष्ण। **हिं.** मोखावृक्ष, **बं.** घंटापारुल, **तै.** मोकपु चेट्टु **गु.** जवरियो खाखरो, **ला.** स्कीबी रालाटेनि ओईविस्। इस वृक्षसे क्षार बनाया जाता है। यह पहाडी दरखत ढाकके समान होता है। **गुण**। **मोक्षवृक्ष** चरपरा, कडवा, ग्राही, गरम और कफवातनाशक। **प्रयोग**। विषविकार, मेदा, गोला, खुजली, बस्तिके रोग, कृमिरोग और शुक्रनाशक है।

ढाढोनि (जलशिरीषिका).

शिरीषिकाठिरिठरिकादुर्बलांबुशिरीषिका।
त्रिदोषविषकुष्ठार्शो[illegible]शिरीषिका ॥ ६१ ॥

अर्थ-शिरीषिका, ठिठिरिका, दुर्बला और अंबुशिरीषिका, ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** ढाढोनि, **म.** जलशिरिसी, **गु.** जलसरसडिओ कहते हैं। **गुण**। त्रिदोष, विष, कुष्ठ, बवासीर इनको जलशिरीषिका दूर करे।

छोंकरा (शमी).

शमीशक्तुफलातुंगाकेशहंत्रीफलाशिवा।
मंगल्याचतथालक्ष्मीःशमीरःसाऽल्पिकास्मृता ॥ ६२ ॥
शमीतिक्ताकटुःशीताकषायारेचनीलघुः।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित्स्मृता ॥

अर्थ-शमी, शक्तुफला, तुंगा, केशहंत्रीफला, शिवा, मंगल्या, लक्ष्मी, शमीर और अल्पिका ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** छोंकरा, **बं.** शाइकावला, **म.** शमी, **गु.** खीजडी, **तै.** समीरु, **उ.** शुमी, **इं.** स्पंट्री, **ला.** प्रोसोपिस स्पाइसिजेरा, **का.** बनि। यह छोटे-बडेके भेदसे दोप्रकारका वृक्ष है। इसके **फल** सैंगरीके समान लंबे होते हैं, इसी से इनको **सैंगर** कहते हैं। इन का साग और अचार बहुत उत्तम बनता है। **गुण**। कड़वी, चरपरी, शीतल, कषेली, दस्तावर और हलकी। **प्रयोग**। कफ, खांसी, भ्रम, श्वास, कोढ, बवासीर और कृमिरोगको नष्ट करे।

सतवन.

सप्तपर्णोविशालत्वक्शारदोविषमच्छदः।
सप्तपर्णोव्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित् ॥
दीपनःश्वासगुल्मघ्नःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः।

अर्थ-सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद और विषमच्छद ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** सतवन, सतोना, **बं.** छातिम, **म.** सातविण, **गु.** सातविण, **का.** एलेलेग, **तै.** एडाकुल, **ला.** आलस्टोनिया स्कॉलारीस। इस वृक्ष के **पत्ते** सात खूटवाले होते हैं और यह शरद ऋतुमें फूलता है **गुण**। सप्तपर्ण-कषेला, दस्तावर, दीपन,

स्निग्ध और उष्ण। प्रयोग। व्रण, कफ, वात, कोढ, रुधिर विकार, कृमिरोग, श्वास और गोला, इनको दूर करे। इसकी छाल प्रयोगमें लेते हैं। स्वाद कडवा है।*

तिनिश (तिरिच्छ).

तिनिशःस्यंदनोनेमीरथद्रुर्वंजुलस्तथा।
तिनिशःश्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित्।
तुवरश्चित्रदाहघ्नोव्रणपांडुकृमिप्रणुत् ॥ ६५ ॥

अर्थ-तिनिश, स्यंदन, नेमी, रथद्रु और वंजुल, ए संस्कृत नाम, हिं. तिरिच्छ, म. तिवस, गु. ह-र्मो, ला. यूजिनियाडालबजियाँ ओऽडिम् कहते हैं। गुण। कषेला है, सेवन करने से कफ, पित्त, रुधिर-विकार, मेदरोग, कोढ, प्रमेह, चित्रकोढ, दाह, व्रण, पांडु और कृमिरोगको दूर करे।

भूंइसह.

भूमीसहोद्धारदारुर्नरिदारुःखरच्छदः।
भूमीसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनः ॥६६॥

अर्थ-भूमीसह, द्धारदारु, नरिदारु और खरच्छद

* सुश्रुतग्रंथमें-सरदीके ज्वरपर नीचे लिखे मूंजब इलाज वर्णन कराहै। कि सतवनकी छाल, गिलोय, नीमके भीतर की छाल सब दो दो तोले लेय सबको एककर क्वाथकरे इस क्वाथको पीने में वर्त्तना चाहिये। त्वचारोगमें बहुतसे योगोंमें इस छालको डालते हैं। इस वृक्ष के विषय में देशीमनुष्योंका ऐसा भ्रम है कि जंगलके सब वृक्ष वर्ष दिन में, एक दिन उसको मान देने के वास्ते उस के पास आते हैं. इसवीसन् १६७८ में मेष्टिररीडे और इसवीसन् १७४१ में रमपीअसने इस वृक्षका चित्र प्रगट किया देशी वैद्य उस को औषध के तरीके वर्त्तते हैं, इस प्रकार कहा है। इसके बाद सन् १८३६ में मि. निमोयाने इसके पाचनशक्तिवर्द्धक और ज्वरनाशक गुण प्रकट करे। डा. गिवसन इसवी सन् १६५३ में उस के गुणों का वर्णन फारमेक्युटिकल जनरलमें छपाया था।

इंग्रेजी औषधोंमें—इसको ग्राही, पाचनशक्तिवर्द्धक, पेटके कीडे निकालनेवाला और ज्वरनाशक मानते हैं। मनीलाका—एक ग्रूप नामक वैद्यने इसकी छाल में से डिएटीन नामका स्फाटिक नहीं बंधे ऐसा सत्व तलाश करके निकालाहै।

अमेरिकाके फारमेक्यूटीकल ऑसोसिएशन—इसवी सन् १८७७ की रिपोर्टमें लिखताहै कि यह वृक्ष ल्यूझोनके टापू में जंगली उत्पन्न होताहै। वहां के रहनेवाले मनुष्य उसको डीटा नाम से बोलते हैं। उस देशवाले उसको पाचनशक्तिवर्द्धक और ज्वरनाशक मानते हैं। वारम्वार आनेवाले तथा बहुत दिन के अंतर देकर और सरदी की हवा में उत्पन्न होने वाले ज्वर में इस औषध को सदा से वर्त्तते हैं। तथा इस के परिणाम बहुत संतोषकारी हुए थे इस रिपोर्ट से बडे बडे विद्वान् इंग्रेज वैद्यों का ध्यान इस की तरफ खींचा गया है। तथा हाल में ऊपर कहा हुआ सत्व उत्तम से उत्तम कौनिन के समान गुण कर्त्ता मानते हैं। और इस कारण विलायत से बहुत मंगाया जाता है। कौनेन और डीएटीनसत्व दोनों एकसी मात्रा से दिये जाते हैं। और दोनों का एकसाही परिणाम होता है। तथा कौनेन से अधिक फायदा यह होता है कि कौनेन अधिक देने से बेहरापना उत्पन्न करता है, नींद नहीं आवे, इत्यादि परिणाम इस पदार्थ से नहीं होते। तथा इसका असर बहुत जल्दी निश्चय से और कभी निष्फल नहीं जाय। छोटे छोटे बच्चों के वास्ते इस सत्वकी मात्रा आधा ड्राम और बडे के लिये ३ ड्राम सब दिन के वास्ते है। यह मात्रा देती वक्त अवश्य करके अवस्था, जाति प्रकृति आदि विचारना अति आवश्यक है। पुलटिश के रूप में भी यह पदार्थ वर्त्तने से फायदाकारक असर होता है। बनाने की यह विधि है कि-सतोना की छाल और कोनिफलोर अथवा चून ए दोनों प्रत्येक आध आध सेर को गरम जल में मिलाय के खील के समान करे और कपडे के ऊपर फैलाय के बगल में हाथ की संधियों में और पांवोंके ऊपर लगाय के अच्छी तरह सूख जाने के बाद बदलता रहे। इस प्रकार असर होय वहां तक लेप करे और सुलावे। लश्करी अस्पतालों में डीटाइन कौनेन के बदले बर्त्ती

ए संस्कृतनाम, हिं. भूंइसह, म. सागवन, गु. साग, क. नेगु । **गुण** । शीतल और रक्तपित्तको शुद्ध करनेवाला है ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ
वटादिवर्गः

आम्रादिवर्गः

आम्र.

आम्रःप्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभः ।
कामांगोमधुदूतश्चमाकंदःपिकवल्लभः ॥ १ ॥
आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असृग्दुष्टिहरंशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम् ॥
आम्रंबालंकषायाम्लंरुच्यंमारुतपित्तकृत् ।
तरुणंतुतदत्यम्लंरूक्षंदोषत्रयास्रकृत् ॥ ३ ॥
आम्रमामंत्वचाहीनमातपेऽतिविशोषितम् ।
अम्लंस्वादुकषायंस्याद्भेदनंकफवातजित् ॥४॥
पक्वंतुमधुरंवृष्यंस्निग्धंबलसुखप्रदम् ।
गुरुवातहरंहृद्यंवर्ण्यंशीतमपित्तलम् ॥ ५ ॥
कषायानुरसंवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् ।
तदेववृक्षसंपक्वंगुरुवातहरंपरम् ॥ ६ ॥
मधुराम्लरसंकिंचिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम् ।
आम्रंकृत्रिमपक्वंचतद्भवेत्पित्तनाशनम् ॥ ७ ॥
रसस्याम्लस्यहीनस्तुमाधुर्याच्चविशेषतः ।
चूषितंतत्परंरुच्यंबल्यंवीर्यकरंलघु ॥ ८ ॥
शीतलंशीघ्रपाकिस्याद्वातपित्तहरंसरम् ।
तद्रसोगालितोबल्योगुरुर्वातहरःसरः ॥ ९ ॥
अहृद्यस्तर्पणोऽतीवबृंहणःकफवर्द्धनः ।
तस्यखंडंगुरुपरंरोचनाच्चिरपाकि च ॥ १० ॥
मधुरंबृंहणंबल्यंशीतलंवातनाशनम् ।
वातपित्तहरंरुच्यंबृंहणंबलवर्द्धनम् ॥ ११ ॥
वृष्यंवर्णकरंस्वादुदुग्धाम्रंगुरुशीतलम् ।
मंदानलत्वंविषमज्वरंच
रक्तामयंबद्धगुदोदरंच ॥
आम्रातियोगोनयनामयवा
करोतितस्मादतितान्निनाद्यात् ॥ १२ ॥
एतद्भल्लाम्रविषयंमधुराम्लपरंनतु ।
मधुरस्यपरंनेत्रहितत्वाद्याद्गुणायनः ॥ १३ ॥
शुंठ्यांभसोऽनुपानस्यादाम्राणामतिभक्षणा ।
जीरकंवाप्रयोक्तव्यं सहसौवर्चलंनच ॥ १४ ॥

अर्थ–आम्र, रसाल सहकार अतिसौरभ, कामांग, मधुदूत, माकंद और पिकवल्लभ ए आम्र के संस्कृत नाम हैं । **हिं.** आम, **म.** आंबा, **गु.** आंबो, **का.** माविन, **तै.** मांमीडी चेट्टु, **अ.** अंबा, **फा.** अंबे, **इं.** मंगोट्री mango tree कहते हैं । **स्वरूप** । आमके अनीदार और आधसे एक फुटतक लंबे **पत्ते** होते हैं । **फूलका** मोर गुच्छादार होताहै । **फल** (आम) जगप्रसिद्ध उत्तम मेवा है । औषधी में मुख्य इसकी गुठली काममें आतीहै । **चित्रनंबर** ३० का देखो । **गुण** । आमका पुष्प (बोर) अतिसार, कफ, पित्त और प्रमेहको दूर करे । तथा रुधिरकी दुष्टता हरण करे । शीतल, रुचिकारी, ग्राही और बादल है । **कच्चा अमियां** । कषेली, खट्टी, रुचिकारी, बादी और पित्तको करे है । **तरुणआम** अर्थात् बड़ा और बिना

जातीहै । प्राचीन दस्तोंमें और मरोड़की बीमारीमें भी यह छाल उत्तम असर करैहै । तथा ज्वर आनेके पीछे पेटकी पाचनशक्ति न्यून होगई होय उसको सुधारे ।

चरकसंहितामें-- रस, बीज और छालको वातपित्त-प्रशमन, कुष्ठहर, उदर्दप्रशमन और शीतनिवारण वर्णन कराहै ।

सुश्रुतसंहितामें--इसको कफवातप्रशमन, अरुचिहर, गुल्मशूलहर, आमपाचक और उदर्दवात प्रशमन वर्णन कराहै । **छाल** कुछ सुगंधित, गरम, कसेली तथा कड़वी होती है । तथा खाने से थोड़ा जुलाब होकर भूख लगती है । ज्वर मिटजाताहै । तथा सूजन और शूल नष्ट होजाताहै, ऊपर कहे हुए [illegible] **न सत्त्व** के सिवाय छालमें से **इकायडीमीन** और **इकाडीनीन** नामक दो और भी सत्त्व निकलते हैं ।

पकाहुआ अत्यंत खट्टा, रूक्ष, त्रिदोष और रुधिर के विकार को करे है । **अमचूर** । कच्चे आम के ऊपरका छिलका छील फिर कतरके धूप में सुखाय ले इसको हिन्दी में **अमचूर** कहते हैं । यह खट्टा, स्वादु, कसेला दस्तावर और कफ वातको जीते हैं । **पका हुआ आम** । मधुर, वृष्य, स्निग्ध, बल और सुखको देता है । भारी वात हरण कर्ता, हृदयको हितकारी, देहके रंगको उज्वल करे, शीतल और पित्त को नहीं करता, तथा कसेले रसयुक्त, अग्नि, कफ, शुक्र, इनको बढाने वाला है । वही **आम** यदि वृक्ष पर **पका** होयतो भारी, अत्यंत वात हारक, मधुर और खट्टा, एवं कुछ २ पित्तको कुपित करता है । **कृत्रिम पक्व** । अर्थात् पालका पकाया हुआ आम-पित्तनाशक इस में खट्टा रस थोड़ा और मिठास अधिक होता है । यदि कह **वासित** हो जाय तो परम रुचिकारी, बल कर्त्ता, वीर्यकर्त्ता और हलका है । शीतल, शीघ्र पचनेवाला, वात,पित्त,हरणकर्त्ता और दस्तावर है । **आमका रस** । निचोड़ा हुआ अर्थात् **अमरस**–बलकारी, भारी, वातहरण कर्ता दस्तावर, हृदयको अहित तृप्तिकारी, अत्यंत बृंहण और कफ बढानेवाला है । **आमका टुकड़ा** । भारी, रुचिकारी, देर में पचने वाला, मधुर, बृंहण, बलकारी, शीतल, वातनाशक । **दूधके साथ** आम्र भक्षण करा हुआ वातपित्तनाशक, रुचिकारी, बृंहण बलवर्द्धन, शुक्र संचय और देहके रंगको निखारने वाला । **दुग्धाम्र** अत्यंत स्वादु, भारी और शीतल है । **अत्यंत आम चूसने** से मंदाग्नि, विषमज्वर, रुधिर दोष, अत्यंत कोष्ठरोध, अथवा चक्षुरोग को उत्पन्न करे है । इसी से अधिक आमका चूसना **वर्जित** कहा है । जितने आमके दोष कहे हैं वो सब खट्टे आमके जानने किंतु मीठे आम के खाने से ए संपूर्ण दोष नहीं होते हैं । बहुत आम चूसने के पश्चात् सोंठका जल पीवे, **अथवा** जीरा और काला नोन भक्षण करना चाहिये । *

* **हिंदू और मुसलमानी वैधक ग्रंथों में**—कच्ची तथा पकी कैरीके गुण बहुत वर्णन करे गये हैं । संक्षेप से कहें तो—पक्व फल ताकत लाने वाला, चरबी बढ़ाने वाला, खुश करने वाला, कुछ दस्तलाऊ लाने वाला और पेशाब बढाने वाला माना है परंतु उसकी छाल और कच्चे फल का रेशा ग्राही और खट्टा गिना जाता है । **कच्ची आमी का अचार** पेट को शांति कर्त्ता तथा भूखको प्रदीप्त करता है, कच्ची अमियाको छील उसकी गुठली निकाल बारीक कतर के सुखाय देते हैं, उसको **अमचूर** अथवा **आम्बोसी** कहते हैं । यह खाने में बहुत आता है । साग कढ़ी आदि में डाला जाय है । इस में जो खटाई है वह **साइट्रिक एसिड्** के कारण से है । यह अत्यंत रुधिर को शुद्ध करने वाली है । और हिन्दुस्तान में **आमखुशकना** नाम से बोलते हैं । इसके **फूल गुठली और छाल** शीतल और ग्राही मानते हैं । यह दस्तों की बीमारी आदि में वर्त्ती जाती है । **पत्तों को** जलाय कर इसकी धूनी गले के भीतर के अनेक रोगों को नष्ट करे है ।

मखजन उल अदविया का कर्त्ता—कहता है कि हिन्दुस्तानीम नुग्य कच्चे फल के गूंद को सेक खांडके साथ मिलाय के धर रखते हैं । उसको महामारी या हैजा के रोग में खाते हैं । तथा शरीर में लेप अर्थात् लगाते हैं । और यहभी कहा है कि पत्तों की नसको जलाय नेत्रके पलकों में होनेवाली कील (गुहेरी) वगैरह को निकाल डाले है । **गुठली** को पीस बीससे तीस ग्रेन की मात्रा में देनेसे पेटके कीड़े निकल जाते हैं । तथा दूखते बवासीर के मस्से नष्ट होजाते हैं । **फल** पकता है तब उस में से एक प्रकार का चीकना पदार्थ निकलता है जिसकी गंध **टरपियनटाइन** तेलके सदृश होतीहै । **छाल**में से गोंद निकलताहै वह शीतल जलमें पिघल जायहै ।

डाक्टर पन्स्ली—कहता है कि फलका तेल और छाल का गोंद दोनों पदार्थ नीबू के रस अथवा तेलके साथ मिलाय के खुजली तथा अन्य त्वचा के रोग में वर्त्तते हैं । पकी हुई कैरी के (आम के) रसको सुखाय उसको पतली रोटी के समान बनाते हैं । उसको **आमरस, आमोट, आंबापोली** अथवा **आमकी रोटी** कहते हैं । और उसको स्वादिष्ट वस्तु के माफिक तथा रुधिर सुधारने के वास्ते खाते हैं । **आमकी छाल** को पानी में भिगोय रखें । यह पानी प्रदर और बहती हुई धातु के बंद करने को दी जाती है । कच्चे फलके

आम्रवर्त्त.

पक्वस्यसहकारस्यपटेविस्तारितोरसः ।
घर्मशुष्कोमुहुर्दत्तआम्रावर्तइतिस्मृतः ॥१५॥
आम्रावर्तस्तृषाच्छर्दिवातपित्तहरःसरः ।
रुच्यःसूर्यांशुभिःपाकाल्लघुश्चसहिकीर्तितः ॥

अर्थ–पके हुए मीठे आम के रसको कपड़े पर बिछायके धूप में सुखाय लेवे जब सूख जाय तब फिर उसपर रस डालके सुखावे, इस प्रकार जितना मोटा करना हो उतना रस डालके सुखायले इस को **आम्रावर्त्त** कहते हैं, और **हिं.** आमकी रोटी, अंबावट, **बं.** आम्रसत्त्व कहते हैं। **गुण।** सूर्य की किरनों द्वारा पाक होने से यह हलका और रुचकारी होता है, सेवन करनेसे तृषा, वमन, बादी और पित्तशांति हो। एवं कोष्टस्थित बादी आदि संपूर्ण निकल जावे।

कोइली (आमकी गुठली)

आम्रबीजंकषायंस्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् ॥
ईषदम्लंचमधुरंतथाहृदयदाहनुत् ॥ १७ ॥

अर्थ–आमकी भीतर की गुठली-कषेली, कुछ २ खट्टी, मधुर, **प्रयोग।** वमन, अतिसार और हृदयके दाहको नष्ट करे।

नवपल्लव.

आम्रस्यपल्लवंरुच्यंकफपित्तविनाशनम् ॥

अर्थ–आमके नवीन पत्ते रुचिकारी, कफ और पित्त विनाशक हैं।

अंबाड़ा.

आम्रातकःपीतनश्चमर्कटाम्रःकपीतनः ॥१८॥
आम्रातमम्लंवातघ्नंगुरूष्णंरुचिकृत्सरम् ॥
पक्वंतुतुवरंस्वादुरसेपाकेहिमंस्मृतम् ॥१९॥
तर्पणंश्लेष्मलंस्निग्धंवृष्यंविष्टंभिबृंहणम् ।
गुरुबल्यंमरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥२०॥

अर्थ–आम्रातक, पीतन, मर्कटाम्र और कपीतन, ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** अंबाडा (रा), **बं.** आमडा, **म.** आंबाडा, **तै.** आमटि, **गु.** अंभड़ा, **का.** आंबोडेयकायि, **ला.** स्पोन्डिआस मेंगिफरा। **गुण।** अंबाडा-खट्टा, वातनाशक, भारी, गरम, रुचिकर्ता और दस्तावर है। **पका हुआ**–रस में और पाक में कषेला, स्वादु, शीतल, तृप्तिकारी, स्निग्ध, वृष्य, विष्टंभी बृंहण, भारी, बलकर्त्ता। **प्रयोग।** बादी, पित्त, घाव, दाह, क्षयरोग और रुधिरविकारको दूर करे।

राजाम्र (लताआम.)

राजाम्रष्टंकआम्रातःकामाङ्गोराजपुत्रकः ।
राजाम्रंतुवरंस्वादुविशदंशीतलंगुरु ॥
ग्राहिरूक्षंविबंधाध्मवातकृत्कफपित्तनुत् ॥

अर्थ–राजाम्र, टंक, आम्रात, कामाङ्ग और राजपुत्रक ए **सं.**, **हिं.** राजाम्र, **बं.** लताआम। **गुण।** कषेला, स्वादिष्ट, विशद, शीतल, भारी, ग्राही, रूक्ष, विबंध, अफरा करे और कफपित्त को हरण करेहै।

कोशाम्र (कोशाम.)

कोशाम्रउक्तःक्षुद्राम्रःकृमिवृत्तःसुकोशकः
कोशाम्रःकुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ॥
तत्फलंग्राहिवातघ्नमम्लोष्णंगुरुपित्तलम् ॥
पक्वंतुदीपनंरुच्यंलघूष्णंकफवातनुत् ॥२३॥

अर्थ–कोशाम्र, क्षुद्राम्र, कृमिवृत्त और सुकोशक ए **संस्कृत**, **बं.** केओडाफल, **का.** जूरिमाचु। **गुण।** कोशाम्र-कोढ, सूजन, रक्तपित्त, व्रण और कफ को दूर करे। **इसका फल** ग्राही, खट्टा, गरम, भारी,

ऊपर से निकले हुए चीकने पदार्थ और अंडा की सफेदी तथा थोड़ीसी अफीम के साथ मिलाय के **मलेवार की तरफ** दस्त और ऐंठन के रोग में अक्सीर इलाज के तरीके वर्त्तते हैं।

हिन्दुस्तान के सब फलों में स्वादिष्ट फल **आंब** है, जिस समय कच्चा होती है तब संधाना (अचार) मुरब्बा आदि बनाने में वर्त्तते हैं। **गुठली** में भी अत्यन्त पौष्टिक पदार्थ रहता है, परन्तु उसको सदैव उपयोग में नहीं लेते। घोर अकाल जो हालके संवत् १९५३ में हुआ है इस में गरीब मनुष्यों ने उसको उबाल के उससे अपना निर्वाह करा है। **फलके गूदे में** खांड गोंद और साइट्रीकएसिड ए तीन पदार्थ रहते हैं। और बीज में से **गोलिकएसिड** निकलता है। इस की लकड़ी चंदन के साथ मुर्दे के जलाने को पवित्र मानते हैं। पत्तों की डंडी बलाय के रस निकालते हैं वह भी बहुत से रोगों में दिया जाय है।

वात और पित्तनाशक । **पक्वफल** दीपन, रुचिकारी, हलका, गरम, कफवातनाशक है ।

कटहर.

पनशःकंटकिफलःपनसोऽतिबृहत्फलः ।
पनसंशीतलंपक्वंस्निग्धंपित्तानिलापहम् ॥२४॥
तर्पणंबृंहणंस्वादुमांसलंश्लेष्मलंभृशम् ।
बल्यंशुक्रप्रदंहंतिरक्तपित्तक्षतव्रणान् ॥ २५ ॥
आमंतदेवविष्टंभिवातलंतुवरंगुरु ।
दाहकृन्मधुरंबल्यंकफमेदोविवर्द्धनम् ॥ २६ ॥
पनसोद्भूतबीजानिवृष्याणिमधुराणिच ।
गुरूणिबद्धविट्कानिसृष्टमूत्राणिसंवदेत् ॥
मज्जापनसजोवृष्योवातपित्तकफापहः ।
विशेषात्पनसोवर्ज्योगुल्मिभिर्मंदवह्निभिः ॥

अर्थ–पनश, कंटकिफल, पनस और अतिबृहत्फल ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** कटहर, कटेर, **बं.** कांठाल **म.** फणस, **क.** हलसीनहणु, **तै.** पनसवकाया, **का.** हलसीनहणु **ता.** पिल्ला, **उडि.** पणस, **ला.** आर्टोकार्पस् इन्टेग्रिफोलिया । **गुण** । कटहर का पक्वफल-शीतल, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, तृप्तिकरता, बृंहण, स्वादु, मांस और कफको बढाने वाला, बलकर्ता, वीर्य वर्द्धक । **प्रयोग** । रक्तपित्त, क्षत और व्रणको दूर करे । **कटहर का कच्चाफल** विष्टंभी, वातकर्ता, कषेला, भारी, दाहकर्त्ता, मधुर, बलकारी, कफ, मेदको बढ़ाने वाला । **कटहरके बीज** । वीर्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बांधने वाले और मूत्रको निकालनेवाले हैं । **अन्यत्र** लिखाहै कि कटहरकी **मज्जा** वृष्य, वात, पित्त और कफकी नाशकहै । **निषेध** । गोलके रोगी और मंदाग्निवालों को कटहर के खानेकी सख्त मनाई है ।

बडहर.

लकुचःक्षुद्रपनशोलकुचोडहुइत्यपि ।
आमंलकुचमुष्णंचगुरुविष्टंभकृत्तथा ॥ २९ ॥
मधुरंचतथाम्लंचदोषत्रितयरक्तकृत् ।
शुक्राग्निनाशनंचापिनेत्रयोरहितंस्मृतम् ॥
सुपक्वंतत्तुमधुरमम्लंचानिलपित्तहृत् ।
कफवह्निकरंरुच्यंवृष्यंविष्टंभकंचतत् ॥ ३१ ॥

अर्थ–लकुच, क्षुद्रपनश, और लकुचोडहुआ **संस्कृत** नाम, **हिं.** बडहर, **बं.** मादर, **म.** लुकफणस **अं.** आर्टोकार्पस्लकुचा । **गुण** । कच्चा बडहरका फल-गरम, भारी, विष्टंभी मधुर, खट्टा, त्रिदोषवर्द्धक और रुधिरकर्त्ता, शुक्र और जठराग्निको नष्ट करे तथा नेत्रोंको अहित है । वही **पका हुआ** मीठा और खट्टा, बादी और पित्तका हरण कर्ताहै, कफकारी, अग्निको बढ़ानेवाला, रुचिकारी, वृष्य और विष्टंभी है ।

कदली (केला.)

कदलीवारणामोचांबुसारांशुमतीफला ।
मोचाफलंस्वादुशीतंविष्टंभिकफनुद्गुरु ॥
स्निग्धंपित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित् ।
पक्वंस्वादुहिमंपाकेस्वादुवृष्यंचबृंहणम् ॥
क्षुत्तृष्णानेत्रगदहृन्मेहघ्नंरुचिमांसकृत् ॥ ३३ ॥
माणिक्यमर्त्यामृतचंपकाद्या
भेदाःकदल्याबहवोऽपिसंति ।
उक्तागुणास्तेष्वधिकाभवंति
निर्दोषतास्याल्लघुताचतेषाम् ॥ ३४ ॥

अर्थ–कदली, वारणा, मोचा, अंबुसार और अंशुमतीफला, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** केला, केरा, **म.** केल, **तै.** चक्राकेली, **गु.** केल्य, **का.** कावालेतव, **ता.** पाजम व्रनपिपसी, **पा.** तल, तलमपज, **लु.** वाहा, **वर.** हगापी, **ला.** मुसासे पियेनटम्, **फा.** मावज् । **गुण** । **कच्चाकेला**, स्वादु, शीतल, विष्टंभी, कफनाशक, भारी, स्निग्ध । **प्रयोग** । रक्तपित्त, तृषा, दाह, क्षत, क्षय, वादी, इनको दूर करे । **पका हुआ** स्वादु, शीतल, मिष्टपाकी, बृंहण । क्षुधा, तृषा, नेत्ररोग, प्रमेह इनको नष्ट करे । रुचि और मांस करेहै । इस केलेकी–माणिक्य, मर्त्य, अमृत और चंपकादि अनेक जाति हैं उन सबमें ऊपर कहे हुई ही गुण होते हैं, तथा दोषहीनता और हलकापना यह अधिक होते हैं ।

गुरुभीडु. मुकुर.

चिर्भिटंधेनुदुग्धंचतथागोरक्षकर्कटी ।
चिर्भिटंमधुरंरूक्षंगुरुपित्तकफापहम् ॥
अनुष्णंग्राहिविष्टंभिपक्वंतृष्णांचपित्तलम् ।

अर्थ-चिर्भिट, धेनुदुग्ध और गोरक्षकर्कटी ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** कचरिया, गुरभीड़, भकुर, **बं.** काकुड़, **म.** चिभूड़, **गु.** चिभडां, **तै.** बुडरंगपंडु। **गुण** । **कचरिया**-मीठी, रूखी, भारी, पित और कफको नष्ट करे, गरम नहीं है । ग्राही, विष्टंभी और **पक्कीकचरिया** (सेंधकचरिया) गरम और पित्तको करनेवाली है ।

नारियल.

नारिकेरोदृढफलोलांगलीकूर्चशीर्षकः ।
तुंगस्कंधफलश्चैवतृणराजःसदाफलः ॥३६॥
नारिकेलफलंशीतंदुर्जरंवस्तिशोधनम् ।
विष्टंभिबृंहणंबल्यंवातपित्तास्रदाहनुत् ॥३७॥
विशेषतःकोमलनारिकेरम्
निहंतिपित्तज्वरपित्तदोषान् ।
तदेवजीर्णंगुरुपित्तकारि
विदाहिविष्टंभिमतंभिषग्भिः ॥ ३८ ॥
तस्यांभःशीतलंहृद्यंदीपनंशुक्रलंलघु ।
पिपासापित्तजित्स्वादुवस्तिशुद्धिकरंपरम् ॥
नारिकेरस्यतालस्यखर्जूरस्यशिरांसितु ।
कषायस्निग्धमधुरबृंहणानिगुरूणिच ॥४०॥

अर्थ-नारिकेर, दृढफल, लांगली, कूर्चशीर्षक, तुंग, स्कंधफल, तृणराज और सदाफल ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** नारियल-र, **रा.** खोपरा, **म.** नारल, माड, **गु.** नालीएर, **तै.** टेंकाया, **का.** रसु, **उ.** नडिया, **ता.** टेंगा, **इं.** कोकोनट । **अ.** नारिजिल्, **फा.** जोजहिंदी, **स्वरूप** । नारियलका वृक्ष ताड़ अथवा सुपारीके बराबर ऊंचा होताहै । इसके पत्ते दो फुट से ४ फुटतक लंबे आमने सामने होते हैं । **फूल** जैसे गेहूंकी बालमें गेहूं फूटकर निकलते हैं इसप्रकार संख्यावाले होते हैं । इसमें तीन पंखडी पुंकेशर और तीन स्त्रीकेशर होती हैं । फलके बाहर कठोरता, बीचमें कांचलीसी और भीतर गिरी होतीहै । उसके भीतर जलभरा हुआ होता है। **चित्र** नंबर २१ देखो । **गुण** । नारियलकी **गिरी** शीतल, दुर्जर, वास्ति शोधनकर्त्ता, विष्टंभी, बृंहण, बलकारी, वात, पित, रुधिर और दाहरोग को हरण करे विशेष करके **कोमलनारियलका** फल-पित्तज्वर, पित्तके दोषोंको दूर करे । वही **जीर्ण** (पुराना) भारी, पित्तकर्ता, विदाही और विष्टंभी वैद्योंने कहाहै । **नारियलका जल**-शीतल, हृदय को प्रिय, दीपन, शुक्रकर्त्ता, हलका, प्यास और पित्तको हरण करना, स्वादिष्ट और उत्तम वस्तिशोधक है । नारियल, ताल, और खिजूर इनकी **शिरा** (रेसा) कषैली, स्निग्ध, मधुर, बृंहण और भारी है ।

तरबूज.

कालिंदंकृष्णबीजंस्यात्कालिंगंचसुवर्तुलम्
कालिंदंग्राहिदृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलंगुरु ।
पक्वंतुसोष्णंसक्षारंपित्तलंकफवातजित् ॥

अर्थ-कालिंद, कृष्णबीज, कालिंग और सुवर्तुल ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** तरबूज, **बं.** तरमूज, **म.** कालिंगड, कालिंगण, तरबूज । **गु.** तडबूच, कालिंगड़, **तै.** तरबुज, पुच्चकाया, **का.** कैंडि, **उ.** तरपुज, **अं.** वाटरमेलन्, **ला.** साइट्रलस् वल्गेरीस्, **फा.** पिर्तास्त-जकी कहते हैं । **गुण** । कच्चा **तरबूज** ग्राहीहै और नेत्र, पित्त, शुक्र इनको हरण करता, शीतल, भारीहै । पका हुआ **तरबूज** गरम, क्षारयुक्त, पित्तकर्त्ता और कफवातको जीतनेवाला है ।

खर्बूजा.

दशांगुलंतुखर्बूजंकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ।
खर्बूजंमूत्रलंबल्यंकोष्ठशुद्धिकरं गुरु ॥
स्निग्धंस्वादुतरंशीतंवृष्यंपित्तानिलापहम्
तेषुयच्चाम्लमधुरंसक्षारंचरसाद्भवेत् ।
रक्तपित्तकरंतत्तुमूत्रकृच्छ्रकरंपरम् ॥ ४३ ॥

अर्थ-दशांगुल, खर्बूज ए **संस्कृत** नाम. **हिं.** खर्बूजा, **बं.** खरमूंजा, **म.** खर्बुज, **फा.** पिर्तास हिंदी, **अं.** कुक्यु मिसमेलों, **ला.** मेलन् । **गुण** । मूत्र लाने-वाला, बलकारी, कोठेको शुद्धकर्ता, भारी, स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वृष्य, पित्त और वातनाशक । इसमें जो खरबूजा रसमें खट्टा, मीठा और खारी होताहै वह रक्तपित्तकर्त्ता और घोर मूत्रकृच्छ्रकर्त्ता जानना ।

खीरा, बालमखीरा.

त्रपुसंकंटकिफलंसुधावासःसुशीतलम् ।
त्रपुसंलघुनीलंचनवंतृट्क्लमदाहजित् ॥४४॥

स्वादुपित्तापहंशीतंरक्तपित्तहरंपरम् ।
तत्पक्कमम्लमुष्णंस्यात्पित्तलंकफवातनुत् ।
तद्बीजंमूत्रलंशीतंरूक्षंपित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥४६॥

अर्थ–त्रपुस, कंटकिफल, सुधावास और सुशीतल ए **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** खीरा, बालमखीरा, **बं.** शसा, **म.** कांकडी, **कों.** तवसे, **गु.** तांसलि, **का.** तरेयकायि, **ता.** महेवेहरिकोंकणो, **फा.** शियारखुर्द । **गुण** । **खीरा**-हलका, स्वादिष्ट, शीतल, **नवीन-अवस्थाका खीरा** नीले रंगका होता है, तथा तृषा, क्लम, दाह, पित्त और रक्तपित्तको हरण करे । **पका हुआ खीरा** खट्टा, गरम, पित्तकरता, कफवातनाशक है । **खीरेके बीज** मूत्र लानेवाले, शीतल, रूक्ष, पित्त, रक्तविकार और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे ।

सुपारीछोटी.

घोरंटःपूगिपूगश्चगुवाकःक्रमुकोऽस्यतु ।
फलंपूगीफलंप्रोक्तमुद्वेगंचतदीरितम् ॥४७॥
पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायंकफपित्तजित् ।
मोहनंदीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥४८॥
आर्द्रतद्गुर्वभिष्यंदिवह्निदृष्टिहरंस्मृतम् ।
स्विन्नंदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यंतदुत्तमम् ॥४६॥

अर्थ–घोरंट, पूगी, पूग, गुवाक और क्रमुक ए **संस्कृत**नाम । इसके फलको पूगीफल और उद्वेग कहतेहैं । **हिं. बं.** सुपारी, **तै.** पोकाकाया, **गु.** हुपारी **उडि.** गुया, **का.** अडकेय सरलु, **अ.** फोफिल, **फा.** योपिल, **इं.** बिटलनट, पाम्, **ला.** एरिका केटेचु । **गुण** । भारी, शीतल, रूक्ष, कषाय कफपित्तनाशक, मोहनाशक, रुचिकारी, मुखकी विरसतानाशक । **कच्ची-सुपारी**–भारी, अभिष्यंदि, अग्निमंद करता और दृष्टिशक्तिको हरण करता है । जो सुपारी **औटाकर-बनाई** गई अर्थात् **चिकनी सुपारी** और जिसका मध्यभाग दृढ होवे वो उत्तम होती है । सुपारीके अनेक भेद हैं । जैसे सेवरधनी, मानिकचंदी, जिहाजी, चिकनी । इन सबको अन्यत्र लिखेंगे ।

ताल (ताड.)

तालस्तुलेखपत्रःस्यात्तृणराजोमहोन्नतः ।
पक्कंतालफलंपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।
दुर्जरंबहुमूत्रंचतंद्राभिष्यंदिशुक्रदम् ॥ ५० ॥
तालमज्जातुतरुणःकिंचिन्मदकरोलघुः ।
श्लेष्मलोवातपित्तघ्नःसस्नेहोमधुरःसरः ॥५१॥

अर्थ–ताल, लेखपत्र, तृणराज और महोन्नत ए **सं.** नाम, **हिं.** ताड, **बं.** ताल, **ता.** पनम, **अ.** तार, **अं.** पालमाइ पाम, **ला.** बोरेससप्रले बेलिफोर्मिस । **गुण** । पका हुआ तालका फल दुर्जर (सहजही नहीं पचे) खाने से रक्तपित्त और कफकी वृद्धि होय, मूत्र अधिक उतरे । यह अभिष्यंदी और शुक्रजनक, तालफल खाने से तन्द्रा उत्पन्न होतीहै । **नवीनतालमज्जा** किंचित् मदउत्पादक, हलकी, कफजनक, वातपित्तघ्न, स्निग्ध मधुर और दस्तावर है ।

ताडी (तालका रस.)

तालजंतरुणंतोयमतीवमदकृन्मतम् ।
अम्लीभूतंयदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ–तालका नवीन (टटका) रस अत्यंत मादक (नशा लानेवाला) और वही खट्टा होनेसे पित्तकर्ता और वातनाशक होताहै ।

बेल.

बिल्वःशांडिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि ।
बालंबिल्वफलंबिल्वकर्कटीबिल्वपेशिका ॥
ग्राहिणीकफवातामशूलघ्नीबिल्वपेशिका ।
बालंबिल्वफलंग्राहिदीपनंपाचनंकटु ॥
कषायोष्णंलघुस्निग्धंतिक्तंवातकफापहम् ॥
पक्कंगुरुत्रिदोषंस्याद्दुर्जरंपूतिमारुतम् ।
विदाहिविष्टंभकरंमधुरंवह्निमांद्यकृत् ॥५५॥
फलेषुपरिपक्कंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
बिल्वादन्यत्रविज्ञेयमामंतद्धिगुणाधिकम् ।
द्राक्षाबिल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम् ॥

अर्थ–बिल्व, शांडिल्य, शैलूष, मालूर और श्रीफल ए बेलके **संस्कृत** नाम हैं । **क.** वेललु, **तै.** मारेडी, **ता.** बिल्वपाभाम, **अं.** बेगालंकिन्स, **ला.** इगल मारमेलाफ्र । **कच्चा**बेलफल, बिल्वकर्कटी और बिल्वपेशिका (अर्थात् **बेलगिरी**) कहाती है । **बेल-गिरी** ग्राही, कफ, वात, आम और शूल इनको नष्ट करेहै । अन्यत्रभी लिखाहै कि **कच्चा बेलफल** ग्राही,

दीपन, पाचन, चरपरा, कषेला, गरम, हलका, स्निग्ध, कड़वा और वातकफको नष्ट करताहै। **पकाहुआ-बेलफल** भारी, त्रिदोषकारी, दुर्जर, दुर्गंधित वातकारी, विदाही, विष्टंभकारी, मधुर, और मंदाग्निको करे है। सम्पूर्ण **फलमात्र** पकेहुए गुणवाले होतेहैं परंतु बेलका फल कच्चाही गुणकारी होताहै। तथा दाख बेल और आंवलेआदिके फल सूखेहुए अधिक गुणवाले होतेहैं। और सब फल ताज़े और आर्द्र गुणकारी होतेहैं।

कैथ.

कपित्थस्तुदधित्थःस्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः
कपिप्रियोदधिफलस्तथादंतशठोऽपिच ॥५७॥
कपित्थमामंसंग्राहिकषायंलघुलेखनम् ।
पक्वंगुरुतृषाहिक्काशमनंवातपित्तजित् ।
स्वादम्लंतुवरंकंठशोधनंग्राहिदुर्जरम् ॥५८॥

अर्थ—कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल और दंतशठ ए **संस्कृत**नाम। **हिं.** कैथ, **बं.** कयतबेल, **म.** कवठ, कंवठ, **गु.** कोठ, **तै.** एलांगाकाया, **क.** बेल्लु, **ला.** फेरोनिया एलिफेंटिनम्, **इं.** वुडएपल। **स्वरूप**। इसका बड़ा भारी ऊंचा दरखत होयहै। **पत्ते** इसके १ इंच लंबे तथा ¾ पौन इंचके लंबावमें गुलाईलिये होते हैं। डालीपर पत्ते एक २ संख्यामें होते हैं। **फूल** छोटा और सफेद, तथा छूटी पांच पंखडीवाले होते हैं। यह चूहेके जहरपर उपयोगी होते हैं। **फल** नारंगीके बराबर कठोर गोल तथा मोटी छालका होताहै। इसके भीतरका गूदा खट्टा और धनियेके समान बहुत बीज होते हैं। इन बीजोंके भीतर सफेद मिंगी निकलती है। **चित्र** नंबर ३२ का देखो। **गुण**। **कच्चा कैथका** फल-ग्राही, कषेला, हलका, लेखन। **पकाहुआ** भारी, प्यास, हिचकी और वातपित्तको नष्ट करे। तथा इसमें कषेलापना कमहै, कंठको शोधन करे, ग्राही और दुर्जर है। *

नारंगी.

नारंगोनागरंगःस्यात्त्वक्सुगंधोमुखप्रियः ।
नारंगोमधुराम्लःस्याद्दीपनंवातनाशनम् ॥
अपरंत्वम्लमत्युष्णंदुर्जरंवातहृत्सरम् ॥५९॥

अर्थ—नारंग, नागरंग, त्वक्सुगंध और मुखप्रिय, ए **संस्कृत**नाम। **हिं.** नारंगी, **म.** नारिंग, **क.** माधवला **तै.** दबाकाया, **ता.** किचिलि, **उ.** नारिंगी, **अ.** नारंज, **अं.** ओरेंज, **ला.** साइट्रस ओरेंटियम, **स्वरूप**। इस छोटेसे वृक्षके पत्ते नीबूके आकारके होते हैं, फूल सफेद रंगका पांच पांखड़ी वाला होताहै। **चित्र** नंबर ३३ का देखो। **गुण**। **नारंगी**-मधुर, खट्टी, दीपन, वातनाशक। एक प्रकारकी नारंगी और होती है वह खट्टी, अत्युष्ण, दुर्जर, वातहरण कर्ता और दस्तावर है। $

* **हिंदुस्तानीवैद्य**—कैथके फलको ग्राही मानतेहैं, तथा **कच्चाफल** दस्त और पेटके दर्दमें तथा **पकाफल** मसूढे और गलेकी सूजनपर देनेकी प्रशंसा करते हैं।

मीरमुहम्मदहुसेन—कहता है कि **कैथ के पत्ते** और **फल** शीतल और पाचक तथा ऐंठन होनेको दूर करनेके लिये तथा गलेकी सूजन उतारनेके लिये और दांतोंके मसूढे मज़बूत करनेको वर्त्ततेहै। फलके गूदेका शरबत पीने से भोजन करनेकी रुचि बढ़तीहै। जहरवाले जीवके डंकपर फलका गूदा अथवा छाल बांधतेहैं। कैथके वृक्षके गोंदको पीस शहदमें मिलायके देनेसे दस्त तथा मरोरा दूर होय।

चरकसंहितामें—कैथको खट्टा और ग्राही मानाहै तथा **पत्तोंका** रस अग्निदीपक और पाचक मानाहै।

$ **नीबू—नारंगी** वगैरह अचार बनायके खानेमें तथा उनका **रस** दवामें और उसकी **छाल**-में से निकलनेवाला **तेल** खुशबूके वास्ते वर्त्ततेहैं। **बहुतखाने से** अथवा पाचन न होता होय ऐसी खुराक खानेके अजीर्णमें नीबूके अचारको जो बहुतसे निमकमें बहुत दिन रखकर सुखाय लिया होय उसके देनेसे आराम होयहै। **नीबूका रस** शीतल, दाह-शामक और पाचक गिना जाताहै यह अजीर्ण और ज्वरमें लगनेवाली तृषाको बंद करनेके लिये देते हैं। नीबूके रसको सायंकालमें खानेसे प्रातःकाल

तेंदू.

तिंदुकःस्फूर्जकःकालस्कंधश्चासितकारकः
स्यादामंतिंदुकंग्राहिवातलंशीतलंलघु ॥
पक्वंपित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नंमधुरंगुरु ॥ ६० ॥

अर्थ-तिंदुक, स्फूर्जक, कालस्कंध और असितकारक ए संस्कृतनाम। हिं. तेंदू, म. टेंभुरणी, दे. टेंमरू, गु. टींबरू, का. रुंबरु, तै. तमिकू, ता. तुबिक, अं. एवनी, कों. काकटेंभुर्णी, काटेटेंभुरणी,

होनेवाली अजीर्णकी रद्द होना दूर होय। तथा अनेक जातिकी पाचनशक्ति बढानेवाली दवाओंमें जैसे कि द्विरष्टकवनामें नीबूका रस अधिक वर्त्तावमें आताहै। **वैद्यहरिश्चंद्र।**

शार्ङ्गधरसंहितामें—संधिवातके सदृश रोगोंमें नीबूकारस जवाखार और शहदकेसाथ मिलायके देनेकी प्रशंसा करीहै।

मुसलमानीवैद्यकके मतसे—नीबू नारंगी आदिकी छाल गरम मानीहै, उसका **रस खट्टा** होय तो शीतल और **मीठारस** होनेसे शरदी करनेवाला मानतेहैं। कोई २ रस शीतल और ग्राही गिनते हैं तथा यह पित्तकी उलटी बंद करनेवाला. तथा पाचनशक्ति बढानेको देतेहैं। तथा उस रसको देनेके लिये प्रथम खांड अथवा शहदके साथ मिलायके थोड़ी देर रखकर देते हैं।

मखजनउलअदवियातमें—लिखाहै कि यदि नीबूकी **छाल** दारूमें भिगोयके रखे तो **दारूका सिरका** वन जाताहै।

मुसलमानी हदीसमें—लिखाहै कि-जिस जगह **नीबू** होताहै वहां पर शैतान (भूतप्रेत) नहीं आसक्ता। संतरा और नीबूकी छालको सुखायके कूट पीस चूर्ण करलेवे उसको मीठे तेलमें भिगोय देवे वाद थोड़ी देरके निचोड़लेय यह तेल गरम और रूखा माना जायहै। और सरदीकी सूजन पर मालिश करनेमें वर्त्तनेमें आताहै। **फूल और पत्तोंमेंसेभी तेल** इसीप्रकार निकलताहै, उसके गुण ऊपर लिखे तेलके समानही हैं।

मुसलमानीग्रंथकर्त्ता--उत्तम नारंगी बड़े कदकी पतली छालकी और सुंदर होनी चाहिये। **नारंगीकी छाल** खाने से पेटके कीड़े निकल जाते हैं। तथा नारंगी का **मद्यसंधान** कराहुआ पानी जागृत करता जानते हैं। पित्तकी अधिकताके कारण दूखता मस्तक और उलटी के वास्ते नीबू का रस उत्तम फायदा करता है। तथ रुधिर शुद्ध करे हैं। शहद अथवा खांड में छालके सुखाये हुए नीबू गले के भीतर की सूजन में देनेकी प्रशंसा करते हैं। तथा जुल्लाव लेने के प्रथम पेटको तयार करने के लिये तथा जुल्लाव लेने के वाद दस्त बंद करने को भी दिया जाता है।

यूनानीहकीम—कहते हैं कि नारंगी के फलका पानी खुशबूके तरीके तथा दवा के तरीके से बहुत वर्त्ता जाता है। रुधिरके बिगाड़में नारंगी अत्यंत गुण करती है। संधिवात और बदहजमी में नारंगी की छाल का चूर्ण मेगनेशिया और रेवतचीनी का शीरा इन तीनों को मिलायके देने से बहुत उत्तम असर करे है पुराने **नासूरपर** नारंगी का गूदा सेक कर बांधने से बहुत जल्दी घाव भर आता है। नीबू और नारंगी की छालमें से मद्यसंधान करने से बहुत खुशबूदार तेल निकलता है। नीबू के रस में से निकलने वाला **साइट्रीकएसिड** उलटी बंद करने को कार्बोनेट ऑफ पुटाश के साथ मिलायके देते हैं। **नींबूका रस** शरबत बनानेमें, बहुत दिनों के अन्तर देकर आने वाले ज्वर में नीबू का रस पोर्टवाइन नाम की दारु और सिंकोना की छाल में मिलायके देते हैं अत्यन्त उत्तम फायदा करे है।

डा० ग्रीन—कहता है कि कपड़ों में एक संतरा धर दिया जाय तो उसमें कीड़े नहीं लगते तथा तमाकूके जहरपर यह बहुत उत्तम असर करे है। कारण यह है कि जिस समय दारूके साथ मिलाय के उस का रस पीताहै उस वक्त आंतों पर असरकर जहरको खींचके निकाल देय है। **संतरा** (नारंगी) की छाल में इतनी ज्यादा खुशबू

गुण। कच्चा तेंदू-ग्राही, वातल, शीतल, हलका। पकाहुआ। पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार, कफनाशक, मधुर और भारी। *

कुचला.

तिंदुकोयस्तुकथितोजलदोदीर्घपत्रकः ।
कुपीलुःकुलकःकाकतिंदुकःकाकपीलुकः ॥
काकेंदुर्विषतिंदुश्चतथामर्कटतिंदुकः ।
कुपीलुःशीतलंतिक्तंवातलंमदकृल्लघु ।
परंव्यथाहरंग्राहिकफपित्तास्रनाशनम् ॥६२॥
सूत्रप्रवर्त्तनंबल्यंवह्निकृत्कामदीपनम् ।
शूलमेकांगरोगंचशुक्रमेहमपस्मृतिम् ॥
ग्रहणीमतिसारंचगुदभ्रंशंमदात्ययम् ।
सर्वाङ्गकंपदौर्बल्यमचिरेणविनाशयेत् ॥

अर्थ-तिंदुक, जलद, दीर्घपत्रक, कुपीलु, कुलक, काकतिंदुक, काकपीलुक, काकेंदु, विषतिंदु, तथा मर्कटतिंदुक ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** कुचला, मकरतेंदुआ, **म.** काजरा, **गु.** झेरकोचला, झेरकचोला, **तै.** मुष्टिगिंजा, **का.** कांजिवार, **फा.** इफाराकी, **अ.** कातिलुल्, कल्कफलून माही, **अं.** पॉईझननट्, **इं.** नक्सवामिका। कुचलाके वृक्षमें फल लगते हैं उसके

१ सतिंदुकश्चकथिता इति। २ कालस्तिंदुकः कालपीलुकः इति।

होती है कि चीनी मनुष्य घर में हवाको खुशबूदार करने के लिये उस फलको रकाबी में रखकर धर देते हैं **नारंगी** और **नीबू** की समान उनकी **छाल** में से भी सुगंधित तेल निकलता है।

चरकसंहितामें---मीठे मीठे नीबू कफवातघ्न, कृमिहर, भुक्तपाचक, त्रिदोषघ्न माने हैं, और उसकी **जड** कफवातजित् गिनी जाती है **म्हालुंग** जिसको भाषामें **बिजोरा** कहते हैं उसको उसी पुस्तकमें उलटी बंद करने को देने की प्रशंसा करी है। **फल की छाल** यहूदी लोग कटु, उष्ण, पाचक, रोचक, और वात नाशक मानते हैं।

देशीवैद्यकग्रंथोंमें---नारंगी के मगज़को पित्तनाशक और रुधिर शुद्ध करता गिनते हैं। नारंगीके फूल में-से निकलनेवाले अतिसुवासित इतरको इंग्रेजी में **ओलियम्नीरोली** अथवा **नीरोलीकातेल** कहते हैं। तथा वह बड़ा अकरा विकता है।

* **हिन्दुस्तानीलोग**--तेन्दूके फल का ताजा रस घाव पर लगाते हैं। गरीब मनुष्य इस फलको खाते हैं तथा उसके **बीजों** को धर रखते हैं। इनको दस्त की बीमारी में देशी लोग उसके ग्राही गुणों के कारण वर्त्तते हैं।

इंग्रेजीऔषधों में---तेंदूको बहुत ग्राही वर्णन करा है, उस का सत्त्व बनाने के वास्ते फलको कुचलकर दाबके उसका रस काढके उसको औटायके गाढा कर लिया जाता है। यह **सत्त्वलाल**ही लिये भूरे रंगका होता है। और यह पानी में बहुत जल्दी घुल जाता है। दस्त और बहुत दिनों के शूलमें बहुत उपयोगी है। गिर पडने से यदि नस हटगई होय अथवा चमड़ी छिलगई होय तो इस फलके रसका लेप करने से सूजन नहीं चढ़ती। ऊपर कहा हुआ सत्त्व १० आने भरले उसको सवासेर पानी में पिगलायकर इस पानी की पिचकारी मारने से स्त्रियों की जननेंद्रिय से निकलनेवाला सफेद प्रवाह बंद होता है। इस सत्त्वके बनाती वक्त फौलाद अथवा लोहे का औजार काम में नहीं लाना क्योंकि ऐसा करने से रस काला होजाता है। उत्तम प्रकार से बनाये हुए सत्त्वका रंग **लाख** के समान होता है। इस के **बीजों** में से औषध में वर्त्तने योग्य तेल निकलता है। कोमल पत्तों का कितनेक देशों में शाक करते हैं। छाल को बारीक पीस घाव और नासूर पर लगाते हैं। तथा काली मिरचोंके साथ मिलायके ऐंठनके रोग में देते हैं।

चरकमें---कच्चे फल को वात और पित्तको बैठानेवाला वर्णन करा है।

सुश्रुत संहितामें---रक्तपित्तहर, दाहनाशक, योनिदोषहर, व्रण और संग्राही वर्णन करा है। **फल** के रस में से निकाला **सत्त्व** प्राचीन संग्रहणी पर उत्तम असर करे है।

भीतरके बीज को जहर कुचला कहते हैं। कोई २ कुचले का साधन करते हैं। **चित्र** नंबर ३४ का देखो। **गुण। कुचला**-शीतल, ग्राही, कड़वा, वातकारी, मदकर्ता और हलका है। अत्यंत व्यथा नष्ट करे, तथा कफ, पित्त और रुधिरविकारको नष्ट करे। मूत्र लानेवाला, बलकारी, अग्निवर्द्धन, कामोत्तेजक, शूल, एकांगवात, शुक्रमेह, मृगी, संग्रहणी, आतिसार, गुदभ्रंश, मदात्यय, सब अंगों का कंप, दुर्बलता, इनको तत्काल दूर करे।

फरेन्द.

फलेंद्राकथितानंदोराजजंबूर्महाफला।
तथासुरभिपत्राचमहाजंबूरपिस्मृता।
राजजंबूफलंस्वादुविष्टंभिगुरुरोचनम्॥६३॥

अर्थ-फलेन्द्रा, नंद, राजजंबु, महाफला, सुरभिपत्रा और महाजंबू ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** राजजामन, फरेंद, **बं.** गोलापजाम, **म.** थोरजांबल, राजले, **क.** नीरल्ह, **तै.** पेद्दा नेरडी। **गुण। राजजामन** स्वादिष्ट, विष्टंभी, भारी और रुचिकारी।

जामुन-नदीजामुन.

क्षुद्राजंबूःसूक्ष्मपत्रानादेयीजलजंबुका।
जंबूःसंग्राहिणीरूक्षाकफपित्तास्रदाहजित्॥

अर्थ-क्षुद्राजंबू, सूक्ष्मपत्रा, नादेयी, जलजंबुका, ए छोटी जामन के नाम हैं। **बं.** जाम, **म.** जांबुल, **गु.** जांबू, **इं.** जांबूल, **ला.** सीफीज्यम् जांबुलानम् कहते हैं। जामन दो प्रकारकी होती हैं। एक बनजामुन इसके पत्ते कनेरके माफिक लंबे भाले के आकार होते हैं, और दूसरे महाजंबू के पत्ते मोटे और कुछ छोटे होते हैं। इस वृक्षमें गुच्छपुष्प और गुच्छफल होता है। **गुण। जामन**-संग्राही, रूखी, कफपित्त, रुधिर और दाहको दूर करे।*

बेर.

पुंसिस्त्रियांचकर्कंधुर्बदरीकोलमित्यपि।
फेनिलंकुवलंघोण्टासौवीरंबदरंमहत्।
अजप्रियाकुहाकोलीविषमोभयकंटका॥६५॥
पच्यमानंसुमधुरंसौवीरंबदरंमहत्।
सौवीरंबदरंशीतंभेदनंगुरुशुक्रलम्॥६६॥
बृंहणंपित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवारणम्।
सौवीरंलघुसंपक्वंमधुरंकोलमुच्यते॥६७॥
कोलंतुबदरंग्राहिरुच्यमुष्णंचवातलम्।
कफपित्तकरंचापिगुरुसारकमीरितम्॥६८॥
कर्कंधुःक्षुद्रबदरंकथितंपूर्वसूरिभिः।
अम्लंस्यात्क्षुद्रबदरंकषायंमधुरंमनाक्॥६९॥
स्निग्धंगुरुचतिक्तंचवातपित्तापहंस्मृतम्।
शुष्कंभेद्यग्निकृत्सर्वंलघुतृष्णाक्लमास्रजित्॥

अर्थ-कर्कंधु, बदरी, कोल, फेनिल, कुवल,

****हिन्दुस्तानीवैद्य**—जामुनके रसको सडायके सिरका बनाते हैं. इसे पेटकी पीडा नष्ट करता तथा पेशाब अधिक लाने वाला मानते हैं इसी से वह उस रसको मद्यसंधान करके **अर्वाचीनसंस्कृत** ग्रंथ में लिखा **जामनका आसव** नामक मद्य बनाते हैं। इसकी **छाल** बहुत कसेली है तथा स्तंभक होने के कारण अन्य २ औषधों में मिलाय और कुल्ले करने की दवा तथा घाव धोनेके वास्ते मिश्र वगैरह बनाने में वर्त्तते हैं। छोटे २ बच्चों को दस्त होते होंय तो छालका ताजा रस बकरी के दूध के साथ मिलाय के देते हैं।

मखजनउलअदवियातमें—लिखा है कि पित्तके दस्तों में जामुन खाने से बहुत फायदा होता है। उसी प्रकार गले में सूजन होय तो भी यह फल उत्तम असर करताहै। माथे में इन्द्रलुप्त रोग (जिसमें बाल उडजाते हैं) होगया होय तो उसको भी यह रस आराम करता है। वहीं लिखने वाला कहता है कि जड़, बीज और पत्ते उत्तम ग्राही हैं। **पकीजामुनकारस** निकाल उसका शरबत बनाया होय तो यह पेटकी ऐठन नष्ट करे है तथा बहुत दिनकी दस्त की बीमारी नष्ट होती है।

चरकग्रंथमें—लिखा है कि जामुन और उसकी छाल मूत्रसंग्रहण और पुरीषविरञ्जनीय (मलको रंग देनेवाला अथवा रंग बदलने वाला) वर्णन कराहै।

सुश्रुतमें—लिखा है कि उसको रक्तपित्तहर, दाहनाशक, योनिदोषहर, व्रणय और संग्राही (स्तंभक) वर्णन कराहै।

घोंटा, सौवीर ए छोटे बेरके नाम हैं । और **बड़े बेरको** सौवीर कहतेहैं । तथा बेरके अन्यनाम ये हैं जैसे-अजप्रिया, कुहा, कोली, विषम और उभयकंटका । **बं.** कुल, **म.** बोर, **उ.** कुडि, **गु.** बोरडी, **क.** येरत्, **तै.** रेगुचेट्टू, **ता.** रेयति, **अं.** जुजब, **ला.** झिझिफस जुजबा, **फा.** सिदर, कुनार । **गुण** । जो बेर **बड़ा** और पककर **मीठा** होगया हो उसको **सौवीर** अर्थात् पैमंदी बेर कहतेहैं । यह शीतल, भेदक, भारी, वीर्यजनक और पुष्टिकारी । **प्रयोग** पित्तजन्य दाह, रुधिर दोष, क्षय और तृषा इनको दूर करे । जो बेर छोटे २ और पकेहुए होतेहैं उनको **कोल** अर्थात् गोला, दौलतखानी बेर कहते हैं। ये ग्राही, रोचक, गरम, वातकारी, कफपित्तकर्त्ता, भारी और सारक हैं । **बहुतछोटे** अर्थात् झडिया बेरको कर्कन्धु कहतेहैं । ये खट्टे, कषेले, थोड़े मीठे, स्निग्ध, भारी, कडवे और वातपित्तनाशक । बेर मात्र **सूखा-हुआ** भेदक, अग्निकारक, हलका, तृषानिवारक, श्रमको शांतिकर्ता और रक्तदोष को नाश करे है [प्रायः सूखे बेरोंको मालिन कूटकर **विरचन** बनाकर बेचती हैं उसके भी यही गुण हैं।]*

पानीआंवरा.

प्राचीनामलकंलोकेपानीयामलकंस्मृतम् ।
प्राचीनामलकंदोषत्रयजिज्ज्वरघातिच ॥

अर्थ-प्राचीन आमलकको लोकमें पानीयामलक और **म.** पानआंवली, **अं.** फ्लाकुर्शयाका टाफ्राक्टा कहतेहैं । **गुण** । त्रिदोषनाशक और ज्वरको शांति करेहै ।

हरफारेवडी लवली.

सुगंधमूलालवलीपांडुःकोमलवल्कला ।
लवलीफलमश्मार्शःकफपित्तहरंगुरु ।
विशदंरोचनंरूक्षंस्वाद्वम्लंतुवरंरसे ॥ ७२ ॥

अर्थ-सुगंधमूला, लवली, पांडु और कोमलवल्कला ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** हरफारेवडी । **बं.** लोयाड, **म.** हरपरेवडी । **गुण** । **लवलीफल**-भारी, विशद, रोचन, रूक्ष, स्वादु, अम्ल और कषेला है । **प्रयोग** । पथरी, बवासीर, कफपित्तको हरण करे ।

करोंदा करोंदी.

करमर्दःसुषेणःस्यात्कृष्णपाकफलस्तथा ।
तस्माल्लघुफलायातुसाज्ञेयाकरमर्दिका ॥७३॥
करमर्दद्वयंत्वाममम्लंगुरुतृषाहरम् ।
उष्णंरुचिकरंप्रोक्तंरक्तपित्तकफप्रदम् ।
तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुपित्तसमीरजित् ॥७४॥

अर्थ-करमर्द, सुषेण, कृष्णपाकफल, ए करोंदाके **सं.** नाम, **बं.** करमचा, **म.** करवंद, **गु.** करमदां, **तै.** वाका, **ला.** केरिसा कोरंदास । इससे जो छोटी है उसको करमर्दिका कहतेहैं । **गुण** । दोनों **कच्चे-करोंदा** खट्टे, भारी, तृषानाशक, गरम, रुचिकारी और रक्तपित्त तथा कफको हरण करें । **पके** हुए मीठे, रुचिकारी, हलके, पित्त और वादीको जीतें । †

चिरोंजी.

प्रियालस्तुखरस्कंधश्चारोबहुलवल्कलः ।
राजादनस्तापसेष्टःसन्नकद्रुर्धनुःपटः ॥७५॥

* **डा० मीरमुहम्मद हुसेन**—कहता है कि बेर कफको घटाता है तथा रुधिरको शुद्ध करेहै. इसकी छालका क्वाथ घाव और सूजन धोनेमें तथा उसका गोंद नेत्रके दर्दमें वर्त्ता जाता है. यदि कोई बुरे स्वादकी दवा पीनी होवे तो बेरके पत्ते पहिले चबायके फिर उस दवाको पीवे तो जीभको खराब स्वाद नहीं लगता है ।

डा० एनस्ली—कहताहै कि बेरकी जडको **बेलजरी** कहते हैं, इसको कितनेक गरम पदार्थोंके साथ कांढा करके देनेसे कई जातिके ज्वरोंमें उत्तम असर करे है ।

सुश्रुतमें—बेर रक्तपित्तहर, वातसंशमन, शुक्रदोषनाशक, और शोकनाशक माना है ।

चरकमें—उसको स्वेदोपग, विरेचनोपग, छर्दिनिग्रहण, श्रमहारक, और वातपित्त शमनकर्त्ता वर्णन कराहै ।

† **हिंदुस्थानी औषधोंमें**—करौंदा कच्चे ग्राही और **पके** हुए शीतल गिने जाते हैं । तथा पित्तके नरम करनेको देते हैं, इसकी जड़से पेटकी ऐंठन, मंदाग्नि, ज्वर नष्ट होय और पेटके कीड़े तथा विषका नाश होताहै ।

सुश्रुतमें—इसको रक्तपित्तहर, शुक्रदोषहर, सर्वप्रमेहनाशक और शोथहर गिनाहै ।

चारःपित्तकफास्रघ्नस्तत्फलंमधुरंगुरु ।
स्निग्धंसरंमरुत्पित्तदाहज्वरतृषापहम् ॥७६॥
प्रियालमज्जामधुरोवृष्यःपित्तानिलापहः ।
हृद्योऽतिदुर्जरःस्निग्धोविष्टंभीचामवर्द्धनः ॥

अर्थ–प्रियाल, खरस्कंध, चार, बहुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सनुकद्रु, और धनुःपट, ए संस्कृत नाम, हिं. चिरोंजी, रा. चारोली, बं. पियाल, का. चारबीज, ता. काटमरा, उडि. चरु–पे, चिरोंली, अ. हब्बुस्समाना, फा. बुकलेखाजा, ला. बुकेननिया लेटिफोलिया, तै. सारुपप्पू । गुण । पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे । इसका फल मधुर, भारी, स्निग्ध, सर, वादी, पित्त, दाह, ज्वर और प्यासको नाश करहै । चिरोंजीकी मज्जा–मधुर, वृष्य, पित्त, वादीको नष्ट करे, हृदयको हितकारी, अतिदुर्जर, स्निग्ध, विष्टंभी और आमको बढानेवाली है ।

खिरनी.

राजादनःफलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच ।
क्षीरिकायाःफलंवृष्यंबल्यंस्निग्धंहिमंगुरु ।
तृष्णामूर्च्छामदभ्रांतिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥

अर्थ–राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या और क्षीरिका, ए संस्कृत नाम । हिं. खिरनी, खिन्नी, बं. क्षीरखेजूर, म. राजणी, गु. रायण, का. खेणमारिले, ता. पल्ल, इं. श्रीवट् युसुलाण्ड माईमुसोप्स । गुण । खिरनी–वृष्य, बलकारी, स्निग्ध, शीतल, भारी, तृषा, मूर्च्छा, मद भ्रांति, क्षय, त्रिदोष और रुधिरविकार, इनको दूर करे ।

कंटाई.

विकंकतःस्रुवावृक्षोग्रंथिलःस्वादुकंटकः ।
सएवयज्ञवृक्षश्चकंटकीव्याघ्रपादपः ।
विकंकतफलंपक्वंमधुरंसर्वदोषजित् ॥ ७६ ॥

अर्थ–विकंकत, स्रुवावृक्ष, ग्रंथिल, स्वादुकंटक, यज्ञवृक्ष, कंटकी और व्याघ्रपादप ए संस्कृत नाम । हिं. विकंकत, कंटाई, बं. वंइची म. खिलण, पिंडरोहिणी, बेहकल, गु. विकलो, का. हलुमाणिका, मालेगु; उ. वइचकुली, पं. कुकोया, ला. सिलमट्रम्–माटेना । इसके यज्ञमें स्रुवा बनाए जातेहैं । गुण । विकंकतका पका फल–मीठा और सर्वदोष हरण कर्ता जानना ।

कमलगट्टा.

पद्मबीजंतुपद्माक्षंगालोड्यंपद्मकर्कटी ।
पद्मबीजंहिमंस्वादुकषायंतिक्तकंगुरु ॥८०॥
विष्टंभिवृष्यंरूक्षंचगर्भसंस्थापकंपरम् ।
कफवातकरंबल्यंग्राहिपित्तास्रदाहनुत् ॥८१॥

अर्थ–पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य और पद्मकर्कटी, ए संस्कृत नाम । हिं. कमलगट्टा, म. कमलाक्ष, कमलकांकडी, तै. तामरकाडा, अ. बालके कुवति । गुण । शीतल, स्वादु, कपैले, कडवे, भारी, विष्टंभी, वृष्य, रूक्ष और सर्वोपरि गर्भदाता, कफ और वादीके करनेवाले, बलकारी, ग्राही, पित्त, रुधिरविकार और दाहको नष्ट करे ।

मखाना.

माखान्नंपद्मबीजाभंपानीयफलमित्यपि ।
माखान्नंपद्मबीजस्यगुणैस्तुल्यंविनिर्दिशेत् ॥

अर्थ–माखान्न, पद्मबीजाभ और पानीयफल, ए संस्कृत नाम, हिं. मखाना, म. मकाणे, दे. गीलणिच, ला. युर्यलोफेरोक्स । गुण । मखानेके गुण कमलगट्टेके समान जानने चाहिये ।

सिंवाडा.

शृंगाटकंजलफलंत्रिकोणफलमित्यपि ।
शृंगाटकंहिमंस्वादुगुरुवृष्यंकषायकम् ।
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मप्रदंपित्तास्रदाहनुत् ॥

अर्थ–शृंगाटक, जलफल और त्रिकोणफल ए संस्कृत नाम । हिं. सिंघाडा, म. शिंगाडे, बं. पाणीफल, गु. सींगोडा, तै. परिगेगड्डु, फा. सुरजान, अं. वॉटरचेलट्नू, ला. ट्रापाबाइ स्पाईनोम्स । गुण । सिंघाडा–शीतल, स्वादु, गुरु, वृष्य, कपैला, ग्राही, शुक्रकारक, वात और कफकारक, पित्त, रुधिरविकार और दाहको नष्ट करे ।

बेरा.

उक्तंकुमुदबीजंतुबुधैःकैरविणीफलम् ।
भवेत्कुमुद्वतीबीजंस्वादुरूक्षंहिमंगुरु ॥ ८४ ॥

अर्थ–कमोदिनीके फलको करविणीफल कहते हैं। **गुण**। कमोदिनीके बीज-स्वादु, रूच, शीतल और भारी हैं।

महुआ.

मधूकोगुडपुष्पःस्यान्मधुपुष्पोमधुस्रवः।
वानप्रस्थोमधुष्ठीलोजलजेऽत्रमधूलकः॥ ८५॥
मधूकपुष्पंमधुरंशीतलंगुरुबृंहणम्।
बलशुक्रकरंप्रोक्तंवातपित्तविनाशनम्॥ ८६॥
फलंशीतंगुरुस्वादुशुक्रलंवातपित्तनुत्।
अहृद्यंहंतितृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान्॥

अर्थ–मधूक, गुडपुष्प, मधुपुष्प, मधुस्रव, वानप्रस्थ, मधुष्ठील और **जलमहुआको** मधूलक, कहते हैं। **हिं.** महुआ, **बं.** मोल, महुया, जलमोल, **म.** मोहाचा वृत्त, मोहोवृत्त, **गु.** महुडो, **तै.** इपा, **ता.** कटइल्लुपि, **अं.** इलूपाट्री, **ल.** बेसिया लाटीफोलिया, **फा.** सफर्जल, आवीविही। **गुण**। मीठा, शीतल, भारी, बृंहण, बल और शुक्रकर्त्ता, तथा वातपित्तनाशक हैं। **महुएका फल**। शीतल, भारी, स्वादिष्ट, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक हृदयको अहित। **प्रयोग**। तृषा, रुधिरविकार, दाह, श्वास, क्षत (घाव) और क्षयको दूर करे। *

फालसा.

परूषकंतुपरुषमल्पास्थिचपरापरम्।
परूषकंकषायाम्लमामंपित्तकरंलघु॥ ८८॥
तत्पक्वंमधुरंपाकेशीतंविष्टंभिबृंहणम्।
हृद्यंतुपित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत्॥ ८९॥

अर्थ–परूषक, परुष, अल्पास्थि और परापर ए संस्कृतनाम, **हिं.** फालसा, **बं.** फलसा, **का.** बेदहा, **तै.** पुटका, **अं.** एश्याटिक् ग्रेविया। **गुण**। **कच्चे-फालसे**-कषेले, खट्टे, पित्तकर्ता और हलके हैं। **पकेहुएफालसे**-पाकमें मधुर, शीतल विष्टंभी, बृंहण, हृदयको प्रिय। **प्रयोग**। पित्त, दाह, रुधिरविकार, ज्वर, क्षय और वादीको दूर करे।

तूत (सहतूत.)

तूतःस्थूलश्चपूगश्चक्रमुकोब्रह्मदारुच।
तूतंपक्वंगुरुस्वादुहिमंपित्तानिलापहम्॥
तदेवामंगुरुसरमम्लोष्णंरक्तपित्तकृत्॥ ९०॥

अर्थ–तूत, स्थूल, पूग, क्रमुक और ब्रह्मदारु, ए **संस्कृत** नाम **हिं.** सहतूत, **बं.** तूत, **म.** तूति, **तै.** कंबलीचेट्टु, **ता.** मपुकट्टइचेडि, **अं.** मलबेरिकि, **ला.** मोरसइन्डिका। **गुण**। **पकेसहतूत**-भारी, स्वादिष्ट, शीतल, पित्त, वादी, इनको नष्ट करे। **कच्चे**-भारी, दस्तावर, खट्टे, गरम और रक्तपित्तको करतेहैं।

अनार.

दाडिमःकरकोदंतबीजोलोहितपुष्पकः।
तत्फलंत्रिविधंस्वादुस्वाद्वम्लंकेवलाम्लकम्॥
तत्तुस्वादुत्रिदोषघ्नंतृड्दाहज्वरनाशनम्।
हृत्कण्ठमुखगंधघ्नंतर्पणंशुक्रलंलघु॥ ९२॥
कषायानुरसंग्राहिस्निग्धंमेधाबलावहम्।
स्वाद्वम्लंदीपनंरुच्यंकिंचित्पित्तकरंलघु॥
अम्लंतुपित्तजनकंतथावातकफापहम्॥ ९३॥

अर्थ–दाडिम, करक, दंतबीज और लोहितपुष्पक ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** अनार, **रा.** दाड्यु, दाडिम, **म.** डालिंब, **गु.** दाडयम्, **क.** दालिंब, **तै.** दालिंबाकाया, दानिमचेट्टु, **ता.** मादलई चेडि, **उडि.** दालिंब, **अ.** रुम्मान, **अं.** पोंम्ग्रनेट। **गुण**। अनारका फल तीन प्रकारका होताहै। मीठा, मीठाखट्टा और केवल खट्टा। तहां **मीठा अनार**। त्रिदोषहर, प्यास, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कंठरोग, मुखकी गंधको नष्ट करता, तृप्तिकर्त्ता,

* **सुश्रुतमें**—महुएके फूलोंसे निकालाहुआ **दारू** गरम, ग्राही, कुव्वत देनेवाला, और क्षुधा को प्रदीप्त करता लिखते हैं। तथा उसके बीजोंमेंसे निकाला **तेल** मस्तकके रोगमें मस्तकपर लगाया जाताहै। तथा वृक्षकी **छाल** पाचक, पित्तवातनाशक, मूत्रकृच्छ्रहर तृषानाशक, रक्तपित्तहर, पक्वातिसारनाशक, पित्तज्वरनाशक, दाहनाशक और श्वासहर वर्णन कराहै।

चरकमें—महुएके फूलको शोणितस्थापन, रक्तशुद्धिकर, ग्राही और स्तम्भक वर्णन करा है।

शुक्रकर तथा हलका, कषायरस, ग्राही स्निग्ध, स्मरण-शक्तिवर्धक और बलकारक। **खट्टा** और **मीठा अनार** अग्निदीपतकर, रोचक, किंचितपित्तजनक, लघु। और **केवल खट्टा अनार** पित्तकारी और वातकफनाशक है *

बहुवार. (लिहसोड़ा)

बहुवारस्तुशीतःस्यादुद्दालोबहुवारकः। शेलुःश्लेष्मांतकश्चापिच्छिलोभूतवृक्षकः॥ बहुवारोविषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठनुत्। मधुरस्तुवरस्तिक्तःकेश्यश्चकफपित्तहृत्॥ फलमामंतुविष्टंभिरूक्षंपित्तकफास्रजित्। तत्पक्कंमधुरंस्निग्धंश्लेष्मलंशीतलंगुरु॥९६॥

अर्थ-बहुवार, शीत, उद्दाल, बहुवारक, शेलु, श्लेष्मांतक, पिच्छिल और भूतवृक्षक ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** लिहसोडा, निसोरा, बहुवार और छोटे लिहसोडेको लभेरा कहतेहैं। **म.** भोकर, **ता.** विडि, **तै.** नकेरु, **उडि.** अड, **फा.** शिपिस्तां, सरपिस्तां, **अं.** नेरोलिव्ड सेपिस्टन, **ला.** कोर्डिया एंगस्टी-फोलिया। **गुण।** मधुर, कषाय, कड्वे, बालोंकी सुन्दरता कारक और कफपित्तनाशक। **प्रयोग।** विष, विस्फोटक, व्रण, वीसर्प और कुष्ठरोगको नाश करे। इसके **कच्चेफल**-रूक्ष, विष्टंभी, पित्तनाशक, कफको शांतिकर और रक्तदोष निवारक। **पकेफल**-मधुर, स्निग्ध, कफवर्द्धक, शीतल और भारी। **मात्रा।** नग २, निसोरे कलेजेको अहित करतेहैं। इसका **दर्पनाशक** उन्नाव है।

कतक. (निर्मली)

पयःप्रसादिकतकंकतकंतत्फलंचतत्। कतकस्यफलंनेत्र्यंजलनिर्मलताकरम्॥ वातश्लेष्महरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु॥ ९७॥

अर्थ-कतक-पयःप्रसादी अर्थात् जलको निर्मल-कर्त्ता, इसके फलका नाम कतक। **हिं.** निर्मली, **बं.** निर्मला, **म.** निवली, **का.** चिल्लीकापि, **अं.** आनट्-विचक्लिअर्स वाटर। यह फल नेत्रोंको आरोग्यकर्त्ता और जलके मलको दूर करनेवाला, वातकफनाशक, शीतल, मधुर, कषेला और भारी है।

* **हिंदुस्तानी वैद्य**—अनारके रसको केसरके साथ मिलायके शीतल प्रयोगमें देनेकी प्रशंसा करते हैं। आंतड़ीकेरोगमें (दस्तकी कब्जियत न होय तब) फलकी छाल और फूल, लौंग, तज, धनिया, कालीमिरचआदि खुशबूदार पदार्थोंकेसाथ मिलायके देते हैं। **हिंदीवैद्यककी पुस्तकोंमें** जड़की छालके लिये किसीप्रकारका वर्णन देखनेमें नहीं आया।

मुसलमानी ग्रंथकार—मीठा खट्टा और खटमिठा ऐसे तीनप्रकारके **अनार** वर्णन करतेहैं तथा **फलकीछाल** तथा **फूल** इनको ग्राही गुणोंके कारण अनेक प्रकारके रोगोंमें वर्त्ताव करनेमें लातेहैं। और कहतेहैं कि जड़कीछाल वृक्षके अन्य सर्वभागोंसे अधिक ग्राहीहै तथा पेटमें होनेवाले चपटे लंबे कीड़े (Tapeworm) के वास्ते बहुत उत्तम आजमूदा दवा है। तथा उसको रोगमें देनेके वास्ते ५ तोले ताजी छाल २ सेर पानीमें डालके एकसेर जब पानी बाकी रहे तब उतार लेवे शीतल होनेपर इसमेंसे एक एक प्याला आध २ घड़ीमें जहांतक सब न निवट जाय तहांतक पीनेको देतेहैं। अनेकवार इस क्वाथके पीनेसे पेटसे रद्द होकर निकलनेकीसी भ्रांति होती है—परंतु थोड़ी देरमेंही पेटके तमाम कीड़े निकल जातेहैं। अनारके बीज और बीजोंका रस पेटकी ऐंठन नष्ट कर्त्ता है। दस्तकी बीमारीमें छालके क्वाथमें थोड़ीसी अफीम डालके देनेसे बहुत उत्तम असर करे हैं।

डा० कर्कपेट्रीक—कहताहै कि फलकीछाल पाचनशक्ति बढानेको और ग्राही तथा प्राचीन मरोड़ाके आजारमें उसको लौंगके साथ औटायके देनेसे अन्य २ उपचार (इलाजों) की वनिस्वत अधिक गुण करे है।

चरकग्रंथमें—अनारको वमननाशक, हृद्य (रुचि उत्पन्न करके शरीरको उत्तेजन देनेवाला) वर्णन कराहै।

सुश्रुतग्रंथमें—उसको वातनाशक, मूत्रदोषहर (मूत्रप्रधानके रोग नष्टकर्त्ता) तृषानाशक और रुचिकारक मानतेहैं।

द्राक्षा (दाख)

द्राक्षास्वादुफलाप्रोक्ता तथा मधुरसापिच ।
मृद्वीकाहारहूराचगोस्तनीचापिकीर्तिता ॥
द्राक्षापक्कासराशीताचक्षुष्याबृंहणीगुरुः ।
स्वादुपाकरसास्वर्यातुवरासृष्टमूत्रविद् ॥
कोष्ठमारुतकृद्वृष्याकफपुष्टिरुचिप्रदा ।
हंतितृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामलाः ॥
कृच्छ्रास्रपित्तसंमोहदाहशोषमदात्ययान् ।
आमास्वल्पगुणागुर्वीसैवाम्लारक्तपित्तकृत् ॥
वृष्यास्याद्गोस्तनीद्राक्षागुर्वीचकफपित्तनुत् ।
अबीजाऽन्यास्वल्पतरागोस्तनीसदृशीगुणैः ॥
द्राक्षापर्वतजालघ्वीसाम्लाश्लेष्माम्लपि-
त्तकृत् ।
द्राक्षापर्वतजायाद्वक्ताद्दृशीकरमर्दिका ॥ २ ॥

अर्थ-स्वादुफला, द्राक्षा, मधुरसा, मृद्वीका, हार-हूरा और गोस्तनी ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** दाख, **गु.** धाख, **ता.** कोडिमिरिडरिप्पभ्काम्, **अ.** अनवम-वीजे, **फा.** अंगूर, मुनक्का, **अं.** ग्रेप-रेजिन्स, **ला.** वाइटिस् विनिफेरा कहते हैं। **गुण । पक्कीदाख**-शीतल, दस्तावर, नेत्रों को हितकारी, पुष्टिकारक, भारी, स्वादु पाकवाली, स्वरशोधक, कषाय, वृष्य भेदक, मूत्रकारक, कफवर्द्धक, पुष्टिकर, रोचक, कोठेमें वादीको उत्पन्न कर्त्ता । **प्रयोग** । तृषा, ज्वर, श्वास, वातप्रधान वातरक्त, कामला, घोर रक्तपित्त, प्रमेह, दाह, शोष और मदात्यय रोगको नष्ट करे। **कच्चीदाख**। अर्थात् कच्ची अंगूरी में अल्प शक्ति है-यह भारी, खट्टी, रक्तपित्तरोगोत्पादक । **गोस्तनीदाख** । अर्थात् काली मुनक्का-शुक्रकर्ता, भारी और कफपित्तनाशक । क्षुद्रबीजकी **दाख** अर्थात् **किसमिस** मुनक्का के समान गुण करे है। **पर्वतीदाख**-हलकी, खट्टी, कफ और अम्लपित्त को करे। और **करौंदीदाख** (करौंदा के सदृश)-यह पहाड़ी दाखके से गुण करे है । इनमें **किशमिस** हीन गुणवान् है ।

छोटीखजूर, पिंडखजूर और छुहारा.

भूमिखर्जूरिकास्वाद्वीदुरारोहामृदुच्छदा ।
तथास्कंधफलाकाककर्कटीस्वादुमस्तका ॥
पिंडखर्जूरिकात्वन्यासादेशपश्चिमेभवेत् ।
खर्जूरीगोस्तनाकारापरद्वीपादिहागता ॥४॥
जायतेपश्चिमेदेशेसाछोहारेतिकीर्त्यते ।
खर्जूरीत्रितयंशीतंमधुरंरसपाकयोः ॥ ५ ॥
स्निग्धंरुचिकरंहृद्यंक्षतक्षयहरंगुरु ।
तर्पणंरक्तपित्तघ्नंपुष्टिविष्टंभशुक्रदम् ॥ ६ ॥
कोष्ठमारुतहृद्बल्यंवांतिवातकफापहम् ।
ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम् ॥
मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदांतकृत् ।
महतीभ्यांगुणैरल्पास्वल्पखर्जूरिकास्मृता ॥
खर्जूरीतरुतोयंतुमदपित्तकरंभवेत् ।
वातश्लेष्महरंरुच्यंदीपनंबलशुक्रकृत् ॥ ९ ॥

अर्थ-भूमिखर्जूरिका, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कंधफला, काककर्कटी और स्वादुमस्तका ए **संस्कृत** नाम । यह क्षुद्रखजूर अर्थात् देशी खजूरके नाम हैं । **बं.** खेजूर, **म.** शिंदी, **का.** इंचिलु, **तै.** इंटाचेट्ट, **फा.** खुर्मा, **अ.** तमररुतव, **अं.** डेट्पाम Date palm । **पिंडखजूर** पश्चिम देश (काबुलआदि) में उत्पन्न होतीहै । **छुहारा** नामक एक प्रकार की खजूरकी जाति है इसकी आकृति गौके थनों के आकार होती है । इसको परद्वीप अर्थात् अरब आदिकी विलायत से लाते हैं । **बं.** सोहारा कहते हैं । **गुण** । तीनों प्रकारकी खजूर-शीतल, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारी, हृदयको हित, भारी, तृप्तिकरता, पुष्टिकारक, विष्टंभी, शुक्रकरता, बलकारी, वमननिवारक और वात, कफ नाशक । **प्रयोग** । घाव, क्षय, रक्तपित्त, कोष्ठाश्रित वादी, ज्वरातिसार, खांसी, श्वास, मद, मूर्च्छा, मद्यपानजनित रोग, एवं भूख और प्यासको दूर करे । बड़ी खजूर के गुणकी अपेक्षा छोटी खजूर के गुण अल्प हैं ।**खजूरीतोय** । (खिजूरका रस) मादक, पित्तकर, वातकफनाशक, रोचक, अग्निवर्द्धक बलकारक और शुक्रोत्पादक है ।

सुलेमानी (पिंडखजूरका भेद.)

सुलेमानीतुमृदुलादलहीनफलाचसा ।
सुलेमानीश्रमभ्रांतिदाहमूर्च्छास्रपित्तहृत् ॥

अर्थ-सं. सुलेमानी, मृदुला और दलहीनफला ।

गुण। सुलेमानी **खिजूर**-श्रम, भ्रांति (और) दाह, मूर्च्छा और रक्तपित्त रोगको निवारण करे।

बादाम.

वातादोवातवैरीस्यान्नेत्रोपमफलस्तथा।
वातादउष्णःसुस्निग्धोवातघ्नःशुक्रकृद्गुरुः॥
वातादमज्जामधुरोवृष्यःपित्तानिलापहः।
स्निग्धोष्णःकफकृन्नेष्टोरक्तपित्तविका-
रिणाम्॥ १२॥

अर्थ-वाताद, वातवैरी और नेत्रोपमफल ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** बादाम, **बं.** मिष्टबादाम **ता.** वदवाइम, **तै.** वेदम **अ.** लोज, **अं.** स्वीट् अलांड। **गुण।** **बदाम**-गरम, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्रजनक, भारी। इसकी **मज्जा** मधुर, वृष्य, वातपित्तनाशक, स्निग्धोष्ण और कफवर्द्धक तथा रक्त पित्तवाले रोगियों को हितकारी नहीं है। *

सेव.

मुष्टिप्रमाणंबदरंसेवंसिवितिकाफलम्।
सेवंसमीरपित्तघ्नंबृंहणंकफकृद्गुरु॥
रसेपाकेचमधुरंशिशिरंरुचिशुक्रकृत्॥ १३॥

अर्थ-मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव और सिवितिका फल ए सेवके **सं.** नाम। **बं.** सेउ, **अ.** तुफाह, **अं.** आपल **ला.** पाइरस्मेलस् कहतेहैं। **गुण।** वातपित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकर्ता, भारी, स्वादिष्ट और पाकमें मधुर, शीतल, रुचिकारी और शुक्र प्रकटकर्ताहै।

अमृतफल (नासपाती)

अमृतफलंलघुवृष्यंसुस्वादुत्रीनहरेद्दोषान्।
देशेषुमुद्गलानांबहुलंतल्लभ्यतेलोकैः॥ ४१॥

अर्थ-अमृतफलको खुरासान काबुल आदि दे-

* **मुसलमान हकीम**—लिखतेहैं की कड्वी बादाम सूजन उतारनेवाली है तथा संधियों के रोग में इसको सिरके के साथ पीसकर लगातेहैं। तथा आंखकी देखनेकी शक्ति मजबूत करनेको आंजते हैं। **पीपरमिंट** और मैदा के साथ मिलायके देने से खांसी नष्ट होतीहै। तथा इस प्रकार कहता है कि इसके खानेसे पेशाव की थैली में उत्पन्न होने वाली पथरी बंद होती है। पेशाब अधिक उतर है, तथा कलेजे और तिल्ली की बीमारी दूर होय। बादाम को पीस मस्तक में लगाने से जूंआ लीख मर जाती हैं, फोड़े और त्वचा के रोग में इसको पुलटिश बनाय के बांधते हैं। **बदामकी जड़** शक्ति बढाने वाली है, बदाम के वृक्षका **गोंद** जिसको **बदामी गोंद** कहते हैं इसको **यूरोपियन** बाजारमें **होगगम्** अथवा **गमबसोरा** नामसे बोलतेहैं। तथा यह अन्य साधारण गोंदके तरीके से वर्त्ता जाय है।

इंग्रेजी दवामें—बदाम पौष्टिक गिना जाय है बदाम का **तेल** सुगंध देनेवाला और खुलासा दस्त लाने वाला, गिना जायहै। तथा यह बास-रहित और लगभग रंग रहित होने से कितनी जातिकी मल्हम बनानेके काम में आताहै।

मी० मरे—अपनी सिंधकी औषधीय वनस्पति ग्रंथ में बदाम के बारे में लिखताहै कि हिंदुस्तानमें बदाम औषध तरीके से अधिक नहीं वर्त्ती जाती।

डा०एनस्लीके—लिखे, अनुसार फारसी और अरबी हकीम मीठी बदामको कामोत्तेजक पदार्थों में एकही गिनते हैं और **कड़वी बदाम को** पेशावकी थैली में होने वाली पथरी पिलगाने वाली मानते हैं। बदाम को यदि अच्छी तरह चबाय के न खायतो सहज में पचती नहीं हैं। सर्व प्रकार की मिठाइयों में बदाम अधिक पड़ती है। बादामकी **मिंगी में** सैंकडे पीछे ५४ टंक भर **तेल** रहताहै। **कड़वी बादाम** जहरीली है, क्योंकि कईएक उससे मनुष्य, छोटे २ बच्चे और छोटे २ जानवरों की मृत्यु हुई है। और उस कड़वी बदाम में मीठी बदाम के बराबर तेल नहीं निकलता। तेलमें **प्रूसीड** अथवा **हाइड्रोसयानिक एसिड** रहता हैं, इसी वास्ते इसमें कैफी (नशे लाने वाले) गुण रहते हैं। किसी २ समय ज्वर की बिमारी में यह तेल वर्त्तने में आता है। परन्तु यह बड़ा जहरीला है। तथा उसका **हाइड्रोसयानीक एसिड** अतीव जहरीला पदार्थ है उसके माफिक बना जाय है। **देशी वैद्य बदाम के** तेलको पौष्टिक पदार्थों में वर्त्तते हैं। तथा उसको मृगी अथवा उन्मत्तता और अन्य मस्तक की बीमारी में मस्तक पर मलते हैं।

ओंमें **नासपाती** कहतेहैं । **गुण** । हलका, स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक । यह मुगलोंके देशों में अधिक मिलतीहै ।

पीलू

पीलुर्गुलफलःस्रंसीतथाशीतफलोऽपिच ।
पीलुःश्लेष्मसमीरघ्नं पित्तलंभेदिगुल्मनुत् ॥
स्वादुतिक्तंचयत्पीलुतन्नात्युष्णंत्रिदोषहृत् ॥

अर्थ–कोकनदेशमें उत्पन्न, अखरोट जातिका एक प्रकारका वृक्ष होताहै–उसके **पर्याय** पीलू, गुलफल, स्रंसी और शीतफल, **हिं.** पीलू, **ता.** कोकू, **दे.** फल, **फा.** मिसवाक, **अ.** ईराक, **इं.** मस्टर्ड ट्री ऑफ स्क्रापूचर । **गुण** । वात, श्लेष्मनाशक, पित्तकर्ता, दस्तावर और गुल्मरोगनाशक । यह पीलू **स्वाद**में मीठा और कड़वा होनेसे त्रिदोषनाशक और अधिक गरम नहीं है ।

अखरोट.

पीलुःशैलभवोऽक्षोटःकर्परालश्चकीर्तितः ।
अक्षोटकोऽपिवातादसदृशःकफपित्तकृत् ॥

अर्थ–सं. पीलू, शैलभव, अक्षोट और कर्पराल, इसके गुण बदामके समान जानने यह कफपित्तवर्द्धक है । **विशेषता** । यह शाखी जातिकी वनस्पति है । पर्वतोंमें उत्पन्न होतीहै । **हिं.** अखरोट, **बं.** आखरोट, **म.** अक्रोड, **कोंकणमें** अखोड, **द्राविडमें** उव्वकाई, अरबीमें जोज, **फा.** किरदगां और चारमग्ज, **इं.** नट Nut कहते हैं । यह एक वृक्षका फलहै । इसका **वृक्ष** बड़ा होता है, **पत्ते** चौड़े और कुछ लंबे, तथा कुछ २ मोटे होते हैं । **फलके** ऊपर तीन छिलका होते हैं । **पाहिला** हरा और मोटा । स्वादमें कषैला और कडवाई लिये । यह फल कचेपनमें नरम परंतु सूखकर कठोर होजाता है । **दूसरा** छिलका परले छिलके के नीचे कठोर होता है। फिर इसके नीचे दो टुकड़े आपसमें मिले और सिरा उनका निकला हुआ तथा **तीसरा** छिलके के नीचे मिंगी और ऊपर बहुत बारीक छिलका होता है । **मिंगी** बहुत सफेद और चिकनाई लिये पिश्ते और चिलगोजेकी मिंगीके समान होती है । इस फलके चार भाग होते हैं । दो दो भाग आपसमें मिले हुए और इनके बीचमें बहुत बारीक परदा होता है ।

बिजौरा.

बीजपूरोमातुलुंगोरुचकःफलपूरकः ।
बीजपूरफलंस्वादुरसेऽम्लंदीपनंलघु ॥१७॥
रक्तपित्तहरंकंठजिह्वाहृदयशोधनम् ।
श्वासकासारुचिहरंहृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् ॥१८॥

अर्थ–बीजपूर, मातुलुंग, रुचक और फलपूरक, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** बिजौरा, **बं.** टबालेबू, **म.** महालुंग, **गु.** बीजोरूं, **तै.** दबाकाया, **का.** मादवाला, **उडि.** कलंबा, **अ.** उतरंज, **फा.** तुरंज, **ला.** साइट्रस मेडीका Citrus medica कहते हैं । **स्वरूप** । इसका वृक्ष छोटा, **पत्ते** नींबूके समान छोटे २ कंगनीदार होते हैं, **फल** लंबा गोल अनीदार और खरदरी छालका होता है । **चित्र** नंबर ३५ का देखो । **गुण** । रसमें स्वादु, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्त, श्वास, खांसी और तृषाको हरण करे । कंठ जिह्वा और हृदयको शोधन करे, तथा हृदयको हितकारी है ।

मधुकर्कटी (चकोतरा.)

बीजपूरोऽपरःप्रोक्तोमधुरोमधुकर्कटी ।
मधुकर्कटिकास्वाद्वीरोचनीशीतलागुरुः ॥
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ॥१९॥

अर्थ–दूसरे प्रकारके बिजौरेको मधुर और मधुकर्कटी, **हिं.** चकोतरा, **बं.** बाताबिलेबू कहते हैं । **गुण** । **चकोतरा**–स्वादु, रोचक, शीतल, भारी, रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खांसी, हिचकी और भ्रमरोग इनको दूर करे ।

जंभीरीदोनों.

स्याज्जंबीरोदंतशठोजंभजंभीरजंभलाः ।
जंबीरमुष्णंगुर्वम्लंवातश्लेष्मविबंधनुत् ॥२०॥
शूलकासकफोत्क्लेशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ।
आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यकृमीनहेरत् ॥
स्वल्पजंबीरिकातद्वत्तृष्णाच्छर्दिनिवारणी ॥

अर्थ–जंबीर, दंतशठ, जंभ, जंभीर और जंभल ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** जंभीरी, **बं.** गोंडालेबू और कागजीलेबू, **म.** लघुईडनिंबु, **क.** कर्चाले, **तै.** नीम्म पंड । **गुण** । **जंभीरी**-गरम, भारी, खट्टी, बातकफ

और विबंधको दूर करे । शूल, खांसी, कफ, उत्क्लेश वमन, तृषा, आमके दोषको जीते । तथा मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मंदाग्नि और कृमिरोगको नष्ट करे । इसी प्रकार छोटी जंभीरीमें भी गुण जानने । विशेषता यह है कि तृषा और वमन होनेको दूर करे ।

नीबू.

निंबूःस्त्रीनिंबुकंक्लीबेनिंबूकमपिकीर्तितम् ।
निंबूकमम्लंवातघ्नंदीपनंपाचनंलघु ॥ २२ ॥
निंबुकंकृमिसमूहनाशनम्
तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहम् ।
वातपित्तकफशूलिनेहितम्
कोष्ठनष्टरुचिरोचनंपरम् ॥ २३ ॥
त्रिदोषवह्निक्षयवातरोग-
निपीडितानांविषविह्वलानाम् ।
मंदानलेबद्धगुदेप्रदेयम्
विषूचिकायांमुनयोवदंति ॥ २४ ॥

अर्थ-निंबू, निंबुक और निंबूक ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** नीबू, **बं.** पातिलेबू, **का.** कचिले, **फा.** लैमु, **इं.** लेमन्स, **ला.** लेमोनं एसिडं । **गुण** । **नीबू**-खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचन, हलका । **अन्य-भी लिखाहै** कि—नीबू कृमिसमूहको नष्ट करे, तीक्ष्ण, खटाईयुक्त, उदरपीडाको निवारण करे, अत्यंत अरुचि इसके द्वारा दूर होवे, अत्यंत मंदाग्नि, क्षयरोग, वातव्याधि, विषके विकार, कोष्ठरोध और विषूचिकारोग इनपर देवे ।

मीठानीबू.

मिष्टनिंबूफलंस्वादुगुरुमारुतपित्तनुत् ।
गररोगस्यविध्वंसिकफोत्क्लेशिचरक्तहृत् ।
शोषारुचितृषाच्छर्दिहरंबल्यंचबृंहणम् ॥२५॥

अर्थ-मिठे नीबूको बंगालो **कमलालेबू** कहते हैं । **गुण** । स्वादु, गुरु, वातपित्तनाशक, विषरोगनाशक, विषघ्न, कफनिःसारक, रक्तदोषनाशक, बलकारक और पुष्टिकर्ता, इसके द्वारा शोष, अरुचि, तृषा और वमनका निवारण होय ।

कर्मरंग.

कर्मरंगंहिमंग्राहिस्वाद्वम्लंकफवातहृत् ।

अर्थ-कमरख शीतल, ग्राही, स्वादु, खट्टा और कफवातको हरण करे, **हिं.** कमरख, **बं.** कामरंगा, **म.** कर्मराचें झाड, **अं.** करवोला । **स्वरूप** । इसका मध्यम कदका वृक्ष होताहै । **पत्ते** लंबे श्याम तमालके सदृश, फल चारकोनेवाला होताहै ।

इमली.

अम्लिकाचुक्रिकाम्लीचचुक्रादंतशठापिच ।
अम्लाचचिंचिकाचिंचातिंतिडीकाचतिंतिडी
अम्लिकाऽम्लागुरुर्वातहरीपित्तकफास्रकृत् ।
पक्वातुदीपनीरूक्षासरोष्णाकफवातनुत् ॥

अर्थ-अम्लिका, चुक्रिका, अम्ली, चुक्रा, दंतशठा, अम्ला, चिंचिका, चिंचा, तिंतिडीका और तिंतिडी ए **संस्कृत**नाम, **हिं.** इमली, अंबली, **बं.** आमरूल, तेंकल, तेंतुल, **का.** हुणिसे, **म.** चिंच, **गु.** आंबली, **तै.** चींताचेट्टु, **उडि.** कआं, **ता.** पुलि, **फा.** तमर-हिन्दी, **इं.** टेमेरिन्ड । इमलीके कच्चे फलोंको **कतारे** कहते हैं, पकनेपर खटमिट्ठी होजाती है । और रंगमें पीली लाल होतीहै और यह सर्वत्र मिलती है । **गुण** । खट्टी, गुरु, वातनाशक, पित्तकर्ता, कफवर्द्धक और रक्तदोषनिवारक । **पक्कीइमली** । अग्निदीपिकर्ता, रूक्ष, सर (दस्तावर) गरम और वातश्लेष्मनाशक । इमली अत्यंत सेवन करने से फैंफडेको विगाडती है, **दर्पनाशक** शरवतबनफसा, शरवतखसखास हैं । **प्रतिनिधि** आलूबुखारा है । *

* **हिंदुस्थानी वैद्य**—इमलीको शीतल, पाचक दस्त खुलासा लानेवाली, और दस्तकी कब्जियत था ज्वरमें अत्यंत उपयोगी गणना करते हैं । इमलीकी फलीकी ऊपरकी छालकी राख क्षारके सदृश दवामें डालतेहैं और पत्ते सूजनपर बांधनेसे सूजन उतर जाती है ।
मखजनउलअदवियाका करनेवाला—दो प्रकारकी इमली कहताहै । **लाल** और **भूरे**रंगकी व दोप्रकारकी इमलियोंमें **लाल** जातिकी उत्तम होती है । इमलीके गूदेको मुसलमानवैद्य ग्राही, दस्त खुलासा लानेवाला, पित्तकी उलटी **बंद** करनेवाला और जुलावद्वारा पित्तको निकालनेवाला गिनते हैं ।

अमलवेत.

स्यादम्लवेतसश्चुक्रंशतवेधिसहस्रनुत् ।
अम्लवेतसमत्यम्लंभेदनंलघुदीपनम् ॥ २८ ॥
हृद्रोगशूलगुल्मघ्नंपित्तलंलोमहर्षणम् ॥
रूक्षंप्लीहोदावर्त्तनाशनम् ॥ २९
हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत् ॥
कफवातामयध्वंसि छागमांसद्रवत्वकृत् ।
चणकाम्लगुणंज्ञेयंलोहसूचीद्रवत्वकृत् ३० ॥

अर्थ—अम्लवेतस, चुक, शतवेधि और सहस्रनुत् ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** अमलवेत, थैंकल, **म.** चूका, **अ.** तुर्शक, **इं.** कामन् सोरेल् । **गुण** । अत्यन्त खट्टा, भेदक, हलका, अग्निवर्द्धक, पित्तजनक, रोमांचकारक और रूक्ष । इसके सेवन करने से हृद्रोग, शूल, गुल्मरोग, मूत्रदोष, मलदोष, सांझा, उदावर्त, हिचकी, अफरा, अरुचि, श्वास, खांसी, अजीर्ण, वमन, कफजन्यरोग और वात व्याधि दूर होय । इससे बकरे के मांसका पानी होजाता है । और जैसे चना खार से लोहे की सुई गल जाती है उसी प्रकार इसमें भी सुई गेरने से गल जाती है ।

विषाविल

वृक्षाम्लंतिन्तिडीकंचचुक्रंस्यादम्लवृक्षकम् ।
वृक्षाम्लमाममम्लोष्णंवातघ्नंकफपित्तलम् ॥
पक्वंतुगुरुसंग्राहिकटुकंतुवरंलघु ।
अम्लोष्णंरोचनंरूक्षंदीपनंकफवातकृत् ॥
तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजंतुजित् ।

जुलाब लगने को देनी होयतो उसके साथ जैसे बने तैसे अन्य प्रवाही बहुत थोड़े देने चाहिये । गलेके भीतर की सूजन दूर करने को इमली के पानी के कुल्ले करने से उत्तम आराम होता है बीज में भी ग्राही गुण है । तथा उसको उबालकर पुलटिश बनाय फोड़े की गांठ **पर** बांधते हैं । **पत्तों** को जल में पीस जलको निचोड़ले इसको पित्तके जोर से आने वाले ज्वर और पेशाब की गरमी के वास्ते देते हैं । और उसको पीसकर पुलटिश बनाय के बांधने से सूजन उतर जाती है । तथा दर्द कम होता है आंख के परदे की सूजन के वास्ते **फूल** की पुलटिश बांधते हैं तथा **फूल** का रस दूखते हुए बवासीर में उत्तम फायदा करता है । इमली के वृक्षकी **छाल** ग्राही और पाचक है इमली के वृक्षका **पवन** देशी लोग तन्दुरुस्ती को हानि कर्त्ता गिनते हैं । तथा इस प्रकार कहते हैं कि **इमलीके वृक्षके** नीचे तंबू बहुत दिन रखनेसे उसका कपड़ा सड़ जाताहै । उसी प्रकार इमली के वृक्षके नीचे दूसरी जातिका चुपभी कहीं २ कभी २ देखने में आता है । **मद्रासके** इलाके में प्राणी इमली का **चारपानी** आदि पदार्थ बनाकर और कई प्रकार का कल्पना करके मिले हुए खुराकमें बहुत वर्त्ततेहैं। तथा उसके बीजको भी आगमें भूनकर या घृतादि में सेक कर खाते हैं ।

चरकसंहितामें—इमली को खट्टी, पित्तशामक, और सारक (दस्तावर) गिनी है ।

चक्रदत्तमें—धतूरे वगैरहके जहर उतारनेको खजूर, दाख, इमली का गूदा, अनारदाना, फालसे और आंमले सब समान भागले, तथा बारीक पीस और इसमें पचगुना पानी मिलायऔटाय काढ़ा करके देना लिखाहै । दवाकी तरह इमली का गूदा १। रुपेभर अथवा इससे भी अधिक खानेसे थोडा जुल्लाब होताहै और पाचनशक्ति बढ़ैहै । तथा प्यास कम लगती है । किसीके साथ इमली का गूदा मिलाय के देनेसे जिसके साथ दीजाती है उसका असर अधिक होता है परंतु रेवतचीनीके शीराके समान जुल्लाब के साथ मिलानेसे उसका असर थोडा होताहै ।

विसीयनलोग—पेटके मरोड़ेकेरोगमें तथा पाचनशक्ति बढ़ानेको इमलीके बीज अन्य औषध के साथ मिलायके वर्त्तते हैं । **सीलोनके** टापूमें कलेजा और तिल्ली की गांठ होनेमें इमली के फूलकी एक प्रकारकी मिठाई बनायके रोगीको देते हैं । पत्तोंको उबालकर उसको सेक करनेमें लेतेहैं । इमली के वृक्षके नीचे सोने से रोग होताहै और नीमके वृक्ष के नीचे सोने से सर्व रोग दूर होते हैं ऐसा अपने लोग मानते हैं । इमलीके **गोंदका** चूर्ण करके नासूर के घावपर बुरकते हैं, कि जिससे घाव जल्दी भर आवे तथा **पत्तोंको** शीतल जलमें भिगोय आंख दूखने आई होय तो उसपर और नासूर के घावपर बांधते हैं । बीजको पीस जलमें मिलाय गांठपर चुपड़ने से उसके भीतर तत्काल राध पड़कर और फटकर फूट जायहै ।

अर्थ-वृक्षाम्ल, तिंतिडीक, चुक्र और अम्लवृक्षक ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** विषाविल, **रा.** डासरया, **बं.** महादा, **म.** कोकम, आमसोल, **क.** तीत्तीडीक, **गोआ.** त्रिजोओ, **इं.** कोकंबटर । **गुण** । **कच्चा विषाविल** खट्टा, उष्ण, वातघ्न और कफपित्तवर्द्धक । **पका हुआ** भारी, ग्राही, कटु, कषेला, हलका, खट्टा, रेचक, रूक्ष, अग्निकारक और वातकफ उत्पन्न कर्ता । इसके सेवन करने से तृषा, बवासीर, संग्रहणी, गोला, शूल, हृदय-रोग, कीट अर्थात् पेटके कीडे दूर हों ।

चतुराम्ल-पंचाम्ल.

अम्लवेतसवृत्ताम्लवृहज्जंबीरनिंबुकैः ।
चतुरम्लंहिपंचाम्लंबीजपूरयुतैर्भवेत् ॥३३॥

अर्थ-अमलवेत, विषाविल, बडीजंभीरी और नींबू इन चारों के एकत्र मिलने को **चतुराम्ल** (चारखटाई) कहते हैं । और इन चारों में बिजोरे का रस मिलाने से **पंचाम्ल** (खटाईपंचक) कहाताहै ।

परिभाषा.

फलेषुपरिपक्वंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
बिल्वादन्यत्रविज्ञेयमामंताद्धिगुणाधिकम् ॥
फलेषुसरसंयत्स्याद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
द्राक्षाविल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम् ।
फलतुल्यगुणंसर्वमज्जानमपिनिर्दिशेत् ॥
फलंहिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ।
अकालजंकुभूमीजंपाकातीतंनभक्षयेत् ॥३८॥

अर्थ-फलोंमें जो **पकाफल** होता है वह गुणकारी जानना, परन्तु **बेलफल**को त्यागके-क्योंकि बेलफल तो कच्चाही गुणकारी कहाहै । **फलोंमें** जो रसयुक्त होताहै वही अधिक गुणवाला जानना परंतु दाख, बेल आंवले आदिके फल सूखेही गुणकारी होतेहैं । जैसे २ गुण फलमें हैं उसी २ प्रकारके उसकी मज्जा (मिंगी) में गुण जानने । **वर्जितफल** । जो फल सरदीका मारा, आगका पजरा, पवनका सुखाया, सर्पादि दुष्ट कीडे आदिके खानेसे दूषित और जो अपनी ऋतुके विनाही उत्पन्न हुआ हो, तथा दूषित भूमिमें प्रकट हुआ हो, जिसकी पकनेकी अवधि निकल गई हो अर्थात् जिसको पके बहुत दिन व्यतीत होगए हों ऐसा फल मनुष्य को कदाचित् नहीं खाना चाहिये ।

इति फलवर्गः समाप्तः

अथ धात्वादिवर्गः

धातुओंके नाम और गुण.

स्वर्णरूप्यंचताम्रंचरंगंयसदमेवच ।
सीसंलोहंचसप्तैतेधातवोगिरिसंभवाः ॥ १ ॥
वलीपलितखालित्यकार्श्यबल्यजरामयान् ।
निवार्यदेहंदधतिनृणांतद्धातवो मताः ॥ २ ॥

अर्थ-सुवर्ण (सोना), रूपा, तामा, रांगा (कलई), जस्ता, शीशा और लोहा, ए पर्वत से उत्पन्न हुई **सात धातु** हैं । देहमें गुजलट पडना, बालोंका सफेद होना, बालों का मस्तक में से उडजाना, कृशता, निर्बलता, बुढापा और रोग इनको दूर करके मनुष्यों के देहको धारण करती हैं—इसी से इनकी **धातु** संज्ञा है । तहां

सुवर्णकी उत्पत्ति.

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम् ।
मरीचिरंगिराअत्रिःपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः ॥
वसिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताःपरमर्षयः ।
पत्नीर्विलोक्यलावण्यलक्ष्मीसंपन्नयौवनाः ॥
कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः ।
पतितंयद्धरापृष्ठेरेतस्तद्धेमतामगात् ॥ ५ ॥
कृत्रिमंचापिभवतितद्रसेंद्रस्यवेधतः ।

अर्थ—पहिले अपने आश्रममें स्थित जितात्मा सप्तर्षि—जैसे मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और परमर्षि वसिष्ठ, इनकी पत्नियों की सुंदरता और यौवनावस्था रूपलक्ष्मी देखकर कामपीडित **अग्निदेवका** जो वीर्य पृथ्वीमें गिरा वही **सुवर्ण** होगया । और एक सुवर्ण **कृत्रिमभी** होता है कि जिसको पारेके वेधसे रसायनी लोग बनाते हैं ।

सुवर्णके नाम.

स्वर्णंसुवर्णंकनकंहिरण्यंहेमहाटकम् ॥ ६ ॥
तपनीयंचगांगेयंकलधौतंचकांचनम् ।

चामीकरंशातकुंभंतथाकार्त्तस्वरंचतत् ॥ ७ ॥
जांबूनदंजातरूपंमहारजतमित्यपि ।

अर्थ-स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, तपनीय, गांगेय, कलधौत, कांचन, चामीकर, शातकुंभ, कार्त्तस्वर, जांबूनद, जातरूप और महारजत, ए सुवर्ण के संस्कृत नाम हैं । हिं. सोना, फा. तिला, अ. जहब, क. स्वर्ण, तै. बंगारं, इं. गोल्ड, ला. औरं, गु. सोनूं ।

उत्तम सुवर्ण के लक्षण.

दाहेरक्तंसितंछेदेनिकषेकुंकुमप्रभम् ॥ ८ ॥
तारशुल्वोज्झितंस्निग्धंकोमलंगुरुहेमसत् ९॥

अर्थ-तपानेमें लाल, तोड़नेमें सफेद, कसौटीपर केशरके समान, लाल झलक देवे, जिसमें चांदी और तांमा न मिला हो, स्निग्ध, कोमल (नरम) और भारी ऐसा सोना उत्तम होताहै ।

त्याज्यसुवर्ण.

तच्छ्वेतंकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् ।
दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेत्याज्यंलघुस्फुटम् ॥१०॥

अर्थ-जिसका सफेदरंग, कठोर, रूखा, बुरेरंगका, मैलयुक्त, परतदार, तपानेमें और तोड़नेमें सफेद, कसौटीपर रखनेसे सफेद, हलका और जो चोटमारनेसे फूट जावे ऐसा सुवर्ण त्याज्य है । औषधमें इसे नहीं लेना ।

सुवर्णके गुण.

सुवर्णंशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् ।
स्वादुतिक्तंचतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम् ॥
पवित्रंबृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् ॥ ११ ॥
हृद्यमायुःकरंकांतिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् ।
विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥

अर्थ-सुवर्ण शीतल, वृष्य, बलकर्ता, भारी, रसायन, स्वादिष्ट, कड़वा, कषेला, पाकमें स्वादिष्ट, पिच्छिल, पवित्र, बृंहण, नेत्रोंको उपकारी, मेधा, स्मरण और बुद्धिको देताहै, हृदयको हितकारी, आयुकर्ता, कांतिकरे, वाणीको शुद्ध और स्थिर करे, स्थावर-जंगम विष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोषरोगको दूर करे ।

अशुद्ध सुवर्णके दोष.

बलंसवीर्यंहरतेनराणाम्
रोगव्रजान्पोषयतीहकाये ।
असौख्यकर्त्ताचसदासुवर्ण-
मशुद्धमेतन्मरणंचकुर्यात् ॥ १३ ॥

अर्थ-विना शोधित सुवर्ण-बल, वीर्यका नाश करे, देहमें अनेक रोगोंको बढावे और सदैव असुखकारी, तथा अशुद्ध सुवर्ण मरणको करताहै ।

अविधिमारितसुवर्णके दोष.

असम्यङ्मारितंस्वर्णंबलंवीर्यंचनाशयेत् ।
करोतिरोगान्मृत्युंचतद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥

अर्थ-अविधिसे मारा हुआ सुवर्ण बल, वीर्यको नष्ट करे, और रोग तथा मृत्युको करे है, इससे इस सुवर्णको यत्नपूर्वक मारे । सुवर्ण, चांदी आदि धातु उपधातुके शोधन मारण द्रावणकी विधि जाननी हो तो हमारे बनाए **रसराजसुंदर** ग्रंथको देखिये ।

रूपेकी उत्पत्ति.

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्निमेषैर्विलोचनैः ।
निरीक्षयामासशिवःक्रोधेनपरिपूरितः ॥ १५ ॥
अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् ।
ततोरुद्रःसमभवद्वैश्वानरइवज्वलन् ॥ १६ ॥
द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिंदुस्तुवामकात् ।
तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्मसुयोजयेत् ॥ १७ ॥
कृत्रिमंचभवेत्तद्धिवंगादिरसयोगतः ।

अर्थ-त्रिपुरके वध करनेको श्रीशिव क्रोधित होकर उस दुष्ट दैत्यको पलक रहित हो देखते हुए, उसी समय उनके एक नेत्रसे अग्नि निकाली, जिससे श्रीरुद्र अग्निके समान प्रज्वलित हुए । और दूसरे बांए नेत्रसे जो आंसूकी बूंद गिरी उससे **रजत** (रूपा) प्रकट हुआ । इसको उक्तगुण संपन्न होनेसे सब कर्मों में योजना करे । एक **कृत्रिमचांदी** कलई और पारेके योगसे बनती है ।

रूपेके संस्कृतनाम.

रूप्यंतुरजतंतारंचंद्रकांतिसितप्रभम् ॥ १८ ॥

अर्थ-रूप्य, रजत, तार, चंद्रकांति और सितप्रभ

ए संस्कृत नाम, हिं. चांदी, रूपा, गु. रूपुं, फा. नुक़रा, अ. फिद्दा, क. बेल्ली, तै. वेंडी, इं. सिलव्हर, ला. आर्जेन्टम् ।

उत्तम रूपेके लक्षण.

गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहेछेदेघनक्षमम् ।
वर्णाढ्यंचंद्रवत्स्वच्छंरूप्यंनवगुणंशुभम् ॥

अर्थ-भारी, चिकनी, नरम, दाह (ताव देने)में और तोड़नेमें सफेद, घनकी चोटसे खिले नहीं, अर्थात् टुकड़े २ न होवे, सुंदरवर्ण, चन्द्रमाके समान स्वच्छ, ए नौगुणयुक्त रूपा उत्तम होताहै ।

त्याज्यरूपा.

कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तंपीतदलंलघु ।
दाहच्छेदघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्त्तितम् ॥ २० ॥

अर्थ-कठोर, कृत्रिम (बनाहुआ), रूखा, लाल, पीलेपत्तरका, हलका और जो तपानेसे, तोड़नेसे तथा घनकी चोटसे नष्ट होजावे अर्थात् टूट जावे, ऐसा रूपा दुष्ट होताहै इसको कार्यमें न लेवे ।

रूपेके गुण.

रूप्यंशीतंकषायाम्लंस्वादुपाकरसंसरम् ।
वयसःस्थापनंस्निग्धंलेखनंवातपित्तजित् ॥
प्रमेहादिकरोगांश्चनाशयत्यचिराद्ध्रुवम् ।

अर्थ-रूपा शीतल, कषेला, खट्टा, पकनेमें स्वादुपाकी, दस्तावर, अवस्थाको स्थापन करनेवाला, चिकना, वातपित्तका नाशक, तथा प्रमेहादिक रोगोंको शीघ्र दूर करे ।

अशुद्ध रूपेके अवगुण.

तारंशरीरस्यकरोतितापम् ।
विड्बंधनंयच्छतिशुक्रनाशम् ॥
वीर्यंबलंहंतितनोश्चपुष्टिम् ।
महागदान्पोषयतिह्यशुद्धम् ॥ २२ ॥

अर्थ-अशुद्धरूपा शरीरमें तापकरे, विड्बन्ध (मलसंग्रह) कर्त्ता, वीर्य और बलको नष्ट करे, देहकी पुष्टाई नष्ट करे और देहमें रोगोंको बढावे । इ पेका भी शोधन मारण रसराजसुन्दर ग्रंथमें देखो ।

तांबेकी उत्पत्ति.

शुक्रंयत्कार्तिकेयस्यपतितंधरणीतले ।
तस्मात्ताम्रंसमुत्पन्नमिदमाहुःपुराविदः ॥२३॥

अर्थ-कार्तिकेयका वीर्य पृथ्वीमें गिरनेसे तांबा प्रकट हुआ ऐसे प्राचीन वैद्य कहतेहैं ।

ताम्रके नाम.

ताम्रमौदुंबरंशुल्वमुदुंबरमपिस्मृतम् ।
रविप्रियंम्लेच्छमुखंसूर्यपर्यायनामकम् ॥२४॥

अर्थ-ताम्र, औदुम्बर, शुल्व, उदुंबर, रविप्रिय, म्लेच्छमुख और यावन्मात्र सूर्यके संस्कृतमें पर्याय-वाचक नाम हैं सब तांबेके जानने । हिं. तांबा, तांबें गु. त्रांबो, तै. रागी, फा. मीस, अ. नुहास, इं. कॉपर, ला. कोपरम् ।

उत्तम ताम्र.

जपाकुसुमसंकाशंस्निग्धंमृदुघनक्षमम् ।
लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते ॥२५॥

अर्थ-जो जपापुष्पके समान लालरंगका, चिकना, नरम, घनकी चोटसे टूटे नहीं, जिसमें लोहेका और शीशेका मिलाप न होवे ऐसा तांबा मारणकर्ममें उत्तम है ।

त्याज्यताम्र.

कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धंश्वेतंचापिघनासहम् ।
लोहनागयुतंचेतिशुल्वंदुष्टंप्रकीर्त्तितम् ॥२६॥

अर्थ-कालेरंगका, रूखा, अतिकठोर, सफेद रंगका और घनकी चोटसे खिल जावे, जिसमें लोहा और शीशा मिल रहा हो ऐसा तांबा दुष्ट अर्थात् मारणकर्ममें त्याज्य है ॥

तांबेके गुण.

ताम्रंकषायंमधुरंचतिक्त-
मम्लंचपाकेकटुसारकंच ।
पित्तापहंश्लेष्महरंचशीतं
तद्रोपणंस्याल्लघुलेखनंच ॥ २७ ॥
पांडूदरार्शोज्वरकुष्ठकास-
श्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।
शोथंकृमिंशूलमपाकरोति
प्राहुःपरेबृंहणमल्पमेतत् ॥ २८ ॥

अर्थ–तांबा–कषेला, मधुर, कडवा, खट्टा और पाकमें चरपरा, दस्तावर, पित्तनाशक, कफ हरणकर्ता, शीतल, घावका भरनेवाला, हलका और लेखन। प्रयोग। पांडुरोग, उदर, बवासीर, ज्वर, कोढ़, खांसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि और शूल को नष्ट करे। कोई आचार्य इसको अल्प बृंहण-कर्त्ता कहतेहैं।

तांमेके आठ दोष.

एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यङ्मारितेऽष्टते।
दाहःस्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः॥

अर्थ–विषमें तो केवल एक मारण करनाही दोष है परंतु इस अविधि से मारेहुए तांमेमें आठ दोष हैं—दाह, स्वेद, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद, दस्तोंका होना, वमन और भ्रम।

रांगेके नाम और भेद.

रंगंवंगंत्रपुप्रोक्तंतथापिच्चटमित्यपि।
खुरकंमिश्रकंचापिद्विविधंवंगमुच्यते॥ ३०॥
उत्तमंखुरकंतत्रमिश्रकंत्ववरंमतम्।

अर्थ–रंग, वंग, त्रपु और पिच्चिट ए रांगेके संस्कृत नाम हैं। हिं. रांग [गां] कर्लई, बं. रंग, म. कथील, क. तवर, तै. तागारावु, अ. रुसास, फा. अरजज, इं. टीन, ला. स्टेनम्। रांग दो प्रकार का होताहै। एक खुरक, दूसरा मिश्रक तहां खुरकसंज्ञक रांगा उत्तम होताहै। और मिश्रक अधम होता है।

गुण.

रंगंलघुसरंरूक्षमुष्णंमेहकफकृमीन्।
निहंतिपांडुंसश्वासंचक्षुष्यंपित्तलंमनाक्॥३१॥
सिंहोयथाहस्तिगणंनिहंति
तथैववंगोऽखिलमेहवर्गम्।
देहस्यसौख्यंप्रबलेंद्रियत्वम्
नरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम्॥ ३२॥

अर्थ–रांगा-हलका, दस्तावर, रूखा, गरम, प्रमेह, कफ, कृमि, पांडुरोग, श्वास, इनको नष्ट करे। नेत्रोंको हितकारी और यत्किंचित् पित्तकर्ता है। जैसे सिंह हस्तिसमूहोंको नष्ट करताहै उसीप्रकार वंग देहके संपूर्ण प्रमेहादि रोगोंको मारता है। देहको सुख करे, इन्द्रियोंमें प्रबलता और निश्चय मनुष्यको पुष्ट करे है।

जस्ता.

यसदंरंगसदृशंरीतिहेतुश्चतन्मतम्।
यसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत्।
चक्षुष्यंपरमंमेहान्पांडुंश्वासंचनाशयेत्॥३३॥

अर्थ–जस्तेका संस्कृतनाम यसद है। हिं. जस्ता, म. जस्त, तै. तपेर, अ. शबूहा, फा. रुएतूतिआ, इं. जिंक, ला. जिंकम्, यह पीतल होनेका कारण है। गुण। जस्ता-शीतल, कषेला, कडवा, कफ-पित्तको हरणकर्त्ता, नेत्रोंको परमोपयोगी, प्रमेह, पांडु और श्वासरोग इनको नष्ट करे।

शीशेकी उत्पत्ति और गुण.

दृष्ट्वाभोगिसुतांरम्यांवासुकिस्तुमाच्यत्।
वीर्यंजातस्ततोनागःसर्वरोगापहोनृणाम्॥३४॥
सीसंब्रध्नंचवप्रंचयोगेष्टंनागनामकम्।
सीसंरंगगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम्॥ ३५॥
नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति
व्याधिंविनाशयतिजीवनमातनोति।
वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोति
मृत्युंचनाशयतिसंततसेवितःसः॥

अर्थ–भोगीसर्पकी सुंदर कन्याको देख वासुकी सर्पने वीर्य छोडा उसीसे मनुष्योंके सर्वरोगों का हरण कर्त्ता शीशा प्रकट हुआ। शीशेके नाम। सीस, ब्रध्न, वप्र, योगेष्ट और नाग के यावन्मात्र पर्याय-शब्द हैं सब शीशेके जानने चाहिये। हिं. शीशा, गु. शीसुं, तै. सीश, म. शिसें, अ. असरब, फा. सुर्ब, ला. लंबम्, इं. लेड्। शीशे में रांगेके तुल्य गुण हैं। विशेष करके प्रमेहको नष्ट करे है। नाग (शीशा) शतनाग (सौ हाथियो) के तुल्य बलकरे, व्याधिको नष्ट करे, जीवनको बढ़ावे, जठराग्निको दीपन करे, कामबल वृद्धिकरे और निरंतर सेवन करनेसे मृत्युको भी जीते।

असुद्धरंग और शीशेके अवगुण.

पाकेनहीनौकिलवंगसीसौ
कुष्ठानिगुल्मांश्चतथातिकष्टान्।

कंडूंप्रमेहानिलसादशोथ-
भगंदरादीन्कुरुतःप्रभुक्तौ ॥ ३७ ॥

अर्थ-पाकहीन वंग और नागको खाय तो कोढ, गोला, अतिकष्ट, खुजली, प्रमेह, मंदाग्नि, सूजन और भगंदरादि रोगोंको करहै ।

लोहेकी उत्पत्ति और नाम.

पुरालोमिनदैत्यानांनिहतानांसुरैर्युधि ।
उत्पन्नानिशरीरेभ्योलोहानिविविधानिच ॥
लोहोऽस्त्रीशस्त्रकंतीक्ष्णंपिंडंकालायसायसी ।

अर्थ-पहिले लोमिनदैत्योंको संग्राममें देवताओंने मारा तो उनके देहोंसें अनेक प्रकारके लोहे प्रकट हुए । लोहोंके नाम । लोह, शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिंड, कालायस और अयस् ए संस्कृत नाम । हिं. लोहा, मं. लोखंड, क. अयस्कांत, तै. इनुपु, गु. लोढुं, अ. हदीद, फा. आहने, ला. फेरम्, इं. आयर्न, स्टील कहतेहैं ।

लोहके सात दोष.

गुरुताहढतोत्क्लेदःकश्मलंदाहकारिता ॥ ३९
अश्मदोषःसुदुर्गंधोदोषाःसप्तायसस्यतु ।

अर्थ-भारीपना, दृढता, उत्क्लेद, कश्मल, दाहकरना, पत्थरका दोष और दुर्गंध ए सातदोष लोहेमें कहेहैं ।

लोहके गुण.

लोहंतिक्तंसरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ॥ ४० ॥
रूक्षंवयस्यंचक्षुष्यंलेखनंवातलंजयेत् ।
कफंपित्तंगरंशूलंशोथार्शःप्लीहपांडुताः ।
मेदोमेहकृमीन्कुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि ॥ ४१ ॥

अर्थ-लोहा-कडवा, दस्तावर, शीतल, मधुर, कषेला, भारी, रूखा, अवस्थास्थापक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, वादी, कफ, पित्त, विषविकार, शूल, सूजन, बवासीर, तीह, पांडु, मेदरोग, प्रमेह, कृमि, और कोढ, इन सब रोगोंको दूर करे । जैसे लोहके गुण हैं तैसे लोहेकी कीटकेभी उसीप्रकारके गुण जानने ।

अशुद्ध लोहके अवगुण.

पांडुत्वकुष्ठामयमृत्युदंभवेद्-
हृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरींच ।
नानारुजानांचतथाप्रकोपम्
करोतिहृल्लासमशुद्धलोहम् ॥ ४२ ॥
जीवहारिमदकारिचायसम्
देहशुद्धिसदसंस्कृतंध्रुवम् ।
पाटवंनतनुतेशरीरके
दारुणांहृदिरुजांचयच्छति ॥ ४३ ॥

अर्थ-अशुद्धलोह-पांडु, कोढ, मृत्यु, हृदयरोग, शूल, पथरी, अनेक प्रकारके रोगोंका प्रकोप और हृल्लासको करताहै । जीवनाशक, मदकर्त्ता और देहमें अकुशलता, तथा दारुण हृदयव्यथाको अशुद्धलोह करताहै । इस वास्ते इसका शोधन करके पश्चात् मारण करना चाहिये ।

लोह सेवनमें अपथ्य.

कूष्मांडंतिलतैलंचमाषान्नंराजिकांतथा ।
मद्यमम्लरसंचापित्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥४४॥

अर्थ-पेठा, तिलीका तेल, उडद, राई, मद्य (दारु) और खटाई इनको लोहका सेवन कर्ता त्याग देवे ।

सार लोहके लक्षण और गुण

क्षमाभृच्छिखराकाराण्यंगान्यम्लेन लेपयेत् ।
लोहस्युर्यत्रसूक्ष्माणितत्सारमभिधीयते ॥
लोहंसाराह्वयंहन्याद्ग्रहणीमतिसारकम् ।
अर्द्धसर्वाङ्गजंवातंशूलंचपरिणामजम् ।
छर्दिंचपीनसंपित्तंश्वासंकासंव्यपोहति ॥४६॥

अर्थ-जिन पत्थरोंमेंसे लोह निकलताहै उन पत्थरोंके टुकडोंपर खटाईसे लेप करनेसे जो छोटे २ बारीक लोहके कण निकलें उनको सारलोह कहतेहैं । सारलोह-संग्रहणी, अतिसार, अर्धांग तथा सर्वांग वादी, परिणामशूल, छर्दि, पीनस, पित्त, श्वास और खांसीको दूर करे ।

कांतलोहके लक्षण और गुण.

यत्पात्रेनप्रसरतिजलेतैलबिंदुःप्रतप्ते ।
हिंगुर्गंधंत्यजतिचनिजंतिक्ततांनिबकल्कः ॥
तप्तंदुग्धंभवतिशिखराकारकंनैतिभूमिम् ।
कृष्णांगःस्यात्सजलचणकःकांतलोहं-
तदुक्तम् ॥ ४७ ॥

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातंभगंदरम् ।
कामलाशोथकुष्ठानिक्षयंकांतमयोहरेत् ॥४८॥
प्लीहानमम्लपित्तंचयकृच्चापिशिरोरुजम् ।
सर्वान्रोगान्विजयतेकांतलोहंनसंशयः ॥
बलंवीर्यंवपुःपुष्टिंकुरुतेऽग्निंविवर्द्धयेत् ॥४९॥

अर्थ–जिस पात्रके जलमें तेलकी बूंद गेरनेसे फैले नहीं, और जिसमें तपानेसे हींग अपनी गंधको त्याग देवे, तथा नीमकाकल्क रखनेसे मीठा होजाय, और दूध औंटानेसे शिखरके आकार उफान ऊपरको खड़ा होजावे किंतु फैले नहीं, और जिसमें जलयुक्त चने भिगोनेसे काले होजावें उसको **कांत-लोह** कहतेहैं । **गुण** । गोला, उदर, बवासीर, शूल, आमवात, भगंदर, कमला, सूजन, कोढ़ और क्षय इनको **कांतलोह** दूर करे । तिल्ली, अम्लपित्त, यकृत्, सिरका दूखना, और सर्वरोगों को **कांत-लोह** निःसंदेह दूर करे । बल, वीर्य और देहकी पुष्टि करे, तथा जठराग्निको बढावे ।

कीटी.

ध्मायमानस्यलोहस्यमलंमंडूरमुच्यते ।
लोहसिंहानिकाकिट्टीसिंहानंचनिगद्यते ॥
यल्लोहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणम् ॥ ५० ॥

अर्थ–लोहके धमाने से जो मैल निकलता है उसको **मंडूर, लोहसिंहानिका, किट्टी** और **सिंहान** कहतेहैं । जिस २ लोहके जो जो गुण हैं वही २ गुण उसकी **कीटीमें** जानने ।

उपधातु.

सप्तोपधावतःस्वर्णमाक्षिकंतारमाक्षिकम् ।
तुत्थंकांस्यंचरीतिश्चसिंदूरश्चशिलाजतु ॥५१॥
उपधातुषुसर्वेषुतत्तद्धातुगुणाअपि ।
संतिकिंतेषुतेऽत्रोनास्तत्तदंशाल्पभावतः ॥५२॥

अर्थ–सुवर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, लीलाथोथा, कांसा, पीतल, सिंदूर और शिलाजीत ए **सात उपधातु** अर्थात् **गौणधातु** हैं । जिस २ धातुमें जो जो गुण हैं उसकी उपधातुमें भी वही २ गुण जानने, किन्तु उनके अंश होनेसे कुछ न्यून गुण हैं ।

१ धातु उपधातुओंका शोधन मारण अन्यत्र पृथक्‌ही कहेंगे ।

सुवर्णमाक्षिक के नाम.

स्वर्णमाक्षिकमाख्यातंतापीजंमधुमाक्षिकम् ।
ताप्यंमाक्षिकधातुश्चमधुधातुश्चसंस्मृतः ५३
किंचित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षि-
कमीरितम् ॥
उपधातुःसुवर्णस्यकिंचित्स्वर्णगुणान्वितम् ।
तथाचकांचनाभावेदीयतेस्वर्णमाक्षिकम् ॥
किंतुतस्यानुकल्पत्वात्किंचिदूनगुणास्ततः ।
नकेवलंस्वर्णगुणावर्त्ततेस्वर्णमाक्षिके ॥
द्रव्यांतरस्यसंसर्गात्संत्यन्येऽपिगुणायतः ॥५६॥

अर्थ—सं.स्वर्णमाक्षिक, तापीज, मधुमाक्षिक, ताप्य, माक्षिकधातु और मधुधातु । इसमें किंचित्सुवर्ण के मिलाप होने से **स्वर्णमाक्षिक** कहते हैं । **हिं.** सोनामक्खी, **का.** धातुमाक्षिक, **अ.** मुर्कशीशाजहवी, **इं.** आयर्नपाईराईटीस्, **ला.** फेरीस फल्युरेटम् । यह सुवर्णकी उपधातु होनेसे किंचित्सुवर्णकेसे गुण युक्त है । इसको सुवर्ण के अभावमें देते हैं । यह सुवर्ण के सदृश होने से इसमें सुवर्णसे कुछ न्यून गुण हैं । इस सुवर्ण-माक्षिक में केवल सुवर्णकेही गुण नहीं है—किंतु इसमें अन्य द्रव्य के संयोग होने से अन्यभी गुण हैं ।

सुवर्णमाक्षिकके गुण.

सुवर्णमाक्षिकंस्वादुतिक्तंवृष्यंरसायनम् ।
चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठपांडुमेहविषोदरान् ॥
अर्शःशोथंविषंकंडूंत्रिदोषमपिनाशयेत् ॥ ५७ ॥

अर्थ–सुवर्णमाक्षिक–स्वादु, कड़वा, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, बस्तिपीड़ा, कोढ़, पांडु, प्रमेह, विषोदर, बवासीर, सूजन, विषके विकार, खुजली और त्रिदोष को नष्ट करे ।

अशुद्ध के दोष.

मंदानलत्वंबलहानिमुग्राम्
विष्टंभितांनेत्रगदान्सकुष्ठान् ॥
तथैवमालांव्रणपूर्विकांच
करोतितापीजमशुद्धमेतत् ॥ ५८ ॥

अर्थ-मंदाग्नि, उग्रबलकी हानि, विष्टंभ, नेत्ररोग, कोढ़, गंडमाला और घाव इन सब रोगों को अशुद्धसुवर्णमाक्षिक करता है।

तारमाक्षिक.

तारमाक्षिकमन्यत्तुतद्भवेद्रजतोपमम् ।
किंचिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥
अनुकल्पतयातस्यततोहीनगुणःस्मृतः ।
नकेवलंरूप्यगुणायतःस्यात्तारमाक्षिकम् ॥

अर्थ-दूसरा रूपेके समान **तारमाक्षिक** अर्थात् **रूपामक्खी** होताहै, इसमें कुछ चांदीके मेल होनेसे रूपामक्खी कहते हैं। यह चांदीके सदश होनेसे इसमें चांदीसे कुछ न्यून गुण हैं। केवल इसमें चांदीकेही गुण नहीं हैं। [किंतु द्रव्यांतर के संयोगसे और भी गुण कहे हैं क्योंकि यह तारमाक्षिक है]

गुण.

स्वादुपाकेरसेकिंचित्तिक्तंवृष्यंरसायनम् ।
चक्षुष्यंबस्तिरुक्कुष्ठपांडुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोथंक्षयंकंडूंत्रिदोषमपिनाशयेत् ॥६१॥

अर्थ-रूपामक्खी पाक और रसमें स्वादिष्ट और किंचिन्मात्र कड़वी, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, बस्तिपीड़ा, कोढ़, पांडु, प्रमेह, विषोदर, बवासीर, सूजन, क्षय, खुजली और त्रिदोष इनको नष्ट करे।

अशुद्धके दोष.

मंदानलत्वंबलहानिमुग्राम्
विष्टंभतांनेत्रगदान्सकुष्ठान् ॥
तथैवमालांव्रणपूर्विकांच
करोतितारीजमिदंचतद्वत् ॥ ६२ ॥

अर्थ-मंदाग्नि, बलहानी, विष्टंभ, नेत्ररोग, कोढ़, गंडमाला और फोड़ाफुंसी इनको **अशुद्धरूपा मक्खी** करे है। सुवर्णमाखी और रूपामाखी के गुण दोष समानही लिखेहैं और कुछ पाठांतरभी नहीं कहा इससे निश्चय होताहै कि यह एकही धातु है. केवल वर्णभेद मात्र ही है।

तूतिया (लीलाथोथा) और खपरिया.

तुत्थंवितुन्नकंचापिशिखिग्रीवंमयूरकम् ।
तुत्थंताम्रोपधातुर्हिकिंचित्ताम्रेणतद्भवेत् ६३
किंचित्ताम्रगुणंतस्माद्वक्ष्यमाणगुणंचतत् ।
तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु ॥ ६४ ॥
लेखनंभेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् ।
विषाश्मकुष्ठकंडूघ्नंखर्परंचापितद्गुणम् ॥ ६५ ॥

अर्थ-तुत्थ, वितुन्नक, शिखिग्रीव और मयूरक ए संस्कृतनाम, **हिं.** तूतिया, लीलाथोथा, **म.** मोरतुत्थ, **का.** मयूरतुत्थ, **तै.** मैलतुतु, **फा.** तूतिया, **इं.** सल्फेट ऑफ कॉपर कहते हैं। यह तांमेकी उपधातु है। इसमें कुछ ताम्रका अंश है। इस वास्ते इसमें तांमेके गुण हैं। सो आगे कहते हैं। **गुण। तूतिया** कटु, खारी, कषैला, उलटी लानेवाला, हलका, लेखन, भेदन, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कफ, पित्त हरण कर्ता, विष, पथरी, कोढ़, खुजली, इनको दूर करे। जो गुण तूतियामें हैं वही गुण **खपरिया** में जानने। **हिं.** खपरिया, **म.** कलखापरी, **गु.** खपरियुंकाली, **का.** खर्परी, **फा.** संगबसरी, **इं.** जिंकसल्फाईडम् कहते हैं.

कांसा.

ताम्रत्रपुजमाख्यातंकांस्यंघोषंचकंसकम् ।
उपधातुर्भवेत्कांस्यंद्वयोस्तरणिरंगयोः ॥ ६६ ॥
कांसस्यतुगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः ।
संयोगजप्रभावेणतस्यान्येऽपिगुणाःस्मृताः ॥
कांस्यंकषायंतिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम् ।
गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरंपरम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-तांमा और रांग दोनोंके मिलाने से **कांसा** बनता है उसको कांस्य, घोष और कंसक कहते हैं। **का.** कंचु, **फा** रोइन, **अ.** तालिकून, **इं.** बेलमेटल-ब्रांज, यह कांसा, तांमा और रांगा इन दोनों की उपधातु है। कांसके गुण तांमे और रांगेके समान जानने चाहिये। **गुण। कांसा** कषैला, कड़वा, गरम, लेखन, विशद, दस्तावर, भारी, नेत्रोंको हित, रूखा और कफपित्तको हरण करनेवाला है।

पीतर.

पित्तलंत्वारकूटंस्यादारोरीतिश्चकथ्यते ।
राजरीतिर्ब्रह्मरीतिःकपिलापिंगलापिच ॥६९॥
रीतिरप्युपधातुःस्यात्ताम्रस्यचसदस्यच ।

पित्तलस्यगुणाज्ञेयाः स्वयोनिसदृशाजनैः ॥
संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ।
रीतिकायुगलंरूक्षंतिक्तंचलवणंरसे ॥
शोधनंपांडुरोगघ्नंक्रमिघ्नंनातिलेखनम् ॥ ७१ ॥

अर्थ-पित्तल, आरकूट, आर, रीति, राजरीति, ब्रह्मरीति, कपिला और पिंगला ए संस्कृत नाम हैं। हिं. पीतल, बं. पीतल, का. पित्तालियरडू, फा. बिरज, इं. ब्रास, Brass, पीतल-तांबे और जस्तेकी उपधातु है। यह तांबे और जस्तके मिलानेसे बनती है इसीसे इसमें तांबे और जस्तेके समान गुण हैं। परंतु संयोगजन्य प्रभावसे इसमें और भी गुण हैं। **दोनों प्रकारकी** अर्थात् पीतल और कांचीपीतर दोनों रसमें रूक्ष, कड़वी, और निमकीन हैं। देहको शुद्ध करे, पांडुरोगको और कृमिरोगको नाश करे तथा अत्यंत लेखन नहीहै।

सिन्दूर.

सिंदूरंरक्तरेणुश्चनागगर्भश्चसीसजम्।
सीसोपधातुःसिंदूरोगुणैस्तत्सीसवन्मतम् ॥
संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ।
सिंदूरमुष्णंवीसर्पकुष्ठकंडुविषापहम् ॥
भग्नसंधानजननंव्रणशोधनरोपणम् ॥ ७३ ॥

अर्थ-सं. सिंदूर, रक्तरेणु, नागगर्भ, सीसज, **हिं.** सिंदूर, **तै.** चेन्दुरमु, **फा.** सिरिनूज, यह **सिंदूर** शीशेकी उपधातु है। इसीसे इसमें शीशेके समान गुण हैं। और संयोगजन्य प्रभावसे और भी बहुतसे गुण हैं। **गुण। सिंदूर**-गरम, विसर्प, कोढ़, खुजली और विष इनको दूर करे, टूटी हुई हड्डी आदिको जोड़े है, और व्रणको शोधन तथा रोपण करेहै।

शिलाजीत.

निदाघेघर्मसंतप्ताधातुसारंधराधराः ।
निर्यासवत्प्रमुंचंतितच्छिलाजतुकीर्तितम् ॥
सौवर्णंराजतंताम्रमायसंतच्चतुर्विधम् ॥
शिलाजत्वद्रिजतुचशैलनिर्यासइत्यपि ॥७५॥
गैरेयमश्मजंचापिगिरिजंशैलधातुजम् ॥

अर्थ-पर्वत गरमियोंकी ऋतुमें तपायमान हो धातुओंके सारको गोंदके सदृश छोड़तेहैं, उसको शिलाजीत ऐसा कहतेहैं। बं. शिलाजतु, का. कलुवंचरु, इं. आसफल्ट। **शिलाजीत चार** प्रकारका है। सौवर्ण, राजत, ताम्र और आयस। **शिलाजीतके नाम** । शिलाजतु, अद्रिजतु, शैलनिर्यास, गैरेय, अश्मज, गिरिज और शैलधातुज।

शिलाजीतके गुण.

शिलाजंकटुतिक्तोष्णंकटुपाकंरसायनम् ।
छेदियोगवहंहंतिकफमेदाश्मशर्कराः ॥
मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंवातार्शांसिचपांडुताम् ॥
अपस्मारंतथोन्मादंशोथकुष्ठोदरक्रमीन् ।

अर्थ-**शिलाजीत**-चरपरा, कड़वा, उष्ण, कटुपाक और रसायन एवं छेदनकर्ता, योगवाही, कफ, मेधा, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वादीकी बवासीर, पांडुरोग, अपस्मार, उन्माद, सूजन, कोढ़, उदर और कृमिरोग इनको दूर करे।

सौवर्णंतुजपापुष्पवर्णंभवतितद्रसात् ॥७८॥
मधुरंकटुतिक्तंचशीतलंकटुपाकिच ।
राजतंपांडुरंशीतंकटुकंस्वादुपाकिच ॥७९॥
ताम्रंमयूरकंठाभंतीक्ष्णमुष्णंचजायते ।
लौहंजटायुपक्षाभंतत्तिक्तंलवणंभवेत् ॥ ८० ॥
विपाकेकटुकंशीतंसर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ।

अर्थ-तहां **सौवर्णशिलाजीत** अर्थात् सुवर्णकी खानका शिलाजीत जपाके फूलके समान लालरंगका और इसका रस मधुर, कटु, तिक्त, शीतल और कटुपाकी होताहै। **रौप्यजशिलाजीत** रंगमें पीला, शीतल, कड़वा, स्वादुपाकवाला है। **तांबेकी खानका** मोरकी गरदनके रंगका तीक्ष्ण और उष्ण होताहै। **लोहेकी खानका शिलाजीत** गीधकी पांखके रंगका काला, कड़वा और निमकीन होताहै। तथा पाकमें चरपरा और शीतल। यह सबमें **श्रेष्ठ** कहाहै।

रसशब्दकी निरुक्ति.

रसायनार्थिभिर्लोकैःपारदोरस्यतेयतः ।
ततोरसइतिप्रोक्तःसचधातुरपिस्मृतः ॥ ८२ ॥

अर्थ-रसायनकी इच्छावाले प्राणी इस पारदका सेवन करतेहैं इसीसे इसकी रससंज्ञा है और इसकी धातुसंज्ञा भी है।

पारदकी उत्पत्तिलक्षण.

शिवांगात्प्रच्युतंरेतःपतितंधरणीतले ।
तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमत्समभूच्चतत् ॥८३॥
क्षेत्रभेदेनविज्ञेयंशिववीर्यंचतुर्विधम् ।
श्वेतंरक्तंतथापीतंकृष्णंतत्तुभवेत्क्रमात् ॥
ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चखलुजातितः ।
श्वेतंशस्तंरुजांनाशेरक्तंकिलरसायनम् ॥
धातुवादेतुतत्पीतंखेगतौकृष्णमेवच ॥

अर्थ-शिवके अंगसे पृथ्वीमें गिरा हुआ वीर्य तद्देहसारजन्य होनेसे सफेद और उज्ज्वल हुआ, वह शिववीर्य क्षेत्रभेद (स्थानभेद) से चार प्रकारका है । जैसे-सफेद, लाल, पीला और काला । तहां **सफेदपारा** ब्राह्मण,**लाल** क्षत्रिय, **पीला** वैश्य और **काला** पारद शूद्र है । ए **पारेकीजाति** हैं । **सफेदपारा** रोगनाशमें उत्तम है, रसायनमें **लाल**, धातुवाद (सुवर्ण बनाने) में **पीला** और खेचरी गतिकेवास्ते **कालापारा** लेना उत्तम है ।

पारदके नाम.

पारदोरसधातुश्चरसेंद्रश्चमहारसः ॥ ८६ ॥
चपलःशिववीर्यंचरसःसूतःशिवाह्वयः ।
पारदःषड्रसःस्निग्धस्त्रिदोषघ्नोरसायनः ॥

अर्थ-पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य, रस, सूत और यावन्मात्र शिवके नाम हैं सब पारदके जानना । **हिं.** पारा, **फा.** सिमाव, **अ.** जीवक, **इं.** मर्क्यूरी, **लां.** हेड्रार्जिरम्.

पारदके गुण.

योगवाहीमहावृष्यःसदादृष्टिबलप्रदः ।
सर्वामयहरःप्रोक्तोविशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥८८॥

अर्थ-पारद में स्वादु, अम्ल आदि छः रस हैं. स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, रसायन, योगवाही, महान्वृष्य, सदैव दृष्टि और बलको देताहै, सर्व रोगमात्र हरणकर्ता और विशेष करके संपूर्ण कुष्ठरोगों को दूर करेहै ।

स्वस्थोरसोभवेद्ब्रह्माबद्धोज्ञेयोजनार्दनः ।
रंजितःकामितश्चापिसाक्षाद्देवोमहेश्वरः ॥
मूर्च्छितोहरतिरुजंबंधनमनुभूयखेगतिंकुरुते ।
अजरीकरोतिहिमृतःकोऽन्यःकरुणाकरः-
सूतात् ॥ ९० ॥
असाध्योयोभवेद्रोगोयस्यनास्तिचि-
कित्सितम् ।
रसेंद्रोहंतितंरोगंनरकुंजरवाजिनाम् ॥ ९१ ॥

अर्थ-स्वस्थरस ब्रह्मा, **बद्ध** (बंधाहुआ) जनार्दन, एवं रंजित और कामित रस साक्षात् महेश्वर है । **मूर्छितपारा** रोगोंको हरण करे, **बद्धपारा** खेचरी गतिदाता और मृत (माराहुआ) **पारा** इस प्राणीको अजर अमर करताहै । इस पारदसे परे और ऐसा करुणा करनेवाला कौन होगा ? । जो रोग असाध्य है कि जिसकी औषधही नहीं है उन मनुष्य, हाथी और घोड़ेके रोगोंको यह पारद हरण करताहै ।

पारदके दोष.

मलंविषंवह्निगिरित्वचापलं-
नैसर्गिकंदोषमुशंतिपारदे ।
उपाधिजौद्वौत्रपुनागयोगजौ
दोषौरसेंद्रेकथितौमुनीश्वरैः ॥ ९२ ॥
मलेनमूर्च्छामरणंविषेण ।
दाहोऽग्निनाकष्टतरःशरीरे ॥
देहस्यजाड्यंगिरिणासदास्यात् ।
चांचल्यतोवीर्यहृतिश्चपुंसाम् ॥
वंगेनकुष्ठंभुजगेनषण्ढो-
भवेदतोऽसौपरिशोधनीयः ॥ ९३ ॥
वह्निर्विषंमलंचेतिमुख्यादोषास्त्रयोरसे ।
एतेकुर्वंतिसंतापंमृतिंमूर्च्छांनृणांक्रमात् ॥
अन्येऽपिकथितादोषाभिषग्भिःपारदेयदि ।
तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषतः ॥

अर्थ-मल, विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता ए **पांचदोष** पारदमें स्वतःस्वभावही हैं । और रांगे तथा शीशेके **दो दोष** इसमें **उपाधिज** हैं । ऐसे सब **सातदोष** मुनीश्वरोंने कहेहैं । **मलके** दोषसे मूर्च्छा, **विषदोषसे** मरण, **अग्निदोषसे** दाह और अत्यंत देहमें कष्ट, **पर्वतके** दोषसे देहमें जड़ता, और **चंचलत्व** दोषके होनेसे पारा वीर्यको हरण करेहै । **वंग**

दोषसे कोढकरं, और शीशेके दोषसे पारा नपुंसक होताहै, इस वास्ते इसका शोधन करना चाहिये। पारेमें मुख्य दोष तीनही हैं–वह्नि, विष और मल, ए तीनों दोष संताप, मृत्यु और मूर्च्छा क्रमसे मनुष्योंको करते है। यद्यपि वैद्योंने औरभी बहुतसे दोष पारेमें वर्णन करेहैं परंतु मुख्य तीन दोषही हैं। अतएव विशेष करके इनको हरण करने चाहिये।

अशुद्धपारेके दोष.

संस्कारहीनंखलुसूतराजम्
यःसेवतेतस्यकरोतिबाधाम् ॥
देहस्यनाशंविदधातिनूनम्
कष्टांश्चरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥ ९६ ॥

अर्थ–जो प्राणी संस्काररहित पारदका सेवन करताहै उसको यह बाधा करताहै। देहका निश्चय नाश-करे और मनुष्योंको कष्टदाता, अनेकरोगोंको प्रकट करेहै। पारदकाभी मारण अन्यत्र कहेंगे।

अथोपरसाः

गंधोहिंगुलमभ्रतालकशिलाःस्रोतोऽ-
जनंटंकणम् ॥ राजावर्त्तकचुंबकौस्फ-
टिकयाशंखःखटीगैरिकम् ॥ कासीसं-
रसकंकपर्दसिकताबोलांश्चकंकुष्ठकम् ॥
सौराष्ट्रीचमताअमीउपरसाःसूतस्य-
किंचिद्गुणैः ॥ ९७ ॥

अर्थ–गंधक, हिंगुल, अभ्रक, हरताल, शिला-जीत, सुरमा, सुहागा, राजावर्त, चुंबक, स्फटिक-मणि, शंख, खडिया, गेरू, कसीस, खपरिया, कौडी, बालू, बोल, कंकुष्ठ और फिटकरी ए उपरस अर्थात् गौण रस हैं। यह पारेसे गुणोंमें कुछ न्यून हैं।

हिंगुलूके नाम, भेद और गुण.

हिंगुलंदरदंम्लेच्छमिंगुलंचूर्णपारदम्।
दरदस्त्रिविधःप्रोक्तश्चर्मारःशुकतुंडकः ॥९८॥
हंसपादस्तृतीयःस्याद्गुणवानुत्तरोत्तरम्।
चर्मारःशुक्लवर्णःस्यात्सपीतःशुकतुंडकः ॥
जपाकुसुमसंकाशोहंसपादोमहोत्तमः ॥९९॥

तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्या-
न्नेत्रामयघ्नंकफपित्तहारि।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्च
प्लीहामवातौचगरंनिहंति ॥ १० ॥
ऊर्ध्वपातनयुक्त्यातुडमरूयंत्रपाचितम्।
हिंगुलंतस्यसूतंतुशुद्धमेवंनशोधयेत् ॥ १ ॥

अर्थ–हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, इंगुल, और चूर्ण-पारद ए संस्कृत नाम। हिं. हींगलू, ईंगुर, सिंगरफ, म. हिंगूल, गु. हिंगलो, का. इंगुलियक, तै. हिंगला काए, अ. जंजफर, फा. सिंग्रफ, इं. सल्फरेट ऑफ् मर्क्यूरी। हींगलू तीनप्रकारका होताहै; जैसे–चर्मार, शुकतुंडक और तीसरा हंसपाद। ए उत्तरोत्तर गुणवाले हैं। तहां चर्मारसंज्ञक हिंगलू सफेद रंगका, और पीले रंगका शुकतुंडक, एवं जपाके फूलके समान लालरंगका महोत्तम हंसपाद हींगलू कहाताहै। इसीको हमभी हींगलू कहतेहैं। गुण। कड़वा, कषेला, चरपरा। नेत्ररोग, कफ, पित्तके विकार, हल्लास, कोढ, ज्वर, कामला, तीह, आमवात और विषके विकारोंको दूर करे। हींग-लूको ऊर्ध्व पातन युक्ति करके डमरू यंत्रमें पचावे इसमेंसे जो पारा निकलताहै वह शुद्ध है। उसका फिर शोधन न करे [परंतु यह वाक्य साधारण है. यदि ऐसाही होता तो फिर पारदके अष्टादश संस्कार क्यों लिखते।]

गंधककी उत्पत्ति और नाम.

श्वेतद्वीपेपुरादेव्याःक्रीडंत्यारजसाप्लुतम्।
दुकूलंतेनवस्त्रेणस्नातायाःक्षीरनीरधौ ॥ २ ॥
प्रसृतंयद्रजस्तस्माद्गंधकःसमभूत्ततः।
गंधकोगंधिकश्चापिगंधपाषाणइत्यपि ॥ ३ ॥
सौगंधिकश्चकथितोबलिर्वलरसोपिच।
चतुर्धागंधकःप्रोक्तोरक्तःपीतःसितोऽसितः ॥
रक्तोहेमक्रियासूक्तःपीतश्चैवरसायने।
व्रणादिलेपनेश्वेतःकृष्णःश्रेष्ठःसुदुर्लभः ॥ ५ ॥

अर्थ–श्वेतद्वीप में पहिले क्रीडाकरती पार्वतीके रजोदर्श हुआ उस रजोदर्शके सनेहुए कपडेसे श्रीपार्वतीजी समुद्रमें न्हाई तब वो रजका रुधिर समुद्रमें

गया उसीसे यह **गंधक** प्रकटहुई। **उस गंधक के** नाम। गंधक, गंधिक, गंधपाषाण, सौगंधिक, बलि, बलरस। **गंधक चार** प्रकारका है—लाल, पीला, सफेद और काला। **लाल गंधक** सुवर्ण के बनाने में लेनी, **पीली** और **सफेद** रसायन कर्ममें, व्रणादिलेपनमें **सफेद**, और जो श्रेष्ठ **काली गंधक** है उसका मिलनाही दुर्लभ है।

गंधकके गुण.

गंधकःकटुकस्तिक्तोवीर्योष्णस्तुवरःसरः ।
पित्तलःकटुकःपाकेकंडुवीसर्पजंतुजित् ॥
हंतिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः ॥ ६ ॥

अर्थ—गंधक—चरपरा, कड़वा, उष्णवीर्यवाली, कषैली, दस्तावर, पित्तकर्ता, पाकके समय चरपरा, खुजली, विसर्प, कृमिरोग, कोढ़, क्षय, प्लीह, कफ और वातके रोग इनको दूर करे और रसायन है।

अशुद्ध गंधकके दोष.

अशोधितोगंधकएषकुष्ठम्
करोतितापंविषमंशरीरे ॥
शोषंचरूपंचबलंतथौजः
शुक्रंनिहंत्येवकरोतिचास्रम् ॥ ७ ॥

अर्थ—अशुद्धगंधक कोढ, विषम ताप (विषमज्वर) और शोष-प्रद, रूप, बल, ओज और वीर्यकी हानिकरे, तथा रुधिरको दूषित करे है।

अभ्रककी उत्पत्ति और भेद.

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम् ।
विस्फुलिंगास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पिताः ॥८॥
तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुमहीभृताम् ॥
तेभ्यएवसमुत्पन्नंतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम् ॥ ९ ॥
तद्वज्रंवज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् ।
गगनात्स्खलितंयस्माद्गगनंचततोमतम् ॥
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तस्याच्चतुर्विधः ।
क्रमेणैवसितंरक्तंपीतंकृष्णंचवर्णतः ॥ ११ ॥
प्रशस्यतेसितंतारेरक्तंतत्तुरसायने ।
पीतंहेमनिकृष्णंतुगदेषुद्रुतयेऽपिच ॥ १२ ॥
पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रंचेतिचतुर्विधम् ।
मुंचत्यग्नौविनिक्षिप्तंपिनाकंदलसंचयम् ॥ १३
अज्ञानाद्भक्षणंतस्यमहाकुष्ठप्रदायकम् ।
दर्दुरंत्वग्निनिःक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्वनिम् ॥
गोलकान्बहुशःकृत्वासस्यान्मृत्युप्रदायकः ।
नागंतुनागवद्वह्नौफूत्कारंपरिमुंचति ॥
तद्भक्षितमवश्यंतुविदधातिभगन्दरम् ।
वज्रंतुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौविकृतिंव्रजेत् ॥
सर्वाभ्रेषुवरंवज्रंव्याधिवार्धक्यमृत्युहृत् ।
अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्त्वंगुणाधिकम् ॥
दक्षिणाद्रिभवंस्वल्पसत्त्वमल्पगुणप्रदम् ॥

अर्थ—पहिले वृत्रासुरके मारनेको इन्द्रने वज्र धारण करा, उस समय उसमें से चिनगारियां निकलकर आकाशमें फैल गईं, फिर वोही चिनगारियां गर्जते हुए बद्दलों से निकलकर पर्वतोंकी शिखरोंमें पड़ीं, उन्होंसे उन्हीं २ पर्वतोंमें **अभ्रक** (भोडल) प्रकट हुई। यह वज्रसे जो प्रकट हुई इसीसें इसको **वज्र** कहतेहैं, और बद्दलोंके शब्दसे जो प्रकट हुई इसीसे इसकी **अभ्र** संज्ञा हुई, और गगन (आकाश) से जो गिरी इसीसे अभ्रककी **गगन** संज्ञाहै। **इं.** टाल्क, ग्लिमर, **ला.** माईका कहतेहैं। यह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन भेदोंसे **चारप्रकार**की है। इनके **वर्ण** क्रमसे जानने। सफेद, लाल, पीली और काली। तहां चांदीके बनानेमें **सफेद**, रसायनमें **लाल**, सुवर्ण बनानेमें **पीली** और रोगोंमें तथा द्रुतिके वास्ते **कृष्णाभ्रक** लेनी चाहिये। अब **वज्रके चार भेद कहतेहैं**। अभ्रक—पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र भेदोंसे चारप्रकारकी है। तहां **पिनाक** संज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसे परत २ होजाती है। यदि अज्ञानसे इसको खाय लेवे तो उसको घोर सात कोढ़ोंको करे। **दर्दुर**नामक अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेंडकके समान शब्द करताहै, यह देहमें अनेक गांठोंको उत्पन्न करके मृत्यु देताहै। **नाग**-संज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसे सांपके समान फुंकार करताहै, यदि इसको खाय तो अवश्य भगंदरका रोग करे। और **वज्र**संज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसे **वज्र** (हीरे) के समान जैसाका तैसा बना रहताहै, विगड़ता

नहीं है । इससे संपूर्ण अभ्रकोंमें यह **वज्राभ्रक** उत्तम है, यह व्याधि वृद्धावस्था और मृत्युको हरण करती है । उत्तरके पर्वतोंमें जो अभ्रक उत्पन्न होतीहै वह **बहुत सत्व** और अधिक गुणवाली है । और दक्षिणके पर्वतोंसे जो प्रकट होती है उसमें **थोडासत्व** और अल्प गुण जानने ।

अभ्रकके गुण.

अभ्रंकषायंमधुरंसुशीत-
मायुष्करंधातुविवर्धनंच ॥
हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठ-
प्लीहोदरग्रंथिविषक्रमींश्च ॥ १८ ॥
रोगान्हंतिद्रढयतिवपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्ते ।
तारुण्याढ्यंरमयतिशतंयोषितांनित्यमेव ॥
दीर्घायुष्कान्जनयतिसुतान्विक्रमैः
सिंहतुल्यान् ।
मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रम् ॥

अर्थ-अभ्रक-कषेली, मधुर, शीतल, आयुकर्त्ता धातुवर्द्धक । **प्रयोग** । यह त्रिदोष, व्रण, प्रमेह, कोढ़, प्लीहोदर, गांठ, विषविकार और कृमिरोगको दूर करे, **मृताभ्रकके गुण** । रोगोंको नष्ट करे, देहको दृढ करे, वीर्य बढावे, तरुणावस्था युक्त नित्य सौ स्त्रियोंसे भोग करे । दीर्घआयुवाले, पराक्रमी सिंहके समान पुरुषार्थी ऐसे पुत्रों को प्रकट करे, मृताभ्रक (अभ्रककी भस्म) नित्य सेवन करने वाले के मौतके भयको भी हरण करेहै ।

अशुद्धअभ्रकके दोष.

पीडांविधत्तेविविधांनराणाम्
कुष्ठंक्षयंपांडुगदंचशोथम् ।
हृत्पार्श्वपीडांचकरोत्यशुद्ध-
मभ्रंत्वसिद्धंगुरुतापदंस्यात् ॥ १२० ॥

अर्थ-अशुद्धअभ्रक सेवनसे मनुष्योंको अनेक प्रकारकी पीडा, कोढ, क्षय, पांडुरोग, सूजन, हृदय और पसवाडेकीपीडा, तथा भारीताप (घोरज्वर) को करेहै ।

हरितालके नाम और गुण.

हरितालंतुतालंस्यादालंतालकमित्यपि ।
हरितालंद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यंपिंडसंज्ञकम् ॥
तयोराद्यंगुणैःश्रेष्ठंततोहीनगुणंपरम् ।
स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाभ्रपत्रवत् ॥ २२ ॥
पत्राख्यंतालकंविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनम् ।
निष्पत्रंपिंडसदृशंस्वल्पसत्वंतथागुरु ॥
स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणंतत्पिंडतालकम् ॥

अर्थ-हरिताल, ताल, आल और तालक ए **हरितालके सं. नामहै** । हरिताल दो प्रकारकी होती-है, एक **पत्राख्य** (तबकिया) और दूसरी **पिंड**-संज्ञक अर्थात् डेलेकी । इन दोनोंमें पहिली तबकिया हरताल **उत्तम है** और, पिंडाख्य हरताल हीनगुण-वाली है । **पत्राख्य** हरतालके **लक्षण** । जिसका सुवर्णकासा रंग हो, भारी, चिकनी और जिसके अभ्र-कके समान परतहों उसको **पत्राख्यताल** जाननी । यह गुणवान् रसायन है । और जिसमें परत न हों गोलेके माफिक हो वह अल्पसत्व और हलकी स्त्रीके पुष्पको हरणकर्त्ती **पिंडतालक** जाननी ।

हरतालके गुण.

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् ।
कंडुकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥

अर्थ-हरताल-चरपरी, चिकनी, कषेली, गरम है । यह विषविकार, खुजली, कोढ, मुखके रोग, रुधिरविकार, कफ, पित्त, बाल और व्रणको हरण करेहै ।

अशुद्ध और दुर्मारित हरतालके दोष.

हरतिचहरितालंचारुतांदेहजाताम्
सृजतिचबहुतापमंगसंकोचपीडाम् ।
वितरतिकफवातौकुष्ठरोगंविदध्या-
दिदमशितमशुद्धंमारितंचाप्यसम्यक् ॥

अर्थ-अशुद्ध और **अविधिसे** माराहुई हरताल देहकी सुंदरताको हरण करे और घोर तापको तथा अंगोंका संकोच और पीडाको करे, कफ, वातको बढावे और कोढ करेहै ।

मनशिलके नाम और गुण.

मनःशिलामनोगुप्तामनोह्वानागजिह्विका ।
नैपालीकुनटीगोलाशिलादिव्यौषधिःस्मृता ॥

मनःशिलागुर्वर्णवर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः ।
तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतकफास्रनुत् ॥
मनःशिलामंदबलंकरोति
जंतुंध्रुवंशोधनमंतरेण ।
मलानुबंधंकिलमूत्ररोधम्
सशर्करंकृच्छ्रगदंचकुर्यात् ॥ २८ ॥

अर्थ-मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्वा, नागजिह्विका, नैपाली, कुनटी, गोला, शिला और दिव्यौषधि, ए संस्कृत नाम, हिं. मनसिल कहतेहैं । गुण । मनसिल भारी, वर्णकर्त्ता, दस्तावर गरम, लेखनी, कटु, कडवी, स्निग्ध, विषविकार, श्वास, खांसी, भूतबाधा, कफ और रुधिरके विकारोंको नष्ट करे । विना शोधनके मनसिल मंदबल करती है, मल रोके, शर्करासहित मूत्ररोध और मूत्रकृच्छ्र इनको करैहै ।

सुरमा.

अंजनंयामुनंचापिकापोतांजनमित्यपि ।
तत्स्रोतोऽजनंकृष्णंसौवीरंश्वेतमीरितम् ॥
वल्मीकशिखराकारंभिन्नमंजनसन्निभम् ।
घृष्टंतुगैरिकाकारमेतत्स्रोतोऽजनंस्मृतम् ॥
स्रोतोऽञ्जनसमंज्ञेयंसौवीरंतत्तुपांडुरम् ।
स्रोतोऽजनंस्मृतंस्वादुचक्षुष्यंकफपित्तनुत् ॥
कषायंलेखनंस्निग्धंग्राहिच्छर्दिविषापहम् ।
सिध्मक्षयास्रहृच्छीतंसेवनीयंसदाबुधैः ॥ ३२ ॥
स्रोतांजनगुणाःसर्वेसौवीरेऽपिमताबुधैः ।
किंतुद्वयोरंजनयोःश्रेष्ठंस्रोतोऽजनंस्मृतम् ॥

अर्थ-अंजन, यामुन, कापोतांजन, ए सुरमाके सं. नामहैं । तहां काले सुरमाको स्रोतोंजन कहते हैं । और सफेद सुरमाको सौवीरांजन कहतेहैं । बांबीकी शिखरके समान और कज्जलके टुकडेके समान तथा घिसनेसे जो गेरूके आकार होवे वह स्रोतोंजन कहाताहै । सफेद अंजनको सौवीरांजन कहतेहै । यह भी लक्षणोंमें काले सुरमेके सदृश होताहै परंतु कुछ २ पीला होताहै । अ. कुहल इसमद; फा. सुर्मे स्फहानी. अं. अंटीमनी ला. आंटीमोनाई. तहां कालासुरमा स्वादु, नेत्रोंको हितकारी, कफ पित्तका नाशक, कषैला, लेखन, स्निग्ध, ग्राही, छर्दि, विषविकार, ववरक, क्षय और रुधिरविकार इनको हरण करे । इसको सदैव बुद्धिमान सेवन करे । सफेद-सुरमामें सब गुण काले सुरमाके समान है-परंतु दोनों सुरमाओंमें काला सुरमाही श्रेष्ठ कहा है । स्रोतांजन उपरस होनेसे फिर कहा गयाहै ।

सुहागा.

टंकणोऽग्निकरोरूक्षःकफघ्नोवातपित्तकृत् ॥

अर्थ-सुहागा-अग्नि करे, रूक्ष, कफघ्न और वात, पित्त करे है ।

फिटकरी.

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा ।
दृढरंगासुरंगाचगतरंगापिकथ्यते ॥ ३५ ॥
स्फटिकातुकषायोष्णावातपित्तकफव्रणान् ।
निहंतिश्वित्रवीसर्पान्योनिसंकोचकारिणी ॥

अर्थ-स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रंगदा, दृढरंगा, सुरंगा और गतरंगा, ए फिटकरी के नाम हैं। म. तुरटी । गुण । कषैली, गरम, वात, पित्त, कफ, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, विसर्परोग इनको दूर करे, तथा योनि को संकुचित करती है ।

रेवटी.

राजावर्तःकटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशनः ।
राजावर्तःप्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारणः ॥३७॥

अर्थ-राजावर्त्त अर्थात् रेवटी । गुण । कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक, प्रमेह, छर्दि और हिचकी इनको दूर करे ।

चुंबक.

चुंबकःकांतपाषाणोयःकांतोलोहकर्षकः ।
चुंबकोलेखनःशीतोमेदोविषगरापहः ॥ ३८ ॥

अर्थ-लोहको खींचने वाला जो लोहा उसको चुंबक और कांतपाषाण कहते हैं । चुंबकपाषाण लेखन, शीतल, मेदारोग, विष और विषविकार इनको दूर करे ।

गेरू सुवर्णगेरू.

गैरिकंरक्तधातुश्चगैरेयंगिरिजंतथा ।
सुवर्णगैरिकंत्वन्यत्ततोरक्ततरंहितम् ॥ ३९ ॥

गैरिकद्वितयंस्निग्धंमधुरंतुवरंहिमम् ।
चक्षुष्यंदाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥

अर्थ–गैरिक, रक्तधातु, गैरेय, गिरिज, ए गेरूके सं. नाम । दूसरा सुवर्णगैरिक है । क. जाजु, अ. तिनेमगरबी अहमर, फा. गिलेसुर्ख मिश्री, अं. ओकर, ला. बॉलरुब्रा, यह पहिलेसे अधिक लाल होता है, दोनों गेरू स्निग्ध, मधुर, कषैले, शीतल, नेत्रोंको हितकारी । दाह, पित्त, रुधिरविकार, कफ, हिचकी और विषविकार इनको नष्ट करे ।

खरी. गोरखरी.

खटिकाकठिकाचापिलेखनीचनिगद्यते ।
खटिकादाहजिच्छीतामधुराविषशोथजित् ॥
लेपादेतद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा ।
खटीगौरखटीद्वेचगुणैस्तुल्येप्रकीर्तिते ॥४२॥

अर्थ–खटिका, कठिका और लेखनी, ए संस्कृत नाम । म. वतोवह, अ. तिने अबीयद, फा. गिलेसफेद, अं. पाईपक्ले, ला. कार्बोनेट ऑफ कलशम् । गुण । खडिया-दाहको हरण करे, शीतल, मधुर, विष और सूजनको जीते । ए गुण लेप करने से करेहै और खानेसे मिट्टीके समान गुण करे है । खडिया और गौरखडिया गुणोंमें दोनों समान हैं ।

वालू.

वालुकासिकताप्रोक्ताशर्करारेतजापिच ।
वालुकालेखनीशीताव्रणोरःक्षतनाशिनी ॥

अर्थ–वालुका, सिकता, शर्करा और रेतजा ए वालूके वा रेतीके सं. नामहैं । क. हालुलु, तै. विशिका, अ. रमल, फा. रेग, अं. सेन्ड, ला. सीलीका । गुण । वालू-लेखनी, शीतल, व्रण और छातीके घावको नष्ट करे है ।

खपरिया और तुत्थका भेद.

खर्परीतुत्थकंतुत्थाद्न्यत्तद्रसकंस्मृतम् ।
येगुणास्तुत्थकेप्रोक्तास्तेगुणारसके स्मृताः ॥

अर्थ–खर्परी, तुत्थक, तुत्था, ए मोरचूत के सं. नाम हैं । बं. तूतिया, गु. मोरथुथु, म. मयूरतुत्थ, तै. मेलतुत्, फा. तूतिया अकजर, अ. तूदिया, अं. सल्फेट ऑफ कॉपर, ला. क्यूप्रिसल्फास । खपरियाको म. कलखापरी, फा. संगवसरी, अ. तूतिया विरमानी, इं. ब्लाकजाक, ला. जिंकसल्फाईडम् । तुत्थका भेदही रसक है । जो गुण तूतियामें हैं वही गुण रसक (खपरिया) में हैं ।

कसीस.

काशीसंधातुकाशीसंपांसुकाशीसमित्यपि ।
तदेवकिंचित्पीतंतुपुष्पकाशीसमुच्यते ॥४५॥
काशीसमम्लमुष्णंचतिक्तंचतुवरंतथा ।
वातश्लेष्महरंकेश्यंनेत्रकंडुविषप्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनंपरिकीर्तितम् ॥

अर्थ–कसीसको-काशीस, धातुकाशीस और पांसुकाशीस कहते हैं । कसीस राखके सदृश एक प्रकारकी खट्टी मिट्टी होती है । और जो कुछ पिलाई लिये होताहै उसको पुष्पकाशीश कहते हैं । इस प्रकार कसीस तीन प्रकारका है । म. हीराकस, फा. जाकेसब्ज, अ. जाजेअखदर [असफर], अं. सल्फेट ऑफ् आयर्न् ला. विटि अलमीन् । कसीसके गुण । कसीस खट्टा, गरम, कड़वा, कषैला, वात, कफको हरण करे, बालोंको बढ़ावे, नेत्ररोग, खुजली, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और चित्रकुष्ठको दूर करे है ।

गोपीचंदन.

सौराष्ट्रीतुवरीकांक्षीमृत्तालकसुराष्ट्रजे ।
आढकीचापिसाख्याताम्रृत्स्नाचसुरमृत्तिका॥
स्फटिकायागुणाःसर्वेसौराष्ट्र्याअपिकीर्तिताः।

अर्थ–सौराष्ट्री, तुवरी, कांक्षी, मृत्तालक, सुराष्ट्रजा, आढकी, मृत्स्ना और सुरमृत्तिका ए सोरठीमिट्टीके सं. नाम हैं-जिसको गोपीचंदन कहते हैं । इसमें सब गुण फिटकरीके समान हैं ।

कालीमिट्टी.

कृष्णामृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।

अर्थ–कालीमिट्टी-घाव, दाह, रुधिरविकार, प्रदर और कफ, पित्तको दूर करे ।

कीच.

कर्दमोदाहपित्तार्तिशोथघ्नःशीतलःसरः ॥४८॥

अर्थ-सं. पंक, कर्दम-अर्थात् कीच. गाग, म.

बिसल, तै. नागुल, अं. मडल्लॅक । **गुण** । दाह और पित्तकी पीड़ा, सूजनको दूर करे, शीतल और दस्तावर है ।

बोल.

बोलगंधरसप्राणपिंडगोपरसाःसमाः ।
बोलंरक्तहरंशीतंमेध्यंदीपनपाचनम् ॥ ४६ ॥
मधुरंकटुतिक्तंचदाहस्वेदत्रिदोषजित् ।
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥

अर्थ-बोल, गंधरस, प्राण, पिंड, गोपरस और सम, ए **बोल-बीजाबोल—हीराबोल—रक्ताबोल**के **सं**. नाम हैं। **फा.** मुर, **अ.** मुरमकी, **अं.** मिरहा । **गुण** । बोल रुधिरविकारको हरण करे, अथवा बहते रुधिरको रोके, शीतल, मेध्य (पवित्र) दीपन और पाचन, मधुर, कटु, तिक्त, दाह, पसीने, त्रिदोषज्वर, मृगी और कोढ इनको नष्ट करे तथा गर्भाशयको शुद्ध करे है ।

कंकुष्ठ. (मुरदासंग)

हिमवत्पादशिखरेकंकुष्ठमुपजायते ।
तत्रैकंनलिकाख्यंस्यात्तदन्यद्रेणुकंस्मृतम् ॥५१॥
पीतप्रभंगुरुस्निग्धंश्रेष्ठकंकुष्ठमादिमम् ।
श्यामंपीतंलघुत्यक्तसत्त्वंनेष्टंहिरेणुकम् ॥
कंकुष्ठंकाककुष्ठंचवरांगंकोलकाकुलम् ।
कंकुष्ठंरेचनंतिक्तंकटूष्णंवर्णकारकम् ।
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥

अर्थ-हिमालय पर्वतकी शिखरोंमें **कंकुष्ठ** (मुरदासंग) उत्पन्न होताहै । तहां एक नलिकाख्य और दूसरा रेणुक कहाताहै । इनमें पीला, भारी और चिकना, ऐसा **उत्तम कंकुष्ठ** जानना । **गु.** बोदार कांकरा, **अं.** लिथार्ज, **ला.** लैंबी आक्स डम् । काला, पीला, हलका और जिसमें सत्त्व न होय वो रेणुक कंकुष्ठ है । **कंकुष्ठके नाम** । कंकुष्ठ, काककुष्ठ, वरांग और कोलकाकुल । **गुण** । कंकुष्ठ अर्थात् मुरदासंग दस्तावर, कड़वा, चरपरा, गरम और देहके वर्णको उजला करनेवाला । कृमि, सूजन, उदर, अफरा, गोला, और कफको दूर करे है ।

रत्नशब्दकी निरुक्ति.

धनार्थिनोजनाःसर्वेरमंतेऽस्मिन्नतीवयत् ।
ततोरत्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः ॥५४॥
रत्नंक्लीबेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते ।
तत्तुपाषाणभेदोऽस्तिमुक्तादिपुतदुच्यते ॥५५॥

अर्थ-धनकी इच्छावाले प्राणी इन रत्नोंमें बहुतही रमण करतेहैं, इसीसे हीरा आदिको शब्दशास्त्रके ज्ञाताओंने **रत्न** ऐसी संज्ञा दीनी है । अमरकोशमें भी लिखाहै कि रत्न और मणि ए दोनों शब्द चमकनेवाले जवाहरातमें और मोती आदिमें कहे जातेहैं ।

रत्न.

रत्नंगारुत्मतंपुष्परागोमाणिक्यमेवच ।
इंद्रनीलश्चगोमेदस्तथावैदूर्यमित्यपि ॥
मौक्तिकंविद्रुमश्चेतिरत्नान्युक्तानिवैनव ॥५६॥

अर्थ-**रत्न** (हीरा) **गारुत्मत** (पन्ना) **पुष्पराग** (पुखराज), **माणिक्य** (माणिक) **इन्द्रनील** (नीलम्), **गोमेद** (पीलरंगकीमणि) **वैदूर्य**, **मोती** और **मूंगा** ए नौ रत्न हैं । **विष्णुधर्मोत्तर** ग्रंथमें भी **नवरत्न** कहे हैं जैसे-

मुक्ताफलंहीरकंचवैदूर्यंपद्मरागकम् ।
पुष्परागंचगोमेदंनीलंगारुत्मतंतथा ॥
प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव ॥ ५७ ॥

अर्थ-मोती, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग (मानिक), पुखराज, गोमेद, नीलम, पन्ना और मूंगा ए महानव रत्न हैं ।

हीरकःपुंसिवज्रोऽस्त्रीचंद्रोमणिवरश्चसः ।
सतुश्वेतःस्मृतोविप्रोलोहितःक्षत्रियःस्मृतः ॥
पीतोवैश्योऽसितःशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्चसः ।
रसायनेमतोविप्रःसर्वसिद्धिप्रदायकः ॥५९॥
क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःस्मृतः ।
वैश्योधनप्रदःप्रोक्तस्तथादेहस्यदार्ढ्यकृत् ॥
शूद्रोनाशयतिव्याधीन्वयस्तंभंकरोतिच ।
पुंस्त्रीनपुंसकानीहलक्षणीयानिलक्षणैः ॥६१॥

सुवृत्ताःफलसंपूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः।
पुरुषास्तेसमाख्यातारेखाबिंदुविवर्जिताः॥
रेखाबिंदुसमायुक्ताःषडस्रास्तेस्त्रियःस्मृताः।
त्रिकोणाश्चसुदीर्घास्तेविज्ञेयाश्चनपुंसकाः॥
तेषुस्युःपुरुषाःश्रेष्ठारसबंधनकारिणः॥ ६३॥
स्त्रियःकुर्वंतिकायस्यकांतिंस्त्रीणांसुखप्रदाः।
नपुंसकास्त्ववीर्याःस्युरकामाःसत्ववर्जिताः॥
स्त्रियःस्त्रीभ्यःप्रदातव्याःक्लीबंक्लीबेप्रयोजयेत्।
सर्वेभ्यःसर्वदादेयाःपुरुषावीर्यवर्धनाः॥ ६५॥

अर्थ–हीरक, वज्र, चंद्र और मणिवर, ए संस्कृत नाम, हिं· हीरा, म. हिरा, फा. इल्माफा, ला. पियोर कार्बन् एड्मस्, अं. डायमंड Diamond कहते हैं। हीरा चार प्रकारका है। तहां सफेद रंगका हीरा ब्राह्मण, लाल क्षत्रिय, पीला वैश्य, और काले रंगका हीरा शूद्रसंज्ञक जानना। रसायनमें ब्राह्मण हीरा लेना, यह सर्व सिद्धि देताहै। क्षत्रिय जातिका हीरा सकल व्याधियों का विध्वंस करे और बुढ़ापा तथा मृत्युको दूर करे। वैश्यजातिका हीरा धनदाता, तथा देहको दृढ करे। और शूद्रजातिका हीरा व्याधियों का नाश करे तथा अवस्थाका स्तंभन करताहै। जैसे श्वेतादि भेदोंसे हीरे के ब्राह्मणादि चार वर्णभेद करेहैं उसी रीतिसे आकृति भेदसे उसके पुरुष, स्त्री, नपुंसक भेद पृथक् २ जानने चाहिये। उत्तम गोलाकार, दीप्तिवान् बड़ा, रेखा बिंदु करके रहित हीरेको पुरुषजातिका जानना। रेखा बिंदुयुक्त छःकोनेवाले हीरेको स्त्रीजातिका जानना। इसीप्रकार त्रिकोणयुक्त लंबे हीरेको नपुंसकजातिका जानना चाहिये। इनमें पुरुषजातिका हीरा श्रेष्ठ है। स्त्रीजातिका हीरा देहकी सुंदरता करेहै यह स्त्रियोंके वास्ते विशेष हितकारी है। और नपुसकोंके वास्ते नपुंसकहीरा उपयोगी जानना तथा पुरुषजातिका हीरा पुरुष, स्त्री और नपुंसक सबके प्रयोगकेवास्ते उपयोगी तथा वीर्यवर्द्धक है।

अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा।
पांडुतांपंगुरुत्वंचतस्मात्संशोध्यमारयेत्॥६६॥

अर्थ–अशुद्ध और अविधिसे मारेहुए हीरे के सेवन करनेसे कोढ़, पसवाड़ेमें पीड़ा, पांडुरोग, ज्वर और भारी-पना होताहै इसीसे इसको शोधन करके फिर विधिपूर्वक मारण कर सेवन करे।

मरे हीरे के गुण.

आयुःपुष्टिंबलंवीर्यंवर्णंसौख्यंकरोतिच।
सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रंनसंशयः॥ ६७॥

अर्थ–मरेहीरेकीभस्म आयु, पुष्टि, बल, वीर्य, वर्ण, सुखको करे। और इसकी भस्म सेवन करने से निःसंदेह सकलरोग नष्ट हों।

पन्ना.

गारुत्मतंमरकतमश्मगर्भोहरिन्मणिः॥

अर्थ–गारुत्मत, मरकतमणि, अश्मगर्भ और हरिन्मणि, ए संस्कृतमें नाम हैं, हिं. पन्ना, बं. पान्ना, म· पांचरत्न, गु· पाना, फा. जमुर्रद, अं. इमिरल्ड Emerald ला. स्मेरेडस्.

माणिक.

माणिक्यंपद्मरागःस्याच्छोणरत्नंचलोहितम्।

अर्थ–माणिक्य, पद्मराग, शोणरत्न और लोहित ए संस्कृत नाम, हिं· मानि [णि] क, चुन्नी, फा. याकूत लाल, इं. रुबि Ruby कहते हैं।

पुष्पराग.

पुष्परागोमंजुमणिःस्याद्वाचस्पतिवल्लभः॥

अर्थ–पुष्पराग, मंजुमणि और वाचस्पतिवल्लभ ए संस्कृत नाम। हिं. पुखराज, म. पुष्पराज, अं. टोपेज Topaz कहते हैं।

नीलम्. गोमेद.

नीलंतथेंद्रनीलंचगोमेदःपीतरत्नकम्।

अर्थ–नील और इंद्रनील ए नीलम या लसनियाके सं. नाम हैं, इं. सफायर Saffire कहते हैं। गोमेद और पीतरत्न ए पीलेरंगके रत्नको कहते हैं, म. गोमेद-मणि, इं. ओनिक्स Onyx

वैदूर्य.

वैदूर्यंदूरजंरत्नंस्यात्केतुग्रहवल्लभम्॥ ६८॥

अर्थ–वैदूर्य, दूरज और केतुग्रहवल्लभ, ए वैदूर्य-मणिके सं. नाम हैं। इं. केटस् आई।

मोती.

मौक्तिकंशौक्तिकंमुक्तातथामुक्ताफलंचतत्।
शुक्तिःशंखोगजःक्रोडःफणीमत्स्यश्चदर्दुरः॥

वेणुरेतेसमाख्यातास्तज्ज्ञैर्मौक्तिकयोनयः
मौक्तिकंशीतलंवृष्यंचक्षुष्यंबलपुष्टिदम् ॥ ७१॥

अर्थ-मौक्तिक, शौक्तिक, मुक्ता, मुक्ताफल, ए **संस्कृत**नाम। **हिं.** मोती, **अ.** लूलू, **फा.** मखारिद, **इं.** पर्ल Pearl कहते हैं। **मोतीकी आठ योनि।** सीप, शंख, हाथी, सूअर, सांप, मछली, मेंडक और बांस ए मोती उत्पन्न होनेकी **आठ जगह** हैं। परन्तु आजकल सीपका ही मोती मिलता है। **मोतीके गुण।** शीतल, वीर्यजनक, नेत्रोंको हितकारी, बल और पुष्टि बढाता है।

मूंगा.

पुंसिक्लीबेप्रवालःस्यात्पुमानेवतुविद्रुमः ॥

अर्थ-प्रवाल और विद्रुम ए **संस्कृत**नाम। **हिं.** मूंगा, **म.** पोवळें, **फा.** मिरजान, बुसद, **ला.** कोरेलियंरुब्र, **इं.** कोरल Coral कहतेहैं।

रत्नोंके गुण.

रत्नानिभस्मितानिस्युर्मधुराणिसराणिच।
चक्षुष्याणिचशीतानिविषघ्नानिधृतानिच ॥
मंगल्यानिमनोज्ञानिग्रहदोषहराणिच ॥ ७३ ॥

अर्थ-सपूर्ण रत्नोंकी भस्म खानेमें मधुर, दस्तावर, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, **रत्नधारण** करनेसे विषनाशक और मंगल करनेवाले, मन प्रसन्नकर्ता और ग्रहोंके दोषोंको हरण करतेहैं। तहां कोई प्रश्न करे कि कोनसे ग्रहका कोनसा रत्नहै? उसका उत्तर **रत्नमाला ग्रंथ**से लिखतेहैं।

नवग्रहोंके रत्न.

माणिक्यंतरणेःसुजातममलंमुक्ताफलंशीतगोर्माहेयस्यतुविद्रुमोनिगदितःसौम्यस्यगारुत्मतम्।
देवेज्यस्यचपुष्परागमसुराचार्यस्यवज्रंशनेर्नीलंनिर्मलमन्ययोर्निगदितेगोमेदवैदूर्यके ॥

अर्थ-सूर्यका **माणिक**, चंद्रमाका **मोती**, मंगलका **मूंगा**, बुधका **पन्ना**, बृहस्पतिका **पुष्पराग**, शुक्रका **हीरा**, शनिका **नीलम**, राहुका **गोमेद**, और केतुग्रहका **वैदूर्यमणि** है।

उपरत्न.

उपरत्नानिकाचश्चकर्पूराश्मातथैवच।
मुक्ताशुक्तिस्तथाशंखइत्यादीनिबहून्यपि ॥
गुणायथैवरत्नानामुपरत्नेषुतेतथा।
किंतुकिंचित्ततोहीनाविशेषोऽयमुदाहृतः ॥

अर्थ-काच, कर्पूरनिया, मोतीकी सीप, शंख, इत्यादि बहुतसे उपरत्न हैं। जो गुण रत्नोंमें कहेहैं वही गुण उपरत्नों में हैं- परंतु कुछ कुछ न्यून गुण हैं- यही विशेषता कहीहै।

विषके नाम और भेद.

विषंतुगरलःक्ष्वेडस्तस्यभेदानुदाहरे।
वत्सनाभःसहारिद्रःसक्तुकश्चप्रदीपनः ॥
सौराष्ट्रिकःशृंगिकश्चकालकूटस्तथैवच।
हालाहलोब्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव ॥ ७८ ॥

अर्थ-विष, गरल, क्ष्वेड, ए विषके **संस्कृत** नाम हैं। अब उसके भेदोंको दिखातेहैं जैसे-वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगिक, कालकूट, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, ए विषके **नौ** भेद हैं।

विषोंका स्वरूप.

सिंदुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा।
यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः ॥
हरिद्रातुल्यमूलोयोहारिद्रःसउदाहृतः।
यद्ग्रंथिःसक्तुकेनेवपूर्णमध्यःससक्तुकः ॥
वर्णतोलोहितोयःस्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः।
महादाहकरःपूर्वंकथितःसप्रदीपनः ॥
सुराष्ट्रविषयेयःस्यात्ससौराष्ट्रिकउच्यते।
यस्मिन्गोशृंगकेबद्धेदुग्धंभवतिलोहितम् ॥
सशृंगिकइतिप्रोक्तोद्रव्यतत्त्वविशारदैः।
देवासुररणेदेवैर्हतस्यपृथुमालिनः ॥
दैत्यस्यरुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः।
निर्यासःकालकूटोऽस्यमुनिभिःपरिकीर्तितः ॥
सोहिक्षेत्रेशृंगवेरेकोंकणेमलयेभवेत्।
गोस्तनाभफलागुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा ॥
तेजसायस्यदह्यंतेसमीपस्थाद्रुमादयः ॥ ८४ ॥

असौहालाहलोज्ञेयःकिष्किंधायांहिमालये ।
दक्षिणाब्धितटेदेशेकोंकणेऽपिचजायते ॥
वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारतः ।
ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले ॥ ८७ ॥

अर्थ–सहालूके पत्रके समान (बछेड़की) नाभ के सदृश जिस के समीप दूसरा वृक्ष नहीं जमें उसको **वत्सनाभविष** जानना । हलदीके समान जिसका कंद होय उसको **हारिद्र** विष जानना । जिसकी गांठ सत्तूके समान बीचमें से भरीहुई हो उसको **सक्तुक-विष** जानना । जिसका रंग लाल, अग्निके समान प्रकाशवाला अत्यंत दाह करता इसको प्राचीन आचार्यों ने **प्रदीपनविष** कहा है । **स.** सिंगीमोहरा, **म.** बचनाग, **क** बसनवी, **फा.** जहर, **इं.** एकोनाइट । जो सौराष्ट्र (सोरठ) देशमें प्रकट होता है उस विषको **सौराष्ट्र विष** कहते हैं । जिसको गौके सींगसे बांधनेसें दूध लाल उतरे उसको द्रव्यतत्त्वके ज्ञाताओंने **शृंगिक** (सिंगिया या सिंगीमुहरा) कहा है । देवासुर संग्राममें देवताओंने पृथुमालिन दैत्यको मारा उस दैत्यके रुधिरसे पीपलके समान वृक्ष प्रकट हुआ, इस वृक्षके गोंदको **कालकूटविष** मुनिजन कहतेहैं । यह शृंगवेरपुर, कोकन और मलेवारमें उत्पन्न होताहै । दाखोंके गुच्छे के समान **फल** और ताल वृक्षके समान **वृक्ष** होताहै । जिसके तेजसे समीपके वृक्ष पजर जाते हैं इसको **हालाहलविष** जानना । यह किष्किंधापुरी और हिमालय पर्वतमें दक्षिण समुद्रके तटके देशोंमें और कोंकणमें प्रकट होताहै । रंगमें कपिल और जिसका सार (गोंद) भी कपिलरंगका होवे उस विषको **ब्रह्मपुत्र** जानना, यह मलयाचल पर्वतमें उत्पन्न होताहै ।

विषके वर्णभेद.

ब्राह्मणःपांडुरस्तेषुक्षत्रियोलोहितप्रभः ।
वैश्यःपीतोऽसितःशूद्रोविषउक्तश्चतुर्विधः ॥
रसायनेविप्रंक्षत्रियंदेहपुष्टये ।
वैश्यंकुष्ठविनाशायशूद्रंदद्याद्वधायहि ॥८९॥

अर्थ–भूरेरंगका विष **ब्राह्मण**, लालरंगका **क्षत्रिय**, पीलेरंगका **वैश्य** और कालेरंगका विष **शूद्र** होताहै । रसायनमें ब्राह्मण जातिका विष, देह पुष्टिके वास्ते क्षत्रिय, कोढ दूर करने को वैश्य और मारणके वास्ते शूद्र जातिका विष देना चाहिये ।

विषके गुण और अवगुण.

विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच ।
आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥९०॥
तदेवयुक्तियुक्तंतुप्राणदायिरसायनम् ।
योगवाहित्रिदोषघ्नंबृंहणंवीर्यवर्धनम् ।९१॥
येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनाविशोधनात् ।
तस्माद्विषंप्रयोगेषुशोधयित्वाप्रयोजयेत् ॥९२॥

अर्थ–विष प्राण हरण कर्त्ता, व्यवायी[1], विकाशी[2], आग्नेय[3], वात कफ हरण कर्त्ता, योगवाही[4] और मदकर्त्ता[5] है इसी को युक्ति के साथ सेवन करे तो प्राणका देनेवाला रसायन, योगवाही, त्रिदोषनाशक बृंहण, और वीर्य-वर्धक है । जो दुर्गुण अशुद्ध विषमें हैं वही अवगुण हीनशुद्ध अर्थात् जो अच्छी रीति से शुद्ध न हुआ हो उस में है, इसी वास्ते प्रयोग में जो विष डाले वह शोधकर डालना चाहिये ।

उपविष.

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः ।
गुंजाऽहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥९३॥

अर्थ–आकका दूध, थूहर का दूध, कलिहारी, कनेर, घूघची, अफीम और धतूरा, ए उपविष[6] की सात जाति है ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ धात्वादिवर्गःसमाप्तः

---

१ प्रथम सब देह में व्याप्त होकर पचे. २ ओजको सुखाकर संधिबंधनों को ढीला करदेवे. ३ अग्नि का अधिकाशवाला ४ योगवाही अर्थात् दूसरोंके गुणोंको आपभी करे. ५ तमोगुण की अधिकता से बुद्धि को बिगाडे. ६ यह गौणविष हैं इनके गुण दोष पृथक् २ प्रयोगो में लिखे हैं सो देख लेने ।

धान्यवर्गः

धान्यके भेद.

शालिधान्यंव्रीहिधान्यंशूकधान्यंतृतीयकम् ।
शिंबीधान्यंक्षुद्रधान्यमित्युक्तंधान्यपंचकम् ॥
शालयोरक्तशाल्याद्याव्रीहयःषष्टिकादयः ।
यवादिकंशूकधान्यंमुद्गाद्यंशिंबिधान्यकम् ॥
कंग्वादिकंक्षुद्रधान्यंतृणधान्यंचतत्स्मृतम् ।

अर्थ–शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिंबिधान्य और क्षुद्रधान्य, यह पांचधान्य कहे हैं । तहां लाल चांवल आदि **शालिधान्य** हैं, सांठी आदि **व्रीहिधान्य**, जौसे आदि ले शूकधान्य, मूंग आदि **शिंबिधान्य**, और कंगू [कांगनी] आदि **क्षुद्रधान्य**, कहाते हैं । उनको **तृणधान्यभी** कहते हैं ।

शालिधान्य.

कंडनेनविनाशुक्लाहैमंताःशालयःस्मृताः ॥

अर्थ–जो विना फटके छरे रंगमें सफेद हों और अगहन पूसमें उत्पन्नहों उनको **शालिधान्य** अथवा हैमंतिक धान्य कहते हैं ।

शालिधान्यके नाम.

रक्तशालिःसकलमःपांडुकःशकुनाहृतः ।
सुगंधकःकर्दमकोमहाशालिश्चदूषकः ॥३॥
पुष्पांडकःपुंडरीकस्तथामहिषमस्तकः ।
दीर्घशूकःकांचनकोहायनोलोध्रपुष्पकः ॥४॥
इत्याद्याःशालयःसंतिबहवोबहुदेशजाः ।
ग्रंथविस्तरभीत्यातेसमस्तानात्रभाषिताः ॥५॥

अर्थ–रक्तशालि, कलम, पाडुक, शकुनाहृत, सुगंधक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पांडक, पुंडरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, कांचनक, हायन और लोध्रपुष्पक, इत्यादि अनेक प्रकार के **शालिधान्य** अनेक देशों में उत्पन्न होते हैं वे ग्रंथ बढने के भय से सब नहीं कहे । **हिं.** चांवल, **बं.** चाउल, **म.** भात, **गु.** चोखा, **का.** नेलू , **तै.** वीयमु, **अ.** अरजा, **फा.** बिरंज, **अं.** राईस Rice, **ला.** ओरिजा सेटाईवा.

शालिधान्यके गुण.

शालयोमधुराःस्निग्धाबल्याबद्धाल्पवर्चसः ।
कषायालघवोरुच्याःस्वर्यावृष्याश्चबृंहणाः ॥६॥
अल्पानिलकफाःशीताःपित्तघ्नामूत्रलास्तथा ।
शालयोदग्धमृज्जाताःकषायालघुपाकिनः ॥७॥
सृष्टमूत्रपुरीषाश्चरूक्षाःश्लेष्मापकर्षणाः ।
कैदारावातपित्तघ्नागुरवःकफशुक्रलाः ।
कषायाअल्पवर्चस्कामेध्याश्चैवबलावहाः ॥८॥
स्थलजाःस्वादवःपित्तकफघ्नावातपित्तदाः ।
किंचित्तिक्ताःकषायाश्चविपाकेकटुकाअपि
वापितामधुरावृष्याबल्याःपित्तप्रणाशनाः ॥
श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काःकषायागुरवोहिमाः
वापितेभ्योगुणैःकिंचिद्धीनाःप्रोक्ताअवापिताः ॥ १० ॥
रोपितास्तुनवावृष्याःपुराणालघवःस्मृताः ।
तेभ्यस्तुरोपिताभूयःशीघ्रपाकागुणाधिकाः ॥
छिन्नरूढाहिमारूक्षाबल्याःपित्तकफापहाः ।
बद्धविट्काःकषायाश्चलघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥

अर्थ–शालिधान्य–मधुर, स्निग्ध, बलकारक, अल्पपरिमाण, बद्धमलको निकालनेवाले, कषाय, हलके, रोचक, स्वरशुद्धकरता, शुक्रजनक, पुंष्टिकारक, अल्पवातकफजनक, शीतल, पित्तनाशक, और मूत्रकर्ता । जो चांवल **जली हुई मिट्टी** में प्रकट हुएहैं वो कषेले, लघुपाकी, मल मूत्र के निकालनेवाले, रूक्ष, और कफके शोषक हैं । जो शालीधान्य **जोती बोई हुई जमीन** में उत्पन्न होवे वो वातपित्तनाशक, भारी, कफवर्धक, शुक्रजनक, कषाय, अल्पमलनिस्सारक, स्मरणशक्तिवर्धक और बलकारी । जो धान्य **विना बोई** जमीनमें स्वयं पैदा होताहै वह स्वादु, पित्तश्लेष्मनाशक, वातपित्तवर्धक किंचित् तिक्त, कषाय और **पाक** में कटु । **जोती हुई** या **विना जोती** पृथ्वीमें बोए हुए **धान्य**–मधुर, वृष्य, बलकारक, पित्तनाशक, कफवर्धक, अल्पमलनिस्सारक, कषाय, गुरु और शीतल । **बोये हुए** धान्यकी अपेक्षा बिना बोये धान्यके गुण

अल्प हैं। रोपित नवीन धान्य शुक्रजनक और यदि ये पुराने होंय तो हलके होतेहैं। और २ धान्योंकी अपेक्षा रोपित (लगाया) धान्य गुणकारी है और शीघ्र जीर्ण होवे। जो कटकर फिर जमेहुए हैं वह शीतल, रूखे, बलकारक, पित्तकफनाशक, मलरोधक, कषेले, हलके और किंचिन्मात्र कडवे हैं।

रक्तशाली धान्यके गुण.

रक्तशालिर्वरस्तेषुबल्योवर्ण्यस्त्रिदोषजित्।
चक्षुष्योमूत्रलःस्वर्यःशुक्रलस्तृड्ज्वरापहः॥
विषव्रणश्वासकासदाहनुद्वह्निपुष्टिदः॥
तस्मादल्पांतरगुणाःशालयोमहदादयः १५

अर्थ–सब धान्योंमें रक्तशालि (दाऊदखानी) श्रेष्ठ है, यह बलकारक, लावण्यजनक, त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी, मूत्रकारक, स्वरविशुद्धिकारक, शुक्रजनक, तृष्णानाशक, अग्निवर्धक, पुष्टिकारक और ज्वरघ्न। यह विष, व्रण, श्वास, खांसी और दाहको निवारण करे। महाशालि आदिके गुण इस लाल धान्यकी अपेक्षा अल्प हैं।

व्रीहीधान्य.

वार्षिकाःकण्डिताःशुक्लाव्रीहयश्चिरपाकिनः।
कृष्णव्रीहिःपाटलश्चकुक्कुटांडकइत्यपि॥१६॥
शालामुखोजतुमुखइत्याद्याव्रीहयःस्मृताः।
कृष्णव्रीहिःसविज्ञेयोयःकृष्णतुषतंडुलः॥१७॥
पाटलःपाटलापुष्पवर्णकोव्रीहिरुच्यते।
कुक्कुटांडाकृतिर्व्रीहिःकुक्कुटांडकउच्यते॥१८
शालामुखःकृष्णशूकःकृष्णतंडुलउच्यते।
लाक्षावर्णमुखंयस्यज्ञेयोजतुमुखस्तुसः॥१९॥
व्रीहयःकथिताःपाकेमधुरावीर्यतोहिमाः।
अल्पाभिष्यंदिनोबद्धवर्चस्काःषष्टिकैःसमाः
कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषांतस्मादल्पगुणाःपरे॥२०॥

अर्थ–व्रीहीधान्य वर्षाकालमें परिपक्व होतेहैं, यह धान्य छरनेसे सफेद रंगके होतेहैं और देरमें पकतेहैं तहां व्रीहीधान्य अनेक प्रकारके होतेहैं। जैसे कृष्ण व्रीही, पाटल, कुक्कुटांडाकृति, शालामुख और जतुमुख इत्यादि। जिसका तुष और तंदुल काले रंगका होय उसको कृष्णव्रीही कहतेहैं। जिसका रंग पाटलापुष्पके समान होय उसको पाटलव्रीही कहते हैं। जिसका आकार मुरगे के अंडेके समान हो उसको कुक्कुटांड कहतेहैं। जिसका शूक (कांटा) और चांवल काला हो उसको शालामुख कहतेहैं। तथा जिसके मुखका वर्ण लाखके समान होय उसको जतुमुखव्रीही कहतेहैं। संपूर्ण व्रीही जीर्ण होनेपर मधुर स्वादवाले और हितकारी होतेहैं। व्रीहीधान्य अल्प अभिष्यंदी और मलरोधक, व्रीहीधान्योंमें कृष्णव्रीही उत्तमहै और सब अल्पगुणवाले जानने।

षष्टिक.

गर्भस्थाएवयेपाकंयांतितेषष्टिकामताः।
षष्टिकःशतपुष्पश्चप्रमोदकमुकुंदकौ॥२१॥
महाषष्टिकइत्याद्याःषष्टिकाःसमुदाहृताः।
एतेऽपिव्रीहयःप्रोक्ताव्रीहिलक्षणदर्शनात्॥
षष्टिकामधुराःशीतालघवोबद्धवर्चसः।
वातपित्तप्रशमनाःशालिभिःसदृशागुणैः॥
षष्टिकाप्रवरातेषांलघ्वीस्निग्धात्रिदोषजित्।
स्वाद्वीमृद्वीग्राहिणीचबलदाज्वरहारिणी॥
रक्तशालिगुणैस्तुल्याततःस्वल्पगुणाःपरे॥२४॥

अर्थ–जो गर्भमेंही अर्थात् बालमेंही पकजावे उनको षष्टिक अर्थात् सांठी धान्य कहतेहैं। कोई कहताहै कि जो बोनेसे साठवें दिन तयार होजावे उनको षष्टिक अर्थात् सांठीधान्य कहते हैं। सं. षष्टिक, शतपुष्प, प्रमोदक, मुकुंदक और महाषष्टिक इत्यादि षष्टिकधान्य कहातेहैं। इनमें व्रीहीधान्यों के लक्षण मिलनेसे व्रीही कहलाते हैं। गुण। सांठीचांवल–मधुर, शीतल, हलके, मलको बांधनेवाले, वातपित्तके नाशक ए गुणोंमें शालिधान्यके समान हैं। संपूर्ण धान्योंमें षष्टिक धान्य उत्तम है। यह हलके, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, स्वादिष्ट, नरम, ग्राही, बलकर्ता और ज्वरनाशक, इनके गुण रक्तशालिके समान जानने, और धान्य अल्पशक्तिवाले जानने।

(शूकधान्य) जौ.

यवस्तु सीतशूकः स्यान्निःशूकोऽतियवः स्मृतः ।
तोक्यस्तद्वत्स हरितस्तनुः स्वल्पश्च कीर्तितः ॥
यवः कषायो मधुरः शीतलो लेखनो मृदुः ।
व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धनः ॥२६॥
कटुपाकोऽनभिष्यंदी स्वर्यो बलकरो गुरुः ।
बहुवातमलो वर्णस्थैर्यकारी च पिच्छिलः ॥२७॥
कंठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः ।
पीनसश्वासकासोरुस्तंभलोहिततृट्प्रणुत् ॥
अस्मादतियवो न्यूनः स्तोक्यो न्यूनतरस्ततः ।

अर्थ–सफेदशूक (सूई) वालेका **यव** (जौ) कहते हैं । ता. वालिअरिसु, अ. शईर, अं. विटर-बार्लि । शूकरहित जौओंको **अतियव** कहते हैं । हरे रंगके जौओंको **तोक्य** कहतेहैं । और सामान्य यवोंको **स्वल्पयव** कहतेहैं । **गुण** । कषैले, मधुर, शीतल, लेखन, मृदु, व्रणरोगमें तिलके समान गुणकारी, रूक्ष, मेधावर्धक, अग्निकारक, पाकमें कटु, श्लेष्माको फैलनेवाले, स्वरको शुद्ध करता, बलकारी, भारी, कांतिकारी, धातुकी समताके रक्षक, बहुत पवन और मूत्रको निकालते हैं, और पिच्छिल हैं । इनके द्वारा कंठरोग, त्वचकी पीडा, कफ, पित्त, मेदा, पीनस, श्वास, खांसी, ऊरुस्तंभ, रक्तदोष और तृष्णा ए रोग शांति होंय । जौकी अपेक्षा **अतियव** गुणोंमें न्यून हैं । और अतियवकी अपेक्षा **तोक्य** यव अल्प-गुणवाला है ।

गेहूं.

गोधूमः सुमनोऽपि स्यात्त्रिविधः स च कीर्तितः ।
महागोधूम इत्याख्यः पश्चाद्देशात्समागतः ॥
मधूली तु ततः किंचिदल्पा सा मध्यदेशजा ।
निःशूको दीर्घगोधूमः क्वचिन्नंदीमुखाभिधः ॥
गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ।
कफशुक्रप्रदो बल्यः स्निग्धः संधानकृत्सरः ॥
जीवनो बृंहणो वर्ण्यो व्रण्यो रुच्यः स्थिरत्वकृत् ।
मधूली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः ।
शुक्रला बृंहणी पथ्या तद्वन्नंदीमुखः स्मृतः ॥३२॥

अर्थ–गोधूमका दूसरा नाम सुमन । हिं. गेहूं, बं. गम, म. गहूं, गु. घउं, का. गोधी, ते. गोदुमु, फा. गंदुम, अं. व्हीट Wheat, ला. ट्रिटिकं वल-गेरी । गेहूं तीन प्रकारके हैं; जैसे–महागोधूम, मधूली और दीर्घगोधूम । **महागोधूम** पश्चिम, मारवाड आदि देशोंमें होताहै । **मधूलीगोधूम** महागोधूमकी अपेक्षा छोटा होताहै । यह मध्यप्रदेश (मथुरा, दिल्ली, आगरा, आदि) में होताहै । और **दीर्घगोधूम** शूकरहित, यह कहीं २ **नंदीमुख** नामसे बोला जाताहै । **गुण** । **गेहूं**-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी कफवर्धक, शुक्रकर्त्ता, बलकारक, स्निग्ध, टूटेहुए स्थानको जोडनेवाला, लावण्यजनक, व्रणरोगको हितकारी, रोचक और स्वरकारक, तथा कफवर्धक है । **गुण** । जो गुण नये गेहूंमें होतेहैं पुरानोंमें नहीं होते । यह हेतु **वाग्भटने** लिखा है कि वसंतकालमें पुराने जौ, पुराने गेहूं, शहद और शल्यजांगलमांस भक्षण करना चाहिये । **मधूली** गेहूं शीतल, स्निग्ध, पित्तनाशक, हलके, शुक्रजनक, पुष्टिकारी और पथ्य हैं । **नंदी-मुख** गेहूंके गुण इसीके समान जानने ।

शिंबीधान्य.

शमीजाः शिंबिजाः शिंबीभवाः सूप्याश्च वैदलाः ।
वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ॥३३॥
वातलाः कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमला हिमाः ।
ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारिणः ॥३४॥

अर्थ–शमीज, शिंबिज, शिंबीभव, सूप्य [सूप्य] और वैदल ए इसके पर्यायवाचक नाम हैं । **गुण** । मधुर, रूक्ष, कषैले, पाकमें कटु, वायु-वर्द्धक, कफपित्तनाशक, मलमूत्ररोधक, शीतल और अफराकर्त्ता । मूंग और मसूरको त्याग कर इनमें अफराकारक शक्ति अति सामान्य है ।

मूंगके गुण.

मुद्गो रूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः ।
स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो ज्वरघ्नो वनजस्तथा ॥३५॥
मुद्गा बहुविधाः श्यामो हरितः पीतकस्तथा ।
श्वेतो रक्तश्च तेषां तु पूर्वः पूर्वो लघुः स्मृतः ॥३६॥

सुश्रुतेनपुनःप्रोक्तोहरितःप्रवरोगुणैः ।
चरकादिभिरप्युक्तएवमेवगुणाधिकः ॥ ३७॥

अर्थ-संस्कृत मुद्ग, **हिं.** मूंग, **बं.** मुग, **गु.** मग, **तै.** पेसलू, **का.** हेसरेरु, **पंजा.** मूंगि, **अ.** मज, **फा.** बुनुमाष, **इं.** ग्रीन Green **मूंग-**रूक्ष, हलका, ग्राही, कफपित्तनाशक, शीतल, स्वादु, अल्प वातजनक, नेत्रोंको हितकारी और ज्वरघ्न । वनकीमूंग के भी ऐसे ही गुण हैं । मूंग अनेक प्रकारकी है । जैसे श्याममूंग, हरीमूंग, पीलीमूंग, सफेदमूंग, और लालमूंग । इनमें अन्योन्य दूसरी २ से पहिली पहिली हलके गुणवाली है । सुश्रुतने हरीमूंगको उत्तम कहीहै और चरकादिक ऋषिभी ऐसा प्रकार कहते हैं ।

उरद.

माषोगुरुःस्वादुपाकःस्निग्धोरुच्योनिलापहः।
स्रंसनस्तर्पणोबल्यःशुक्रलोबृंहणःपरः ॥३८॥
भिन्नमूत्रमलःस्तन्योमेदःपित्तकफप्रदः ।
गुदकीलार्दितश्वासपंक्तिशूलानिनाशयेत् ॥
कफपित्तकरामाषाःकफपित्तकरंदधि ।
कफपित्तकरामत्स्यावृंताकंकफपित्तकृत्॥४०॥

अर्थ-सं. माष, **हिं.** उरद, **बं.** मासकलाय, **म.** उड़ीद, **गु.** अड़द, **तै.** मिनुउलु, **का.** उंडु, **इं.** किड्नीबीन, **ला.** फेसीओलम् रेडीएटल् । **गुण** । **उड़द** भारी, पचनेपर स्वादिष्टरसवाले, स्निग्ध, रोचक, वातनाशक, स्रंसन, तृप्तिकारक, बलकारक, शुक्रवर्धक, अत्यत पुष्टिकरता, मूत्र मल और स्तनके दूधको निकालनेवाले, मेदा, पित्त और कफके वर्धक । यह बवासीर, अर्दित वात, वातव्याधि, श्वास और परिणामशूल इनको नाश करे । उड़द, दही, मछली और बैंगन ए चारयों वस्तु कफपित्तके बढ़ानेवाली हैं ।

राजमाष.

राजमाषोमहामाषश्चपलश्चबलःस्मृतः ।
राजमाषोगुरुःस्वादुस्तुवरस्तर्पणःसरः॥४१॥
रूक्षोवातकरोरुच्यःस्तन्यभूरिबलप्रदः ।
श्वेतोरक्तस्तथाकृष्णस्त्रिविधःसप्रकीर्तितः ॥
योमहांस्तेषुभवतिसएवोक्तोगुणाधिकः ॥४२॥

अर्थ-राजमाष सं. महामाष, चपल और चवल, **हिं.** बोडा, चवरा चौरा, रवरा और लोबिया इत्यादिक नाम हैं । **बं.** कलाय, **म.** चवल्या, **गु.** चोला, **का.** बरबटा, **पं.** रैम, **अ.** फरिका, **इं.** चाईनिज डालिकोस । **गुण** । **चौरा**-भारी, स्वादु, कषेले, तृप्तिकर्त्ता, दस्तावर, रूखे, वातवर्धक, रोचक, स्तनोंमें दूध प्रकटकर्त्ता और बलकारक । सफेद लाल और काले तीनप्रकारके चौरा देखनेमें आते हैं । इनमें बृहत् माष (अर्थात् सबसे बड़ा चौरा) अधिक गुणकर्त्ता जानना ।

निष्पाव.

निष्पावोराजशिंबिःस्याद्वल्लकःश्वेतशिंबिकः।
निष्पावोमधुरोरूक्षोविपाकेऽम्लो गुरुःसरः ॥
कषायःस्तन्यपित्तास्रमूत्रघातविबंधकृत् ।
विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहच्छुक्रनाशनः ॥

अर्थ-सं. निष्पाव, राजशिंबी, बल्लक और श्वेतशिंबिक । **हिं.** भटवासु, राजशिंबीके बीज हैं । **म.** पावटे । **का.** आवरे, **तै.** आनपचेट्टू, **ला.** लबलेवलू गेरीम् । **गुण** । मधुर, रूक्ष, पाकमें खट्टे, भारी, दस्तावर, कषेले, स्तन्य, पित्त, रुधिर, मूत्र और बादीको बढ़ानेवाले, दाहकर, उष्ण, विषघ्न, श्लेष्मनाशक शुक्रक्षयकारक और शोथनिवारक ।

मोंठ.

मकुष्ठोवनमुद्गःस्यान्मकुष्ठकमुकुष्ठकौ ।
मकुष्ठोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥
वह्निजिन्मधुरःपाकेकृमिकृज्ज्वरनाशनः

अर्थ-सं. मकुष्ठ, वनमुद्ग, मकुष्ठक, मुकुष्ठक । **हिं.** मोंठ, **बं.** वनमूंग, **म.** मटक्या, मठ **गु.** मठ, **तै.** कंकपेसालु, **फा.** माषहिंदी, **अं.** एकोनेंडे लिव्डलिडनो वन । **गुण** । **मोंठ**-वातल, ग्राही, कफपित्तहरण कर्त्ता हलका, मंदाग्निकरता, पाकमें मधुर, कृमिकर्त्ता और ज्वरनाशक जानना ।

मसूर.

मंगल्यकोमसूरःस्यान्मंगल्याचमसूरिका ।
मसूरोमधुरःपाकेसंग्राहीशीतलोलघुः ॥
कफपित्तास्रजिद्रूक्षोवातलोज्वरनाशनः ॥४६॥

अर्थ-सं. मंगल्यक, मसूर, मंगल्या और मसूरिका ।

हिं. मसूर, म. मसुरा, तै. मसूरपप्पु, ता. मिसूर पुरपुर, फा. बनोसुर्खे, अ. अदस्, अं. लेंटिल, ला. ईर्वलेन्स। गुण। पाकमें मधुर, संग्राही, शीतल, हलकी, कफपित्तनिवारक, रक्तदोषनाशक, रूक्ष, वादीकर्ता और ज्वरघ्न है।

अरहर.

आढकीतुवरीचापिसाप्रोक्ताशणपुष्पिका।
आढकीतुवरारूक्षामधुराशीतलालघुः॥
ग्राहिणीवातजननीवर्ण्यापित्तकफास्रजित्

अर्थ–सं. आढकी, तुवरी और शणपुष्पिका। हिं. अरहर रहरी रा. तूर, म. तुरी, गु. तूरनी दाल, का. कटलाकट्ट तोंगरी, तै. कादुलू, फा. शाखुल, अं. पीजीअन्पी। गुण। कषेली, रूक्ष, मधुर, शीतल, हलकी, ग्राहिणी, वातकर्त्ता, वर्णकारक, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको शांति करे।

चना. छोला.

चणकोहरिमन्थः स्यात्सकलप्रियइत्यपि।
चणकःशीतलोरूक्षःपित्तरक्तकफापहः॥४८॥
लघुःकषायोविष्टंभीवातलोज्वरनाशनः।
सचांगारेणसंभृष्टस्तैलभृष्टश्चतद्गुणः॥ ४९ ॥
आर्द्रभृष्टोबलकरोरोचनश्चप्रकीर्त्तितः।
शुष्कभृष्टोऽतिरूक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपणः॥५०॥
स्विन्नःपित्तकफंहन्यात्सूपःक्षोभकरोमतः।
आर्द्रोऽतिकोमलोरुच्यःपित्तशुक्रहरोहिमः
कषायोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः॥५१॥

अर्थ–चणक, हरिमंथ, सकलप्रिय ए संस्कृत नाम। हिं चना, छोला, बं. चणक, म. हरभऱ्या, का. कडले, गु. चणा, तै. शनगालू, अ. हमस्, फा. नखुद, अं. ग्राम [illegible], ला. सीसरएरिएटिनम्। गुण। चना शीतल रूक्ष, पित्त, रक्त, कफको नष्ट करे। हलके, कषेले, विष्टंभकर्त्ता, वातल और ज्वरनाशक। यदि इनको अंगारोंपर अथवा तेलमें भून लिये जावें तोभी पूर्वोक्त गुण करते हैं। गीलेकरके भुने हुए चना बलकारी, रोचक हैं। सूखेभुने चना-अतिरूक्ष, वात, और कोढको कुपित करतेहैं। उबाले हुए चना पित्त और कफको नष्ट करे। चनाकी दाल-पित्त और कफको कुपित करे। भीगे हुए चना-अतिकोमल, रुचिकारी, पित्त शुक्र हरण कर्त्ता, शीतल, कषेले, वातकर्त्ता, ग्राही, कफ, पित्त, हरणकर्त्ता और हलके हैं।

मटर. केराव.

कलायोवर्तुलःप्रोक्तःसतिलश्चहरेणुकः।
कलायोमधुरःस्वादुःपाकेरूक्षश्चशीतलः॥५२

अर्थ–सं. कलाय, वर्तुल, सतिल और हरेणुक, हिं. मटर, केराव, म. वटाणे, गु. वटाणा, का. वट्टकडले, तै. पेद्द इर्व्वे इं. फील्डपी। गुण। मटर-मधुर, स्वादु, पाकमें रूखी और शीतल।

खिसारी.

त्रिपुटःखंडिकोऽपिस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ
त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशम् ॥५३॥
कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा।
किंतुखंजत्वपंगुत्वकारीवातातिकोपनः॥५४॥

अर्थ–त्रिपुट और खंडिक, हिं. खिसारी, म. लांक लांग, अ. हवुल बकर, अं. चिकिलिंग वेच कहतेहैं। गुण। मधुर, कडवी, कषेली, अत्यंत रूक्ष, कफपित्तहर, रुच्य, ग्राहक और शीतल है। किंतु यह अत्यंत वात कुपित करे। बहुत दिन इसको खाय तो यह खंजा और पांगुरा करदेती है।

कुलथी.

कुलत्थिकाकुलत्थश्चकथ्यंतेतद्गुणाअथ।
कुलत्थःकटुकःपाकेकषायःपित्तरक्तकृत् ॥
लघुर्विदाहीवीर्योष्णःश्वासकासकफानिलान्
हंतिहिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान्।
स्वेदसंग्राहकोमेदोज्वरकृमिहरःपरः॥ ५६॥

अर्थ–सं. कुलत्थिका और कुलत्थ, हिं. कुल्थी, बं. कुलथकलाई, म. कुलिथ, गु. कलथी, तै. वुलावुलु, अ. हब्वुल किलत, अं. डोलीकोस् वाई फ्लोरस। गुण। कषेली, पाकमें कटु, रक्तपित्तजनक, हलकी, विदाही, उष्णवीर्य और स्वेदप्रतिरोधक। यह श्वास

खांसी, कफ, वादी, हिचकी, पथरी, वीर्य, दाह, अफरा, पीनस, मेद, ज्वर और कृमिरोगको नष्ट करे।

तिल.

तिलःकृष्णःसितोरक्तःसवर्ण्योऽल्पतिलःस्मृतः
तिलोरसेकटुस्तिक्तोमधुरस्तुवरोगुरुः ॥५७॥
विपाकेकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःकफपित्तनुत्
बल्यःकेश्योहिमस्पर्शस्त्वच्यःस्तन्योव्रणे-
हितः ॥ ५८ ॥
दंत्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राहीवातघ्नोऽग्निमतिप्रदः
कृष्णःश्रेष्ठतमस्तेषुशुक्लोमध्यमःसितः ॥
अन्येहीनतराःप्रोक्तास्तज्ज्ञैरक्तादयस्तिलाः

अर्थ–काले, सफेद और लाल ए तीन प्रकारके तिल हैं। छोटे तिलको **सवर्ण्य** कहते हैं। **म.** तील, **गु.** तल, **तै.** नुव्वुलु, **का.** एलु, **अ.** सिमसिम, **फा.** कुंजद, **अं.** सिसेम नैजर सीडस्, **ला.** सिसेमम् इंडिकम्। **गुण।** **तिल**–कटु, तिक्त, मधुर, कषेले, भारी, पाकमें कटु, मधुर, स्निग्धोष्ण, कफपित्तनाशक, बलकारक, बालोंको हितकारी, स्पर्शमें शीतल, त्वचा (चमडी) की स्वस्थताके रक्षक, स्तनोंमें दूध प्रकटकर्त्ता, व्रणको हितकारी, दांतोंकी, स्वस्थताके रक्षक, अल्पमूत्रकारक, ग्राही, वातनाशक, अग्निकारक, बुद्धिदाता। तिलोंमें **काले तिल** उत्तम हैं। सफेद तिल मध्यम, ये शुक्र करते हैं। और तिल हीनगुणवाले हैं।

अलसी. तिसी. अतसी.

अतसीनीलपुष्पीचपार्वतीस्यादुमाक्षुमा।
अतसीमधुरातिक्तास्निग्धापाकेकटुर्गुरुः।
उष्णादृक्शुक्रवातघ्नीकफपित्तविनाशिनी॥

अर्थ–अतसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा और क्षुमा, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** अलसी, तिसी, मसीना, **म.** जवस **का.** अलसे, **तै.** नल्ल गसिवेट्टु, **अ.** बजरुलूकतान, **फा.** तुख्मेकतान, **अं.** कामन्‌फ्लेक्स सीडस्। **गुण।** मधुर, तिक्त, स्निग्ध, पाकके समय कटु, भारी, गरम, दृष्टिशक्तिको बिगाडनेवाली, शुक्र और वादीकी नाशक, तथा कफ और पित्तको नाश करे।

तोरी.

तुवरीआढिकीप्रोक्तालघ्वीकफविषास्रजित्।
तीक्ष्णोष्णावह्निदाकंडुकुष्ठकोठकृमिप्रणुत्॥

अर्थ–तुवरी अर्थात् तोरी, तोडिस, यह ग्राही, हलकी, कफ, विष और रुधिर विकारोंको दूर करे, तीक्ष्ण, उष्ण, जठराग्निवर्द्धक। खुजली, कोढ, कोठ (चकत्ते) और कृमिरोगको नाश करे।

सरसों.

सर्षपःकटुकःस्नेहस्तुन्तुभश्चकदंबकः।
गौरस्तुसर्षपःप्राज्ञैःसिद्धार्थइतिकथ्यते ॥६३॥
सर्षपस्तुरसेपाकेकटुःस्निग्धःसतिक्तकः।
तीक्ष्णोष्णःकफवातघ्नोरक्तपित्ताग्निवर्धनः॥
रक्षोहरोजयेत्कंडुकुष्ठकोठकृमिग्रहान्।
यथारक्तस्तथागौरःकिंतुगौरोवरोमतः ॥६४॥

अर्थ–**सं.** सर्षप, कटुकस्नेह, तुंतुभ और कदंबक, **हिं.** सरसों, **म.** सिरस, **बं.** सर्षे, **गु.** शरशव, **तै.** पच्चाअवालू, **का.** बिलियसासिव, **अ.** उर्फ अबियद, **अं.** सिनाफिस आल्वा, **ला.** ब्रसिका केपेस्ट्रीस, कहते हैं। सरसों तीन प्रकारकीहै सफेद लाल और पीली। तहां सफेद सरसोंको **सिद्धार्थ** कहते हैं। **गुण।** सरसोंका जायका और **पाक** चरपरा है। स्निग्ध, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक, रक्तपित्त और जठराग्निको बढावे, राक्षसबाधाको हरण करे। खुजली, कोढ, चकत्ते और कृमिरोगको नष्ट करे। इनमें लाल और सफेदमें सफेद उत्तम है।

राई.

राजीतुराजिकातीक्ष्णगंधाकुंजनिकासुरी।
क्षवक्षताभिजनकःकृमिहृत्कृष्णसर्षपः ॥६५॥
राजिकाकफपित्तघ्नीतीक्ष्णोष्णारक्तपित्तकृत्।
किंचिद्रूक्षाग्निदाकंडुकुष्ठकोठकृमीन्हरेत्॥
अतितीक्ष्णाविशेषेणतद्वत्कृष्णापिराजिका।

अर्थ–राई, राजिका, तीक्ष्णगंधा, कुंजनिका, आसुरी, क्षव, क्षताभिजनक, कृमिहृत् और कृष्णसर्षप ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** राई, **बं.** सारषा, **म.** मोहरी. **का.** सासि राई, **तै.** बगालु, **अ.** खरदल, **अं.**

मस्टड सीड्स । राई दो प्रकारकी होती है । राई और कृष्णराई । **गुण** । कफपित्तनाशक, तीक्ष्ण, उष्ण, रक्तपित्तनाशक, किंचित् रूक्ष और अग्निवर्द्धक । यह खुजली, कोढ, चकत्ते और कृमिरोगको नष्ट करे । **काली** राईको बंगाली **कज्जला** कहते हैं । यह अंततीक्ष्ण है और सब गुण राईके समान हैं ।

क्षुद्रधान्य.

क्षुद्रधान्यंकुधान्यंचतृणधान्यमितिस्मृतम् ।
क्षुद्रधान्यमनुष्णंस्यात्कषायंलघुलेखनम् ६७
मधुरंकटुकंपाकेरूक्षंचक्लेदशोषकम् ।
वातकृद्बद्धविट्कंचपित्तरक्तकफापहम् ६८

अर्थ-सं. क्षुद्रधान्य, कुधान्य और तृणधान्य । **गुण** क्षुद्रधान्य गरम नहीं है । कषैले, हलके, लेखन, मधुर, पाक में कटुक, रूक्ष, क्लेद, (तरी) को सुखानेवाले, वातकर्त्ता, मलको बांधनेवाले, रक्तपित्त और कफको दूर करे ।

कांगनी.

स्त्रियांकंगुप्रियंगूद्वेकृष्णारक्तासितातथा ।
पीताचतुर्विधाकंगुस्तासांपीतावरास्मृता ॥
कंगुस्तुभग्नसंधानवातकृद्बृंहणीगुरुः ।
रूक्षाश्लेष्महराऽतीववाजिनांगुणकृद्भृशम् ॥

अर्थ-कंगू, प्रियंगू, ए **सं**. नाम, **हिं**. कांगनी, कंगनी, कानि, **म** कांग, **तै**. प्रकण पुचेट्टु, **का**. नवणे, **फा**. गल, **ला**. पेनिकं मिलीयेसम् । यह काली, लाल सफेद और पीली इन भेदोंसे चार प्रकार-की है, इनमें **पीली**कांगनी उत्तम है । **गुण** । टूटे स्थानको जोडे, वादी करे, बृंहण (वीर्यवर्द्धक) भारी, रूक्ष, कफहरणकर्ता और घोडोंके वास्ते तो अत्यंत गुणकारी है ।

चीना.

चीनाकःकंगुभेदोऽस्तिसज्ञेयःकंगुवद्गुणैः ॥

अर्थ-एक कांगनीका भेद चीनाक अर्थात् [illegible] चीने, **म** राल, **गु**. चाणा, **का**. चानक, **फा**. अरजान, **अ**. दरिगा, **अं**. मिलेट, इसमें कांगनीके समान गुण हैं ।

समा.

श्यामाकःशोषणोरूक्षोवातलःकफपित्तहृत् ।

अर्थ-श्यामाक अर्थात् समा इसको **बं**. शामा, **म**. सांवे, **गु**. शामो, **का**. सबे, **तै**. श्यामालू, **फा**. शामाख, **ला**. पेनिकं फ्रमन्टेसयं । **गुण** । शोषणकर्ता, रूक्ष, वातल और कफपित्त हरण कर्ता है ।

कोदों.

कोद्रवःकोरदूषःस्यादुद्दालोवनकोद्रवः ।
कोद्रवोवातलोग्राहीहिमःपित्तकफापहः ॥
उद्दालस्तुभवेदुष्णोग्राही वातकरोभृशम् ७२

अर्थ-कोद्रव, कोरदूष, उद्दाल और वनकोद्रव, ए **सं**. नाम । **हिं**. कोदों, **म**. कोद्रु, हरिक, **गु**. कोदरो, **का**. हारक, **तै**. आलुवालु, **अ**. कोद्रु, **ला**. पासपेलं स्कोबिक्युलेटम् । **गुण** । **कोदों** वातल, ग्राही, शीतल, पित्त, कफकी नाशक । उद्दाल अर्थात् **वनकी कोदों** गरम, ग्राही और अत्यंत वातकर्त्ता है ।

चारुक सरबीज.

चारुकःसरबीजःस्यात्कथ्यंतेतद्गुणाअथ ।
चारुकोमधुरोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ॥७३॥
शीतलोलघुर्वृष्यश्चकषायोवातकोपनः ॥७४॥

अर्थ-सर (सरपते) के बीजोंको **चारुक** कहते हैं । **गुण** । **चारुक**-मधुर, रूक्ष, रक्तपित्त और कफका नाशक, शीतल, हलका, वृष्य, कषैला और वादीको कुपित करता है ।

बांसके बीज.

यवावंशभवारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः।
बद्धमूत्राःकफघ्नाश्चवातपित्तकराःसराः ७५

अर्थ-बांसके बीज रूखे, कषैले, कटुपाकी, मूत्ररोधक, कफनाशक, वातपित्तकर्ता और दस्तावर हैं ।

करें (कसूमके बीज)

कुसुंभबीजंवरटासैवप्रोक्ताचवरट्टिका ।
वरटामधुरास्निग्धारक्तपित्तकफापहा ॥
कषायाशीतलागुर्वीस्याद्वृष्याऽनिलापहा ॥

अर्थ कसूमके बीजोंको **सं**. वरटा और वरट्टिका कहते हैं । **हिं**. करें, करेरे, **बं**. कुसुमफल, **म**. करडी

गु. कुदुंबानावी, अ. हबुल्‌असफर, फा. तुख्मकापषा। गुण। कसेरु-मधुर, स्निग्ध, रक्तपित्त और कफका नाशक है। कंचरा, शीतल, भारी, अवृष्य और वातनाशक है।

गरहेडुआ.

गवेधुकातुविज्ञद्भिर्गवेधुःकथितास्त्रियाम्।
गवेधुःकटुकास्वाद्वीकार्श्यकृत्कफनाशिनी॥

अर्थ–गवेधुका और गवेधु, ए सं. नाम। **हिं.** गरहेडुआ, म. कसईचें बीज। **गुण।** गवेधु-कटुक, स्वादु, कृशकर्त्ता, और कफनाशकर्त्ता है।

तीनी.

प्रसाधिकातुनीवारस्तृणान्नमितिचस्मृतम्।
नीवारःशीतलोग्राहीपित्तघ्नःकफवातकृत्॥

अर्थ–प्रसाधिका, नीवार और तृणान्न ए सं.। **हिं** तीनी, म. देवभात, गु. बंटी, तै निवरिवट्टु, **का.** अरहुमेभे, **ला.** पेनिकं इटालिक। **गुण।** शीतल, ग्राही, पित्तघ्न और श्लेष्मवर्द्धक है।

पुनेरा.

पवनालोहिमःस्वादुर्लोहितःश्लेष्मपित्तजित्।
अवृष्यस्तुवरोरूक्षःक्लेदकृत्कथितोलघुः॥७९॥

अर्थ–पवनालको हिन्दीमें **पुनेरा** कहतेहैं। **गुण।** शीतल, स्वादु, लाल, कफपित्तनाशक, अवृष्य, कषैले, रूक्ष, क्लेदकारी और हलके हैं।

यावनाल.

यावनालोयवनालशिखरोवृत्ततंडुलः।
दीर्घनालोदीर्घशरःक्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः॥

अर्थ–यावनाल, यवनाल, शिखर वृत्ततंडुल, दीर्घनाल, दीर्घशर, क्षेत्रेक्षु और इक्षुपत्रक, ए सामान्य ज्वारके नाम हैं। **पू.** जुनरी, **बं.** जनार, **गु.** जुँवार, **तै.** जोन्नलु, **का.** जोलदेह सरू, **फा.** जुरमका, **इं.** मेटषी लेट, **म.** जोंधले।

सफेदज्वार.

धावलोयावनालस्तुपांडुरस्तारतंडुलः।
नक्षत्राकृतिविस्तारोवृत्तोमौक्तिकतंडुलः॥
जूर्णाह्वयोदेवधान्यंजूर्णलोबीजपुष्पकः।
जूर्नलःपुष्पगंधश्चसुगंधःस्रगुरुंदकः॥
धवलोयवनालस्तुगौल्योबल्यस्त्रिदोषजित्।
वृष्योरुचिप्रदोऽर्शोघ्नःपथ्यंगुल्मव्रणापहः॥

अर्थ–धवल, यावनाल, पांडुर, तारतंडुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, वृत्त, मौक्तिकतंडुल, जूर्णाह्व, देवधान्य, जूर्णल, बीजपुष्पक, जूर्नल, पुष्पगंधक, सुगंध और स्रगुरुंदक, ए सफेद ज्वारके संस्कृत नाम हैं। **गुण।** **सफेदज्वार**–मिष्ट, बलकारी, त्रिदोषनाशक, वृष्य, रुचिदायक, बवासीरनाशक, पथ्य, गुल्म और व्रणको दूर करे।

धान्योंमें विशेषता.

धान्यंसर्वंनवंस्वादुगुरुश्लेष्मकरंस्मृतम्।
तत्तुवर्षोषितंपथ्यंयतोलघुतरंहितम्॥ ८०॥
वर्षोषितंसर्वधान्यंगौरवंपरिमुंचति।
नतुत्यजतिवीर्यंस्वंक्रमान्मुंचत्यतःपरम्॥८१॥
एतेषुयवगोधूमतिलमाषानवाहिताः।
पुराणाविरसारूक्षानतथागुणकारिणः॥ ८२॥

अर्थ–सब **नवीन** धान्य स्वादु, भारी और कफकर्त्ता कहे हैं। और जिनको रक्खे हुए वर्षदिन होचुका है, वह हलके होनेके कारण पथ्य हैं। वर्षदिनके उपरांत सम्पूर्ण धान भारीपना त्याग देतेहैं, परंतु अपने २ वीर्यको नहीं त्यागते, क्रमसे दो वर्षके उपरांत वीर्यको भी त्याग देते हैं। इनमें भी जौ, गेहूं. तिल, उड़द ए **नवीन**ही हितकारी होते हैं, **पुराने** विरस, रूखे और यथार्थ गुण नहीं करते। तहां कहते हैं कि यवादिक नवीन स्वस्थ और आरोग्य प्राणियोंके वास्ते हितकारी कहेहैं। परंतु निर्बल और पथ्यभोजन करनेवालों को तो पुरानेही हित हैं क्योंकि 'पुराणयवगोधूमक्षौद्रजांगलशूल्य-भुगिति' यह वाग्भटने कहाहै।

इति श्रीअभिनव निघंटौ धान्यवर्गः

—०—

शाकवर्गः।

पत्रंपुष्पंफलंनालंकंदंसंस्वेदजंतथा।
शाकंषड्विधमुद्दिष्टंगुरुविद्याद्यथोत्तरम्॥ १॥

अर्थ–पत्र (पत्ते) फूल, फल, नाल कंद और

संस्वेदज इस प्रकार शाक (तरकारी) **छःप्रकार**की है। इनमें एक से दूसरी भारी जाननी, जैसे पत्ते के शाक से फूलका, फूलसे फलका, फलसे नालका शाक भारी है। इसीप्रकार और भी जानो।

शाकोंके सामान्य गुण.

प्रायःशाकानिसर्वाणिविष्टंभीनिगुरूणिच।
रूक्षाणिबहुवर्चांसिसृष्टविण्मारुतानिच ॥ २ ॥

अर्थ–प्रायःसंपूर्ण शाक विष्टंभी, भारी, गुरु, रूक्ष, मलको उत्पन्न करने वाले और मल, मूत्र, वातके निःसारक हैं।

शाकनिंदाके सामान्यवचन.

शाकंभिनत्तिवपुरस्थिनिहंतिनेत्र-
वर्णंविनाशयतिरक्तमथापिशुक्रम् ॥
प्रज्ञाक्षयंचकुरुतेपलितंचनूनम् ।
हंतिस्मृतिंगतिमितिप्रवदंतितज्ज्ञाः ॥ ३ ॥
शाकेषुसर्वेषुवसंतिरोगा-
स्तेहेतवोदेहविनाशनाय ॥
तस्माद्बुधःशाकविवर्जनंतु
कुर्यात्तथाम्लेषुसएवदोषः ॥ ४ ॥

अर्थ–शाकभोजन करनेसे देह, हड्डी, नेत्र, वर्ण, रुधिर, शुक्र, प्रज्ञा (बुद्धि) स्मृति (स्मरणशक्ति) और गति इन सबको नष्ट करे, और बाल आदि को सफेद करेहै। यावन्मात्र शाक हैं सबमें रोग रहते हैं और वह देहके नाश करने के कारण हैं। अतएव **शाक भोजन** करना यह प्राणी त्याग देवे और इसीप्रकार **खटाई** में दोषहैं इसीसे बहुत **खटाई** न खाय। अब शाकों के विशेष वाक्यों को कहते हैं। तहां प्रथम पत्र शाकोंको-उनमेंभी प्रथम-

दोनोंवथुए.

वास्तूकंवास्तुकंचस्यात्क्षारपत्रंचशाकराट् ।
तदेवतुबृहत्पत्रंरक्तंस्याद्गौडवास्तुकम् ॥ ५ ॥
प्रायशोयवमध्येस्याद्यवशाकमतः स्मृतम् ।
वास्तूकद्वितयंस्वादुक्षारंपाकेकटूदितम् ॥६॥
दीपनंपाचनंरुच्यंलघुशुक्रबलप्रदम् ।
सरंप्लीहास्रपित्तार्शःकृमिदोषत्रयापहम् ॥७॥

अर्थ–वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र और शाकराट् ए **संस्कृत** में वथुएके नाम हैं। **बं.** वेतुया, **दा.**चिलवी, **म.** चाकवत, रानचाकवत **गु.** टांको, **का.** चक्रवती **इं.** व्हाइटगुजफुट, दूसरा लाल रंगका और बड़े पत्तों का जो होताहै उसको गौडवास्तुक कहते हैं। वास्तुकशाक प्रायः यवों के खेतोंमें होताहै अतएव इसको **यवशाक** कहतेहैं। **गुण**। दोनों वथुए स्वादु, क्षार, **पाकमें** कडुए, अग्निदीपक, पाचक, रोचक, हलके, शुक्रकर्ता, बलकारक, दस्तावर और त्रिदोष नाशक। इसके भक्षण करने से तापतिल्ली, पित्तकी बवासीर और कृमिरोग नष्ट होयहै।

पोईका शाक.

पोतक्युपोदिकासातुमालवामृतवल्लरी।
पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत्
अकंठ्यापिच्छिलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तजित्।
बलदारुचिकृत्पथ्याबृंहणीतृप्तिकारिणी ॥८॥

अर्थ–पोतकी, उपोदिका, मालवा और अमृतवल्लरी ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** पोईका साग, **बं.** पुइशाक, **म.** वेलपोई, मयाल, **गु.** पोथी, **इं.** रेड-मल्वारनाइटफ्रोट। **गुण**। यह शीतल, स्निग्ध, कफकर्त्ता, वातपित्तनाशक, कंठको बिगाडनेवाली, पिच्छिल, निद्रा लानेवाली, शुक्र उत्पन्न कर्त्ता, रक्तपित्त शांतिकर, बलकारक, रोचक, पथ्य, पुष्टिकारी और तृप्तिकारी।

सफेदमरसा. लालमरसा. नवडा.

मारिषोबाष्पकोमार्षःश्वेतोरक्तश्चसस्मृतः।
मारिषोमधुरःशीतोविष्टंभीपित्तनुद्गुरुः।
वातश्लेष्मकरोरक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित् ॥१०॥
रक्तमार्षोगुरुर्नातिसक्षारोमधुरःसरः।
श्लेष्मलःकटुकःपाकेस्वल्पदोषउदीरितः ॥११॥

अर्थ–मारिष, वाष्पक, और मार्ष ए मरसेके **संस्कृत** नाम हैं। मरसा दो प्रकारका होताहै सफेद और लाल। **बं.** श्वेतकांटानटे, लाल कांटानटे, **म.** माठाची भाजी, पोकल्याचीभाजी, **गु.** डांभो, **उडि.** नेउटाशाक, **तै.** इगलकुरा, **ला.** एमरेंथस् ट्रिकलर। **गुण**। सफेद मरसा मधुर, शीतल, विष्टंभी, पित्तनाशक, भारी, वातकफकारी, रक्तपित्तनिवारक, और अग्निकी विषमताका नाशक। **लाल मरसा**, अत्यंत

भारी नहीं है. यह क्षारगुण करके युक्त है। मधुर, सर, रुक्तकर्त्ता, पाकमें कटु, अल्पदोषयुक्त है।

चौलाई.

तण्डुलीयोमेघनादःकांडेरस्तंडुलेरकः।
भंडीरस्तंडुलीबीजोविषघ्नश्चाल्पमारिषः॥१२॥
तंडुलीयोलघुःशीतोरूक्षःपित्तकफास्त्रजित्।
सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविषहारकः॥१३॥

अर्थ-तंडुलीय, मेघनाद, कांडेर, तंडुलेरक, भंडीर, तंडुलीबीज, विषघ्न और अल्पमारिष, इतने संस्कृत नाम। हिं. चौला [रा] ई, बं. नटेशाक, म. तांदुलजा, गु. तांजलजो, ता. मुल्लूक्किरई, का. किरुकुशाले, तै. मोलाकुरा, द्रा. कांडेमाट इं. हरमें-फ्रोडाईट एमेरंथ। गुण। लघु, शीतल, रूक्ष, पित्तक-फनाशक, रुधिरदोषनिवारक, मलमूत्रनिःसारक, रोचक अग्निकारक और विषनाशक है।

कंचट.

पानीयंतण्डुलीयंतुकंचटंसमुदाहृतम्।
कंचटंतिक्तंरक्तपित्तानिलहरंलघु॥१४॥

अर्थ-सं. पानीय, तंडुलीय, कचट, हिं. कंचट कह-तेहैं यह जलचौलाई है। म. जलतांदुलजा। गुण। कड़वी, रक्तपित्त और बादीको हरण करे, तथा हलकी है।

पालक.

पालक्यावास्तुकाकाराच्छुरिकाचीरितच्छदा।
पलक्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः॥
विष्टंभिनीमदश्वासपित्तरक्तकफापहा॥१५॥

अर्थ-पालक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका और चीरितच्छदा ए संस्कृत नाम। हिं. पालक, बं. पालेक, म. पालख, का. पालक्य, फा. इस्पनाख, इं. स्पाईनेज। गुण। वातकर्त्ता, शीतल, कफकारी, दस्तावर, भारी, विष्टंभकारी। गुण। मद, श्वास, रक्तपित्त और कफको दूर करे।

नाड़ीकाशाक.

नाडिकंकालशाकंचश्राद्धशाकंचकालकम्।
कालशाकंसरंरुच्यंवातकृत्कफशोथहृत्॥
बल्यंरुचिकरंमेध्यंरक्तपित्तहरंहिमम्॥१६॥

अर्थ-नाडिक, कालशाक, श्राद्धशाक और कालक ए संस्कृत नाम। हिं. नाड़ीकाशाक, नरिचा और कालशाक भी कहते हैं बं. नालिताशाक, तिक्तपाटशाक। गुण। कालशाक—दस्तावर, रुचिकारी, वादीकर्त्ता, कफ, सूजनको हरण करे, बलकर, रुचिकर, मेध्य, रक्तपित्तको हरण करे और शीतल है।

पटुआ.

पट्टशाकस्तुनाडीकोनाडीशाकश्चसस्मृतः।
नाडीकोरक्तपित्तघ्नोविष्टंभीवातकोपनः॥१७॥

अर्थ-पट्टशाक, नाडीक, और नाडीशाक ए संस्कृत नाम। हिं. पटुआ, बं. मिष्टपाकशाक, म. मयाल, गु. नालानीभाजी, इं. आईपोमिया-रिप्टेन्स। गुण। रक्तपित्तनाशक, विष्टंभी और वायुको कुपित कर्त्ता है।

कलंबी.

कलंबीशतपर्वीचकथ्यंतेतद्गुणाअथ।
कलंबीस्तन्यदाप्रोक्तामधुराशुक्रकारिणी॥१८॥

अर्थ-सं. कलंबी और शतपर्वी। हिं. कलंबी. बं. कलमाशाक, तै. तोमेवचलिचेट्टु। गुण। स्तनोंमें दूध प्रकट करे, मधुर और वीर्यकारक है।

लोणी. वृहल्लोणी.

लोणालोणीचकथितावृहल्लोणीतुघोटिका।
लोणीरूक्षास्मृतागुर्वीवातश्लेष्महरीपटुः॥१९॥
अर्शोघ्नीदीपनीचाम्लामंदाग्निविषनाशिनी।
घोटिकास्त्लासराचोष्णावातकृत्कफपित्तहृत्॥
वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नीश्वासकासप्रमेहनुत्।
शोथलोचनरोगेचहितातज्ज्ञैरुदाहृता॥२१॥

अर्थ-सं. लोणा, लोणी, वृहल्लोणी और घोटिका, हिं. नोनियाका शाक, आंवती, कुल्फा, म. घोल, गु. लुणी, का. गोली, ता. कोरिलकीरइ, तै. अइल-कुश, अ. बक्लतुलहमका, फा. खुरफा, इं. पर्सलेन, ला. पोर्चलेका, ओलिरेसिया। गुण। रूखी, भारी, वातकफ-हरणकर्त्ता, स्वादमें निमकीन, बवासीरनाशक, अग्निकारक, खट्टी, मंदाग्निनाशक और विषरोगनाशक। घोटिका [अर्थात् बड़ी नोनिया] खट्टी, दस्तावर, गरम, वातकर्त्ता और कफपित्तनाशक। यह वाणीके दोष, घाव

गोला, श्वास, खांसी, प्रमेह, सूजन और नेत्ररोग इनको निवारण करे।

चांगेरी. अम्बिली.

चांगेरीचुक्रिकादंतशठाम्बष्ठाम्ललोणिका।
अश्मंतकस्तुशफरीपिसलीचाम्लपत्रकः ॥२२
चांगेरीदीपनीरुच्यारूक्षोष्णाकफवातनुत्।
पित्तलाऽम्लाग्रहण्यर्शः कुष्ठातीसारनाशिनी॥

अर्थ-चांगेरी, चुक्रिका, दंतशठा, अंबष्ठा, अम्ललोणिका, अश्मंतक, शफरी, पिसली और अम्लपत्रक, ए संस्कृतनाम। हिं. चांगेरी, अंबिलोना, बं. आमरूल। गुण। चांगेरी-दीपनी, रुचिकारी, रूक्ष, गरम, कफवातनाशक, पित्तकारी, खट्टी, संग्रहणी, बवासीर, कोढ और अतिसार इनको दूर करे।

चूका.

चुक्रिकास्यात्तुपत्राम्लारोचनीशतवेधिनी।
चुक्रात्वम्लतरास्वाद्वीवातघ्नीकफपित्तकृत्॥
रुच्यालघुतरापाकेवृंताकेनातिरोचनी॥२४॥

अर्थ-चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी, शतवेधिनी, ए सं.। हिं. चूक, बं. चूकापालंग, म. आम्बटचुको, चुको, का. हुलिच कोत, इं. ब्लेडरडाक। गुण। अत्यंत खट्टी, स्वादु, वातनाशक, कफपित्तकारक, रुच्य, अत्यंतलघु, और पाकमें कटु तथा वैंगनोंमें डालनेसे अति रुचिकारी नहीं हैं।

चंचु.

चिंचाचंचुश्चंचुकीचदीर्घपत्रासतिक्तका।
चंचुःशीतासरारुच्यास्वाद्वीदोषत्रयापहा॥
धातुपुष्टिकरीबल्यामेध्यापिच्छिलकास्मृता॥

अर्थ-चिंचा, चंचु, चंचुकी, दीर्घपत्रा और सतिक्तका ए संस्कृतनाम। हिं. चंचु, चेंचुना, म. चुंचभाजी, गु. छुद्रराजगरी, तै. चिंतचेट्टु, ला. कार्कोरस्एकूटेंग्युलेरीस्। गुण। शीतल, दस्तावर, रुच्य, स्वादु, त्रिदोषनाशक, धातुपुष्टिकारक, बलकारी, मेधावर्धक और पिच्छिल है।

हुरहुर.

ब्रह्मीशंखधराचारीब्राह्मीचहिलमोचिका।
शोथंकुष्ठंकफंपित्तंहरतेहिलमोचिका॥ २६॥

अर्थ-ब्राह्मी, शंखधरा, चारी, ब्राह्मी और हिलमोचिका ए संस्कृत नाम. हिं. हुलहुल, हुरहुर, बं. हिंचाशाक, म. हरहुची, उड़ि. हिंरमिचा कहतेहैं। गुण। सूजन, कोढ, कफ और पित्तको नाश करे।

शिरिआरी.

शितिवारःशितिवरःस्वस्तिकःसुनिषण्णकः
श्रीवारकःसूचिपत्रःपर्णकःकुक्कुटःशिखी॥
चांगेरीसदृशःपत्रश्चतुर्दलइतीरितः।
शाकोजलान्वितेदेशेचतुःपत्रीतिचोच्यते॥२८
सुनिषण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः।
अविदाहीलघुःस्वादुःकषायोरूक्षदीपनः॥
वृष्योरुच्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत्॥२९॥

अर्थ-शितिवार, शितिवर, स्वस्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णक, कुक्कुट, शिखी, चांगेरी सदृश, पत्र, चतुर्दल, और चतुःपत्री ए संस्कृत नाम। यह सजल पृथ्वीमें प्रकट होती है इसके पत्ते अंबिलोना शाकके समान होते हैं। हिं. शिरिआरी, चौपतिआ, बं. शुनिशाक, म. कुरडु, गु. ओटीगण, उड़ि. छुनछुनिया, फा. अंजरा, अं. ब्लेफेरिस् इड्युलीस कहतेहैं। गुण। शीतल, ग्राही, मोहनाशक, त्रिदोषघ्न, अविदाही, हलकी, स्वादु, कषैली, रूक्ष, अग्निवर्धक, वृष्य, और रोचक। यह ज्वर, श्वास, प्रमेह, कोढ, और भ्रमरोगको दूर करे।

मूलीके पत्ते.

पाचनंलघुरुच्योष्णंपत्रंमूलकजंनवम्।
स्नेहसिद्धंत्रिदोषघ्नमसिद्धंकफपित्तकृत्॥३०॥

अर्थ-नई मूलीके पत्तोंका शाक-पाचक, हलका, रुचिकारी, और गरम। यह घृत, तेल आदिमें छौंक कर सिद्ध कराहुआ त्रिदोषनाशक है। और कच्चा कफपित्तको करेहै।

गोमाकेपत्ते.

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत्।
भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु॥३१॥

अर्थ-गोमाके पत्ते स्वादु, रूक्ष, भारी, पित्तकर्त्ता, भेदक। कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वर इनको दूर करें, तथा हलके हैं।

अजमायनके पत्ते.

यवानीशाकमाग्नेयंरुच्यंवातकफप्रणुत् ।
उष्णंकटुचतिक्तंचपित्तलंलघुशूलहृत् ॥ ३२ ॥

अर्थ–अजमायनका शाक, अग्निकारी, रुचिकारी, वातकफनाशक, गरम, चरपरा, कड़वा, पित्तकर्त्ता, और शूलरोगनिवारक है ।

चकवड.

दद्रुघ्नपर्वंदोषघ्नमम्लंवातकफापहम् ।
कंडुकासक्रिमिश्वासदद्रूकुष्ठप्रणुल्लघु ॥ ३३ ॥

अर्थ–चकवड या पमारके पत्ते त्रिदोषनाशक, खट्टे, वातकफके हरणकर्त्ता, खुजली, खांसी, कृमि, श्वास, दाद, और कोढरोगको हरण करे तथा हलकेहैं ।

सेहुंड.

सेहुंडस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंहरेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ–सेहुंड–(थूहर) के पत्ते, तीक्ष्ण, दीपन, रोचन हैं । अफरा, अष्ठीलिका, गोला, शूल, सूजन, और उदररोग इनको दूर करे ।

पित्तपापडा.

पर्पटोहंतिपित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।
संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः ॥३५॥

अर्थ–पित्तपापडेका साग–रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, कफ और भ्रमको नष्ट करे । संग्राही, शीतल, कडवा, दाह हरणकर्त्ता, वातल और हलकाहै ।

गोभी.

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरीलघुः ।

अर्थ–गोभीका शाक–कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, और ज्वर इनको हरण करे और हलका है । [यह जंगलमें जो कटेरीके समान गोभी ऊगती है उसके गुण हैं । फूलगोभीके नहीं हैं]

पटोलपत्र.

पटोलपत्रंपित्तघ्नंदीपनंपाचनंलघु ।
स्निग्धंवृष्यंतथोष्णंचज्वरकासक्रिमिप्रणुत् ॥

अर्थ–पटोलपत्र, (परवलके पत्ते) पित्तनाशक, दीपन, पाचन, हलके, स्निग्ध, वृष्य, तथा गरम, एवं ज्वर, खांसी और कृमिरोगको दूर करे ।

गिलोयके पत्ते.

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु ।
कषायंकटुतिक्तंचस्वादुपाकंरसायनम् ॥३७॥
बल्यमुष्णंचसंग्राहिहन्याद्दोषत्रयंतृषाम् ॥
दाहप्रमेहवातासृक्कामलाकुष्ठपांडुताम् ३८

अर्थ–गिलोयके पत्तोंका शाक–अग्निको बढावे, सब ज्वरोंको दूर करे, हलका, कषेला, कडवा, पचनेमें स्वादिष्ट, रसायन, बलकारी, गरम, संग्राही, त्रिदोषनाशक, प्यास, दाह, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कोढ और पांडुरोग इनको हरण करे ।

कसौंदी.

कासमर्दोऽरिमर्दश्चकासारिःकर्कशस्तथा ।
कासमर्ददलंरुच्यंवृष्यंकासविषास्रनुत् ॥३९॥
मधुरंकफवातघ्नंपाचनंकंठशोधनम् ।
विशेषतःकासहरंपित्तघ्नंग्राहकंलघु ॥ ४० ॥

अर्थ–सं.कासमर्द, अरिमर्द, कासारि और कर्कश, हिं. कसौंदी, बं. कालकासुंदरपाता, म. कासवंदा कहतेहैं । गुण । कसौंदीके पत्ते, रुचिकारी, वृष्य, खांसी, विष, रुधिर विकारको दूर करे । मधुर, कफवातनाशक, पाचन, कंठशोधक, विशेष करके खांसीको दूर करे, पित्तनाशक, ग्राही, और हलकेहैं ।

चनेकाशाक.

रुच्यंचणकशाकंस्याद्दुर्जरंकफवातकृत् ।
अम्लंविष्टंभजनकंपित्तनुद्दंतशोथहृत् ॥

अर्थ–चनेके पत्तोंका साग–रुचिकारी, दुर्जर, कफवातकर्त्ता, खट्टा, विष्टंभकारी, पित्त–हरणकारी और दांतोंकी सूजनको हरण करे ।

केरावा. मटर.

कलायशाकंभेदिस्याल्लघुतिक्तंत्रिदोषजित् ॥

अर्थ–मटरके पत्तोंका शाक–दस्तावर, हलका, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

सरसोंका शाक.

कटुकंसार्षपंशाकंबहुमूत्रमलंगुरु ॥ ४२ ॥

अम्लपाकंविदाहिस्यादुष्णंरूक्षंत्रिदोषजित् ।
सक्षारंलवणंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिंदितम् ॥४३॥

अर्थ-सरसोंके पत्तोंका शाक-चरपरा, बहुत मल मूत्रका निकालनेवाला, भारी, पचनेमें खट्टा, दाहकर्त्ता, गरम, रूक्ष, त्रिदोषको जीतनेवाला, क्षारगुणयुक्त, नमकीन, तीक्ष्ण और स्वादु, यह सरसोंका शाक सब शाकोंमें निंदित अर्थात् अधम है ।

पुष्पशाक. अगस्तिया.

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थिकनिवारणम् ।
नक्तांध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ॥४४॥

अर्थ-अगस्तियाका फूल-शीतल, चातुर्थिक ज्वरका नाशक, रतोंधकानाशक, कड़वा, कषेला, कटुपाकी, पीनस, कफ, पित्त और वातके रोगोंको दूर करे ।

कदलीपुष्प.

कदल्याःकुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु ।
वातपित्तहरंशीतंरक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥ ४५ ॥

अर्थ-केले का फूल-चिकना, स्निग्ध, मधुर, कषेला, भारी, वातपित्त-हरणकर्त्ता, शीतल, रक्तपित्त और क्षय इनको दूर करे ।

सहजनेका फूल.

शिग्रोःपुष्पंतुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथकृत् ।
कृमिहृत्कफवातघ्नंविद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितंरक्तपित्तप्रसादनम् ॥४६॥

अर्थ-सहजनेका फूल-चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुओंमें सूजनका करनेवाला, कृमिरोग, कफ वात, विद्रधि, प्लीह और गोला इनको नष्ट करे । इसीप्रकार **मधुशिग्रु** (मीठे सहजनेका फूल) नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्तका दूर करे ।

सेमरकाफूल.

शाल्मलीपुष्पशाकंतुघृतसैंधवसाधितम् ।
प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यंचनसंशयः ॥ ४७ ॥
रसेपाकेचमधुरंकषायंशीतलंगुरु ।
कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-सेमरके फूलोंका शाक जो घृत और सैंधानिमक डालकर बनाया जाताहै वह दुःसाध्य प्रदरको नाश करे । रसमें और पाकमें मधुर, कषेला, शीतल, भारी, कफपित्त, रुधिर दोषनाशक, ग्राही और वातल है ।

फलशाक [कूष्मांड].

कूष्मांडंस्यात्पुष्पफलंपीतपुष्पंबृहत्फलम् ।
कूष्मांडंबृंहणंवृष्यंगुरुपित्तास्रवातनुत् ॥ ४९ ॥
बालंपित्तापहंशीतंमध्यमंकफकारकम् ।
वृद्धंनातिहिमंस्वादुसक्षारंदीपनंलघु ॥
बस्तिशुद्धिकरंचेतोरोगहृत्सर्वदोषजित् ॥५०॥

अर्थ-कूष्मांड, पुष्पफल, पीतपुष्प, और बृहत्फल, ए संस्कृत नाम । **हिं.** पेठा, कुह्मडा, कोंहडा, **बं.** साचिकुमडा, **म.** कोहोला, **गु.** पदकोला, **दे.** कोहला, **कों** भूगकोहला, **तै.** पुल्लाहा, **का.** दारकोहला, **उडि.** कखारु, **अ.** महद्दवा, **फा.** भूरा कद्दू, **इं.** पंपकीन, कहते हैं, । **गुण** । **पेठा** वीर्यवर्धक, वृष्य, भारी, पित्त, रुधिरविकारको दूर करे । **कच्चापेठा** पित्तनाशक, शीतल और **अधकच्चा** कफकारी एवं **पका हुआ पेठा** अत्यंत शीतल नहीं है । स्वादु, क्षारयुक्त, दीपन, हलका बस्तिशोधक, मानसिकरोग (अपस्मार, उन्मत्तता आदि) को दूर कर्ता, तथा सर्वदोषहरणकारी है ।

कोहडी.

कूष्मांडीतुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तिता ।
कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरुः ॥
पक्वातिक्ताऽग्निजननीसक्षाराकफवातनुत् ।

अर्थ-कोहडी, अत्यंत हलकी, इसको **कर्कारु** भी कहते हैं । **बं.** गोलसाचिकुमडा । **गुण** । **कर्कारु** ग्राही, शीतल, रक्तपित्तहरणकर्त्ता, भारी । **पकीहुई** कडवी, क्षारगुणयुक्त, जठराग्निप्रद और कफवातनाशक है ।

विलायती पेठा (कौला).

अपरंपीतकूष्मांडंगुरुपित्तकरंपरम् ।
अग्निमांद्यकरंस्वादुश्लेष्मघ्नंवातकोपनम् ॥

अर्थ-विलायती पेठा अर्थात् **कौलेका शाक हि.** काशीफल, **बं.** विलाती पेठा, **म.** तामडा भोपला

गु. कोलु, तै. तियागुलटिकाया का. डंगर, फा. वादरंग, इं. धीगोर्डे कहते हैं। यह भारी, पित्तकर्ता, मंदाग्निकारक, स्वादिष्ट, कफनाशक और वादीको कुपित करता है।

तुंबी, तूंबा.

अलाबूःकथितातुंबीद्विधादीर्घाचवर्तुला।
मिष्टतुंबीदलंहृद्यंपित्तश्लेष्मापहंगुरु ॥
वृष्यंरुचिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्धनम् ॥ ५२॥

अर्थ–अलाबू या तुंबी, यह दो प्रकारकी होती है। एक लंबी और दूसरी गोल। **हिं.** तूंबा, कद्दू, लौआ, रामतोरई, **बं.** लाउ, **म.** भोपला. **गु.** दुधी, **तै.** तीयातु, खडीकाया, **का.** कडउवलकाई, **फा.** कुदुशिरिन्, **इं.** व्हाईटगुड, कहते हैं। **मीठी तुंबीके** पत्ते हृदयको हितकारी, पित्तकफके नाशक, भारी, वृष्य, रुचिकारी, और धातुपुष्टिको करे हैं।

तितलौकी.

इक्ष्वाकुःकटुतुंबीस्यात्सातुंबीचमहाफला।
कटुतुंबीहिमाहृद्यापित्तकासविषापहा।
तिक्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरांतकृत् ॥५३॥

अर्थ–इक्ष्वाकु, कटुतुंबी, तुंबी और महाफला ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कड़वी तुंबी, **बं.** तितलाओ, **म.** कडू दूध्या भोंपला, **गु.** कडवी तुंबडी, **का.** कहिसोरे, **तै.** चेनिआनव, **फा.** कुदूतल्ख, **इं.** बेटर–लगुड कहते हैं। **गुण**। कडवी तुंबी–शीतल, हृद्य, पित्त, खांसी और विषको दूर करे **स्वादमें** कडवी, **विपाकमें** चरपरी, वातपित्तज्वरको दूर करे है।

ककड़ी.

एर्वारुःकर्कटीप्रोक्ताकथ्यंतेतद्गुणाअथ।
कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः।
रुच्यापित्तहरासामापक्वातृष्णाग्निपित्तकृत् ॥

अर्थ–सं. एर्वारु, कर्कटी, **हिं.** ककडी, कांकरी, **बं.** कांकुड, **तै.** दोसकाया, **का.** कोयसौत, **इं.** ककंवर, कहते हैं। **गुण**। ककड़ी–शीतल, रूक्ष, ग्राही, मधुर, भारी, रुचिकर्त्ता, पित्तको शांति करे, आमको करे। **पकीककड़ी** - प्यास, अग्नि और पित्तको करे है।

चिंचेडा.

चिर्चिडाश्वेतराजिःस्यात्सुदीर्घोगृहकूलकः।
चिर्चिडोवातपित्तघ्नोबल्यःपथ्योरुचिप्रदः।
शोषिणोऽतिहितःकिंचिद्गुणैर्न्यूनःपटोलतः॥

अर्थ–चिचिंडा, श्वेतराजी, सुदीर्घ और गृहकूलक ए **सं.**। **हिं.** चिंचेड़ा, **बं.** चिचिंगा **म.** गोड-पडवल, **गु.** पंडोला, **तै.** पोटलीकाया, **इं.** स्नेकगोर्ड कहते हैं। **गुण**। वातपित्तको नाश करे, बलकारी, पथ्य, रुचिकारी, शोष रोगमें अत्यंत हितकारी और यह परवलोंसे गुणमें कुछ न्यून है।

करेला–करेली.

कारवेल्लंकठिल्लंस्यात्कारवेल्लीततोलघुः।
कारवेल्लंहिमंभेदिलघुतिक्तमवातलम् ॥ ५६ ॥
ज्वरपित्तकफास्रघ्नंपांडुमेहकृमीन्हरेत्।
तद्गुणाकारवेल्लीस्याद्विशेषाद्दीपनीलघुः ॥५७॥

अर्थ–कारवेल्ल, कठिल्ल, ए **सं.**। **हिं.** करेला, **बं.** करोला, **म.** लघुकारली, **गु.** कारेला, **तै.** करिला, **का.** हागल, **उडि.** फालरा, **इं.** हेरी मोडिका, **फा.** करिलाह कहते हैं। और छोटे करेलोंको **सं.** कारवेल्ली और हिन्दीमें करेली कहते हैं। **गुण**। करेला-शीतल, दस्तावर, हलका, कड़वा, बादी नहीं करे। ज्वर, पित्त, कफ, रुधिरविकार, पांडुरोग, प्रमेह और कृमिरोग इनको दूर करे। करेलेके समानही गुण **करेलीमें** हैं।

नेनुआ (तोरई)

महाकोशातकीप्रोक्ताहस्तिघोषामहाफला।
धामार्गवोघोषकश्चहस्तिपर्णश्चसस्मृतः ॥
महाकोशातकीस्निग्धारक्तपित्तानिलापहा ॥

अर्थ–महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक और हस्तिपर्ण, ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** गलकातोरई, घीयातोरई, नेनुआ, **बं.** धुंधुल, **म.** मोठी घोंसाली, **गु.** घीसोडा, **उ.** तरडि, **का.** अरहिरे, **तै.** पुच्छावीरकाया, **फा.** खियार, **ला.** ल्यूफा पेंटेंड्रा कहते हैं। **गुण**। महाकोशातकी चिकनी और रक्तपित्तको हरण करे।

तोरई.

धामार्गवःपीतपुष्पोजालिनीकृतवेधना।
राजकोशातकीचेतितथोक्ताराजिमत्फला॥
राजकोशातकीशीतामधुराकफवातला।
पित्तघ्नीदीपनीश्वासज्वरकासकृमिप्रणुत् ६०

अर्थ–धामार्गव, पीतपुष्प, जालिनी, कृतवेधना, राजकोशातकी, और राजिमत्फला ए **सं.**। **हिं.** तोरई, तुरैया, **बं.** झिंगा, **म.** मोठीघोंसाली, **गु.** जुमखड़ा कहतेहैं। **गुण**। तोरई-शीतल, मधुर, कफ और वातको करे, पित्तनाशक, दीपनी। श्वास, ज्वर, खांसी और कृमिरोगको नष्ट करे।

परवल.

पटोलःकुलकस्तिक्तःपांडुकःकर्कशच्छदः।
राजीफलःपांडुफलोराजेयश्चामृताफलः॥६१॥
बीजगर्भःप्रतीकश्चकुष्ठहाकासभंजनः।
पटोलंपाचनंहृद्यंवृष्यंलघ्वग्निदीपनम्॥ ६२॥
स्निग्धोष्णंहंतिकासास्रज्वरदोषत्रयकृमीन्।
पटोलस्यभवेन्मूलंविरेचनकरंसुखात्॥ ६३॥
नालंश्लेष्महरंपत्रंपित्तहारिफलंपुनः।
दोषत्रयहरंप्रोक्तंतद्वत्तिक्तापटोलिका॥ ६४॥

अर्थ–पटोल, कूलक, तिक्त, पांडुक कर्कशच्छद, राजीफल, पांडुफल, राजेय, अमृतफल, बीजगर्भ, प्रतीक, कुष्ठहा और कासभंजन ए **संस्कृतनाम**। **हिं.** परवल, **बं.** पलतालता, **म.** कडूपडवल, **तै.** कोम्मुपुडले, **ता** सेसपदूला, **फा.** मोरहडी, **ला.** ट्रिकोसेंथिस् कुकुमेरिना, और हिंदुस्तानकी भाषाओंमें इसी नामसे विख्यात है। **गुण**। परवल-पाचक, हृद्य, वृष्य, हलका, दीपन, स्निग्ध, गरम, खांसी, रुधिरविकार, ज्वर, त्रिदोष और कृमिरोग इनको दूर करे। **परवलकी जड**-सुखपूर्वक दस्त करानेवाली है। इसकी **नाल** कफको हरण करे, **पत्ते** पित्तको दूर करें, और **फल** त्रिदोषनाशक है। इसीप्रकार **कडवे परवलके** गुण जानने चाहिये।

कंदूरी.

बिंबीरक्तफलातुंडीतुंडिकेरीचबिंबिका।
ओष्ठोपमफलाप्रोक्तापीलुपर्णीचकथ्यते॥६५॥
बिंबीफलंस्वादुशीतंगुरुपित्तास्रवातजित्।
स्तंभनंलेखनंरुच्यंविबंधाध्मानकारकम्॥६६॥

अर्थ–बिंबी, रक्तफला, तुंडी, तुंडिकेरी, बिंबिका, ओष्ठोपमफला, और पीलुपर्णी ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कंदूरी, गुलकांख, **बं.** कुंदरकी, **म.** तोंडली, **गु.** टींडोरी कहतेहैं। **गुण**। कंदूरीका फल-स्वादिष्ट, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकार, तथा वादीके विकारको दूर करे। स्तंभन करे, लेखन है, रुचिकारी, विबंध और अफराको करेहै। मीठी और कडवीके भेदसे कंदूरी दो प्रकारकी है।

सेम.

शिंबिःशिंबीःपुस्तशिंबीस्तथापुस्तकशिंबिका।
शिंबीद्वयंचमधुरंरसेपाकेहिमंगुरु॥
बल्यंदाहकरंप्रोक्तंश्लेष्मलंवातपित्तजित्॥६७॥

अर्थ–शिंबि, शिंबी, पुस्तशिंबी, और पुस्तकशिंबी, ए **संस्कृतनाम**। **हिं.** सेम, **बं.** श्वेतशिम, और मोगलाइशिम **म.** सेंग, खरसंबली, **गु.** वालोर कहते हैं। सेम दो प्रकारकी होतीहै - एक छोटी और दूसरी बड़ी। **गुण**। दोनों प्रकारकी सेम रस और पाकमें मधुर, शीतल, भारी, बलकर्ता, दाहकारी, कफकर्ता और वातपित्तको जीतें।

सुआरासेम.

कोलशिंबिःकृष्णफलातथापर्यंकपट्टिका।
कोलशिंबिःसमीरघ्नीगुर्वुष्णाकफपित्तकृत्।
शुक्राग्निसादकृद्वृष्यारुचिकृल्बद्धविड्गुरुः

अर्थ–**सं.** कोलशिंबि, कृष्णफला और पर्यंकपट्टिका **हिं.** सुआरासेम। **गुण**। वातनाशक, भारी, गरम, कफपित्त कर्त्ता, और जठराग्निको मंद करे, वृष्य, रुचिकारी, मलको बांधनेवाली और भारी है।

सहजनेकी फली.

सौभांजनफलंस्वादुकषायंकफपित्तनुत्।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्मघ्नंदीपनंपरम्॥ ६८॥

अर्थ–सहजनेके फल-स्वादु, कषेले, कफपित्तनाशक। शूल, कोढ, क्षयरोग, श्वास, खांसी और गोलेकाँ इनको हरण करे और अग्निको अत्यंत दीपन करे

बैंगन भंटा.

वृंताकस्त्रीतुवार्त्ताकुर्भंटाकीभांटिकापिच ।
वृंताकंस्वादुतीक्ष्णोष्णंकटुपाकमपित्तलम् ॥
ज्वरवातबलासघ्नंदीपनंशुक्रलंलघु ।
तद्बालंकफपित्तघ्नंवृद्धंपित्तकरंलघु ॥ ७१ ॥
वृंताकंपित्तलंकिंचिदंगारपरिपाचितम् ।
कफमेदोनिलामघ्नमत्यर्थंलघुदीपनम् ॥
तदेवहिगुरुस्निग्धंसतैलंलवणान्वितम् ।
अपरंश्वेतवृंताकंकुक्कुटांडसमंभवेत् ॥
तदर्शः सुविशेषेणहितंहीनंचपूर्वतः ॥ ७२ ॥

अर्थ–वृंताक, वार्त्ताकु, भंटाकी और भांटिका ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** बैंगन, भंटा, **बं.** बेगुन, **उडि.** बाइगुण, **म.** वांगी, **गु.** काकडिया, रिंगणा, **ता.** कुडरकई, **तै.** वंकाया, **का.** वदने, **अ.** बादंजान्, **फा.** बादंगान्, **इं.** ब्रिजिल्, **ला.** सोलेनमेल, जोन कहते हैं । **गुण** । बैंगन-स्वादु, तीक्ष्णोष्ण, पाक में कटु, पित्त नहीं करे । ज्वर, वात, कफको नष्ट करे, दीपन, शुक्रकर्ता, हलके । **छोटे २ बैंगन** कफ, पित्तको नष्ट करें । **बडे २ बैंगन** पित्त करें और हलके हैं । **अंगारे पर भुने** बैंगन अर्थात् बैंगन का भर्त्ता किंचित् पित्त कर्त्ता है । उसी भरते को तेल और नमक के साथ बनाया जावे तो भारी और स्निग्ध होजाता है । दूसरा **सफेद-बैंगन** मुरगे के अंडे के समान होता है (यह अभक्ष्य है) यह **सफेद बैंगन** बवासीर वाले को अत्यन्त हितकारी है और पहिले बेगनों से गुणों में हीन है, एक **मारू** बैंगन होताहै, यह भी शीतल, और वातकर्त्ता तथा, स्वादिष्ट होताहै।

ढेंडस. टिंडे.

डिंडिशोरोमशफलोमुनिनिर्मितइत्यपि ।
डिंडिशोरुचिकृद्भेदीपित्तश्लेष्मापहःस्मृतः ॥
सुशीतोवातलोरूक्षोमूत्रलश्चाश्मरीहरः ७४

अर्थ–डिंडिश, रोमशफल और मुनिनिर्मित ए **संस्कृत** नाम, **हिं.** ढेंडस, टिंडे । **गुण** । **ढेंडस**–रुचिकारी, दस्तावर, पित्तकफनाशक, शीतल, वातल, रूक्ष, मूत्रलानेवाले, और पथरी के रोग को हरण करतेहैं ।

पिंडार.

पिंडारंशीतलंबल्यंपित्तघ्नंरुचिकारकम् ।
पाकेलघुविशेषेणविषशांतिकरंस्मृतम् ॥७५॥

अर्थ–पिंडार-शीतल, बलकारी, पित्तनाशक, रुचिकारी, पाकमें हलका और विषको शांति करनेवाला है।

खेखसा. ककोडा.

कर्कोटकीपीतपुष्पामहाजालीतिचोच्यते ।
कर्कोटीमलहृत्कुष्ठहृल्लासारुचिनाशनी ॥
श्वासकासज्वरान्हंतिकटुपाकाचदीपनी ॥

अर्थ–**सं.** कर्कोटकी, पीतपुष्पा और महाजाली, **हिं.** खेखसा, ककोडा, **बं.** काकरोल, **म.** कर्टोली, **गु.** कंटोला, **तै.** अगोरकर । **गुण** । **ककोडे**-मलको हरण करें, कोढ, हल्लास, अरुचि, श्वास, खांसी और ज्वरको हरण करें, **पाकमें** कटु और दीपन कर्त्ता हैं ।

करेरुआ.

डोडिकाविषमुष्टिश्चडोडीत्यपिसुमुष्टिका ।
डोडिकापुष्टिदावृष्यारुच्यावह्निप्रदालघुः ॥
हंतिपित्तकफार्शांसिकृमिगुल्मविषामयान् ॥

अर्थ–**सं.** डोडिका, विषमुष्टि, डोडी और सुमुष्टिका, **हिं.** करेरुआ, **गु.** खरवोली कहतेहैं । **गुण** । पुष्टिकर, वृष्य, रुचिकारी, जठराग्निवर्द्धक, हलका, पित्त, कफ, बवासीर, कृमि, गोला और विषके रोगोंको दूर करे ।

कटेरीके फल.

कंटकारीफलंतिक्तंकटुकंदीपनंलघु ।
रूक्षोष्णंश्वासकासघ्नंज्वरानिलकफापहम् ॥

अर्थ–**कटेरीके फल**-कडवे, चरपरे, दीपन, हलके, रूक्ष और गरम । श्वास, खांसी, ज्वर, वादी और कफको दूर करे ।

नालशाक. (सरसोंकी नाल.)

तीक्ष्णोष्णंसार्षपंनालंवातश्लेष्मव्रणापहम् ।
कंडूवमिहरंदद्रूकुष्ठघ्नंरुचिकारकम् ॥ ७६ ॥

अर्थ–**सरसोंकी नाल** तीक्ष्णोष्ण, वात, कफ, व्रण, खुजली, वमन, दाद और कोढको नष्ट करे, तथा रुचिको करेहै ।

कंदशाक (सूरण.)

सूरणःकंदओलश्चकंदलोऽर्शोघ्नइत्यपि ।
सूरणोदीपनोरूक्षःकषायःकंडुकृत्कटुः ॥ ८० ॥
विष्टंभीविषदोरुच्यःकफार्शःकृंतनोलघुः ।
विशेषादर्शसांपथ्यःप्लीहगुल्मविनाशनः ॥८१॥
सर्वेषांकंदशाकानांसूरणःश्रेष्ठउच्यते ।
दद्रूणांकुष्ठिनांरक्तपित्तिनांनहितोहिसः ॥
संधानयोगंसंप्राप्तःसूरणोगुणवत्तरः ॥ ८२ ॥

अर्थ–सूरण, कंद, ओल, कंदल, और अर्शोघ्न ए संस्कृतनाम, **हिं.** सूरन, जमीकंद, **बं.** ओल, **म.** सुरण, **तै.** मंचाकंदा, **ला.** एमोर्फो, फेलस्-पेनियू-लेटस्, कहतेहैं । मुंबईमें मीठा सूरन होताहै जो खुजली नहीं करे । **गुण** । **सूरण**–दीपन, रूक्ष, कषेला, खुजली कर्ता, चरपरा, विष्टंभी, विषद, रुचिकारी, कफकी बवासीरको नष्ट करे और हलका है । यह विशेष करके बवासीर रोगपर पथ्य है, प्लीह और गोलेके रोगोंको नष्ट करे । सब कंदोंके सागोंमें **सूरण उत्तम** है । यह दाद, कोढ और रक्तपित्त रोगियोंको हितकारी नहीं है । इसका सँधाना डालनेसे अधिक गुणकारी होताहै । सूरनका सँधाना सोरोंजीमें बहुत डालते हैं ।

आलू.

काष्ठालुकशंखालुकहस्त्यालुकानिकथ्यंते ।
पिंडालुकमधालुकरक्तालुकानिचोक्तानि ॥८३॥
आलुकंशीतलंसर्वंविष्टंभिमधुरंगुरु ।
सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्जरंरक्तपित्तनुत् ॥
कफानिलकरंबल्यंवृष्यंस्वल्पाग्निवर्द्धनम् ८४

अर्थ–आलूको संस्कृतमें आरु, आरुक, आलू, वीरसेन और आलुक कहते हैं । यह छःप्रकारका है, जैसे काष्ठालुक, शंखालुक, हस्त्यालुक, पिंडालुक, मधालुक और रक्तालुक । **काष्ठालू**को **हिं.** कठालू, **बं.** काठआलू यह कठोर होताहै । **शंखालू**को **हिं.** शंखारू, **बं.** शाँखआलू, यह सफेदी लिये होताहै । **हस्त्यालुक**–यह लंबाई युक्त बड़ा भारी होताहै । **पिंडालुक**-गोल होताहै । **मधालुक** मीठा, रोमांचयुक्त, लंबा होताहै । **रक्तालुक**को रतालू अथवा रत्तडा कहते हैं । इसका लाल रंग होताहै । **गुण** । सब जातिके आलू शीतल, विष्टंभी, मधुर, भारी, मलमूत्रको प्रकट कर्त्ता, रूक्ष, दुर्जर और रक्तपित्तको नाश करनेवालेहैं । कफ, वादीको करें, बलकर्त्ता, वृष्य और किंचिन्मात्र अग्निको बढ़ाते हैं ।

अरई.

रक्तालुभेदद्दायादीर्घातन्वीचप्रथितालुकी ।
आलुकीबलकृत्स्निग्धागुर्वीहृत्कफनाशिनी ।
विष्टंभकारिणीतैलेतलितातिरुचिप्रदा ॥८५॥

अर्थ–रक्तालूका भेद आलुकी है । यह कुछ लंबी और रक्तालूसे छोटी होतीहै, इसको **आलुकी** कहतेहैं । **हिं.** अरई, घुइयां कहतेहैं । **गुण** । अरई-बलकारी, स्निग्ध, भारी, हृदयके कफको नाश करे, विष्टंभकर्त्ता, तेलमें तलकर जो बनाई गई वह अतिरुचि करे ।

मूली–बडी मूली.

मूलकंद्विविधंप्रोक्तंतत्रैकंलघुमूलकम् ।
शालमर्कटकंविस्रंशालेयंमरुसंभवम् ॥ ८६ ॥
चाणक्यमूलकंतीक्ष्णंतथामूलकपोतिका ।
नेपालमूलकंचान्यत्तद्भवेद्गजदंतवत् ॥ ८७ ॥
लघुमूलंकटूष्णंस्याद्रुच्यंलघुचपाचनम् ।
दोषत्रयहरंस्वर्यंज्वरश्वासविनाशनम् ॥ ८८ ॥
नासिकाकंठरोगघ्नंनयनामयनाशनम् ॥
महत्तदेवरूक्षोष्णंगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥
स्नेहसिद्धंतदेवस्यात्दोषत्रयविनाशनम् ८९

अर्थ–मूली दो प्रकारकी है एक छोटी, दूसरी बड़ी । तहां लघु मूलक, शालमर्कट, विस्र, शालेय, मरुसंभव, चाणक्यमूलक, तीक्ष्ण और मूलकपोतिका ये **छोटीमूली**के संस्कृत नाम हैं । **गु.** मूला, **क.** मूलंगी, **तै.** शूतिदंपा, **फा.** तुख, **इं.** रेडीश । दूसरी जातिकी मूलीको **नेपालमूलक** कहते हैं–इसकी आकृति हाथीके दांतके समान होती है । **गुण** । **छोटीमूली**–चरपरी, उष्ण, रोचक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक और स्वरको शोधन करे । यह ज्वर, श्वास, नासिकारोग, कंठपीडा और नेत्ररोगको नाश करे । **बड़ीमूली**–रूखी, गरम, भारी और त्रिदोष प्रकटकर्त्ता है । यदि इसको तेल डालकर बनावे तो त्रिदोषनाशक होतीहै ।

गाजर.

गाजरंगृंजनंप्रोक्तंतथानारंगवर्णकम् ।
गाजरंमधुरंतीक्ष्णंतिक्तोष्णंदीपनंलघु ॥
संग्राहिरक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ ९०

अर्थ-सं. गाजर, गृंजन और नारंगवर्णक, **हिं.** गाजर, **फा.** जर्दक **अ.** जजर, **इं.** क्यारटरूट । **गुण** । **गाजर**-मधुर, तीक्ष्ण, कडवी, गरम, अग्निवर्धक, हलकी और संग्राही । यह रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी और वात, कफको नाश करे ।

केराकंद.

शीतलःकदलीकंदोबल्यःकेश्योऽम्लपित्तजित्
वह्निकृद्दाहहारीचमधुरोरुचिकारकः ॥ ९१ ॥

अर्थ-केलेका कंद शीतल, बलकारी, बालोंको हितकारी, अम्लपित्तनाशक, अग्निवर्द्धक, दाहनाशक, मधुर और रुचिको करे ।

मानकंद.

मानकःस्यान्महापत्रःकथ्यंतेतद्गुणाअथ ।
मानकःशोथहृच्छीतःपित्तरक्तहरोलघुः ॥९२॥

अर्थ-मानक और महापत्र ए मानकंदके नाम हैं । **गुण** । सूजनको दूर करे, शीतल, रक्तपित्तको नष्ट करे और हलका है ।

वाराहीकंद.

वाराहीपित्तलाबल्याकट्वीतिक्तारसायनी ।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥

अर्थ-वाराही कंदको **हिं.** गेंठी, [वाराहीकंदके ऊपर एक बड़ा पत्ता होता है वह काले सर्पके फणके समान दूरसे दीखेहै, इस कंदको चीरनेसे पीले रंगका दूध निकलताहै] **गुण** । वाराहीकंद-पित्तकर्त्ता, बलकारी, कटु, तिक्त, रसायन, आयु, शुक्र और अग्निको करे । तथा प्रमेह कफ, कोढ़ और वादीको नष्ट करे ।

महिषकंद.

शुभ्रालुर्महिषकंदोलुलायकंदश्चशुक्लकंदश्च
सर्पाख्योवनवासीविषकंदोनीलकंदोन्यः ॥
कटूष्णोमहिषीकंदःकफवातामयापहः ।
मुखजाड्यहरोरुच्योमहासिद्धिकरःसितः

अर्थ-शुभ्रालु, महिषकंद, लुलायकंद, शुक्लकंद, सर्पाख्य, वनवासी, विषकंद और नीलकंद ए महिषकंदके **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** भैंसाकंद, **का.** यम्मेगडे कहतेहैं । यह अनूप देशमें होताहै । **गुण** । **महिषीकंद**-कटु, उष्ण, कफवातके रोगोंको और मुखकी जड़ताको हरण करे, रुचिकारी, महासिद्धिकर्त्ता और रंगमें सफेद होताहै ।

कोलकंद.

कोलकंदःकृमिघ्नश्चपंजलोवस्त्रपंजलः ।
पुटालुःसुपुटश्चैवपुटकंदश्चसप्तधा ॥
कोलकंदःकटुश्चोष्णःकृमिदोषविनाशनः
वांतिविच्छर्दिशमनोविषदोषनिवारकः ॥

अर्थ-सं. कोलकंद, कृमिघ्न, पंजल, वस्त्रपंजल, पुटालु, सुपुट और पुटकंद ए **सात** नाम हैं । **हिं.** सूकरकंद, **का.** संपुटगेड, कहतेहैं । **गुण** । **कोलकंद**-कटु, उष्ण, कृमिदोषनाशक, वांति और दुष्टवांति (रद) को शमन करे तथा विषदोष नाशक है ।

विष्णुकंद.

विष्णुकंदोविष्णुगुप्तःसुपुटोबहुसंपुटः ।
जलवासावृहत्कंदोदीर्घवृत्तोहरिप्रियः ॥
विष्णुकंदस्तुमधुरःशिशिरःपित्तनाशनः
दाहशोषहरोरुच्योसंतर्पणकरः परः ॥

अर्थ-विष्णुकंद, विष्णुगुप्त, सुपुट, बहुसंपुट, जलवासा, वृहत्कंद, दीर्घवृत्त और हरिप्रिय, ए **संस्कृत** नाम हैं । यह कोकण देशमें इसी नामसे प्रसिद्ध है **गुण** । **विष्णुकंद**-मधुर, शिशिर, पित्तनाशक, दाह, सूजनको हरण करे, रुचिकारी और तृप्त करनेवाला है ।

धरणीकंद.

धरणीधारणीयाचवीरपत्रीसुकंदकः ।
कंदालुर्वनकंदश्चकंदाढ्योदंडकंदकः ॥
मधुरोधरणीकंदःकफपित्तामयापहः ।
वक्त्रदोषप्रशमनःकुष्ठकंडूविनाशनः ॥

अर्थ-सं. धरणी, धारणी, वीरपत्री, सुकंदक, कंदालु,

वनकंद, कंदाय और दंडकंदक। यह धरनीकंदसे ही प्रसिद्ध है। का. नेलगड्डे कहतेहैं। **गुण**। **धरणीकंद**–मधुर, कफपित्तकी व्याधियोंको नष्टकर्त्ता, मुखके दोषको शमन करे तथा कोढ और खुजलीको दूर करेहै।

नाकुलीकंद.

नकुलीसर्पगंधाचसुगंधारक्तपत्रिका।
ईश्वरीनागगंधाचाप्यहिभुक्स्वरसातथा॥
सर्पादनीव्यालगंधाज्ञेयाचेतिदशाह्वया।
अन्यामहासुगंधाचसुवहागंधनाकुली॥
सर्पाक्षीफणिहंत्रीचनकुलाढ्याहिभुक्चसा।
विषमर्दनिकाचाहिमर्द्दनीविषमर्द्दनी॥
महाहिगंधाहिलताज्ञेयास्याद्द्वादशाह्वया।
नाकुलीयुग्मलंतिक्तंकटूष्णंचत्रिदोषजित्॥
अनेकविषविध्वंसीकिंचिच्छ्रेष्ठं द्वितीयकम्

अर्थ–नाकुली, सर्पगंधा, सुगंधा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगंधा, अहिभुक्, स्वरसा, सर्पादनी और व्यालगंधा, ए दश **संस्कृत** नाम, **हिं.** नकुलकंद, **का.** विषमुंगरी। एक दूसरा नाकुलीकंद और होताहै उसके महासुगंधा, सुवहा, गंधनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहंत्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगंधा और अहिलता, ए बारह नाम हैं। **गुण**। दोनों प्रकारके नकुलकंद–कडवे, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषोंको नष्ट करता, इनमें पहिलेकी अपेक्षा **दूसरा** कुछ गुणोंमें श्रेष्ठ है।

चंडालकंद.

प्रोक्तश्चंडालकंदःस्यादेकपत्रोद्विपत्रकः।
त्रिपत्रोथचतुःपत्रपंचपत्रश्चभेदतः॥
चंडालकंदोमधुरःकफपित्तास्रदोषजित्।
विषभूतादिदोषघ्नोविज्ञेयश्चरसायनः॥

अर्थ-**सं.** चंडालकंद, एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र और चतुःपत्र, पंचपत्र, **हिं.** चंडालकंद, **का.** मादगेगड्डे, कहतेहैं। **गुण**। चंडालकंद-मधुर, कफपित्त, रुधिरविकारको नष्ट करे। विष, भूतादि दोषोंको नष्ट करता और रसायन है।

तैलकंद.

अथतैलकंदउक्तोद्रावक-
कंदस्तिलांकितःप्रोक्तः।
दलश्चकेरवीकंदःसंज्ञोज्ञेय-
स्तिलचित्रपत्रकोबाख्यैः।
लोहद्रावीतैलकंदःकटूष्णो
वातापस्मारहारीविषारिः।
शोफघ्नःस्याद्बंधकारीरसस्य
द्रागेवासौदेहसिद्धिंविधत्ते।

अर्थ–तैलकंदको-द्रावककंद, तिलांकित, दलकंद, केरवीकंद, तिलचित्रपत्र कहतेहैं। **गुण**। लोहका द्रावक (पतला करनेवाला) कटु, उष्ण, वादीका अपस्मार, विषरोग और सूजन इनको नष्ट करे, पारेको बांधनेवाला, और तत्काल देहकी सिद्धिको करता है।

तिलकंद.

अश्वारिपत्रसंकाशोतिलबिंदुसमन्वितः।
सक्लिग्धाधस्थभूमिश्चतिलकंदोतिविस्तृतः॥
तिलकंदोविषच्छर्दिहरोभेदीरसायनः।

अर्थ–कनेरके पत्रके समान पत्र और उनपर तिलके समान सफेद २ बूंद होतीहैं। यह चिकनी और नीची जमीनमें प्रकट होताहै, इसको तिलकंद कहते हैं। **गुण**। तिलकंद-विष, वमनको हरण करे, दस्तावर और रसायन है।

हस्तिकर्ण.

गजकर्णातुतिक्तोष्णातथावातकफाञ्जयेत्।
शीतज्वरहरीस्वादुःपाकेतस्यास्तुकंदकः॥९४
पांडुशोथकृमिप्लीहगुल्मानाहोदरापहः।
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नोवनसूरणकंदवत्॥९५॥

अर्थ–हस्तिकर्ण कड़वा, उष्ण, वात, कफ, शीतज्वर, इनको जीते। पाकमें स्वादु, इसका कंद पांडुरोग, सूजन, कृमि, प्लीह, गोला, अफरा, उदर, संग्रहणी, अर्शके विकार इनको वनसूरनके समान नष्ट करे। हस्तिकर्णको **बं.** लालकचू कहते हैं।

केमुक.

केमुकंकटुकंपाकेतिक्तंग्राहिहिमंलघु।
दीपनंपाचनंहृद्यंकफपित्तज्वरापहम्॥
कुष्ठकासप्रमेहास्रनाशनंवातलंकटु॥९६॥

अर्थ–केमुकको **हिं.** केउआँ, **बं.** केंउमूत, म.

कोवी, **फा.**कलाम, **इं.** केवेज । **गुण ।** केमुक पाकमें कटु, तिक्त, ग्राही, शीतल, हलका दीपन, पाचन, हृद्य, कफ, पित्तज्वर, कोढ़, खांसी, प्रमेह और रुधिर के विकारों को नाश करे । वातकर्ता और चरपरा है ।

कसेरु.

कसेरुद्धिविधंतत्तुमहद्राजकसेरुकम् ।
मुस्ताकृतिर्लघुस्याच्चत्विचोढमितिस्मृतम् ॥
कसेरुकद्वयंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ।
पित्तशोणितदाहघ्नंनयनामयनाशनम् ॥ ९८॥
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरंस्मृतम्

अर्थ–सं.कसेरु, चिचोड, । **बं.** केसुर, **म.** कचरा, **तै.** इट्टिकोति, **का.** सेकिनगडे, **ला.** स्किपसुकैसूर । **कसेरू** दो प्रकारकाहै। जैसे–राजकसेरू और चिचोड । ए कसेरूके नाम हैं बृहत्कसेरूको **राजकसेरू** कहते हैं । और जिसका आकार मोथाके समान हो और हलका होवे उसका नाम **चिचोड** है । **गुण ।** दोनों कसेरू-शीतल, मधुर, कषेले, भारी, ग्राही, शुक्रोत्पादक, वातकफकारक, रोचक और स्तनों में दूध प्रकट कर्त्ता । ये रक्तपित्त, दाह और नेत्ररोगको नष्ट करे ।

सेरुकी. भसींड.

पद्मादिकंदःशालूकंकरहाटश्चकथ्यते ।
मृणालमूलंभिस्सांडंजलालूकंचकथ्यते ९९
शालूकंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रनुद्गुरु ।
दुर्जरंस्वादुपाकंचस्तन्यानिलकफप्रदम् ॥
संग्राहिमधुरंरूक्षांभिस्सांडमपितद्गुणम् ।
बालंह्यनार्त्तवंजीर्णंव्याधितंकृमिभक्षितम् ॥
कंदंविवर्जयेत्सर्वंयद्वाऽग्न्यादिविदूषितम् ।
अतिजीर्णमकालोत्थंरूक्षांसिद्धमदेशजम् ॥
कर्कशंकोमलंचातिशीतव्यालादिदूषितम् ।
संशुष्कंसकलंशाकंनाश्नीयान्मूलकंविना ॥

अर्थ–कमल आदिके कंदको, शालूक और करहाट कहते हैं । मृणालकी मूलको भिस्सांड और जलालू कहते हैं । मृणाल-शीतल, वृष्य, पैत्तिक-दाह इनको निवारण करे । रुधिरदोषनाशक, भारी, दुर्जर, **स्वादु**पाकी, स्तनोंमें दुग्धोत्पादक, वातकर्त्ता, कफवर्द्धक, संग्राही, मधुर और रूक्ष । मृणालकी जड़में भी ऐसेही गुण हैं । **वर्जित ।** अत्यंत कोमल, विना समय में प्रकट हुआ, पुराना, व्याधित, कीट (चेटी गिनार, दीमक) आदिका खाया हुआ, और आगसे पजरा हुआ और पवनने सुखाया ऐसा मृणाल (कमलकी नीचेकी डंडी) भक्षण रोगी मनुष्यको वर्जित है । अत्यन्त पुराना, अकालोत्पन्न, रूक्षसिद्धि (जो तेल आदि डालके सिद्ध न करा हो) दुष्ट स्थान में प्रकट हुआ हो, कठोर, अतिकोमल, शरदीका मारा, व्यालादि (सर्पादि) करके दूषित ऐसे सागों का खाना **निषेध** है । एक मूली के विना और दूसरे साग सूखे हुए भक्षण नहीं करना–परंतु सूखी हुई मूली गुणदायक होती है–परंतु श्रावक लोग सब कंदों को सुखाकर खाते हैं, और अन्य मनुष्य भी सूखा साग खातेहैं–यह वैद्यक शास्त्र से अनुचित है ।

संस्वेदज शाक.

उक्तंसंस्वेदजंशाकंभूमिच्छत्रंशिलींध्रकाम् ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषुवृक्षादिषुतदुद्भवेत् ॥
सर्वेसंस्वेदजाःशीतादोषलाःपिच्छिलाश्चते ।
गुरुवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥
श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसंभवाः ।
नातिदोषकरास्तेस्युःशेषास्तेभ्योविगर्हिताः॥

अर्थ–संस्वेदज शाकको **हिं.** सांपकी छत्री, छतोना, **बं.** कोडकछाता, व्यांगेरछाता, **म.** अलंबी, भूंइफोड, **इं.** मशरुम्, **ला** फंगाई, इसको **संस्कृतमें** भूमिछत्र और शिलींध्रक कहतेहैं । यह मृत्तिका, गोवर, लकडी और वृक्षादिकसे प्रकट होताहै । **गुण ।** संपूर्ण संस्वेदज शाकमात्र शीतल, दोषकारक, पिच्छिल, और भारी, खानेसे वमन, अतिसार, ज्वर, और कफके रोगोंको प्रकट करें । ए सब छाता सफेद-रंगके होतेहैं और जिनके स्थान-काठ, वांस,तथा गौके चरनेकी ठौर है वो **अधिक दोषकर्त्ता नहीं** है । बाकीके जो काले रंगके और दुष्ट स्थानमें प्रकट होते हैं वह **त्याज्य** हैं ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ शाकवर्गः ॥

मांस वर्ग.

मांसंतुपिशितंक्रव्यमामिषंपललंपलम् ।
मांसंवातहरंसर्वंबृंहणंबलपुष्टिकृत् ॥
प्रीणनंगुरुहृद्यंचमधुरंरसपाकयोः ॥ १ ॥

अर्थ–मांसके नाम । मांस, पिशित क्रव्य, आमिष, पलल, और पल ए **मांसके संस्कृत** नाम हैं । **गुण** । सर्व मांस वात हरणकर्त्ता, बृंहण, बल और पुष्टिकारक, प्रीणन (तृप्तिकर्त्ता) भारी, हृदयको प्रिय, और **रस** तथा **पाक**में मधुर हैं ।

मांसके भेद.

मांसवर्गोद्विधाज्ञेयोजांगलाऽनूपभेदतः ॥

अर्थ–संपूर्ण मांस दो प्रकारका है–जांगल और अनूप ।

जांगल.

मांसवर्गोऽत्रजंघालाबिलस्थाश्चगुहाशयाः २
तथापर्णमृगाज्ञेयाविष्किराःप्रतुदोऽपिच ।
प्रसहाअथचग्राम्याअष्टौजांगलजातयः ॥ ३ ॥
जांगलामधुरारूक्षास्तुवरालघवस्तथा ।
बल्यास्तेबृंहणावृष्यादीपनादोषहारिणः ॥४॥
मूकतांमिन्मिनत्वंचगद्गदत्वार्दिते तथा ।
बाधिर्यमरुचिच्छर्दिप्रमेहमुखजान्गदान् ॥
श्लीपदंगलगंडंचनाशयत्यनिलामयान् ॥ ५ ॥

अर्थ–जांगलके जीवोंकी जाति **आठ** प्रकारकी है जैसे–जांगल, बिलस्थ, गुहाशय, पर्णमृग, विष्किर, प्रतुद, प्रसह और ग्राम्य । **गुण । जांगलमांस**-मधुर, रूक्ष, कषेला, हलका, बलकारक, पुष्टिकारक, वीर्य-प्रकटकर्त्ता, अग्निवर्द्धक और दोषनाशक । जांगल-मांसके सेवन करनेसे गूंगापना, नाकमें बोलना, गद्गद (हकलायके बोलना), लकवा (वातकारोग), बैहरा-पना, अरुचि, वमन, प्रमेहरोग, मुखरोग, श्लीपद, गल-गंड, और वातव्याधि निवारण होय ।

आनूप.

कूलेचराःप्लवाश्चापिकोशस्थाःपादिनस्तथा ।
मत्स्याएतेसमाख्याताःपंचधाऽनूपजातयः ६
अनूपामधुराःस्निग्धागुरवोवह्निसादनाः ॥
श्लेष्मलाःपिच्छलाश्चापिमांसपुष्टिप्रदाभृशम्
तथाभिष्यंदिनस्तेहिप्रायःपथ्यतमाःस्मृताः ॥

अर्थ–कूलेचर, प्लव, कोशस्थ, पादी और मत्स्य, ए **पांचप्रकारकी अनूपजाति हैं । गुण ।** अनूप-मांस मधुर, स्निग्ध, भारी, अग्निमांद्यकर, कफजनक, पिच्छिल, अत्यंत मांसवर्द्धक, अति पुष्टिकारक, अभि-ष्यंदी और प्रायः पथ्यतम हैं ।

जंघाल.

हरिणैणकुरंगर्ष्यपृषतन्यंकुशंबराः ॥ ८ ॥
राजीवोऽपिचमुंडीचेत्याद्याजंघालसंज्ञकाः ।
हरिणस्ताम्रवर्णःस्यादेणःकृष्णःप्रकीर्त्तितः ॥
कुरंगईषत्ताम्रःस्यादेणतुल्याकृतिर्महान् ॥९॥
ऋष्योनीलांगकोलोकेसरोझइतिकीर्तितः ।
पृषतश्चंद्रबिंदुःस्याद्धरिणात्किंचिदल्पकः ॥
न्यंकुर्बहुविषाणोऽथशबरोगवयोमहान् ।
राजीवस्तुमृगोज्ञेयोराजिभिःपरितोवृतः ११
योमृगःशृंगहीनःस्यात्समुंडीतिनिगद्यते ।
जंघालाःप्रायशःसर्वेपित्तश्लेष्महराःस्मृताः ॥
किंचिद्वातकराश्चापिलघवोबलवर्द्धनाः ॥ १२

अर्थ–हरिण, एण, कुरंग, ऋष्य, पृषत, न्यंकु, शंबर, राजीव और मुंडी इत्यादि जीवोंको **जंघाल** कहतेहैं । **हरिण**का लाल रंग होताहै, **एण** काले रंगका हरिण, **कुरंग** किंचित लाल रंगका और बड़ा, इसकी आकृति एण (कालाहिरण)के समान होती है, **ऋष्य** इसका दूसरा नाम **नीलांगक**, इसको लोकमें **रोज** कहतेहैं । **पृषत** यह हिरणकी अपेक्षा कुछ छोटा होताहै, इसका दूसरा नाम **चंद्रबिंदु । न्यंकु** (बार-हसिंगा) और **संबर** यह रोजके समान होताहै । **राजी-व**मृगके देहपर रेखा होतीहैं । एवं **मुंडीमृग** सींग-रहित होताहै ए **जंघालजीव** हैं । **गुण ।** इनका मांस-प्रायः पित्तकफनाशक किंचित् वायुवर्द्धक, हलका और बलकारक जानना ।

बिलेशय.

गोधाशशभुजंगाखुशल्लक्याद्याबिलेशयाः ।
बिलेशयावातहरामधुरारसपाकयोः ॥
बृंहणाबद्धविण्मूत्रावीर्योष्णाश्चप्रकीर्तिताः ॥

अर्थ–गोधा (गोह), शश (ससा, खरगोश), सांप, मूसा (चूहा) सेह इत्यादि **बिलेशय** अर्थात् बिलमें रहनेवाले जीवहैं। **गुण**। बिलेशय जीवोंका मांस-वातहरणकर्त्ता, रस और पाकमें मधुर, बृंहण, मलमूत्ररोधक और उष्णवीर्य है।

गुहाशय.

सिंहव्याघ्रवृकाऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा ॥१४॥
बभ्रुजंबूकमार्जाराइत्याद्याःस्युर्गुहाशयाः।
गुहाशयावातहरागुरूष्णामधुराश्चते ॥ १५ ॥
स्निग्धाबल्याहितानित्यंनेत्रगुह्यविकारिणाम्।

अर्थ–सिंह, (शेर), व्याघ्र, (बघेरा), वृक (लिरिया, भिडहा), रीछ, तरक्षु (जरख), द्वीपि (चीता), बभ्रु (मोटीपूंछ और लाल नेत्रका, जैसा नोल), जंबुक, (स्यार, सिरकटा, गीदड) और मार्जार (बिलाव) इत्यादिक जीव **गुहाशय** (गुफामें रहनेवाले) जानने। **गुण**। गुहाशय जीवोंका मांस वातहरणकर्त्ता, भारी, गरम, मधुर, स्निग्ध, बलकारी, एवं नेत्ररोगी और गुदाके रोगवालोंको अत्यन्त गुणदायक है।

पर्णमृग.

वनौकावृक्षमार्जारोवृक्षमर्कटिकादयः।
एतेपर्णमृगाःप्रोक्ताःसुश्रुताद्यैर्महर्षिभिः ॥१६॥
स्मृताःपर्णमृगावृष्याश्चक्षुष्याःशोषिणोहि-
ताः॥श्वासार्शःकासशमनाःसृष्टमूत्रपुरीषकाः

अर्थ–वानर, बनबिलाव और वृक्षमर्कटी (रूपी) इत्यादिक सुश्रुतादि महर्षियोंने **पर्णमृग** कहेहैं। **गुण**। पर्णमृगोंका मांस-वृष्य, नेत्रोंको हित, शोषरोगवालोंको हितकारी। श्वास, बवासीर और खांसी को नष्ट करे। तथा मलमूत्रको निकालताहै।

विष्किर.

वर्त्तकालाववर्त्तीरकपिंजलकतित्तिराः।
कुलिंगकुक्कुटाद्याश्चविष्किराःसमुदाहृताः ॥
विकीर्यभक्षयंत्येतेयस्मात्तस्माद्धिविष्किराः
कपिंजलइतिप्राज्ञैःकथितोगौरतित्तिरिः ॥१९॥
विष्किरामधुराःशीताःकषायाःकटुपाकिनः
बल्यावृष्यास्त्रिदोषघ्नाःपथ्यास्तेलघवःस्मृताः

अर्थ–वर्त्तक (चित्र विचित्र रंगके पांखोंकी चिडिया), लवा, बटेर, सफेद तीतर, साधारण तीतर, घरका चिडा और मुरगा इत्यादि **विष्किरजातिके** पक्षी हैं। अन्नको बिखेरकर जो खातेहैं इसीसे इनकी **विष्किर**संज्ञा है। **गुण**। विष्किर पक्षियोंका मांस-मधुर, शीतल, कषेला, कटुपाकी, बलकर्त्ता, वृष्य, त्रिदोषनाशक, पथ्य और हलका है।

प्रतुद.

हारीतोधवलःपांडुश्चित्रपक्षोबृहच्छुकः ॥२०॥
पारावतःखंजरीटःपिकाद्याःप्रतुदाःस्मृताः।
प्रतुद्यभक्षयंत्येतेतुंडेनप्रतुदास्ततः ॥ २१ ॥
प्रतुदामधुराःपित्तकफघ्नास्तुवराहिमाः।
लघवोबद्धवर्चस्काःकिंचिद्वातकराःस्मृताः ॥

अर्थ–हरियल, पिंडकिया, चित्रपक्ष (तोतेका भेद), बडा तोता (कठफोरा), कबूतर, खंजन और कोयल इत्यादि **प्रतुद** पक्षी हैं। खानेके पदार्थको चोंचसे तोडकर खानेसे इनकी **प्रतुद**संज्ञा है। **गुण**। प्रतुदपक्षी, मधुर, पित्तकफनाशक, शीतल, हलके, मलको बांधनेवाले और किंचित् वादीको करतेहैं।

प्रसह.

काकोगृध्रउलूकश्चचिल्लश्चशशघातकः।
चाषोभासश्चकुररइत्याद्याःप्रसहाःस्मृताः ॥
प्रसहाःकीर्त्तितास्ते प्रसह्याच्छिद्यभक्षणात्
प्रसहाःखलुवीर्योष्णास्तन्मांसंभक्षयंतिये ॥
तेशोषभस्मकोन्मादशुक्रक्षीणाभवंतिहि ॥२४॥

अर्थ–कौआ, गीध, उल्लू, चील, बाज, वा शिकरा, वा कुई, चाष (टेकनास), भास (सफेदचील), कुरर (कुरांकुर) इत्यादि पक्षी **प्रसह**जातिके हैं। ए दूसरेसे छीनके खातेहैं इसीसे इनको **प्रसह** कहतेहैं। **गुण**। प्रसह पक्षियोंका मांस उष्णवीर्य है, इसी कारण जो इनके मांसको भक्षण करतेहैं वह शोष, भस्मक, उन्माद और शुक्रक्षीण होतेहैं।

ग्राम्य.

छागमेषवृषाश्चाश्वाग्राम्याःप्रोक्तामहर्षिभिः
ग्राम्यावातहराःसर्वेदीपनाःकफपित्तलाः ॥
मधुरारसपाकाभ्यांबृंहणाबलवर्द्धनाः ॥ २५ ॥

अर्थ-बकरी, मेंढा, बैल, घोड़ा, इत्यादि जीव **ग्राम्य**हैं। गामोंमें रहनेसेही इनकी **ग्राम्य**संज्ञा है। **गुण**। सब ग्राम्यजीवोंका मांस-वातहरणकर्त्ता, दीपन, कफपित्तवर्द्धक, **रस** और **पाक**में मधुर, बृंहण और बलको बढानेवाला है।

कूलेचर.

सुलायगंडवाराहचमरीवारणादयः।
एतेकूलेचराःप्रोक्तायतःकूलेचरंत्यपाम् ॥२६॥
कूलेचरामरुत्पित्तहरावृष्याबलावहाः।
मधुराःशीतलाःस्निग्धामूत्रलाःश्लेष्मवर्द्धनाः

अर्थ-भैंसा, गैंडा, सूअर, सुरगौ (चमरपुच्छवाली गौ) और हाथी, इत्यादि **कूलेचर** (जलकिनारे रहनेवाले) जीव हैं। **गुण**। कूलेचर जीवोंका मांस-वातपित्त हरण करे, वृष्य, बलकारी, मधुर, शीतल, स्निग्ध, मूत्रलानेवाला और कफवर्द्धक है।

प्लव.

हंससारसकारण्डबकक्रौंचशरारिकाः।
नंदीमुखीसकादंबावलाकाद्याःप्लवाःस्मृताः॥
प्लवंतिसलिलेयस्मादेतेतस्मात्प्लवाःस्मृताः।
प्लवाःपित्तहराःस्निग्धामधुरागुरवोहिमाः॥
वातश्लेष्मप्रदाश्चापिबलशुक्रकराःसराः ॥२९॥

अर्थ-हंस, सारस, चकवा, बगला, क्रौंच (ढेंक), शरारी, (बगलेका भेद सिंधु) नंदीमुख, कलहंस, (वतक) और बलाका आदि पक्षियोंको **प्लव** कहतेहै। जलमें तैरनेसे इनकी **प्लव** संज्ञाहै। **गुण**। प्लवपक्षियोंका मांस-पित्तहरणकर्त्ता, चिकना, मधुर, भारी, शीतल, वातकफकर्त्ता, बल और शुक्र करताहै।

कोशस्थ.

शंखःशंखनखश्चापिशुक्तिशंबूककर्कटाः।
जीवाएवंविधाश्चान्येकोशस्थाःपरिकीर्त्तिताः
कोशस्थामधुराःस्निग्धावातपित्तहराहिमाः॥
बृंहणाबहुवर्चस्कावृष्याश्चबलवर्द्धनाः ॥३१॥

अर्थ-शंख, छोटाशंख, सीप, शंबूक (जलकी छोटी सीप), केंकडा, इत्यादि जीवोंको **कोशस्थ** कहतेहैं। **गुण**। कोशस्थ जीवोंका मांस मधुर, स्निग्ध, वातपित्तहरण कर्त्ता, शीतल, बृंहण, बहुत मलकर्त्ता, वृष्य और बलवर्द्धक है।

पादिन.

कुंभीरकूर्मनक्राश्चगोधामकरशंकवः।
घंटिकःशिशुमारश्चेत्याद्याःपादिनःस्मृताः॥
पादिनोऽपिचपूतेतुकोशस्थानांगुणैःसमाः॥

अर्थ-कुंभीर (नाक), कछुवा, नाक, गोह मगर, शंकु (साकुच), घडियाल और सूंस इत्यादि **पादिन**जीव कहातेहैं। **गुण**। पादिन जीवोंका मांस-कोशस्थ जीवोंके समान है।

मछली.

मत्स्योमीनोविसारश्चझषोवैसारिणोऽण्डजः
शकुलीपृथुरोमाचसुदर्शनइत्यपि ॥ ३३ ॥
रोहिताद्यास्तुयेजीवास्तेमत्स्याःपरिकीर्त्तिताः
मत्स्याःस्निग्धोष्णमधुरागुरवःकफपित्तलाः॥
वातघ्नाबृंहणावृष्यारोचकाबलवर्द्धनाः।
मद्यव्यवायसक्तानांदीप्ताग्नीनांचपूजिताः ३५

अर्थ—मत्स्य, मीन, विकार, झष, वैसारिण, अंडज, शकुली, पृथुरोमा, सुदर्शन और रोहित आदि जो जीव हैं वह सब मछलियों के ही भेद हैं। **गुण**। मछली-स्निग्ध, गरम, मधुर, भारी, कफपित्तकर्त्ता, वातनाशक, बृंहण, वृष्य, रोचक और बलवर्द्धक। जो मद्यपीनेवाले, मैथुनकर्त्ता (कामी) और जिनकी अग्नि दीप्त है उनको हितकर्त्ता जाननी। इस प्रकार प्रथम गणों को कहकर अब उन गणों के बहुत से जीवोंके नाम, गुण पृथक २ कहते हैं तहां प्रथम जंघाल जीवों में हरिण के गुण।

हरिणःशीतलोबद्धविण्मूत्रोदीपनोलघुः
रसेपाकेचमधुरःसुगंधिःसन्निपातहा ॥ ३६ ॥

अर्थ-**हरिण**का मांस-शीतल, मलमूत्रको रोकनेवाला, दीपन, हलका, **रस** और **पाक**में मधुर, सुगंधित और सन्निपात को नष्ट करे।

काला हरिण.

एणःकषायोमधुरःपित्तासृक्कफवातहृत्।
संग्राहीरोचनोबल्योज्वरप्रशमनःस्मृतः ३७

अर्थ-**कालेहरिण**का मांस-कषेला, मधुर, पित्त,

रुधिर, कफ और वातको नष्ट करे। संग्राही, रुचिकर्त्ता, बलकर्त्ता और ज्वरको नष्ट करे है।

कुरंग.

कुरंगोबृंहणोबल्यःशीतलःपित्तहृद्गुरुः।
मधुरोवातहृद्ग्राहीकिंचित्कफकरःस्मृतः॥

अर्थ-कुरंगहिरण का मांस-बृंहण, बलकारी, शीतल, पित्तहरणकर्त्ता, भारी, मधुर, वातनाशक, ग्राही और किंचिन्मात्र कफ करे है।

रोज.

ऋष्योनीलांडकश्चापिगवयोरोझइत्यपि।
गवयोमधुरोबल्यःस्निग्धोष्णःकफपित्तलः॥

अर्थ-ऋष्य, नीलांडक, गवय और रोझ ए रोजके **सं.** नामहैं। **रोजका** मांस-मधुर, बलकारी, स्निग्ध, गरम और कफपित्तकर्त्ता है।

चित्तल.

पृषतस्तुभवेत्स्वादुर्ग्राहकःशीतलोलघुः।
दीपनोरोचनःश्वासज्वरदोषत्रयास्रजित्॥४०॥

अर्थ-पृषत अर्थात् बिंदुवाले हिरणका मांस-स्वादु, ग्राही, शीतल, हलका, दीपन, रोचन, श्वास, ज्वर, त्रिदोष और रुधिरविकारोंको दूर करे।

बारहसींगा.

न्यंकुःस्वादुर्लघुर्बल्योवृष्योदोषत्रयापहः॥

अर्थ-बारहसींगाका मांस-स्वादिष्ट, हलका, बलकारी, वृष्य और त्रिदोषनाशक।

सावर.

सावरंपललंस्निग्धंशीतलंगुरुचस्मृतम्॥४१॥
रसेपाकेचमधुरंकफदंरक्तपित्तहृत्।
राजीवस्तुगुरुर्ज्ञेयःपृषतेनसमोजनैः॥

अर्थ-सावरका मांस-स्निग्ध, शीतल, भारी, **रस** और **पाक**में मधुर, कफकारी, रक्तपित्तनाशक। **राजीव**हिरणके मांसमें-चित्तल हिरणके मांस समान-गुण जानने।

पाढी.

मुंडीतुज्वरकासास्रक्षयश्वासापहोहिमः॥४२॥

अर्थ-सींगरहित हिरणका मांस-ज्वर, खांसी रुधिरविकार, क्षय और श्वासको नष्ट करे और शीतल है। अब **बिलेशयों**को कहतेहैं।

शशा.

लंबकर्णःशशःशूलीलोमकर्णोबिलेशयः।
शशःशीतोलघुर्ग्राहीरूक्षःस्वादुःसदाहितः॥
वह्निकृत्कफपित्तघ्नोवातसाधारणःस्मृतः।
ज्वरातीसारशोषास्रश्वासामयहरश्चसः॥४४॥

अर्थ-लंबकर्ण, शश, शूली, लोमकर्ण और बिलेशय, ए **संस्कृत**नाम हैं। **ससे** (खरगोश) का मांस शीतल, हलका, ग्राही, रूखा, स्वादु, सदैव हितकर्त्ता, अग्निकारक, कफपित्तनाशक, और साधारण वात कर्त्ता। ज्वर, अतिसार, शोष, रुधिरविकार, और श्वास हरण कर्त्ता है।

सेह.

सेधातुशल्यकःश्वावित्कथ्यंतेतद्गुणाअथ।
शल्यकःश्वासकासास्रशोषदोषत्रयापहः॥४५॥

अर्थ-सेधा, शल्यक और श्वावित् ए **सेह** के **सं.** नाम हैं। **गुण**। सेहका मांस-श्वास, खांसी, रुधिर-विकार, शोष और त्रिदोष हरण कर्त्ता है।

पक्षी.

पक्षीखगोविहंगश्चविहगश्चविहंगमः।
शकुनिर्विःपतत्रीचविष्करोविकरोऽण्डजः
धान्यांकुरचरायेऽत्रतेषांमांसलघूत्तमम्॥
आनूपंबलकृन्मांसंस्निग्धंगुरुतरंस्मृतम्॥४७॥

अर्थ-सं. पक्षी, खग, विहंग, विहग, विहंगम, शकुनि, वि, पतत्री, विष्कर, विष्किर और अंडज। **पक्षियोंमें** जो धान और अंकुर को भक्षण करते हैं उनका मांस हलका है। **जलसंचारी** पक्षियों का मांस बलकारी, स्निग्ध और अत्यन्त भारी है।

विष्करोंमें बटेर.

वर्त्तीकोवर्त्तकश्चित्रस्ततोऽन्यावर्तकाःस्मृताः
वर्त्तकोऽग्निकरःशीतोज्वरदोषत्रयापहः॥
सुरुच्यःशुक्रदोबल्योवर्तकाल्पगुणास्ततः॥

अर्थ-सं. वर्त्तीक, वर्त्तक, चित्र और दूसरी जातिको

वर्तका कहते हैं । **बटेर** का मांस-अग्निकारी, शीतल, ज्वर, त्रिदोषनाशक, रुचिकारी, शुक्रकर्त्ता, बलदाता, और वर्तकके मांसमें बटेरके मांससे कुछ हीन गुण हैं ।

लवा.

लावाविष्किरवर्गेषुतेचतुर्धामताबुधैः ।
पांशुलोगौरकोऽन्यस्तुपौंड्रकोदर्भरस्तथा ॥
लावावह्निकराःस्निग्धागरघ्नाग्राहकाहिताः ।
पांशुलःश्लेष्मलस्तेषुवीर्यदोऽनिलनाशनः॥५०॥
गौरोलघुतरोरूक्षोवह्निकारीत्रिदोषजित् ॥
पौंड्रकःपित्तकृत्किंचिल्लघुर्वातकफापहः ।
दर्भरोरक्तपित्तघ्नोहृद्रामयहरोहिमः ॥ ५१ ॥

अर्थ—विष्कर वर्गमें लवा भी हैं वो चार प्रकारके हैं । पांशुल, गोरक, पौंड्रक, और दर्भर । **गुण** । **लवा**, अग्निकर्त्ता, स्निग्ध, विषनाशक, ग्राही, हितकारी । इनमें **पांशुल**जातिके लवा कफकर्त्ता, वीर्यकर्त्ता, वातनाशक हैं । **गौरजाति**के हलके, रूक्ष, अग्निकारी, त्रिदोषनाशक हैं । **पौंड्रक** पित्तकर्त्ता, कुछ हलके वात और कफहरण कर्त्ता हैं । **दर्भर**-रक्तपित्त नाशक, हृदयरोग हरणकर्त्ता और शीतल हैं ।

वगेरा.

वालीकोवर्त्तिचटकोवार्तीकश्चैवसस्मृतः ।
वालीकोमधुरःशीतोरूक्षश्चकफपित्तनुत् ॥

अर्थ-वालीक, वर्त्तिचटक और वार्त्तिक ए **संस्कृत** नाम हैं । वगेरेका मांस-मधुर, शीतल, रूक्ष, और कफपित्तनाशक ।

काला तीतर और सफेद तीतर.

तित्तिरःकृष्णवर्णःस्याच्चित्रोऽन्योगौरतित्तिरिः ।
तित्तिरिर्बलदोग्राहीहिक्कादोषत्रयापहः ॥
श्वासकासज्वरहरस्तस्माद्गौरोऽधिकोगुणैः ।

अर्थ-तीतर कलिंगका होताहै, और **गौरतीतर** चित्र विचित्र रंगका होता है । तीतर का मांस बलदाता, ग्राही, हिचकी और त्रिदोष का नाशक है । श्वास, खांसी और ज्वरके हरण करने में सफेद तीतरका मांस गुणोंमें अधिक है ।

गवरेया. चिडा

चटकःकलविंकःस्यात्कुलिंगःकालकंटकः ।
कुलिंगःशीतलःस्निग्धःस्वादुःशुक्रकफप्रदः
सन्निपातहरोवेश्मचटकश्चातिशुक्रलः ॥५४॥

अर्थ-चटक, कलविंक, कुलिंग और कालकंटक ए **संस्कृत** नाम । चिडाका मांस-शीतल, स्निग्ध, स्वादु, शुक्र और कफकर्त्ता, सन्निपातनाशक, इसी प्रकार घरका चिडा अत्यन्त शुक्रकर्त्ता है ।

मुरगा. वनमुरगा.

कुक्कुटःकृकवाकुःस्यात्कालज्ञश्चरणायुधः ।
ताम्रचूडस्तथादक्षोप्रातर्नादीशिखंडिकः ॥५५॥
कुक्कुटोबृंहणःस्निग्धोवीर्योष्णोऽनिलहृत्-
गुरुः ॥
चक्षुष्यःशुक्रकफकृत्बल्योवृष्यःकषायकः
आरण्यकुक्कुटःस्निग्धोबृंहणःश्लेष्मलोगुरुः ॥
वातपित्तक्षयवमिविषमज्वरनाशनः ॥ ५७ ॥

अर्थ-कुक्कुट, कृकवाकु, कालज्ञ, चरणायुध, ताम्रचूड, दक्ष, प्रातर्नादी और शिखंडक, ए **संस्कृत** नाम हैं । **गुण** । **मुरगे**का मांस-बृंहण, स्निग्ध, उष्णवीर्य, वातनाशक, भारी, नेत्रोंको हितकारी, शुक्र और कफकर्त्ता, बलदायक, वृष्य और कषेला है । **वनके मुरगे**का मांस-स्निग्ध, बृंहण, कफकारी, भारी, वात, पित्त, क्षय, वमन और विषमज्वर इनको नष्ट करे।

प्रतुदोंमें हरियल.

हारीतोरक्तपित्तःस्याद्धरितोऽपिसकथ्यते ।
हारीतोरूक्षउष्णश्चरक्तपित्तकफापहः ॥
स्वेदस्वरकरःप्रोक्तईषद्वातकरश्चसः ॥ ५८ ॥

अर्थ-हारीत, रक्तपित्त और हरित ए हरियल **सं.** नाम हैं । हरियलका मांस-रूक्ष, गरम, रक्तपित्त और कफका नाशक, स्वेदकर्त्ता, स्वरको सम्हारनेवाला और किंचिन्मात्र वादी करे ।

पांड. धवलपांड.

पांडुस्तुद्विविधोज्ञेयश्चित्रपक्षःकलध्वनिः ।
द्वितीयोधवलःप्रोक्तःसकपोतःस्फुटस्वनः ॥

चित्रपत्तःकफहरोवातघ्नोग्रहणीप्रणुत् ।
धवलःपांडुरस्निग्धोरक्तपित्तहरोहिमः ॥ ६० ॥

अर्थ-पांडु अर्थात् पिंडकिया दो प्रकारकी होतीहै। एक चित्रविचित्र पांख और मीठी आवाज से बोलने वाली, दूसरी सफेद रंगकी उसको कपोत कहते हैं। और उसकी आवाज खुलासा होती है। तहां चित्र पत्तको **पित्तरोषा** कहते हैं, इसका मांस-कफहर, वातनाशक, संग्रहणीनाशक। **धवल** (कपोत) का मांस-शीतल और रक्तपित्तको हरण करे है।

मोर.

मयूरश्चन्द्रकीकेकीमेघरावीभुजंगभुक् ।
शिखीशिखावलोबर्हीशिखंडीनीलकंठकः ॥
शुक्लोपांगःकलापीचमेघनादानुलास्यपि ।
रसेपाकेचमधुरःसंग्राहीवातशांतिकृत् ॥६२॥

अर्थ-मयूर, चंद्रकी, केकी,मेघरावी, भुजंगभुक्, शिखी,शिखावल, बर्ही, शिखंडी, नीलकंठक, शुक्लोपांग, कलापी, मेघनादानुलासी, ए **संस्कृत** नाम। **हिं**• मोर, मुरेला। **गुण**। मोर का मांस-रस, और **पाक** में मधुर, ग्राही, और वातनाशक।

कबूतर, परेवा.

पारावतःकलरवःकपोतोरक्तवर्धनः ।
परावतोगुरुःस्निग्धोरक्तपित्तानिलापहः॥
संग्राहीशीतलस्तज्ज्ञैःकथितोवीर्यवर्धनः ॥६३॥

अर्थ-पारावत, कलरव, कपोत और रक्तवर्द्धन, ए **सं**.। **हिं**• खबूतर, परेवा। **गुण**। कबूतरका मांस भारी, स्निग्ध, रक्तपित्त और वातको नष्ट करे। ग्राही, शीतल और वीर्यका बढ़ानेवाला है।

पक्षियों के अंडे.

नातिस्निग्धानिवृष्याणिस्वादुपाकरसानिच ।
वातघ्नान्यतिशुक्राणिगुरूण्यंडानिपक्षिणाम् ॥

अर्थ-पक्षियोंके अंडों को **सं**. डिम्ब कहते हैं। ये अधिक स्निग्ध नहीं है। **पाक** में मिष्टरस, वृष्य, वातनाशक, अत्यन्त शुक्रकर्ता और भारी हैं।

ग्राम्योंमें-बकरी.

छागलोबर्करश्छागोबस्तोऽजश्छेलकःस्तुभः ।
अजाछागीस्तुभाचापिछेलिकाचगलस्तनी ॥
छागमांसंलघुस्निग्धंस्वादुपाकंत्रिदोषनुत् ।
नातिशीतमदाहिस्यात्स्वादुपीनसनाशनम् ॥
परंबलकरंरुच्यंबृंहणंवीर्यवर्धनम् ।
अजायाअप्रसूतायामांसंपीनसनाशनम् ॥६७॥
शुष्ककासेऽरुचौशोषेहितमग्नेश्चदीपनम् ।
अजासुतस्यबालस्यमांसंलघुतरंस्मृतम् ॥६८॥
हृद्यंज्वरहरंश्रेष्ठंसुखदंबलदंभृशम् ।
मांसंनिष्कासितांडस्यछागस्यकफकृद्गुरु ॥६९॥
स्रोतःशुद्धिकरंबल्यंमांसदंवातपित्तनुत् ॥
वृद्धस्यवातलंरूक्षंतथाव्याधिमृतस्यच ।
ऊर्ध्वजत्रुविकारघ्नंछागमुण्डंरुचिप्रदम् ॥७०॥

अर्थ-सं. छागल, बर्कर, छाग, वस्त, अज, छेलक, स्तुभ, अजा, छागी, स्तुभा, छेलिका, और गलस्तनी। **गुण**। बकरेका मांस- हलका, स्निग्ध, स्वादुपाकी, त्रिदोषनाशक, अत्यन्त शीतल नहीं है, अदाही अर्थात् दाह नहीं करे, स्वादु, पीनसनाशक, अत्यत बलकारक, रोचक, बृंहण, और वीर्योत्पादक। जिसके **बच्चा न हुआ** हो ऐसी बकरीका मांस अग्निदीप्तिकारक, यह पीनस, शुष्कखाँसी, अरुचि, शोषरोगको हितकारी है। **बकरीके बच्चेका मांस**-अत्यंत हलका, हृद्य, उत्तम, ज्वरघ्न, स्वास्थ्यप्रद और अतिशय बलकर्ता। जिसके **अंड निकाल डाले** हों ऐसे बकरेका मांस-कफकारी, भारी, स्रोतों (छिद्रों) को शुद्ध कर्ता, बलकारी, मांसवर्द्धक और पित्तघ्न है। **बुड्ढे** अथवा **रोगी** वा **मृत** बकरेका मांस-वातल, रूखा। बकरेके **मूँड**का मांस-हसलीके ऊपर के रोगोंकानाशक, और रुचिकारी है (इनकी **वस्ति** और **अंडकोश** शुक्रवर्द्धक, एवं **कलेजा** और **वृक्क** भी शुक्रवर्द्धक हैं)

मेंढा.

मेढ्रोमेढोहुडोमेषउरणोऽप्येडकोऽपिच ।
अविर्वृष्णिस्तथोर्णायुःकथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥७१॥
मेषस्यमांसंपुष्टंस्यात्पित्तश्लेष्मकरंगुरु ।
तस्यैवांडविहीनस्यमांसंकिंचिल्लघुस्मृतम् ॥

अर्थ-मेढ्र, मेढ, हुड, मेष, उरण, एडक, अवि,

वृष्टि और ऊर्णायु, ए मेंढे के वा भेडके **संस्कृत** नाम । **गुण** । मेंढा वा भेडका मांस-पुष्ट, पित्तकफ-कर्त्ता, भारी, यदि अंडरहित मेढा होवे तो उसका मांस किंचित् हलका है ।

दुंबा.

एकडःपृथुश्रृंगःस्यान्मेदःपुच्छस्तुदुंबकः ।
एडकस्यपलंज्ञेयंमेषामिषसमंगुणैः ॥ ७३ ॥
मेदःपुच्छोद्भवंमांसंहृद्यंवृष्यंश्रमापहम् ।
पित्तश्लेष्मकरंकिंचिद्वातव्याधिविनाशनम् ॥

अर्थ-सं. एडक, पृथुश्रृंग, मेदःपुच्छ और दुंबक । **हिं.** एडक, इरिका और दुंबा कहते हैं । **गुण** । भेडका मांस-मेंढाके मांस सदृश है । और दुंबाका मांस हृद्य, वृष्य, श्रमनाशक, पित्तकफको कुछ २ करे और वातव्याधिको नष्ट करे है ।

बैल-गौ.

बलीवर्दस्तुवृषभऋषभश्चतथावृषः ।
अनड्वान्सौरभेयोऽपिगौरुक्षाभद्रइत्यपि ॥७५॥
सुरभिःसौरभेयीचमाहेयीगौरुदाहृता ।
गोमांसंतुगुरुस्निग्धंपित्तश्लेष्मविवर्धनम् ।
बृंहणंवातहृद्बल्यमपथ्यंपीनसप्रणुत् ॥ ७६ ॥

अर्थ-बलीवर्द, वृषभ, ऋषभ, वृष, अनड्वान्, सौरभेय, गौ, उक्षा, और भद्र ए **बैलके** वा **वर्दके सं.** नाम हैं । इसीप्रकार सुरभि, सौरभेयी, माहेयी और गौ ए गौके नाम । **बं.** गाभिर । **गुण** । गौका मांस-भारी, स्निग्ध, पित्तकफवर्द्धक, बृंहण, वातहरणकर्त्ता, बलप्रद, अपथ्य (दुष्ट) और पीनसनाशक है ।

घोड़ा.

घोटकेऽप्यश्वतुरगतुरंगाश्चतुरंगमाः ।
वाजिवाहार्वगंधर्वहयसैंधवसप्तयः ॥ ७७ ॥
अश्वमांसंतुतुवरंवह्निकृत्कफपित्तलम् ।
वातहृद्बृंहणंबल्यंचक्षुष्यंमधुरंलघु ॥ ७८ ॥

अर्थ-घोटक, अश्व, तुरग, तुरंग, तुरंगम, वाजि, वाह, अर्वा, गंधर्व, हय, सैंधव और सप्ति, ए **घोड़ेके सं.** नाम । **गुण** । घोडेका मांस-कषेला, अग्निकर, कफ और पित्तकारी, वातहरणकर्त्ता, बृंहण, बलकारी, नेत्रोंको हित, मधुर और हलका है ।

कूलेचरोंमें भैंसा.

महिषोघोटकारिःस्यात्कासरश्चरजस्वलः ।
पीनस्कंधःकृष्णकायोलुलायोयमवाहनः ॥७९॥
महिषस्यामिषंस्वादुस्निग्धोष्णंवातनाशनम् ।
निद्राशुक्रप्रदंबल्यंतनुदार्ढ्यकरंगुरु ॥
वृष्यंचसृष्टविण्मूत्रंवातपित्तास्रनाशनम् ॥८०

अर्थ-महिष, घोटकारि, कासर, रजस्वल, पीन-स्कंध, कृष्णकाय, लुलाय और यमवाहन ए **भैंसके सं.** नाम । **गुण** । भैंसेका मांस-स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम, वातनाशक, निद्रा, शुक्र और बलको देनेवाला, देहको दृढ करे, भारी, वृष्य, मलमूत्रका निकालनेवाला, वात, पित्त और रुधिरके रोगोंको दूर करे है ।

मेंडक.

मंडूकःप्लवगोभेकोवर्षाभूर्दर्दुरोहरिः ।
मंडूकःश्लेष्मलोनातिपित्तलोबलकारकः ॥८१॥

अर्थ-मंडूक, प्लवग, भेक वर्षाभू, दुर्दर और हरि ए **मेंडकाके सं.** नाम हैं । **गुण** । मेंडकेका मांस, कफकारी, बलकर्त्ता और अत्यंत पित्तकर्त्ता नहींहै ।

कछुआ.

कच्छपोगूढपात्कूर्मःकमठोदृढपृष्ठकः ।
कच्छपोबलदोवातपित्तनुत्पुंस्त्वकारकः ॥८२॥

अर्थ-कच्छप, गूढपाद, कूर्म, कमठ और दृढपृष्ठक, ए **कछुवा** वा कछुआके **सं.** नाम हैं । **गुण** । कछुएका मांस-बलदायक, वातपित्तनाशक और नपुंसकताका नाशक है । अब कुछ **विशेष** कहतेहैं । तहां प्रथम---

सद्योहतमांसके गुण.

सद्योहतस्यमांसंस्याद्व्याधिघातियथामृतम् ।
वयस्थंबृंहणंसात्म्यमन्यथातद्विवर्जयेत् ॥८३॥

अर्थ-तत्काल मारे हुए जीवोंका मांस-अमृतके तुल्य, व्याधिनाशक, अवस्थास्थापक, बृंहण और पथ्य है । अन्य प्रकारका मांस **त्याज्य** है ।

स्वयंमृतका मांस.

स्वयंमृतस्यचाबल्यमतिसारकरंगुरु ॥

अर्थ-अपने आप मरे हुए जीव का मांस, निर्बलता और अतिसार को करे तथा भारी है।

वृद्ध, बालका मांस.

वृद्धानांदोषलंमांसंबालानांबलदंलघु ॥ ८४ ॥

अर्थ-वृद्ध (बुड्ढे) जीवोंका मांस खाना वर्जित है, कारण यह है, कि यह रोगोत्पादक है । **बालक** जीवका मांस बलकर्ता और हलका है ।

विषादिमृतमांस.

सर्पदष्टस्यमांसंचशुष्कमांसंत्रिदोषकृत् ।
व्यालदष्टंचदुष्टंचशुष्कंशूलकरंपरम् ॥ ८५ ॥
विषांबुरुङ्मृतस्यैतन्मृत्युदोषरुजाकरम् ॥

अर्थ-सांप आदि के काटनेसे जो जीव मराहै उसका मांस-और **सूखा** मांस-त्रिदोषकर्त्ता है । **हिंसक** जीवके **काटनेसे** जो मरा है और **दूषित** मांस-एवं **सूखा** मांस शूलको कर्त्ता है । विष और रोगद्वारा, अथवा जलमें मरे हुए जीवका मांस खाय तो त्रिदोष को कुपित करे, अनेक प्रकार के रोग तथा मृत्युपर्यंत करेहै ।

क्लिन्नमुत्क्लेशजनकंकृशंवातप्रकोपनम् ॥ ८६ ॥
तोयपूर्णशिराजालंमृतमप्सुत्रिदोषकृत् ।
विहंगेषुपुमान्श्रेष्ठःस्त्रीचतुष्पदजातिषु ॥ ८७ ॥
परार्धोलघुपुंसांस्यात्स्त्रीणांपूर्वार्धमादिशेत्
देहमध्यंगुरुप्रायंसर्वेषांप्राणिनांस्मृतम् ॥ ८८ ॥
पक्षलेपाद्विहंगानांतदेवलघुकथ्यते ।
गुरूण्यण्डानिसर्वेषांगुर्वीग्रीवाचपक्षिणाम् ॥
उरःस्कंधोदरंकुक्षीपादौपाणीकटीतथा ।
पृष्ठत्वग्यकृदंत्राणिगुरूणीहयथोत्तरम् ॥ ९० ॥
लघुवातकरंमांसंखगानांधान्यचारिणाम् ।
मत्स्याशिनांपित्तकरंवातघ्नंगुरुकीर्तितम् ॥ ९१ ॥
फलाशिनांश्लेष्मकरंलघुरूक्षमुदीरितम् ।
बृंहणंगुरुवातघ्नंतेषामेवपलाशिनाम् ॥ ९२ ॥
तुल्यजातिष्वल्पदेहामहादेहेषुपूजिताः ।
अल्पदेहेषुशस्यन्तेतथैवस्थूलदेहिनः ॥ ९३ ॥

अर्थ-गीलामांस भोजन, वमन होनेकीसी शंका करे । **कृशजीवका मांस** वातकोप करे । जिस जीवकी **नाडी जल से** भरी हों और जो **जलमें मरा है** उसका मांस त्रिदोष कारी है । **पक्षियों में पुरुष** उत्तम है । और **पशुओं में स्त्री** जाति का मांस उत्तम है । पुरुषों के **ऊपर** के भागका मांस हलका है और स्त्रियोंका **नीचे** के देहका मांस उत्तम है । एवं संपूर्ण प्राणीमात्रों के **मध्यदेहका** मांस भारी कहाहै और पक्षियोंके **पांख** गिरगए हों तो उनका मांस हलका है । सब प्रकार के **अंडे** भारी हैं और सब पक्षियों की **गरदन** भारी है । छाती, कंधा, उदर, कूख, पैर, हाथ कमर, पीठ, त्वचा, और आंत ए क्रमसे एकसे दूसरा भारी है जैसे छाती से कंधा, कंधे से अधिक उदर भारी है, इसी प्रकार और भी जानो । **धान** (गैंहूं, ज्वार, बाजरा) आदि **चुगनेवाले** पखेरुओं का मांस हलका और वादी कर्ता जानना । जो **पक्षी मछली** खाते हैं उनका मांस पित्तकारक, वातनाशक, भारी जानना । जो **फल खानेवाले जीव** हैं उनका मांस कफकर्त्ता, हलका और रूखा कहाहै । और मांसाशी पक्षियोंका, मांस, बृंहण, भारी और वातघ्न है । यावन्मात्र **बडीदेह**वाले प्राणियों की जाति में हलके देहवाले प्राणियों का मांस हितकारी है । और **हलकी** देह वाले जीवों में जो स्थूलदेहके जीव हैं उनका मांस परमोत्तम है ।

मछलियोंमें-रोहू.

रक्तोदरोरक्तमुखोरक्ताक्षोरक्तपक्षतिः ।
कृष्णपुच्छोझषश्रेष्ठोरोहितःकथितोबुधैः ॥ ९४ ॥
रोहितःसर्वमत्स्यानांवरोवृष्योऽर्दितार्त्ति-
जित् ॥
कषायानुरसःस्वादुर्वातघ्नोनातिपित्तकृत् ॥
ऊर्ध्वजत्रुगतान्रोगान्हन्याद्रोहितमुंडकम् ९५ ॥

अर्थ-रोहित अर्थात् **रोहू** मछली के पेट, मुख, नेत्र और पांख ए लालरंग के होतेहैं तथा पूछ कालेरंगकी । सब मछलियों में **रोहू** मछली उत्तमहै यह अधिक पित्त कर्त्ता नहीं है, रोहित मछली किंचिन्मात्र कषेली, स्वादु, वृष्य, वातनाशक और अर्दितवात (लकवा) को शांति करे । रोहूका **मस्तक** भक्षण करने से देहमें हसलीके ऊपर के रोगों को दूर करेहै ।

शिलींध्र.

शिलींध्रःश्लेष्मलोबल्योविपाकेमधुरोगुरुः ।
वातपित्तहरोहृद्यआमवातकरश्चसः ॥ ९६ ॥

अर्थ-शिलींध्र (बं. शालमत्स्य.) यह कफ वर्द्धक, बलकारक, वातापित्तनाशक, हृद्य और आमवातरोगोत्पादक है । यह भक्षण करनेपर पचने के समय मधुर और भारी है ।

भाकुर.

भक्कुरोमधुरःशीतोवृष्यःश्लेष्मकरोगुरुः ।
विष्टम्भजनकश्चापिरक्तपित्तहरःस्मृतः ॥

अर्थ-भाकुर (बं. वेलियामत्स्य.) यह मधुर, शीतल, वृष्य, कफकारी, भारी, विष्टंभी और रक्तपित्तनाशक है ।

मोई.

मोचिकावातहृद्बल्याबृंहणीमधुरागुरुः ।
पित्तहृत्कफकृद्रुच्यावृष्यादीप्ताग्नयेहिता ॥

अर्थ-मोई (बं. कातला.) यह वातनाशक, बलकारी, बृंहण, गुरु, पित्तनाशक, कफवर्द्धक, रोचक, वृष्य और दीप्ताग्निवालोंको हितकारी है ।

पठिना-बुआरी.

पाठीनःश्लेष्मलोबल्योनिद्रालुःपिशिताशनः ।
दूषयेद्रुधिरंपित्तंकुष्ठरोगंकरोतिच ॥९९॥

अर्थ—पठिना (बं बुयाल.) इसको संस्कृतमें पाठीन, श्लेष्मल, बल्य, निद्रालु और पिशिताशन कहतेहैं । यह सेवन करनेसे रुधिरको बिगाडे, पित्त विकार और कोढके रोगको करे है ।

सिंगी.

शृंगीतुवातशमनीस्निग्धाश्लेष्मप्रकोपनी ।
रसेतिक्ताकषायाचलघ्वीरुच्यास्मृताबुधैः ॥

अर्थ-सिंगी मछली वातको शांति करे । स्निग्ध, कफ कुपित कर्ता, कडवी, कषेली, हलकी और रुचिकर्त्ता है ।

हिलसा.

इल्लिसोमधुरःस्निग्धोरोचनोवह्निवर्धनः ।
पित्तहृत्कफकृत्किंचिल्लघुर्वृष्योऽनिलापहः॥१॥

अर्थ-इल्लिसमत्स्य-मधुर, स्निग्ध, रोचक, बलवर्द्धक, पित्तहर्त्ता, कफकर्त्ता, वृष्य, हलके और वातनाशक जानने ।

सौरी.

शष्कुलीग्राहिणीहृद्यामधुरातुवरास्मृता ।

अर्थ-सौरी (बं. शंकरमत्स्य.) यह ग्राही, हृद्य मधुर और स्वादमें कषेली ।

वेलगगरा.

गर्गरःपित्तलःकिंचिद्वातजित्कफकोपनः ॥२॥

अर्थ-वेलगगरा (बं. खयरा.) यह किंचित्पित्तकारी, वातनाशक और कफवर्द्धक है ।

कवई.

कविकामधुरास्निग्धाकफघ्नारुचिकारिणी ।
किंचित्पित्तकरीवातनाशिनीवह्निवर्धिनी ॥३॥

अर्थ-कवई (बं कई.) यह मधुर, स्निग्ध, कफघ्न, रुचिकारक, किंचित्पित्तजनक, वातनाशक और अग्निवर्द्धक है ।

वर्मी मछली.

वर्मिमत्स्योहरेद्वातंपित्तंरुचिकरोलघुः ।

अर्थ—वर्मी मछली वादी हरे और पित्त तथा रुचि को प्रकट करे तथा हलकी है ।

दंडारी.

दंडमत्स्यो रसेतिक्तःपित्तरक्तंकफंहरेत् ।
वातसाधारणःप्रोक्तःशुक्रलोबलवर्धनः ॥ ४ ॥

अर्थ-दंडमत्स्य (बं वानमत्स्य.) का स्वाद कडवा, रक्तपित्तशांतिकर, कफघ्न, वातका अविरोधी, शुक्रकर्ता और बलवर्द्धकहै ।

अरंगी.

एरंगोमधुरःस्निग्धोविष्टंभीशीतलोलघुः ।

अर्थ-अरंगी (बं. चेरंगमत्स्य.) मधुर, स्निग्ध, विष्टंभी, शीतल और हलकाहै ।

पपता.

महाशफरसंज्ञस्तुतिक्तःपित्तकफापहः ।
शिशिरोमधुरोरुच्योवातसाधारणःस्मृतः ॥

अर्थ-पपता-महाशफरी (बं. सरलपुंटी.)

यह कडवी, पित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, मधुर, रुचिकारी और वातके अविरोधी है।

गरई.

गरघ्नीमधुरातिक्तातुवरावातपित्तहृत्। कफघ्नीरुचिकृल्लघ्वीदीपनीबलवीर्यकृत् ॥६॥

अर्थ-गरई मछली-मधुर, कडवी, कषैली, वातपित्तनाशक, कफघ्न, रुचिकारक, हलकी और अग्निदीप्तिकर तथा बलवीर्योत्पादक है।

मंगुरी.

मंगुरोवातहृद्बल्योवृष्यःकफकरोलघुः।

अर्थ-मङ्गुर (मंगुरी) मछली वातनाशक, बलकारक, वृष्य, कफजनक और हलकी है।

टेंगरा.

सपादमत्स्योमेधाकृन्मेदःक्षयकरश्चसः। वातपित्तकरश्चापिरुचिकृत्परमोमतः ॥ ७ ॥

अर्थ-टेंगरामछली-मेधाकारक, मेदःक्षयकर, वातपित्तजनक और विलक्षण अर्थात् अद्भुत रुचिकारक है। इस मछलीकें पैर होते हैं।

सफरी पोठी.

प्रोष्ठीतिक्ताकटुःस्वादु शुक्रघ्नीकफवातजित्। स्निग्धास्यात्कंठरोगघ्नीरोचनीचलघुःस्मृता

अर्थ-पोठी (बं. पुंटिमत्स्य) इसको **संस्कृत**में शफरी और प्रोष्ठी कहतेहैं। **गुण**। कड़वी, चरपरी, स्वादु, शुक्रनाशक, वातकफनिवारक, स्निग्ध, रोचक, लघु, एवं मुखरोग और कंठरोगनाशक है।

छोटीमछली.

क्षुद्रामत्स्याःस्वादुरसादोषत्रयविनाशनाः। लघुपाकारुचिकराबलदास्तेहितामताः ॥ ९ ॥

अर्थ-छोटीमछली स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, लघुपाकी, रुचिकारक, बलकारी और पथ्य हैं।

अतिक्षुद्रमत्स्य.

अतिसूक्ष्माःपुंस्त्वहरारुच्याःकासानिलापहाः

अर्थ-बहुतछोटी मछली, पुरुषत्वनाशक, रुचिकारी, खांसीको शांतिकर्त्ता और वातनाशक हैं।

मछली केअंडे.

मत्स्यगर्भोभृशंवृष्यःस्निग्धःपुष्टिकरोलघुः। कफमेहप्रदोबल्योग्लानिकृन्मेहनाशनः ॥१०॥

अर्थ-मछलीके अंडे(बं. मत्स्यडिम्ब) अतिवृष्य, स्निग्धताकारक, लघु, कफकर्त्ता, मेदोवर्द्धक, बलकर्त्ता, ग्लानिकर और प्रमेहनाशक हैं।

सूखी मछली.

शुष्कमत्स्यानवाबल्यादुर्जराविड्विबंधिनः।

अर्थ-सूखी मछली हितकारी नहीं है, दुर्जर और मलरोधक है।

भुनी मछली.

दग्धमत्स्योगुणैःश्रेष्ठःपुष्टिकृद्बलवर्धनः ॥

अर्थ-भुनीमछली गुणोंमें श्रेष्ठ, बलदाता और पुष्टिकारक **है।**

कूआ और सरोवरकी मछली.

कौपमत्स्याःशुक्रमूत्रकुष्ठश्लेष्मविवर्धनाः। सरोजामधुराःस्निग्धाबल्यावातविनाशनाः॥

अर्थ-कूएकी मछली खानेसे शुक्र, मूत्र, कुष्ठ, और कफकी वृद्धि होय। **सरोवर** अर्थात् पुष्करिणीकी मछली, मधुर, स्निग्ध बलकारक और वातनाशक है।

नदीकी मछली.

नादेयाबृंहणामत्स्यागुरवोऽनिलनाशनाः। रक्तपित्तकरावृष्याःस्निग्धोष्णाःस्वल्पवर्चसः ॥ १३ ॥

अर्थ-नदीकीमछली, बृंहण, भारी, वायुनाशक, रक्तपित्तकर्त्ता, वृष्य, स्निग्ध, गरम और अल्पमल करनेवाली हैं।

चौञ्य और तलावकी मछली.

चौञ्याःपित्तकराःस्निग्धामधुरालघवोहिमाः ताडागागुरवोवृष्याःशीतलाबलमूत्रदाः। ताडागावानिर्झरजाबलायुर्मतिदकराः ॥१४॥

अर्थ-चौञ्य (चोआ) की मछली-पित्तकारक, स्निग्ध, मधुर, हलकी और शीतल। **तालावकी**

मछली भारी, वृष्य, शीतल, बलकर्त्ता और मूत्रकारक है । झरनेकी मछली संपूर्ण तालावकी मछलीके समान गुणकर्त्ता है । विशेषता इतनी है कि बल, आयु, बुद्धि और दृष्टिशक्तिको बढ़ाती है ।

ऋतुविशेषमें मत्स्यविशेष.

हेमंतेकूपजामत्स्याःशिशिरेसारसाहिताः ।
वसंतेतेतुनादेयाग्रीष्मेचौड्यसमुद्भवाः ॥१५॥
तडागजातावर्षासुतास्वपथ्यानदीभवाः ।
नैर्झराःशरदिश्रेष्ठाविशेषोऽयमुदाहृतः ॥ १६ ॥

अर्थ–हेमंतऋतुमें **कूप**की मछली, शिशिरऋतुमें **सरोवर**की, **वसंत**कालमें **नदी**की, **गरमियों** में **चोप**की, **वर्षा**कालमें **तालाव**की और शरदृतुमें **झरने**की मछली हितकारी होती है । वर्षामें **नदी**की मछलियोंका खाना **निषेध** है ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौमांसवर्गः ॥

कृतान्नवर्गः

अन्नसाधन और सिद्धअन्नकेगुण.

समवायिनिहेतौयेमुनिभिर्गदिताःगुणाः ।
कार्येऽपितेऽखिलाज्ञेयाःपरिभाषेतिभाषिता ॥
क्वचित्संस्कारभेदेनगुणभेदोभवेद्यतः ।
भक्तंलघुपुराणस्यशालेस्तच्चिपिटोगुरुः ॥ २ ॥
क्वचिद्योगप्रभावेणगुणांतरमपेद्यते ।
कदन्नंगुरुसर्पिभ्योंलघूक्तंसुहितंभवेत् ॥ ३ ॥

अर्थ–मुनीश्वरोंने समवायहेतुमें जो जो गुण कहेहैं, उनके समवायी कार्यमेंभी वही २ सब गुण जान लेने, यह **परिभाषा** कही है । अर्थात् जो जो गुण गेहूं, चना, मूंग, उडद, मिश्री, गुड़, दूध, बूरे आदि पदार्थोंमें कहेहैं, वही २ गुण उन पदार्थोंसे बने लड्डू, पेडे, पूडी, कचौरी, मठरी, रबडी, जलेवी, आदिमें जानने चाहिये । किसी २ वस्तुमें संस्कार भेदसे गुणभेद होजाता है । जैसे पुराने चावलोंका भात हलका होताहै परन्तु उन्हीं शालिचावलों के बने हुए चिरवा संस्कारभेद होने से भारी होजातेहैं । कोई २ द्रव्य योगप्रभाव करके अपने गुणोंको त्यागकर अन्य गुणोंको करेहै, जैसे– **दुष्टअन्न** भारी होताहै, परन्तु वही दुष्ट अन्न यदि घी खांड आदिसे बना होय तो हलका और हितकारी होजाताहै ।

भातके नाम, साधन और गुण.

भक्तमन्नंतथांधश्चक्वचित्कूरंचकीर्तितम् ।
ओदनोऽस्त्रीस्त्रियांभिःस्सादीदिविःपुंसिभाषितः ॥ ४ ॥
सुधौतास्तंडुलाःस्फीतास्तोयेपंचगुणेपचेत् ।
तद्भक्तंप्रस्तुतंचोष्णंविशदंगुणवन्मतम् ॥ ५ ॥
भक्तंवह्निकरंपथ्यंतर्पणंरोचनंलघु ।
अधौतमस्रुतंशीतंगुर्वरुच्यंकफप्रदम् ॥ ६ ॥

अर्थ–भक्त, अन्न, अंध, कूर, ओदन, भिःसा और दीदिवि ए **भात**के संस्कृत नाम हैं । **बनानेकीविधि** । सुंदर बिने छने हुए स्वच्छ चावलोंको पांचगुने जलमें पचावे जब सिद्ध होजावें तब उतारके जलको छानडाले, यह गरमागरम गुणकारी जानना । **गुण** । भात, अग्निकर्त्ता, पथ्य, तृप्तिकारी, रोचक, और हलका है । **विनाधुले** चावलोंका और विना अधानका भात शीतल, भारी, अरुचिकर्त्ता और कफकारी है ।

दाल (सूप.)

दलितंतुशमीधान्यंदालिर्दालीस्त्रियामुभे ।
दालीतुसलिलेसिद्धालवणार्द्रकहिंगुभिः ॥
संयुक्तासूपनाम्नीस्यात्कथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥७॥
सूपोविष्टंभकोरूक्षःशीतस्तुसविशेषतः ।
निस्तुषोभ्रष्टसंसिद्धो लाघवंसुतरांव्रजेत् ॥८॥

अर्थ– फलीके दलेहुए (मूंग चना अरहर आदि) धानोंको **दाल** कहते हैं । आधसेर जलमें २ छटांक दाल डाले, जब अग्निपर सीज जाय तब उसमें नमक अदरख, हींग और अन्य मसाला डाले । तो यह **सूप** अर्थात् **दाल** बनकर तयार हो । **गुण** । दाल विष्टंभकारी, रूखी, शीतल, यदि भाड़में भुनीहुई दालके छिलके दूर करके सिद्ध कीजावे तो अत्यंत हलकी होय है ।

खिचड़ी.

तण्डुलादालिसंमिश्रालवणार्द्रकहिंगुभिः ।
संयुक्ताःसलिलेसिद्धाःकृशराकथिताबुधैः ॥९॥
कृशराशुक्रलाबल्यागुरुःपित्तकफप्रदा ।
दुर्जराबुद्धिविष्टंभमलमूत्रकरीस्मृता ॥ १० ॥

अर्थ—दाल चांवलों को मिलाय और निमक, अदरख, हींग आदि डालके जलमें सिद्ध कर, उसको **कृशरा** अर्थात् **खिचड़ी** कहते हैं। **गुण**। खिचड़ी-वीर्यदाता, बलकर्त्ता, भारी, पित्तकफकर्त्ता, देरमें पचे, बुद्धि, विष्टंभ, मल और मूत्रको उत्पन्न करती है।

ताहरी.

घृतेहरिद्रासंयुक्तेमाषजांभर्जयेद्वटीम्।
तंडुलांश्चापिनिर्धौतान्सहैवपरिभर्जयेत्॥११॥
सिद्धयोग्यंजलंतत्रप्रक्षिप्यकुशलःपचेत्।
लवणार्द्रकहिंगूनिमात्रयातत्रनिक्षिपेत्॥१२॥
एषासिद्धिःसमानज्ञाप्रोक्तातापहरीबुधैः।
भवेत्तापहरीबल्यावृष्याश्लेष्माणमाचरेत्।
बृंहणीतर्पणीरुच्यागुर्वीपित्तहरीस्मृता॥१३॥

अर्थ—हलदी मिले घीमें प्रथम उड़दकी वड़ियों को तथा इन्हींके साथ धुले हुए स्वच्छ चांवलों को सिद्धकर लेवे, फिर जितनेमें ए दोनों सिद्ध होजावें इतना जल चढ़ायके पचावे, और निमक, अदरख, हींग ए अनुमान माफिक डाले तो यह **ताहरी** सिद्ध होय। **गुण**। तापहरी (ताहरी), बलकारी, वृष्य, कफकारी, बृंहणी, तृप्तिकरता, रुचिकारी, और पित्तको हरण करे।

खीर.

पायसंपरमान्नंस्यात्क्षीरिकापितदुच्यते।
शुद्धेऽर्धपक्वेदुग्धेतुघृताक्तांस्तण्डुलान्पचेत्॥
तेसिद्धाःक्षीरिकाख्यातासासिताज्ययुतोत्तमा।
क्षीरिकादुर्जराप्रोक्ताबृंहणीबलवर्द्धनी॥१५॥
नालिकेरंतनूकृत्यच्छिन्नंपयसिगोःक्षिपेत्।
सितागव्याज्यसंयुक्तेतत्पचेन्मृदुनाऽग्निना॥
नारिकेरोद्भवाक्षीरीस्निग्धाशीतातिपुष्टिदा।
गुर्वीसुमधुरावृष्यारक्तपित्तानिलापहा॥१७॥

अर्थ—पायस, परमान्न और क्षीरिका, ए संस्कृत में खीरके नाम हैं। **खीरके बनाने की विधि**। निपनिया अधोंटा दूधमें घीके भुने चांवल डालके पचावे तो **खीर** सिद्ध होय। इसमें सफेद बूरा और गौका स्वच्छ घी मिलावे (चौबे लोग खीर सिद्धकर पत्तलमें परोसके ऊपरसे बूरा डालते हैं परन्तु अन्यजातिवाले उसीमें बूरा डालदेते हैं) **गुण**। **खीर** देरमें पचे, बृंहणी, बलको बढ़ाने वाली। **नारियल की खीर**। नारियल की गिरीको चाकूसे बारीक कतरके अथवा पियाकस पर बारीक रगड़कर दूधमें खांड और गौका घी डालके मंदाग्निसे औंटावे तो यह **नारियल की खीर** बने। **गुण**। यह स्निग्ध, शीतल और अत्यंत पुष्टकारी, भारी, मधुर, वृष्य, रक्तपित्त, और वादी को दूर करे है।

सैंमई.

समितांवर्तिकांकृत्वासूक्ष्मांतुयवसन्निभाम्।
शुष्कांक्षीरेणसंसाध्याभोज्याघृतसितान्विता॥१८॥
सेविकातर्पणीबल्यागुर्वीपित्तानिलापहा।
ग्राहिणीसंधिकृद्रुच्यातांखादेन्नातिमात्रया॥

अर्थ—उसनी हुई मैंदा की बहुत बारीक डोरेके माफिक बत्ती बनायके धूपमें सुखायले, फिर इनको बिना पसे भातके समान दूधमें सिद्ध कर लेवे, तथा इसमें सफेद बूरा और घी डालके सेवन करे। **गुण**। **सैंमई**—धातुओं को तृप्त करता, बलकारी, भारी, पित्त और वातको नष्ट करे, ग्राही (मलको रोकने वाली) संधिकर्त्ती और रुचिकारी है। इसको अधिक नहीं खानी। मूलमें जौके समान मोटी लिखी हैं परन्तु सैंमई हमारे ब्रजमें बालके माफिक पतली होती हैं और प्रायः सामनके महिनेमें तीज और सलूनों के दिन ब्रजवासी इसको बहुत बनाते हैं।

मंडा.

गोधूमाधवलाधौताःकुट्टिताःशोषितास्ततः
प्रोक्षितायंत्रनिष्पिष्टाश्चालिताःसमिताःस्मृताः॥२०॥
वारिणाकोमलांकृत्वासमितांसाधुमर्दयेत्।
हस्तलालनयातस्यालोप्त्रींसम्यक्प्रसारयेत्
अधोमुखघटस्यैतद्विस्तृतंप्रक्षिपेद्बहिः॥
मृदुनावह्निनासाध्यःसिद्धोमंडकउच्यते॥
दुग्धेनसाज्यखंडेनमंडकंभक्षयेन्नरः।
अथवासिद्धमांसेनसतक्रवटकेनवा॥२३॥

मंडकोबृंहणोवृष्योबल्योरुचिकरोभृशम् ।
पाकेऽपिमधुरोग्राहीलघुर्दोषत्रयापहः ॥ २४ ॥

अर्थ—सफेद गेंहुओंको जलमें धोकर ओखली में डाल मूसलसे कूट डाले-फिर इनको धूपमें सुखाय चक्कीमें पीस **डांगी** (मैदा छाननेकी चालनी) में छानकर **मैदा** कर लेवे । फिर इस मैदा को जलसे कोमल उसनकर खूब मर्दन करे फिर हाथसे इसकी लोईको बढाय पूड़ी के माफिक बेल लेवे, फिर चूल्हे-पर औंधे मुखके खिपड़े पर इसको डालके मंदाग्नि से सेक लेवे । ए सिके हुए **मंडक** कहलाते हैं । मंडकोंको दूध-घी-खांड (बूरा) के साथ भोजन करे, अथवा बनेहुए मांस के साथ अथवा दहीबडे के साथ भोजन करे । **गुण** । बृंहण, वृष्य, बलकारी, निरंतर रुचि--कारी, **पाक**के समय भी मधुर, ग्राही, हलके और तीनोंदोषोंको नाश करते हैं । कोई **डबलरोटी** को ही **मंडक** मानते हैं ।

पूरी (पोलिका)

कुर्यात्समितयाऽतीवतन्वीपर्पटिकाततः ।
स्वेदयेत्तप्तकेतांतुपोलिकांजगदुर्बुधाः ॥
तांखादेल्लप्सिकायुक्तांतस्यामण्डकवद्गुणाः॥

अर्थ—मैंदाकी अथवा चूनकी बहुत बारीक पूडी बेलके घीमें सेक लेवे उनको **पूडी, पूरी**, अथवा लुचई, लुची और दुनौरी कहते हैं । संस्कृत में **पोलि-का** कहाती है । मैंदा की पूड़ी पंजाबी और हमारी जाति में कुलीन चौबों के घरमें उत्तम बनतीहै । इनको मोहन-भोग वा लप्सी (सीरा) के साथ भोजन करे, इसके गुण मंडक के समान हैं । (इनको कोई तवेपर, और केई कढैया में सेकते हैं) । पूडियोंका ही भेद, प्रामठे जिनको मंजेडेरे, पल्टेटा, उपरायठे, टिकरा, कच्यौरा आदि कहते हैं । इनमें घी बहुत कम लगता है इस वास्ते गरीब लोग बहुत बनाते हैं ।

लप्सी (सीरा.)

समितांसर्पिषाभ्रष्टांशर्करापयसिक्षिपेत् ।
तस्मिन्घनीकृतेन्यस्येल्लवंगमरिचादिकम् ॥
सिद्धैषालप्सिकाख्यातागुणास्तस्या-
वदाम्यहम् ।
लप्सिकाबृंहणीवृष्याबल्यापित्तानिलापहा ॥
स्निग्धाश्लेष्मकरीगुर्वीरोचनीतर्पणीपरम् ॥

अर्थ—मैंदा के समान घी लेकर उसमें मैंदा को मंदाग्निसे भून लवे, फिर इसमें मेदा के समान खांडका जल डालता जाय और चलाता जावे, जब सब जल सूखकर खिलजावे तब इसमें लोंग, कालीमिरच, इलायची आदि का चूर्ण और कतरी हुई मेवा डाल देवे, इसको संस्कृत में **लप्सिका** कहते हैं । भाषा में **सीरा** वा **लपसी** अथवा **मोहनभोग** कहते हैं । मोहनभोग सूजी का उत्तम बनताहै, और भी अनेक प्रकार का होता है । जिनको देखने की और बनानेकी इच्छा हो हमारे **पाकरत्नाकर** ग्रंथ में देखें ।

रोटी (रोटिका.)

शुष्कगोधूमचूर्णंनीकिंचित्पुष्टांचपोलिकाम् ।
तप्तकेस्वेदयेत्कृत्वाभूयंगारेऽपितांपचेत् ॥२८॥
सिद्धैषारोटिकाप्रोक्तागुणान्तस्याःप्रचक्ष्महे ।
रोटिकाबलकृद्रुच्याबृंहणीधातुवर्धनी ॥
वातघ्नीकफकृद्गुर्वीदीप्ताग्नीनांप्रपूजिता ॥ २९॥

अर्थ—सूखे स्वच्छ गेंहू के आटे को उसन रोटी बेलके तवेपर डाले जब दोनों बगल सिक जावे तब उतार के इसको अंगारों पर फुलाय लेवे । यह संस्कृत में **रोटिका** और भाषा में **रोटी** कहाती है, इसके गुणोंको कहतेहैं । **गुण** । रोटी-बलकारी, रुचिकारी, बृंहणी (पुष्टकर्त्ता) और रसरक्तादि धातुओं को बढ़ानेवाली है । वातनाशक, कफकर्त्ता, भारी और प्रदीप्ताग्निवालोंको हितकारी है । परंतु यह वाक्य पूर्वके देशवाले तथा बंगालियों के प्रति है, और हमारे पश्चिमोत्तर देशवालोंको रोटी ही पथ्य है । लोहेके तवेकी रोटी से खिपड़ेके तवेकी रोटी हलकी होती है, और रोटी पतली खमीर की करनी चाहिये ।

अंगाकर बाटी.

शुष्कगोधूमचूर्णंतुसांबुगाढंविमर्दयेत् ।
विधायवटकाकारंनिर्धूमेऽग्नौशनैःपचेत् ॥३०॥
अंगारकर्कटीह्येषाबृंहणीशुक्रलालघुः ।
दीपनीकफकृद्बल्यापीनसश्वासकासजित् ॥

अर्थ—सूखेहुए उत्तम गेंहू के आटे को गाढा उसन-

कर हाथोंसे बडेके समान बनाके धूंआ रहित अंगारोंपर धीरे २ सेक लेवे, इनको संस्कृतमें **अंगारककर्टी** कहते हैं । भाषामें **अंगाकर** और **लिट्टी** कहतेहैं। और कुछ नरम चूनकी गोल बीचमें गड्ढेदार **बाटी** होती हैं वह जब सिककर फटजावे तब उत्तम होती है। **गुण**। अंगाकर-बृंहणी, शुक्रकर्त्ता, हलकी, दीपनकारी, कफकारी, बलकर्त्ता, और पीनस, श्वास तथा खांसीको दूर करेहै। अंगारकरसे बाटी अधिक गरिष्ठ है। ये बलवान् पुरुषको और रास्ते चलनेवालोंको पचती है। बाटी राजपूतानेमें उत्तम बनती है।

जौ की रोटीके गुण.

यवजारोटिकारुच्यामधुराविशदालघुः ।
मलशुक्रानिलकरीबल्याहंतिकफामयान् ॥

अर्थ–**जौकी रोटी** रुचिकर्त्ता, मधुर, विशद, और हलकी है। मल, शुक्र और वादी करतीहै, बलकारी, तथा कफके रोगोंको नाश करे।

उड़दकी रोटी.

माषानांदालयस्तोयेस्थापितास्त्यक्तकंचुकाः ।
आतपेशोषितायंत्रेपिष्टास्ताधूमसीस्मृता ॥३३॥
धूमसीरचितासैवप्रोक्ताझर्झरिकाबुधैः ।
झर्झरीकफपित्तघ्नीकिंचिद्वातकरीस्मृता ३४

अर्थ–उड़दकी दालको जलमें भिगोयके उसके छिलकोंको धोयके उतार डाले फिर धूपमें सुखाय चक्कीमें पीस आटा कर लेवे। इस धूमसी (आंटे) की बनीहुई रोटियों को संस्कृतमें **झर्झरी** कहते हैं। **गुण**। कफपित्तनाशक और कुछ २ वादीकरे हैं।

चनेकी रोटीके गुण.

चाणकयारोटिकारूक्षाश्लेष्मपित्तास्रनुद्गुरुः ।
विष्टंभिनीनचक्षुष्यातद्गुणाचातिशष्कुली ॥

अर्थ–**चनेकी रोटी** रूखी, कफ पित्त और रुधिरके विकारको दूर करे, और भारी है, पेटको फुलावे, नेत्रोंको हितकारी नहीं है। इसकेसे गुण अतिशष्कुली अर्थात् बड़ीरोटीमें है।

पिट्ठी (पिष्टिका.)

दालिःसंस्थापितातोयेततोऽपहृतकंचुका ।
शिलायांसाधुसंपिष्टापिष्टिकाकथिताबुधैः ॥

अर्थ–मूंग अथवा उडद आदिकी दालको जलमें भिगोयदे जब भीग जावे तब उसको जलमें धोकर छिलके निकाल डाले। और उसको सिल बट्टेसे बारीक पीस लेवे, और मसाला मिलायदे इसको संस्कृत में **पिष्टिका** और भाषामें **पिट्ठी** कहते हैं।

बेढई.

माषपिष्टिकयापूर्णगर्भागोधूमचूर्णतः ।
रचितारोटिकासैवप्रोक्ताबेढमिकाबुधैः ॥
भवेद्वेढमिकाबल्यावृष्यारुच्याऽनिलापहा ।
ऊष्मसंतर्पणीगुर्वीबृंहणीशुक्रलापरम् ॥ ३८ ॥
भिन्नमूत्रमलास्तन्यमेदःपित्तकफप्रदा ।
गुदकीलार्दितश्वासपंक्तिशूलान्निनाशयेत् ॥

अर्थ–उड़दकी पिट्ठीको उसनेहुए गैंहूके आटेकी लोईमें भरके बेल डाले, फिर रोटीके माफिक सेकलेवे, इनको **बेढई** कहतेहैं, और कुछ छोटी बेलके घीमें सेक लेवे तो **कचौडी** कहाती हैं। **गुण**। बेढई-बलकारी, वृष्य, रुचिकर्त्ता, वातनाशक, गरमीको बढानेवाली, भारी, बृंहणी और वीर्य प्रकट कर्त्ता है। मूत्र, मलको भेदनकर्त्ता, स्तनसंबंधी दूध, मेद और पित्तकफकारी है। यह गुदाके मस्से, लकवा वात, श्वास और परिणाम शूलको नाश करे।

पापड.

धूमसीरचिताहिंगुहरिद्रालवणैर्युता ।
जीरकस्वर्जिकाभ्यांचतनूकृत्यचवेल्लिता ॥४०॥
पर्पटास्तेसदांगारभ्रष्टाःपरमरोचकाः ।
दीपनाःपाचनारूक्षागुरवःकिंचिदीरिताः ॥
मौद्गाश्चतद्गुणाःप्रोक्ताविशेषाल्लघवोहिताः ॥
चणकस्यगुणैर्युक्ताःपर्पटाश्चणकोद्भवाः ।
स्नेहभ्रष्टास्तुतेसर्वेभवेयुर्मध्यमागुणैः ॥ ४२ ॥

अर्थ–उडदकी रोटीमें **धूमसी** बनानेकी विधि लिख आये हैं—उस में हींग, हलदी, निमक, जीरा और पापडखार डालके उसको करडी उसनले, फिर खूब ओखलीमें कूटकर एकजीव करलेवे, फिर छोटी २ लोई तोडकर चकलेपर बारीक वेललेवे। इनको अंगारोंपर अथवा घीमें भून लेवे। **गुण**। ए पापड

परम रुचिकारी, दीपन, पाचन, रूक्ष, कुछ २ भारी, ए उडदके पापडोंके गुण हैं । **मूंगके पापडोंके** भी गुण उडदके पापडोंके समान हैं परन्तु ये उडदके पापडोंसे हलके हैं और पथ्य हैं । **चनेकेपापडोंमें** चनाके समान गुण हैं । ए अग्निपर भुनेहूओं के गुण हैं, यदि इनको घी तेलमें भूने तो गुणोंमें मध्यम होजाते हैं ।

कचोरी.

माषाणांपिष्टिकांयुंज्याल्लवणार्द्रकहिंगुभिः ।
तयापिष्टिकयापूर्णासमिताकृतपोलिका ॥४३॥
ततस्तैलेनपक्कासापूरीकाकथिताबुधैः ।
रुच्यास्वाद्वीगुरुःस्निग्धाबल्यापित्तास्र-
दूषिका ॥ ४४ ॥
चक्षुस्तेजोहरीचोष्णापाकेवातविनाशिनी ।
तथैवघृतपक्काऽपिचक्षुष्यारक्तपित्तहृत् ॥४५॥

अर्थ–उडदोंकी पिट्ठीमें निमक, अदरख, हींग, डालके मैदाकी लोईमें भरके वेले, फिर इसको तेलमें अथवा घीमें सेक लेवे । इसको संस्कृतमें **पूरीका** कहते हैं । और भाषामें कचोडी कहतेहैं, यदि मैंदामें तेल घीका मोंमन देकर बनाई जावे तो उनको **खस्ताकचौडी** कहतेहैं । **गुण** । तेलकी कचौडी रुचिकारी, स्वादु, भारी, स्निग्ध, बलकारी, रक्तपित्तको कुपित कर्त्ता, नेत्रोंके तेज (ज्योति) को भेद करता, पाकमें गरम और वादीको नष्ट करे । **घीकी बनी कचौडी** नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्तको हरण करेहैं ।

बरा. मगोरा.

माषाणांपिष्टिकांयुक्तांलवणार्द्रकहिंगुभिः ।
कृत्वाविदध्याद्वटकांस्तांस्तैलेषुपचेच्छनैः ॥
विशुष्कावटकाबल्याबृंहणावीर्यवर्धनाः ।
वातामयहरारुच्याविशेषादर्दितापहाः ॥४७॥
विबंधभेदिनःश्लेष्मकारिणोऽत्यग्निपूजिताः ।
संचूर्ण्यनिक्षिपेत्तक्रेभ्रष्टजीरकहिंगुभिः ॥
लवणंतत्रवटकान्सकलानपिमज्जयेत् ।
शुक्लस्तत्रवटकोबलकृद्रोचनोगुरुः ॥ ४६ ॥
विबंधहृद्धिदाहीचश्लेष्मलःपवनापहः ।
राज्यक्तपातिनोवान्यान्पाचनांस्तांस्तुभक्षयेत् ॥

अर्थ–उडदकी पिट्ठीमें निमक, अदरख और हींग, इनको मिलाय **बडे** बनाय तेलमें धीरे २ पचावे, अथवा उस पिट्ठी में जल डालके हाथोंसे मथ डाले फिर इसके तेलमें मगोडे तोडके सेक लेवे । **गुण**। **बडे** और **मगोडे** बलकारक, बृंहण, वीर्यवर्द्धक, वादीके रोगहरणकर्त्ता, रुचिकारी, और विशेष करके अर्दितवात (लकवा) को दूर करे । मलके बंधको तोडनेवाले अर्थात् दस्तावर, कफकारी और दीप्ताग्निवालोंको हितकारी हैं । यदि गाढ २ दहीमें भुना जीरा, हींग, मिरच, और निमक, मिलायके इन पूर्वोक्त बडे मगोडोंको भिगोय देवे तो ये **दहीबडे** और **दहीकी पकौडी** कहलाती हैं । **गुण** । तहां दहीबडे-वीर्यकर्त्ता, बलकर्त्ता, रुचिकारी, भारी, विबंध हरणकर्त्ता, दाह करनेवाले, कफकारी और वातनाशक हैं । इन्हें रायतेमें मिलायके अथवा अन्य पाचनपदार्थके साथ मिलायके भक्षण करे ।

कांजीवरा.

मंथनीनूतनाधार्याकटुतैलेनलेपिता ।
निर्मलेनांबुनापूर्यतस्यांचूर्णंविनिक्षिपेत् ॥
राजिकांजीरलवणंहिंगुशुंठीनिशाकृतम् ।
निक्षिपेद्वटकांस्तत्रभांडस्यास्यंचमुद्रयेत् ॥
ततोदिनत्रयादूर्ध्वमम्लाःस्युर्वटकाध्रुवम् ।
कांजिकोवटकोरुच्योवातघ्नःश्लेष्मकारकः ॥
शीतोदाहंशूलमजीर्णंहरतेदृगामयेष्वहितः ॥

अर्थ–एक मिट्टीकी गगरी लेकर उसके भीतर कडवा तेल चुपड देवे, फिर उसमें स्वच्छ जल भर इसमें राई, जीरा, निमक, हींग, सोंठ और हलदी इनका चूर्ण डालके उडदके बडे उस जलमें भिगोय देवे और भाजनके मुखको बंद कर किसी एकांतस्थलमें धर देवे तो तीन दिनमें वह बडे खट्टे होजावेंगे इनको **कांजिकवटक** कहतेहैं । **गुण** । कांजीके बडे रुचिकारी, वातघ्न, कफकारक, शीतल, दाह, शूल और अजीर्णको हरण करें, यह कांजीके बडे नेत्ररोगवालोंको अहित हैं ।

इमलीके बडे.

अम्लिकांस्वेदयित्वातुजलेनसहमर्द्दयेत् ।
तन्नीरेकृतसंस्कारैर्वटकान्सज्जयेत्ततः ॥ ५४ ॥
अम्लिकावटकास्तेतुरुच्यावह्निप्रदीपनाः ।
वटकस्यगुणैःपूर्वैरेषांपिचसमन्विताः ॥ ५५ ॥

अर्थ–पकी इमलीको औटाकर जलमेंही उसे खूब मीडे, फिर किसी कपडेमें डालके उस पनेको छान लेवे, और उसमें निमक, मिरच, जीरा, आदि अनुमानका मिलायकर मगौडी भिगोय देवे तो **इमलीके बडे** बने । यह रुचिकारी, अग्निदीपन, और जो पहिले बडोंके गुण कह आये हैं वही गुण इनमेंभी हैं । कोई २ देशवाले इनको **झोरवडा** कहतेहैं ।

मूंगवरा.

मुद्गानांवटकास्तक्रेभर्जितालघवोहिमाः ।
संस्कारजप्रभावेनत्रिदोषशमनाहिताः ॥५६॥

अर्थ–मूंगकेवडे छाछमें परिपक्व करके भक्षण करे तो हलके और शीतल हैं तथा संस्कारके प्रभावसे त्रिदोषनाशक और पथ्य हैं ।

माषवडी.

माषाणांपिष्टिकाहिंगुलवणार्द्रकसंस्कृता ।
तयाविरचितावस्त्रेवटिकाःसाधुशोषिताः ॥
भर्जितास्तप्ततैलेताअथवांबुप्रयोगतः ।
वटकस्यगुणैर्युक्ताज्ञातव्यारुचिदाभृशम् ॥

अर्थ– उडदकी पिट्ठी पीस उसमें निमक, अदरख मिलायके कपडेके ऊपर बडी तोड देवे, जब सूखजावे तब उसपरसे उतारले । इनको गरम तेलमें अथवा कढीआदिमें डालके परिपक्व करे, ये **बडी** बडेके समान गुण करे और अत्यंत रुचि प्रकट करती है ।

पेठेकी बडी.

कूष्मांडकवटीज्ञेयापूर्वोक्तवटिकागुणा ।
विशेषाद्रक्तपित्तघ्नीलघ्वीचकथिताबुधैः ॥

अर्थ–पेठेकीवडी. पूर्वोक्त बडियोंके समान गुण करनेवाली है, विशेष करके रक्तपित्तको नाश करनेवाली और हलकी है ।

मूंगकी बडी.

मुद्गानांवटिकातद्वद्रचितासाधितातथा ।
पथ्यारुच्यातथालघ्वीमुद्गसूपगुणास्मृता ॥

अर्थ–इसी प्रकार मूंगकी बडी बनायके तयार करे । **गुण** । पथ्य, रुचिकारी, हलकी और इन बडियोंमें मूंगकी दालकेसे गुण हैं ।

अलीकमत्स्य.

माषपिष्टिकयालिप्तंनागवल्लीदलंमहत् ।
तत्तुसंस्वेदयेद्युक्त्यास्थाल्यामास्तारकोपरि ॥
ततोनिष्काश्यतंखंड्यंततस्तैलेनभर्जयेत् ।
अलीकमत्स्यउक्तोऽयंप्रकारःपाकपण्डितैः ॥
तंवृंताकभटित्रेणवास्तूकेनचभक्षयेत् ॥६२॥

अर्थ–उडदकी पिट्ठीमें बडे २ नागरपानको लपेटकर युक्तिसे कढाईमें सेक लेवे फिर उनको उतारकर छुरीसे कतर लेवे, और तेलमें तल लेय । ये **अलीकमत्स्य** कहलाते हैं । इनको बैगनके भरतेसे अथवा बथुआके साग या रायतेसे भक्षण करे । पूरबमें इनको रिकवछ कहते हैं ।

कढी.

स्थाल्यांघृतेवातैलेवाहरिद्रांहिंगुभर्जयेत् ॥
अवलेहनसंयुक्तंतक्रंतत्रैवनिक्षिपेत् ।
एषासिद्धासमरिचाकथिताकथिताबुधैः ॥६३॥
कथितापाचनीरुच्यालघ्वीवह्निप्रदीपनी ।
कफानिलविबंधघ्नीकिंचित्पित्तप्रकोपिणी ॥
अलीकमत्स्याःशुष्कावाकिंवाकथितयापुनः ।
बृंहणारोचनावृष्याबल्यावातगदापहाः ॥
कोष्ठशुद्धिकराःशुक्याःकिंचित्पित्तप्रकोपनाः ।
अर्दितसहनुस्तंभेविशेषेणहिताःस्मृताः ॥ ६६ ॥

अर्थ–प्रथम कढाईमें घी डालके अथवा तेल डालके हरदी और हींगको भूने फिर वेसन और छाछ दोनोंको मिलायके उस कढाईमें छौंक देवे, और अनुमान माफिक, निमक, मिरच, मसाला, डालदे । इसको संस्कृतमें **कथिता** और हिंदीमें **कढी** कहते हैं । परन्तु यह **रांड कढी** कहलाती है और पकौडी आदि डालदीनी जावे तो **सुहागिलकढी** कहाती है। **गुण** ।

पाचक, रुचिकारी, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, कफ और वादीके विबंधको नष्ट करे, और कुछ २ पित्तको कुपित करेहै । **अलीकमत्स्य**, सूखे, अथवा कढ़ीमें डालके सेवन करे तो ये बृंहण, रोचन, वृष्य, बलकारी, वादीके रोगनाशक, कोठेको शुद्ध करें, शुक्रकर्त्ता और कुछ २ पित्तको कुपित करतेहैं । यह लकवा और हनुस्तंभ आदि वादीके रोगोंपर हितकारी हैं ।

मूंग अदरखकी वडी.

मुद्गपिष्टान्विरचितान्वटांस्तैलेनपाचितान् ।
हस्तेनचूर्णयेत्सम्यकृतस्मिंश्चूर्णेविनिक्षिपेत् ॥
भ्रष्टंहिंग्वार्द्रकंसूक्ष्ममरीचंजीरकंतथा ।
निंबूरसंयवानींचयुक्त्यासर्वंविमिश्रयेत् ६८
मुद्गपिष्टिंपचेत्सम्यक्स्थाल्यामस्तारकोपरि ।
तस्यास्तुगोलकंकुर्यात्तन्मध्येपूरणंक्षिपेत् ॥
तैलेतान्गोलकान्पक्त्वाक्वथितायांनिम-
ज्जयेत् ।
गोलकाःपाचकाःप्रोक्तास्तत्वार्द्रकवटाअपि ॥
मुद्गार्द्रकवटारुच्यालघवोबलकारकाः ।
दीपनास्तर्पणाःपथ्यास्त्रिषुदोषेषुपूजिताः ७१

अर्थ–मूंगकी पिठीसे बनी वडियोंको तेलमें तलकर हाथसे चूर्ण करडाले इसमें भुनीहींग और छोटे २ अदरखके टुकडे, मिरच, जीरा, नीबूकारस और अजमायन यह सब युक्तिसे मिलायके उस पिठीको कढाईमें अथवा तवेपर फैला दे फिर इसके गोले बनाकर भीतर मसाला भरके उन गोलोंको तेलमें सिद्ध करे, जब सिक जावें तब उतारके कढ़ीमें डाल देवे । **गुण** । यह गोलक (पकोडी) पाचक हैं और इसीप्रकार अदरखकी बड़ी पाचक हैं । **मूंग अदरखकी** बड़ी रुचिकारी, हलकी, बलकारी, दीपन, धातुओंको तृप्त करता, पथ्य, और तीनों दोषोंको नाश करनेवाली हैं ।

पकोरी (मगौरी.)

दालयश्चणकानांतुनिस्तुषायंत्रपेषिताः ।
तच्चूर्णंवेशनंप्रोक्तंपाकशास्त्रविशारदैः ॥
वटिकावेशनस्यापिक्वथितायांनिमज्जिता ।
रुच्याविष्टंभजननीबल्यापुष्टिकरीस्मृता ७३

अर्थ–चनेकी बिनी छनी दालको चक्कीमें पीसे इस चूनको **बेसन** कहते हैं । बेसनकी वडियोंको अर्थात् **पकौडियोंको** कढ़ीमें डालके औटावे तो यह रुचिकारी, विष्टंभकर्त्ता, बलकारी, और पुष्टि करनेवाली हैं ।

मांसप्रकार-शुद्धमांसम्.

पाकपात्रेघृतंदद्यात्तैलंचतदभावतः ।
तत्रहिंगुहरिद्रांचभर्जयेत्तदनंतरम् ॥ ७४ ॥
छागादेरस्थिरहितंमांसंतत्खंडितंध्रुवम् ।
धौतंनिर्गालितंतस्मिन्घृतेतद्भर्जयेच्छनैः ॥७५॥
सिद्धयोग्यंजलंदत्वालवणंतुपचेत्ततः ।
सिद्धेजलेनसंपिष्यवेशवारंपरिक्षिपेत् ॥ ७६ ॥
द्रव्याणिवेशवारस्यनागवल्लीदलानिच ।
तंडुलाश्चलवंगानिमरिचानिसमासतः ॥७७॥
अनेनविधिनासिद्धंशुद्धमांसमितिस्मृतम् ॥
शुद्धमांसंपरंवृष्यंबल्यंरुच्यंचबृंहणम् ।
त्रिदोषशमनंश्रेष्ठंदीपनंधातुवर्द्धनम् ॥ ७८ ॥

अर्थ–अब मांसप्रकार अर्थात् राक्षसी भोजन कहते हैं प्रथम शुद्धमांस अर्थात् **सुधवांसु** बनानेका प्रकार कहतेहैं । कढ़ाईमें घी डालके, अथवा तेल डालके गरम करे, फिर उसमें हींग और हलदीको भूनले फिर हड्डीरहित बकरेके मांसके टुकडे २ कर और जलसे धोयके घीमें डालके भूने इसमें अनुमानके माफिक जल डालके और निमक डालके पचावे, फिर जब सिद्ध होजावे तब गरम मसाला डालके उतारले । तहां पान, चांवल, लौंग, मिरच ए मसालेके पदार्थ हैं । इसप्रकार सिद्ध हुएको शुद्धमांस कहते हैं । **शुद्धमांसके गुण** । वृष्य, बलकारी, रुचिदायक, बृंहण, त्रिदोष शमनकर्त्ता, दीपन और धातुवर्द्धक है ।

हडवांसु.

छागादेर्भांसमूर्वादेःकुट्टितंखंडितंपुनः ।
शुद्धमांसविधानेनपचेदेतत्सहार्द्रकम् ॥
सहार्द्रकंगुणैर्ग्रथेशुद्धमांसगुणंस्मृतम् ॥ ७९ ॥

अर्थ—बकरे के ऊरु आदिके मांसके टुकडे करे और कूटकर पूर्वोक्त शुद्धमांसकी विधिसे अदरख के साथ पकावे, इसमें अदरखयुक्त शुद्ध मांस के समान गुण हैं।

अखनी.

पाकपात्रेघृतंदत्त्वाहरिद्राहिंगुभर्जयेत्।
छागादेःसकलस्यापिखंडान्यपिचभर्जयेत्॥
सिद्धयोग्यंजलंदत्त्वापचेन्मृदुतरंयथा।
जीरकादियुतेतक्रेमांसखंडानितारयेत्॥८१॥
तक्रमांसंतुवातघ्नंलघुरुच्यंबलप्रदम्।
कफघ्नंपित्तलंकिंचित्सर्वाहारस्य पाचनम्॥

अर्थ—कड़ाई अथवा देगचीमें घी, हींग, और हलदी डालके भूने, फिर बकरी आदिके मांसके टुकडोंको डालके भूने, फिर इसमें अनुमानका जल डालके मंद मंद आंचसे पकावे, फिर जीरा आदि मसाला मिली छाछमें उन मांसके टुकडोंको डाल देवे। गुण। तक्रमांस (अखनी)—वातनाशक, हलका, रुचिकारी, बलदायक, कफघ्न, किंचिन्मात्र पित्तकर्त्ता और सब खाएहुए पदार्थोंको हजम करता है।

आस.

पाकपात्रेतुबृंहतिमांसखण्डानिनिक्षिपेत्।
पानीयंप्रचुरंसर्पिःप्रभूतंहिंगुजीरकम्॥ ८३॥
हरिद्रामार्द्रकंशुंठींलवणंमरिचानिच।
तंडुलांश्चापिगोधूमान्जंबीराणांरसान्बहून्॥
यथासर्वाणिवस्तूनिसुपक्वानिभवंतिहि।
तथापचेत्तुनिपुणोबहुमांसक्षतिर्यथा॥ ८५॥
एषाहरीषाबलकृत्वातपित्तापहागुरुः।
शीतोष्णाशुक्रदास्निग्धासरासंधानकारिणी॥

अर्थ—देगचीमें मांसके बड़े २ टुकड़े डालके जल और अधिक घी डाले, तथा हींग, जीरा, हलदी, अदरख, सोंठ, निमक, कालीमिरच, चांवल, गेंहू, जंभीरीका रस, इन सब वस्तुओंको डालके पकावे, जब खूब पकजावे तब उतार लेवे। गुण। यह हरीषा (हरीरा) बलकारी, वातपित्तनाशक, भारी, शीतोष्ण, शुक्रकर्त्ता, स्निग्ध, दस्तावर और टूटी हड्डी आदिको जोडनेवाला है।

तलितमांस.

शुद्धमांसविधानेनमांसंसम्यक्प्रसाधितम्।
पुनस्तदाज्येसंभ्रष्टंतलितंप्रोच्यतेबुधैः॥८७॥
तलितंबलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवृद्धिकृत्।
तर्पणंलघुसुस्निग्धंरोचनंदृढताकरम्॥८८॥

अर्थ—जैसे शुद्ध मांसका साधन लिखा है उसी रीति से मांस परिपक्व करके फिर उसको घी में तल लेवे, इसको तलितमांस कहते हैं। गुण। तलितमांस, बल, बुद्धि, अग्नि, मांस, ओज और शुक्र की वृद्धि करे। तर्पण, हलका, स्निग्ध, रुचिकारी और देह को दृढ़ करता है।

सींखचे.

कालखंडादिमांसानिग्रंथितानिशलाकया।
घृतंसलवणंदत्वानिर्धूमेदहनेपचेत्॥ ८९॥
तत्तुशूल्यमिदंप्रोक्तंपाककर्मविचक्षणैः।
शूल्यंपलंसुधातुल्यंरुच्यंवह्निकरंलघु।
कफवातहरंबल्यंकिंचित्पित्तकरंहितम्॥९०॥

अर्थ—बकरे आदि के कलेजे के मांसको कूट निमक मिला घी मसाला मिलायके लोहेकी सलाई में लपेट देवे, फिर इनको धूंआरहित कोलोंपर पकावे, इसको पाकके जाननेवाले शूल्यमांस अर्थात् सींखचे कहते हैं। गुण। सींखचे अमृतके तुल्य, रुचिकर्त्ता, अग्निकर्त्ता, हलके, कफवात हरणकर्त्ता, बलकारी और पित्तको करते हैं।

मांस के सिंवाड़े

शुद्धमांसंतनूकृत्यकर्त्तितंस्वेदितंजले।
लवंगहिंगुलवणमरिचार्द्रकसंयुतम्॥ ९१॥
एलाजीरकधान्याकनिंबूरससमन्वितम्।
घृतेसुगंधेतद्भ्रष्टंमांसशृंगाटकोच्यते॥ ९२॥
मांसशृंगाटकंरुच्यंबृंहणंबलकृद्गुरु।
वातपित्तहरंवृष्यंकफघ्नंवीर्यवर्द्धनम्॥ ९३॥

अर्थ—शुद्ध मांस को बारीक कतर जलमें औंटावे, फिर इसमें लौंग, हींग, निमक, काली मिरच और अदरख डाले, तथा इलायची, जीरा, धनिया, नींबूका रस, डाले फिर सुगंधित घी में इसको भून लेवे तो यह

मांसशृंगाटक कहाताहै । **गुण** । मांसशृंगाटक-रुचिकारी, बृंहण, बलकर्त्ता, भारी, वातपित्त हरण-करे, वृष्य, कफनाशक, और वीर्यको बढाताहै ।

मांसरस (सोरुआ)

सिद्धमांसरसोरुच्यःश्रमश्वासक्षयापहः ।
प्रीणनोवातपित्तघ्नःक्षीणानामल्परेतसाम् ९४
विश्लिष्टभग्नसन्धीनांशुद्धानांशुद्धिकांक्षिणाम् ॥
स्मृत्योजोबलहीनानांज्वरक्षीणक्षतोरसाम् ।
शस्यतेस्वरहीनानांदृष्ट्यायुःश्रवणार्थिनाम् ॥
प्रकाराःकथिताःसंतिबहवोमांससंभवाः ।
ग्रंथविस्तारभीत्यातेमयानात्रप्रकीर्तिताः ॥९६॥

अर्थ–सिद्धकरा हुआ मांसका रस अर्थात् **सोरुआ** रुचिकर्त्ता, श्रम, श्वास, क्षय, इनको दूरकरे, प्रीणन, वातपित्तनाशक, क्षीण (लटेहुए) और अल्पवीर्य-वालोंके देह और वीर्यको पुष्ट कर्त्ता, बिखरीहुई और टूटी संधियोंको जोडनेवाला, शुद्धिकी आकांक्षा करनेवाले तथा वमन विरेचनादिसे जो शुद्ध हो चुके हैं, तथा जो स्मरणशक्ति, ओज और बलहीन हैं, जो ज्वरसे क्षीण और स्वरहीनहैं उनके वास्ते यह परमोत्तम है । जिनको दृष्टि और आयु तथा सुनने की शक्ति ए बढाने हो उनको यह **मांसरस** परम हितकारी है । मांसके पदार्थ बनाने के अनेक प्रकार हैं–परन्तु मैंने ग्रंथ बढने के भय से इस चिकित्सांग ग्रंथ में नहीं कहे ।

साग बनाने की विधि.

हिंगुजीरयुतेतैलेक्षिपेच्छाकंसुखण्डितम् ।
लवणंचाम्लचूर्णादिसिद्धेहिंगूदकंक्षिपेत् ॥
इत्येवंसर्वशाकानांसाधनोऽभिहितोविधिः ॥

अर्थ–प्रथम सागको स्वच्छकर सम्हारले, फिर कडाही में तेल डाल उसमें हींग और जीरा भूनके साग छौंक देवे फिर निमक खटाई, और मसाला डाले । जब सिद्ध होजावे तब हींगका जल डालके उतार ले । इसीप्रकार सब सागोंको बुद्धिमान् मनुष्य बनाय लेवे ।

(मंठ मीठी मठरी,)

समितामर्दयेदन्यज्जलेनापिचसन्नयेत् ।
तस्यास्तुवटिकांकृत्वापचेत्सर्पिषिनीरसम् ॥
एलालवंगकर्पूरमरीचाद्यैरलंकृते ।
मज्जयित्वासितापाकेततस्तंचसमुद्धरेत् ॥९९॥
अयंप्रकारःसंसिद्धोमंठइत्यभिधीयते ॥१००॥
मंठस्तुबृंहणोवृष्योबल्यःसुमधुरोगुरुः ।
पित्तानिलहरोरुच्योदीप्ताग्नीनांसुपूजितः ॥१॥
समिताःशर्करासर्पिर्निर्मिताअपरेऽपिये ।
प्रकाराअमुनातुल्यास्तेऽपिचेत्तद्गुणाःस्मृताः॥

अर्थ–प्रथम मैदामें मोमन देकर उसको जलसे उसनके खूब गूंदे और उसमें इलायचीदाने, लौंग, कपूर और कालीमिरच आदिके चूर्णको डालके टिकरी बनाय घीमें मंद २ अग्निसे सेक लेवे, फिर इनको निकाल के चाशनी में तल लेवे । इस प्रकारसे बनीहुई मठरियोंको (मंठ या मिठीमठरी) कहतेहैं । **गुण**। **मिठीमठरी**–बृहंण, वृष्य, बलकारी, मधुर, भारी पित्त, वादीको हरणकर्त्ता, रुचिकारी, यह दीप्ताग्निवा-लोंको हितकारी है । इसीप्रकार मेदा, खांडसे घीके बने-पदार्थ (बालूसाई, मेदाके लड्डू, पगेमा सकलपारे आदि जो पदार्थ बनाये जाते हैं वह भी) इसीप्रकारसे बनते हैं उनमेंभी ऐसेही गुण हैं ।

संयाव (गूझा-गुझिया.)

पर्पट्यःसाज्यसमितानिर्मिताघृतभर्जिताः ।
कुट्टिताश्चालिताःशुद्धशर्कराभिर्विमर्दिताः ३
तत्रचूर्णंक्षिपेदेलालवंगमरिचानिच ।
नालिकेरंसकर्पूरंचारबीजान्यनेकधा ॥ ४ ॥
घृताक्तसमितापुष्टरोटिकारचिताततः ।
तस्यांतःपूरणंतस्यकुर्यान्मुद्रांदृढांसुधीः ॥५॥
सर्पिषिप्रचुरेतांस्तुसुपचेन्निपुणोजनः ।
प्रकारज्ञैःप्रकारोऽयंसंयावइतिकीर्तितः ॥६॥

अर्थ–मेदा और घी मिलायके पापडी बनाय घीमें सेक लेवे, जब सिक जावे तब निकालके कूट डाले, फिर बारीक चालनीमें डालके छान लेवे, इसमें सफेद बूरा मिलायके एकजीव करे, और इलायचीदाने, लौंग, कालीमिरच, नारियल की गिरी, बरास और चिरोंजी ए डाले फिर मोमन दीनी हुई मेंदाकी मोटी और बडी रोटीसी बेलके उसके भीतर इस कूरको भरे, और फिर इसकी गुझिया बनायके नोक की गूंथ

देवे, फिर बहुतसे घीमें सेके इस प्रकारको पंडितजन संयाव कहते हैं अर्थात् गूंझा गुझिया कहते हैं।

कर्पूरनाली.

घृताढ्ययासमितयालंबंकृत्वापुटंततः।
लवंगोल्वणकर्पूरयुतयासितयाऽन्वितम् ॥७॥
पचेदाज्येनसिद्धैषाज्ञेयाकर्पूरनालिका।
संयावसदृशीज्ञेयागुणैःकर्पूरनालिका ॥ ८ ॥

अर्थ–मोमन दीनी हुई मैदाको उसनके लंबा संपुट बनावे उसमें लौंग बरास (भीमसेनीकपूर) और खांड मिलायके भर देवे फिर मुख बंदकर घीमें सेक लेवे इसको कर्पूरनालिका कहते हैं. इसमें संयावके समान गुण हैं।

फेनिका (फैनी)

समितायाघृताढ्यायावर्त्तिर्दीर्घाःसमाचरेत्।
तास्तुसन्निहितादीर्घाःपीठस्योपरिधारयेत् ॥
वेल्लयेद्वेल्लनेनैतायथैकापर्पटीभवेत्।
ततश्छुरिकयातांतुसलक्ष्णामेवकर्त्तयेत् ॥ १० ॥
ततस्तुवेल्लयेद्भूयःसट्टकेनचलेपयेत्।
शालिचूर्णंघृतंतोयंमिश्रितंसट्टकंवदेत् ॥ ११ ॥
ततःसंवृत्यतल्लोपृर्णीविदधीतपृथक् पृथक्।
पुनस्तांवेल्लयेल्लोपृर्णीयथास्यान्मण्डलाकृतिः ॥
ततस्तांसुपचेदाज्येभवेयुश्चपुटाःस्फुटाः।
सुगंधयाशर्करयातदुद्धूलनमाचरेत् ॥ १२ ॥
सिद्धैषाफेनिकानाम्नीमंडकेनसमागुणैः।
ततःकिंचिल्लघुरियंविशेषोऽयमुदाहृतः ॥

अर्थ–प्रथम मैदाको सानके उसमें घी डालके लंबी २ बत्तीसी बनावे, और फिर उसको लपेटके फिर लंबी बत्तीकरे, फिर इनको बेलनसे बेलकर पापडी बनावे। फिर इसको छुरीसे कतरकर फिर बेले, और फिर इनपर सट्टकका लेप करे, चांवलका चून, घी और जल इन सबको मिलाय हथेलीसे मथडाले इसको सट्टक कहते हैं, इससे उस लोईको लपेटके बेल लेवे जैसे गोल चंद्रमाके आकार होजावे, फिर इसको घी में सेके तो उसमें अनेक तारसे २ हो जावेंगे फिर इनको [चाशनीमें पाग लेवे] अथवा सुगंधित बूरेमें लपेट लेवे। यह फैनी कहाती है इसमें गुण मंडकके समान हैं परन्तु मंडकसे कुछ हलकी है यह इसमें विशेषता है।

मैदाकी पूडी. शष्कुली.

समितायाघृताक्तायालोपृर्णीकृत्वाचवेल्लयेत्।
आज्येतांभर्जयेत्सिद्धांशष्कुलीफेनिकागुणा ॥

अर्थ–मोमन डाली हुई मैदाको उसनके लोई करे, फिर इनको पतली बेलकर घीमें छोड देवे, जब सिक जावे तब उतार लेवे इसमें फैनीके समान गुण हैं। इसे पूरबके देशमें सुहारी कहते हैं।

सेवके लड्डू.

घृताढ्ययासमितयाकृत्वासूत्राणितानितु।
निपुणोभर्जयेदाज्येखण्डपाकेनयोजयेत् ॥
युक्तेनमोदकान्कुर्यात्तेगुणैर्मंडकायथा ॥१६॥

अर्थ–मोमन डालीहुई मैदाके सेव तयार करके घी में सेक लेवे। फिर इनके टुकडे करके खांडमें पागकर लड्डू बनायले। सेवके लड्डुओंके गुण मंडकके समान हैं।

बूंदीके लड्डू.

मुद्गानांधूमसींसम्यक्घोलयेन्निर्मलांऽबुना।
कटाहस्थघृतस्योर्ध्वंझर्झरंस्थापयेत्ततः ॥
धूमसींतुद्रवीभूतांप्रपतेत्झर्झरोपरि ॥ १८ ॥
पतंतिबिंदवस्तस्मात्तान्सुपक्वान्समुद्धरेत्।
सितापाकेनसंयोज्यकुर्याद्धस्तेनमोदकान् ॥
लघुर्ग्राहीत्रिदोषघ्नःस्वादुःशीतोरुचिप्रदः।
चक्षुष्योज्वरहृद्बल्यस्तर्पणोमुद्गमोदकः ॥ २० ॥

अर्थ–मूंगकी धूमसीको स्वच्छ जलमें घोलके मथलेवे, फिर घीके भरेहुए कढावपर बडे २ छिद्रवाली झंझरी रखके उसमें उस मूंगकी सनी हुई धूमसीको भर देवे, और धीरे धीरे उसको कढावपर ठोंके तो उन छिद्रोंसे छोटी २ बूंद टूटकर घीमें पडेंगी उनको सिकनेपर निकालके चाशनीमें पाग लेवे, फिर चाशनीको गाढी होनेपर लड्डू बनाय ले। **गुण।** बूंदीके लड्डू हलके, ग्राही, त्रिदोषनाशक, स्वादु, शीतल, रुचिदायक, नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, हरण-

कर्त्ता, बलकारी, और धातुओंको तृप्त करे ए मूंगकी बूंदीवाले लड्डुओं के गुण हैं।

मोतीचूरके लड्डू.

एवमेवप्रकारेणकार्याःबेसनमोदकाः। तेबल्यालघवःशीताःकिंचिद्वातकरास्तथा॥ विष्टंभिनोज्वरघ्नाश्चपित्तरक्तकफापहाः॥२१॥

अर्थ–इसीप्रकारसे बेसनकी बूंदीके लड्डू बनावे। **गुण**। बलकर्त्ता, हलके, शीतल, किंचित् वातकर्त्ता, विष्टंभी, ज्वरनाशक, रक्तपित्त और कफको नाश करते हैं।

दुग्धकूपिका.

तंडुलचूर्णविमिश्रितनष्टक्षीरेणसांद्रपिष्टेन। दृढकूपिकांविदध्यात्तांचपचेत्सर्पिषासम्यक्॥ अथतांकोरितमध्यांघनपयसापूर्णगर्भांगाम्। सट्टकमुद्रितवदनांसर्पिषिसुपक्वचदनांच॥२३॥ अथपांडुखण्डपाकेक्षपयेत्कर्पूरवासितेकु-शलः। अथदुग्धकूपिकासाबल्यापित्तानिलापहा २४ वृष्याशीतागुर्वीशुक्रकरीबृंहणीरुच्या। विदधातिकायपुष्टिंदृष्टिंदूरप्रसारिणींसुचि-रम्॥ २५॥

अर्थ–चांवलोंका चूर्णकर उसमें गाढा २ खोहा मिलायके दृढकूपिका (कुप्पीसी) बनावे उनको घीमें छोडकर पचावे, फिर उनको निकाल बीचमें छेदकर गाढा २ मिश्री मिला दूध भरदेवे, और सट्ट-कसे मुख बंदकर फिर घी में पक्क करे, जब पीले-रंगकी होजावे तब घीमें से निकालके कपूर मिली चाशनीमें तल लेवे। **गुण**। ए **दुग्धकूपिका**–बलकारी, पित्तवातनाशक, वृष्य, शीतल, भारी, वीर्य करनेवाली, बृंहणी, रुचिकारी हैं। देहको पुष्टकर्त्ता, और नेत्रकी ज्योतिको बढानेवाली हैं।

कुंडलिनी (जलेबी)

नूतनंघटमानीयतस्यांतःकुशलोजनः। प्रस्थार्द्धपरिमाणेनदध्नाऽम्लेनप्रलेपयेत्॥२६॥ द्विप्रस्थांसमितांतत्रदध्यम्लंप्रस्थसंमितम्। घृतमर्धशरावंचघोलयित्वाघृतेक्षिपेत्॥ आतपेस्थापयेत्तावद्यावद्यातितदम्लताम्। ततस्तत्प्रक्षिपेत्पात्रेसच्छिद्रेभाजनेनुतत्॥२८॥ परिभ्राम्यपरिभ्राम्यतत्संतप्तेघृतेक्षिपेत्। पुनःपुनस्तदावृत्याविदध्यान्मण्डलाकृतिम्॥ तांसुपक्वांघृतान्नीत्वासितापाकेतनुद्रवे। कर्पूरादिसुगंधैंचस्नापयित्वोद्धरेत्ततः॥३०॥ एषाकुंडलिनीनाम्नापुष्टिकांतिबलप्रदा। धातुवृद्धिकरीवृष्यारुच्याचक्षिप्रतर्पणी॥३१॥

अर्थ–नवीन मट्टीके घडेमें एक सेर खट्टे दहीका लेप करदेवे, फिर उसमें दोसेर मैंदा डाले और १ सेर खट्टा दही डाले, घी पावभर ले सबको घोलके ऊपरसे घीको डालके घोल डाले, फिर इसको जब-तक खट्टी न होवे तबतक धूपमें रख देवे, फिर इसको पैंदीमें छेदकीहुई उस हांडीमें भरके तईको भट्टीपर चढाय घी भर देवे, जब गरम होजावे तब उसपर उस छेदवाली हांडीको फेर २ के **जलेबी** बनावे और जब वह सिक जावे तब निकालके इकतारी चाश-नीमें पाग लेवे, और उस चाशनीमें कर्पूरादि सुगं-धित पदार्थभी डालने चाहिये। फिर उसे निकाल लेवे। **गुण**। यह **कुंडलनी** (जलेबी) पुष्टिकर्त्ता, कांति-कर्त्ता, बलदायक, रसरक्तादि धातुओंको बढावे, वृष्य, रुचिकारी, और तत्काल धातुओंको तर्पण करती है।

सिखरन (रसाला)

आदौमाहिषमम्लमंबुरहितंदध्याढकं शर्करांम्। शुभ्रांप्रस्थयुगोन्मितांशु-चिपटेकिंचिच्चकिंचित्क्षिपेत्॥ दु-ग्धेनार्द्धघटेनमृन्मयनवस्थाल्यांदृढंस्राव-येत्। एलाबीजलवंगचंद्रमरिचैर्या-ग्यैश्चतद्योजयेत्॥ ३२॥ भीमेनप्रियभोजनेनरचितानाम्नारसा-लाख्यम्। श्रीकृष्णेनपुरापुनःपुनरि-यंप्रीत्यासमास्वादिता॥ एषायेनव-

संतवर्जितदिनेसंसेव्यते नित्यशस्तस्य-
स्यादतिवीर्यवृद्धिरनिशंसर्वेद्रियाणां-
बलम् ॥ ३३ ॥
ग्रीष्मेतथाशरदियेरविशोषितांगाः
येचप्रमत्तवनितासुरतातिखिन्नाः ।
येचापिमार्गपरिसर्पणशीर्णगात्रास्ते-
षामियंवपुषिपोषणमाशुकुर्यात् ॥ ३४ ॥
रसालाशुक्रलाबल्यारोचनीवातपित्तजित् ।
दीपनीबृंहणीस्निग्धामधुराशिशिरासरा ॥
रक्तपित्तंतृषांदाहंप्रतिश्यायंविनाशयेत् ॥ ३५ ॥

अर्थ–प्रथम खटाई और जलरहित गाढा भैंसका दही ४ सेर लेवे, इसमें २ सेर सफेद बूरा मिलावे, फिर इसको स्वच्छ गाढे कपडेमें डालके हाथोंसे मले तो सब दही छन २ के नीचे के पात्रमें एकत्र होगा परंतु इसमें पांचसेर दूधकी धार डालकर छाने, और नीचे मिट्टीका पात्र रक्खे जब सब दही छन जावे तब इसमें इलायचीकेबीज, लौंग, भीमसेनी कपूर, काली-मिरच, इनका चूर्ण [शहद] डाले। यह भोजन-प्रिय भीमसेनने **रसाला** बनाई और श्रीकृष्णने परम प्रीतिके साथ वारंवार भोजन करी। जो प्राणी इसको वसंतऋतुको त्यागकर नित्य भोजन करते हैं उनके अत्यंत वीर्य वृद्धि होय, और सर्वइन्द्रियोंमें बल आवे। ग्रीष्मऋतु वा शरदऋतुमें सूर्यकी धूपसे शुष्क देहवालोंको तथा प्रमत्त स्त्रीके साथ विलास करनेसे जो खेदित होगए हैं, तथा जिनका बहुत रास्ता चलनेसे देह बिखरगया है उनके देहको यह **श्रीखंड** तत्काल पुष्ट करता है। **रसाला** (श्रीखंड) शुक्रकर्ता, बल-कर्त्ता, रुचिकारी, वातपित्तको जीतने वाली, दीपनी, बृंहणकारी, स्निग्ध, मधुर, शीतल, और दस्तावर। यह रक्तपित्त, प्यास, दाह, सरेकमां, इनको नष्ट करे।

शर्करोदक (शरबत)

जलेनशीतलेनैवघोलिताशुभ्रशर्करा ।
एलालवंगकर्पूरमरिचैश्चसमन्विता ॥ ३६ ॥
शर्करोदकनाम्नातत्प्रसिद्धंविदुषांमुखे ।
शर्करोदकमाख्यातंशुक्रलंशिशिरंसरम् ॥ ३७ ॥
बल्यंरुच्यंलघुस्वादुवातपित्तप्रणाशनम् ।
मूर्च्छाच्छर्दितृषादाहज्वरशांतिकरंपरम् ॥ ३८ ॥

अर्थ–शीतल जलमें सफेद, बूरा वा खांडके घोले घोले फिर छोटी इलायची, लौंग, भीमसेनी कपूर और काली मिरच इनको जलमें बारीक पीस उसी जलमें मिलाय देवे, फिर स्वच्छ कपडेमें इसको छान-लेय, इसे संस्कृतमें **शर्करोदक** और हिन्दीमें **शर-बत** कहतेहैं। गुण। वीर्य प्रकटकरे, शीतल, दस्ता-वर, बलकारी, रुचिकर, हलका, स्वादिष्ट, वातपित्त-नाशक, मूर्च्छा, वमन, तृषा, दाह और ज्वर इनको शांत करे [एक शरबत वह होता है कि जिसमें औषधोंका अर्क डालके अग्निपर सिद्ध करते हैं, जैसे-नीबूका शरबत, सहतूतका, अनारका, अंगूरका, इत्यादि]

प्रपानक (पना) आम.

आम्रमामंजलेस्विन्नंमर्दितंदृढपाणिना ।
सितादीतांबुसंयुक्तंकर्पूरमरिचान्वितम् ॥ ३९ ॥
प्रपानकमिदंश्रेष्ठंभीमसेनेननिर्मितम् ।
सद्योरुचिकरंबल्यंशीघ्रमिंद्रियतर्पणम् ॥ ४० ॥

अर्थ–कच्ची अमियाओंको जलमें औंटाकर उनके गूदेको हाथोंसे मीड डाले, फिर इसमें सफेद बूरा, शीतलजल, और कपूर, कालीमिरच, ए अनुमान माफिक डाले तो **आमकापना** बने। यह श्रेष्ठ प्रपा-नक भीमसेनने निर्माण कराहै-यह तत्काल रुचि-कारक, बलकारी, तत्काल इन्द्रियोंको तृप्त करने-वाला है।

अम्लिका प्रपानकम्.

अम्लिकायाःफलंपक्वंमर्दितंवारिणादृढम् ।
शर्करामरिचैर्मिश्रंलवंगेंदुसुवासितम् ॥ ४१ ॥
अम्लिकाफलसंभूतंपानकंवातनाशनम् ।
पित्तश्लेष्मकरंकिंचित्सुरुच्यंवह्निबोधनम् ॥

अर्थ–पकीहुई उत्तम इमलीको जलमें भिगोय देवे फिर हाथोंसे मलकर कपडेसे छानलेवे, फिर इसमें सफेद बूरा, कालीमिरच, लौंग, और भीमसेनी कर्पूर अनुमान माफिक मिलावे यह इमलीका पना

है । **गुण** । वातनाशक, कुछ २ पित्तकफकर्त्ता, रुचिकारी, और अग्निको दीपन करनेवाला है ।

निंबूकाफल प्रपानकम्.

भागैकंनिंबुजंतोयंषड्भागंशर्करोदकम् । लवंगमरिचैर्मिश्रंपानंपानकमुत्तमम् ॥४३ ॥ निंबुफलभवंपानमत्यम्लंवातनाशनम् । वह्निदीप्तिकररुच्यंसमस्ताहारपाचकम् ॥४४॥

अर्थ–नींबूकारस १ भाग, सफेदबूरेका शरबत ६ भाग, तथा लौंग, कालीमिरच, इनको पीसकर मिलावे तो यह सब पानकोंमें उत्तम **नींबूका** पना बने । **गुण** । अत्यंत खट्टा, वातनाशक, अग्निदीप्तिकर, रुचिकारी, और संपूर्ण भोजन करेहुए आहारको पाचन करनेवाला है ।

धान्याकपानकम्.

शिलायांसाधुसंपिष्टंधान्याकंवस्त्रगालितम् ॥ शर्करोदकसंयुक्तंकर्पूरादिसुसंस्कृतम् ॥ नूतनेमृन्मयेपात्रेस्थितंपित्तहरंपरम् ॥ ४५ ॥

अर्थ–प्रथम रात्रिमें धनियेको किसी कोरे कुल्हडेमें भिगोय देवे, फिर प्रातःकाल शिललोढेसे पीसके कपडेसे इसको छान लेवे, फिर मिश्रीका शरबत मिलाय कर्पूर आदिसे सुगंधित करे इसको कोरे मिट्टीके कुल्हडोंमें भरके पीवे तो पित्तके उपद्रवको हरण करे ।

कांजी.

कांजीकंरोचनंरुच्यंपाचनंवह्निदीपनम् । शूलाजीर्णविबंधघ्नंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ नभवेत्कांजिकंयत्रतत्रझालीःप्रदीयते ॥४६॥

अर्थ–कांजीके बनानेकी विधि प्रथम कह आए हैं अब उसके **गुण** कहते हैं । रोचक; पाचक, अग्निको दीपनकर्त्ता, शूल, अजीर्ण और विबंधको दूर करे, कोठेको शुद्ध करती है । जहांपर कांजी न मिले वहां **झाली** देनी चाहिये सो लिखते हैं ।

झाली.

आममाम्रफलंपिष्टंराजीकालवणान्वितम् ॥ भ्रष्टहिंगुयुतंपूतंघोलितंझालिरुच्यते ॥४७॥ झालिर्हरतिजिह्वायाःकुंठत्वंकंठशोधिनी ॥ मंदंमंदंतुपीतासारोचनीवह्निबोधिनी ॥४८॥

अर्थ–कच्ची अमियाओंको पीस उसमें राई, सेंधानिमक, भुनीहींग, इनको मिलायके जलमें घोलकर जो पदार्थ तयार करा जाता है उसको झाली (जाली) कहते हैं । **गुण** । जाली जीभ के जकडनेको दूर करे, धीरे २ इसको पीवे तो रुचिकरे और अग्निको दीपन करती है ।

तक्रम्.

तुर्यांशेनजलेनसंयुतमतिस्थूलंसदम्लंदधि । प्रायोमाहिषमंबुकेनविमलेमृद्भाजनेगालयेत् भ्रष्टंहिंगुचजीरकंचलवणंराजींचकिंचिन्मितम् पिष्टंतत्रविमिश्रयेद्भवतितत्तक्रंनकस्यप्रियम् ॥ ४९ ॥ तक्रंरुचिकरंवह्निदीपनंपाचनंपरम् । उदरेयेगदास्तेषांनाशनंतृप्तिकारकम् ॥ ५० ॥

अर्थ–अत्यंत गाढे और खट्टे दहीको इसमें भी भैंसका होय तो बहुत उत्तम है उसमें दहीका चतुर्थांश जल डालके मट्टीके बरतनमें छान लेवे, फिर इसमें भुनी हींग, जीरा, निमक, राई, इनको पीसके अनुमान माफिक मिलाय देवे तो यह तक्र (छाछ) किसको प्रिय नहीं होती । **गुण** । छाछ–रुचिकारी. दीपन, अत्यंत–पाचन, और पेटके रोगोंको नाशकर्त्ता तथा तृप्त करनेवाली है ।

दुग्ध (दूध)

विदाहीन्यन्नपानानियानिभुंक्तेहिमानवः । तद्विदाहप्रशांत्यर्थंभोजनांतेपयःपिबेत् ॥५१॥

अर्थ–दूधका विशेष वर्णन आगे दुग्धवर्गमें कहेंगे, यहां थोडेसे गुण कहतेहैं । **गुण** । यह प्राणी जो दाह कर्ता अन्न जलोंको सेवन करता है उनके दाह शांति करनेको भोजनके अंतमें दूध पीना चाहिये ।

सत्तू.

धान्यानिभ्राष्ट्रभ्रष्टानियंत्रपिष्टानिशक्तवः ॥

अर्थ–चांवल–गेंहू आदि धान्योंको भाडमें भुनायके चक्कीमें पीस लेतेहैं उस चूनको **सत्तू** कहतेहैं ।

जौका सत्तू.

यवजाःशक्तवःशीतादीपनालघवःसराः ।
कफपित्तहरारूक्षालेखनाश्चप्रकीर्त्तिताः ॥५२॥
तेपीताबलदावृष्याबृंहणाभेदनास्तथा ।
तर्पणामधुरारुच्याःपरिणामेबलापहाः ॥ ५३॥
कफपित्तश्रमक्षुत्तृड्वृद्धिनेत्रामयापहाः ।
प्रशस्ताघर्मदाहाढ्यव्यायामार्त्तशरीरिणाम् ॥

अर्थ-जौके सत्तूका **गुण** । जौका सत्तू-शीतल, दीपन, हलका, दस्तावर, कफपित्तनाशक, रूक्ष और लेखन है । इसका पीना बलदायक, वृष्य, बृंहण, भेदक, तृप्तकर्त्ता, मधुर, रुचिकारी और अंतमें बलनाशक है । तथा कफ, पित्त, परिश्रम, भूख, प्यास, अंडवृद्धि और नेत्ररोगको नष्ट करे । यह पसीनेसे और दाहसे जो व्याकुल हैं तथा दंड कसरत करके जो थके हैं उनको हितकारी कहाहै ।

चना और जौका सत्तू.

निस्तुषैश्चणकैर्भृष्टैस्तुर्यांशैश्चयवैःकृताः ।
शक्तवःशर्करासर्पिर्युक्ताग्रीष्मेऽतिपूजिताः ॥

अर्थ-छिलके रहित भुने चनोंमें तुषा रहित चौथाई भाग भुने जौ मिलायके जो सत्तू बनाया गया है, वह **चनाजौका सत्तू** कहलाताहै । इसमें सफेद बूरा-घी, डालके गरमियोंमें भक्षण करना हितकारी है ।

शालि सत्तू.

शक्तवःशालिसंभूतावह्निदालघवोहिमाः ।
मधुराग्राहिणोरुच्यापथ्याश्चबलशुक्रदाः ॥
नभुक्त्वानरदैश्छित्त्वानानिशायांनवाबहून् ।
नजलांतरितानाद्भिःशक्तूनद्यान्नकेवलान् ॥५७॥
पृथक्पानंपुनर्द्दानमामिषंपयसानिशि ।
दंतच्छेदनमुष्णंचसप्तशक्तुषुवर्जयेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ-चावलोंका सत्तू अग्निवर्द्धक, हलका, शीतल, मधुर, ग्राही, रुचिकर्त्ता, पथ्य, बल और शुक्रको करताहै । अब **सत्तू भक्षणके नियम** कहतेहैं । भोजन करके सत्तू न खाय, दांतोंसे रोंथकर न खाय, रात्रिमें न खाय, बहुत न खाय, एक जलमें दूसरे प्रकारका जल मिलायके न खावे, मिठाई आदिके विना केवल जलसे सत्तू मात्र न खाय । अलगपीना, एक वार देकर दूसरे देना, मांसके साथ और दूधके साथ, रात्रिमें, दांतोंसे रोंथकर और गरम करके, ऐसे सत्तूमें सात प्रकार वर्जित है ।

बहौरी.

यवास्तुनिस्तुषाभ्रष्टाःस्मृताधानाइतिस्त्रियाम्
धानाःस्युर्दुर्जरारूक्षास्तृट्प्रदागुरवश्चताः ॥
तथामेहकफच्छर्दिनाशिन्यःसंप्रकीर्तिताः

अर्थ-तुषरहित भुने जौओंको **धाना** (बौहरी) कहतेहैं । **गुण** । बौहरी-दुर्जर (कठिनतासे पचे) रूखी, तृषा लगानेवाली, भारी । तथा प्रमेह, कफ और वमनके नाश करने वाली जाननी ।

खील (लाजा)

येषांस्युस्तण्डुलास्तानिधान्यानिसतुषाणिच
भ्रष्टानिस्फुटितान्याहुर्लाजानीतिमनीषिणः
लाजाःस्युर्मधुराःशीतालघवोदीपनाश्चते ॥
स्वल्पमूत्रमलारूक्षाबल्याःपित्तकफच्छिदः ।
छर्द्यतीसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहाः ॥ ६१ ॥

अर्थ-छिलके युक्त चावलोंके धान्यको भून लेवे फिर जब वो खिल जावे तो उनके तुसोंको सूपसे फटकके दूर करे, इनका नाम संस्कृतमें **लाजा** और हिन्दीमें **खील** कहतेहैं । **गुण** । मधुर, शीतल, हलकी, अग्नि दीपनकर्त्ती, अल्प मूत्रके करने वाली, रूक्ष, बलकर्त्ती, पित्त, कफ, वमन, अतिसार, दाह, रुधिर-विकार, प्रमेह, मेदोरोग और तृषा, इनको दूर करे । अपने देशमें खील दिवालीके दिन बहुत वर्तो जातीहैं । और इनको बताशोंके साथ खातेहैं ।

चिउरा (चिरमुरा)

शालयःसतुषाआर्द्राभ्रष्टाअस्फुटिताश्चते ।
कुट्टिताश्चिपिटाःप्रोक्तास्तेस्मृताःपृथुकाअपि
पृथुकागुरवोवातनाशनाःश्लेष्मलाअपि ।
सक्षीराबृंहणावृष्याबल्याभिन्नमलाश्चते॥ ६३ ॥

अर्थ-तुषसहित हरे शालीचावलोंको भूनते हैं । फिर उन विना खिले हुएनको ओखलीमें डालके गरमागरमोंको कूटते हैं । तो वह कुटकर चपटे होजाते हैं । उनको संस्कृतमें **पृथुक** और हिन्दी भाषामें

चिरवा अथवा चिउरा कहतेहैं । गुण । भारी, वातनाशक और कफकर्त्ता, यदि इनको दूधके साथ भक्षण करे तो बृंहण, वृष्य, बलकारी और दस्तलानेवाले जानने ।

होला.

अर्द्धपक्वैःशमीधान्यैस्तृणभ्रष्टैश्चहोलकः ।
होलकोऽल्पानिलोमेदःकफदोषत्रयापहः ॥
भवेद्योहोलकोयस्यसचतत्तद्गुणोभवेत् ॥६४॥

अर्थ–फलियोंके धान आधे भुनेहुए और तिनका जिनका जल गया हो उनको होलक अर्थात् होला, या होरा कहतेहैं । गुण । जिस धानका होला होय वह उसी धानके समान गुण करताहै । जैसे चनेके होले चनेके समान गुण करते हैं ।

ऊंबी.

मंजरीत्वर्धपक्वायायवगोधूमयोर्भवेत् ।
तृणानलेनसंभ्रष्टाबुधैरुंबीतिसास्मृता ॥
उंबीकफप्रदाबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ६५

अर्थ–जौ गेहूंकी अधपकी बालको तिनकेकी आगमें भून लेवे । इसको पंडितजन उंबी कहते हैं । गुण । कफकर्त्ता, बलकारी, हलकी, और पित्तकफको नाश करे है ।

घूंघनी.

अर्धस्विन्नास्तुगोधूमाअन्येऽपिचणकादयः ।
कुल्माषाइतिकथ्यंतेशब्दशास्त्रेषुपंडितैः ॥
कुल्माषागुरवोरूक्षावातलाभिन्नवर्चसः॥६६॥

अर्थ–गेहूं, चने आदि धानोंको अधभुने करलेवे इनको संस्कृतमें कुल्माष और हिन्दीमें घूंघनी कहते हैं । गुण । भारी, रूक्ष, वातकर्त्ता और दस्तलानेवाली हैं ।

तिलकुटा.

पललंतुसमाख्यातंसैवतिलपिष्टकम् ।
पललंमलकृद्वृष्यंवातघ्नंकफपित्तकृत् ॥
बृंहणंचगुरुस्निग्धंमूत्राधिक्यनिवर्त्तकम् ६७

अर्थ–तिलोंमें गुड अथवा शकर, सकोता आदि डालके कूट डाले इसको हिन्दी में तिलकुट कहते हैं । गुण । मलकर्त्ता, वृष्य, वातनाशक, कफपित्तकर्त्ता, बृंहण, भारी, स्निग्ध, और अधिक मूत्र उतरनेको दूर करे ।

पीना.

तिलकिट्टंतुपिण्याकंतथातिलखलिःस्मृता ।
पिण्याकोलेखनोरूक्षोविष्टंभीदृष्टिदूषणः ६८

अर्थ–तिलोंमें से तेल निकल जानेपर जो कीट रहजाता है उसको संस्कृतमें पिण्याक तथा तिलखलि और हिन्दीमें खल कहते हैं । गुण । लेखन, रूक्ष, विष्टंभी, और नेत्रोंकी ज्योति बिगाडने वाली है ।

तंडुलोमेहजंतुघ्नःसनवस्त्वतिदुर्जरः ॥ ६९ ॥

अर्थ–चांवल-प्रमेह और कृमिरोगको नष्ट करे और नये चांवल अत्यंत दुर्जर होते हैं ।

इति श्री शालिग्रामनिघंटौ कृतान्नवर्गः ।

अथवारिवर्गः ।

जलके नाम.

पानीयंसलिलंनीरंकीलालंजलमंबुच ।
आपोवार्वारिकंतोयंपयः पाथस्तथोदकम् ॥
जीवनंवनमंभोऽर्णोऽमृतंघनरसोऽपिच ॥१॥
पानीयंश्रमनाशनंक्लमहरंमूर्च्छापिपासापहम् ।
तंद्राच्छर्दिविबंधहृद्बलकरंनिद्राहरंतर्पणम् ॥
हृद्यंगुप्तरसंह्यजीर्णशमनंनित्यंहितंशीतलम् ।
लघ्वच्छंरसकारणंनिगदितंपीयूषवज्जीवनम् ॥

अर्थ–पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अंबु, आप, वार, वारि, तोय, पाथस्, उदक, जीवन, अंभ, अर्ण, अमृत, और घनरस, ए जलके संस्कृत नाम हैं । हिं. पानी, म. पाणी, तै. नीरु, का. मुनीरु, अ. माय, फा. आब, इं. वाटर, ला. एक्वा । गुण । श्रमनाशक, ग्लानिनाशक, मूर्च्छा, प्यास, तंद्रा, वमन, विबंध इनको दूर करे, बलकारी, निद्रानाशक, इन्द्रियोंको तृप्त करे, हृदयको हितकारी, इसका रस छिपा हुआ है । अजीर्णनाशक, नित्य हितकारी, शीतल, हलका, निर्मल, रसोंका कारण और अमृतके तुल्य सब प्राणियोंका जीवन है ।

जलके भेद.

पानीयंमुनिभिःप्रोक्तंदिव्यंभौममितिद्विधा ।
दिव्यंचतुर्विधंप्रोक्तंधाराजंकरकाभवम् ॥
तौषारंचतथाहैमंतेषुधारंगुणाधिकम् ॥ ३ ॥

अर्थ–मुनीश्वरों ने दिव्य और भौम इन दो भेदोंसे जल दो प्रकार का कहा है। तहां दिव्यजल चार प्रकार का है। जैसे धाराज, करकाभव, तौषार और हैम। इनमें धाराजल गुणों में श्रेष्ठ है।

धाराजलके गुण.

धाराभिःपतितंतोयंगृहीतंस्फीतवाससा ।
शिलायांवसुधायांवाधौतायांपतितंचतत् ॥४॥
सौवर्णेराजतेताम्रेस्फाटिकेकाचनिर्मिते ।
भाजनेमृन्मयेवापिस्थापितंधारमुच्यते ॥ ५ ॥
धारंनीरंत्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसंलघु ।
सौम्यंरसायनंबल्यंतर्पणंह्लादिजीवनम् ॥ ६ ॥
पाचनंमतिकृन्मूर्च्छातंद्रादाहश्रमक्लमान् ॥
तृष्णांहरतिनात्यर्थंविशेषात्प्रावृषिस्थितम् ७

अर्थ–धारारूपसे गिरेहुए जलको कपडेसे छानले जो कि धुलीहुई शिलामें अथवा पृथ्वीमें होवे। उसमेंसे सुवर्णके, चांदीके, तांबेके, स्फटिकमणिके, कांचके, अथवा मिट्टीके बासनमें भर लेना उसको **धाराजल** कहतेहैं। **गुण**। **धाराजल** त्रिदोषनाशक, गुप्तरस, हलका, शीतल, रसायन, बलकारी, तृप्तकर्ता, आह्लादकर्ता, जीवनप्रद, पाचन, बुद्धिवढानेवाला, मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम, क्लम (उकलाहट) और तृषाको दूर करे। परन्तु यह गुण शरदऋतुमें करेहै, वर्षाऋतुमें ये गुण अल्प कर्ता जानना।

धाराजलके भेद.

धाराजलंचद्विविधंगांगसामुद्रभेदतः ॥

अर्थ–धाराजल दो प्रकारका है एक गंगाका और दूसरा समुद्रका।

गंगाजल और समुद्रजलका लक्षण.

आकाशगंगासंबंधिजलमादायदिग्गजाः ।
मेघैरंतरितावृष्टिंकुर्वंतीतिवचःसताम् ॥ ८ ॥
गांगमाश्वयुजेमासिप्रायोवर्षतिवारिदः ।
सर्वथातज्जलंदेयंतथैवचरकेवचः ॥ ९ ॥
स्थापितंहैमजेपात्रेराजतेमृन्मयेऽपिवा ।
शाल्यन्नंयेनसंसिक्तंभवेदक्लेदिवर्णवत् ॥१०॥
तद्गांगंसर्वदोषघ्नंज्ञेयंसामुद्रमन्यथा ।
तत्तुसक्षारलवणंशुक्रदृष्टिबलापहम् ॥ ११ ॥
विस्रंचदोषलंतीक्ष्णंसर्वकर्मसुनोहितम् ।
सामुद्रंत्वाश्विनेमासिगुणैर्गांगवदादिशेत्॥१२॥
यतोऽगस्त्यस्यदिव्यर्षेरुदयात्सकलंजलम् ।
निर्मलंनिर्विषंस्वादुशुक्रलंस्याददोषलम् ॥१३॥
फूत्कारविषवातेननागानांव्योमचारिणाम् ।
वर्षासुसविषंतोयंदिव्यमप्याश्विनंविना ॥१४॥

अर्थ–सत्पुरुषोंका कथन है कि आकाशगंगा संबंधी जलको दिग्गज लेकर मेघोंमें छिपेहुए प्रायः आश्विन महिनेमें मेघद्वारा वर्षा करते हैं, वह जल सर्वथा सबको देना चाहिये, यह **चरकमें** भी लिखाहै। **गंगाजलकी परीक्षा**। सुवर्णके अथवा चांदीके अथवा मिट्टीके पात्रमें चांवल डालके जल-भर देवे, यदि वह चांवल बिगड़ें नहीं न उनका वर्ण पलटे तो **गंगाजल** जानना। यह सर्व दोषनाशक है, और यदि चांवल सड जावें और रंग पलट जावे तो उस जलको **समुद्रजल** जानना यह सर्व दोष कर्त्ता है। यह खारी, शुक्र, दृष्टि और बलका नाशक, दुर्गंधवाला, दोषकर्त्ता, तीक्ष्ण और यह सर्व कर्मोंमें हितकारी नहीं है। परन्तु आश्विन महिने में जो समुद्र-संबंधी वर्षाका जल है वह गंगाजल के समान गुण कर-नेवाला जानना। **कारण** कि आश्विन महिने में अगस्त्य ऋषिके उदय होनेसे संपूर्ण जल निर्मल, निर्विष, स्वादु, शुक्रकर्त्ता, और गुणकारी होते हैं। **अन्यत्रभी** लिखाहै कि आकाशमें विचरनेवाले सांपोंके फुंकारकी विषैल पवनसे वर्षाऋतुमें दिव्यजलभी विषयुक्त होजातेहैं। परन्तु आश्विन महिनेमें विषयुक्त नहीं होते।

अनार्त्तवजलके दोष.

अनार्त्तवंप्रमुंचंतिवारिवारिधरास्तुयत् ।
तत्त्रिदोषायसर्वेषांदेहिनांपरिकीर्तितम् १५

अर्थ–जो पूंससे लेकर चारमहिने पर्यंतका वर्षाका जलहै वह **अनार्त्तव** अर्थात् कुऋतुका जल जानना। यह संपूर्ण प्राणियोंको त्रिदोष करनेवाला है।

करकाजलके लक्षण और गुण.

दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहताःखात्पतंतियाः
पाषाणखण्डवच्चापस्ताःकारकयोऽमृतोपमाः
करकाजंजलंरूक्षंविशदंगुरुचस्थिरम्।
दारुणंशीतलंसांद्रंपित्तहृत्कफवातकृत्॥ १७॥

अर्थ–दिव्य पवन और बिजलीके संयोगसे ताडित हो जो जल आकाशसे पत्थरके रूपमें अर्थात् ओले रूपसे गिरताहै उसको **करकाजल** कहते हैं–यह अमृतके तुल्यहै। **गुण**। ओलेका जल रूक्ष, विशद, भारी, स्थिर (बंधाहुआ) दारुण, शीतल, गाढा, पित्तहरण कर्त्ता और वादी, कफको करने वालाहै।

तौषारजलके लक्षण और गुण.

अपिनद्याःसमुद्रांतावह्निरापस्तदुद्भवाः।
धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तुताःस्मृताः।
अपथ्याःप्राणिनांप्रयोभूरुहाणांतुनोहिताः॥
तुषारांबुहिमंरूक्षंस्याद्वातलमपित्तलम्।
कफोरुस्तंभकंठाग्निमेहगंडादिरोगनुत्॥ १९॥

अर्थ– नदीसे लेकर समुद्र पर्यंतमें अग्नि है उस अग्निसे उत्पन्न जल धूएंके अवयव सहित **तुषारसंज्ञक** कहाताहै, अर्थात् जिसको ओस कहतेहैं वह प्राणियोंको अहितहै और वृक्षोंकोभी अहितकारी है। **गुण**। तुषारकाजल-शीतल, रूक्ष, वातकर्त्ता और पित्त नहीं करे। कफ, ऊरुस्तंभ, कंठरोग, जठराग्नि, प्रमेह और गलगंडादि रोगको दूर करे।

हैमजलके लक्षण और गुण.

हिमवच्छिखरादिभ्योद्रवीभूयाभिवर्षति।
यत्तदेवहिमंहैमंजलमाहुर्मनीषिणः॥
हिमांबुशीतंपित्तघ्नंगुरुवातविवर्द्धनम्॥ २०॥
हिमंतुशीतलंरूक्षंदारुणंसूक्ष्ममित्यपि।
नतद्दूषयतेवातंनचपित्तंनवाकफम्॥ २१॥

अर्थ–हिमालय सदृश बरफके पहाड़ों से जो बरफ गलकर जल टपकता है उसको बुद्धिमान् **हिमजल** कहतेहैं। **गुण**। **बरफका जल**-शीतल, रूक्ष, दारुण, सूक्ष्म, यह वात, पित्त और कफको दूषित नहीं करता।

भौमजलके भेद.

भौममंभोनिगदितंप्रथमंत्रिविधंबुधैः।
जांगलंपरमानूपंततःसाधारणंक्रमात्॥ २२॥

अर्थ–भौमजल अर्थात् पृथ्वीसंबंधी जल तीन प्रकारका है, एक **जांगलजल**, दूसरा **आनूप जल**, और तीसरा **साधारण**। इनके लक्षण और गुण आगे कहते हैं।

जांगलजलके लक्षण.

अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्चपित्तरक्तामयान्वितः॥
ज्ञातव्योजांगलोदेशस्तत्रत्यंजांगलंजलम्॥२३॥

अर्थ–जिस देशमें थोड़ा जल और थोडे वृक्ष हों तथा जहां प्राणी पित्त और रुधिरके रोगवाले हो उस देशको **जांगलदेश** जानना, उस देशके जलको **जांगलजल** कहतेहैं।

आनूपजलके लक्षण.

बहंबुर्बहुवृक्षश्चवातश्लेष्मामयान्वितः।
देशोऽनूपइतिख्यातआनूपंतद्भवंजलम्॥२४॥

अर्थ–जिस देशमें बहुत जल और बहुत वृक्ष हों, तथा जहांके रहनेवाले प्राणी वातकफकी बिमारीसे बिमार रहें, उसको **अनूपदेश** जानना, उस देशके जलको **आनूपजल** कहतेहैं।

साधारण जलके लक्षण.

मिश्रचिह्नस्तुयोदेशःसहिसाधारणःस्मृतः।
तस्मिन्देशेयदुदकंतत्तुसाधारणंस्मृतम्॥२५॥

अर्थ–जिस देशमें जांगल और अनूप दोनों देशोंके लक्षण मिलते हों तथा बिमारीभी मिश्रित होतीहों उस देशको **साधारण** कहतेहैं। उसका जल साधारण है।

अनूपादि त्रिविधजलके गुण.

जांगलंसलिलंरूक्षंलवणंलघुपित्तनुत्।
वह्निकृत्कफहृत्पथ्यंविकारान्हरतेबहून्॥

आनूपंवार्यभिष्यंदिस्वादुस्निग्धंघनंगुरु ।
वह्निहृत्कफकृद्धृद्यंविकारान्कुरुतेबहून् ॥
साधारणंतुमधुरंदीपनंशीतलंलघु ।
तर्पणंरोचनंतृष्णादाहदोषत्रयप्रणुत् ॥ २८ ॥

अर्थ-जांगलजल रूक्ष, नमकीन, हलका, पित्त-हरण कर्त्ता, जठराग्नि-वर्द्धक, कफ-नाशक, पथ्य और यह बहुत से विकारों को हरण करे है। **अनूपजल**-अभिष्यंदी, स्वादु, स्निग्ध, गाढा, भारी, मंदाग्निकर्त्ता, कफकारी, हृद्य, और अनेक विकारों को करता है। **साधारण**-जल मधुर, दीपन, शीतल, हलका, तृप्तकारी, रोचक, तृषा, दाह और त्रिदोष को हरण करे।

नदीजलके लक्षण गुण.

नद्यानद्यस्यवानीरंनादेयमितिकीर्त्तितम् ।
नादेयमुदकंरूक्षंवातलंलघुदीपनम् ॥
अनभिष्यंदिविशदंकटुकंकफपित्तनुत् ॥२९॥
नद्यःशीघ्रवहालघ्व्यःसर्वायानिर्मलोदकाः ।
गुर्व्यःशैवलसंछन्नामंदगाःकलुषाश्चयाः ॥३०॥
हिमवत्प्रभवाःपथ्योनद्योऽश्माहतपाथसः ।
गंगाशतद्रुसरयूयमुनाद्यागुणोत्तमाः ॥ ३१ ॥
सह्यशैलभवानद्योवेणीगोदावरीमुखाः ।
कुर्वंतिप्रायशःकुष्ठमीषद्वातकफापहाः ॥ ३२ ॥
नदीसरस्तडागस्थकूपप्रस्रवणादिजे ।
उदकेदेशभेदेनगुणान्दोषांश्चलक्षयेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ-नदी और नदके जलको **नादेयजल** कहते हैं। **गुण**। रूखा, वातकर्त्ता, हलका, दीपन, अभिष्यंदी नहीं है। विशद, चरापरा, तथा कफपित्त हरण कर्त्ता है। जो नदी जल्दी बहनेवाली तथा जिनका निर्मल जल है उनका जल हलका है, और जो मंद-बहती है तथा जिनका जल काई से ढका रहता है या गदला रहता है उनका जल भारी जानना। हिमालय पहाड से उत्पन्न होनेवाली नदी जो पत्थरोंसे टकराती हुई बहती हैं। जैसे-गंगा, सतलज, सरयू (घाघरा) और यमुना आदि इनका जल पथ्य और गुणों में उत्तम है। **सह्याचल** पर्वतसे निकली नदी कृष्णा, वेणी, गोदावरी आदि यह प्रायः कुष्ठरोग कारक और कुछ वातकफको करतीहैं। नदी, सरोवर, तलाव, कूआ, झरना, इनके जलमें देशभेद करके गुण और दोष जानने चाहिये।

औद्भिद.

विदार्यभूमिंनिम्नायामहत्याधारयास्रवेत् ।
तत्तोयमौद्भिदंनामवदंतीतिमहर्षयः ॥ ३४ ॥
औद्भिदंवारिपित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम् ।
प्रीणनंमधुरंबल्यमीषद्वातकरंलघु ॥ ३५ ॥

अर्थ—नीची पृथ्वी को फाड़कर जो बड़ीधारासे बहे उस जलको **औद्भिद** जल कहते हैं। **गुण**। औद्भिदजल-पित्तनाशक, अविदाही, अतिशीतल, प्रीणन, मधुर, बलकारी, किंचिन्मात्र वात करता, और हलका है।

झरने के जलके लक्षण, गुण.

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहोनिर्झरोझरः ।
सतुप्रस्रवणश्चापितत्रत्यंनैर्झरंजलम् ॥ ३६ ॥
नैर्झरंरुचिकृद्वीरंकफघ्नंदीपनंलघु ।
मधुरंकटुपाकंचवातलंस्यादपित्तलम् ॥३७॥

अर्थ—जो पर्वतकी शिखिर से जल बहता है उस प्रवाहको निर्झर, झर और प्रस्रवण कहते हैं। उस प्रस्रवण जलको **नैर्झर** अर्थात् झरने का जल कहते हैं। **गुण**। झरनेका जल--रुचिकारी, कफनाशक, दीपन, हलका, मधुर, कटुपाकी वातकर्त्ता और पित्तनाशक जानना।

सारस जलके लक्षण, गुण.

नद्याःशैलाद्विरुद्धाम्बायत्रसंश्रित्यतिष्ठति ।
सत्सरोजलसच्छन्नंतदंभःसारसंस्मृतम् ॥३८॥
सारसंसलिलंबल्यंतृष्णाघ्नंमधुरंलघु ।
रोचनंतुवरंरूक्षंबद्धमूत्रमलंस्मृतम् ॥ ३९ ॥

अर्थ-जहां नदी, पर्वत आदिसे रुककर ठहर जावे उसको **सर** (झील) कहतेहैं और उस जलको **सारसजल** जानना। **गुण**। सारसजल-बलकर्त्ता, तृषानाशक, मधुर, हलका, रुचिकारी, कषैला, रूक्ष तथा मलमूत्रका बांधने वाला है।

तलावके जलके लक्षण, गुण.

प्रशस्तभूमिभागस्थोबहुसंवत्सरोषितः ।
जलाशयस्तडागःस्यात्ताडागंतज्जलंस्मृतम् ॥

ताडागमुदकंस्वादुकषायंकटुपाकिच ।
वातलंबद्धविड्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥४१॥

अर्थ—उत्तम पृथ्वीके भाग में बहुत वर्षोके संचित जलाशयको तडाग (तालाब) और उस के जलको ताडाग जल कहतेहैं । **गुण** । तालावका जल-स्वादिष्ट, कसेला, कटुपाकी, वातल, तथा मलमूत्रका बांधनेवाला, एवं रुधिरविकार, पित्त और कफको नष्ट करे ।

बावडीके जलके लक्षण, गुण.

पाषाणैरिष्टिकाभिर्वाबद्धःकूपोबृहत्सरः ।
ससोपानाभवेद्वापीतज्जलंवाप्यमुच्यते ॥४२॥
वाप्यंवारियदिक्षारंपित्तकृत्कफवातहृत् ।
तदेवमिष्टंकफकृत्वातपित्तहरंभवेत् ॥ ४३ ॥

अर्थ–जो पत्थर अथवा ईंटोंसे बड़ा कूआ बनाया जावे और जिसमें जाने आने की पैंड़ी (पलकारी) बनाई जावें, उसको **वापी** अर्थात् **बावड़ी** कहतेहैं । और उस बावड़ीके जलको **वाप्यजल** कहते हैं । **गुण** । बावडीका जल यदि **खारी** होय तो पित्तकर्त्ता, कफवातनाशक । और **मीठा** होय तो कफकर्त्ता और वातपित्तहरण कर्त्ता जानना ।

कूआके जलके लक्षण, गुण.

भूमौखातोऽल्पविस्तारोगंभीरोमण्डलाकृतिः
बद्धोऽबद्धःसकूपःस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते
कौपंपयोयदिस्वादुत्रिदोषघ्नंहितंलघु ।
तत्क्षारंकफवातघ्नंदीपनंपित्तकृत्परम् ॥ ४५ ॥

अर्थ–पृथ्वी में छोटासा गहरा गोल गड्ढा खोदकर जब जल निकल आवे तब उसको ईंट पत्थरों से बनायले अथवा कच्चाही रक्खे उसकी **कूप** (कूआ) संज्ञा है । उस कूपजलको **कौपजल** कहतेहैं । **गुण** । कूएका जल यदि **मिष्ट** होय तो त्रिदोषनाशक, हितकर्त्ता, हलका । और **खारी** होययो कफवात नाशक, दीपन, और अत्यन्त पित्तको बढ़ावे ।

चौआके जलके, लक्षण गुण.

शिलाकीर्णंस्वयंशुभ्रंनीलांजनसमोदकम् ।
लतावितानसंछन्नंचौंड्यमित्यभिधीयते ॥४६॥
अश्मादिभिरबद्धंयत्तच्चौंड्यमितिचापरे ।
तत्रत्यमुदकंचौंड्यंमुनिभिस्तदुदाहृतम् ॥
चौंड्यंवह्निकरंनीरंरूक्षंकफहरंलघु ।
मधुरंपित्तनुद्रुच्यंपाचनंविशदंस्मृतम् ॥

अर्थ–जो गड्ढा चारों ओरसे पत्थरकी शिलाओं से व्याप्तहो तथा जिसका जल नील अंजनके समान स्वच्छ होवे और जिसके ऊपर लता–प्रतान छारहा हो उसको **चौंड्य** कहतेहैं । कोई वैद्य कहताहै कि जो पत्थर आदिसे न बना हो किंतु स्वयं बना हुआ हो, उसको **चौंड्य** और उस के जलको **चौंड्यजल** कहते हैं । **गुण** । जठराग्निवर्द्धक, रूक्ष, कफहर, हलका, मधुर, पित्तनाशक, रूक्ष, पाचन और विशद जानना ।

तलैयाके जलके लक्षण, गुण.

अल्पंसरःपल्वलंस्यान्नात्रचंद्रर्क्षगौरवौ ।
नतिष्ठतिजलंकिंचित्सप्तत्यंधारिपाल्वलम् ॥
पाल्वलंवार्यभिष्यंदिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत् ॥

अर्थ–छोटे सरको **पल्वल** अर्थात् **तलैया** कहतेहैं । इस में सावन भादों के महिनेमें अर्थात् वर्षा में ही जल रहताहै, और चंद्रमा तथा नक्षत्रों का प्रकाश भी नहीं ठहरताहै । यह अभिष्यंदी, भारी, स्वादिष्ट, और त्रिदोषको करनेवाला है ।

विकिरजलके लक्षण, गुण.

नद्यादिनिकटेभूमिर्याभवेद्वालुकामयी ।
उद्धाट्यतेततोयत्तत्तज्जलंविकिरंविदुः ॥ ५० ॥
विकिरंशीतलंस्वच्छंनिर्दोषंलघुचस्मृतम् ।
तुवरंस्वादुपित्तघ्नंक्षारंतत्पित्तलंमनाक् ॥ ५१ ॥

अर्थ–नदीके समीपकी पृथ्वी जो वालूयुक्त है । जिसमें गड्ढा खोदकर जलको निकालते हैं उस जलको **विकिर** जल कहते हैं । **गुण** । यह शीतल, स्वच्छ, निर्दोष, हलका, कषेला, स्वादिष्ट, पित्तनाशक, खारी और किंचित् पित्तको करेहै ।

केदारजलके लक्षण, गुण.

केदारंक्षेत्रमुद्दिष्टंकैदारंतज्जलंस्मृतम् ।
कैदारंवार्यभिष्यंदिमधुरंगुरुदोषकृत् ॥ ५२ ॥

अर्थ–केदार नाम खेतका है इसी से खेतके जलको **कैदारजल** कहतेहैं । **गुण** । केदारजल, अभिष्यंदी, मधुर, भारी और त्रिदोष कर्त्ता है ।

वर्षाके जलके लक्षण, गुण.

वार्षिकंतदहर्वृष्टंभूमिस्थमहितंजलम् ।
त्रिरात्रमुषितंतत्तुप्रसन्नममृतोपमम् ॥५३॥

अर्थ–जो वर्षाका जल तत्काल वर्षा हो और पृथ्वी में स्थित हो वह अहितहै, यदि वही जल तीन रात्रि वासित होगया होय अर्थात् तीन रात्रि व्यतीत होनेपर वह स्वच्छ जल अमृतके तुल्य है ।

हेमंतादि कालमें विहितजल.

हेमंतेसारसंतोयंताडागंवाहितंस्मृतम् ।
हेमंतेविहितंतोयंशिशिरेऽपिप्रशस्यते ॥५४॥
वसंतग्रीष्मयोःकौपंवाप्यंवानैर्झरंजलम् ।
नादेयंवारिनादेयंवसंतग्रीष्मयोर्बुधैः ॥
विषवद्धनवृक्षाणांपत्राद्यैर्दूषितंयतः ॥५५॥
औद्भिदंवांतरिक्षंवाकौपंवाप्रावृषिस्मृतम् ।
शस्तंशरदिनादेयंनीरमंशूदकंपरम् ॥५६॥
दिवारविकरैर्जुष्टंनिशिशीतकरांशुभिः ।
श्येयमंशूदकंनामस्निग्धंदोषत्रयापहम् ॥५७॥
अनभिष्यंदिनिर्दोषमांतरिक्षजलोपमम् ।
बल्यंरसायनंमेध्यंशीतंलघुसुधासमम् ॥५८॥

अर्थ–हेमंतऋतु (अगहन, पौष) में सरोवर, झीलका, अथवा तालाबका जल पीना हितकारी है, और जो हेमंतऋतु में कहाहै वह **शिशिरऋतु** (माघ, फाल्गुण) में भी ग्राह्यहै । **वसंत ऋतु** (चैत्र, वैशाख) और **ग्रीष्म** (ज्येष्ठ, आषाढ) में कूएका जल अथवा बावडीका अथवा झरनेका जल पीना । वसंतऋतु और **ग्रीष्मऋतुमें** नदीका जल नहीं देना चाहिये । इसका यह **कारण** है कि इस ऋतुमें पतझड़ होताहै इस वास्ते उन पत्तों से वह नदीका जल विषके समान होजाताहै (दूसरे नदीमें मनुष्य-पशुआदिके न्हानेसे भी जल दूषित होताहै) **वर्षाऋतुमें** औद्भिद जल अथवा अंतरिक्ष (अकाश) का जल अथवा कूएका जल सेवन करना । **शरदऋतु** में नदीका जल, अथवा अंशूदक (हंसोदक) सेवन करे । जो सूर्यकी किरणों से दिनमें तप्त रहे, और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणों से शीतल रहे उस जलकी **अंशूदक** संज्ञा है । **गुण** । यह स्निग्ध और त्रिदोष नाशक, अनभिष्यंदी, निर्दोष और आकाश जलके तुल्य बलकारी, रसायन, पवित्र, शीतल, हलका, और अमृतके तुल्य है । अन्य ग्रंथांतरोंमेंभी लिखाहै जैसे–

१ दिनसे सब दिन लेना और रात्रिसे सब रात्रिका ग्रहण है ।

शरदिस्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलंहितम् ।
पौषेवारिसरोजातंमाघेतत्तुतडागजम् ॥
फाल्गुनेकूपसंभूतंचैत्रेचौंड्यंहितंमतम् ॥
वैशाखेनैर्झरंनीरंज्येष्ठेशस्तंतथोद्भिदम् ।
आषाढेशस्यतेकौपंश्रावणेदिव्यमेवच ॥६१॥
भाद्रेकौप्यंपयःशस्तमाश्विनेचौंड्यमेवच ।
कार्तिकेमार्गशीर्षेचजलमात्रंप्रशस्यते ॥६२॥

अर्थ–शरदऋतुमें अगस्त्यऋषिके उदय होनेसे सर्व जल स्वच्छ और हितकारी होते हैं । **वृद्धसुश्रुतभी कहताहै । पौषमहिने** में सरोवर और झीलका जल, **माघमें** तालाबका, **फाल्गुणमें** कूएका, **चैत्रमें** चोएका, **वैशाख** में झरनेका, **ज्येष्ठ** में औद्भिदजल, **अषाढमें** कूएका, **श्रावणमें** आकाश संबंधी दिव्यजल, **भाद्रपदमें** कूएका, **आश्विनमें** चौंड्य, और कार्तिक तथा **मार्गशिरके** महिने में सर्व जलमात्र सेवन करने चाहिये ।

जलग्रहणका काल.

भौमानामम्भसांप्रायोग्रहणंप्रातरिष्यते ।
शीतत्वंनिर्मलत्वंचयतस्तेषांमतोगुणः ॥६३॥

अर्थ–पृथ्वी संबंधी जल (नदी, तालाब, सरोवर आदिके जल) प्रातःकालही ग्रहण करने अर्थात् प्रातःकालमें भरके लावे, इसका यह कारणहै कि जलमें मुख्य गुण शीतलता और निर्मलता लीनी है, इसीसे यह दोनों गुण प्रातःकालही होतेहैं, [बादको स्नानादिकसे भी दिन चढनेपर जल बिगड जाताहै]

जलपानविधि.

अत्यंबुपानान्नविपच्यतेऽन्नं-
निरंबुपानाच्चसएवदोषः ।
तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनाय-
मुहुर्मुहुर्वारिपिबेदभूरि ॥६४॥

अर्थ–बहुत जल पीने से भोजन कराहुए अन्नका

परिपाक नहीं होता, और बिलकुल जल न पीने से भी वही दोष अर्थात् अन्न नहीं पचे इस वास्ते यह प्राणी जठराग्निको बढ़ाने के लिये बारंवार ठहर २ के थोड़ा जल पीवे ।

शीतलजलके योग्य प्राणी.

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषे रक्ते मदात्यये ।
श्रमे भ्रमे विदग्धेऽन्ने तमके वमथौ तथा ॥
ऊर्ध्वगे रक्तपित्ते च शीतमंबु प्रशस्यते ॥६५॥

अर्थ-मूर्च्छारोग, पित्तवाला, गरमीवाला, दाहरोगी, विषरोगी रुधिरकारोगी मदात्ययवाला, परिश्रमवाला, भ्रमरोगवाला, विदग्धअन्नवाला, तमकश्वासी, वमनरोगी, और ऊर्ध्वगत रक्तपित्ती इनको **शीतलजल** हितकारी है ।

शीतलजल देना निषेध.

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ।
आध्माने स्तिमिते कोष्ठे सद्यः शुद्धौ नवज्वरे ॥
अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषु विद्रधौ ।
हिक्कायां स्नेहपाने च शीतांबु परिवर्जयेत् ॥६७॥

अर्थ-पसवाडेके शूलवाला, सरेकमां वाला, वादीका रोग, गलगंड, अफरा, बद्धकोष्ठ, जो तत्काल जुलाब आदि लेचुका हो, नवीन ज्वर, अरुचिरोग, संग्रहणी, गोला, श्वास खांसी विद्रधिरोग, हिचकीरोग और जिसने घृत तैलादि स्नेहपान करा होवे इन सबको **शीतलजल** पीना **निषेध** है ।

अल्पजल देने योग्य प्राणी.

अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये ।
मुखप्रसेके जठरे कुष्ठे नेत्रामये ज्वरे ॥
व्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम् ॥६८॥

अर्थ-अरुचि, सरेकमां, मंदाग्नि, सूजन, क्षयरोग, जिसके मुखसे जल बहा करे, उदररोगी कोढी, नेत्ररोगी, ज्वरवाला, व्रणरोगी, और मधुमेही, ए सब थोड़ा २ जल पीवें । [अधिक पीनेसे इनके रोग बढ़ताहै]

जलपानकी आवश्यकता.

जीवनं जीविनां जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम् ।
नातोऽत्यंतनिषेधेऽपि क्वचिद्वारि निवार्यते ॥६९॥
तृष्णा गरीयसी घोरा सद्यः प्राणविनाशिनी ।
तस्माद्देयं तृषार्ताय पानीयं प्राणधारणम् ॥७०॥
तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुंचति ।
अतः सर्वास्ववस्थासु न क्वचिद्वारि वर्जयेत् ॥

अर्थ-जीवन (जल) यह प्राणियोंका जीवन है । अतएव यह संपूर्ण जगत् जलमय है । इसीसे अत्यन्त निषेध नहीं है । अर्थात् अमुक रोगी को सर्वथा जल देना ही नहीं ऐसी आज्ञा कहीं नहीं है इसवास्ते कोईसे रोगमें तृषावाले को थोड़ा बहुत जल अवश्य देना । हारीतमें भी लिखाहै । तृषा अत्यंत घोर तत्काल प्राणके हरण करनेवाली है । अतएव तृषार्तको प्राणोंका धारण करनेवाला पानी अवश्य देना चाहिये । तृषा (प्यास) से बेहोश होताहै, और बेहोश होकर प्राण छोड़ देताहै, अतएव सर्व अवस्थाओं में कहींभी जल देना वर्जित नहीं है [किंतु हमारे हिन्दुस्थानी चांडाल वैद्य रोगीको जलके विना मारडालते हैं]

उत्तम जल.

अगंधमव्यक्तरसं सुशीतं तर्षनाशनम् ।
अच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ॥७२॥

अर्थ-जिसमें दुर्गंध न आतीहो और कोईसा रस प्रकट न मालूमहो, शीतल, तृषानाशक, निर्मल, हलका, हृदयको हितकारी, ऐसा **जलउत्तम** कहाहै ।

निंदितजल.

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्दमैः ।
विवर्णं विरसं सांद्रं दुर्गंधं न हितं जलम् ॥७३॥
कलुषं छन्नमंभोजपर्णनीलीतृणादिभिः ।
दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टं सौरचांद्रमरीचिभिः ॥७४॥
अनार्तवं च वार्षिकं तु प्रथमं तच्च भूमिगम् ।
व्यापन्नं परिहर्तव्यं सर्वदोषप्रकोपनम् ॥७५॥
तत्कुर्यात्स्नानपानाभ्यां तृष्णाध्मानचिरज्वरान् ।
कासाग्निमांद्याभिष्यंदकंडुगंडादिकं तथा ।

अर्थ-पिच्छल (मलमला) कीडेयुक्त, पत्ते, काई और कीचसे बिगडाहुआ, दुष्टरंगका, विरस (बुरे स्वादका) गाढा, जिसमें दुर्गंध, आती हो, बहुत

दिनोंका भराहुआ, कलुषित (गदला) जो कमलके पत्ते, नीली और तिनके आदिसे ढकाहुआ हो जिसका स्पर्श बुरा लगे, तथा जिसपर सूर्य और चंद्रमाकी किरण न पड़ती हो, बिना ऋतुका (पौष-आदि चार महिनेकी वर्षाका जल) और जो वर्षा ऋतु में प्रथमही वर्षकर पृथ्वीमें भराहुआ हो, तथा व्यापन्न (बिगडा हुआ) ऐसा जल कदाचित् बर्त्तावमें नहीं लेना । यह सर्वदोषोंको कुपित करने वाला है । यदि इस दुष्टजलका स्नान और पान करे तो यह तृषा, अफरा, बहुत दिन रहने वाला ज्वर, खांसी, मंदाग्नि, नेत्राभिष्यंद, खुजली, और गलगंडादि रोगोंको करता है ।

दुष्टजलका शोधन

निर्दिष्टंचापिपानीयंक्वथितंसूर्यतापितम् ।
सुवर्णरजतंलोहंपाषाणंसिकतामपि ॥ ७७ ॥
भृशंसंताप्यनिर्वाप्यसप्तधासाधितंतथा ।
कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥७८॥
शुचिसान्द्रपटस्राविक्षुद्रजंतुविवर्जितम् ।
स्वच्छंकनकमुक्ताद्यैःशुद्धंस्याद्दोषवर्जितम् ॥
पद्ममूलबिसग्रंथिमुक्ताकनकशैवलैः ।
गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्यादंबुप्रसादनम् ॥ ८० ॥

अर्थ–जिस जगहपर उत्तम जल न मिलता होय तो उस जगह दुष्टजलकोही प्रथम खूब औंटावे, फिर उसको धूपमें रखदेवे, पश्चात् सुवर्ण, चांदी, लोह, पत्थर, और बालू इनको गरम कर करके सात २ बार उस जलमें बुझावे । फिर उसको उत्तम मिट्टी की सुराही, कुल्हडे, अथवा कोरेवड़ेमें भरके उसमें कपूर, चमेली, पुन्नाग, पाढर आदि शब्दसे खसआदि सुगंधित वस्तु डालके वासित (सुगंधित) करे, जिसमें छोटे२ जीव न रहें, तथा सुवर्ण मोती आदिसे शुद्ध करा हुआ जल दोषवर्जित होताहै । जलपवित्र करने की वस्तु-पत्ते (पद्म आदि) जड-लता आदि, कमलकी जड़, गांठ, मोती सुवर्ण, सिवार (काई) गोमेद और कपड़ा [और निर्मली आदि] से जलको पवित्र करना चाहिये ।

पीये जलके पाककी अवधि.

आमंजलंजीर्यतियामयुग्माद्-
यामैकमात्राच्छृतशीतलंच ॥
तदर्धमात्रेणशृतंकदुष्णं-
पयःप्रपाकेत्रयएवकालाः ॥ ८१ ॥

अर्थ—कच्चा जल पीया हुआ दो प्रहरमें पचताहै और औटाहुआ तथा शीतलकरा जल १ प्रहर में पचताहै, तथा जो औटाकर कुछ २ गरम रहाहो वह १॥ घंटे में पचजाता है, इस प्रकार जल पाकके तीनही काल हैं ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ वारिवर्गः

अथ दुग्धवर्गः

दूधके नाम गुण.

दुग्धंक्षीरंपयःस्तन्यंबालजीवनमित्यपि ।
दुग्धंसुमधुरंस्निग्धंवातपित्तहरंसरम् ॥ १ ॥
सद्यःशुक्रकरंशीतंसात्म्यंसर्वशरीरिणाम् ।
जीवनंबृंहणंबल्यंमेध्यंवाजीकरंपरम् ॥२॥
वयःस्थापनमायुष्यंसंधिकारिरसायनम् ।
विरेकवांतिबस्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम् ॥३॥
जीर्णज्वरेमनोरोगेशोषमूर्च्छाभ्रमेषुच ।
ग्रहण्यांपांडुरोगेचदाहेतृषिहृदामये ॥ ४ ॥
शूलोदावर्त्तगुल्मेषुबस्तिरोगेगुदाङ्कुरे ।
रक्तपित्तेऽतिसारेचयोनिरोगेश्रमेक्लमे ॥ ५ ॥

---

८१ जो पानी चमकदार होता है वह पाचक नहीं होता । और जिसमें जरायुजो वस्तु मिलीहो वो कामका नहींहै । आजकल **पानीको शुद्ध करने** की **विधि** । एक टिकटी तीन पायेकी और तीन खनकी बनावे, फिर चार घडे लेवे । एक ऊपर रखे और उसमें पक्के कौले भरदेवे, उसके नीचे बालू रेत का भरा घडा और उसके नीचे जो कंकरीली जमीन से कंकड निकाले जाते हैं वह भरे, और तीनों की पैंदियों में बारीक छिद्रकर तिनका लगाय दिया जावे, और ऊपरही ऊपरके घड़ेको जलसे भर देवे, और तीनों घड़ोंके नीचे साफ घडेको सफेद कपड़ेसे मुख बांधकर धरे तो तीनों घड़ोंसे जल टपककर नीचेके घड़े में एकत्र होवेगा यह **जल शुद्ध** है । इसमें जो चिकनाई आदि दोष होते हैं वह कौले, बालू, और कंकड आदि सोख लेते हैं ।

गर्भस्रावेच सततंहितंमुनिवरैः स्मृतम् ।
बालवृद्धक्षतक्षीणाः क्षुद्व्यवायकृशाश्चये ॥
तेभ्यः सदातिशयितंहितमेतदुदाहृतम् ॥ ६ ॥

अर्थ–दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, बालजीवन ए दूधके **संस्कृत** नाम । **म.** दुध, **तै.** पालु, **का.** हालु, **अ.** लवनुल, **फा.** शीर, **ला.** लक्टस, **इं.** मिल्क । **गुण** । मधुर, स्निग्ध, वातपित्त–हरणकर्त्ता, दस्तावर, तत्काल वीर्यकर्त्ता, शीतल और सर्वप्राणियों की आत्मा के अनुकूल है । जीवन, बृंहण, बलकर्त्ता, मेध्य, वाजीकरणकर्त्ता, अवस्थाको साधने वाला, आयुष्यकर्त्ता, संधिकर्त्ता और रसायन है । विरेक (जुलाव) वमन और वस्ति इनके समान गुण वाला ओजवर्द्धक । **प्रयोग** । जीर्णज्वर, मनसंबंधीरोग (उन्मादादिक) शोष, मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, पांडुरोग, दाह, तृषा हृदयरोग, शूल, उदावर्त, गोलेकारोग, वस्ति (मसाने) का रोग, बवासीर, रक्तपित्त, अतिसार, योनि के रोग, परिश्रम, ग्लानि, और गर्भका गिरना इन रोगोंमें दूध मुनीश्वरोंने निरंतर हितकारी कहा है । बालक बुड्ढे, क्षतक्षीण, भूखे, मैथुन करने से जो क्षीण होगए हैं उनको दूध सदैव अत्यन्त हितकारी कहा है ।

गोदुग्ध के गुण.

गव्यंदुग्धंविशेषेणमधुरंरसपाकयोः ।
शीतलंस्तन्यकृत्स्निग्धंवातपित्तास्रनाशनम् ।
दोषधातुमलस्रोतःकिंचित्क्लेदकरंगुरु ।
जरासमस्तरोगाणांशांतिकृत्सेविनांसदा ॥८॥

अर्थ–**गौकादूध** विशेष करके रस और **पाक** में मधुर है, शीतल, स्तनोंमें, दूध बढ़ाने वाला, स्निग्ध, वात, पित्त और दुष्ट रुधिरका नाशक (अथवा रक्तपित्तनाशक) दोष, धातु, मल, और छिद्रों में किंचिन्मात्र क्लेदकारी और भारी है जो प्राणी दूधको सदैव पिया करते हैं उनके बुढापे को तथा यावन्मात्र रोग हैं सबको **गौकादूध** शांत कर्त्ता है ।

गौके वर्णविशेषकरके दूधके गुण.

कृष्णायागोर्भवेद्दुग्धंवातहारिगुणाधिकम् ।
पीतायाहरतेपित्तंतथावातहरंभवेत् ॥
श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्ताचित्राचवातहृत् ॥ ९ ॥

अर्थ–कालीगौ का दूध वातहरणकर्ता, अधिक गुणवाला, पीलीगौ का दूध पित्तको और वातको हरण करे, सफेद गौका दूध कफकारी और भारी है एवं लाल और चितकबरीगौ का दूध वातहरण कर्त्ता जानना ।

छोटा बछड़ा, बछड़ारहित गौ का दूध,

बालवत्साविवत्सानांगवांदुग्धंत्रिदोषकृत् ॥

अर्थ–जिन गोओंका छोटा बछड़ा है, अथवा जिनकें बछड़ा नहीं है उनका दूध त्रिदोष कारक है ।

बकेनीगौ.

बष्कयण्यास्त्रिदोषघ्नंतर्पणंबलकृत्पयः ॥१०॥

अर्थ–बाखरी गौका दूध त्रिदोष नाशक, तृप्त कर्त्ता और बलकारी है ।

देशवश दुग्धके गुण.

जांगलानूपशैलेषुचरंतीनांयथोत्तरम् ॥
पयोगुरुतरंस्नेहोयथाहारंप्रवर्त्तते ॥ ११ ॥

अर्थ–जो गौ जांगलदेश, अनूपदेश और पर्वतों में चरा करती हैं उनका दूध यथाक्रम भारी है जैसे-जांगलदेशकी से अनूप देशमें चरनेवाली और अनूप देशकी चरनेवाली से पर्वतोंमें चरनेवाली गौका दूध भारी जानना । और यह जैसा (बनौले–वांट) खाती हैं वैसाही उनके दूधमेंसे अधिक घी निकलता है ।

आहारवश दूधके गुण.

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातंक्षीरंगुरुकफप्रदम् ।
तत्तुबल्यंपरंवृष्यंस्वस्थानांगुणदायकम् ॥
पलालतृणकार्पासबीजजातंगुणैर्हितम् ॥१२॥

अर्थ–जो गौ थोड़ा अन्न भी खाती हैं उनका दूध भारी और कफकारक जानना । यह दूध अत्यन्त बलकर्त्ता, और वृष्य है अतएव यह बलवान् मनुष्यों को गुणदायक है । जो करवी (कुट्टी, पाला) घास और बनौला चरतीहैं उनका दूध अत्यन्त हितकारी जानना ।

भैंस के दूधके गुण,

माहिषंमधुरंगव्यात्स्निग्धंशुक्रकरंगुरु ।
निद्राकरमभिष्यंदिक्षुधाधिक्यकरंहिमम् ॥

अर्थ–**भैंसका दूध** गौके दूधसे भी अधिक

मीठा होताहै, स्निग्ध, वीर्यकर्त्ता, भारी, निद्राकर, अभिष्यंदी और अधिक थूंक लगानेवाला तथा शीतल है।

बकरीके दुग्ध के गुण.

छागंकषायंमधुरंशीतंग्राहितथालघु ।
रक्तपित्तातिसारघ्नंक्षयकासज्वरापहम् ॥१४॥
अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ।
स्तोकांबुपानाद्व्यायामात्सर्वरोगापहंपयः ॥

अर्थ–बकरीकादूध कषेला, मधुर, शीतल, ग्राही, और हलका तथा रक्तपित्त, अतिसार, क्षयरोग, खांसी, और ज्वरको नाश करताहै। बकरियों की छोटी देह होती है, तथा वह कड़वी चरपरी वनस्पतियोंको खाया करतीहैं – तथा जल बहुत थोड़ा पीती हैं – और जंगलमें दिनभर विचराही करती हैं इसीसे बकरी का दूध सर्व रोग नाशक है। [जो बकरी घरमें रहाकरती है उसके दूधमें ये गुण नहीं है]

मृगादिदुग्धके गुण.

मृगीनांजांगलोत्थानामजाक्षीरगुणंपयः ।

अर्थ–जंगलकीमृगी (हिरनी आदि) का दूध बकरी के दूधके समान गुण करता है।

भेड़के दूधके गुण.

आविकंलवणंस्वादुस्निग्धोष्णंचाश्मरीप्रणुत् ।
अहृद्यंतर्पणंवृष्यंशुक्रपित्तकफप्रदम् ।
गुरुकासेऽनिलोद्भूतेकेवलेचानिलेवरम् ॥१७॥

अर्थ–भेडकादूध नमकीन, स्निग्ध, गरम, और पथरीको नष्ट करताहै। हृदयको अहित, तृप्तकर्ता, वृष्य, शुक्र, पित्त और कफ करनेवाला है। भारी, वादी की खांसीका रोग अथवा केवल वादीके रोगमें हितकारी है।

घोड़ीके दुग्धके गुण.

रूक्षोष्णंवडवाक्षीरंबल्यंशोषानिलापहम् ।
अम्लंपटुलघुस्वादुसर्वमैकशफंतथा ॥१८॥

अर्थ–घोडीका दूध-रूक्ष, उष्ण, बलकारी, शोषरोग, और वादीके रोगको दूरकरे, खट्टा, नमकीन, हलका और स्वादिष्ट है। इसीप्रकार यावन्मात्र एकखुरवाले पशु हैं उन सबका दूध घोड़ीके दूधके समानहै।

ऊंटनीका दूध.

औष्ट्रंदुग्धंलघुस्वादुलवणंदीपनंतथा ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरंसरम् ॥१६॥

अर्थ–ऊंटनीका दूध हलका, स्वादिष्ट, नमकीन, दीपन, कृमि, कुष्ट, कफ, अफरा, सूजन, और उदररोग इनको हरण करे तथा दस्तावर है।

हथनीका दूध.

बृंहणंहस्तिनीदुग्धंमधुरंतुवरंगुरु ।
वृष्यंबल्यंहिमंस्निग्धंचक्षुष्यंस्थिरताकरम् ॥

अर्थ–हथनीकादूध बृंहण, मधुर, कषेला, भारी, वृष्य, बलकारी, शीतल, स्निग्ध, नेत्रोंको हितावह, और देहको स्थिर करनेवाला है।

स्त्रीका दुग्ध.

नार्यालघुपयःशीतंदीपनंवातपित्तजित् ।
चक्षुःशूलाभिघातघ्नंनस्याश्च्योतनयोर्वरम् ॥

अर्थ–स्त्रीकादूध-हलका, शीतल, दीपन, वातपित्तनाशक, नेत्रका शूल और बाधाको दूरकरे तथा नस्य और आश्च्योतन कर्ममें उत्तम है।

धारोष्णादि दुग्धके गुण.

धारोष्णंगोपयोबल्यंलघुशीतंसुधासमम् ।
दीपनंचत्रिदोषघ्नंतद्धारांशिशिरांत्यजेत् ॥२२॥
धारोष्णंशस्यतेगव्यंधाराशीतंतुमाहिषम् ।
शृतोष्णमाविकंपथ्यंशृतशीतमजापयः ॥२३॥
आमंक्षीरमभिष्यंदिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम् ।
ज्ञेयंसर्वमपथ्यंतुगव्यमाहिषवर्जितम् ॥२४॥
नारीक्षीरंत्वाममेवहितंनतुशृतंहितम् ।
शृतोष्णंकफवातघ्नंशृतशीतंतुपित्तनुत् ॥२५॥
अर्धोदकंक्षीरशिष्टमामाल्लघुतरंपयः ।
जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वंयथायथा ॥
तथातथागुरुस्निग्धंवृष्यंबलविवर्द्धनम् ॥२६॥

अर्थ–गौका धारोष्ण (थनदुहा) दूध बलकारी, हलका, शीतल, अमृततुल्य, दीपन, और त्रिदोषनाशक है, यदि गौके दूधकी धारशीतल होगई होय तो त्याज्य है। गौके दूधको धारोष्ण लेना और धार-

शीत भैंसका लेना चाहिये । भेडका दूध औंटा हुआ गरमागरम हितकारी है और बकरीका दूध औटकर शीतल कराहुआ लेना चाहिये । कच्चा-दूध अभिष्यंदी, भारी, कफ, और आमके वढाने वाला है । अतएव गौ और भैंसके दूधको छोड कर बाकी सब कच्चे दूध अपथ्य हैं । परन्तु स्त्रीका दूध तो कच्चाही हितकारी होताहै और औंटा हुआ हित नहीं होता । अन्यदूध औटे हुए गरम कफवात नाशक और औटाकर शीतल करेहुए पित्तनाशक जानने, यदि दूधमें आधा जल जरजाने बाद उतारलेवें तो यह कच्चे दूधसे भी हलका है । विना जलडाले जो दूध औंटाया जावे वह जैसे २ औंटता है – उसी २ प्रकार भारी, स्निग्ध, वृष्य और बलका वढानेवाला है ।

पीयूष किलाट.

क्षीरंतत्कालसूतायाघनंपीयूषमुच्यते ।
नष्टदुग्धस्यपक्वस्यपिण्डःप्रोक्तःकिलाटकः ॥

अर्थ–तत्काल व्याहीहुई गौ भैंसके गाढे २ दूधको पीयूष कहते हैं, इसकी लोक में फेउस संज्ञा है । और जो दूध जलकर नष्ट होगया और गोला बंधगया हो उसको किलाट अर्थात् खोहा या खिभरी, कहते हैं ।

क्षीरशाक. तक्रपिंड. मोरट.

आपक्वमेवयन्नष्टंक्षीरशाकंहितत्पयः ।
दध्नातक्रेणवानष्टंदुग्धंबद्धंसुवाससा ॥ २८ ॥
द्रवभावेनरहितंतक्रपिण्डःसउच्यते ।
नष्टदुग्धंभवेत्क्षीरंमोरटंजेज्जटोऽब्रवीत् ॥२९॥

अर्थ–जो विना औंटाये ही दूध नष्ट हो जावे अर्थात् गाढा हो जाय उसकी क्षीरशाक (खिरिसा) संज्ञा है । जो दूध दही अथवा छाछके गिरने से नष्ट होगया हो, फिर उस दही या छाछको कपडेमें बांधकर उसके जलको निकाल डालने से जो पिंड बंध जाताहै और जिसमें कुछ जलका अंश होवे उसको तक्रपिंड कहतेहैं । जेज्जट आचार्य कहताहै कि दूध नष्ट होकर जो जल हो जाताहै उसकी मोरट संज्ञा है । लोकमें इसको फटे दूधका जल कहते हैं ।

पियूषादिकों के गुण.

पीयूषंचकिलाटश्चक्षीरशाकंतथैवच ।
तक्रपिण्डश्चबृष्याबृंहणाबलवर्द्धनाः ॥ ३० ॥
गुरवश्लेष्मलाहृद्यावातपित्तविनाशनाः ॥
दीप्ताग्नीनांविनिद्राणांविद्रधौचाभिपूजताः
मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ॥
लघुर्बलकरोरुच्योमोरटःस्यात्सितायुतः ॥३१॥

अर्थ–ऊपर कहे हुए पीयूष, किलाट, क्षीरशाक और तक्रपिंड ए वृष्य हैं, बृंहणहैं, बलवर्द्धक, भारी, कफकर्त्ता, हृद्य और वातपित्तको नष्ट करनेवाले हैं । जिनकी प्रदीप्त अग्नि है, जिनको निद्रा नहीं आती और जिनकें विद्रधिका रोग है उनको हितकारी है । मोरट में बूरा डालके पीवे तो मुख शोष, तृषा, दाह, रक्तपित्त, ज्वर, इनको हरण करे । तथा हलका, बलकारी और रुचिकर्त्ता जानना ।

संतानिका.

संतानिकागुरुःशीतावृष्यापित्तास्रवातनुत् ।
तर्पणीबृंहणीस्निग्धाबलासबलशुक्रला ॥३३॥

अर्थ–मलाई–भारी, शीतल, वृष्य, रक्तपित्त, बादी इनको दूर करे । तथा तृप्त करता, बृंहणी, स्निग्ध, कफ, बल और शुक्रको बढ़ाने वाली है । [मलाई दूध और दही की ऐसे दो प्रकारकी होतीहै तहां ये गुण दूधकी मलाईकेहैं दहीकी मलाई दहीके समान गुण करती है ।

खांडियुक्त दूध.

खंडेनसहितंदुग्धंकफकृत्पवनापहम् ।
सितासितोपलायुक्तंशुक्रलंत्रिमलापहम् ॥
सगुडंमूत्रकृच्छ्रघ्नंपित्तश्लेष्मकरंपरम् ॥ ३४ ॥

अर्थ–खांड, बूरा आदि डालाहुआ दूध-कफकर्त्ता, और वातनाशक है । और जिसमें सफेद मिश्री पड़ी हुई हो, वह वीर्यकर्त्ता और त्रिदोष नाशक जानना । गुडमिला दूध मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करे, और पित्त, कफको करेहै ।

प्रातःकाल आदिमें होनेवाले दूधके गुण।

रात्रौचंद्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा ।
प्राभातिकंतदाप्रायःप्रादोषाद्गुरुशीतलम् ॥

दिवाकरकरोत्तापाद्व्यायामानलसेवनात् ।
श्रमाच्च सायंदुग्धं लघु वातकफापहम् ॥३६॥

अर्थ-रात्रिमें चन्द्रगुणकी अधिकतासे और कसरतआदि परिश्रम रात्रिके समय न करनेसे प्रातःकालका दूध प्रायः सायंकालके दूधसे, भारी है और शीतल है। इसीप्रकार दिनमें सूर्यकी किरण अर्थात् धूप लगनेसे तथा दंड कसरत आदि परिश्रमकी गरमीके सेवन करनेसे सायंकालका दूध प्रातःकालके दूधसे हलका और वादी तथा कफको नष्ट करे है।

दूध सेवनका समय.

वृष्यं बृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्णकाले पयो-
मध्याह्ने तु बलावहं कफहरं पित्तापहं दीपनम् ॥
बाले वृद्धिकरं क्षयक्षयकरं वृद्धे पुरेतोवहं ॥
रात्रौ पथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरं सदा सेव्यते ३

वदंति पेयं निशि केवलं पयो
भोज्यं न तेनापि सहौदनादिकम् ॥
भवेदजीर्णं न शयीत शर्वरीं-
क्षीरस्य पीतस्य न शेषमुत्सृजेत् ॥ ३८ ॥

विदाहीन्यन्नपानानि दिवा भुंक्ते हि यन्नरः
तद्विदाहप्रशांत्यर्थं रात्रौ क्षीरं सदा पिबेत् ॥३९॥
दीप्तानले कृशे पुंसि वातवृद्धे पयःप्रिये ॥
मतं हिततमं पथ्यं सद्यः शुक्रकरं यतः ॥ ४० ॥

अर्थ-दिनके प्रथम प्रहरमें पियाहुआ दूध वृष्य, बृंहण,और अग्निदीपन कर्त्ता है। मध्याह्नमें पानकरा दूध-बलदाता, कफ—हरणकारी, पित्तनाशक और अग्निको दीपन करताहै, बालकोंको बढ़ानेवाला, क्षयीरोगको क्षयकर्त्ता, वृद्धपुरुषोंको वीर्य वर्द्धक है। तथा रात्रिके समय दूध पान करा अनेक दोषोंको शमन करताहै और पथ्य है इसवास्ते सदैव पीना चाहिये। किसी वैद्योंकी संमति है कि रात्रिके समय केवल दूधही पीना उसके साथ भात रोटी आदि नहीं खाना, क्योंकि अजीर्णमें रात्रिको नींद नहीं आतीहै। तथा पीत दूधको शेष न छोड़े। दिनमें यह प्राणी जो दाहकर्त्ता अन्नपान करताहै उस दाहके शांति करनेको रात्रिके समय नित्य दूध पिया करे। जिनकी दीप्ताग्नि है और जो कृश हैं, जिनके देहमें वातकी वृद्धि रहतीहै और जिनको दूध अधिक प्रिय है, उनको दूध अत्यंत हितकारी है-क्योंकि यह तत्काल शुक्रको करनेवाला है।

मथेहुए दूधके गुण.

क्षीरं गव्यमथाजं वा कोष्णं दण्डाहतं पिबेत्
लघु वृष्यं ज्वरहरं वातपित्तकफापहम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-गौका अथवा बकरीके दूधको थोड़ा गरम कर रईसे मथकर पीवे, यह **मथाहुआ दूध**-हलका, वृष्य, ज्वर हरणकर्त्ता, तथा वात, पित्त और कफको नष्ट करताहै।

फेन (झाग) के गुण.

गोदुग्धप्रभवं किंवा छागीदुग्धसमुद्भवम् ।
भवेत्फेनं त्रिदोषघ्नं रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ ४२ ॥
वह्निवृद्धिकरं वृष्यं सद्यस्तृप्तिकरं लघु ।
अतीसारेऽग्निमांद्ये च ज्वरे जीर्णे प्रशस्यते ॥४३॥

अर्थ-गौके दूधके अथवा बकरीके दूधके **झाग** त्रिदोषनाशक, रोचक, बलवर्द्धक, अग्निकी वृद्धि कर्त्ता, वृष्य, तत्काल तृप्तकर्त्ता, हलके, अतिसार, मंदाग्नि और जीर्णज्वर इनपर देने चाहिये।

निंदित दूध.

विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गंधं ग्रथितं पयः ।
वर्जयेदम्ललवणयुक्तं कुष्ठ्यादिहृद्यतः ॥ ४४ ॥

अर्थ-जिसका रूप बिगड़गया होवे, बेजायका होगया हो, खट्टा, दुर्गंधयुक्त, गांठदार, तथा जिसमें खटाई और नमक गिरगयाहो उस दूषित दूधको त्याग देना क्योंकि यह बुद्धि आदिको हरण करताहै।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ दुग्धवर्गः।

अथ दधिवर्गः

दहीके गुण.

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं श्वासपित्तास्रशोथमेदःकफप्रदम् ॥
मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतके विषमज्वरे ।
अतीसारेऽरुचौ कार्श्ये शस्यते बलशुक्रकृत् ॥२॥

अर्थ-दही-गरम, दीपन, स्निग्ध, कषैला, भारी,

पकनेमें खट्टा, श्वास, पित्त, रुधिर-विकार, सूजन, मेदरोग और कफको बढ़ानेवाला है । मूत्रकृच्छ्र, सरेकमां, शीतमें और विषम ज्वरमें, अतिसार, अरुचिरोग, कृशता, इनमें दहीको सेवन करे यह बल और शुक्रको करनेवाला है ।

दहीके भेद.

आदौमंदंततःस्वादुस्वाद्वम्लंचततःपरम् ।
अम्लंचतुर्थमत्यम्लंपंचमंदधिपंचधा ॥ ३ ॥

अर्थ-प्रथम थोडा मीठा, फिर मीठा, फिर खट्टा-मीठा, फिर चतुर्थजातिका खट्टा और पांचवां अत्यंत खट्टा होताहै । ऐसे दहीके **पांचभेद** कहे हैं ।

मंदादि दहीके लक्षण.

मंदंदुग्धंयदव्यक्तरसंकिंचिद्घनंभवेत् ।
मंदंस्यात्सृष्टविण्मूत्रंदोषत्रयविदाहकृत् ॥ ४ ॥
यत्सम्यग्घनतांयातंव्यक्तस्वादुरसंभवेत् ।
अव्यक्ताम्लरसंतत्तुस्वादुचिन्त्यैरुदाहृतम् ॥ ५ ॥
स्वादुस्यादत्यभिष्यंदिवृष्यंमेदःकफावहम् ।
वातघ्नंमधुरंपाकेरक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ६ ॥
स्वाद्वम्लंसांद्रमधुरंकषायानुरसंभवेत् ।
स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयाःसामान्यदधिवज्जनैः ॥ ७ ॥
यत्तिरोहितमाधुर्यव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम् ।
अम्लंतुदीपनंपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ ८ ॥
तदत्यम्लंदंतरोमहर्षकंठादिदाहकृत् ।
अत्यम्लंदीपनंरक्तवातपित्तकरंपरम् ॥ ९ ॥

अर्थ-जो दूध कुछ २ जम कर गाढा हुआहो और जिसमें खट्टा मीठा किसी प्रकारका स्वाद न मालूम हो उसकी **मंद** संज्ञा है । **गुण** । यह मल मूत्रको निकालने वाला, त्रिदोष और दाह करनेवाला है । जो जमकर गाढा हुआहो और जिसमें मिठास मालूम होय और खटाई प्रतीत न हो, उसको वैद्योंने **स्वादु** संज्ञक कहाहै । **गुण** । स्वादु दही—अभिष्यंदी, वृष्य, मेद और कफकरनेवाला, वातनाशक, पाकमें मीठा, और रक्तपित्तको नष्ट करनेवाला है । जो दही अत्यंत गाढा और खट्टा मीठा दोनों रसयुक्त होवे, तथा कुछ २ कषेला होय उसकी **स्वाद्वम्ल** संज्ञा है । स्वाद्वम्ल दहीके गुण सामान्य दहीकेसे जानने । जिस दहीका मिठास नष्ट होकर खट्टा होगया हो उसकी **अम्ल** संज्ञा है । **गुण** । खट्टा दही, दीपन, पित्त, रक्त और कफको बढाताहै । जो दही अत्यंतखट्टा, दांतोंको खट्टे और रोमांचोंको करे तथा कंठ आदिमें दाह करे, वह **अत्यम्ल** कहाताहै । **गुण** । यह दीपन, रक्त, वात और पित्तको करनेवाला है ।

गौके दहीके गुण.

गव्यंदधिविशेषेणस्वाद्वम्लंचरुचिप्रदम् ।
पवित्रंदीपनंहृद्यंपुष्टिकृत्पवनापहम् ॥
उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम् ।

अर्थ-गौके दूधका दही-विशेषता करके स्वादिष्ट, खट्टा, रुचिदायक, पवित्र, दीपन, हृदयको हितकारी, पुष्टकरनेवाला और वादीको नष्ट करताहै । सब प्रकारके दहियों में गौका दही गुणोंमें सबसे अधिक है ।

भैंसका दही.

माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत् ।
स्वादुपाकमभिष्यंदिवृष्यंगुर्वस्रदूषकम् ॥ ११ ॥

अर्थ-भैंसका दही-स्निग्ध, कफकर्त्ता, वातपित्तनाशक, पाकके समय स्वादिष्ट, अभिष्यंदी, वृष्य, भारी और रुधिरको दूषित करनेवाला है ।

बकरीका दही.

आजंदध्युत्तमंग्राहिलघुदोषत्रयापहम् ।
शस्यतेश्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषुदीपनम् ॥

अर्थ-बकरीका दही-उत्तम, ग्राही, हलका, त्रिदोषनाशक, यह श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय और कृशताके रोगोंको नष्ट करे, तथा दीपन है ।

औंटाहुआ दही.

पक्वदुग्धभवंरुच्यंदधिस्निग्धंगुणोत्तमम् ।
पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ १३ ॥

अर्थ-औंटेदूधका जमाया दही-रुचिकर्त्ता, स्निग्ध, गुणोंमें उत्तम, पित्त, वादीका नाशक तथा सब धातुओं एवं जठराग्नि और बलको बढाताहै ।

साररहित दहीके गुण.

असारंदधिसंग्राहिशीतलंवातलंलघु ।
विष्टंभिदीपनंरुच्यंग्रहणीरोगनाशनम् ॥ १४ ॥

अर्थ–प्रथम दूधको मथकर मक्खन निकाल लेवे फिर उसका दही जमावे, वह निस्सारदूध अथवा दही ग्राही, शीतल, वातकर्त्ता, हलका, विष्टंभी, दीपन, रुचिकारी और संग्रहणी रोगको नाश करे।

छने हुए दहीके गुण.

गालितंदधिसुस्निग्धंवातघ्नंकफकृद्गुरु।
बलपुष्टिकरंरुच्यंमधुरंनातिपित्तकृत्॥ १५॥

अर्थ–कपड़े में छना हुआ दही–स्निग्ध, वातनाशक, कफकारी, भारी, बलकर, पुष्टिकर, रुचिकारी, मधुर और अत्यंत पित्तकर्त्ता नहीं है।

शर्करादि सहित दहीके गुण.

सशर्करंदधिश्रेष्ठंतृष्णापित्तास्रदाहजित्।
सगुडंवातनुद्वृष्यंबृंहणंतर्पणंगुरु॥ १६॥

अर्थ–दही में बूरा डालके खाना उत्तम है, यह तृषा, रक्तपित्त और दाहको नष्ट करे। यदि दही में गुड़ मिलायके सेवन करे तो वादी को नष्ट करे, वृष्य है, बृंहण, तर्पण और भारी है।

रात्रिमें दही सेवन निषेध.

ननक्तंदधिभुंजीतनचाप्यघृतशर्करम्।
नामुद्गसूपंनाक्षौद्रंनोष्णंनामलकैर्विना॥१७॥

अर्थ–रात्रि में कदाचित् दही सेवन न करे और यदि रात्रिमें सेवन करना पड़े तो विना घृत खाडके न खावे बिना मूंगकी दालके, बिना शहदके, बिना गरम करे और बिना आंवलों के भी सेवन न करे। अन्यत्र भी लिखा है कि रात्रि में दही न खाय। यदि सेवन करे तो जल और घी मिलायके करे, परन्तु रक्तपित्त और कफ के रोग में जल, घृत मिलाय कर भी सेवन न करे।

ऋतुपरत्व दही सेवनका विधि निषेध.

हेमंतेशिशिरेचापिवर्षासुदधिशस्यते।
शरद्ग्रीष्मवसंतेषुप्रायशस्तद्विगर्हितम्॥ १८॥

अर्थ–हेमंतऋतु (अगहन, पौष) शिशिर (माघ, फाल्गुन) और वर्षाऋतु इन में दही सेवन करे, परन्तु शरदऋतु, वसन्त और ग्रीष्मऋतु में कदाचित् सेवन नहीं करना कारण यह है कि दही गरम है इस वास्ते शरद और ग्रीष्मऋतु में दही पित्त को कुपित करता है।

विधिरहितदही सेवनके दोष.

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपांड्वामयभ्रमान्।
प्राप्नुयात्कामलांश्चोग्रांविधिंहित्वादधिप्रियः॥

अर्थ–जो विधि को त्यागकर दही सेवन करता है वह ज्वर, रुधिरविकार, पित्तविकार, विसर्प, कुष्ठ, पांडुरोग, भ्रम और घोर कामला रोग को प्राप्त होता है।

सर और मस्तुके लक्षण और गुण.

दध्नस्तूपरियोभागोघनःस्नेहसमन्वितः।
सलोकेसरइत्युक्तोदध्नोमंडस्तुमस्त्विति॥२०॥
सरःस्वादुर्गुरुर्वृष्योवातवह्निप्रणाशनः।
साम्लोबस्तिप्रशमनःपित्तश्लेष्मविवर्द्धनः॥२१॥
मस्तुक्लमहरंबल्यंलघुभक्ताभिलाषकृत्।
स्रोतोविशोधनंह्लादिकफतृष्णानिलापहम्॥
अवृष्यंप्रीणनंशीघ्रंभिनात्तमलसंचयम्॥२२॥

अर्थ–दही के ऊपरकी चिकनाई युक्त गाढे भागको अर्थात् मलाई को लोकमें सर ऐसा कहते हैं और दही के मंडको अर्थात् दही के पानी को मस्तु (तोर, तोड) ऐसा कहते हैं। दोनों के गुण। सर (दही की मलाई) स्वादिष्ट, भारी, वृष्य, वादी और वह्निको नष्ट करे, खट्टा, वस्तिविकार–नाशक, पित्त और कफको बढाता है। मस्तु। क्लम (ग्लानि) को दूर करे, बलकारी, हलका, भोजनकी अभिलाषकर्त्ता, देहके छिद्रों को शुद्ध करे, आह्लाद (आनंद) कर्त्ता, कफ, तृषा और वादी को नष्ट करे, अवृष्य है, प्रसन्नकर्त्ता और तत्काल मल के संचयको तोड़ने वाला है।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ दधिवर्गः।

तक्रवर्गः।

तक्रके भिन्न नाम, लक्षण और गुण.

घोलंतुमथितंतक्रमुदश्विच्छच्छिकापिच।
ससरंनिर्जलंघोलंमथितंत्वसरोदकम्॥ १॥
तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्वित्स्वर्द्धवारिकम्।
छच्छिकासारहीनास्यात्स्वच्छाप्रचुर-
वारिका॥२॥

घोलंतुशर्करायुक्तंगुणैर्ज्ञेयंरसालवत् ।
वातपित्तहरंह्लादिमथितंकफपित्तनुत् ॥३॥
तक्रंग्राहिकषायाम्लंस्वादुपाकरसंलघु ।
वीर्योष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम् ॥४॥
ग्रहण्यादिमतांपथ्यंभवेत्संग्राहिलाघवात् ।
किंचस्वादुविपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपणम् ॥५
अम्लोष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम् ।
कषायोष्णंविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापि-
कफापहम् ॥ ६ ॥

नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्न
तक्रदग्धाःप्रभवंतिरोगाः ।
यथासुराणाममृतंसुखाय
तथानराणांभुवितक्रमाहुः ॥ ७ ॥

उदश्वित्कफकृद्बल्यमामघ्नंपरमंमतम् ।
छच्छिकाशीतलालघ्वीपित्तश्रमतृषाहरी ।
वातनुत्कफकृत्सातुदीपनीलवणान्विता ॥८॥
समुद्धृतघृतंतक्रंपथ्यंलघुविशेषतः ।

अर्थ-घोल, मथित, तक्र, उदश्वित् और छच्छिका इसप्रकार **तक्र पांचप्रकारका** है । तहां जो मलाईयुक्त मथागया और जल जिसमें न डालाहो । उसकी **घोल** संज्ञा है । और जिसमें से मलाई निकालके बिना जलमथा गया हो उसकी **मथित** संज्ञा है । जिसमें ३ हिस्सा दही और १ हिस्सा जल डालके मथागया हो उसकी **तक्र** (छाछ) संज्ञा है । और आधाजल डाले हुएकी **उदश्वित्** संज्ञा है । और जिसमें ढकेलमां अर्थात् जिसमें जल बेप्रमाण मिलाहोवे वह सारहीन स्वच्छ **छच्छिका** कहातीहै ।

गुण । ऊपर कहेहुए **घोलमें** सफेदबूरा मिलायके सेवन करे तो सिखरनके समान गुण करे और वातपित्तको हरण करे तथा आनंद देता है । **मथित** कफपित्तको नष्ट करे । **तक्र** (छाछ) ग्राही (मलको रोकने वाला) कषेला, खट्टा, स्वादुपाकी, हलका, उष्णवीर्य, दीपन, वृष्य, पुष्टाईकर्त्ता, वातनाशक, संग्रहणी (और अतिसार आदि) रोगवालोंको पथ्य है । हलका होनेसे यह ग्राही है, और स्वादु विपाकी होनेसे पित्तको कुपित नहीं करे, अम्ल, गरम, दीपन, वृष्य, प्रीणन, वातनाशक, कषेला, गरम और विकाशी होनेसे तक्र कफको नष्ट करता है । तक्र सेवन करनेवाला कदाचित् व्यथा (दुःख) को नहीं प्राप्त होता । और तक्रसे जलाए गए रोग फिर नहीं होते । जैसे स्वर्गमें देवताओंको अमृतहै, उसीप्रकार पृथ्वीमें मनुष्योंके लिये तक्र है । **उदश्वित्** कफकर, बलकारी, आमनाशकहै । **छच्छिका**-शीतल, हलकी, पित्त, श्रम और तृषाको दूर करे, नमक डालकर पीवे तो वादीको हरण करे और कफ करे तथा दीपन कर्त्ता है ।

तक्रोंके भेद.

स्तोकोद्धृतघृतंतस्माद्गुरुवृष्यं कफावहम् ।
अनुद्धृतघृतंसांद्रंगुरुपुष्टिकफप्रदम् ॥ ९ ॥

अर्थ-जिस तक्र में से घृतनिकाल लीना हो वह पथ्य और विशेष करके हलका है, जिसमेंसे थोडा घृत निकाला हो, वह पहिलेकी अपेक्षा भारी, वृष्य और कफकर्त्ता है । और बिना निकाले घृतवाला तक्र गाढा, भारी, पुष्टि और कफको करे है ।

दोष विशेष और व्याधि विशेषमें तक्र.

वातेऽम्लंशस्यतेतक्रंशुंठीसैंधवसंयुतम् ।
पित्तेस्वादुसितायुक्तंसव्योषमधिकेकफे ॥१०॥
हिंगुजीरयुतंघोलंसैंधवेनचसंयुतम् ।
भवेदतीववातघ्नमर्शोऽतीसारहृत्परम् ॥ ११ ॥
रुचिदंपुष्टिदंबल्यंबस्तिशूलविनाशनम् ।
मूत्रकृच्छ्रेतुसगुडंपांडुरोगेसचित्रकम् ॥ १२ ॥

अर्थ-बादीके रोगमें-सोंठ, सैंधानमक इनका चूर्ण मिलायकर खट्टा तक्र पीना । पित्तके रोग में खांड मिलायकर मीठा तक्र सेवन करना । अधिक कफमें व्योष (सोंठ, मिरच, पिपल,) का चूर्ण डालके पीना चाहिये । घोलमें हींग, जीरा और सैंधानमक डालके सेवन करे तो अत्यंत वातनाशक तथा बवासीर और अतिसारको हरण करे । रुचि-कर, पुष्टिकर, बलकर, वस्ति और शूलको नष्ट करे । मूत्रकृच्छ्रमें **घोल** गुड मिलाय के पीवे और पांडरोग में चित्रकका चूर्ण डालके पीना चाहिये ।

कच्चे पक्के तक्रके गुण.

तक्रमामंकफंकोष्ठेहंतिकंठेकरोतिच ।
पीनसेश्वासकासादौपक्वमेवप्रयुज्यते ॥१३॥

अर्थ–कच्चा तक्र कोठेके कफको नष्ट करे और कंठमें कफको करे है, अतएव पीनस, श्वास और खांसी आदि जो कफकी बिमारी हैं उन में औटाहुआ तक्र रोगीको देना चाहिये ।

तक्रसेवनके निमित्त.

शीतकालेऽग्निमांद्येचलथावातामयेषुच ।
अरुचौस्रोतसांरोधेतक्रंस्यादमृतोपमम् ॥१४॥
तत्तुहंतिगरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् ।
पांडुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगंदरान् ॥ १५ ॥
मेहंगुल्ममतीसारंशूलप्लीहोदरारुचीः ।
श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ॥

अर्थ–शीतकालमें, मंदाग्नि, वादीकेरोग, अरुचि और छिद्रोंका रुकना इनमें तक्र अमृतके तुल्य गुणदायक है । यह विषविकार, वमन, प्रसेक (लारका वहना) विषमज्वर, पांडुरोग, मेदरोग, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर, प्रमेह, गोला, अतिसार, शूलरोग, प्लीहा, उदर, अरुचि, सफेद कुष्ठ, कोठके रोग, कोढ, सूजन, तृषा और कृमिरोग इनको तक्र-सेवन दूर करे ।

तक्र देना वर्जित.

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले ।
नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपित्तजे ॥ १७ ॥

अर्थ–घाववाले रोगीको छाछ नहीं देना, गरमीकी ऋतुमें, दुर्बल मनुष्यको, मूर्छारोगी, भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगवाले के लिये छाछ पीनेको कदाचित् न देवे ।

गव्यादि तक्रोंके विशेष गुण.

यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत् ॥

अर्थ–जो प्रथम आठ प्रकारके दही कहेहैं उनके तक्रमेंभी उन्ही २ दहियोंके समान गुण कहे हैं ।

इति श्रीअभिनवघंटौ तक्रवर्गः ।

नवनीतवर्गः

नवनीत (मक्खन) के नाम और गुण.

म्रक्षणंसरजंहैयंगवीनंनवनीतकम् ।
नवनीतंहितंगव्यंवृष्यंवर्णबलाग्निकृत् ॥ १ ॥
संग्राहिवातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासहृत् ।
तद्धितंबालकेवृद्धेविशेषादमृतंशिशोः ॥ २ ॥

अर्थ–म्रक्षण, सरज हैयंगवीन, नवनीत, ए संस्कृतनाम । हिं. मक्खन, माखन, म. लोणी, गु. माखण, तै. वेन्ना, का. बेणे, अ. जुब्द, फा. मसका, इं. बटर ला. बुटिरम् । गुण । गौका नवनीत–हितकारी, वृष्य, बल, वर्ण और अग्निको करे । ग्राही, वात, पित्त, रुधिरविकार, क्षय, बवासीर, लकवा, खांसी इनको दूर करे यह बालक और वृद्धोंको हितकारी है और विशेष करके छोटे बालकके वास्ते नवनीत अमृततुल्य गुणदायक है ।

माहिष नवनीत.

नवनीतंमहिष्यास्तुवातश्लेष्मकरंगुरु ।
दाहपित्तश्रमहरंमेदःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ ३ ॥

अर्थ–भैंसका नवनीत–वातकफ कर्त्ता, भारी, दाह, पित्त और श्रमको हरण करे, तथा मेदा और शुक्रको बढाता है ।

दूधके मक्खनके गुण.

दुग्धोत्थंनवनीतंतुचक्षुष्यंरक्तपित्तनुत् ।
वृष्यंबल्यमतिस्निग्धंमधुरंग्राहिशीतलम् ॥४॥

अर्थ–दूधसे निकाला हुआ मक्खन नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्त नाशक, वृष्य, बलकारी, अतिस्निग्ध, मधुर, ग्राही और शीतल है ।

ताजे नवनीतके गुण.

नवनीतंतुसद्यस्कंस्वादुग्राहिहिमंलघु ।
मेध्यंकिंचित्कषायाम्लमीषत्तक्रांशसंक्रमात् ॥

अर्थ–तत्कालका निकाला हुआ मक्खन स्वादु, ग्राही, शीतल, हलका, मेध्य (बुद्धिवर्धक) तथा कुछ छाछका अंश रहनेसे किंचित् कषेला और खट्टा होताहै ।

पुराने नवनीतके गुण.

सत्तारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम् ।
श्लेष्मलंगुरुमेदस्यंनवनीतंचिरंतनम् ॥ ६ ॥

अर्थ-पुराना मक्खन-खारयुक्त, चरपरा और खट्टा हो जानेसे वमन, बवासीर और कोढको करहै, तथा कफकर्त्ता, भारी, और मेदाको बढाता है ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ नवनीतवर्गः ।

घृतवर्गः

घृतके नाम और गुण.

घृतमाज्यंहविःसर्पिःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ।
घृतंरसायनंस्वादुचक्षुष्यंवह्निदीपनम् ॥ १ ॥
शीतवीर्यंविषालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् ।
अल्पाभिष्यंदिकांत्योजस्तेजोलावण्य-
बुद्धिकृत् ॥ २ ॥
स्वरस्मृतिकरंमेध्यमायुष्यंबलकृद्गुरु ।
उदावर्त्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान्हरेत् ।
स्निग्धंकफकरंरक्षःक्षयवीसर्परक्तनुत् ॥ ३ ॥

अर्थ-घृत, आज्य, हवि और सर्पि, ए संस्कृत-नाम । **हिं**. घी, **म.** तूप, **तै.** नेई. **अ.** दुहनुल् वकर, **फा.** रोघनेजर्द कहतेहैं । **गुण** । घृत-रसायन, स्वादिष्ट, नेत्रोंको हितकारी, अग्नि-दीपन करता, शीतवीर्य, विष, अलक्ष्मी (अशोभा) पाप (अशुभ) पित्त और वादी इनको दूर करे, अल्प अभिष्यंदि, कांति, ओज, तेज, लावण्य (लौन) और बुद्धिको करहै । तथा स्वर, स्मरणशक्तिको करे, पवित्र, आयु और बलको करे तथा भारी है । उदावर्त्त, ज्वर, उन्माद, शूल, अफरा, व्रण इनको दूर करे । चिकना, कफ-कर, राक्षस, क्षयरोग, वीसर्परोग और रुधिरविकारको दूर करे ।

गोघृतके गुण.

गव्यंघृतंविशेषेणचक्षुष्यंवृष्यमग्निकृत् ।
स्वादुपाककरंशीतंवातपित्तकफापहम् ॥ ४ ॥
मेधाधावण्यकांत्योजस्तेजोवृद्धिकरंपरम् ।
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंवयसःस्थापकंगुरु ॥ ५ ॥
बल्यंपवित्रमायुष्यंसुमंगल्यंरसायनम् ।
सुगंधंरोचनंचारुसर्वाज्येषुगुणाधिकम् ॥ ६ ॥

अर्थ-गौका घी-विशेष करके नेत्रोंको हितकारी, वृष्य, अग्निकर्त्ता, स्वादिष्ट पाककरता, शीतल, वातपित्त और कफको नष्ट करे, मेधा, लावण्यता, कांति, ओज, तेज इनकी वृद्धि करे । अलक्ष्मी, पाप, और राक्षसको नष्ट करे । अवस्थाको स्थापन करे, भारी, बलकर, पवित्र, आयुष्कर, मंगलकारी, रसायन, सुगंधित, रुचिकर्त्ता, सुंदर, संपूर्ण घृतों में यह **गौका घी** गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

भैंसका घी.

माहिषंतुघृतंस्वादुपित्तरक्तानिलापहम् ।
शीतलंश्लेष्मलंवृष्यंगुरुस्वादुविपच्यते ॥ ७ ॥

अर्थ- भैंसका घी-स्वादिष्ट, पित्त, रुधिर और बादीको नष्ट करे । शीतल, श्लेष्मल, वृष्य, भारी और स्वादुपाकी है ।

बकरीका घी.

आजमाज्यंकरोत्यग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम् ।
कासेश्वासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु ॥ ८ ॥

अर्थ-बकरीका घी-अग्निकर, चक्षुष्य (नेत्रोंको हितावह) बलवर्द्धक, खांसी, श्वास, क्षय, इन रोगोंपर अत्यंत हितकारी और कटुपाकी है ।

ऊंटनीका घी.

औष्ट्रंकटुघृतंपाकेशोषकृमिविषापहम् ।
दीपनंकफवातघ्नंकुष्ठगुल्मोदरापहम् ॥ ९ ॥

अर्थ-ऊंटनीका घी-कटुपाकी, शोष, कृमिरोग, विषरोग, कुष्ठरोग, गुल्म और उदर इनको दूर करे, दीपन और कफवातनाशक है ।

भेड़का घी.

पाकेलघ्वाविकंसर्पिःसर्वरोगविनाशनम् ।
वृद्धिंकरोतिचास्थीनामश्मरीशर्करापम् ॥
चक्षुष्यमग्निकरणंवातदोषनिवारणम् ॥ १० ॥

अर्थ-भेड़का घी-पाकमें हलका, सर्व रोग नाशकर्त्ता, हड्डियों को बढावे, पथरी, शर्करा और

वादीको दूर करे, नेत्रोंको हितकारी और जठराग्निको प्रबल करनेवाला है।

स्त्री-घृत.

कफेऽनिलेयोनिदोषेपित्तेरक्तेचतद्धितम्।
चक्षुष्यमाज्यंस्त्रीणांवासर्पिःस्यादमृतोपमम्॥

अर्थ-कफरोग, वादी, योनिरोग, पित्त और रुधिरकी बीमारियोंमें स्त्रीका घी हितकारी है। नेत्रोंको हितकर्ता तथा स्त्रीका घी अमृतके तुल्य है।

घोड़ीका घी.

वृद्धिंकरोतिदेहाग्न्योर्लघुपाकेविषापहम्।
तर्पणंनेत्ररोगघ्नंदाहनुद्वडवाघृतम्॥ १२॥

अर्थ-घोड़ीका घी देह और जठराग्निको बढ़ावे, इसका पाक लघु, विषदोष-नाशक, तर्पण, नेत्ररोग नाशक और दाहको नष्ट करे।

साधारण दुग्धका घी.

घृतंदुग्धभवंग्राहिशीतलंनेत्ररोगहृत्।
निहंतिपित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान्॥

अर्थ-दूधमात्रसे निकालाहुआ घी ग्राही, शीतल, नेत्ररोगनाशक, पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वादी इनको दूर करे।

हैयंगवीन घृत.

ह्यस्तनदुग्धोत्थंतत्स्याद्धैयंगवीनकम्।
हैयंगवीनंचक्षुष्यंदीपनंरुचिकृत्परम्॥
बलकृद्बृंहणंवृष्यंविशेषाज्ज्वरनाशनम्॥१४॥

अर्थ-जो घी पहले दिवसके दूधमेंसे निकाला होय उसकी **हैयंगवीन** संज्ञा है। **गुण**। नेत्रोंको हितकारी, दीपन, रुचिकारी, बलकर्त्ता, बृंहण, वृष्य और विशेष करके ज्वरको नाश करे है।

पुरानेघीके गुण.

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यंपुराणंतत्त्रिदोषनुत्।
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम्॥
यथायथाऽखिलंसर्पिःपुराणमधिकंभवेत्।
तथातथागुणैःस्वैःस्वैरधिकंतदुदाहृतम्॥

अर्थ-एक वर्ष व्यतीत होनेसे घीकी **प्राचीन** संज्ञा होजाती है- अर्थात् पुरानाघी कहाताहै, यह त्रिदोषनाशक, मूर्च्छा, कुष्ठ, विषविकार, उन्माद (मालीखोलिया) मृगी, तिमिर इनको दूर करे। सब घी जैसे-जैसे अधिक पुराने होते जाते हैं तैसे २ जो-जो गुण जिस २ घीके कहे हैं उन गुणोंको अधिक करतेहैं।

नवीन घी के योग्य.

योजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे।
बलक्षयेपांडुरोगेकामलानेत्ररोगयोः॥ १७॥

अर्थ-भोजनमें, नेत्रतर्पणमें, परिश्रम (दंडकसरत) वालेको, बलक्षय, पांडुरोग, कामला, और नेत्ररोग इनमें **नवीन ही घृत** देना, पुराना नहीं देना।

घृतदेना वर्जित.

राजयक्ष्मणिबालेचवृद्धेश्लेष्मकृतेगदे।
रोगेसामेविषूच्यांचविबंधेचमदात्यये॥
ज्वरेचदहनेमंदेनसर्पिर्बहुमन्यते॥ १८॥

अर्थ-राजयक्ष्मा (खई) बालक, वृद्ध, कफके रोगमें, आमरोगमें, विषूचिका (हैजा) विबंध, ज्वर और मंदाग्नि, इनमें **घृतका देना निषेध है।**

इति श्रीअभिनवनिघंटौ घृतवर्गः।

मूत्रवर्गः

गोमूत्रके गुण.

गोमूत्रंकटुतीक्ष्णोष्णंक्षारंतिक्तंकषायकम्।
लघ्वग्निदीपनंमेध्यंपित्तकृत्कफवातहृत्॥ १॥
शूलगुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षिमुखरोगजित्।
किलासगदवातामवस्तिरुक्कुष्ठनाशनम्॥
कासश्वासापहंशोथकामलापांडुरोगहृत्।
कण्डुंकिलासगदशूलमुखाक्षिरोगान्॥
गुल्मातिसारमुदरामयमूत्ररोधान्।
कासंसकुष्ठजठरक्रिमिपांडुरोगान्।
गोमूत्रमेकमपिपीतमपाकरोति॥ ३॥
सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रंगुणतोऽधिकम्।
अतोऽविशेषात्कथनेमूत्रंगोमूत्रमुच्यते॥
प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम्।

शूलगुल्मरुजानाहकामलापांडुरोगहृत् ।
कषायंतिक्ततीक्ष्णंचपूरणात्कर्णशूलनुत् ॥

अर्थ-गोमूत्र कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, क्षारयुक्त, कड़वा, कषेला, हलका, अग्निदीपनकर्त्ता, मेध्य, पित्तकर्त्ता, कफवात नाशक, शूल, वायुगोला, उदररोग, अफरा, खुजली, नेत्ररोग, मुखरोग, किलास रोग, आमवात, वस्तिकी पीडा, कोढ, खांसी, श्वास, सूजन, कामला और पांडुरोग को दूर करे । तथा खुजली, किलास शूल, मुख और नेत्ररोग, गोला, अतिसार, आमवात, मूत्ररोध, खांसी, कुष्ठ, उदरोग, कृमि और पांडुरोग इनको केवल एक गोमूत्रही पीना नष्ट करताहै । सब मूत्रोंमें गोमूत्र गुणोंमें श्रेष्ठ है । अतएव जहां कहीं **मूत्र** शब्द आवे उस जगह वैद्य **गोमूत्र** लेवे । सीह (पिलही या तिल्ली), उदर श्वास, खांसी, सूजन, मलरोध, शूल, गोला, अफरा कामला और पांडुरोग इनको दूर करे । कषेला, कड़वा, तीक्ष्ण और कानमें डालनेसे कानकी पीडाको दूर करे ।

मनुष्यका मूत्र.

नरमूत्रंगरंहंतिसेवितंतद्रसायनम् ।
रक्तपामाहरंतीक्ष्णंसक्षारलवणंस्मृतम् ॥८॥
गोऽजाविमहिषीणांतुस्त्रीणांमूत्रंप्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानांपुंसांमूत्रंहितंस्मृतम् ॥

अर्थ-मनुष्य का मूत्र विष (जहर) को दूर करे और सेवन करनेसे रसायन है, यह रुधिरविकार खुजलीको दूर करे । तीक्ष्ण, खारयुक्त, नमकीन है । गौ, बकरी, भैंस, इनमें **स्त्रियोंका मूत्र** उत्तम है । और **पुरुषोंमें** गधा, ऊंट, हाथी, मनुष्य और घोड़ा इनका मूत्र उत्तम होता है ।

इतिश्री अभिनवनिघंटौ मूत्रवर्गः ।

तैलवर्गः

तेलका स्वरूप.

तिलादिस्निग्धवस्तूनांस्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।
तत्तुवातहरंसर्वंविशेषात्तिलसंभवम् ॥ १ ॥

अर्थ-तिल और आदि शब्दसे सरसों, अलसी आदि स्निग्धवस्तुओंकी चिकनाईको तेल कहते हैं । सब तेल वातहरण करता हैं– परन्तु इनमेंभी तिलतेल विशेष करके वादीको हरण करे है ।

तिल तैलके गुण.

तिलतैलंगुरुस्थैर्यबलवर्णकरंसरम् ।
वृष्यंविकाशिविशदंमधुरंरसपाकयोः ॥ २ ॥
सूक्ष्मंकषायानुरसंतिक्तंवातकफापहम् ।
वीर्येणोष्णंहिमंस्पर्शेबृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥ ३ ॥
लेखनंबद्धविण्मूत्रंगर्भाशयविशोधनम् ।
दीपनंबुद्धिदंमेध्यंव्यवायिव्रणमेहनुत् ॥ ४ ॥
श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनंलघुताकरम् ।
त्वच्यंकेश्यंचचक्षुष्यमभ्यंगेभोजनेऽन्यथा ॥५॥
छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते ।
भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धविश्लिष्टदारिते ॥६॥
तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते ।
वस्तौपानेऽन्नसंस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे ॥७॥
सेकाभ्यंगावगाहेषुतिलतैलंप्रशस्यते ।
रूक्षादिदुष्टःपवनःस्रोतःसंकोचयेद्यदा ॥
रसोऽसम्यग्वहन्कार्श्यंकुर्याद्रूक्षाद्यवर्द्धयन्
तेषुप्रविष्टंसरत्वसौक्ष्म्यस्निग्धत्वमार्दवैः ।
तैलंक्षमंरसंनेतुंकृशानांतेनबृंहणम् ॥ ९ ॥
व्यवायिसूक्ष्मतीक्ष्णोष्णासरत्वैर्मेदसःक्षयम् ।
शनैःप्रकुरुतेतैलंतेनलेखनमीरितम् ॥ १० ॥
द्रुतंपुरीषंबध्नातिस्खलितंतत्प्रवर्त्तयेत् ।
ग्राहकंसारकंचापितेनतैलमुदीरितम् ॥ ११ ॥
घृतमब्दात्परंपक्वंहीनवीर्यंप्रजायते ।
तैलंपक्वमपक्वंवाचिरस्थायिगुणाधिकम् ॥१२॥

अर्थ-तिलका तैल भारी, स्थिर, बल, वर्णकरता, दस्तावर, वृष्य, विकाशि, विशद और रस तथा पाकमें मिष्ट है । सूक्ष्म, कषेला, तिक्त, वातकफनाशक वीर्यमें उष्णवीर्य, स्पर्शमें शीतल, बृंहण, रक्तपित्तकरता, लेखन, मलमूत्रके बंधनेको और गर्भाशयको शोधनेवाला, दीपन, बुद्धिदाता, मेध्य, व्यावायी, व्रण और प्रमेहको नष्ट करता, कान, योनि, शिर इनकी पीडाको नष्ट करे तथा इनको हलका करे ।

त्वचाको और बालों को उत्तम करे। नेत्रों को हित, ए गुण तैल मालिश करने के हैं। और यदि इसको भोजन करा जाय तो कहे हुए गुणों से विपरीत गुणों को करे है। छिन्न, भिन्न, च्युत (गिरजाना) पिसजाना, मथ (मसल) जाना, घाव, पिचजाना, टूटजाना, फटजाना, विधजाना, आग से जल जाना, स्थान से हटजाना, चिरजाना, अभिहत (चोट लगना) टेढा होजाना, मृग (हिरन) व्याघ्र (बघेरा) आदि से घायल हुआहो इन सब पर, तथा वस्तिकर्म, तैलपान, अन्नसंस्कार (तैल से छौंकना अथवा तैल से पदार्थ बनाना) नस्यकर्म, कान में और नेत्रों में डालना, तरडा डालना, मालिश करना और तेलमें बैठना, इन सब में तिलोंका तेल लेना उत्तम है। कदाचित् कोई प्रश्न करे कि तेल बृंहण है वह लेखन कैसे होसकता है। इस वास्ते कहते हैं- रूक्ष आदि गुणवाली पवन जब देहके छिद्रों को संकुचित कर देवे, तब वह रस उत्तम प्रकार से नहीं वहे, अतएव वह रुधिरको नहीं बढावे तब यह प्राणी कृश होता है। ऐसे कृशप्राणी के देहमें यह तेल सर, सूक्ष्म, स्निग्ध और मृदुताके कारण उस रसको बहाने में समर्थ है। अतएव कृश मनुष्य इस तेल के लगाने से पुष्ट होते हैं। और यह तैल व्यवायी, सूक्ष्म, तीक्ष्ण उष्ण और दस्तावर होने के कारण धीरे २ मेदाको क्षय करता है। अतएव तैलको लेखनत्व (कृशकारित्व) है। तत्काल मलको बांधे देवे और जो मल स्थान से छूट चुका है उसको तत्काल निकाल देता है इसी से तैल को ग्राहकत्व और सारकत्व है। घी. एक वर्ष व्यतीत होने पर पकाहुआ हीन वीर्य होजाता है। परन्तु तेल पका हुआ अथवा विना पका जितना अधिक पुराना होयगा उतनाही अधिक गुणवाला होता है।

सरसों और राई का तेल.

दीपनंसार्षपंतैलंकटुपाकरसंलघु ।
लेखनंस्पर्शवीर्योष्णंतीक्ष्णंपित्तास्रदूषकम् ॥
कफमेदोऽनिलार्शोघ्नंशिरःकर्णामयापहम् ।
कंडुकुष्ठकृमिश्वित्रकोठदुष्टकृमिप्रणुत् ॥
तद्वद्राजिकयोस्तैलंविशेषान्मूत्रकृच्छ्रकृत् ।

अर्थ-सरसों का तेल दीपनहै, **पाक** में कटु, इसका **रस** हलका है, लेखन, स्पर्श और **वीर्य** में उष्ण, तीक्ष्ण, पित्त और रुधिरको दूषित करने वाला, कफ, मेदा, वादी, बवासीर, शिरपीडा, कानके रोग, खुजली, कोढ, कृमि, सफेदकोढ, चकत्ते और दुष्टकृमि इनको दूर करे। इसी प्रकारके गुण काली और लाल **राई के तेल** में है। परन्तु राईका तेल विशेष करके मूत्र कृच्छ्रको करता है।

तुवरी तेल.

तीक्ष्णोष्णंतुवरीतैलंलघुग्राहिकफास्रजित् ।
वह्निकृद्विषहृत्कंडुकुष्ठकोठकृमिप्रणुत् ॥
मेदोदोषापहंचापिव्रणशोथहरंपरम् ॥ १५ ॥

अर्थ-तुवरी (तोरई के बीजों) **का तेल**, तीक्ष्ण, उष्ण, हलका, ग्राही, कफ और रुधिरको नष्ट करे, अग्निकर्त्ता, विष, खुजली, कोढ, चकत्ते, कृमि इनको दूर करे। तथा मेददोष और व्रणकी सूजनको दूर करे।

अलसी तेल.

अलसीतैलमाग्नेयंस्निग्धोष्णंकफपित्तकृत् ।
कटुपाकमचक्षुष्यंबल्यंवातहरंगुरु ॥ १६ ॥
मलकृद्रसतःस्वादुग्राहित्वग्दोषहृद्घनम् ।
बस्तौपानेतथाभ्यंगेनस्येकर्णस्यपूरणे ॥
अनुपानविधौचापिप्रयोज्यंवातशांतये ॥१७॥

अर्थ-अलसीका तेल अग्निकर्त्ता, स्निग्ध, गरम, कफपित्त करने वाला, कटुपाकी, नेत्रों को अहित, बलकर्त्ता, वातहरणकर्त्ता, भारी, मलकारक, रस में स्वादिष्ट ग्राही, त्वचा के दोषों को हरण करे, गाढा है, वस्तिकर्म, तैलपान, मालिश, नस्य, कर्णपूरण और अनुपान विधिमें वातशांति करने को देना चाहिये।

कुसुंभ तैल.

कुसुंभतैलमम्लंस्यादुष्णंगुरुविदाहिच ।
चक्षुर्ष्यमहितंबल्यंरक्तपित्तकफप्रदम् ॥ १८ ॥

अर्थ-कसूम अर्थात् कसूम के **बीजों का तेल** खट्टा, गरम, भारी, दाह करने वाला, नेत्रों को अहित, बलकारी, रक्तपित्त और कफ को करने वाला है।

खसखस तैल.

तैलंतुखसबीजानांबल्यंवृष्यंगुरुस्मृतम् ।
वातहृत्कफहृच्छीतंस्वादुपाकरसंचतत् ॥१९॥

अर्थ-खसखसका तैल, बलकर्त्ता, वृष्य, भारी,

वातकफ हरणकर्त्ता, शीतल, तथा इस का रस और पाक स्वादिष्ट है।

अंडी का तैल.

एरंडतैलंतीक्ष्णोष्णंदीपनंपिच्छिलंगुरु।
वृष्यंत्वच्यंवयःस्थापिमेधाकांतिबलप्रदम्॥
कषायानुरसंसूक्ष्मंयोनिशुक्रविशोधनम्।
विस्रंस्वादुरसेपाकेसतिक्तंकटुकंसरम्॥२१॥
विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत्।
हंतिवातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान्॥
वातशोणितविड्बंधवर्ध्मशोथामविद्रधीन्।
आमवातगजेंद्रस्यशरीरवनचारिणः॥
एकएवनिहंतायमेरंडस्नेहकेसरी॥२२॥

अर्थ-अंडीका तैल—तीक्ष्ण, गरम, दीपन, गिलगिला, भारी, वृष्य, त्वचाका सुधारने वाला, अवस्थास्थापक, मेधा, कांति और बलकरे। कषेले रसवाला, सूक्ष्म, योनि और शुक्रको शोधन कर्त्ता, विस्र (आमगंधि वाला) सर और पाक में स्वादिष्ट, कड़वा, चरपरा, दस्तावर, विषमज्वर, हृदय का रोग, पीठ, गुह्य-स्थान के शूल को दूर करे। वादी, उदर, अफरा, गोला, अष्ठीला, कमरका, रहजाना वातरक्त, मलसंग्रह, वद, सूजन, आमवात और विद्रधि इनको दूर करे। शरीररूप-वन में विचरने वाला आमवात रूप मत्त हाथी के मारने को यह एकही अंडी का तैलरूप सिंह है.

रालका तैल.

तैलंसर्जरसोद्भूतंविस्फोटव्रणनाशनम्।
कुष्ठपामाकृमिहरंवातश्लेष्मामयापहम्॥२३॥

अर्थ-रालका तैल-विस्फोट (फोडे) घाव, कोढ, खुजली, कीडा और वातकफ से होने वाले रोगों को दूर करे।

सब तैलों के गुण.

तैलंस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटनाखिलंमतम्।
अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिवत्॥२४॥

अर्थ-वाग्भट आचार्य ने सम्पूर्ण तेल अपनी २ योनि अर्थात् जो तैल जिस से प्रकट हुए हैं वह उसी के समान गुण करते हैं। ऐसा कहा है, इसी से जो तेल इस जगहपर नहीं कहे गए उनको अपनी २ योनि के समान गुणवाले जान लेने चाहिये।

इतिश्री अभिनवनिघंटौ तैलवर्गः।

संधानवर्गः।

कांजिकलक्षणं.

संधितंधान्यमंडादिकांजिकंकथ्यतेजनैः।
कांजिकंभेदितीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु॥१॥
दाहज्वरहरंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम्॥

अर्थ-धान्यादि के मंडको दो तीन दिन रक्खा रहने देवे, जब वो खट्टा होजावे उसको मनुष्य कांजी कहते हैं। गुण। भेदी, तीक्ष्णोष्ण, रोचन, पाचन, हलकी, लगाने से दाह और ज्वर को नष्ट करे तथा पीने से वात कफ को नष्ट करती है।

माषादिवटकैर्युक्तंक्रियतेतद्गुणाधिकम्।
लघुवातहरंतत्तुरोचनंपाचनंपरम्॥
शूलाजीर्णविबंधामनाशनंवस्तिशोधनम्॥

अर्थ-प्रथम उड़दके बड़े बनायकर राईके जलमें भिगोय देवे और निमक, कालीमिरच, ज़ीरा डालकर दो तीन दिन धरा रहने देवे, यह कांजी अन्य कांजियोंसे गुणोंमें अधिक है। यह हलकी, वातहरण कर्त्ता, रुचिदायक, अत्यंत पाचन, शूल, अजीर्ण, विबंध, और आम इनको नष्ट करे, और वस्तिको शुद्ध करती है।

निषेध.

शोषमूर्च्छाभ्रमार्तानांमदकंडुविशोषिणाम्।
कुष्ठिनांरक्तपित्तीनांकांजिकंनप्रशस्यते॥४॥
पांडुरोगेयक्ष्मणिचतथाशोषातुरेषुच।
क्षतक्षीणेतथाश्रांतेमंदज्वरनिपीडिते॥
एतेषांनहितंप्रोक्तंकांजिकंदोषकारकम्।

अर्थ-शोष रोगी, मूर्च्छा, भौर, मद्यसे मतवाला, खुजली, जिनका देह सूख गया, कोढी और रक्तपित्तवाला इन रोगियोंको कांजी कदाचित् नहीं देना। पांडरोग, खई, शोषरोगी, उरःक्षतसे क्षीण, परिश्रमी

और मंदज्वरसे पीड़ित इन सब प्राणियोंको कांजी पीना अहित और दोषकर्त्ता है।

तुषोदक.

तुषोदकंयवैरामैःसतुषैःशकलीकृतैः।
तुषांबुदीपनंहृद्यंकृमिपांडुगदापहम्॥
तीक्ष्णोष्णंपाचनंपित्तरक्तकृद्बस्तिशूलनुत्॥

अर्थ-कच्चे और तुषसहित जौओंको कूटकर भिगोय देवे, जब खटाई आय जावे तब तुषोदक सिद्ध होजाताहै। यह तुषोदक दीपन, हृद्य, पांडुरोग, कृमिरोग और वस्तिके शूलको नष्ट करे तथा रक्तपित्तको करे है, तीक्ष्णोष्ण और पाचन है।

सौवीर.

सौवीरंतुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतम्।
गोधूमैरपिसौवीरमाचार्याःकेचिदूचिरे॥
सौवीरंतुग्रहण्यर्शःकफघ्नंभेदिदीपनम्।
उदावर्त्तांगमर्दास्थिशूलानाहेषुशस्यते॥

अर्थ-कच्चे जौ अथवा पकेहुए जौओंके तुष (छिलका) दूर कर कूटडाले फिर इसकी कांजी बनावे इसकी सौवीर संज्ञा है। कोई आचार्य कहते हैं कि कच्चे अथवा पके गेहुंओं से सौवीर बनता है। गुण। यह सौवीर, संग्रहणी, बवासीरमें देवे, कफघ्न, भेदी और दीपन है, उदावर्त, अंगोंका टूटना, हड्डियोंका दर्द और अनाह (अफरा) रोगपर देना।

आरनाल.

आरनालंतुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः।
पक्वैर्वासंधितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः॥९॥

अर्थ-तुषरहित कच्चे गेहुंओंको भिगोनेसे आरनाल संज्ञक कांजी बनती है। अथवा पकेहुए गेहूंसे जो साधन करी गई उसकी भी आरनाल संज्ञा है। इसमें भी सौवीर कांजीके समान ही गुण हैं।

धान्याम्ल.

धान्याम्लंशालिचूर्णंचकोद्रवादिकृतंभवेत्।
धान्याम्लंधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम्॥
अरुचौवातरोगेषुसर्वेष्वास्थापनेहितम्।

अर्थ-शालिचांवलोंका चूर्ण अथवा कोदोंके चूनको डालके जो कांजी, बनाई गई उसको धान्याम्ल कहते हैं। यह धान्योंसे बनताहै इसीसे प्रीणन (पालनकर्त्ता) हलका, दीपन, अरुचि और सम्पूर्ण वात के रोगोंमें वस्ति करनेको हित है।

शिंडाकी.

शिंडाकीराजिकायुक्तैःस्यान्मूलकदलद्रवैः।
सर्षपस्वरसैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतैः॥
शिंडाकीरोचनीगुर्वीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता।

अर्थ-कंद, मूल, फल, पत्ते, इनके द्रव्यमें राई डालकर जो कांजी बनातेहैं उसकी शिंडाकी संज्ञा है। कोई कहताहै कि सरसोंके रसमें शालि चांवलोंका चून डालके जो बनातेहैं उसकी भी शिंडाकी संज्ञा है। गुण। शिंडाकी रोचनी, भारी और पित्त, कफ करनेवाली है।

शुक्त.

कंदमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच।
यत्रद्रव्येऽभिषूयंतेतच्छुक्तमभिधीयते॥१२॥
शुक्तंकफघ्नंतीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु।
कृमिपांडुहरंरूक्षंभेदनंरक्तपित्तकृत्॥ ३१॥

अर्थ-कंद, मूल और फलादिकमें नमक और तैल डालके जो वस्तु तयार करी जाती है उसको शुक्त (सिर्का) कहते हैं। सिर्का-कफनाशक, तीक्ष्णोष्ण, रोचन, पाचन, हलका, पांडुरोग और कृमिरोगको हरण करे। रूक्ष, भेदक और रक्तपित्तको करने वालाहै।

संधान.

कंदमूलफलाढ्यंयत्तत्तुविज्ञेयमासुतम्।
तद्रुच्यंपाचनंवातहरंलघुविशेषतः॥१४॥

अर्थ-जिसे केवल कंद, मूल, फलादिकोंमें राई आदि मसाला डालके रक्खा रहने दिया जाता है-उसको आसुत अर्थात् अचार या संधाना कहते हैं। यह रुचिकारी, पाचन, वातहरण कर्त्ता और विशेष करके हलका है।

मद्यके नाम.

मद्यंलुसीधुमैरेयमिराचमदिरासुरा ।
कादंबरीवारुणीच्हालापिबलवल्लभा ॥ १५ ॥
पेयंयन्मादकंलोकैस्तन्मद्यमभिधीयते ।
यथाऽरिष्टंसुरासीधुरासवाद्यमनेकधा ॥
मद्यंसर्वंभवेदुष्णंपित्तकृद्वातनाशनम् ।
भेदनंशीघ्रपाकंचरूक्षंकफहरंपरम् ॥ १७ ॥
अम्लंचदीपनंरुच्यंपाचनंचाशुकारिच ।
तीक्ष्णंसूक्ष्मंचविशदंव्यवायिचविकाशिच ॥

अर्थ–मद्य, सीधु, मैरेय, मिरा, मदिरा, सुरा, कादंबरी, वारुणी, हाला और बलवल्लभा यह मद्य के नाम हैं। यावन्मात्र मदकर्त्ता, पीनेके पदार्थहैं उनको **मद्य** संज्ञा है। जैसे–अरिष्ट, सुरा, सीधु और आसवादि अनेकहैं। **गुण** । संपूर्ण मद्य–गरम, पित्तकर्त्ता, वातनाशक, भेदन, शीघ्रपाकी, रूक्ष, कफहरणकर्त्ता, खट्टे, दीपन, रुचिकारी, पाचन, आशुकारी (शीघ्रता करनेवाले) तीक्ष्ण, सूक्ष्म, विशद, व्यवायी और विकाशी हैं।

अरिष्ट,

पक्वौषधांबुसिद्धंयन्मद्यंतत्स्यादरिष्टकम् ।
अरिष्टंलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम् ॥
अरिष्टस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ।

अर्थ–जो पकीहुई औषधोंके जलसे अर्थात् क्वाथ आदिसे मद्य बनता है उसकी **अरिष्ट** संज्ञा है। जैसे द्राक्षारिष्ट, दशमूलारिष्ट और बबूलारिष्ट है। **गुण** । अरिष्ट लघुपाकी होनेसे सब मद्योंसे गुणोंमें अधिक है। यह अरिष्ट जिस वस्तुसे बनताहै उसी २ वस्तुके समान गुण कारक है।

सुरा.

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतंमद्यंसुरास्मृता ।
सुरागुर्वीबलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ॥
ग्राहिणीशोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ।

अर्थ–शालिचांवल और साठीचावल तथा पिष्ट (पिसाअन्न) आदिसे जो मद्य बनाया जाता है उसकी **सुरा** संज्ञा है। **गुण** । सुरा-भारी, बल, स्तन्य (स्त्रीके स्तनोंमें दूध) पुष्टि, मेद और कफ करती है. ग्राहिणी, सूजन, गोला, बवासीर, संग्रहणी और मूत्रकृच्छ्को नष्ट करे।

वारुणी.

पुनर्नवशिलापिष्टैर्वारुणीविहितास्मृता ।
संहितैस्तालखर्जूररसैर्यासापिवारुणी ॥
सुरावद्वारुणीलघ्वीपीनसाध्मानशूलनुत् ।

अर्थ–दूसरीवार नवीन शालीचावलोंको शिलापर पीसकर जिसे बनाते हैं उसको **वारुणी** कहतेहैं। और कोई "**पुनर्नवाशिलापिष्टैः**" ऐसा पाठ लिखतेहैं उसका यह अर्थ है कि पुनर्नवा (सांठकी जड़) को शिलापर पीसके जो बनाईजाय उसको **वारुणी** कहतेहैं। और कोई आचार्य कहतेहैं कि ताड़ और खिजूरआदिके रससे जो ताडी और खिजूरी बनातेहैं उसको **वारुणी** कहतेहैं। **गुण** । वारुणीके गुण सुराके तुल्य हैं. विशेष करके हलकी, पीनस, अफरा और शूलको दूर करती है।

सीधु और शीतरस.

इक्षोःपक्वैरसैःसिद्धःसीधुः पक्वरसश्चसः ।
आमैस्तैरेवयःसीधुःसचशीतरसःस्मृतः ॥
सीधुःपक्वरसःश्रेष्ठःस्वराग्निबलवर्णकृत् ।
वातपित्तकरःसद्यःस्नेहनोरोचनोहरेत् ॥
विबंधमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ।
तस्मादल्पगुणःशीतरसःसंलेखनःस्मृतः ॥

अर्थ–जो ईखके पकाए हुए रससे मद्य बनाया जाता है उसको **सीधु** कहतेहैं। और जो अपक्व (कच्चे) ईखके रससे दारू बनाई जातीहै उसकी **शीतरस** संज्ञा है। **गुण** । पक्वरसवाली सीधु उत्तम है-यह स्वर, अग्नि, बल, वर्णको करे। वात,पित्तकर्त्ता, तत्काल स्नेहन और रोचन है, यह विबंध, मेद, सूजन, बवासीर, उदरकी सूजन और कफके रोगोंको हरण करैहै। एवं सीधुसे कुछ अल्प गुण **शीतरसमें** है किन्तु यह लेखन है।

आसव.

यदपक्वौषधांबुभ्यांसिद्धंमद्यंसआसवः ।
आसवस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥

अर्थ–जो विना पकी अर्थात् कच्ची औषधोंसे मद्य

बनाया जाताहै उसकी **आसव** संज्ञा है, जैसे द्राक्षासव, दशमूलासव हैं। आसवके गुण उसकी बीजद्रव्य अर्थात् जिन २ औषधोंसे बनतेहैं उसीके तुल्य जानने।

नवीन और प्राचीनमद्य.

मद्यंनवमभिष्यंदित्रिदोषजनकंसरम्।
अहृद्यंबृंहणंदाहिदुर्गंधंविशदंगुरु॥ २६॥
जीर्णंतदेवरोचिष्णुक्रमिश्लेष्मानलापहम्।
हृद्यंसुगंधिगुणवल्लघुस्रोतोविशोधनम्॥

अर्थ-नवीनमद्य- अभिष्यंदी, त्रिदोषकरता, दस्तावर, हृदयको अहित, बृंहण, दाहकरनेवाला, दुर्गंधवाला, विशद और भारी जानना। वही मद्य यदि **पुराना** होय तो रुचिकारी, कृमिरोग, कफ और बादी इनको दूर करे। हृदयको हितकारी, सुगंधयुक्त, गुणकर्त्ता, हलका और छिद्रोंको शोधन करने वाला है।

सात्विकादि मद्यपीनेवालोंके लक्षण.

सात्विकेगीतहास्यादिराजसेसाहसादिकम्।
तामसेनिंद्यकर्माणिनिद्रांचमदिराऽऽचरेत्॥

अर्थ-मद्यकी **तीनअवस्था** होती हैं। तहां **सात्विकमद्यसे** गाना, बजाना, हांसी, ठिठोरी करे, **राजसीमद्यसे** साहसादिक (पुरुषार्थके वीर-कर्मों) को करे और **तमास मद्यसे** निंदित कर्म (अगम्यागमनादि) को करे और सोवे है।

विधि अविधिसे मद्यपीनेके गुणागुण.

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम्॥
प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा।
किंतुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथास्मृतम्॥
अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथाऽमृतम्॥

अर्थ-जो प्राणी मद्यपानकी विधिसे, मात्राके अनुसार, यथा समय, हितकारी अन्नोंके साथ, बलाबल विचारके प्रसन्नचित्त से जिसे पीता है उसको मद्य **अमृत**के तुल्य गुणोंको करेहै। किंतु मद्य स्वभावसेही अन्नके समान गुणवाला है, जो अयुक्ति अर्थात् अविधिसे पीवे उसको रोग करताहै और जो विधिपूर्वक सेवन करे तो अन्नके समान अमृततुल्य गुणोंको करे। मद्यपानकी विधि चरक आदि ग्रंथोंमें लिखी है सो देखलेना।

मद्यगंधनाशन.

मुस्तैलवालुगदजीरकधान्यकैलाः।
यश्चर्वयन्सदसिवाचमभिव्यनक्ति॥
स्वाभाविकंमुखजमुज्झतिपूयगंधम्।
गंधंचमद्यलशुनादिभवंचनूनम्॥ ३१॥

अर्थ-नागरमोथा, एलवालुक, कूठ, जीरा, धनियां और छोटीइलायची को भक्षण करके जो सभामें वार्ता करताहै, उसके मुखसे स्वाभाविक मुखदुर्गंध दूर होवे, तथा मद्य और लहसन खानेसे जो मुखकी दुर्गंध होतीहै उसकोभी दूर करे।

इतिश्री अभिनवनिघंटौ संधानवर्गः।

मधुवर्गः।

मधु (शहद) के नाम, गुण.

मधुमाक्षीकमाध्वीकक्षौद्रसारघ्यमीरितम्।
मक्षिकावरटीभृंगवांतपुष्परसोद्भवम्॥ १॥
मधुशीतंलघुस्वादुरूक्षंग्राहिविलेखनम्।
चक्षुष्यंदीपनंस्वर्यंव्रणशोधनरोपणम्॥ २॥
सौकुमार्यकरंसूक्ष्मंपरंस्रोतोविशोधनम्।
कषायानुरसंह्लादिप्रसादजनकंपरम्॥ ३॥
वर्ण्यंमेधाकरंवृष्यंविशदंरोचनंहरेत्॥
कुष्ठार्शःकासपित्तास्रकफमेहक्लमक्रमीन्॥
मेदस्तृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान्।
दाहक्षतक्षयांस्तत्तुयोगवाह्यल्पवातलम्॥ ५॥

अर्थ-मधु, माक्षिक, माध्वीक, क्षौद्र और सारघ्य ए, शहदके **सं.** नामहैं।मक्खी, बर्र, ततैया,और भौंरा इनके पुष्परसकी वांति (वमन) को **मधु** (सहत या शहद) कहतेहैं **बं.** मौ, **म.** मध, **तै.** तेनी, **क.** जेनतुप्प, **फा.** शाहद, **इं.** हनी, **ला.** मेल कहतेहैं। **गुण।** शहद-शीतल, हलका, स्वादु, रूक्ष, ग्राही, लेखन, नेत्रोंको हितकारी, दीपन, स्वरशोधक, व्रणको शोधन और रोपणकर्त्ता, सुकुमारता करनेवाला, सूक्ष्म और छिद्रोंको अत्यंत शोधन करने वाला, इसके सेवनके पश्चात् कषैला रस प्रतीत होता है, आह्लादकर्त्ता, अत्यंत प्रसन्नता करनेवाला, देहके वर्णको उजला

करे, मेधा करता, वृष्य, विशद और रोचक है। यह कोढ़, खांसी, रक्तपित्त, कफ, प्रमेह, क्लम, कृमि, मेदरोग, तृषा, वमन, श्वास, हिचकी, अतिसार, मलरोध, दाह, घाव, क्षय और योगवाही अर्थात् जैसे पदार्थके साथ मिले उसीके समान गुण करनेलगे और थोड़ा २ बात करनेवाला है।

मधुकेभेद.

माक्षिकंभ्रामरंक्षौद्रंपौतिकंछात्रमित्यपि ।
आर्घ्यमौद्दालकंदालमित्यष्टौमधुजातयः ॥६॥

अर्थ–माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौतिक, छात्र, आर्घ्य, औद्दालक और दाल, ए शहदकी **आठजाति** हैं। अब इनके भेद कहतेहैं।

माक्षिक.

मक्षिकाःपिंगवर्णास्तुमहत्योमधुमक्षिकाः ॥
ताभिःकृतंतैलवर्णंमाक्षिकंपरिकीर्त्तितम् ॥७॥
माक्षिकंमधुषुश्रेष्ठंनेत्रामयहरंलघु ।
कामलार्शःक्षतश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥

अर्थ–पीले रंगकी बड़ी मक्खीयोंका निर्माण करा तेलके रंगका जो शहद है उसको **माक्षिक** शहद कहतेहैं। **गुण**। सब शहदोंमें माक्षिक शहद उत्तम है. यह नेत्ररोगोंको हरण करे, हलका, कामला, बवासीर, घाव, श्वास, खांसी और क्षय इनको नष्ट करे।

भ्रामर.

किंचित्सूक्ष्मैःप्रसिद्धेभ्यःषट्पदेभ्योऽलिभि-
श्चितम् ।
निर्मलंस्फटिकाभंयत्तन्मधुभ्रामरंस्मृतम् ॥
भ्रामरंरक्तपित्तघ्नंमूत्रजाड्यकरंगुरु ।
स्वादुपाकमभिष्यंदिविशेषात्पिच्छिलंहिमम्

अर्थ–प्रसिद्ध भौंरासे कुछ छोटी भौंराके जातिकी मक्खीयोंका निर्मल स्फटिक मणिके सदृश जो शहद होताहै वह **भ्रामर** संज्ञक शहद कहलाता है। **गुण**। रक्तपित्तको दूर करे और मूत्रकी जड़ताको करे, भारी, स्वादुपाकी, अभिष्यंदी, और विशेष करके पिच्छिल (गिलगिला) और शीतल है।

क्षौद्र.

मक्षिकाःकपिलाःसूक्ष्माःक्षुद्राख्यास्तत्कृतं-
मधु ।
मुनिभिःक्षौद्रमित्युक्तंतद्वर्णात्कपिलंभवेत् ॥
गुणैर्माक्षिकवत्क्षौद्रंविशेषान्मेहनाशनम् ॥

अर्थ–भूरे रंगकी मोहार मक्खी छोटी **क्षुद्र**-संज्ञक होतीहैं उनके बनायेहुए मधुको मुनीश्वरोंने **क्षौद्र**-संज्ञक कहा है, यह कपिल (भूरे) रंगका होताहै। इसके गुण माक्षिकके समान हैं और विशेष करके प्रमेहको नष्ट करताहै।

पौतिक,

कृष्णायामशकोपमालघुतराःप्रायोम-
हापीडकाः । वृक्षानांतरकोटरांतरगताः
पुष्पासवंकुर्वते ॥ तास्तज्ज्ञैरिहपूतिका
निगदितास्ताभिःकृतंसर्पिषा । तुल्यंयन्म-
धुतद्वनेचरजनैःसंकीर्तितंपौतिकम् ॥ १२ ॥
पौतिकंमधुरूक्षोष्णंपित्तदाहास्रवातकृत् ॥
विदाहिमेहकृच्छ्रघ्नंग्रंथ्यादिक्षतशोषिच ॥१३॥

अर्थ–मच्छरके समान काले रंगकी छोटी मधुमक्खी जिसके काटनेसे अत्यंत पीड़ा होतीहै वह बड़े बड़े भारी वृक्षोंकी खोंतरोंमें छत्ता लगाती हैं और उसमें शहदको एकत्र करतीहैं, उन मक्खियोंको **पूतिकमक्खी** कहतेहैं। उनके करेहुए घृततुल्य मधु (शहद) को वनके रहनेवाले (अहेरिया, भील आदि) **क्षापोत** संज्ञक कहतेहैं। **गुण**। रूखा, गरम, पित्त, दाह, वातरक्तको करे। विदाही, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, इनको दूर करे और ग्रंथी आदि तथा घावकी आर्द्रताको सुखाताहै।

छात्र.

वरटाःकपिलाःपीताःप्रायोहिमवतोवने ।
कुर्वंतिछत्रकाकारंतज्जंछात्रंमधुस्मृतम् ॥ १४॥
छात्रंकपिलपीतंस्यात्पिच्छिलंशीतलंगुरु ।
स्वादुपाकंकृमिश्वित्ररक्तपित्तप्रमेहजित् ॥
भ्रमतृण्मोहविषहृत्तर्पणंचगुणाधिकम् ॥१५॥

अर्थ–भूरेरंगकी और पीली मधुमक्खी प्रायः

हिमालय (वर्फान) वनमें होतीहैं, वह छत्रके आकार अपने छत्तेको बनातीहैं, उसमेंसे जो शहद निकलताहै वह छात्र संज्ञक मधु है। गुण। छात्रशहद-भूरा और पीलेरंगका होताहै, वह पिच्छिल (गिलगिला) शीतल, भारी, स्वादुपाकी है। कृमि, सफेदकुष्ठ, रक्तपित्त, प्रमेह, भ्रम, तृषा, मोह और विषविकारोंको हरण करे। तृप्तकर्त्ता और अधिक गुणवाला है।

आर्घ्य.

मधूकवृक्षनिर्यासंजरत्कारोश्रमोद्भवम् ।
स्रवंत्यार्घ्यंतदाख्यातंश्वेतकंमालवेपुनः ॥१६॥
तीक्ष्णतुंडाश्चयाःपीतामक्षिकाःषट्पदोपमाः ।
आर्घ्यास्तास्तत्कृतंयत्तदार्घ्यमित्यपरेजगुः ॥
आर्घ्यमध्वतिचक्षुष्यंकफपित्तहरंपरम् ।
कषायंकटुकंपाकेतिक्तंचबलपुष्टिकृत् ॥१८॥

अर्थ-जारत्कारु ऋषिके आश्रममें उत्पन्न महुआके वृक्षजनित निर्यास (गोंद) को स्रवंती और आर्घ्य कहते हैं। मालवे में इसको श्वेतक नाम से कहतेहैं। अन्य आचार्य ऐसा कहते हैं कि तीक्ष्णतुंड (मुख) वाली पीलेरंगकी भौंराके समान मधुमक्खियोंको आर्घ्य कहतेहैं। इन मक्खियों का बनाया जो मधु है उसको आर्घ्यमधु कहतेहैं। गुण। आर्घ्यमधु अत्यंत नेत्रोंको हितकारी, कफपित्त हरण कर्त्ता, कषेला, पाकमें चरपरा, कड़वा, बलप्रद और पुष्टिकरनेवाला है।

औद्दालक.

प्रायोवल्मीकमध्यस्थाःकपिलाःस्वल्पकीटकाः
कुर्वंतिकपिलंस्वल्पंतत्स्यादौद्दालकंमधु ॥१९॥
औद्दालकंरुचिकरंस्वर्यंकुष्ठविषापहम् ।
कषायमुष्णमम्लंचकटुपाकंचपित्तकृत् ॥२०॥

अर्थ-प्रायः वमईमें भूरेरंगके छोटे छोटे कीडे होतेहैं। वह भूरेरंगका और थोड़ा २ अपरिमित एक प्रकारका मधु संचय करतेहैं उसको उद्दाल संज्ञक मधु कहतेहैं। गुण। उद्दालमधु-रुचिकारक, स्वर शोधक, कुष्ठ और विष नाशक, कषेला, गरम, खट्टा और कटुपाकी तथा पित्त करनेवाला है।

दाल.

संश्रुत्यपतितंपुष्पाद्यत्तुपत्रोपरिस्थितम् ।
मधुराम्लकषायंचतद्दालंमधुकीर्तितम् ॥२१॥
दालंमधुलघुप्रोक्तंदीपनीयंकफापहम् ।
कषायानुरसंरूक्षंरुच्यंछर्दिप्रमेहजित् ॥
अधिकंमधुरंस्निग्धंबृंहणंगुरुभारिकम् ॥२२॥

अर्थ-जो शहद पुष्पसे चुआयकर पत्तेके ऊपर संचित होवे, तथा जिसका मधुर, खट्टा और कषेला रस होवे, उसको दालसंज्ञक मधु कहते हैं। गुण। दाल मधु-लघुपाकी, दीपन, कफनाशक, किंचित्कषाय रसवाला, रूक्ष, रुचिकारी, वमन निवारक, प्रमेह-नाशक, अत्यंत मीठा, स्निग्ध, बृंहण, बोझल और तोलमें भारी होता है।

नवीन पुराना मधु.

नवंमधुभवेत्पुष्ट्यैनातिश्लेष्महरंसरम् ।
पुराणंग्राहकंरूक्षंमेदोघ्नमतिलेखनम् ॥२३॥
मधुनःशर्करायाश्चगुडस्यापिविशेषतः ।
एकसंवत्सरेवृत्तेपुराणत्वंस्मृतंबुधैः ॥ २४ ॥

अर्थ-नवीनशहद पुष्टिकारक और दस्तावर है यह विशेष करके कफ नाशक नहीं हैं। पुराना शहद-ग्राहक, रूक्ष, मेदरोग नाशक और अत्यंत लेखन है। मधु (शहद) और खांड तथा गुड इनको एक वर्ष व्यतीत होनेसे पुराना कहाते हैं।

शीतगुणमधु और गरमियोंमें निषेध.

विषपुष्पादपिरसंसविषाभ्रमरादयः ।
गृहीत्वामधुकुर्वंतितच्छीतंगुणवन्मधु ॥२५॥
विषान्वयात्तदुष्णंतुह्युष्णेचोष्णेनवासह ।
उष्णार्त्तस्योष्णकालेचस्मृतंविषसमंमधु ॥२६॥

अर्थ-विषैले भौंरा आदि विषैले फूलसे मधुको संचय करके शहद बनाते हैं। वह शीतल रहने से गुण-कारी होताहै। विषांश रहनेसे यह शहद गरम कराहुआ अत्यंत उपद्रव करताहै। इसीप्रकार गरमियोंमें अथवा गरम वस्तुके साथ अथवा गरमीके रोगवाले रोगीको शहद विषके तुल्य अपगुण कर्त्ता है। [इसीसे सर्वत्र पाकादिकोंमें शीतल करके फिर शहद मिलाते हैं।]

मोंम.

मयनंतुमधूच्छिष्टंमधुशेषंचसिक्थकम् ।
मध्वाहारोमदनकंमधूषितमपिस्मृतम् ॥२७॥
मदनंमृदुसुस्निग्धंभूतघ्नंव्रणरोपणम् ।
भग्नसंधानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥२८॥

अर्थ–मयन, मधूच्छिष्ट, मधुशेष, सिक्थक, मध्वाहार, मदनक और मधूषित ए **संस्कृत**नाम, **हिं.** मोंम, **बं.** मधूच्छिष्ट, **म.** मेण **गु.** मिण, **फा.** मोमेजर्द, **इं.** यलोवॅक्स, कहतेहैं । **गुण** । मोंम–मृदु, सुस्निग्ध, भूतघ्न और घावको भरनेवाला है ।

इतिश्री अभिनवनिघंटौ मधुवर्गः

इक्षुवर्गः ।

ईखके नाम, गुण.

इक्षुर्दीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूमिरसोऽपिच ।
गुडमूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः ॥१॥
इक्षवोरक्तपित्तघ्नाबल्यावृष्याःकफप्रदाः ।
स्वादुपाकरसाःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमाः ॥२॥

अर्थ–इक्षु, दीर्घच्छद, भूमिरस, गुडमूल, असिपत्र और मधुतृण ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** ईख, गांडा, गन्ना, **म.** ऊंस, **गु.** शेरडी, **तै.** चिरकु, **का.** कबुएदु **अ.** कसूबुस शकर, **फा.** नेशकर, **इं.** श्युगरकेन । **गुण** । ईख–रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वृष्य, कफजनक, **स्वादु**पाकी, स्निग्ध, भारी, मूत्रकारक और शीतल है ।

ईखके भेद.

पौंड्रकोभीरुकश्चापिवंशकःशतपोरकः ।
कांतारस्तापसेक्षुश्चकांडेक्षुःसूचिपत्रकः ॥३॥
नैपालोदीर्घपत्रश्चनीलपोरोऽथकोशकः ।
इत्येताजातयस्तेषांकथयामिगुणानपि ॥ ४ ॥

अर्थ–पौंड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कांतार, तापसेक्षु, कांडेक्षु, सूचीपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर और कोशक इतनी ईखकी जाति हैं । अब इनके गुणोंको भी कहताहूं ।

पौंड्रक, भीरुक.

वातपित्तप्रशमनोमधुरोरसपाकयोः ।
सुशीतोबृंहणोबल्यःपौंड्रकोभीरुकस्तथा ॥५॥

अर्थ–सफेदपौंडा और भीरुक पौंडा–वात, पित्त नाशक, **रस** और **पाक**में मधुर हैं, शीतल, बृंहण और बलकर्त्ता है । **बं.**-श्वेत पौंडाको **श्यामसाडा**, और भीरुकपौंडेको **साचिइक्षु**, और **म.** पांढराऊंस कहतेहैं ।

कोशकार.

कोशकारोगुरुःशीतोरक्तपित्तक्षयापहः ।

अर्थ–कोशकार संज्ञक पौंडा भारी, शीतल, रक्तपित्त और क्षयको नष्ट करताहै ।

कांतारेक्षु.

कांतारेक्षुर्गुरुर्वृष्यःश्लेष्मलोबृंहणःसरः ॥ ६ ॥

अर्थ–कांतारेक्षु (काले रंगका पौंडा) भारी, वृष्य, कफकारी, बृंहण और दस्तावर है ।

दीर्घपोर और वंशक.

दीर्घपोरःसुकठिनःसक्षारोवंशकःस्मृतः ॥

अर्थ–दीर्घपोर संज्ञक--ईख, कठिन और **वंशक** ईख क्षारयुक्त है । वंशक ईखको बंबई ईख कहतेहैं ।

शतपोरक.

शतपर्वाभवेत्किंचित्कोशकारगुणान्वितः ।
विशेषात्किंचिदुष्णश्चसक्षारःपवनापहः ॥७॥

अर्थ–शतपोरक इक्षु अर्थात् जिसमें बहुत गांठ होवे वह किंचित्कोशकार ईखके समान गुणकर्त्ता है । अधिकता यह है कि किंचित् उष्ण, क्षारयुक्त और वातनाशक है ।

तापसेक्षु.

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपनी ।
तर्पणीरुचिकृच्चापिवृष्याचबलकारिणी ॥ ८ ॥

अर्थ–तापसेक्षु–बं. चीनेर बंबई अर्थात् चिनिया बंबई कहते हैं । यह मृदु (नरम) मधुर, कफ कुपितकर्त्ता, तृप्तकारक, रुचिप्रद, वृष्य और बलकारक है ।

कांडेक्षु.

एवंगुणैस्तुकांडेक्षुःसतवातप्रकोपनः ।

अर्थ-कांडेक्षु तापसेक्षुके समान गुण करने वाला है विशेष करके वातकुपित करता है।

सूचीपत्र, नीलपौर, नैपाल, दीर्घपत्रक.

सूचीपत्रोनीलपौरोनैपालोदीर्घपत्रकः।
वातलाःकफपित्तघ्नाःसकषायाविदाहिनः॥९॥

अर्थ-सूचीपत्र (जिस के बहुत बारीक पत्ते होते हैं) **नीलपौर** (जिसकी गांठ नीले रंग की होती है) **नैपाल** (नेपाल देशमें होने वाला) और **दीर्घपत्र** (जिसके बहुत लंबे पत्ते होते हैं) ए चार प्रकारके पौंडा वातकर्त्ता, कफपित्तनाशक, कषेले और दाहकर्त्ता हैं।

मनोगुप्ता.

मनोगुप्तावातहरीतृष्णामयविनाशिनी।
सुशीतामधुराऽतीवरक्तपित्तप्रणाशिनी॥१०॥

अर्थ-मनोगुप्ता नामक ईख-वातनाशक, तृषारोग नाशक, शीतल, अत्यंत मधुर और रक्तपित्त निवारक है।

वाल-युवा-वृद्धेक्षु.

बालइक्षुःकफंकुर्यान्मेदोमेहकरश्चसः।
युवातुवातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत्॥
रक्तपित्तहरोवृद्धःक्षतहृद्बलवीर्यकृत्॥११॥

अर्थ-अवस्था भेद से ईखके गुण कहते हैं--**बाल** (छोटी) ईख-कफ प्रकट कर्त्ता, मेदा बढाने वाली, तथा प्रमेहरोग को करे है। **युवा** (जवान) ईख-वायुनाशक, स्वादु, कुछ कुछ तीक्ष्ण और पित्तनाशक। **वृद्ध** (पुरानी) ईख-रक्तपित्त नाशक, घाव निवारक, बलकर्त्ता और वीर्योत्पादन करे है।

अंग भेद से भेद.

मूलेतुमधुरोऽत्यर्थंमध्येऽपिमधुरःस्मृतः।
अग्रेग्रंथिषुविज्ञेयइक्षुःपटुरसोजनैः॥१२॥

अर्थ-ईख-जडकी तरफसे अर्थात् नीचेका भाग अत्यन्त मधुर रस युक्त, **मध्यभाग** मीठा, और ईखके **ऊपरकी** ग्रंथि (पंगोली) में नमकीन रस रहता है अर्थात् नुनखरा रस है।

दांतों से पीडित ईख.

दंतनिष्पीडितस्येक्षोरसःपित्तास्रनाशनः।
शर्करासमवीर्यःस्यादविदाहीकफप्रदः॥१३॥

अर्थ-दांतों से चबायकर **चोंखी** हुई ईखका रस रक्तपित्त नाशक, खांडके समान वीर्यवाला, अविदाही अर्थात् दाह नहीं करे और कफ करने वाला है।

यंत्रनिष्पीडित ईख.

मूलाग्रजंतुजग्धादिपीडनान्मलसंकरात्।
किंचित्कालंविधृत्याचविकृतिंयातियांत्रिकः।
तस्माद्विदाहीविष्टंभीगुरुःस्याद्यांत्रिकोरसः॥

अर्थ-जिस ईखकी जड और अग्र भागको जंतुओं ने खाया हो तथा सकल गांठ यंत्र (कोलू) में पेली गई हों अर्थात् दबाई गईहों, तथा मेल आदिके मिलने से, और कुछ अधिक कालपर्यंत धरे रहने से वह कोलू का पिला हुआ रस **बिगड** जाता है। ऐसा उक्तरूप **दूषितरस** विदाहकर्त्ता, विष्टंभी और भारी है।

वासित ईखका रस.

रसःपर्युषितोनेष्टोह्यम्लोवातापहोगुरुः।
कफपित्तकरःशोषीभेदनश्चातिमूत्रलः॥

अर्थ-वासित (वासा) ईखका रस बिगड जाता है. ऐसा रस **स्वाद** में खट्टा, वातनाशक, भारी, पित्तकफकारक, शोषकर्ता, दस्त कराने वाला, और अत्यन्त मूत्र कर्त्ता है।

पकी ईख.

पक्वोरसोगुरुःस्निग्धःसुतीक्ष्णःकफवातनुत्।
गुल्मानाहप्रशमनःकिंचित्पित्तकरःस्मृतः॥

अर्थ-ईखका अग्निपर **पकाहुआ** रस-भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, वातकफनाशक, गोलानाशक, और किंचिन्मात्र पित्त करने वाला है।

इक्षुरस विकारों के गुण.

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः।
गुरवोमधुराबल्याःस्निग्धावातहराःसराः॥
वृष्यामोहहराःशीताबृंहणाविषहारिणः।

अर्थ-इक्षु विकार अर्थात् गुडादिक पदार्थ भारी, मधुर, बलकारक, स्निग्ध, वातनाशक, दस्तावर, वृष्य, मोहनाशक, शीतल, बृंहण और विषघ्न हैं। इनका सेवन तृषा, दाह, मूर्च्छा और रक्तपित्त रोग को नाश करे है।

फाणित.

इक्षोरसस्तुयःपक्वःकिंचिद्गाढोबहुद्रवः।
सएवेक्षुविकारेषुख्यातःफाणितसंज्ञया ॥
फाणितंगुर्वभिष्यंदिबृंहणंकफशुक्रकृत्।
वातपित्तश्रमान्हंतिमूत्रवस्तिविशोधनम् ॥

अर्थ–कुछ २ गाढा और अधिक भाग पतला ऐसे पके हुए रसको **फाणित** अर्थात् **राब** कहते हैं। **गुण**। फाणित रस-भारी, अभिष्यंदी, बृंहण, कफकर्ता, तथा शुक्रोत्पादक है। यह वात, पित्त, आम, मूत्रके विकार और वस्तिदोषों को निवारण करे है।

मत्स्यंडी.

इक्षोरसोयःसंपक्वोघनःकिंचिद्द्रवान्वितः।
मंदंयत्स्यंदतेतस्मात्तन्मत्स्यंडीनिगद्यते ॥
मत्स्यण्डीभेदिनीबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा।
मधुराबृंहणीवृष्यारक्तदोषापहास्मृता ॥

अर्थ–किंचित् द्रव युक्त-पक्व-गाढ ईखके रसका नाम **मत्स्यण्डी** (मिश्री) अर्थात् मन्द, स्यंदन, क्षरण इत्यादि हेतुओं से इसका नाम मत्स्यण्डी है। **गुण**। मिश्री-भेदक, बलकारक, हलकी, वातपित्तनाशक, मधुर, बृंहण, वृष्य और रक्तदोष निवारक है।

गुड.

इक्षोरसोयःसंपक्वोजायतेलोष्ठवद्दृढः।
सगुडोगौडदेशेतुमत्स्यंड्येवगुडोमतः ॥
गुडोवृष्योगुरुःस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः।
नातिपित्तहरोमेदःकफकृमिबलप्रदः ॥ २३ ॥

अर्थ–जिस ईखके रसको पकायके डेले के समान दृढ (गाढा) करा गया हो उसको **गुड** कहते हैं। परन्तु बंगाले में मिश्री को **गुड** कहते हैं। **म.** गुल **गु.** गोल, **का.** बेल्ल, **तै.** वेदत्रामु, **अ.** कंदेअसवद, **फा.** कंदेसियाह, **इं.** ट्रीकलमोलासीस कहते हैं। **गुण**। **गुड**-वृष्य, भारी, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रशोधक, मेदावर्द्धक, कफकर्त्ता, कृमिजनक और बलकर्त्ता, यह विशेष करके पित्तनाशक नहीं है।

पुराना गुड.

गुडोजीर्णोलघुःपथ्योऽनभिष्यंद्यग्निपुष्टिकृत्।
पित्तघ्नोमधुरोवृष्योवातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥

अर्थ-**पुरानागुड**-हलका, पथ्य, अनभिष्यंदी, अग्निकारक, पुष्टिकर्त्ता, पित्तनाशक, मधुर, वृष्य, वातनाशक और रुधिरको स्वच्छ करने वाला है।

नवीनगुड.

गुडोनवःकफश्वासकासकृमिकरोऽग्निकृत् ॥
श्लेष्माणमाशुविनिहंतिसदार्द्रकेण।
पित्तंनिहंतिचतदेवहरीतकीभिः ॥
शुंठ्यासमंहरतिवातमशेषमित्थम्।
दोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय ॥ २५ ॥

अर्थ-**नवीनगुड**-अग्निकारक है, इसका सेवन करना कफ, श्वास, खांसी और कृमिरोगको करेहै। नित्य **अदरख**के रसमें गुड मिलायके सेवन करने से कफ नष्ट होय। **हरड**के साथ गुड खाने से पित्तनाशक है और **सोंठ**के साथ गुड भक्षण करना संपूर्ण वातविकारोंको नष्ट करता है। अतएव हे त्रिदोषनाशकगुड ! तुमको नमस्कार है।

खांड.

खंडंतुमधुरंवृष्यंचक्षुष्यंबृंहणंहिमम्।
वातपित्तहरंस्निग्धंबल्यंवांतिहरंपरम् ॥

अर्थ-खांड-मधुर, वृष्य, नेत्रोंको हितकारी, बृंहण, शीतल, वातपित्तनाशक, स्निग्ध, बलकारक और वमननिवारक है। **बं.** खांडको खांडगुड, **म** साखर, **तै.** पांचादारा, **का.** मालखंड, **फा.** शक्कर, **ला.** साकीरम्, **इं.** शुगर कहते हैं।

सफेदखांड. (चीनी)

खंडंतुसिकतारूपंसुश्वेतंशर्करासिता।
सितासुमधुरारुच्यावातपित्तास्रदाहहृत् ॥

अर्थ–खांडको पाकद्वारा बालूके समान अर्थात् रवार के समान करीहुईको **चीनीखांड** कहतेहैं। **चीनी** सुंदर सफेद रंग की होतीहै. इसके **संस्कृत**नाम शर्करा और सिता। **गुण**। चीनी-मधुर, रुचिकारी, वातपित्तनाशक, रुधिर-दोषनिवारक, दाहशांतिकर्त्ता, शीतल और शुक्रजनक है. इसके भक्षण करनेसे मूर्च्छा, वमन और ज्वर नष्ट होय।

गुडशर्करा और मिश्री के गुण.

मूर्च्छाच्छर्दिज्वरान्हंतिसुशीताशुक्रकारिणी।
भवेत्पुष्पसिताशीतारक्तपित्तहरीतथा।
सितोपलासरालघ्वीवातपित्तहरीहिमा।

अर्थ—फूलचीनी-शीतल, शुक्रजनक, मूर्च्छा, वमन और ज्वर को दूर करे तथा **मिश्री** शीतल, रक्तपित्तनाशक, दस्तावर, हलकी, वात पित्तनाशक और शीतल है।

मधुखंड.

मधुजाशर्करारूक्षाकफपित्तहरीगुरुः।
छर्द्यतीसारतृड्दाहरक्तहृत्तुवराहिमा ॥२९॥

अर्थ-शहदसे बनी शर्करा (खांड) रूक्ष, पित्त-कफ-नाशक, भारी, कषाय और शीतल है। यह सेवन करने से वमन, अतिसार, तृषा, दाह और रक्तदोषको निवारण करे है।

यथायथैषांनैर्मल्यंमधुरत्वंयथायथा।
स्नेहलाघवशैत्यादिसरत्वंचतथातथा ॥३०॥

अर्थ-ऊपर लिखे ईखके समस्त विकार जैसे २ स्वच्छ करे जावें तैसे २ मधुर, स्निग्ध, लघु, शीतल और दस्तावर होते हैं।

इतिश्री माथुर कृष्णलालतनय दत्तरामकृते अभिनवनिघंटौ इक्षुवर्गः।

अनेकार्थ-नाम-वर्गः।

द्व्यर्थनाम.

अब यहांसे आगे उन औषधोंका वर्णन है कि जिनके **अनेकअर्थ** होते हैं, तहां प्रथम दो अर्थवाली औषध लिखतेहैं, इसमें हमने **भावप्रकाशग्रंथ** कर्त्ताके अनुक्रमको अकाराक्षरके क्रमसे लिख दीना है कि जिससे औषधके खोजकरने में परिश्रम न होवे।

अंगारवल्ली—भारंगी और घूँघची.
अग्नि—चित्रक और भिलावा.
अग्निमुखी—भिलाया और कलयारी.
अग्निशिख—केशर और कसूम.
अजशृंगी—मेंढासिंगी और काकडासिंगी.
अंजन—कालासुरमां और सफेदसुरमां.
अपराजिता—कोयल और शालपर्णी.
अमोघा—वायविडंग और पाढर.
अमृणाल—खस और अतीस.
अरुणा—मजीठ और अतीस.
अश्मंतक—खट्टीलोनी और कोविदार.
आस्फोता—कोयल और सरवन.
उग्रगंधा—वच और अजमायन.
उदुंबर—गूलर और तांबाधातु.
ऐन्द्री—इन्द्रायन और इन्द्रवारुणी.
कटुंभरा—कुटकी और स्योनाक.
कणा—पीपल और जीरक.
कठिल्लक—करेला और लाल पुनर्नवा.
कर्कश—कबीला और कसौंदी.
कुटंनट—टेंटू और केवटीमोथा.
कुनटी—धनिया और मनसिल.
कुंडली—गिलोय और कोविदार.
कुलक—परवल और कुचला.
कोशातकी—तुरैयां और गलकातोरई.
कृमिघ्न—वायविडंग और हलदी.
गोलोमी—सफेददूब और वच.
गंडीर—गंडीरीसाग और मजीठ.
गंधफली—प्रियंगु और चंपेकी कली.
गंधारी—धमासा और गंधपलाशी.
घोंटा—सुपारी और बेर.
चर्मकषा—सातला और मांसरोहिणी.
चित्रा—इंद्रायन और बडीदंती.
तालपर्णी—मूसली और मुरागंधद्रव्य.
तुंडकेरी—कपास और कंदूरी.
तेजन—सरपता और बांस.
तेजनी—तेजवल्कल और मूर्वा.
त्रिपुरा—निसोथ और छोटी इलायची.
दीप्यक—अजमायन और अजमोद.
दीर्घमूल—जवासा और शालपर्णी.
देवी—मूर्वा और स्पृक्काओषधी.
दंतशठ—जंभीरी और कैथ.
दंतशठा—इमली और नूका.
धान्य—धनिया और शालीचांवल आदि.
धारा—गिलोय और क्षीरकाकोली.

नंदीवृक्ष-वेलियापीपर और तूनी.
पद्मा-कमलिनी और भारंगी.
पयः-दूध और जल.
परिव्याध-कनेर और जलवेत.
पारावतपदी-मालकांगनी और काकजंघा.
पिच्छिला-सेमर और सीसोंका वृक्ष.
पीलुपर्णी-मूर्वा और कंदूरी.
पुष्पफल-कैथ और पेठा.
पोटगल-नरसल और कांस.
प्रियंगु-फलनी (खिरनी) और कांगनी.
भृंग-भँगरा और तज.
बालपत्र-कत्था और जवासा.
बाह्लीक-केशर और हींग.
मधूलिका-मूर्वा और जलमुलहठी.
मरुबक-मरुआ और मैनफल.
मोचा-केला और सेमर.
यवफल-इन्द्रजौ और बांस.
राजादन-खिरनी और चिरोंजी.
रुचक-कालानमक और बिजोरा.
रुहा-दूब और मांसरोहिणी.
रोचन-कबीला और गोरोचन.
लोणिका-नोनियाका साग और चूकेका साग.
वसुक-लालआक और खारी नमक.
वारि-जल और नेत्रवाला.
वितुन्नक-धनियां और नीलाथोथा.
विश्वा-सोंठ और अतीस.
ब्राह्मणी-भारंगी और स्पृक्काद्रव्य.
शकुलादनी-कुटकी और जलपीपल.
शठी-कचूर और गंधपलाशी.
शारदी-सारिवा और जलपीपल.
शीतशिव-सैंधा नमक और सोंफ.
श्यामा-सारिवा और प्रियंगु.
क्षार-सज्जीखार और जवाखार.
समंगा-मजीठ और लजालू.
सहस्रवीर्या-नीलीदूब और महाशतावर.
सिंही-कटेरी और अडूसा.
सेव्य-खस और लामज्जक.
स्वादुकण्टक-गोखरू और विकंकत.

तीन अर्थके शब्द.

अनंता-धमासा, नीलीदूब और कलियारी.
अमृता-गिलोय, हरड और आंवले.
अरिष्ट-नीम, लहसन और मद्यका भेद.
अव्यथा-हरडबडी, मुंडी और कमलनी.
अक्षीव--सहजना, बकायन और समुद्रलवण.
अंबष्ठा-पाढ, चूका, मोइया.
इन्द्रद्रु-कोह, देवदारु और कुटज.
इक्षुगंधा-कांस, तालमखाने, गोखरू और क्षीरविदारी.
ऋष्यप्रोक्ता-अतिबला, महाशातावरी और कौंच.
कपीतन-अंबाडा, सिरसवृक्ष और गर्दभांड.
कारवी-कलौंजी, सतावर और अजमोद.
कालमेषी-मजीठ, बावची और कालीनिसोथ.
कालस्कंध-श्यामतमाल, तेंदू और काला खैर.
कालानुसार्य-पीलाचदन, तगर और छडीला.
काश्मीर--केशर, पुहकरमूल और कंभारी.
काश्मीरी-गुंद्र, पटेरा और सरपता
कृष्णवृंता-पाढर, गंभारी, और माषपर्णी.
कृष्णा-पीपल, कलौंजी और नील.
क्रमुक-सुपारी, सहतूत और पठानी लोध.
क्षीरणी-दुद्धी, क्षीरकाकोली और सफेद सारिवा.
क्षुरक-तालमखाना, गोखरू और तिलकपुष्प.
गुन्द्रा-प्रियंगु, भद्रमोथा और नागरमोथा
चांपेय-चंपा, नागकेशर और कमलकी केशर.
चुक्रम्-चूका, अमलवेत, तंतडीक.
जीवंती-गिलोय, जीवंतीकासाग और बांदा.
ताम्रपुष्पी-धायकेफूल, पाढल और निसोथ.
दुस्पर्श-जवासा, कौंछ और कटेरी.
धामार्गव-लाल ओंगा, गलकातोरई और तोरई.
नादेयी-अरनी, जलजामुन और जलवेत.
पलाश-ढाक, गंधपलाशी और पत्रज.
पलंकषा-गूगल, गोखरू और लाख.
पाक्यम्-बिड्नोंन, कालानोंन और जवाखार.
पीतदारु-हलदी, देवदारु और सरल.
पारिभद्र-नीम, फरहद और देवदारु.
पृथ्वीका-कलौंजी, बडी इलायची, हिंगुपत्री.
प्रियक-प्रियंगु, कदंब, विजेसार.

भूतीक-चिरेता, कत्तृण और भूतिक.
भृंग-भाँगरा, तज और भौंरा कीट विशेष.
मदन गैनफल, धतूरा और मोम.
मधु-शहद, पुष्परस और मद्य.
मधुपर्णी-गिलोय, कंभारी और नील.
मयूर-चिरचिरा, अजमोद और लीला थोथा.
मर्कटी-कौंछ, चिरचिरा और करंजा.
महौषध-सोंठ, लहसन और सिंगियाविष.
मंडूकपर्ण-[र्णी] स्योनाक, मंजिष्ठा और ब्रह्म मांडूकी.
रक्तसार-लालचंदन, पतंग और खैर.
रसा-रास्ना, शल्लकी और पाटा.
राखा-नाकुली, नील और सम्हालू.
लता-सारिवा, प्रियंगु और मालकाँगनी.
लक्ष्मी-ऋद्धि, वृद्धि और छोंकरा.
लोह-लोह, कांसा, और अगर.
वरदा-हुरहुर, असगंध और वाराहीकंद.
वशिर-लाल ओंगा, गजपीपल और समुद्रलवण.
विशल्या-कलियारी, गिलोय और छोटीदंती.
वीर-कोह, वीरणतृण और काकोली.
वीरतरु-कोह, वीरणतृण और सरपता.
वंजुल-अशोक, वेत और तिनिश.
शतपर्वा-वांस, दूव, और वच.
शिला-मनसिल, शिलाजीत और गेरू.
श्रीपर्णी-गंभारी, गणकारिका और कायफल.
श्रेयसी हरड, रास्ना और गजपीपल.
षड्ग्रंथा-वच, गंधपलाशी और करंज.
सदापुष्प-सफेद आक, लाल आक और कुंद
समुद्रांता-धमासा, कपास और स्पृक्का.
सहस्रवेधी-अमलवेत, कस्तूरी और हींग.
सहा-मुद्गपर्णी, कंगही और गुलाब.
सुरभी-शल्लकी, मुरागंधद्रव्य और एलवालुक.
सोमवल्क-कायफल, सफेद खदिर और घृतकरंज.
सोमवल्ली-बावची, गिलोय और ब्राह्मी.
सौगंधिक-लाल कमल, कतृण और गंधक.
सौवीर-सफेद सुरमा, वेर और कांजीका भेद.
हैमवती-हरड, सफेद वच, पीले दूधकी कटेरी (चोक)

वह्वर्थनाम.

अक्षशब्दः स्मृतोऽष्टासु सौवर्चलविभीतके।
कर्षपद्माक्षरुद्राक्षशकटेंद्रियपाशके ॥ १ ॥
काकाख्यः काकमाची च काकोली काक-णंतिका।
काकजंघा काकनासा काकोदुंबरिकापि च
सप्तस्वर्थेषु कथितः काकशब्दो विचक्षणैः ॥२॥
सर्पद्विरदमेषेषु सीसके नागकेसरे।
नागवल्ल्यां नागदंत्यां नागशब्दः प्रयुज्यते ॥३॥
मांसे द्रवे चेक्षुरसे पारदे मधुरादिषु।
बालरोगे विषे नीरे रसो नवसु वर्तते ॥ ४ ॥

अर्थ-अब उन शब्दोंको लिखतेहैं जिनके अनेक अर्थ होते हैं। अक्षशब्दके आठ अर्थ हैं, जैसे कि-संचरनमक, वहेडा, १ कर्षकी तोल, पद्माक्ष, रुद्राक्ष, छकडा, इन्द्रिय और फांसा। काकशब्दके मकोय, काकोली, लाल घूंघची, काकजंघा, काकनासा, कटूं-मर और कौआपक्षी ए सात अर्थ हैं। नागशब्दके सांप, हाथी, मेंढा, शीशा, नागकेशर, नागरवेलपान और नागदंती इतने अर्थ हैं। रसशब्दके मांस, पतला पदार्थ, ईखका रस, पारद, मधुरादि छः रस, बालकोंका एकरोग, विष और जल, ए नौ अर्थ हैं।

इति अभिनवनिघंटौ द्रव्यखंड़ः समाप्तः

इति श्रीदत्तरामनिर्मितअभिनवनिघंटुभाषानुवादः समाप्तः।

सूचीपत्र.

पंडित दत्तराम चतुर्वेदीका खास पुस्तकोंका.

कीमत. डांक महसूल.

१ * अजीर्णमंजरी-भाषाटीकासह। इसमें सर्व प्रकारके अजीर्ण नाश करनेकी विधि और अंतमें कुछ अजीर्णनाशक चूर्णादिकभी कहे हैं। ३ आ० ।।। आना.

२ अभिनवनिघंटु-भाषाटीकासह। यह निघंटु हालके समयमें सब निघंटुओंसे उत्तम है। इसमें एकएक औषधके नाम संस्कृत, हिंदी, राजपूतानी, बंगाली, उडिया, मरेठी, तामिल, कोंकणी, कान्हडी, देशी, गुजराती, पंजाबी, नेपाली, अरबी, फारसी, अंग्रेजी और लाटिन आदिमें यथा प्राप्त दीने गये हैं। अनेक औषधों के चित्रभी दीने है। फिर अनेक औषधोंपर हकीम और डाक्टरोंकी संमति लिखी है; तथा अनेक औषध जो अन्यनिघंटुओंमें नहीं मिलती जैसे सालसा, सालममिश्री, सनाय, काळादाना, चाह, तमाखू आदि, वह सब इसमें मौजूद हैं, तीसरा वार का छपा तयार है। ... ... ३ रु० ६ आने.

३ अभिनवनिघंटु द्वितीय भाग-इसमें यूनानी दवाइयोंका अपूर्व वर्णन है जैसे कि प्रत्येक औषधी के यथा प्राप्त संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी और प्रचलित नामोंका वर्णन और स्वरूप, स्वाद, प्रकृति, गुण, कर्म, प्रयोगादिका विवरण है और जिन औषधियोंके चित्र प्रथम भागमें नहीं आसके उन्हें स्थापित कर ग्रंथको सुशोभित किया है। २।। रु० ६ आने.

४ अमृतकीबूंद-गानेकी अनेक रागरागिनी आदिका अनूठा संग्रहहै। ... ... १ आ० ।।। आना.

५ अर्घदीपक-संस्कृत मूल और भाषाटीकासह। वस्तुओंके तेजी मंदीके चुटकले इसमें लिखे हैं। ज्योतषी पंडितोंको लेने योग्य है। ... ... २ आ० ।।। आना.

६ आतिशबाजी-हिन्दीभाषामें अद्वितीय पुस्तक है इसमें लडकोंके खेलखिलोने सुर्री, पटाके, महताव, चांदतारे, फुलझरीआदि अनेक वस्तु बनाने की तरकीब लिखी है। ... १ आ० ।।। आना.

७ ज्ञानभैषज्यमंजरी-भाषाटीकासह। आधे श्लोक में वेदांत और आधे श्लोक में औषधद्वारा प्रत्येक रोगकी चिकित्सा वर्णन करी है ... ... ३ आ० ।।। आना.

८ चरकसंहिता-मूलसंस्कृत और हिन्दी भाषाटीका। यद्यपि यह ग्रंथ मुंबई और मथुराआदि में छप चुका है परंतु हमने इसका मूल और टीका वहुत ही दुरुस्त कर छापाहै।... ८ रु० १ रु०

९ चिकित्साचन्द्रोदय-हिन्दी भाषा—यह ग्रंथ हाल में करावादीन जुकाई का हिन्दी भाषा में तर्जुमा करके छापा है। इसमें शरवत, अर्क, सफूफ, तिला, मरहम आदि ऐसी कौनसी वस्तु है जो कि इसमें नहीं लिखी और ऐसी वीमारी ही कौनसी है कि जिसका मालजा इस ग्रंथमें न कहा हो। यह करीब ३५० सफे और अंदाजन अढाई तीन हजार चित्र-

विचित्र नुसखों से लबालब भरा हुआ दवाइयों का खजाना है, बस इसी से इसके विषयको आप जान गये होंगे. ... ... २। रु० ६ आने.

१० **चिकित्साचक्रवर्ती**-अकबर बादशाहनिर्मित मुजर्रबात अकबरीका सरल हिन्दी तर्जुमा है। यह ग्रंथ प्रथम दो बार छपा सो हाथों हाथ बिकगया । अब तीसरे फिर उत्तम सुधार के साथ छपा है इसमें भी सैकडों फकीरी लटके भरे हैं. ... ... १ रु० ४ आने.

११ **चिकित्साचमन**-दफ्तरे हिकमतका हिन्दी भाषान्तर है. ... ... ३ आ० १ आना.

१२ **चिकित्सारत्न**- तिब्बसहावी का हिन्दी तर्जुमा है. ... ... २ आ० ॥ आना.

१३ **तर्पण** नित्योपयोगी देवऋषिपित्रीश्वरों का तर्पण है. ... ... ॥ आ० ॥ आना.

१४ **ध्रुवलीला**-कि जिसमें अनेक अनूठे राग रागिनीयों में पांच वर्ष के ध्रुवलाल ब..का अद्भुत चरित्र वर्णन करा है. ... ... १ आ० ॥ आना.

१५ **नपुंसकसंजीवन**-प्रथम भाग-संस्कृत मूल और भाषाटीकासह, इसका परिचय इसका नामही दे रहा है. ... ... ६ आ० १ आना.

१६ **नपुंसकसंजीवनका**-दूसरा भाग-हकीमी मत से लिखा गया है. ... ६ आ० १ आना.

१७ **नाडीदर्पण**-भाषा टीका सह ... ... ६ आ० २ आने.

१८ **नरसीकाभात**-हिन्दी भाषा में गाने ही योग्य है इस में अपने भक्त की टेक रखने को प्रभु ने साहूकार का रूप धारण करके भात की अद्भुत वस्तु समधी को देकर सबको आश्चर्ययुक्त करदीना है. ... . १ आ० ॥ आना.

१९ **पंचपक्षी**-भाषाटीकासह । यह ज्योतिषमें प्रश्न कहने का अपूर्व ग्रंथ है. ... ५ आ० १ आना.

२० **पथ्यापथ्य**-भाषाटीकासह । रोगमात्रकी पथ्य और कुपथ्य तथा छः ऋतुओं के पथ्यापथ्यको बताता है. द्वितीय बार छपकर तयार है. ... ... १ रु० ३ आने.

२१ **परीक्षाचमन**-हिन्दीभाषा-जिसमें नाडी आदिकी अष्ट-विध परीक्षा कही है.... २ आ० ॥ आना.

२२ **पहाडेकी बडी पुस्तक**-जिस में ओलम, बारहखडी, सिद्धो, नाम, मिले अक्षर और सब पहाडे तथा हुंडी, रसीद लिखने की रीति भी है. ... ... । आ० ॥ आना.

२३ **पावससुन्दरी**-भाषा वर्षातमें गाने की कजली, मलार, ठुमरी आदिका संग्रहहै। १ आ० ॥ आना.

२४ **पाकरत्नाकर**-भाषा जिसमें कंद, मिश्री, बरफी, पेडा, लड्डू, बालूसाही आदि अनेक प्रकार के पकवान मिठाई बनाने की विधि लिखी है, द्वितीयबार का छपा. ... ८ आ० २ आने.

२५ **प्राणाचार्य** हिन्दी भाषा में अपूर्व वैद्यक का भंडार है । अनेक भिषग्ब्रुव (मूर्ख वैद्यों) को चातुरी वितरणकर सर्व गुणगणालंकृत बनाने वाला है । द्वितीयवार छपागया है. प्रथम दर्शनकी न्यौछावर ... ... ५ आ० १ आना.

२६ **भावपंचाशिका**-कविताके करनेवाले और सीखने वालोंको अवश्यलेने योग्य. २ आ० ॥ आना.

२७ **भावप्रकाश**-हिन्दीभाषाटीकासह । इसमें पांच हजार श्लोकात्मक पाठ अधिक है और सर्वत्र छपे हुए भावप्रकाशों से कहीं चढबढकर है । यह वैद्यमात्रको अवश्य लेने योग्य है । द्वितीयवार छप रहा है. मुंबई के टाइपसे छपा और सुंदर जिल्द बंधे हुए की कीमत — १० रु० १। रु०

२८ मथुरादर्पण-भाषाटीकासंयुक्त मथुरा और माथुर ब्राह्मणोंके प्रभावको बतानेवाला. १ आ० ।। आना

२९ मथुरामहात्म्य-संस्कृतमूलमात्र खुलीसंची मुंबईका छापा। ... ८ आ० २ आने.

३० यूनानके हकीम-हकीमी सिलसिलेमें पूरे उस्ताद देखो किस प्रकारकी चिकित्सा लिखते हैं। द्वितीयवार छापा गयाहै। एक दफे आप नजर तो करिये। ... २ आ० ।। आना.

३१ योगचिंतामणि-भाषाटीकासह। ... ... १।। रु० ५ आने.

३२ रमलनवरत्न-भाषाटीकासह, रमलशास्त्र पढनेकी पहली पुस्तक है और इसकी बडा भारी सारणी भी इसके साथलगी हुई है कि प्रश्न कहनेमें विलंब न होने पावे।... १४ आ० ४ आने.

३३ रसकी चषक-अर्थात् अमृतकी दूसरी बूंद। गानेकी अद्भुत पुस्तक है। ... १ आ० ।। आना.

३४ रसराजसुंदर-भाषाटीकासंयुक्त, अनेक अद्भुद रस (वसंततिलक, वसंतकुसमाकर) और रसायन (चंद्रोदय, मृगांक, रूपरस, तांमश्वर, वंगआदि) बनानेका सबसे बडा उत्तम ग्रंथ है। आजपर्यंत इतना बडा ग्रंथ कहीं न छपा और न अब छपेगा पांचवींवार और भी बढाकर छापा गया है। ... ... ४ रु० ६ आने.

३५ राधाकृष्णगणोद्देशदीपिका-संस्कृत मूल, श्लोकबद्ध। इसमें प्रियाप्रियतमके सर्व परिवारका वर्णन है। ... ... २ आ० ।। आना.

३६ रेलपचीसी-जिसमें रेलवर्णनके २५ कवित्त एकसे एक चटकीले हैं ... ।। आ० ।। आना.

३७ लंडनके डाक्टर इंग्रेजी की अनेक पुस्तकोंका सार लेकर इसकी रचना करी गई-हैं। आजतक डाक्टरी की जितनी पुस्तक छपीहैं उन सबसे यह उत्तम है कि जिसमें रोगका कारण, निदान और यत्न अत्यंत चतुराई के साथ वर्णन कराहै। द्वितीयवार के छपे हुए प्रथमांककी कीमत ... ... ६ आ० १ आना.

३८ ललितफाग-व्रजकी परम चित्रविचित्र होरी सूरदास आदि प्राचीन महात्मोंकी बनाई हुइयोंका संग्रह है। ... ... २ आ० ।। आना.

३९ वैद्यरहस्य-भाषाटीकासह। असलमें यह ग्रंथ यथानाम तथा गुणयुक्त है ... १ रु० ४ आने.

४० वैद्यावतंस निघंटु-लोलिंबराजका बनाया हुआ इसमें रोज वर्ताव में आनेवाली वस्तुओं का वर्णन है. छोटेसे में बडीबात है ... ... २ आ० ।। आना.

४१ शार्ङ्गधर संहिता-भाषाटीकासह। अन्य सबसे बडी पुस्तक है इसमें निदान भी साथ लगा है। ... ... ३ रु० ८ आने.

४२ संतानदीपिका-सटीक, ज्योतिष में संतान होने न होनेके फलको बताती है २ आ० ।। आना.

४३ सीहर्फी-बुलाशाह फकीरकी बनाई वेदांतकी शेरें देखनेही योग्य हैं ... ।। आ० ।। आना.

४४ हंसराजनिदान-भाषाटीकासह ... ... १। रु० ४ आना.

पं० दत्तराम नारायणदत्त चौबे

मानिक चौक मथुरा।

Date	No.	Date	No.
रजि.द.सं.	४४		
23 MAR 1965 २२५/२८			
19 MAY 1983 २०२/८			